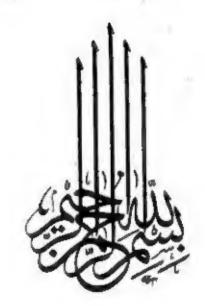
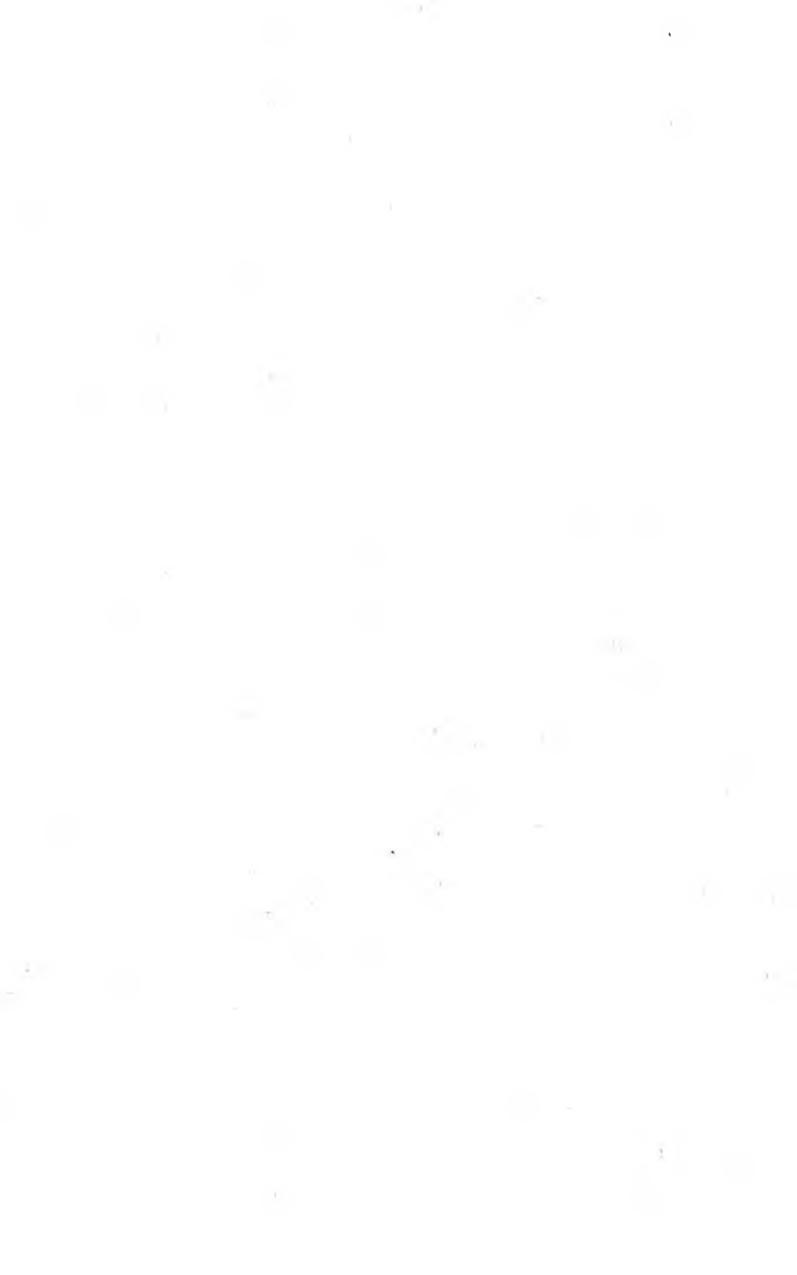


رد (رفرالیفات استرفیای علاق الفتالیفات استرفیای استرفیای استرفیای الفتالیفات الفتالیفات الفتالیفات الفتالیفات ا



STATE OF THE



بسلسله خطبات حكيم الامت جلد- • ا



(جديدايديش)

عليم الأجدُ الملت مُضرِ مُعِلنا مُحَمِّل مِعرف في مُعالَّوى والنووة

> زن^{بن مو}ربط منشی عبدالرحم^ان خال

تصحیح و تزنین مولاناز امرمحود قاسمی صوفی محراقبال قریشی مظله الله مولاناز امرمحمود قاسمی

اِدَارَهُ تَالِيُفَاتِ أَشَرَفِينَ پور، فرارو متان پَرِثَ آن پور، فرارو متان پَرِثَ آن (061-4540513-4519240

فضائل صوم وصلوة

تاریخ اشاعت.....اداره تالیفات اشرفیه متان ناشر.....اداره تالیفات اشرفیه متان طباعت......بملامت اقبال پرلیس ملتان

بانتياه

اس کتاب کی کا پی رائٹ کے جملہ حقوق محقوظ ہیں کسی بھی طریقہ ہے اس کی اشاعت غیر قانونی ہے

> فانونی مشیر قیصراحمد خال (ایدددیث بالکوری ۱۵ تان)

تارئین سے گذارش

اوارہ کی جی الا مکان کوشش ہوتی ہے کہ پروف ریڈنگ معیاری ہو۔ الحمد ملتداس کام کیلئے اوارہ میں علیاء کی ایک جماعت موجود رہتی ہے۔ پھر بھی کوئی غلطی نظر آئے تو برائے مہریانی مطلع فرما کرمنون فرما کمیں تاکہ آئندہ اشاعت میں درست ہو سکے۔ جزاکم اللہ

اداره تاليفات اشرفيه چوک فواره ملكان

اداره اسلامیات......ا تارکلی.....لا بور دارالاشاعت......أردو بازار....... کراچی کمتیه سیداح شهید......اردو بازار....لا بور ادارة الاثور..... نیونا وَن کمتیه رجمانیه....... أردو بازار لا بور کمتیه دارالاخلاص ... قصه خوانی بازار..... بیثا در

ISLAMIC EDUCATIONAL TRUST U.K.
(ISLAMIC BOOKS CENTERE

115-121- HALLIWELL ROAD BOLTON BLI 3NE. (U.K.)



عرض نا شر

خطبات کیم الامت جلد نمبر ا' نضائل صوم وصلوٰ ہ''
جدیداشاعت سے مزین آپ کے ہاتھوں میں ہے۔
اللہ کے فضل وکرم اور اپنے اکابرین کی دعاؤں کے فیل کافی
عرصہ سے خطبات کی اشاعت کا ادارہ کوشرف حاصل ہور ہاہے۔
بہت سے بزرگوں کی تمنائتی کہ ان کی احادیث مبارکہ کی تخ بیج ہو
جائے۔ بتو فیقہ تعالیٰ خطبات کی تمام جلدوں میں احادیث کی تخ بیج
حاشیہ میں اور ساتھ ہی اشعار اور عربی عبارات کا ترجمہ دیدیا گیا ہے۔
ادارہ نے ذرکشرش کر کے تخ تک کا کام محترم جناب مولانا زاہر محودصاحب
ادارہ فاضل جامعہ قاسم العلوم ملتان) سے کرایا۔
فاری اشعار اور عربی عبارات کا ترجمہ اور اس کے ساتھ ساتھ تھے کا کام
حضرت صوفی محمد اقبال قریش صاحب مدظلہ العالی نے سرانجام دیا۔
دخرے صوفی محمد اقبال قریش صاحب مدظلہ العالی نے سرانجام دیا۔
دفترے صوفی محمد اقبالی اس خدمت کو قبول فرمائے آھیدنے۔
اللہ تعالیٰ اس خدمت کو قبول فرمائے آھیدنے۔

احقر بحمد استحق عنی عنه رہیج الثانی ۴۲۸اھ بمطابق جون 2007ء

اجمالي فهرست

| صفحه | الصالوة | 1 |
|--------------|-------------------------------------|--------------------|
| العلمين أ | زَكَىّٰ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَ | فَأَ مُنْ مُنْ الْ |
| ىعى. رايا ن. | ر حی ود در اسم ریب سے | فلع من د |
| صفحم | نداءرمضان | |

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ينادى الملك ياباغي الخير اقبل وياباغي الشراقصر ولله عتقاء من النار (سنن ترمذي)

| ا صفحه ۸۸ | الصوح | 1 1 |
|-----------|-------|-----|

قال النبي صلى الله عليه وسلم قال الله تعالىٰ كل حسنة تضاعف بعشر الى سبع مائة ضعف الاالصوم فانه لى وانا اجزى به (مسند احمد)

| ا من م | | - |
|--------|--------|-----|
| 1.9280 | الصبام | 1 1 |
| | | |

فقد قال النبي صلى الله عليه وسلم من صام رمضان ايمانا واحتسابا غفرله تقلم ماذنبه ومن قام رمضان ايمانا واحتسابا غفرله ماتقلم من ذنبه. (الصحيح البحاري)

| اصفحه ۲ سما | الفط | ۱۵ |
|-------------|------|----|
| ~ | | |

انما يوفي الصبر ون اجرهم بغير حساب. (الزم:١٠)

| ٢ النسوار في رمضان صفي | | - | |
|------------------------|------|------------------|---|
| | صفحه | النسوار في رمضان | 4 |

عسى ربه ان طلقكن ان يبدله ازواجاً خيرا منكن مسلمات مؤمنات قانتات تائبات عبدات سائحات ثيبت وابكارًا. (اتريم:ه)

4 رمضان في رمضان صفح١٩٦ شَهُرُ رَمُضَانَ الَّذِي أَنْزِلَ فِيهِ الْقُرُآن . (التره:١٨٥) احكام العشرة الاخيرة صفحه٢٦٩ شَهُرُ رَمُضَانَ الَّذِي أَنْزِلَ فِيهِ الْقُرُآنِ . (التره:١٨٥) تطهير رمضان صفحهاا يايها الذين امنوا كتب عليكم الصيام الخ (الترو:١٨٣) صفحهاس عصم الصنوف كلو اواشربوا هنيئا بما اسلفتم في الايام الخالية (الانه:٣٠) التهذيب نمبرا صفحاوس قد افلح من زكها وقد خاب من دسها (التس:١٠٠٩) صفحها التهذيب نمبر٢

يريد الله بكم اليسر والايريد بكم العسر ولتكملوا العدة الخ (القره:١٨٥)

فهرست عنوانات

| عنوا نات | صخير | عنوانات | صفحتير |
|------------------------|------|------------------------|-----------|
| ١ ـ الصّلوة | ۱۵ | طلب صادق كااثر | 24 |
| تمهيد | 14 | وسوسداوراس كاعلاج | FZ |
| اسراركلام البى | 12 | ذ کرو ^{قک} ر | 19 |
| اقسام كلام البي | IA | فضيلت تماز | P9 |
| قوت اشنباطيه | IA. | نماز می <i>س روز</i> ه | 14. |
| قلبى توجه كي ضرورت | 19 | تماز فاسد | ויו |
| آج کل کے جمبتد | r. | نماز میں ہنستاورونا | MA |
| قرآن نه پڙھنے کا بہانہ | 11 | حقيقت كمال | 44 |
| ترجمه يؤهن كااصول | ** | رونے کی اہمیت | LL. |
| تلاوت کے فوائد | 46. | نماز بيس چلنا | 20 |
| المل علم مين أيك كمي | ۲۱۲ | تمازكاتوژنا | 74 |
| د نیاوآ خرت کی مثال | ra | جذبات طبعيد كى رعايت | MA |
| تو کل کی صورت | 44 | عقل اورشر ايعت | 4 |
| توكل اور كارعقبي | 12 | شريعت اور راحت | ۵٠ |
| قلب واعمال كأتعلق | PA | تمازيس ادحرادهرد يكينا | ۵۰ |
| ر یاضت نفس | P. | آ جکل کی آزادی | or |
| اصلاح ظاہرویاطن | m | خشوع كي حقيقت | or |
| دری جوارح وقلب | rr | دفع وساوس کے طریق | 00 |
| برائول سے بچنے كاطريق | rr | سجده کی حقیقت | ۵۵ |
| ابل علم كى تازك حالت | 77 | خلوت بالحجوب | ra |
| نفس کی شرارت | 70 | تماز ش چ | ۵۸ |

| . (| 40 0 | 22 . | |
|---------------------|------|--------------------|------|
| لماز کی جامعیت | ۵۸ | تلاوت قرآن | ۸۵ |
| لما ز کا وقفه | 40. | اماري خالت | ΥΛ |
| نباز کی صورت | 44 | ٣_ الصّوم | ۸۸ |
| نباز کی روح | 44 | تمهيد | ۸٩ |
| قرب خدادتدی | Ala | وسعت ثواب | 9+ |
| للدكى محيت | ar | شكى كا قانون | 91 |
| فآب بيس عنايت | YA | تواب كامدار | 92 |
| فق تعالی کی رحمت | 44 | روزه كاخصوصى تواب | 91" |
| برکی خاصیت | ۸ĸ | بلاضررلغزش | 90" |
| مبر كاطريقه | 4. | فبم حكمت | 90 |
| بوت کی پریشانی | 41 | احكام البي كي عظمت | 97 |
| ماز کی برکت | 24 | روزه کی خصوصیت | 99 |
| ۱۔ نداء رمضان | 20 | صلوة الله كي حقيقت | ++ |
| تاع مىلمان | 20 | ايك لطيفه غيبي | 1+1 |
| للاوت كا ثواب | 44 | روزه اورفدىي | 1+1" |
| ضيلت دمضان | 44 | روزه کے حقوق | ۱۰۱۳ |
| اک معاصی کی ترکیب | ۷۸ | حظفس | 1+0 |
| كايت في الوسعية | 49 | تقوی کی صورت | 1.4 |
| ر ب خداوندی کی صورت | ۸. | ٤_ الصيام | 1+9 |
| فعال كاقتمين | At | فاعل بالاختيار | 11+ |
| شوع كي ضرورت | At | سائنس اور شریعت | 111 |
| وزه کی عدمیت | Ar | حكماء فقيقي | II M |
| رائے فرشتہ | Ar | عبث میں مشغولیت | 110 |
| تباع سنت | ۸۳ | اتباع كي ضرورت | III |
| قيقى شهرت | ۸۵ | مستله تقدير | 112 |

| تصرف حق تعا مجامده کی ضرور |
|-------------------------------|
| محامده کی مضرور |
| المالية والمرادد |
| توجه كي الجميت |
| غفلت انساني |
| شر لعيت اور حقي |
| فلسغه ومنطق |
| تجليات كى تا ث |
| جل کے منی |
| طلب کے کر۔ |
| ذ کروشغل کے |
| روز و کی شان |
| تقوى كى مشق |
| معصيت اورط |
| حلال وحرام |
| حلال کی صور |
| طالب علمي كأر |
| تصوف اورفقه |
| شرع مجابدے |
| روزه اورتقليل |
| ه_الفطر |
| تمهيد |
| صبر کےمواقع |
| قانون اجر |
| وعا كى اہميت |
| شيطان كاكمر |
| |

| rra | كثرت تلاوت | Y++ | ه ورمقیان کاامِتمام |
|-------|--------------------------|------------|----------------------------|
| rrq | ترک معصیت | r+r | معصیت کے آثار |
| 1/1/4 | جامع جميع عبادات | r+r" | معرفت كامدار |
| rm | روزه کے متعلق معاصی | T+0 | تورطاعت |
| rar | اتلافتن | P+4 | صحبت كااثر |
| ALL. | تمازتر اوتح | r-A | ظلمت معصیت |
| 4147 | عبادت تلاوت قرآن | 711 | نور کی حقیقت |
| ra+ | تصحیح مخارج کی اہمیت | rim | ایک دکایت |
| roi | غرض پرتی | ric | مر دو دایدی |
| 101 | اتباع كي ضرورت | ria | طلب صادق كااثر |
| ray | اعتكاف كي حقيقت | rız | مقام صديق |
| 104 | منرورت فقه | riA | قبرش زيارت رسول المنطقة |
| 709 | وعظ وفنو کی کے اہل | 719 | عبديت كاغاصه |
| 14. | كتاب اور محبت اثر كا فرق | rri | عشاق کی شان |
| ryr | څود بيني کےمصرات | tte | مساوات اسلامی کاسبق |
| 444 | آ داب ماه رمضان | 777 | ق پری |
| 114 | ٨. احكام العشر الاخيره | 442 | اسلام دوی |
| 14. | فضيلت ماه رمضان | 117 | تنكبر كي صورت |
| 121 | نزول قرآن كريم | 779 | لدرت كاكرشم |
| 747 | سابقه كتب كانزول | 111 | ضدا كامقابله |
| 121 | عالم غيب كي وسعت | 177 | توركية الار |
| 121 | کشف اور بزرگی | rrr | ذات الانوار |
| 740 | ليلة القدر | 427 | انسانون كي فرشتون برفعنيلت |
| 124 | جعد کی نضیات | rma | انسان کی حیثیت |
| 129 | تلاوت كى ابميت | 772 | ماه رمضان کی عبادات |

| Miss | حسنات وسيئات | t /A+ | حال وقال كا فرق |
|-------------|------------------------|---------------|---------------------|
| MIN | زبان کے گناہ | MI | نبت انعكاى |
| MZ | افطار على الحرام | M | فيض رساني كي صورتين |
| MIA | شیطان کے جال | ram | منصب برايت |
| MIA | رزق میں برکت کے متی | PAY | الجيت ارشاد |
| 1719 | ہم اور جاری تمازیں | MZ | تصورتيخ |
| mrr | تراوی کے منکرات | PAA | ثواب قرأت قرآن |
| mrr | شبينه كى بدعات ومنكرات | 79+ | اجرت تعليم |
| mre | اجرتأ قرآن خواني | 191 | اجرت امامت |
| 77 2 | چراغاں کی بدعت | 791 | و بدارخداوندی |
| P12 | نیاس کی اغراض | rar | حظة تلاوت قرآن |
| 779 | ختم کی مشاکی کے مشرات | 790 | تزغيب ذكرالله |
| PP - | بوم عید کی بدعت | 194 | طلب اللي كي ترغيب |
| rrr | سيو يول كي مخصيص | 194 | ترتيب سلوك |
| rrr | وعظ كاخلاصه | P+1 | تفريط متعلمين |
| ٣٣٣ | ١٠ _ عصم الصنوف | 141 | ا فراط معلمین |
| 773 | نامها عمال | P*+ P* | فعنيلت عشره اخيره |
| PPY | کھانے پینے کی رعایت | 8 ™•1™ | شب قدر کی فضیلت |
| PT2 | حق تعالی کی توجہ | r-0 | فعنيلت اعتكاف |
| rra | جنت کا کام | P*-Z | فغيلت خدمت والدين |
| mlu+ | أيام خاليه | 1" •A | ماه رمضان کی فضیلت |
| PTPI | آسان عبادت | P*+9 | بعلم واعظول كالمنطى |
| 444 | سلب قدرت گناه | PII | تزبه کی ترغیب |
| ٣٣٣ | نيتصوم | 1711 | ختم قرآن اورشيرين |
| דוויוי | انثال وجوديير | MIL | ۹_ تطهیر رمضان |
| | | | |

| PA1 | سبولت اورطبيعت | FILA | روزه اورتمازش آسانی |
|--------------|------------------------|-------------|-------------------------------|
| ۳۸۲ | ورودشریف کی اہمیت | rrz | روح صوم |
| የ ለሶ | وانت گصائی | TTA | روزه اور مشغولیت |
| ۳۸۵ | رعايت جذبات | 414 | والدين كامحبت |
| TAZ: | محبت اوررتمت كانباه | ra. | عدم النفات اورخوف وحزن |
| ۳۸۸ | درود کی فضیلت | rar | قربحق |
| ۳۸۸ | مغفرت كاسامان | rar | انالله كي تعليم |
| 144+ | خلاصد بیان | 200 | موت مثل شادی |
| 191 | ١١ـ التهذيب | 1 02 | خوشی بقم اور عارف |
| rar | تز کیہ کے معنی | 109 | تذكره كااژ |
| 1-91- | نز کید باطنی | 109 | قضائل وبهيه |
| 44 b.4 | تزكينس | 1741 | احوال و کیفیات |
| 790 | اعمال شرعيه كي خاصيت | 9-9- | روزه اور کرانی |
| 190 | كيدنفس | *** | ماه رمضان اورزیادتی رزق |
| F'94 | نو نیق نعت | 247 | مصائب کی حکمتیں |
| 179 2 | دعویٰ کی مما نعت | rz• | سبل احکام |
| 1799 | مسافت معرفت | 121 | حضرت موی کے افسوں کی حکمت |
| 1799 | مدارنجات | 727 | روز وں میں تخفیف |
| (*** | تحقيقات جديده اورطاعون | 121 | حضورتان كي بدرعا |
| Y+ Y | وجم كالرثر | 724 | الل الله كالمات |
| سا ۱۴۰ | وحدة الوجود | PZA | مرزامظبرجانجال كالطيف المزاجي |
| r-0 | ام المعاصي | 129 | مقام مرزامظهرجانجالٌ |
| 1,- 4 | كلا في تقوى | PZ 9 | حضور کی غایت رحمت |
| 14.4 | تفريق وشفيد | PA. | ذلت اورعذاب جبنم |
| N. | امام كا فرض | ۲۸۰ | علين كناه |

| rrq | توجه کی اہمیت | ρ*+A | تراوت کاور حقاظ |
|----------|----------------------|--------|----------------------------|
| [f*]#*• | محبت اورادب | ۱۳۱۰ | حقاظ اورائمه كافرض |
| ושואו | اوقات نزع کے کلمات | ا۳ا | خرابیوں کی جڑ |
| 744 | ایمان کی رحمتی | MIN | مجابده اورموا دخييشه |
| المالمال | نشان قدرت | سواس | تهذيبنس |
| ۳۳۵ | ذ کرامتد کی دولت | ייוויי | شريعت كامقصود |
| MEZ . | خسوف اور نكاح | Ma | نغس کی مثال |
| MA | اختثام واكمال مجامده | MIA | تذلل للخالق تذلل للخالق |
| rrg | مجامِده کی آسانیاں | M2 | ترک لذات کا طریقه |
| ויוין | مصلحت البي | 1714 | ١٢_التهذيب |
| U. L. P. | مشامره جمال حق | P*** | مجامده کی اہمیت |
| P | بمار ساعمال | ۲۲۲ | ماه رمضان اورا یام شاری |
| ۳۳۵ | ندان طبعی کی رعایت | (**** | روزه دار کی خوشیاں |
| ٣٣٧ | انفثيام دمضان | rr_ | شيطان اورمومن |
| MA | فرائض اورقرب | MA | سب ايمان |



الصلوة

نماز کے متعلق بیر وعظ اار جب بے اسال می کوم بدشاہ بیر مجر صاحب متعلی گومتی ندی واقع لکھنو تخت پر کھڑ ہے ہو کر فر مایا، جو پونے چار گھنٹہ میں ختم ہوا۔ تعداد سامعین تخبینا دو ہزار تھی ہجمہ یوسف بجنوری ولد مردان علی نے قلمبند کیا۔

خطبة ما ثوره

يست بالله الرفان الرجع

الْحَمُدُ لِلْهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغُفِرُهُ وَنُوْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكُّلُ عَلَيْهِ وَنَعُودُ وَلَا لِهِ مِنْ شُرُورِ النَّهُ فَلاَ مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ سَيِّنَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يُهْدِهِ اللَّهُ فَلاَ مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُعْدِهِ اللَّهُ وَحَدَةً لَا شَيْكَ لَهُ وَمَنْ يُعْدِهِ اللَّهُ وَحَدَةً لَا شَرِيْكَ لَهُ وَمَنْ يُعْدِهِ اللَّهُ وَحَدَةً لَا شَرِيْكَ لَهُ وَمَنْ يُعْدِهِ اللَّهُ وَحَدَةً لَا شَرِيْكَ لَهُ وَنَشْهَدُ اَنْ اللَّهُ وَحَدَةً لَا شَرِيْكَ لَهُ وَنَشْهَدُ اَنْ سَيِدَنَا وَمَوْلُنَا مُحَمَّدًا عَبُدُةً وَرَسُولُهُ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَنَا مِحْمَدًا عَبُدُةً وَرَسُولُهُ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَمَوْلِنَا مُحَمِّدًا عَبُدُةً وَرَسُولُهُ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَمَوْلِنَا مُحَمِّدًا عَبُدُةً وَرَسُولُهُ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَمَوْلِنَا مُحَمِّدًا عَبُدُةً وَرَسُولُهُ صَلَّى اللَّهُ مَنَ الشَّيْطُنِ وَعَلَى اللهِ وَاصْحَابِهِ وَمَارِكُ وَسَلِّمُ أَمَّابَعُدُ فَاعُودُ لَهُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ وَعَلَى اللهِ وَاصْحَابِهِ وَمَارِكُ وَسَلِّمُ أَمَّابَعُدُ فَاعُودُ لَا بِاللّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّحِيْمِ اللهِ وَاصْحَابِهِ وَمَارِكُ وَسَلِّمُ أَمَّابَعُدُ فَاعُودُ لَا بِاللّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّحِيْمِ اللّهِ الرَّحْمِنِ الرَّحِيْمِ .

قَدُ أَفُلُحَ مَنْ تَزَكَى وَذَكَرَ اسْمَ رَبُّ فَصَلَّى. (اللهُ اللهُ الماله)

تمهيل

یدوو آپیش بیں جواس کے بل پرسوں کے بیان بیل پڑھی گئی تھی۔ چونکہ وہ مضمون ناتمام رہ کیا تھا اس لئے اس کا تبتہ اس وقت بیان ہوتا ہے اور انفاق وقت سے وہ اس انجمن کے مناسب بھی ہے جس نے اس وقت وہ آپیش تلاوت کیس قَلْدُ اَفُلَحَ مَنْ لَوْ کَیْ دوسری وَ ذَکَوَ السَمَ رَبِّهِ فَصَلَّمی بہلی آیت کے متعلق پرسول بیان ہوا تھا۔ دوسری آیت کا بیان رہ کیا تھا۔ وہ اس وقت عرض کیا جائے گا۔

اس دوسری آیت میں حق تعالی نے آیت کے ختم پرفسٹی فرمایا جس کے معنی ہیں نماز پرجی۔
اس کے ترجمہ ہی ہے معلوم ہو گیا ہوگا کہ اس میں نماز کی فضیلت نہ کور ہے اوراس انجمن کی بھی یہی فرض ہے۔ چنا نچہ مولا تا کے بیان (لکھنو میں ایک انجمن ہے جس کے بہت ہے مقاصد ہیں ان میں سے اعلیٰ مقصد سے ہے کہ بذر لید واعظین کے لوگوں کو نماز کی تحریک کی جائے اورانجمن کی جانب سے تاواقفوں کو نماز سکھانے کا اہتمام کیا جائے۔ چنا نچہ حضر مت والا کے وعظ شروع

کرنے سے پیشتر المجمن کے اداکین میں سے ایک مولوی صاحب کھڑے ہوئے ہے اور انہوں نے افہمن کی بعض کا روائیاں لوگوں کو سنائی تھیں اور المجمن کا اعلیٰ مقصد نماز کی تعلیم اور اس کا اہتمام ہونا ظاہر کیا تھا۔ حضرت والانے بھی حسب موقع نماز ہی کے متعلق بیان فرمایا۔ حضرت کی تقریر میں مولانا کے لفظ سے وہی صاحب مراد ہیں جنہوں نے المجمن کی کارروائی سنائی تھی ۔ غالبًا بیدوعظ بھی المجمن ہی گاتھیں ہی گئے کہ سے ہوا تھا۔ کو کہ اہل المجمن نے حضرت والاسے ضاص اس بیان کے لئے شکھا تھا لیکن حضرت والا نے خود ہی حسب موقع اس بیان کو اختیار فرمایا تھا۔ ۱۳ جامع) سے معلوم نہ کہا تھا لیکن حضرت والا نے خود ہی حسب موقع اس بیان کو اختیار فرمایا تھا۔ ۱۳ جامع) سے معلوم ہوگیا ہوگا۔ پس میصون موقع کے مناسب ہوگا۔

اسراركلاماللي

ظاہراً یہ دونوں آبیتی مختصر ہیں مگر کلام اللہ ہونے کی وجہ سے ہرشخص جانتا ہے کہ یہ آبیتی جامعیت ہیں تام ہوں گی۔ان کے اندر کی تیم کی تی ہیں ہوسکتی۔اس وجہ سے الفاظ کے اختصار پر نظر نہ کی جائے بلکہ اس کی حقیقت ہیں فور کیا جائے اور بیرجی تعالیٰ کے کلام کی خصوصیت ہے کہ نہایت مختصرالفاظ ہیں ہوئے بلکہ اس کی حقیقت ہیں فور کیا جائے اور بیرجی کی مراد ہم کو معلوم نہیں۔ مگرا یہ کی کلمات ہوتا۔ کوجی تین جن کی مراد ہم کو معلوم نہیں۔ مگرا یہ کلمات ایسے بھی ہیں جن کی مراد ہم کو معلوم نہیں۔ مگرا یہ کلمات مون وہی ہیں جن کی مراد ہم کو معلوم نہیں۔ مرافی میں جام افادہ نہیں جادر شان کے اندراد کا م کا بیان ہے بلکہ ان ہیں خاص صرف وہی ہیں جن کو تھی جی اور بعض کے نزد یک وہ کور دفقیہ ہیں ہے ہیں کوجی خاص اسرار ہیں جو حضور کو منطق نہیں ہوائیکن چونکہ عام افادہ ان کے متعلق نہیں ہوائیکن چونکہ عام افادہ ان کے متعلق نہیں ہوائیکن چونکہ عام افادہ ان کے محلی ہیں کہ وہ بالکل تو تحفی نہیں ہیں گر ہیں عامض کہ موجود ہیں اور اس کے اندر بعض مضاہیں ایسے بھی ہیں کہ وہ بالکل تو تحفی نہیں ہیں گر ہیں عامض کہ موجود ہیں اور اس کے اندر بعض مضاہیں ایسے بھی ہیں کہ وہ بالکل تو تحفی نہیں ہیں گر ہیں عامض کہ ہونے میں وہ بہت ہی تہل ہیں۔ ان جس کوئی غرض نہیں ہیں گر ہیں عام عقل کم ہونے وہ بہت ہیں۔ ان جس کوئی غرض نہیں ہیں گر ہیں کوان کے بچھنے بیں دفت واقع نہیں ہوئی۔ کام انتدائی تر میں وہ بہت ہی تہل ہیں۔ ان جس کوئی غرض نہیں ہوئی۔ کی کوان کے بچھنے بیں وہ جس وہ تہت ہی تہل ہیں۔ ان جس کوئی غرض نہیں ہوئی۔ کی کوان کے بچھنے بیں وہ جس وہ تہت ہی تہل ہیں۔ ان جس کوئی غرض نہیں ہوئی۔ کی کوان کے بچھنے بیں وہ تو تو نہیں ہوئی۔ کلام انتدائی تر مات اس مرشمال ہیں۔ ان جس کوئی غرض نہیں ہوئی۔ کی کوان کے بچھنے بیں وہ جس کی کوان کے بچھنے بیں وہ جس کوئی غرض نہیں ہوئی۔ کی اس میں اس جو بالکی تو تو نہیں ہوئی۔ کی کوان کے بچھنے بیں وہ تو تو نہیں ہوئی۔ کلام انتدائی تر مات میں ہوئی۔ کی کوئی کے بھونے نہیں ہوئی۔ کی کوئی کے بھونے کی کوئی کی کوئی کے بھونے کی کوئی کے کوئی کے کوئی کے بھونے کی کوئی کے بھونے کی کوئی کے کوئی کے کوئی کوئی کوئی کے کوئی کے کوئی کے کوئ

اس پر بیشبہ نہ ہو کہ حق تعالیٰ تو قرآن کی نسبت بیفر ماتے ہیں کہ ہم نے اس کوآسان کر ویا ہے پھراس کے اندرامور مخفیہ وغامضہ کیسے ہو سکتے ہیں۔ کیونکہ آسان کرنے سے بیمراد ہے کہ ہر حصہ ہل ہو۔ جو جزومہل ہے اس کوخود بیان فر مادیا۔ چنانچہ ارشاد فر ماتے ہیں۔ ولقد بسّونا القُوْآن لِلدِّنْ مَرِيمَ نَقِرآن كُوفِيحَتَ كَ لِيَا اللَّهُوَآن لِلدِّنْ اللَّهُوَآن لِلدِّنْ اللَّهُو للذكو كوجو برها يا تواى وجدے كه بيصرف فيحت حاصل كرنے كے اعتبارے مبل ہے۔ اگر مطبقاً مبل ہوتا توصرف ولقد يسو ما القو آن فرماتے للذكوكى قيدند برهائے۔ اقسام كلام اللى

خوب سجھ لیج کے کلام اللہ میں دوسم کے ضمون ہیں۔ایک تو مضمون ہیں جہ کے کہام اللہ میں دوسم کے مضمون ہیں۔ایک تو مضمون ہیں دفت نہیں۔ ہر خض سجھ جینے حصہ میں میصفون ہے وہ تو نہایت آسان ہے کہ کو بھی اس کے بچھنے میں دفت نہیں۔ ہر خض سجھ سکتا ہے۔ چنا نچہ و لقلہ یسو فا القو آن للذکر (اور ہم نے قرآن کوا تیا ہمل کیا گیا ہے کہ ہر خص اس سے القیت صلی کر سکتا ہے اور واقعی وہ حصہ ہی ایسا ہی کہ کی کو بھی اس کے بچھنے میں کی شم کی دفت نہیں ہوتی مثل سکتا ہے اور واقعی وہ حصہ ہی ایسا ہی کہ کی کو بھی اس کے بچھنے میں کی شم کی دفت نہیں ہوتی مثل تیا مت کا ہوتا ،عذاب ، ثواب کا پیاجاتا ، جنت ودوز نح کا موجود ہوتا۔ اس طرح اور عقا کہ جین کہ ان کوا ہی وض حت کے ساتھ بیان کیا ہے کہ ہر خص سجھ سکتا ہے بتلا ہے تو کہ ان امور کے بچھنے ہیں کی کوکیا دفت ہے اور انہی کا سجھانا مشرور کی نہیں ہے۔ اس وجہ سے دین کے دوجز وقر ار امور کے بچھنے ہیں کی کوکیا دفت ہے اور انہی کہ سجھانا ضرور کی نہیں ہے۔ اس وجہ سے دین کے دوجز وقر ار دیے جاتے ہیں۔ ایک اصول آلی فروع ۔ اصول تو وہ بی ہیں جن کا سجھانی طرور کی نہیں۔ بس دہا سے میں احتیا میں مضمون ہے اور دوسر اصفمون ہے دکام عامضہ کا جس میں اجتیا دکی صرور ت ہے۔ اس میں ہے جھانا صرور کی نہیں۔ ایک تو جاتی میں مضمون ہے اور دوسر اصفمون ہے دکام عامضہ کا جس میں اجتیا دکی صرور ت ہے۔ اس ایک تو جاتی میں میں جن کا دیا کہ جھانا صرور کی نہیں۔ ایک تو جاتی میں میں جن کا دیا کی میں جہانا میں وقت نہ ہو فی میں جن کا دیا کہ سے میں احتیا دکی صرور ت ہے۔ اس کے جا کیں یہ میں جن کا دیا کہ میں احتیا دکی صرور ت ہے۔ اس میں دیا دو میں ہیں جن کا دیا کہ دو جز قرآن میں میں جن کا سکتی دیا کہ میں دیا ہیں کہ کو کو کو کو کی دو جز قرآن میں میں احتیا دکی صرور ت ہے۔ اس میں دیا دور میں احتیا دکی صرور ت ہے۔

قوت استناطيه

برخض کافہم اس کے لئے کافی نہیں۔ اس کیلئے خاص فہم کی حاجت ہے۔ قرآن کے جتنے حصوں میں بیضمون ہے و مشکل ہے اورا حکام غامضہ کا سمجھنا اوران میں استغباط کرنا تو کیسے مشکل نہ ہوتا جبکہ معمولی خبروں تک کا سمجھنا دشوارہے۔

چنانچ کلام امتد میں حق تعالی نے منافقین کی شکایت فر ، نی ہے اس بناء پر کہ وہ لوگ امن وخوف کی خبریں من کرمشہور کر دیتے تھے اور رسوں اور اولی الامر کے حوالے ان کونبیں کرتے تھے چنانچ ارشادہے: وذا جآء هم امر من الامن او الخوف اذا عوابه ولو ردوه الى الرسول والى اولى الامر منهم لعلمه الذين يستبنطونه منهم.

کہ جبان کے پاس کوئی خبرامن کی باڈر کی پہنچتی ہے تو اس کومشہور کر دیتے ہیں اوراگراس کورسول سلی اللّٰہ علیہ وسلم اورا ہے اہل حکومت کے حوالے کرتے تو اہل شخفیق ان میں سے اس کی شخفیق کر لیتے (کہ یہ خبر قابل اشاعت ہے یانہیں)

سومنافقین کی سے کیفیت تھی کہ جیسی خبران کو پہتی مشہور کردیتے۔ بیند خیال کرتے کہ کون کی خبرعوام میں شاکع کردیتے حق تعیال ہے اور کولی نہیں۔ سب خبروں کو یک س شاکع کردیتے حق تعیال اس بات پران کی اس آیت میں شکایت فر باتے ہیں۔ افحاج آء هم امر من الامن او المنحوف افحا عو بعد (جب انے پاس امن یا خوف کی کوئی خبر پہنچتی ہے اسکومشہور کردیتے ہیں) آگے ان کومشور ہ ویتے ہیں ولو ر دوہ المی الموسول والمی اولمی الامر منہم لعلمه اللین یست بطو فلہ منہم ، کہ ان کو بول چا ہے تھا کہ رسول صلی اندعلیہ وسلم اوراولی الامر (یعنی جن کے یست بطو فلہ منہم ، کہ ان کو بول چا ہے تھا کہ رسول صلی اندعلیہ وسلم اوراولی الامر (یعنی جن کے باتھ ہیں حکومت کی باگ ہے اور وہ صاحب اختیار اور تج بہکار ہیں ان) کے حوالے کر دیتے۔ پس جن ہیں قبیل اشاعت ہیں یانہیں اور چی میں استعباط کرتے کہ آیا یہ قائل اشاعت ہیں یانہیں اور چی رہمنافقین ان کی رائے کے موافق محل کرتے۔

پس جب معمولی خبروں میں قوت استعباطیہ کی ضرورت ہے اور ہرخض اس کا اہل نہیں بلکہ اللہ استعباط کی طرف رجوع کرنے کی ضرورت ہے تو جوا دکام عامض اور دقیق ہیں۔ان میں کیے ہوسکتا ہے کہ ہرخض ان کو بجھ لے اور اہل استعباط کی طرف رجوع کرنے کی اس کو ضرورت نہ ہو۔ بھی وجہ ہے کہ احکام کے بچھنے اور اس کے اندراستعباط کرنے کو یام طور سے جائز نہیں قرار دیا گیا کہ ہرخض اس کو کرے۔ بس میہ حصہ قرآن شریف کا عامض ہے اور دوسرا جو تذکیر کا حصہ ہے جس میں ہرخض اس کو کرے۔ بس میہ حصہ قرآن شریف کا عامض ہرخض اس کو بھی سکتا ہے۔

قلبى توجه كى ضرورت

ای طرح ا دکام بھی درجہ اجمال میں آسان ہیں ۔لیکن درجہ تفصیل میں دشوار ہیں۔ دیکھئے ایک تو کلام اللہ میں بیہ ہے کہ نم زیز عو۔اس کے بچھنے میں تو پچھاخفاء نہیں۔ بیتو اجمالی درجہ ہے اورا کے نماز کی تفصیل ہے کہ لاحق کے کیا دکام ہیں مسبوق کا کیا تھم ہے گئی ہذا۔ تو اس میں اجتہ و
کی ضرورت ہے۔ اس کا سجھنا ہرا کیہ کا کا منہیں۔ اس کے سجھنے کے لئے خاص فہم کی حاجت ہے۔

یہ تو معلوم ہو گیا کہ قرآن شریف میں ذکر کا حصہ نہا بیت آسان ہے گراس کے نافع ہونے
کے لئے ایک چیز کی اور ضرورت ہے۔ وہ کیا ہے ، توجہ۔ جب تک توجہ نہ ہواس وقت تک اس کا کوئی
نفع نہیں ہوسکنا گووہ کتنا ہی آسان ہوا گر کوئی مختص بغیر توجہ کے ان آیات کا ترجمہ دیکھے تو وہ پھے بھی
نہیں ہوسکنا گووہ کتنا ہی آسان ہوا گر کوئی مختص بغیر توجہ کے ان آیات کا ترجمہ دیکھے تو وہ پھے بھی

مثلاً بازار جائے وہاں صدہ حکایات کان پی پڑتی ہیں جب لوث کرآتے ہیں تو خبر بھی خبیں رہتی کہ کیا ساتھا۔ تی کہ وہ حکایات سوچنے ہے بھی یا ذہیں آتیں۔ وجہ بھی ہے کہ ادھر توجہ ہیں۔

اس لئے اگر کوئی ترجمہ جانتا ہو گرالتھات شہوتو قر آن شریف کے حصر ذکر ہے بھی پورا نفع حاصل نہیں کرسکا۔ اس لئے حق تعالیٰ کی جگہ تو ارشاو فر باتے ہیں۔ لید ہو وا ایا تعہ کہ اس کی آیات ہیں تدبیر کریں۔ اور کسی جگہ فر بہتے ہیں لیند کو اولوا الالباب کے قتل والے لیسے مصاف معلوم ہوتا ہے کہ باوجود آسان ہوئے کہ تدبیر کی جاجت ہے۔ حاصل کریں۔ جس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ باوجود آسان ہوئے کہ تریر کی جاجت ہے۔ اس کانفع بدون اس کے پورا حاصل نہیں ہوسکا۔ چنا نچہ ہیں نے اس کومثال سے واضح کر دیا۔ قرآن شریف کے اندرایک موقع پرای کوتھریکا فرمایا ہے۔ وہ بیہ ہ

ان فی ذلک لذ کری لمن کان له قلب او القی السمع و هو شهید کهاس پیل تعیمت ہے اس شخص کے لئے جو (فہیم) دل رکھتا ہے یا (اگر زیادہ قہم ندہو) تو متوجہ ہوکر کان (بی) لگادیتا ہو۔

یہ آیت ہتلارہی ہے کہ بین علی موتوف علیہ ہے کہ قلب نہیم سے کام لے یا متوجہ ہوکر سنے کہ بدون اس کے نفع نہیں ہوتا۔ پس معلوم ہو گیا کہ قر آن کا وہ حصہ مشکل ہے جس میں ان احکام کا بیان ہے جن کے اندراجتہا دکی ضرورت ہے۔

آج کل کے مجتہد

بعض مدعی اجتهاداس زمانہ میں ایسے ہیں کہ صرف ترجمہ دیکھے کراجتهاد کرتے ہیں اجتهاد کیا بلکہ بوں کہتا جا ہے کہ تحریف کرتے ہیں۔ چنانچہ میں نے سنا ہے کہ ایک فخص نے بیرائے دی تھی کہ اب وضو کی ضرورت نہیں۔اس وجہ ہے کہ وضو ہے مقصود تطبیراعضا ہے اور ہم لوگ اس زمانہ میں ویسے بی صاف ستھرے رہتے ہیں۔اس لئے اب کیا ضرورت ہے وضوی۔ پہلے زمانہ میں کر دوغبار پڑتار ہتا تھا۔ میلے کہلے رہتے تھے اس لئے وضوی ضرورت تھی۔اب ہم آئینوں کے مکانوں میں رہتے ہیں۔گردوغبار پاس کوبھی نہیں آتا۔تواب وضوی کیا ضرورت ہے۔ بیان صاحب نے اجتماد کیا۔ یا تواس قدراجتماد کا زعم اور یااس طرف النفات بھی نہیں۔

چنانچے مولوی محرصین صاحب ایک بیرس کا قصد سناتے سے کداس نے ان سے بیکہا کہ علاء کو چا ہے کہ جمع ہوکر سود کی حلت کا فتو کی دے دیں۔ انہوں نے جواب دیا کہ بیعلاء کے گھر کی بات تھوڑا ہی ہے کہ جیسے چا ہیں پھیرلیں۔ سود کی حرمت تو کلام اللہ ہیں منصوص ہے۔ کلام اللہ کے خلاف کون جرائت کرسکتا ہے اس پر آپ جبرت سے پوچھتے ہیں کہ کیا سود کی حرمت قر آن شریف میں ہے ہم ہیں جود ہے کہ یہ مولو یوں کی گھڑی ہوئی با تیں ہیں۔

دیکھتے میں حال ہے ان لوگوں کی اجنبیت کا قرآن سے کہ اعلیٰ درجہ کی لیانت کے بیرسر تھے
اور مولوی بھی کہلاتے تھے محراتی خبر نہتی کہ بیقرآن کا مسئلہ ہے لیکن چونکہ مسلمان تھے اس وجہ سے
معلوم ہونے کے بعد اپنے منہ پرطمانچ مارے اور بہت نادم ہوئے۔ سوآج کل کے عقلاء وعویٰ
تواجتہا دکا کرتے ہیں محران کی اجنبیت کا قرآن سے بیرحال ہے۔

ایک اور قصہ ہے کی معقولی کا کران ہے ایک و فعد لوگوں نے کہا کہ پچھ بیان کیجئے۔ آپ نے نماز کا بیان شروع کیا۔ پچھ یا و تھا نہیں۔ بہت سوچ کر آپ نے فر مایا کہ آج کل لوگوں کا کیا حال ہوگیا ہے کہ نماز نہیں پڑھتے حالانکہ قر آن شریف میں ہے من توک الصلوة متعمد الفلا کفوران پرکی نے ان حضرت کو ملامت کی کہ آپ نے اسے (یعنی حدیث شریف کو) قر آن شریف میں کیے بتلادیا۔ تو آپ تجب سے فرماتے ہیں کہ کیا بیقر آن کی آب تہیں ہے۔

بیرحالت روگئی ہےاس زماند میں۔ بیجی خبرنہیں کہ بیقر آن کی آیت ہے یا حدیث ہے۔ اس حالت پراندیشہ ہے کہ قیامت کورسول انتصلی اللہ علیہ وسلم یوں نہ فر مانے لگیں:

يارب ان قومي الخذوا هذا القرآن مهجورًا.

کهاے میرے دب میری قوم نے اس قر آن کور ک کر دیا تھا۔

قرآن نه يزھنے كاببانه

معنی ہے تو غفلت بنتی ہی وہ جو بہل چیز ہے (لیعنی الغاظ قرآن)اس ہے بھی غفلت ہوتی چلی

ج تی ہے۔ چنا نچا ن کل کے بہت ہے عقلا کی رائے ہے کہ قر آن ٹریف کا پڑھنا بی فضول ہے۔
رام پور کا قصد ہے ایک صاحب کا بچہ قر آن پڑھتا تھا۔ ان کے ایک دوست نے جوانگریزی
کے بہت عامی تھے کہا کہ آپ اس لڑکے کوانگریزی پڑھا ہے۔ ان کے دوست نے اس پراٹکارٹیس کیا
بلکہ یوں کہا کہ بیقر آن پڑھ رہا ہے۔ آ دھا تو ہو چکا ہے آ دھا اور رہا ہے۔ وہ ختم ہوجاوے تو انگریزی
شروع کراؤں۔ وہ یو چھتے ہیں کہ آ دھا کتنے دنوں میں پڑھا ہے۔ انہوں نے جواب دیا کہ دو برس میں
۔ تو آپ کہتے ہیں کہ دو برس تو ضا کئے رئوں میں پڑھا ہے۔ انہوں نے جواب دیا کہ دو برس میں
۔ تو آپ کہتے ہیں کہ دو برس تو ضا کئے کرنی چھے۔ اب اور دو برس کیوں ضا کئے کرتے ہو۔

ان عقلاء نے کلام اللہ نہ پڑھائے کا ایک بہانہ نکالا ہے کہ کہتے ہیں ، ابی صاحب بدون مطلب سمجھے ہوئے پڑھتے ہے کیا فائدہ۔ اگر پڑھا جاوے تو معنی مطلب کے ساتھ پڑھا جاوے۔ صرف الفاظ رشے ہے کیا نتیجہ۔ اپنے نزویک بڑی فیرخوائی کی ہے گرفور ہے دیکھا جائے تو بیصرف نہ پڑھانے کا بہانہ ہے ۔ مقصود تو ہے نہ پڑھانا اوراس کا بہانہ بیہ تلاش کیا۔ اگر بہانہ بیس تو ترجے تو شائع ہوگئے ہیں پھرتر جمہ سمیت کیول نہیں پڑھاتے۔ ہاں اس دقت بہانہ نہ دیکھا جاتا بہانہ دیا تھ ہر کے ہیں تو نہ پڑھائے گرتر جمہ کے ساتھ پڑھائے لیکن دیکھا جاتا بہانہ دویے پڑھائے ہیں نہ دیر ھائے ہیں۔ اس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ یہ حضرات نہ ویک پڑھائے ہیں نہ ترجمہ سے پڑھائے ہیں۔ اس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ یہ حضرات نہ ویک ویکے ہیں نہ ترجمہ سے بڑھائے ہیں۔ اس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ یہ حضرات نہ ویک ویک ویک ہوائے ہیں نہ بڑھائے ہیں۔ اس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ یہ حضرات نہ ویک ہوتا ہے کہ یہ دیر ھائے گا۔

ترجمه يزعض كااصول

ہاں ترجمہ کی نسبت میں بیضرور کہوں گا کہ اگر ترجمہ پڑھایا جاوے تو خود مطالعہ کرنے کی اجازت نہ دی جاوے بلکہ کی واقف کارے سبقاً سبقاً پڑھاج وے اور جومضا مین وقیق ہوں ان کے اجمال پراکتفا کیا جاوے معلم بھی ان کی تفصیل نہ بیان کریں بلکہ اجمال کے ساتھ ان کامطلب بیان کردیں ۔ تفصیل کی کاوش نہ کریں ۔ جتنی بات بچھ میں آسکتی ہا اس کے بتلا نے پراکتفا کریں اور خود مطالعہ کرکے امتحان دے دیا کرو۔ استادے پڑھنے کی کیا ضرورت ہے۔ اگر کہا جاوے کہ اقلیدی بیچیدہ ہے۔ اس لئے است دے پڑھنے کی ضرورت ہے اور قرآن شریف ایس بیجیدہ ہے۔ اس لئے است دے پڑھنے کی ضرورت ہے اور قرآن شریف ایس بیجیدہ ہوں کہ تا تون بھی تو ایس کے اور خود اس کے استادے بر جے کی میں کہتا ہوں کہتا ہوں کہتا تون بھی تو ایس کے استادے بر جے کی میں ہوں و مقطی نہ کا مطالعہ بیجیئے ضرور آ ب اس کے بیجھنے میں نعطی کریں سے اور جو استادے پڑھے ہوں و مقطی نہ

کریں گے۔قانون دان ہی جانتاہے قانون کی یا توں کو۔

قانون کتاب کی ایک خاصیت بیہ ہوتی ہے کہ اس میں ایک امر کے متعلق ایک جگہ اجمالی ہوتا ہے دوسری جگہ اس کی تفصیل ہوتی ہے۔ اس طرح قر آن شریف میں بھی ایسا واقع ہوا ہے کہ ایک حکم کو دومقام سے تعلق ہے۔ ایک موقع میں تو اس کوا جمالاً بیان کیا ہے اور دوسری جگہ اس کی تفصیل کردی ہے جب تک تفصیل کے موقع کو سمجھے ہوئے نہ ہوگا تو یہاں کیا سمجھے گا اور کہیں ایسا ہے کہ پچھنفی لیاس موقع پر ہے اور پچھ دوسرے موقع پر پی اس کے بچھنے کی کیا ضرورت ہے کہ دونوں موقعوں کا علم ہو اور میہ بات واقف کار بی جان سکتا ہے کہ اس کاذکر کتنی جگہ ہوا ہے۔ خودمطالعہ کرنے والا کیا جانے گا۔ بس بیہ وگا کہ ایک موقع میں مجمل دیکھ کراس کو الجھن پیدا ہوگا کہ ایک موقع میں مجمل دیکھ کراس کو الجھن پیدا ہوگا کہ اور شکوک واقع ہوں گے اور میہ کھی کام اللہ بی جان سکتا ہے کہ اس کو الجھن پیدا ہوگا کہ اور شکوک واقع ہوں گے اور میہ کھی کلام اللہ بی کے ساتھ موقع میں جمل دیکھ کراس کو الجھن پیدا ہوگی ۔ اور شکوک واقع ہوں گے اور میہ کھی کلام اللہ بی کے ساتھ موقع میں جرفن میں ہی ہے۔

مثلاً فقدی ہے۔اس میں ایک مسلدہ جس کاتعلق دوباب سے ہے۔ایک باب میں مجمل ہے اورایک باب میں مجمل ہے اورایک باب میں اور کی تو کیا خود مجھ سکے ہے اورایک باب میں مفصل ہے۔ آتو جب تک دولوں موقعوں سے دا تفیت نہ ہوگی تو کیا خود مجھ سکے گا۔

ایک شافعی المذہب نے جمے نقت شافعی پڑھنا جا ہاتو ہیں نے انکار کردیا اور کہا کہ ہیں نے فقہ شافعی پڑھا ہی ٹہیں۔ شاید کوئی موقع اہیا ہو کہ ایک مسئلہ کا تعلق دوجگہ ہے ہوا ورایک موقع پر انتخصیل ہوا ور دوسر کی جگہ اس کی تفصیل ہوا ور ہیں اس تفصیل ہے واقف ہوں ٹہیں۔ پس بیل غطی کر پٹیھوں۔ اس لئے ہیں نے صاف کہددیا کہ آپ شافعی المذہب ہے پڑھے ۔ پس بی وجو ہا ہیں جن کی وجہ ہے ہیں کہنا ہوں کہ قرآن شریف کا ترجہ خودد کیے لین کائی ٹہیں ہے۔ کی حقق عالم ہیں جن کی وجہ ہے گئی ٹہیں ہے۔ کی حقق عالم ہے پڑھ لینا چاہے ۔ لیکن اس کے لئے اگر فرصت نہ ہوتو یہ تو نہ ہو کہ الفاظ کو بھی بے فائدہ مجھ کر چھوڈ دیا جائے کیونکہ فائدہ قرآن شریف کا معانی کے ساتھ تو خاص ٹہیں ۔ فائدہ کے اور اقسام بھی ہیں۔ ایک قتم کے انتفاء ہے مقسم کا انتفاء تو ٹہیں ہوتا (مطلب سے ہے کہ صفی سیجھنے کا فائدہ ہے۔ نرے الفاظ ہیں اس کے جاتے رہے ۔ الفاظ قرآن کا دوسرا فائدہ تو مشئل ٹو اب کہیں ٹہیں جاتا ہیا)۔ ہیں اس کے جاتے رہے کہ معنی آگرین کی خواں اقلیدس کی عبارت یاد کر کے امتحان میں کا میاب ہو جاتے ہیں ۔ حالا نکدہ مطلب کچھ بھی ٹہیں بچھے۔ بتلا ہے کہ اس صورت ہیں اقلیدس کے حض الفاظ جاتے ہیں ۔ حالا نکدہ مطلب کچھ بھی ٹہیں بچھے۔ بتلا ہے کہاں صورت ہیں اقلیدس کے حض الفاظ جاتے ہیں ۔ حالا نکدہ مطلب کچھ بھی ٹہیں بچھے۔ بتلا ہے کہاں صورت ہیں اقلیدس کے حض الفاظ جاتے ہیں ۔ حالا نکدہ مطلب کچھ بھی ٹہیں بچھے۔ بتلا ہے کہاں صورت ہیں اقلیدس کے حض الفاظ جاتے ہیں ۔ حالا نکدہ مطلب کچھ بھی ٹہیں بچھے۔ بتلا ہے کہاس صورت ہیں اقلیدس کے حض الفاظ جاتے ہیں ۔ حالا نکدہ مطلب کچھ بھی ٹہیں بچھے۔ بتلا ہے کہاں صورت ہیں اقلیدس کے حض الفاظ

ما دکرتے مفید ہوئے یاعبث ہوئے۔ ہرخص اس کومغید ہی کہےگا۔

فائدہ کی ایک شم ہی ہمی ہے کہ پاس ہوجائے خواہ مطلب کچھ بھی نہ سمجھے اوریہ نفع صرف الفاظ یاد کرنے سے بھی طاہر ہوجا تا ہے۔ تعجب کی بات ہے کہ قر آن شریف کے ساتھ ہمارا یہ برتاؤ نہیں۔اس کے الفاظ کا یاد کرنامحض برکار بچھتے ہیں۔

تلاوت کےفوائد

اب قرآن شریف کے الفاظ پر جوثمرہ مرتب ہوتا ہے اس کو بتلاتا ہوں۔ حدیث شریف میں ہے کہ قرآن شریف جب کوئی پڑھتا ہے تو ہر حرف پر دس نیکیاں ملتی ہیں تو جس نے کھیعص ایک مرتبہ کہا تو اس کے نامدا عمال میں بچاس نیکیاں کھی گئیں۔ تو کیا بیفا کدہ نہیں۔ گرمشکل بیہ کہ کوگ نفع کو مخصر بجھتے ہیں گفتا ہیں۔ جب اسے نہیں ویکھتے تو کہد دیتے ہیں کہاس میں بچھ نفع نہیں۔ حالا نکہ نفع اس میں مخصر نہیں۔ ایک اور نفع بھی ہے جس کو نفع آجلہ کہتے ہیں ہین آخرت کا نفع جس کو ثواب کہتے ہیں۔ گرچونکہ نفع عاجلہ عاجلہ مشاہد ہے کہ وہ آئھوں سے نظر آتا ہے اس کا نفع جس کو ثواب کہتے ہیں۔ گرچونکہ نفع عاجلہ عاجلہ مشاہد ہے کہ وہ آئھوں سے نظر آتا ہے اس کو تو نفع نہیں خیال کرتے۔
لئے اس کو تو نفع بچھتے ہیں اور ثواب ملنا مشاہد نہیں اس لئے اس کو تو نفع نہیں خیال کرتے۔

چنانچ بعض خواص تک کی زبان پر بیآ جاتا ہے جب کہ وہ کسی کوذکر و شغل کرتے ہوئے دکھتے ہیں تو کہتے ہیں تو کہتے ہیں کہ میں کام کرتے ہوئے ہیں استے دن ہوگئے کھی ہوا کچ معلوم بھی ہونے کہتے ہیں کہ میں کو نظر بھی آتا ہے۔اگروہ کہتا ہے کہ معلوم تو کچھ بھی ہوتا۔ تو کہتے ہیں کہ بھی ہونے لگا۔ یعنی کچھ نظر بھی آتا ہے۔اگروہ کہتا ہے کہ معلوم تو کچھ بھی ہوتا۔ تو کہتے ہیں کہ بس میاں تو اب اکٹھا کے جاؤ۔ گویا ان کے نزدیک تو اب ایس ہے قدر چیز ہوئی۔ بیس قدر افسوسناک بات ہے۔ سویہ تو اب نرے الفاظ میں بھی ہے۔ سوکیا تو اب نفع نہیں۔ بیدہ وہ لوگ ہیں جوالفاظ قرآن کو برم ھنافضول بچھتے ہیں۔

اہل علم میں ایک کمی

اب ایک وہ بیں جوالفاظ قرآن کوتو پڑھتے ہی ہیں اس کے ساتھ معانی کوجی پڑھتے ہیں۔
ترجمہ بھی جانتے ہیں اور اہل علم بھی ہیں مگران ہیں ایک اور بات کی کی ہے۔وہ یہ کہ تدبیر نہیں
کرتے لفظی شخیق تو بری کہی چوڑی کریں گے۔مثلاً قَدْ اَفُلَحَ مَنْ تَوَ کُنی (بامراوہ واجو شخص
(خبائث عقایہ واخلاق ہے) پاک ہوگیا) ہیں قلد حرف شخیق ہواور افلح ماضی کا صیغہ ہوا درمن اسم موصول اپنے صلے سے کر واعل ہے۔یہ ماری کہی چوڑی تحقیق کرلیں می محرحت تعالی

کامقعوداس ہے کیا ہے اس کی طرف النفات بھی نہیں۔قرآن شریف کواس نظرے دیکھتے ہی نہیں کہ میرہاری اصلاح کا نفیل ہے۔

اس کی مثال ایسی ہے کہ کس نے علیم محمود خال سے لیخ کھوایا اوراس کواس نظر سے دیکھنے لگا

کہ اس نسخ کا خط کیما ہے، دائر ہے کیسے ہیں۔ اس نظر سے نہیں دیکھا کہ اجزاء کیسے ہیں۔ مزاج کی

کیسی رعایت کی ہے۔ صرف بید یکھا کہ خوشخط ہے، دائر ہے خوب بنائے ہیں۔ اوراس پر کہنے لگا

کے محمود خان بڑے طعبیب ہیں، ان کے دائر ہے کیسے عمدہ ہیں اس ہے معلوم ہوگا کہ یہ خض نسخہ کی
حقیقت بی نہیں سمجھا۔ نسخہ کی حقیقت تو یہ ہے کہ مرض کے موافق ہو۔ اس سے اصلاح ہوتی ہو۔ نسخہ کواس نظر سے دیکھیا جا ہے۔

ای طرح الل علم قرآن کے الفاظ کی توخوب تحقیق کرتے ہیں محراس کا خیال نہیں کرتے کہ حق تعالیٰ کا اس سے مقصود کیا ہے بینیں دیکھتے کہ اس کے اندر ہمارے امراض باطن کے کیسے علاج کئے مجینے بیں اور ہم کواس سے نفع حاصل کرتا جا ہیں۔

د نیاوآ خرت کی مثال

اس وجہ سے بیس اس طرف متوجہ کرتا ہوں کہ اس آیت کا خصارالفاظ کی طرف نظر نہ کرئی
چاہیے۔ بلکہ بید کھناچاہیے کئی تعالیٰ نے اس کے اندرکیابات بتلائی ہے جس کا مخضر بیان ہے کہ
اس موقع پرتن تعالیٰ نے اصلی مطلوب کو بتلایا ہے کہ تمام مطالب اس کے اندر مخصر ہیں۔ وہ مطلوب کیا
ہے فلاح اور فلاح کا طریقہ بھی ارشاد فر مایا ہے۔ افلعہ بیس تو مطلوب کو بتا دیا کہ ہرا یک شخص کوفلاح
مطلوب ہوئی چاہیے اور من تو تھی بیس طریقہ ارشاد فر مایا۔ مطلب بیہ ہے کہ فلاح تو مطلوب ہوئی ہے۔
اور اس کا طریقہ ہے تو کہ یہ جس کوفلاح کا مل میسر ہوگئ تو اس سے بردھکر کوئی چیز ہیں ہو ہوئی۔
اور اس کا طریقہ ہے ترکید ہیں جس کوفلاح کا مل میسر ہوگئ تو اس سے بردھکر کوئی چیز ہیں ہو ہوئی۔
اب بیان اس کا ہونا چاہے کہ فلاح کا مل میسر وردت ہے بیانہیں ۔ اور اس کے بیان کی اس
لئے ضرورت ہے کہ بعض آوگ شیحت کرتے ہیں جس ہ معلوم ہوتا ہے کہ ان کے نزویک
فلاح کا مل کی ضرورت نہیں۔ چنا نے بعض لوگ شیحت کرتے پر کہا کرتے ہیں کہ بس جی جنت میں
فلاح کا مل کی ضرورت نہیں۔ اس میں اس کا فیصلہ کہ فلاح کا مل کی ضرورت ہے بیانہیں دنیا کے
فلاح کا مل کی ضرورت نہیں۔ اب میں اس کا فیصلہ کہ فلاح کا مل کی ضرورت ہے بیانہیں دنیا کے
فلاح کا مل کی ضرورت نہیں۔ اب میں اس کا فیصلہ کہ فلاح کا مل کی ضرورت ہے بیانہیں دنیا کے
فلاح کا مل کی ضرورت نہیں۔ اب میں اس کا فیصلہ کہ فلاح کا مل کی ضرورت ہے بیانہیں دنیا کے

واقعات ہے بتلائے ویتا ہوں۔ بیس کہتا ہوں کہ کوئی شخص بھی ایسانہیں ہے جسے دینوی امور میں فلاح کامل مقصود نہیں ہے حالا نکہ دنیا کوئی چیز نہیں ہے آخرت کے مقالبے میں۔

د نیااورآ خرت کی مثال ایس ہے جیے کوئی سمندر میں انگی ڈ بوئے۔ سوجیسی اس کوسمندر سے
نسبت ہے ایسی ہی د نیا کوآ خرت کے ساتھ ہے بلکہ حقیقت ہیں آئی نسبت بھی نہیں۔ محض تقریب
الی الفہم کی غرض ہے رسول اللہ صلی اللہ ملیہ وسلم نے بیمثال دی ہے د نیا کوآ خرت سے اس ہے بھی
زیادہ بعید نسبت ہے۔ کیونکہ د نیا محدود ہے اورآ خرت فیرمحدوداور محدود کو فیرمحدود سے نسبت ہی
کیا ہوسکتی ہے اوراس مثال میں نسبت محدود کی محدود کے ساتھ ہے (انگلی کی تزی بھی محدود
اور سمندر بھی محدود ہے)۔ سودومحدود شے کے اندروہ تقاوت نہیں ہوسکتا جو کہ محدود اور فیرمحدود
کے اندر ہوتا ہے۔ لیس بیر حقیقی مثال نہ ہوئی۔ گر چونکہ اورکوئی مثال لوگوں کے فہم ہے قریب نہیں
اس لئے اس پراکتفافر مایا۔ سود نیا آخرت کے مقابلہ میں یہ نسبت رکھتی ہے۔

تو کل کی صورت

گر پھر بھی ہم دنیا کے مقاصد میں لوگوں کی حالت و کیھتے ہیں کہ بھی ان کوایک حالت پر قاعت نہیں ہوتی جب تک درجہ کمال حاصل نہ کرلیں۔ بلکہ اس ہے بھی بڑھ کر چاہجے ہیں۔ چنا نچہ رات دن لوگوں کا اس بڑھل ہور ہا ہے۔ لیس جب دنیا کے مقاصد میں ہمارا سے برتاؤ ہو با وجود اس کی حقارت کے تو آخرت کے مقاصد میں ہمارا کیا برتاؤ ہونا چاہے۔ جو آخرت کے مقاصد ہیں معاملہ کرنا چاہے تفا وہ معاملہ دنیا کے ساتھ کیا جاتا ہے۔ و نیا میں تو جودرجہ بھی کمال ساتھ ہمیں معاملہ کرنا چاہے تفا وہ معاملہ دنیا کے ساتھ کیا جاتا ہے۔ و نیا میں تو جودرجہ بھی کمال کا حاصل ہواس ہے اور آگے قدم بڑھانا چاہیں گے اور آخرت کے بارہ میں سے معاملہ نہیں۔ بس اصل نماق تو ہر محفود ہوتی ہے کہ جو شے اس کو محبوب ہوتی ہے اس کا اعلیٰ درجہ اس کو مقعود ہوتا ہے اور جو شے متصود ہوتی ہے اس کی گئے ہے کہ خوشے اس کو کو شش کرتا ہے۔ لیس جب آخرت کی فلاح کا مل درجہ پر مقصود ہے۔ کو کی فیم ایک شے معاملہ ہے تو پھر کیسے کہ ہے تھے ہیں کہ آخرت کی فلاح کا مل درجہ پر مقصود ہے۔ کو کی فیم ایک شے معاملہ ہے تو پھر کیسے کہ ہے ہے ہی کہ تر تو نیج ڈرائے تو اس کو اس شے کا طالب تھوڑا ہی کہیں گے۔ کو حاصل کرنا چا ہتا ہوگر اس کے طرق سے گھرائے تو اس کو اس شے کا طالب تھوڑا ہی کہیں گے۔ خوشل پر بھر دسہ کر کے بیٹھ جائے تو اس کو گئی کا طالب نہیں کہ سے ہے۔ رجاوہ ہے کہ اسباب جمع کے فضل پر بھر دسہ کر کے بیٹھ جائے تو اس کو گئی کا طالب نہیں کہ سے ہے۔ رجاوہ ہے کہ اسباب جمع

كركے اميد دارد ہے۔

اس ہے بھی آیک اور موٹی مثال ہے۔ آیک مخص اولا دکا طالب ہے اور چاہتا ہے کہ صاحب
اولا دہو۔ موظاہر ہے کہ طریقہ اس کا یکی ہے کہ نکاح کرے اگر بیار ہوتو علاج بھی کرے اور پھر
اولاد کا امید وار بے ۔ یہ تو ہے رجا اور ایک مختص ہے کہ یہ تو چاہتا ہے کہ اولا دہو گر نکاح نہیں کرتا۔
بزرگوں کے پاس جاتا ہے کہ اولا وہونے کی دعا کر دیجئے۔ وہ جواب بید دیتے ہیں کہ اول نکاح
کرو۔ خدا کرے گا اولا دبھی ہوگی۔ تو وہ کہتا ہے کہ اولا دتو چاہتا ہوں گر نکاح کا جھیڑا بھی ہے نہیں
کہ جاتا تو اس کو یوں جواب دیا جائے گا کہ عادة اللہ ای طرح جاری ہے کہ امہاب ہے جمع کرنے
پر تمرہ مرتب ہوتا ہے۔ اب وہ نظیر دیتا ہے کہ حواعلیہ السلام و سے ہی پیدا ہوئی تھیں ہیں بھی چاہتا
ہول کہ ای طرح اولا وہوجائے یا کوئی عورت تمنا کرے کہ میرے اولا دیبدا ہواور نکاح نہیں کرتی
ہول کہ ای طرح اولا وہوجائے یا کوئی عورت تمنا کرے کہ میرے اولا دیبدا ہواور نکاح نہیں کرتی اور چاہتی ہے کہ بلا باپ کے پیدا ہوئے شے۔ پس

بات بہے کہ تن تعالی عادۃ مستمرہ کے موافق کام کرتے ہیں اوراحیا نا اس کے خلاف بھی قدرت خلا ہر کرنے کے لئے دکھا دیتے ہیں۔اگروہ کم کہ حق تعالی قا درتو ہیں کہ بلا نکاح کے اولا و وے دیں ۔ تواس کے جواب میں بیکہا جائے گا کہ بیشک وہ قا در ہیں کہ بلا اسباب کے پیدا کر دیں مگرآ پ کوانہوں نے اجازت نہیں دی ایسے اسباب کے ترک کرنے کی ۔

خلاصہ بیکہ جو تحفی نکاح تو نہ کرے اور اولا دکا خواہشند ہووہ اولا دکا طالب نہیں۔ اسی طرح جو تحفی فلاح کا طالب نہیں اور اس کو تو کل کا دعویٰ جو تحف فلاح کا طالب نہیں اور اس کو تو کل کا دعویٰ کرے اس اسلام کورٹ کرنا جائز نہیں۔

توكل اوركارعقبي

جولوگ تو کل تو کل کاسیق وردزبان رکھتے ہیں ان صاحبوں نے آخرت ہی کے ساتھ یہ معاملہ کیا ہے۔ دنیوی اسباب جمع کرنے میں تو کل نہیں کرتے۔ اس میں تو بڑے جست و چالاک ہیں۔ ان کے جمع کرنے میں کوئی کسرنہیں چھوڑتے۔ باوجود یکہ حق تعالی نے روزی کی ڈ مدداری میں کرلے چنا ٹیجار شادفر مایا:

وما من دآبة في الارض الاعلى الله رزقها. (كرزين بركوني طني والأبيل محرالله بر

اس کارزق ہے) اوراس میں کوئی قیدطلب وغیرہ کی نہیں لگائی اور جہاں آخرت کا ذکر کیا ہے وہاں مقید کیا ہے سمی کے ساتھ ۔ چنانچہ ارشا دفر مایا ہے:

ومن ارادالآخرة وسعىٰ لها سعيها

کے جس نے آخرت کا ارادہ کیا اوراس کے لئے سعی کی ۔ لیعنی ہم ذمدداری نہیں کرتے۔ سن لوجو نیک عمل کرے گا جنت بیس جائے گا۔

تعجب ہے کہ جس میں ذ مدداری کی ہےاس میں تو کل کوعیب سیجھتے ہیں اور جس کی ذ مدداری نہیں کی اس میں تو کل اختیار کرتے ہیں۔

بس جی جوبات جس طرح اپنی سجھ میں آئی اس طرح کرلی۔ انبیا علیہم السلام بھی صرف امور دنیوی میں سے اسباب ظلیہ کوترک کردیتے ہیں۔ اسباب قطعیہ کووہ بھی ترک شہیں کرتے۔ کھانے کوترک نہیں کرتے کیونکہ وہ تو اسباب قطعیہ سے ہاں انہوں نے تد اہیر معاش کوچھوڑ ویا گیونکہ وہ اسباب قلیہ سے ہمولا تا فرماتے ہیں۔

> اہل تو کل تو ہے بھی ہیں تمرا کسی چیز ہیں تو کل اختیار کیا ہے کہاس میں تو کل درست جہیں۔ قلب **واعمال کا تعلق**

بہرمال اللہ تعالیٰ نے اس مقام پراسباب فلاح آخرت کو بیان کیا ہے بلکہ میں ترقی کر کے کہتا ہوں کہ مطلق فلاح کے اسباب بیان کئے ہیں۔ (صرف آخرت ہی کے نہیں) کیونکہ فلاح کے اندرکوئی قید نہیں لگائی پس وہ عام ہوگی فلاح د نیوی کوبھی۔اور فلاح کوذکر کرکے پھراس کے طریقے ہٹلا دیئے ہیں جنکے اختیار کرنے سے اخروی دنیا کی فلاح بھی میسر ہوتی ہے۔(چٹانچہ تم وعظ کے قریب پیمضمون مفصلاً فہ کورہے)۔

پی ارشاد ہے قد افلح من تزکی و ذکر اسم ربه فصلی۔ یہاں تین اعمال بیان کے ہیں۔ ایک تزکی ایک مراد لے سکتے ہیں۔ ایک تزکی ایک ذکر اسم ربہ فصلی۔ یہاں ہی مراد لے سکتے ہیں۔ ایک تزکی ایک ذکر اسم ربہ ایک صلی ۔ یہاں پر تزکیہ سے عام بھی مراد لے سکتے ہیں۔ ذمائم باطنی سے بھی تزکیہ ہواور معاصی جوارح ہے بھی گردد مرک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ ذمائم باطنی سے یا کی مراد ہے۔ چنانچار شاد ہے:

ونفس وما سو ها فالهمها فجورها وتقواها قد افلح من زكها

(اور سم ہے انسان (جان) کی اور اس ذات کی جس نے اس کو درست بنایا پھراس کی بدکاری اور پر بیز گاری (دونوں باتوں کا) اس کو القاء کیا یقیناً وہ مراد کو پہنچا جن نے اس (جان) کو پاک کرلیا)

ذریحها میں مفعول کی ضمیر نفس کی طرف ہے کہ نفس کا تزکیہ کرلیا۔ اس آیت میں تقریح ہے اس بات کی کہ مدار فلاح کا تزکیہ نفس پر ہے اور فلا ہر ہے کہ نفس کا تزکیہ اور اس کی پاک ذمائم باطنی کے از الدے ہوتی ہے۔ کیونکہ نفس بلا واحل انہیں کے ساتھ متصف ہے نہ کہ اعمال جوارح کے ساتھ متصف ہے نہ کہ اعمال جوارح کے ساتھ۔ بس اس کا تزکیہ بھی انہی ذمائم ہے ہوگا۔ لہذا اولی ہے کہ یہاں بھی ذمائم باطنی ہی ہے تزکیہ مراد ہو۔ گراس کا بیر مطلب نہیں کہ فلا ہری اعمال کی ضرورت نہیں جیسا کہ بعض لوگ آج کل تزکیہ مراد ہو۔ گراس کا بیر مطلب نہیں کہ فلا ہری اعمال کی ضرورت نہیں جیس کہ خوا ہر ضروری ہیں۔ اگر یہ مقصود ہوتا تو آگے وَ ذَکرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلْمی کیوں فرماتے بلکہ مقصود ہیہ کہ نفس کا پاک کرنا

اک طرح ایک موقع پریز کیھم فرمایا ہے تواس ہے بھی ای قرینہ سے تزکید نفس مراو ہے کیونکہ اصل چیز تو تزکیہ باطن ہی ہے۔اگر تزکیہ باطن اصل چیز نہ ہوتی تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم حدیث میں بدکیوں فرماتے۔

الغنى غنى النفس. مُحَوِّقُسُ كَاعْمَاسِ

اس کا بیمطلب نہیں کہ غنا ظاہری کوئی چیز نہیں بلکہ مطلب ہیہ کہ اصل غنا تو نفس ہی کا ہے اور جب نفس میں غنا ہوتا ہے تو پھر ویسے ہی افعال صاور ہوتے ہیں۔ ای طرح بیمطلب نہیں کہ تقویٰ ظاہری کوئی چیز نہیں بلکہ مطلب ہیہ کہ تقویٰ کی جڑتو قلب میں ہے اور جب تقوی قلب میں ہوتا ہے تو افعال بھی اجھے ہی صاور ہوتے ہیں۔ بخل ف اس کے کہ اگر تقویٰ قلب میں نہ ہوگا تو اس کے کہ اگر تقویٰ قلب میں نہ ہوگا۔

غرض خوب سمجھ لیجئے کہ جب قلب کی اصلاح ہوجاتی ہے توانگال بھی درست ہوجاتے ہیں۔ سواصل قلب ہی کی اصلاح ہوگی مگراصلاح قلب سے درس انگیال ہوجائے کا بیر مطلب نہیں کہ بعد اصلاح ہوجائے کا بیر مطلب نہیں کہ بعد اصلاح ہوجائے کا کرنا سہل ہوجائے گا بینی قبل اصلاح سے جوانگ ل مشکل تھے وہ بعد اصلاح ہوجا وی بیل مشکل تھے وہ بعد اصلاح سے آسان ہوجا وی سے مگر قصد کی بھر بھی ضرورت رہے گی۔اصلاح کا تو بس ات ہی اثر ہوتا ہے کہ اصلاح کے توارش میں ہوجا وی کے جوانگ کی تو بس ات ہی اثر ہوتا ہے کہ اصلاح کے توارش ہوجا وی کے بیری باتوں کا چھوڑ نا باوجود قصد کے بھی نہایت دشوارتھ۔اصلاح کے بعد ہوتا ہے کہ اصلاح ہوتا ہوتا ہوگی اصلاح شدہ ہوتے ہیں ان میں اور جواصلاح شدہ نہیں ہوتے ان میں بعد آسان ہوگیا۔ جولوگ اصلاح شدہ ہوتے ہیں ان میں اور جواصلاح شدہ نہیں ہوتے ان میں

بس میں فرق ہے کہ تصدرتو سب کو کرنا پڑتا ہے۔ ریاضت نفس

گرجن لوگوں کی اصلاح ہو چکتی ہے ان کا کام تو معمولی قصداوراشارہ بی سے چلتا ہے اور جنہوں نے اپنی اصلاح نہیں کی ہوتی ان کوبرے کاموں کے چھوڑنے بیں پخت مجاہدہ کرنا پڑتا ہے اور بڑی دشواری ڈیش آتی ہے۔

اس کواکی مثال ہے بیجھے۔ مثلاً ایک عورت سر سے کوگلی۔ نفس کا تق ضا ہوا کہ اس کود کھے لو اگر قلب کی اصلاح ہوگئی ہے ہے بیجی نفس کورو کئے کے لیے ارادہ کی تو ضرورت ہوگی مگر تھوڑے قصد نفس کوروک سے جی بیں۔ ذراسا اشارہ کا فی ہے اورا گراصلاح نہیں ہوئی ہے تو باوجود قصد کرنے کے بھی نفس کے روک جے جی بی خت دشواری چیش آئے گی اور جولوگ بیہ سمجھے ہوئے جی کہ اصلاح ہوجانے کے بعد نفس میں گناہ کا تقاضا ہی نہیں رہتا سو سے بالکل غلط ہے۔ ہاں وہ تقاضا ضعیف ضرور ہوجاتا ہے کہ اگر د بایا جائے تو نہایت آسانی ہے دب جاتا ہے اور جس نے اصلاح

نہیں کی ہوتی اس کو تقا نہا نہایت شدید ہوتا ہے اس کے روکنے میں نہیں یہ وشواری پیش آتی ہے۔
اب میشہ جاتارہا کہ جب تقاضا اصلاح شدہ اور غیراصلاح شدہ دونوں کو ہوتا ہے پھر دونوں میں فرق کیا ہوا اور جب دونوں برابر بیل تو پھر ریاضت کی حاجت کیا ہے سویش نے دونوں بیل فرق بتلادیا۔
ریاضت کردہ کی مثال ایس ہے جیسے شائستہ گھوڑ ااور جس نے مجاہدہ نہیں کیا اس کی مثال ایس ہے جیسے شریر گھوڑ ا ۔ سوار اگر ما ہم ہوتو شائستہ گھوڑ سے کواگر وہ شوخی کرے ذرا سااشارہ کافی ہوجا تا ہے بیلان شریر گھوڑ ا ۔ سوار اگر ما ہم ہوتو شائستہ گھوڑ ہے کواگر وہ شوخی کرے ذرا سااشارہ کافی ہوجا تا ہے بخلاف شریر گھوڑ ہے کے کہ اس کے درست کرنے میں ماہر کو بھی بڑی کلفت پیش آتی ہے شہروار اپنے زور سے قابو میں لے آئے وہ اور بات ہے گر دفت ضرور ہوگی بخلاف شائستہ گھوڑ ہے کے کہ وہ آسانی سے قابو میں لے آئے وہ اور بات ہے گر دفت ضرور ہوگی بخلاف شائستہ گھوڑ ہے کے کہ وہ آسانی سے قابو میں آجا تا ہے بیفرق ہے نفس کی ریاضت اور عدم ریاضت میں ۔

ر ہامیلان معاصی کی طرف موہ دونوں کو ہوتا ہے۔ایا کوئی شخص بھی نہیں کہ اس کو میلان نہ ہو ہاں قبل ریاضت واعید تو کی ہوتا ہے۔اس لئے اس کاروکنا مشکل ہے اگر طاقت ہے یا ہر نہیں صرف وشواری ہے اورنفس اس دشواری کو گوارا نہیں کرتا مشلا نگاہ کا نیچا کرتا کہ پیطبیعت کو بہت گراں ہوتا ہے ۔نفس اس گرانی کا تخل نہیں کرتا ہیں وہ اس کی طرف نگاہ کر لیتا ہے اور کہتا ہے کہ پھر تو بہ کرلیں گے ۔بخلاف ریاضت کے کہ داعید تو ہوتا ہے مگر ہوتا ہے ضعیف۔ اور پھر ریاضت سے مدافعت کی تو ت پیدا ہوجاتی ہے بہت زیادہ۔اس لئے وہ بہت آسانی ہے اس کی مدافعت کرسکتا ہے کہ داعید شعیف ہے اور قوت دافعت کرسکتا ہے کہ داعید شعیف ہے اور قوت دافعہ کر تے ہیں۔ ہوتز کید نفس کا جو تھم کیا گیا ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ اس میں اگر ہے کہ اس کی اعانت سے موتز کید نفس کا جو تھم کیا گیا ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ اس میں اگر ہے کہ اس کی اعانت سے موتز کید نفس کا جو تھم کیا گیا ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ اس میں اگر ہے کہ اس کی اعانت سے موتز کید نفس کا جو تھم کیا گیا ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ اس میں اگر ہے کہ اس کی اعانت سے مطاہرا عمل کی میں اس واجو شخص (خبائت عقائد واخل تی ہے) پاک ہوگیا)

باقی اس کا یہ مطلب ہر گزنبیں کے صرف یہی کافی ہے طاہری اعمال کی ضرورت نبیں جیسا کہ بعض لوگوں کا عقیدہ ہے کہ فقط قلب کا درست کر لین کافی ہے۔ یہ اوگ شریعت کو منہدم بلکہ منعدم کرنا چاہیے جی کیونکہ تمام شریعت بھی یہی ہے کہ جی کیونکہ تمام شریعت بھی یہی ہے کہ تعمیر المطاهر و الباطن (طاہر و باطن دونوں کی اصلاح ہو) اوردونوں کی اصلاح ہو) اوردونوں کی فرورت بھی ہے ۔ یعض وجوہ سے اصلاح باطن کی اور بعض وجوہ سے اوردونوں کی اور بعض وجوہ سے اوردونوں کی اور بعض وجوہ سے الملاح باطن کی اور بعض وجوہ سے

اصلاح ظاہر کی۔ بہرحال صرف اصلاح وطن کافی نہیں کہ ظاہر ترک کردیاجا ہے۔ اور باطن ہی یرا کنف کیا جائے اورا کر بیشلیم بھی کرلیا جائے کہ بھش باطن مقصود ہے تھر بیضر ور مانتا پڑے گا کہ: الشنى اذا ثبت ثبت بلوازمه . جب كوتى چيزياتى جائے گى توا يخلوازم كيراتھ يائى جائيگى یہ قاعدہ مسلمہ ہے۔ مثلاً آ فآب کے لئے دھوپ لازم ہے جب آ فآب نظے گا تو دھوپ ضر در ہوگی یا تین کےعدد کوفر د ہو نالا زم ہے۔جہاں تین کا عدد صاوق آئے گا وہاں فر دہمی صادق آئے گا۔ جب بیمعلوم ہو گیا توسمجھ لیجئے کہ جس وقت باطن میں کوئی کیفیت ہوتی ہے تو ظاہر میں اس کاظہور ضروری ہے مثلاً کسی کے دل میں غصر کی کیفیت ہوتو چبرہ پراس کا اثر ظاہر ہوتا ہے کہ چبرہ سرخ ہوجاتا ہے اور کیس کرون کی چول جاتی ہیں۔ یاکس کے دل میں کسی کی محبت ہوتی ہے ۔ نو ظاہر میں اضطراب کے آٹار پائے جاتے ہیں۔ رہیں ہوسکتا کہ دل میں نو محبت ہوا ورمحبوب کی طرف نه ہاتھ بڑھے نداس کی طرف یاؤں چلے ۔ایسا ندسنا اور نہ دیکھا جب دنیا کی محبت میں میہ حالت ہے جو کہ تہا یت معیف ہے تو پھر خدا تعالی کی محبت میں جو کہ اقویٰ ہے ، یہ کیسے ہوسکتا ہے کہ قلب میں توحق تعالیٰ کی محبت ہواور زبان پر کلمات مدح کے آتے ند ہوں اور عجزو نیاز ظاہر نہ ہوتا ہو۔ اگرابیا ہے کے ظاہر میں آثار نہیں یائے جاتے توسمجھا جائے گا کداس کوخدا تعالیٰ کی محبت ہی نہیں ہے۔ ورندمکن نہیں کہ قلب میں خدا کی محبت ہوا وراس کے سامنے جمکا نہ جائے اس سے ا بت ہو گیا کہ ظاہر لازم ہے باطن کے لئے۔ پس جب تزکید باطن ضروری ہوا تو تزکید ظاہر بھی بوجہ لا زم ہونے کےضروری ہوا۔لبتدا تز کیہ باطن وتز کیہ ظاہر دونوں ضروری ہوئے۔اور کوضروری دونوں منھے مگر چونکہ اصل تزکیہ تس ہی تھا۔ اس لئے قلد افلح من تنز کمی (بامراد ہوا جو شخص (خبائث عقائدوا خلاق ہے) یاک ہوگیا) میں اس کو بیان کیا۔

درستی جوارح وقلب

آ گے ہے و ذکر اسم دبہ فصلّی۔ (اورایٹ رب کا نام لیتار ہااور نماز پڑھتارہا) پہلی آ یہ بین تو تزکیہ باطن کا ذکر تھا اوراس کے اندرایک ظاہر۔ اور جو من وجہ ظاہراور من وجہ باطن ان دونوں کے تزکیہ کا ذکر ہے۔ وہ اس طرح کیمل تین حال سے خالی نہیں۔ یا تو اس کا تعلق باطن سے ہا افعال جوارح سے اور یا زبان سے۔ اعمال جوارح تو ظاہر ہیں اور زبان برزخ ہے کیمن وجہ تا ہم اور من وجہ باطن ہے۔ دما بھی۔ چنا نچہ اگر منہ بندر کھو تب تو زبان باطن میں داخل ہے اور جو منہ

کھول دوتو ظاہر۔ایک توبیدہے زبان کے من وجہ ظاہرادر من وجہ باطن ہو۔ ان رادکا میں بھی چنا نچہ دکھے لیجے آب ووئن (تھوک) اگر طنق کے اندر چلا جا سے توروزہ نہیں ٹوٹن اس سے معلوم ہوتا ہے کہ سے باطن ہے اورا گرکوئی چیز چکھ کہ تھوک دی جائے تو اس سے بھی رازہ نہیں جا ہا۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ سے ظاہر ہے اور چونکہ زبان برزخ ہاں لئے جداگا نہ تتم قرار دی گی۔ لیس و فی کو اسم د بعہ فصلی (اور اپ رب کان م لیتا ربا اور نم زبر حتا رہا) میں تزکیہ ظاہر اور تزکیہ ماہو بین الظاہر والباطن (مین برزخ) دونوں کاذکر ہوگی ہے۔ صلّی تو ظاہر کے متعلق جو کہ من وجہ ظاہراور من وجہ باطن ہے۔ غرض متعلق ہوکہ من وجہ ظاہراور من وجہ باطن ہے۔ غرض دونوں قتم کے تزکیہ کا تو اسم د بعد زبان کے متعلق جو کہ من وجہ ظاہراور من وجہ باطن ہے۔ غرض دونوں قتم کے تزکیہ کا ترک اس آبیت ہیں آگیا۔

پس خلاصہ دونوں آیتوں کا میہ ہوا کہ باطن کی بھی اصلاح کرو اورظا ہر کی بھی اصلاح کرو اورا کسی چیز کی بھی اصلاح کرو جومن وجہ ظاہراورمن وجہ باطن ہے حاصل میہ کہ تیمن فعل ہیں۔ اے زبان کی درتی ہے۔جوارح کی درتی ہے۔قلب کی درت

پس مطلب بیبواکہ ہرشم کی درتی کرواور چونکہ وہ امورجن کی درتی ہونا چاہیے استے ہیں کہ ہروقت زبان ہے اکی تفصیل یا در کھنا مشکل تھا اور بدون استحضار در کی کا اجتمام مشکل اس لئے اس کے سے بجائے اس ساری فہرست کے ذکو اسم دبہ فصلی (اوراپے رب کا نام لیتار ہااور نماز پڑھتارہا) فرما دیا۔

رازاس کا بہے کہ اس میں ایک ضابطہ بنل تے ہیں کدا گراس کوا ختیار کرلو گے تو ہا سانی تمام امور کی درتی پر قادر ہوجاؤ کے ۔ ان سب کی فہرست یا در کھنے کی ضرورت نہ ہوگی۔

برائیوں ہے بیخے کا طریق

اس کاظریقہ یہ ہے کہ اگراپنا اصل کام ذکر کو مجھو کے تو خود بخو دسب چیزوں ہے رک جاؤ کے ۔ فعطی جماری یہ ہے کہ ہم اصل کام ذکر کوئیں بچھتے۔ ای واسطے برائیوں میں میتلا ہوج تے ہیں در نہ برائیوں میں جتا نہ ہوں۔ مشائخ برائیوں کے چھوڑنے کی تعلیم تفصیلاً بھی کرتے ہیں گرسب سے مہل میطریقہ ہے کہ ایپ اصل کام تجویز کر لے پھراس میں مشغول ہونے ہے خود ہی سب مہل میطریقہ ہوئے ہے خود ہی سب برائیاں جھوٹ جائیں گی ۔ وہ اصل کام ذکر ہے ۔ تو جو چیزیں اس میں مخل ہوں گی خود بخو دان سے برائیاں جھوٹ جائیں گی خود بخو دان سے برائیاں جھوٹ جائیں گی ۔ وہ اصل کام ذکر ہے ۔ تو جو چیزیں اس میں مخل ہوں گی خود بخو دان سے برائیاں جھوٹ جائیں گی ۔ وہ اصل کام ذکر ہے ۔ تو جو چیزیں اس میں مخل ہوں گی خود بخو دان سے انقہاض ہوگا تو بقد رضر ورت ہوگا اور ضرورت اسے کہتے ہیں کہ بدون اس کے ضرر ہونے گے۔

مثلاً نوکرکوکوئی ایسا کام بتن نہ ہے ۔ استہ بتنائے گا تو ضرر ہوگا۔ بیضر درت ہے بس اس کوتو وہ اختیار کرے گا اورا کی ہے مشغدہ کے طور پر باتیں ہائکن سویہ غیرضر دری ہیں جو شخص ذکر کواصلی کام سمجھے گا وہ بمعی اس میں مشغول نہ ہوگا۔

غور کرنے ہے معلوم ہوتا ہے کہ ذیاد ہ حصہ لوگوں کے دفت کا ایسے ہی تصول میں صرف ہوتا ہے۔ چنا نچہ مجلسوں میں دوست شنا جیٹھتے ہیں تو زیادہ دفت کا ہے میں صرف ہوتا ہے۔ صرف اس میں کہ کہیں کی خبریں بیان کرتے ہیں۔ قصہ قضا یا کا ذکر کرتے ہیں۔ کسی پراعتراض کرتے ہیں۔ کسی کی برائی کرتے ہیں۔ ان چیز دں کو لوگوں نے اپنا مشغلہ بنارکھا ہے۔

فاص کراہل علم جوجتلا ہوتے ہیں تو وہ اس میں عوام سے برسے ہوئے ہیں کیونکہ عوام الناس کوتو خبر بھی نہیں ہوتی کہ یہ معصیت ہے اور انہیں معلوم ہوتا ہے کہ یہ معصیت ہے اور پھر کرتے ہیں۔ غرض براشغل اہل علم کا غیبت ہے اور فیبت بھی کس کی ابرار کی کہ اکثر ان کے یہاں علاء اور صلحاء کی برائیاں ہوتی ہیں۔ ہم لوگوں کی حالت افسوس کے قابل ہے۔ ساری خرابی ہی ہے علاء اور صلحاء کی برائیاں ہوتی ہیں۔ ہم لوگوں کی حالت افسوس کے قابل ہے۔ ساری خرابی ہی ہے کہا نچھ کہ انہ بتال کی۔ چنا نچھ کہاں طرف توجہ نہیں کرتے کہ بہرا الصلح کام کیا ہے۔ اللہ تحد کی الجھی تھ ہی ہتال کی۔ چنا نچھ ارش دفر مایا ذکو اصدم دیدہ فصلی کے ذکر کواصلی کام بھی ہوتمام برائیاں تھوٹ ہو کہیں گ

اہل علم کی نازک حالت

یہاں ظاہراً بیرمناسب معلوم ہوتاتھ کہ بول فرماتے ذکر ربعہ فصلی لفط اسم کیوں بڑھایا۔ وجداس کی ریہ ہے کدا گر ذکر ربہ فرماتے تواس میں بعض سالکیین کو بیشبہ ہوتا ہے کہ فدا کو کیسے یادکریں کیونکہ یادکر تا سوتوف ہے تصور پر اور تصور بیزامشکل ہے کیونکہ ان تک جمارے ذہمن کی رسائی کہاں ہوسکتی ہے ان کی توبیشان ہے۔

اے برتر از خیال و تیاس و آمان و وہم وزہر چه گفته ایم و شنید یم وخواندہ ایم وخواندہ ایم وخواندہ ایم وخواندہ ایم وخواندہ ایم وفتر تم م گفت و بہ بیان رسید عمر مہم کفت و باندہ کیم وخواندہ کیم وخیاں و مان وہم سے برتر ہیں۔ وراس لیے بھی کہ جو یکھ ہم نے بڑھا اور منا ہے۔ وفتر تمام ہو گیا اور عمرا نہا کو بھی گئی ہم ایسے پہلے ہی وصف رہے ہیں)

اور بیشان سیمی در تصور ذات اورا مخنج کو مادر آید در تصور مثل او (اس كے ذات كي تسور ميں كبال تنج أئش ہے كداس كے مثل كا تصور آسكے)

اس پرایک حکایت یو ، آئی کہ جب حضرت حاتی صاحب ہجرت کر کے جم شریف میں پہنچے تو وہاں ایک شیخ مثنوی کا در س دے دہ ہے ۔ حضرت بھی شریک در س ہوکر سننے گے۔ وہ شیخ اس شعر کا مطلب بیان کر رہ ہے شے گرمان کے نیز میں کنج کو تھا۔ جیسا کہ اور نسخہ مطبوعہ ہے۔ ای کے موافق وہ مطلب بیان کر رہ ہے شے گرمعن نہیں بنتے ہتے۔ وہ جنکلف اس کو بنارہ ہتے۔ حضرت نے اس تقریر پر اعتراض کیا تو وہ نفا ہو گئے اور فرمانے گئے کہ اگر یہ معنی غدط میں تو صحیح معنی آپ فرماد یجے ۔ حضرت نے فرماد یجے ۔ حضرت نے فرماد یجے ۔ حضرت نے فرماد یکے درس ہو جھے والے سے ناخوش ہو جو اور اس سے تا خوش کہ یہاں میں قاعدہ ہے کہ بو چھے والے سے ناخوش ہو جو ایک ہے ناخوش میری بچھ میں نہیں آئی تو صاف کہدد ہے ہیں کہ میری بچھ میں نہیں آئی تو صاف کہدد ہے ہیں کہ میری بچھ میں نہیں آیا اور پو چھنے پر برانہیں مانے ۔ تب انہوں نے کہا کہ اس بات تو بہی ہے کہ میری بچھ میں نہیں آیا اور پو چھنے پر برانہیں مانے ۔ تب انہوں نے کہا کہ اس بات تو بہی ہے کہ اس کا مطلب میری بچھ میں نہیں آیا در جو بھنے پر برانہیں مانے ۔ تب انہوں نے کہا کہ اس بات تو بہی ہے کہ اس کا مطلب میری بچھ میں نہیں آیا در وہ بھڑ ک کئے کہ بیننگ ای طرح ہونا جا ہیں ۔

نفس کی شرارت

نوض بیرکہ ذکر رمہ فرمانے سے بعض لوگوں کو بیشبہ ہوتا ہے کہ ذات حق کا جب تصور نہیں ہوسکتا تو اس کی یاد کیے ہوسکتی ہے ۔ بعض سالکین کو اس قتم کے خطرات پیش آتے ہیں اور سیسب شیطان کے حمیمے بہائے بیر کہ وہ خدا کی یاد ہے روکنا جا ہتا ہے۔

مجھے اس پرایک حکایت یاوآئی۔ایک شخص میر نے پاس کمی بات کے لئے تعویذ لینے آئے۔ میں نے ان سے کہا کہ دعا کر وہیں بھی دعا کروں گا کہنے لگے کہ ہم ری زبان اس قائل کہاں ہے۔ میں نے کہا کہ کلمہ بھی پڑھتے ہو یانہیں۔آپ کی زبان کلمہ کے قابل تو ہا اور کلمات و مائے کے قابل نہیں۔اور میں نے کہا کہ ایمان افعنل ہے یادعا۔ جب نا پاک زبان سے ایمان کا کلمہ پڑھ سے ہوتو مجرد عامیں کیوں عذر کرتے ہو کلمہ میں کیول نہیں مذرکیا کہ ہمری زبان اس قابل کہاں ہے۔

بس بچھ بھی نیں شیط ن نے راہ مارا ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ تس آرام ہے ہتا ہے اور دعا ہیں ہے کلفت ۔ اس کئے صرف عویز تو طلب کرتے ہیں کہ ایک ہار لے کرے فکر ہوجاتے ہیں اور جو کی ہے کلفت ۔ اس کئے صرف عویز تو طلب کرتے ہیں کہ ایک ہار لے کرے فکر ہوجات ہیں اور جو کچھ پزھنے کو ہتلاؤں تو اس و نیم کرتے فلا ہر ہیں تو یہ بات واضح کی ہے کہ ہم اس تو ہل کہ ال ہیں مگر واقع میں نمس کی شرارت ہے۔ جیسا کہ بیان کیا گیا کہ نفس آرام طلب ہے اور تعویز میں پچھ

کرنا پڑتائیں لے کر باز و پر باندھ میا اس چھنی ہوئی۔اور پڑھنے میں ہے مصیبت۔وقت صرف کرنا پڑتا ہے۔اس لئے پڑھنے ہے اور دیا ہے گھیراتے ہیں۔

اس طرح بہت ہے لوگ: اکر سامک جب ان پر خطرات بچوم کرتے ہیں قان کے دل میں خیاں جم جاتا ہے کہ ذکر سے فائدہ کی ہوا کہ خطرات بھی قطع نہیں ہوتے شیطان ان کے اس قدر چیجے پڑار ہتا ہے کہ اس کے دس وس کی وجہ سے ذکر جھوڑ دیتے ہیں کہ جب بغیر وساوس کے ذکر ہوتا ہے نہیں تو پھر ذکر کرنا ہی بیکار ہے جیسے لوگوں نے قرآن نٹریف کے ساتھ مٹل کیا ہے اور خیال جمالیا ہے کہ جب معنی نہیں سیجھے تو قرآن نئی کوچھوڑ دو۔ س کی توایک مثال ہے کہ اگر کسی کی اولا د برصورت ہوتو اس کا گلا گھونٹ دو۔ یہ کتنی بڑی تعظی ہے بیبودہ حرکت ہے۔

غرض کے ذکرامتہ کو بعض لوگ اس لئے بیکا سیجھتے ہیں کہ ضدا تک ہماری رسائی سیے ہو علی ہے۔
پھریاد کہاں۔ اہل سلوک تک اس میں مبتلا ہیں۔ اس واسطے تی تعالی نے اس جگدا ہم کالفظ آیت میں برحا دیا کہ اس میں کا ذکر نہیں ہے تو اسم کا تو ممکن ہے وربعض جگہ قر آن شریف میں ذات کے ذکر کر حادیا کہ اگر میں فاذکو و نی اور کہیں صفت کے ذکر کولائے ہیں جیسے والذکو و بک فی نفسسک مطلب ہے کہ ذات کا تصور نہ ہوئے قو صفات کا سہی۔ اگریہ جی نہ ہوتو اسم اور لفظ ہی کا سہی۔ اگریہ جی نہ ہوتو اسم اور لفظ ہی کا سہی۔ اگریہ جی نہ ہوتو اسم اور لفظ ہی کا سہی۔ اگریہ جی نہ ہوتو اسم اور لفظ ہی کا سہی۔ اگریہ جی نہ ہوتو اسم اور لفظ ہی کا سہی۔ اگریہ جی تو سفات کا سہی۔ اگریہ جی نہ ہوتو اسم اور لفظ ہی کا سہی۔ اگریہ جی تو سفای ذکر ہے جی ق

طلب صادق كااثر

بعض کوشبہ ہوتا ہے کہ نماز پڑھی مگر اڑنہیں ہو ۔ میں کہتا ہوں کہ نماز سے قصد ہی نہیں کیا اثر ہونے کا اور جب قصد ہی نہ ہوتواس کے بارہ میں یوں فرماتے ہیں۔

انلز مكموها وانتم لهاكارهون كرجب تم اعراض كرتے بوتو بهم يجي تيس ليت پھرتے۔ حضرت طلب بوئی چاہے۔ جب طلب ہوئی ہوان كى بيعن بيت بوئی ہے۔ من تقرب الى شر اتقربت اليه ذرا عاومن تقرب الى ذرا عا تقربت اليه باعا الحديث

لینی جب کوئی ایک بالشت میری طرف آتا ہے آو میں ایک ہاتھ اس کی طرف جاتا ہوں اور جو لیے مسد احمد ۱۳۰۲ ۴ ، الترعیب والنو هیب معمدری ۴ ۴۰۱ ، کو العمال ۱۱۷۹ ایک ہاتھ، تا ہے تو میں ایک ہائے دوہاتھ ہو تا ہوں۔ اور جو پیادہ آتا ہے تو میں دوڑ کر آتا ہوں۔

لیخی انسان کے مسافت قطع کرنے ہے کہ ہوسکنا گر جب یہ تصدکرتا ہے تو خدا تعالی اس سے بورکراس کو مقرب بنا لینتے ہیں۔ بس انسان کو چاہیے کہ جو پھر اس ہے ہو سکے دہ کرتار ہے۔

لیمنی شیطان کا دعو کہ ہے۔ خوب بچھ لینج کہ اول ریا ہوتی ہے پھرعادت ہوجاتی ہے پھرعبودت چن نچ مشاہدہ کر لینج کہ اول اول جب کی کو نماز میں الم بناتے ہیں تو وہ خوب بنا بنا کر پڑھتا ہے کہ مقتد یوں کو چھا معلوم ہو گردہ چاردن کے بعداس طرف النفات بھی نہیں رہتا۔ دیا ہمیشہ ریانیس رہتی۔

دو مرے یہ کہ جوریا بلاقصد کے ہوتو یہ اس کے دورکرنے کا مکلف ہی نہیں ہی ریا کے دورکر سے ہیں۔ ایک صورت ریا دومری حقیقت ریا۔ یہ صورت ریا کو حقیقت ریا ہے۔

دو در جے ہیں۔ ایک صورت ریا دومری حقیقت ریا۔ یہ صورت ریا کو حقیقت ریا ہمیشہ این ایا تا ہے۔

میں کہتا ہوں کہ جب وہ تمہارے اختیارے بیدائیس ہوئی ہے قواس میں حرج کیا ہے۔

میں کہتا ہوں کہ جب وہ تمہارے اختیارے کی ریا کی۔ تو میں نے کہا کہ بلاتصد ہے بابالقصد ماختیاری ہیں ہوئی حقیرا ختیاری ہے بیا قصد ماختیاری ہے بیا قیرا ختیاری ہوئیس نے کہا کہ بلاتصد ہے بابالقصد ماختیاری ہے بیا تو اس میں کوئی حرج نہیں۔

وسوسها وراس كاعلاج

حتی کداگر کفر کا بھی وسوسہ آئے اس میں بھی حرج نہیں۔ چتا نچد دیکھتے کہ صحابہ رضی اللہ منہ منے ایک باتیں نے ایک دفید حضورصلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت ہیں شکایت کی تھی کہ ہمارے قلب ہیں ایک باتیں آتی ہیں کہ جل کرکونکہ ہوجانا گوارا ہے محران کا زبان پر لانا گوارا نہیں۔ اس ہے معلوم ہوتا ہے کہ کفر کے وسوسے ہوں گے حضورصلی القدعلیہ وسلم نے س کر قر مایا: المحمد لله اللہ ی دد احر ہ اللی الوسوسة (کرخدا کا شکر ہے کہ اس کی کوشش وسوسہ بی کے اندر محدود کردی) اللی الوسوسة (کرخدا کا شکر ہے کہ اس کی کوشش وسوسہ بی کے اندر محدود کردی) ہیں جب کہ وسوسہ فریمی معزنیں تو وسوسہ یہ تو کس درجہ ہیں بھی معزنیں ہوسکتا ہیں اس کا علاج یہ ہے کہ کام کے جائے بچھ پرداہ نہ کر ہے شیطان کے وسوسہ ڈالنے کی طرف بچھ خیال نہ کر ہے۔ کا رخود کن کار بے گانہ کن (اپنا کام کرود وسرے کا کام مت کرو)

ذکر میں اگنا اپنا کام ہے۔ وسوسہ آنا نہ آتا پنا کام نہیں۔ اپنے کام میں لگنا چا ہے۔ اور جوا پنا فریمیں۔ اپنے کام میں لگنا چا ہے۔ اور جوا پنا کے مسئد احمد ان میں اگنا چا ہے۔ اور جوا پنا

فعل نہیں ہے۔اس میں کیول مشغول ہوئے کے دہ مخل مقصود ہے۔

اس کی اسی مثال ہے کہ ایک شخص بادشاہ کاطلبیدہ جارہا تھا۔ کسی حاسد کو خبر ہوئی وہ راستہ میں جا کھڑا ہوا۔ جب بیدوہاں ہے گزرا تو اس نے پوچھا کہ کہاں جاتے ہو۔ اس نے کہا کہ باوشاہ کے در بار میں جارہا ہوں۔ اس نے بادشاہ کی شن میں گتا خی شروع کردی اگر بیہ بادشاہ کا عاشق ہوگا ہوا دیا جا در بادشاہ کی طاقات کا طالب ہے تو گتا خی سنے اور اس کے جواب دیے میں مشغول شہوگا بلکہ سیدھا چلا جانے گا۔ حتی کہا گر وہ کان میں مندلگا کر گالیاں دے گا تب بھی ادھر ملتفت نہ ہوگا ۔ کیونکہ حاسد کی غرض اس سے بہی ہے کہ اس مشغور میں مندلگا کر گالیاں دے گا تب بھی ادھر ملتفت نہ ہوگا ۔ کیونکہ حاسد کی غرض اس سے بہی ہے کہ اس مشغور میں اس کورگالوں تا کہ در بار کی حاضری کا وقت جاتا رہ اور بیہ بادشاہ کی عظایا ہے محروم رہے۔ سواگر بیشن ہوش سے کام لے گا تو بجھ لے گا کہ بیات کی طرف النفات نہ بیاس لئے شرارت کر دہا جاتے ۔ اس طریقت سے بیادشہ ہ تک ہوئے جائے گا اور گت خی کرنے والا اند کرے اور سیدھا چلا جائے ۔ اس طریقت سے بیادشہ ہ تک ہوئے جائے گا اور گت خی کرنے والا اند رئیس بہنے سک اس کو مقصود بھی حاصل ہوج ہے گا اور ان تکلیف دہ کلم ت سے بھی نجات رئیس بینے سک اس کو مقاور کی خواب دیے میں لگ گیا اور آئر می خص اس کی با تول کے جواب دیے میں لگ گیا اور ترام وقت اس میں صرف ہوں تہ کی اور آئر می خص اس کی با تول کے جواب دیے میں لگ گیا اور ترام وقت اس میں جو جو کے گی اور آئر می خواب کی جو بات کی اور آئر می خواب دیے جو بات کی جو بات کے جو بات کے جو بات کے جو بات کی جو بات کے دو بات کی جو بات کی گا اور ان تکلیف دہ کلم وقت اس میں موقا کے دو بات کے حواب دیے میں لگ گیا اور ان تکلی کی اور آئر ہوگا کہ باور شاہ کے قر

ای طرح شیطان وساوس ڈال کرقرب الی سے محروم رکھتا ہے۔ سوجوشخص وسوسے فکر میں مشغول ہوجاتا ہے وہ ترقی سے رک جاتا ہے اور جواس میں مشغول نہیں ہوتا ترقی کرتار ہتا ہے حتی کہ منفوط ہوجاتا ہے وہ ترقی سے اور جب مقام قرب حاصل ہوتا ہے تو وساوس بھی منفطع ہوجاتے ہوجاتے ہیں کیونکہ در بار میں شیطان کا دخل کہاں اور ای لئے ہزرگوں نے وساوس کا ملاج تجویز کیا ہے عدم النف ت یعنی وساوس کی طرف النفات ہی نہ کرے۔ اس کے سوااس کی تدبیر نہیں۔

غرض کہ جیسے ریا کا وسوسہ ریانہیں ای طرح کفر کا وسوسہ کفرنہیں اور نہ ندموم ہی ہے اور داز

اس میں ہے کہ وہ قلب کے اندر نہیں گومعلوم ایسا ہی ہوتا ہے کہ جیسے قلب کے اندر بن ہے۔

اس کی الی مثال ہے کہ جیسے آئینہ پر کھی جیٹی ہواور اس کا عکس آئینہ جیس پڑتا ہو۔ اس لئے

اندر کھی نظر آئی ہے حالا نکہ اندر نہیں ہوئی۔ ای طرح ایسے غیرا ختیاری وساوس قلب کے اندر نہیں

ہوتے ۔ قلب جی تو ذکر و محبت خداکی ہوتی ہا اور وسوسہ قلب کے باہر ہے۔ اہل اللہ کے قلب

ہیں اللہ کے سواکوئی چیز نہیں ہوتی اس سے سالک کوقلب تو می رکھن ج سے اور کام میں گے

ر ہنا چ ہے۔ اگرزیادہ ضحان ہوتو یوں در و تمجھ نے کداور یکھ نہ ہو ذکر تفظی تو ہے نہ ہے کہ اس فکر میں پڑجائے کہ کیموئی کیوں ٹہیں ہوتی۔ فرکر وفکر

قکر دو ہیں۔ ایک تو اصلاح کی فکر سویہ قوہ واجائے اور ایک ہے یک ہوئی اور کی فیات جس سے اصل کام بی جاتا رہا مثلاً اس کا اہتمام کی کہ قلب میں کوئی چیز نہ ہوادراس میں کامیا بی شہونے سے بید خیال کی کہ میرا ذکر بریکا رجا رہا ہے۔ بس ذکر ہی کوچھوڑ بیٹے۔ اور غور کرنے ہے بچھ میں آتا ہے کہ مثنا اس کا کبر ہے۔ یعنی اپنے کوائن ہو سمجھ شا ہے کہ میں اپنے عمل وذکر میں موجودہ حالت سے زیادہ کا مستحق تھا مگر مجھے کو ملائیس۔ استے وٹو ل ذکر کیا مگر ہنوز روز اول ہے۔ بس میہ کبر ہے ورشا کر سے مثن ہوتو اس کو بھی غذیمت سمجھتا کہ اس کا نام بیٹا تو میسر ہوگی اس واسطے تو کہتے ہیں۔ اوائے حق محبت عنایت ست زود ست وگر نہ عاشق مسکیں بھی خور سند است ادائے حق محبت عنایت ست زود ست کے میں سے فرنہ عاشق مسکیں بھی خور سند است (حق محبت کی ادائیگی مرام دوست کی عنیت کے میں سے فرنہ عاشق بیجارہ یونی نوش وخرم ہے)

(حق محبت کی ادائیگی سراسر دوست کی من بیت کے سبب بے در ندعاش بیچارہ یو نہی نوش وخرم ہے)

اگر تمام عمر ذکر لفظی ہی کی بابند کی ہوجائے تو بیجی غنیمت ہے ہم تواس کے بھی مستحق ندیجے فلوکر تا

تواضع میں بعض اوقات کبرتک رہنچ دیتا ہے۔ دیکھواس نے تواضع کی تھی کدا پنی حالت کو نشیر سمجھ تھا مگر پھر
رفت رفت بیدنیال جمایا کہ میں کام واتنا کرتا ہوں مگر میری حالت ایسی بری ہے۔ بس کبرتک بہنچ کیا

صحوات ری نماز کیا جماراروز و کیا۔ اس پرجوانعام بھی ہوجائے اسان مجھناچا ہے اب یہ خیال کرتا کہ مجھے زیادہ مانا چاہے تھا بینا قدری ہے۔ بہرطال لفظ اسم بڑھائے میں یہ کتاتھا۔
حضرت حاجی صاحب فرماتے تھے کہ زبان سے اللہ اللہ کرنے کو نیست سمجھے حقیرت مجھے۔ جب نمنیت سمجھے گا تو شکر کرے گا اور شکر پر بیدوعدہ ہے ۔ لئن شکو تم لازید نکم اس سے ترقی بوگ ۔ پس جس کی طب ہے اس تک پہنچ جائے گا خلاصہ یہ کہ ذکو اسم دبع میں تمام برائوں سے بچنے کی تدبیر بتلائی ہے کہ ذکر کرنے میں مشغول ہوج و سب برائوں سے بچے کی تدبیر بتلائی ہے کہ ذکر کرنے میں مشغول ہوج و سب برائیوں سے بچے کی قدیر بتلائی ہے کہ ذکر کرنے میں مشغول ہوج و سب برائیوں سے بچے کی قدیر بیار

اس آیت میں ایک نکته اور ہے۔ وہ بیاکہ فصلی میں تو قالائے اور ذکو اسم ربعیں واؤ۔ حالانکہ ہے دونوں جگہ عطف گراول میں واؤ کے ساتھ عطف کیا ہے اور دوسری جگہ فوء کے س تھے۔ مواس میں س طرف اش رہ ہے کہ تمی زیس وجو ہ سے تقصود انتظم ہے کیونکہ ذکر پر تماز کی اس طور پر تفریع کی ہے۔ اس طور پر تفریع کی ہے جس سے معموم ہوتا ہے کہ ذکر مقد مدین تمی رکا اور اصل مقصود تمازے۔ بس آیت کے معتی میے ہوئے کہ اور ذکر سے تماز کی قابلیت پیدا ں اور چرتم زیرا ھی۔

اس ہے تمازی مقصوریت عظمی معلوم ہوئی۔ دوسرے قد افلح من تر کی (بامراد ہوا جو شخص (خبا کث عقا کد واخل آ ہے) باک ہوگی) کے ساتھ و دکو اسم د به فصلی (اورا پنے رب کا تام بیٹار ہااور نماز پڑھتار ہا) کی قیدلگانے ہے اش رہ اس طرف ہے کہ گونز کیہ بہت بڑا کمل ہے گر بغیر نماز کے فلاح کے لئے کافی نہیں۔ ہاں جب کہ نز کیہ کے ساتھ نماز بھی پڑھی تو اس وقت سمجھ لیٹا جا ہے کہ ہماری فلاح ہوگئی۔ تم زسب عظمی ہے فلاح کا۔

آپ کو بیمی معلوم ہوا ہے کہ زان میں حی علی الفلاح کیوں فرمایہ ہوا ہے ہات ہے کہ فلا ح کیوں فرمایہ ہوا ہے کہ ذلاح کا آپ لفت کے تام ہے تبیر کی ہے تاکہ لوگ بجھ لیس کے تماز فلاح کا ایسا سیب ہے کہ گویا عین فلاح ہے اور مسیب کے قائم مقام ہے۔ پس جس نے تماز پڑھی تو یوں کہیں گے کہاں کو فلاح حاصل ہوگئی۔ اس سے تماز کا کیار تبدی ہت ہوتا ہے۔

تمازمين روزه

تفصیل اس کی بیہ کے کئی زائی چیز ہے کہ اس کو تمام اندال سے امتیاز حاصل ہے لین اندال فرعیہ سے کیونکد ایک عمل توابیا ہے جوسب کی اصل ہے ایمان وہ تو نماز ہے بھی افضل ہے ۔ کیونکہ اگرامیان نہ ہوتو نماز ہی نہیں ہوتی ۔ اور ایمان بلد نماز کے بھی مفید ہوجا تا ہے (مثلا انسان خلود فی النارہ نے جائے) اور نماز کا امتیاز دوسری عبدات سے بیہ کہ نماز بیس تمام عبددات موجود ہیں۔ اس کی مثال اس مرکب شیخہ کی ہے جس بیس تمام اجزائے مقیدہ کو جس کردیا گیا ہو۔ ایسا خمیرہ یا مجود ہیں خمیرہ یا مجود ہیں خمیرہ یا مجود ہیں خمیرہ یا مجود ہے کیونکہ دواتو وہ ہے جس سے مواد خبیثہ کا از الہ ہواور غذاوہ جس سے مواد صالحہ ان سب کا مجموعہ کے کونکہ دواتو وہ ہے جس سے مواد خبیثہ کا از الہ ہواور غذاوہ جس سے مواد صالحہ بیدا ہوں۔ چونکہ اعمال شرحیہ بیل میں میں اس کے وہ بمز لہ دوااور غذا کے ہوئے۔ پس جبتی عبد ایک اعتمال مفرد سے نماز میں ان سب کو جمع کر کے ایک مرکب بنادیا ہے۔ دورہ ہے فضائل دیکھنے آیک عمل دوزہ ہے تا لیک تلاوت کلام ابقد ہے ایک اعتکاف ہے۔ دوزہ مے فضائل دیکھنے آیک عمل دوزہ ہے ، ایک تلاوت کلام ابقد ہے ایک اعتکاف ہے۔ دوزہ ہے فضائل

اور تلاوت اورا عنکا ف کے معوم بیں کہ سننے بکھ بیں سوجس عمل کے اندر بیسب جمع ہوں گے ظاہر ہے کہ اس میں ان جی سے تعوثی تھوڑی تھوڑی سب چیزیں موجود بیں۔ روزہ نواس لئے کہ اس میں تین چیزیں بیں کھانے اور پینے اور مقاربت کا ترک کرنا موفراز بیل بیسب چیزیں بائی جاتی ہیں۔ بہذا نماز بیل روزہ کی شان موئی بلکہ نماز کے اندر روزہ کی شان موئی بلکہ نماز کے اندر روزہ کی شان موئی بلکہ نماز کے اندر بہت سے ایے مباحات شان روزہ کے اندر بہت سے ایے مباحات سے بھی روک دیا گیا ہے جن سے روزہ بیس اس قدر روک نہیں کی گئی۔ اس میں تو صرف تین چیز سے روزہ بیس اس قدر روک نہیں کی گئی۔ اس میں تو صرف تین چیز سے روئ کہا ہے جو مشابہ کلام ناس کے نہیں کی گئی۔ اس میں نعت ہے۔ بولن بھی مع ہے جتی کہ دعا بھی وہ درست ہے جو مشابہ کلام ناس کے نہیں۔

نمازفاسد

اگراندے یا تین کروتوالی شہوں جس کا سوال لوگوں ہے کرسکتے ہو۔ اگرایی وعاکرو کے تو نماز فاسد ہوجا کی گی ۔ گوعر فی میں ہوا ور جومشا بدکلام ناس کے شہووہ مفسد نہیں۔ گوار دو بی میں ہو۔ تو نماز فاسد ہوجا کی گی ۔ گوعر فی میں ہوتی ۔ گراس کا مطلب بینیں کہ اردو میں وعاکیا کرو بلکہ سے بتلا نامقصود ہے کہ اردو میں وعاکر نے ہے نماز نہیں ٹونتی جب کہ وہ کلام تاس کے مشابہ نہ ہولیکن بجزعر لی کے دوسری زبان میں ہوتا ہے حرام اور جن صورتوں میں نماز فاسد ہوج تی ہواس کا فساد بوجہاس کے نہیں کہ اردو میں ہوتا ہے حرام اور جن صورتوں میں نماز فاسد ہوج تی ہے سواس کا فساد بوجہاس کے نہیں کہ اردو میں ہے بلکہ بوجہ مشابہت کلام تاس کے ہے۔

ال پرایک دکایت یاد آئی۔ ہمارے ایک دوست کہتے تھے کہ ہم نے مدید میں پڑھاتھ کہ کام
ناس سے نماز فاسد ہو جاتی ہے۔ آپ اس کا مطلب یہ سمجھے کہ عربی کے سواار دووغیرہ ہولئے سے نمہز
جاتی رہتی ہے اور عربی میں ہولئے سے نہیں جاتی ۔ اتفاق سے امام کو سہو ہوا کہ قصدہ اولی کو قعدہ اخیر سمجھ
گیاس وجہ سے بہت دہر تک جیشار ہا حتیٰ کہ سلام پھیرنے کے قریب ہوا تو آپ کہتے ہیں فنہ۔
امام کوئ کرخود یاد آگیا کہ یہ قعدہ اولی ہے اس وجہ سے کھڑا ہوگا یہ دس میں کہنے گئے کہ عربی ہوا فالکون تھ بین افالکہ ہے۔ نماز فاسد ہوج تی بعد نماز کہ کر قم والاکون تھ بید ہوئے اور کام بھی بن گیا۔ امام صاحب نے بعد نماز کہ کر قم والاکون تھ بید ہوئے سے کھڑا ہوگا ہوج تھے کہ جو بات عربی میں ہموہ ہیں ہو ہوئے سے کہ جو بات عربی میں ہموہ کمام تاس کے ساتھ تکلم تھوڑا ہی کیا ہے۔ آپ یہ سمجھے ہوئے تھے کہ جو بات عربی میں ہموہ کمام تاس کے ساتھ تکلم تھوڑا ہی کیا ہے۔ آپ یہ سمجھے ہوئے تھے کہ جو بات عربی میں ہموہ کمام تاس دوبات ہوتی ہے جو کہ غیر عربی اردو وغیرہ میں ہو۔

عربی پردومری حکایت یادآئی که ایک رئیس مغت بہت یو گئے ان کی اسامیوں میں سے پچھ گنواران کے پاس آئے۔ رئیس صاحب نے پوچھ امسال تمہارے زارگندم پر تقاطر امطار ہوایا تہیں۔ گنوارلوگ اس کوئ کرمتخیر تھے کہ ج نے میال کیا کہدر ہے ہیں۔ انہوں نے بیلغات کہاں سنے تھے ایک گنواران میں ہوشی رہے اپ ساتھیوں سے سنے لگا کہ اس وقت میال قرآن یڑھ رہے ہیں گھرآئی وقت میال قرآن کے دورے ہیں پھرآئیو جب آ دریوں کی بولی بولیس گے۔

فلاصہ یہ کیام ناس نے خواہ عربی میں ہویا غیر عربی میں نماز فاسد ہوجاتی ہے۔ سونماز وہ چیز ہے کہ کھان چیز تو در کنار کلام کرنے تک ہے بھی وہ فاسد ہوجاتی ہے۔ جب کہ وہ کلام تاس ہے ہو۔ اور کسی مخلوق ہے کلام کرنا تو کہاں خود حق تھیں ۔ سامیا کلام کرنا جو آ دمیوں ہے ہوسکتا ہے اس ہے بھی تو نمی زفاسد ہوجاتی ہے۔ ہاں جو چیز بندول ہے بیس مانگی جاتی جیسے مغفرت اس ہے نماز منہیں جاتی خیال سیجیج کے فماز میں کتابر اروزہ ہے۔

نمازيين منسناا وررونا

چنانچے نماز ہیں ہنسی کی بھی ممانعت بہنسی کے تین درجے ہیں۔ قبقبہ ہنگک ہمہم۔ قبقبہ میں نماز توسب کے نزد کیک وضو بھی جا تارہتا ہے۔
میں نماز توسب کے نزد کیک فاسد ہوجاتی ہے۔ لیکن حنفیہ کے نزد کیک وضو بھی جا تارہتا ہے۔
اور ضکک سے نماز جاتی ہے وضو نیم جا تا۔ او تبہم باد فی تو ہے مگر اس سے نماز نہیں جاتی ۔ کیونکہ شریا تبہم کو ہنسی قرار نہیں دیا گیا۔ کو یا وہ ملحق ہے کاام بی سے نہیں غرض ہیں ہے سب نماز کے خلاف گریسم سے نمی زندہ سدہ ویس نماز میں جنے کا بھی روز وہوا۔

ابرونے کا تھم سنے کرنی زمیں اس کی بھی ممانعت ہے۔ ہنے کا تواس لئے روزہ ہوا تھا کہ وہ شان نی زکے مناسب ہی نہ تھا۔ گراس میں رونے کا بھی روزہ ہے۔ ہاں جنت اوردوز رخ کے ذکر ہے ہوتو اور بات ہے۔ حالانکہ رونا فی نفسہ وہ چیز ہے کہ اس میں پوری نیے زمندی کی شان ہے ۔ اور نیے زمندی کی شان ہر حال میں مجمود ہی ہے۔ گررونا آخرت کے لئے ہووہ تو محمود ہی ہے۔ گررونا آخرت کے لئے ہووہ تو محمود ہی ہے۔ گیاں اگرونی کے نیک ہود ہی جوتا ہے ورحزن بنم کی نبیت صوف کرام کہتے ہیں کہ بہت بری ریاضت ہے۔

ا کیب بزرگ رہ رہ ہے تھے۔ کسی نے کہا کہ کیون رور ہے بور جواب دیا کہ بھوک گئی ہے واقعی ن منز ہے کواپنی ہستی پر بالکل نفرنہیں ہوتی ۔ اگر پنی کہھٹان سجھٹے تا رہ ٹی کے ہے ہرگز ندرو تے کیونکہ بید خیال ہوتا کہ روٹی کے لئے روٹا ہماری شان کے خلاف ہے۔ اگر کسی کو معلوم ہوگا تو کیا کیہ کئے گا۔ غرض کہ انہوں نے صاف کہہ دیا کہ بھوک کی دجہ سے روز ہا ہوں۔ کہنے والے فے کہا کہ شرم بیس آتی بچوں کی طرح روز ہے ہو۔ اس پر انہوں نے جواب دیا کہ خدانے تو بھوک اس لئے شرم بیس آتی بچوں کی طرح روز ہے ہو۔ اس پر انہوں نے جواب دیا کہ خدائے تو بھوک اس لئے لگائی ہے کہ میراروٹاد کیمیں جب وہ بی ہماراروٹاد کیمنا چاہے ہیں تو پھر ہم کیوں شدرو کیں۔ پول فی ہے جوں طبع خواہد زمن سلطان دیں خاک پر فرق قناعت بعد از میں جب دیا میں مطلع خواہد زمن سلطان دیں خاک پر فرق قناعت پرخاک)

حقيقت كمال

حضرت عمرض الله عنه بهار تنص في يوجها كه كيها مزاج ٢ ب فرمايا طبيعت المجمى نہیں ہے۔ بظاہر پر کلمہ شان استقلال کے خلاف معلوم ہوتا تھا۔ تمر 💎 ورنیا بیرحال پختہ ہیج خام عوام عارفین کی حالت کیا سمجھ سکتے ہیں۔عوام تو عارفین کی اس حالت کو یوں سمجھتے ہیں کہ بیشان استقلال کے خلاف ہے کیونکہ وہ بزرگ اسے بچھتے ہیں کہ آ دی پھر ہوجائے پہھٹس ہی شرہے ملکہ فطرت کے خلاف اس کے افعال صادر ہوں _ بعض کی حالت بیہ ہوئی ہے کہ ان کا بچے مرکیا اوروہ ہنس پڑے۔عوام الی حکایت کو بہت وقعت ہے دیکھتے ہیں اور کمال بچھتے ہیں حالانکہ کامل حالت وہ ہے جومشابہ ہورسول التدسلی القدعلیہ وسلم کی حالت کے۔آپ صلی القدعلیہ وسلم کے صاحبز ادے کا انتقال ہو گیا تو آپ سلی اللہ علیہ وسلم روئے۔ پس معلوم ہو گیا کہ مصیبت میں غم نہ ہونا کمال کی بات نہیں۔ بھرآج کل لوگ جواس کو کمال اور بزرگی سجھتے ہیں تو کیا بزرگی کے بیٹنی ہیں کہ کسی بات کااثر ہی نہ ہو۔حالانکہ بزرگول پرتو ہرشے کاسب سے زیادہ اثر ہوتا ہے۔ ہاں حدود سے باہراس کے مقتضا پھل نہیں ہوتا۔ چنانچہ نامناسب بات سے بزرگوں کو غصر آتا ہے اور تغیر ہوتا ہے مگر پھر بھی مقتضا پڑمل کرنے میں اعتدال ہوتا ہے۔ حسد ہے تجاوز نبیس کرتے اوران حضرات پراٹر کیسے نہ ہو۔ بادشا ہوں کے حواس استے سلیم نہیں ہوتے جتنے ان حضرات کے ہوتے ہیں۔ان کا اوراک بہت سے جمعے ہوتا ہے۔ای واسطےان کواولا دکی محبت بھی سب سے زیادہ ہو تی ہے۔ حضورصلی القدعلیہ وملم ایک مرتبہ خطبہ پڑھ رہے تھے کہ حضورصلی القدعبیہ دیملم کے نواسے حضرت امام حسین اور حضرت امام حسن تھیلتے ہوئے آگئے ۔ آپ صلی اللہ عدید وسلم فرط محبت ہے خطبه یژه کرمنبرے اثر آئے اور بیار کیا اور پھرمنبر پرتشریف لے گئے۔ ایک دفعہ حضور صلی اللہ میں وسلم کو پیار کرتے و کیج کرایک صحافی نے کہا کہ بارسول اللہ صلی اللہ میں وسلم نے اس میر وسلم میرے دی جینے بیں۔ بیس نے ان کو بھی پیارٹیس کیا۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس یرفر مایا کہ اگر خدا تھ لی بی تمہر دے دل ہے محبت نکال لیس تو بیس کیا کرلوں گا۔

فلاصہ کے حضرت عمر بھی بیاری ش کراہ رہے تھے جو ہزرگ عیادت کو گئے تھے۔ انہوں نے

ہو جھا کہ آپ بھی کا مزاح کیسا ہے۔ آپ بھی نے فر مایا اچھانہیں۔ وہ ہو لے آپ بھی ہے۔ استقلالی ک

بات فرماتے ہیں حضرت عمر بھی نے فرمایا کیا ہیں خدا کے روبرو پہلوان بنوں۔ وہ ضعیف بنا کمی

اور ہیں قوی بنوں۔ جب خدائے بحزے لئے بمارکیا ہے تو ہیں کس لئے توی بنوں۔ یہ بین عارفین۔

یہ حضرات کو یا مزاح شناس ہوتے ہیں جس ہیں حق تعالی کی رضا و یکھتے ہیں اس کے موافق میل کرتے ہیں کار سے میں اس مناسب سے بیان ہوئی تھی گئے جن اس مناسب سے اور اس وقت یہ مناسب سے یہ حکایت اس مناسب سے بیان ہوئی تھی گئے جن کار یا ضت ہے۔

رونے کی اہمیت

اس پرایک دکایت یادآئی۔ ایک ہزرگ بمیش مقروش رہتے تھے۔ عادت یقی کہ ضرورت میں قرض نے لیا۔ جب فتو حات ہوئی ادا کردیا۔ ساری عمر قرضہ شرکز ری۔ حتی کہ خاتمہ کے دقت بھی مقروض تنے اور یے کوئی بزرگ کے منائی نہیں ہے۔ کوئکہ جوقر ضاللہ کے داسطے ہودہ گناہ نہیں۔ سویہ تھی اللہ ہی کہ داسطے قرضہ لیا کہ ہزرگوں کے پہال مہمان آتے ہیں۔ جب ان کے پس پہر نہیں ہوتا ہو قرض لے کران کی مہمائی کرتے ہیں۔ پس لوگوں نے اس حالت میں آکر تقاضا کرنا شروع کریا کہ ہم نے آپ کو ہزرگ بھی کرقر ضددے دیا تقااب ادا کیوں نہیں کرتے ہو۔ وہ ہزرگ رو کھے جواب دیے تنے بہت تک کیا تو مندہ ها کہ کر پڑدہہ۔ رو کھرد کے جواب دیے تنے بہت تک کیا تو مندہ ها کہ کر پڑدہہ۔ اس کے جواب دیے تنے میں ایک لاکا اور اس نے آواز دی۔ انہوں نے اس کو بلوا ایا اور پوچھا کہ تیے ہوئے واب دیا کہ دام کے لئے ہیٹھے ہوئے تنے ان سب کو کھلاد یا حلوافروش نے دام طلب کے تو یہ جواب دیا کہ دام ہوتے تو میرے پاس یہ برا تنہ کیوں نظر آتی تو بھی ان تی ہیں ہیٹے جا لوگوں نے اور بھی انا ڈاکہ ہوتے تو میرے پاس یہ برا تنہ کیوں آتی ہم بھی ہوگر اس کا طوانہ کھاتے۔ ہوتے تو میرے پاس یہ برا تنہ کیوں نظر آتی تو بھی ان تی ہیں جیٹے جا لوگوں نے اور بھی انا ڈاکہ ہوتے تو میرے پاس یہ برا تا سے کو کو برا معلوم ہوتا تو ہم بھی ہرگر اس کا حلوانہ کھاتے۔ اس کو کھلاد کی میں جوتا تو ہم بھی ہرگر اس کا حلوانہ کھاتے۔ ان کا کھنل کوگوں کو برا معلوم ہوتا تو ہم بھی ہرگر اس کا حلوانہ کھاتے۔ ان میا کی کھنل کوگوں کو برا معلوم ہوا گر

ورنيا يدحال پخته نيج خام

اس لڑے نے بیرحال دیکھ کررونا شروع کیا کہ میرااستاد مجھے مارڈالے گا۔ تعوزی دارگزری تھی کدایک محص سینی میں چھرو ہے اور حلوہ والے کے دام علیحدہ ایک کاغذ میں لیٹے ہوئے لے کرحاضر ہوا۔ وہ رویے سب قرض خواہول کونتیم کے تواسی قدر تھے۔ جس میں قرضہ ادا ہوجائے۔غرض سب کو بیماق کر دیا۔ کسی نے ان سے بوچھا کد حضرت کیا ہات تھی۔ انہوں نے فر ما یا کہ جب لوگ قرض طلب کرنے آئے اور جھے کو تنگ کیا تو میں نے حق تعالیٰ کی جناب میں عرض کیا کہا ہے اللہ ان کا قرضہ اوا کراد بیجئے میں نے آپ ہی کے واسطے قرض لیا تھا۔ وہاں سے جواب ملا کہ جمارے خزانہ میں تو سمجھ سمی نہیں۔ گرتمہارے یہاں کوئی رویتے والانہیں۔ بس میں نے سوچا کہ کسی کورلاؤ۔بس میں نے اس حلوہ والے کو منتخب کیا۔اس کے متعلق مولانا فرماتے ہیں۔ تانہ مرید کودک طوا فروش بر بخشایش نے آیہ بجوش تانہ کرید طفل کے جوشد لین تانہ کرید ابر کے خد وہمن (جب تک حلوا بیجنے والا بچددتا نبیس بخشش کے مندرکواس وقت تک جوش نبیر یا آتا۔ بچہ جب تک روئے میں ماں کو بھی دودھ بلانے کا خیال نہیں آتا۔جب تک بارش ندیرے جس میں ہمازمیں آتی) غرض رونا خواہ دنیا کی دجہ ہے ہواس پر بھی رحمت متوجہ ہوتی ہے۔ پس باوجود بیکہ دنیا کی دجہ ہے مجھی رونا اقرب الی الخشوع اور مفتاح رحمت حق ہے کرنماز میں اس کی مجی او بندش ہے۔ ہاں اگر دین کے خوف ہے آنکھ ہے روئے مگر چلائے نہیں تو جائز ہے۔ دیکھا آپ نے کتنی پومی شان ہے تماز کی۔ نمازمين جلنا

نیز نماز میں چلنے کا بھی روز ہ ہے۔ فقہاء نے لکھا ہے کہ اگر متعمل چلاتو تماز فاسد ہوجائے گی اورا گرایک قدم چلااور تفہر گیا پھرایک قدم چلااور تفہر گیا تو نماز فاسد نہ ہوگی۔

ایک صحابی گافت ہے کہ وہ سفر میں ہتے۔ نماز پڑھنے گھوڑ اپر ہا آھے سرک تو بہمی چھوڑ دیا اور باگ کی رک ہاتھ میں پکڑے ہوئے نماز پڑھنے گلے گھوڑ اپر تا ہوا آھے سرک تو بہمی ایک ایک قدم سرک جاتے۔ ایک خارتی نے دیکھا تو کہا سبی ن اللہ ایسی بی ہیں۔ کی خوب صورت نمی ایک قدم سرک جاتے۔ ایک خارتی نے دیکھا تو کہا سبی ن اللہ ایسی بی ہیں۔ میں نے حضور صلی نمی زور دی ہے۔ سملام کے بعد آپ نے فر مایا کہ بیکون کی اعتراض کی بات ہے۔ میں نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی آس نی کا مشاہرہ کیا ہے۔ آپ سہولت بہند تھے۔ قدم بردھانے کودیکھا کھوڑے

کے ساتھ میں قدم بڑھا تا ہوں۔اس پراعتراض کیا تمریبے ندد یکھا کہ اگر میں ایسانہ کرتا (لیعنی باگ ند بکڑے رہتا) تو گھوڑ ا**بھاگ جاتا۔ میں بیادہ چلنے پرقادر کی**ں۔ مجھوکتنی تکلیف ہوتی۔

اگرکوئی کے کہ اگر تکلیف ہوتی بھی تو اس ہے دین کا کیا ضرر تھا۔ سوجواب ہے کہ سید
کیا ضرور ہے کہ اللہ وانے پر بیٹان نہیں ہوتے۔ اللہ والول کو پر بیٹان اور مضطرب کی بات میں شہ و کیجھو کے مر پر بیٹائی حقیقت میں جس کا نام ہے
وہ ال کونیں ہوتی کیونکہ ایک حقیقت ہے پر بیٹائی کی ایک اور صورت ہے اس کا ۔ پس اہل اللہ میں
پر بیٹائی کی صورت تو ہوتی ہے کہ تکالیف و نمیر وہیں جتلا ہوتے ہیں مجرحقیقت پر بیٹائی کی نہیں ہوتی۔
بر بیٹائی کی صورت تو ہوتی ہے کہ تکالیف و نمیر وہیں جتلا ہوتے ہیں مجرحقیقت پر بیٹائی کی نہیں ہوتی۔
بر برگوں کو ہوئی کیے کہ ایک فخف مرر ہا ہے اور پھر بھی کہوکہ مرنبیں رہا۔ بیتو زیردی کی بات ہے ہم
بر رگوں کو ہوئی ہوئی پر بیٹائی وہ میں جتلا و کیمیتے ہیں۔ کوئی بیاری کی مصیبت میں جتلا ہے ۔ کوئی
فقر وفاقہ میں۔ پھر پر بیٹائی کیے شہوتی ہوگی۔

اس کا جواب میہ کہ دافعات کو دکھے لیجئے۔ اس سے انداز ہ ہوج نے گاان کے پی سرہ کر دکھے لیجے کہ ان میں پریشانی کے آجار ہیں یانہیں۔ پریشانی میں آدمی بدحواس ہوتا ہے۔ واللہ وہ حضرات ہرہ است میں نہایت مطمئن ہوتے ہیں ان کی میہ حالت ہوتی ہے جیسے کسی کا محبوب ہوجس کے فراق میں میشخص مرر ہا ہو کھا ٹا تک جیھوٹ گیا ہو۔ ٹاک پکڑنے ہے دم نگلتا ہواور وہ آتفاق ہے مل جائے اور عزایت و مہر ہائی ہے اس کی حالت پرترس کھا کر بینل میں لے لے اور ایسا د ہائے کہ استی کھیس نکلنے لکیس اور وہ مید دکھے کر کہ میرے و بائے ہے اس کو تکلیف ہے امتی ٹایوں کیے کہ اگر تم کو تکلیف ہوتو میں جیھوڑ دول اور ایک تمہمارا دقیب ہے بجائے تمہمارے اس کو بخل میں لے لاوں۔ اتن ذوق تو سب کو ہے بتلا ہے وہ کیا کہ گا وہ تو بھی کہا گا۔

وں و سب وسب در سے در ہے ہوں ہوں ہوں ہوں ہوں ہوں ہوں اس سلامت کے تو نونجر آز مالی انتور نصیب در موسلا کے اللہ دوستوں (دہمن کا بیضیب ند موک آپ کی آلموارے ہلاک ہوآپ کی ننجر آز مائی کے لئے دوستوں

کا سرسلامت دے)

کوئی شخص اس عاشق کو پریشان کہ سکتا ہے؟ کیااس کو د بائے ت تکلیف ہوگ ہر ترنہیں بلکہ عین راحت ہوگ ۔ بان تکلیف جسم کو ہوگی مگر روح کونہ ہوگی اور جمعیت واطمینان روح کے متعلق ہے۔ کیا آپ نے بھی آپریشن بچاس رو بے دے کہیں کرایا۔اس میں آ ہمی نکتی ہے آندو بھی نکلتے ہے۔ کیا آپ نے بھی آپریشن بچاس رو بے دے کرنہیں کرایا۔اس میں آ ہمی نکتی ہے آندو بھی نکلتے

ہیں۔ اس پرکوئی کیے کہ آپریشن کیوں کرایا اور پھر میا کہ بچاس رویے بھی دیے تو بہی نہو گے کہ میری رگ رگ میں راحت ہا گئی۔ معلوم ہوا کہ جسمانی تکلیف پر مدار نہیں پریشانی کا کبھی ایسا ہوتا ہے کہ جسمانی تکلیف ہوتی ہے اور روح کو پریش نی نہیں ہوتی سواہل امتد صورۃ پریشان ہیں ھیقۃ نہیں۔ اہل دنیا ھیقۃ پریش نہیں ہاں صورت علم کی ہے۔خلاصہ یہ کہ اہل امتد کو پریش نی نہیں ہوتی۔

غرض بید کدا گر وہ نمی زیس محوزے کی باک ند پکڑت تو وہ بھا گ جو تا اور مصرت خرت کا بھی اختال تھا کیونکہ بھی ایسا بہوتا ہے کہ جب عب دت کی بدولت اس میں پریشانی ہوتی ہے تو نفس کہ بہتا ہے کہ جب عب دت ہی کہ بدولت مبتل ہوا۔ اس واسطے شریعت نے کہتا ہے کہ میں بیا ہے کہ میں معلوم ہوتا ہے کہ شریعت میں بیآ سانی کر دی کہ اگر چنامتصل نہ ہوتو نماز نہ جائے گی۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ شریعت میں مسمح تقدر داحت کے احکام ہیں۔

المازكاتوزنا

اگر وئی کے کہ ایک صورت میں اگر گھوڑا دوڑنے گے تو پھر کیا کریں گے۔ سواس کا جواب میہ

ہے کہ شریعت نے ایسے وقت میں نمی زنو ڈنے کی اجازت دے دی ہے۔ یبال تک کہ ایک ورم یعنی
چارا نے نقصان پر بھی نمی زکے تو ڈدینے کی اجازت ہے۔ مثلاً اگر کوئی شخص جوتا چراتا ہوتو نیت

تو ڈکر اس کو پکڑ لینے کی اجازت ہے یا چارا نے کی ہانڈی جاتی ہو یا خراب ہوتی ہوتو اس وقت بھی
نمی زنو ڈدینے کی اجازت ہے کون کہتا ہے کہ شریعت میں شدد ہے۔ شریعت میں تو رائی برابر بھی تشدد
نمیں جگہا ورتشد دکی ممانعت ہے۔ دیکھئے جنب رسول التد سلی اللہ علیہ وسلم فریاتے ہیں
لایسٹی للمو من ان بدل نفسہ اُریوٹی مون کومن سے نہیں کہ ایس کی تری کرے)
معالیہ علیہ للمو من ان بدل نفسہ اُریوٹی مون کومن سے نہیں کہ ایس کی کوؤ کیس کرے)
معالیہ علیہ اس معالیہ علیہ کوئی کرا

قالو اباد سول الله تحیف بدل مصه (ینی این نفس کوذیل کرنا ہے س طرح مراد ہے) تو حضور صلی اللہ عدید وسلم نے قرمایا

ینحمل من الملاء لمما لابطیقه مینی ایک بر میں اینے آپ کو پھٹر نے جس کی برداشت ندکر سکے۔

و یکھئے حضور صلی الندعلیہ وسلم تشدد ہے س طرح منع فر ماتے ہیں اور کیسی آسانی سکھاتے ہیں لے سس کنو مدی. ۲۵۵۳ ء سس ابن ماحد ۱۹۰۹ ، مجمع الرواند ۷۴۰۷ ، اور شریعت کی برتعلیم ایک بی ہے۔ نماز بی میں و کمیے لیجئے کتنی سہولت کے احکام میں کھڑے نہ ہوسکو تو بیٹے کر اور بیٹے نہ سکوتو لیٹ کر اوا کر لو۔ سفر میں ہوقھ کر و۔ ونیا کے واقعات میں غور سیجئے کہ ہر واقعہ میں سہولت کی کیسی تد ابیرتعلیم قرمائی۔

جذبات طبيعه كي رعايت

مرنے ہے بڑھ کرکوئی مصیبت نبیں۔اس سے زیادہ کوئی امریریشان کن نہ تھا۔ پھراس کے بارہ میں کیسی عمدہ تعلیم فرمائی ہے قرآن شریف میں ہے۔

اذا اصابتهم مصيمة قالو اانا لله واما اليه راجعون

کہ جب ان پرمصیبت پڑتی ہے تو یوں کہتے ہیں کہ ہم اللہ کے ہیں اور ہم ای کی طرف یوٹے والے ہیں اس کے اندر ہم کوتیلی کا طریقہ بتلایا ہے کہ مصیبت کے وقت انا ملہ واٹا الیہ را جعون کہنے ہے ہے۔ اگر کوئی کہے کہ ہم نے تو مصیبت میں اس کو پڑھا تھا مگر پچھ بھی نہ ہوا تو جواب رہے کے دوظیفہ کی طرح پڑھنے کوکس نے کہا تھا بلکہ ساتھ میں اس کی حقیقت پر بھی نور کرنا جا ہے وہ یہ کہ مصیبت آنے پر دو با تول کا کھا ظر ہے۔

ایک توبیر کہ ہم خدا کی ملک ہیں۔ ہم اپنے نہیں۔ جب خدا کے ہیں توان کواختیار ہے کہ جیسے جا ہیں ہم میں تصرف کریں۔ یہاں رکھیں یااٹھالیں۔اس میں توعقل کی تسلی ہوگئی۔

ورس ہے کہ جہاں ہمارے ور بیا ہے جی جی ہم بھی وہیں جلے جا کی جی ہی ہم بھی وہیں جلے جا کیں جی طبع کی رعایت ہے ۔ ایک عقل اورایک طبیعت عقل تو انا لله ہے راضی ہوئی تھی ۔ کیونکہ عقل تسلیم کرتی ہے کہ جب ہم المد کے ہیں تو پھر ہم کوان کے کسی تصرف پررنج کرنے کا کیا حق ہے ۔ ان کواختیار ہے جبیما جا ہیں کر ہی محرطیع ابھی راضی نہ ہوئی تھی کہ باپ مرگیا اس کے مرنے کا کیسے رنج نہ ہو۔ ہوتا ہے ۔ اس کو ہم کیا کریں ۔ اس لئے دوسرا جملہ طبع کے سعلی ہی ایسا ہے کہ خواہ مخواہ رنج ہوتا ہے ۔ اس کو ہم کیا کریں ۔ اس لئے دوسرا جملہ طبع کے سنجا لئے کو ہتلا یا کہ جس عشر ہے کدہ میں وہ گئے ہیں ہم بھی وہیں جلے جا کمیں گے ۔ گھرانے کی بات شبیل ۔ جلدی ہی ملا قات ہوجائے گی ۔

اسکی مثال ایسی ہے جیسے کسی کو حیدرآ ہو کی وزارت کا عہدہ ال گیا اوروہ وہاں چلا گیا اس کے بیٹے کو اس کے بیٹے کو اس کے جلے جانے ہے وہ اوراس سے کہا گیا کہتم کیوں گھبراتے ہووہ تو بڑے بیش جس ہے وزارت کے عہدہ پر ہے اور تم بھی عنقریب و بیں بلاستے جاؤ کے کیا کوئی کہ سکتا ہے

کہاس کا صدمہ اس کوئن کر ہاتی رہے گارید وسرا جمل طبع کی تسلی کے لئے ہو ھایا ہے۔

غرض انا لله و انا البه داجعون (ہم سب اللہ کیا ہے ہیں اور اللہ کی طرف لوٹے والے ہیں) میں عقل وطبع دونوں کی تلی ہے اس ہے معلوم ہوتا ہے کہ شریعت نے جذبات طبیعہ کی تنی بڑی رعایت کی ہے ساری دنیا کے عقلاء و حکماء جمع ہوجا کیں تو بھی تسلی کا ایس ڈریعہ نبیس لا سکتے۔ دیکھتے جب انا لله کی حقیت کوظ ہوگی کہ ہم سب خدا کی ملک ہیں ۔ تو کسی عزیز کے مرنے ہے خداتعالی کی شکایت عقلاً تو اس کے لحاظ کرنے ہی سے بیدائہ ہوگی کیونکہ اس کی ایک مثال ہے خداتعالی کی شکایت عقلاً تو اس کے لحاظ کرنے ہی سے بیدائہ ہوگی کیونکہ اس کی ایک مثال ہے جسے کسی کی مبلک میں وو گھوڑ ہے ہول۔ ایک کو یہاں با ندھ دے اور ایک کو دوسری جگہ با ندھ دے انکوکیا منصب ہے اعتراض کا کہ ایسا کیوں کیا یا الماری میں کسی کی دو یوتئیں رکھی ہوں۔ ایک کو نیچ انکوکیا منصب ہے اعتراض کا کہ ایسا کیوں کیا یا الماری میں کسی کی دو یوتئیں رکھی ہوں۔ ایک کو نیچ کے ختہ پر رہنے دے اور ایک کو او پر کے تختہ پر رکھ دے جو جا ہے کر اس واسطے رکھ دیا۔ اس کی ملک ہے جو جا ہے کر ہے۔

ای طرح ہم سب اللہ کی چیزیں ہیں جس کوچاہیں یہاں رکھیں اور جس کوچاہیں وہاں اٹھالیں کسی
کو قبل و قال کی مختائش نہیں۔ باقی جذبات طبیعت اپنااٹر ضرور کرتے ہیں تو دوسرے جملہ میں اس کی کتفی ہے
رعایت کی ہے۔ پہیس کہاس امرطبعی پر مواخذ وفر ہائے بلکہ اس اٹر کوجائز رکھ کراس کا تد ارک کیا۔

عقل اورشر بعت

ی عقل کے ظاہر بات ہے کہ شریعت کا فتوی زیادہ رہم پر بنی ہے۔اب جو خیر خواہ ہے اس کے عوض عقل کوامام بنانا جا ہے ہیں۔مولانا فرماتے ہیں ۔

آزمودم عقل دور اندلیش را بعدازین دیوانه سازم خولیش را (میں نے عقل دوراندلیش کوآز مالی جب اس سے کام نه چلاتو بھراپنے آپ کود بیوانه بتالیا)

شريعت اورراحت

اب سمجھ لیجئے کہ جب شریعت نے موت میں جو کہ آئی ہوئی پریشانی کا واقعہ ہے اس درجہ سمبولت کی رہ بیت کے جاوراس قد رراحت پہنچ کی ہے تو اور واقعات میں کیوں راحت کا سامان شرکی ہوگا۔ای طرح شریعت نے ہم کو ہرامر میں ایسا طریقہ بتلایا ہے کہ اس کے اختیار کرنے میں راحت ہی راحت ہی راحت ہی راحت ہی داعت ہے۔ای واسطے احکام شریعت کے بارہ میں دعوی کیا گیا ہے۔

الابذكر الله تطمئن القلوب كرائدك ذكرائ سے قلوب كواظمينان ہوتا ہے۔
اور برگل صالح ذكر ابتد ہے۔ بس مطلب بيہ ہواكہ جن انگال كى تعليم شريعت نے كی صرف انہى ہے قلوب كوراحت اوراظمينان حاصل ہوتا ہے۔ بلہ كر الله كو جو تطمئن ہے مقدم لائے ہیں۔ اس میں اشارہ ہے حصر کی طرف كه شریعت كے احكام پر عمل كرنے كے سوا اظمینان اور راحت كا كو كی طریقہ ہیں۔ بیہ ہے شریعت کی راحت رسمال تعلیم جس كو ہم نے چھوڈ ركھا ہے۔ اور راحت كا كو كی طریقہ ہیں۔ بیہ ہے شریعت کی راحت رسمال تعلیم جس كو ہم نے چھوڈ ركھا ہے۔ بہرحال ذكر اس پر تھا كہ شریعت نے روزہ میں بعض مباحات کی اجازت دك ہے مگر نماز میں روزہ كی شان روزہ ہے ہی ہو ھر ہوئی۔

نماز میں إدھرأ دھرو مکھنا

روزہ میں ادھراُ دھر ویکھنا جائز ہے نمی زمیں وہ بھی نہیں گواس سے نماز فاسد نہیں ہوتی۔ گر او ب صلوۃ کے خلاف ہے۔ ہاں اوب نہ ہونراض بطہ ہی ہوتو اور بات ہے۔ میر نھے ہیں ایک مولوی صاحب تھے۔ نماز کے اندراوھراوھر ویکھنے کا مرض تھا۔ اتفاق سے ایک شخص جماعت میں ان کے پاس کھڑ ہے ہوگئے۔ وہ مولوی کھڑ ہے ہوئے اور حسب عادت جان کی بتھی کہ نماز میں اوھر اوھر و کم میر ہے تھے۔ نماز کے بعداس شخص نے کہا کہ آ ب نماز میں اوھراوھر و کم میر ہے اوھراوھر دیکھنے کی تنہیں جب بی تو خبر ہوئی جب کہتم نے مجھے دیکھ ہیں تمہاری نماز بھی نہیں ہوئی۔ بس وہ یہ کہد کر سرخر و ہو گئے گرئس کے سامنے تلوق کے سامنے۔ ابتد کے سامنے تو سرخروند ہوئے ۔ مخلوق کے سامنے سرخرو ہوئے سے کیا ہوتا ہے۔

کار با باختی آری جملہ راست باید واشتن رایت اخلاص وصدی افراشتن کار با ادراست باید واشتن رایت اخلاص وصدی افراشتن (خلوق کے ساتھ تیرے سب کام درست ہیں۔ فدا تھ لی کے سہ تیر کر وحیلہ کب جائز ہے۔ جن تعالیٰ کے ساتھ تیرے سب کام درست رکھنا جا ہمیں ،ا خلاص اور صدی کا ہم بعند کرنا چ ہے) اے صاحبوا حکام کے ساتھ جنااوب ملح ظار کھتے ہو کم از کم حق تعالیٰ کے ساسنے اتا تو رکھو۔ جب حکام کی ہیبت و نیا ہیں مانع ہے نگاہ اٹھانے ہے تو حق تھ لی ہیں تو علہ وہ ہیبت کے اور بہت ہے اور بہت اسمور بھی اس کے مقتصیٰ موجود ہیں۔ مثلاً تجملہ ان کے ایک محبت بھی ہے۔ کیا اوھراوھرو کیسنے کیلئے محبوب سے نگاہ ہٹاؤ گے ۔عشاق سے تو چھے کہ محبوب کے ساسنے موجود ہوتے ہوئے ادھر ادھرو کھنا کیں ہے۔ عشاق کو تو محبوب سے ایک دم بھی غفلت گوار انہیں ہوتی ہے۔ کہ تو گاہ نباقی ادھر و کھنا کیں ہے۔ عشاق کو تو محبوب سے ایک دم بھی غفلت گوار انہیں ہوتی ہے۔ کہ تو گاہ نباقی شاید کہ نگاہ کو کہ نباقی شاید کہ نگاہ کی در بھی غفلت ہیں نہ گزار ، شایدہ کی وقت کرم کروے اور محبوب حقیق سے تھوڑی در بھی غفلت ہیں نہ گزار ، شایدہ کی وقت کرم کروے اور محبوب حقیق سے تھوڑی در بھی غفلت ہیں نہ گزار ، شایدہ کی وقت کرم کروے اور محبوب حقیق سے تھوڑی در بھی غفلت ہیں نہ گزار ، شایدہ کی وقت کرم کروے اور محبوب حقیق سے تھوڑی در بھی غفلت ہیں نہ گزار ، شایدہ کی وقت کرم کروے اور کھے اس کی خبر شہوں)

نمازین تو ففلت کیسی غیر نمازین بھی ففست نہ چاہیے۔ حاکم کے سر منے تو ادھرادھرد کیھتے ہیں۔ اس نبیل سے کہ شاید ہمیں نگاہ ہٹاتے ہوئے دکھے لیے۔ پس امند تعدالی تو ہر وقت ہمیں دکھتے ہیں اور کس وقت ہم سے توجہ نہیں ہٹاتے۔ پھران کے سامنے ادھرادھرد کھنا کیسے جائز ہوسکتا ہے۔ چاہی دوسری طرف متوجہ نہ ہوتا۔ خیرا گرائ کوشنیم بھی مربیا جائے کہ اس ہے۔ چاہیے تو یہ تھا کہ قلب بھی دوسری طرف متوجہ نہ ہوتا۔ خیرا گرائ کوشنیم بھی مربیا جائے کہ اس پوقد درت نہیں تو نگاہ نہیں کر سکتے۔ پس اس کودوسری طرف کیوں متوجہ کرتے ہو۔ دوسرے اس میں بچھے فائدہ بھی تو نہیں ہے کیونکہ جن چیز وں کود کیمتے ہوان کوئی زے اندر بے تو بھتے نہیں پس فعل عبث ہوئے کی وجہ سے اس سے بچو تو بھی ہو۔ ہوں کود کھتے ہواں کوئی زے اندر بے تو بھتے نہیں پس فعل عبث ہوں کہ وجہ سے اس سے بچو تو بھرکیوں در کیمتے ہو۔

غرض یہ کہ نماز میں نگاہ کا بھی روز ہ ہے اور چونکہ نماز میں قیود بہت میں کہ ہننے بولنے چلنے

بھرنے ، دیکھنے بھالنے اور اس کے علہ وہ اور بہت ی باتوں ہے ممانعت ہے ای وجہ ہے اس کی شان میں کہا گیا ہے۔

انها لكبيرة _كمازبهت كرال بـ

کیوں جن بانوں ہے منع کیا گیا ہے ہمارے اندران کے تقاضے موجود ہیں۔

آج کل کی آزادی

ہمارا جی جاہتا ہے کہ بولیں بھی کھا تیں ہیں بھی چلیں پھریں بھی جلیں ہم ہرطرح ہے آزاد رہنے کوطبیعت جاہتی ہے ای سئے یہ نفس پر بہت شاق ہوتی ہے کہ اس کی وجہ ہے اس کی تمام خواہشات ہے رک جانا پڑتا ہے ۔ مشلا خوش سے جیٹے ہوئے جیں، با تیس کررہ ج جیں، چلتے پھرتے جیں مزیداڑارہ ج جیں۔ بیلے گھنٹہ کے پھرتے جیں مزیداڑارہ ج جیں۔ بس نماز کا وقت آیا اور خدا کی جانب سے تھم ہوا کہ ایک گھنٹہ کے لئے ہمارے در بارجیں آؤاورا پی خواہش ہے کوچھوڑ و ۔ بس مصیبت آگئی۔

بات بیرے کا انسان مقید ہونا نہیں چاہتا اور شریعت نے مقید کیا ہے۔ دونوں کی مرضی اللہ کی مرضی اور بندہ کی مرضی۔ ایک دوسرے کی ضد ہیں۔ اس لئے نماز لوگوں پر بھ رک ہے۔ اس لئے ہونا تاہے کی اس کے حق ہیں فرہ یا کہ اِنگھا لگی ہیئر فا کہ اس سے آزادی کا خون ہوتا ہے۔ جس کا آج کل ہروفت سبق گایا جا تاہے۔ گریہ آخ کل کی آزادی ہے ججیب کہ لوگ صرف شرعیات ہیں آزادر ہنا جا ہے جی کہ کوئی قید شرعی ہمارے اوپر ندر ہے ہم تو جب جا نیس کہ تکو بینات ہیں بھی آزادی اختیار کرلوکہ خدا مارنا چاہے اور ند مریں۔ طاعون ہیں جبتال کرنا چاہ اور بہترا شہوں۔ بس جیسے اختیار کرلوکہ خدا مارنا چاہ اور ند مریں۔ طاعون ہیں جبتال کرنا چاہ اور بہترا شہوں۔ بس جیسے اختیار کرلوکہ خدا مارنا چاہ اور ند مریں۔ طاعون ہیں جبتال کرنا چاہ اور بہترا شہوں۔ بس جیسے تکو بینیات ہیں آزاد نہیں ہونا چاہیے۔ اس طرح شرعیت کو بجھ نوکہ اس جس بھی آزاد نہیں ہونا چاہیے۔ حق تعالی نے جوامر بھی فر و یہ ہی میں اینے آپ کو مجبور خیال کرو۔

خشوع كى حقيقت

اب جہاں حق تعالی نے ہورے مرض کا بین کیا ہے (کہ نماز بھاری ہے) وہاں اس کا عداج بھی بتلا دیا چنانچے فرماتے ہیں۔

انها لكبيرة الاعلى الخاشعين الذين يظون انهم ملقوا ربهم و انهم اليه راجعون. لیعنی نمازسب پر بھاری ہے مگرخشوع کرنے والوں پر بھاری نہیں جن کو یقین ہے اس بات کا کہ وہ اپنے رب سے ملنے والے ہیں اور وہ اس کی طرف جانے والے ہیں۔

مطلب سے کہ نماز بھاری ضرور ہے بوجہ قیود کے گرجولوگ اپنا نمرد نہ ہو ہیں۔ اور حق بیدا کر لیتے ہیں اور حق تعالیٰ سے مطلب سے کہ نماز بھاری ضرور ہے بوجہ قیود کے گرجولوگ اپنا نمردی نہیں رہتی ۔ سواس کے اندر ہمارے مرض کا پوراعلائ بتلا دیا کہ طریقہ خشوع سے نماز پڑھوتو پچھڑرانی نہیں رہگ ۔ سواس اب خشوع کولوگ جانے کیا بچھتے ہیں حتی کہ اس کوافتیاری بھی نہیں بچھتے سوخشوع کی حقیقت یہ حقیقت لوگ سے بچھتے ہیں کہ سوائے حق کے کسی حتم کا خطرہ شآئے بدغلا ہے۔ خشوع کی حقیقت یہ کے کہ خطرہ خود خداد دے گوازخود آجائے اور بین آنا تو غیرا نفتیاری ہے لیکن خداد تا اختیار ہیں ہے۔ آدر خطرات منافی نہیں ۔ آبد وآورد میں فرق ظاہر ہے ۔ ہاں البت آور خطرات منافی نہیں ۔ آبد وآورد میں فرق ظاہر ہے ۔ ہاں البت یہ بھی کرنا چا ہے کہ جب وسوسہ بلاقصد آئے تو اس میں بقصد مشغول نہ ہوج سے ۔ بعض ایسا کرتے ہیں کہ دوسوسہ خود لاتے تو نہیں لیکن جب آتا ہے تو اس میں مشغول ہوجاتے ہیں۔ یہ بھی غلطی ہے نہ جس وسوسہ خود لاتے تو نہیں لیکن جب آتا ہے تو اس میں مثانی خشوع ہے بس جب وسوسہ جس میں جب وسوسہ بی تھا ہو۔ کیونکہ بقصد ہاتی رکھن بھی منافی خشوع ہے بس جب وسوسہ وسوسہ حسوسہ بو تا ہونہ تھی منافی خشوع ہے بس جب وسوسہ وسوسہ خود لاتے تو نہیں لیکن جب آتا ہے تو اس میں مثانی خشوع ہے بس جب وسوسہ وسوسہ حسوسہ بی تو کہ بھی منافی خشوع ہے بس جب وسوسہ وسوسہ حسوسہ کیا تو کیا کہ بھی منافی خشوع ہے بس جب وسوسہ وسوسہ حسوسہ کیا کہ کو خشوع ہے بس جب وسوسہ حسوسہ کیا کہ کیا کہ کو خواد کے ایقاء ہو۔ کیونکہ بقصد ہاتی رکھن بھی منافی خشوع ہے بس جب وسوسہ کیا کہ کو خواد کے ایقاء ہو۔ کیونکہ بقصد ہاتی رکھن کھی منافی خشوع ہے بس جب وسوسہ کو خواد کے ایونا کو بیا کو نوبوں کے جس جب وسوسہ کیا کہ کو نوبوں کے جس جب وسوسہ کیا کہ کو نوبوں کے جس جب وسوسہ کی کو نوبوں کے بال کو نوبوں کے بس جب وسوسہ کیا کہ کو نوبوں کے جس جب وسوسہ کیا کہ کو نوبوں کے جس جب وسوسہ کیا کہ کو نوبوں کے جس جب وسوسہ کی کو نوبوں کیا کہ کو نوبوں کے جس کیا کہ کو نوبوں کے بھی کو نوبوں کیا کہ کو نوبوں کیا کی کو نوبوں کیا کہ کو نوبوں کیا کو نوبوں کیا کیا کو نوبوں کیا کیا کو نوبوں کیا کہ کو نوبوں کیا کو نوبوں کیا کہ کو نوبوں کیا کو نوبوں کیا کہ کو نوبوں کیا کو نوبوں کیا کو نوبوں کیا کہ کو نوبوں کو نوبوں کیا کو نوبوں کیا کو نوبوں کیا کو نوبوں کیا کو نوبوں کی

آئے آواں کور کھے نہیں دفع کردے۔ دفع وساوس کے طریق

ایک بات وقیق ہے قابل یادر کھنے کے دہ سے کہ عارفین کے زدیک وقع کامطلوب ہوتا توسب کومعلوم ہے۔ اب اس میں گفتگو ہے کہ کس طریقہ سے دفع کرنا جاہیے۔ سواس کے دوطریقے ہیں ایک توبیصورت ہے کہ براہ راست وساوس کوہٹادے کہ جب کوئی وسوسہ آئے کوشش کر کے اس کواپنے خیال ہے دور کردے۔ اس میں تو بہت دفت ہے کیونکہ اکثر ایسا ہوتا کہ دفع نہیں ہوتا۔

دوسراطریقہ بیہ کہ بواسط ہٹائے بیعمدہ تدبیرہاں کے بیجھنے کے لئے بہدایک مقدمہ ان لو۔ دہ بیکہ قاعدہ مسلمہ ہے کہ المفس لاتتو جہ الی شینین فی ان واحد، کرنفس کی توجہ ایک وقت میں دو چیز کی طرف نہیں ہوتی

اب سنے بواسطہ وفع بیہ کہ قلب ہیں کی دوسری چیز کو لے آؤ۔دوسری چیز کے لانے سے اس کی طرف توجہ ہوجائے گی۔ اور دسوسہ کی طرف توجہ شدرے گی۔ اب بعض مشائخ دفع بلا واسطہ

ہلاتے ہیں۔اس ہیں نہ بت وقت واقع ہوتی ہے کیونکہ با واسطہ ہٹانے ہیں بیقہ ہوتا نہیں کہ دوسری طرف توجہ ہوجاتی ہے۔اس ہیں خود وسوسکی طرف توجہ ہوجاتی ہے۔اس ہیں خود وسوسکی طرف توجہ ہوجاتی ہے گونقصد وفع ہی گراستحضارتو ہوا۔اس لئے اس کا وفع ہونا مشکل ہوجاتا ہے اس وسوسکی مثال تاریکل کی ہے کہ وہ تہمیں گئے جب لیٹے۔اور جوتم اس کولگو ہٹانے ہی کے لئے ہی جب لیٹے۔اس وسوسہ ہٹانے کی تا ہیر ہیہ ہے کہ بواسطہ ہٹاؤ۔ وہ ہیکہ دوسری چیز کی طرف متوجہ ہوجاؤ۔
اب رہی ہیہ بات کہ وہ گون تی چیز ہے جس کی طرف متوجہ ہوتا یا پھر کی طرف یا اور کی چیز کی طرف یا اور کی چیز کی طرف ہوائی۔ اب رہی ہیہ بات کہ وہ گون تی چیز ہے جس کی طرف متوجہ ہوتا یا پھر کی طرف یا اور کی چیز کی مقبلا علیہ مما بقلبہ کہ کرقلب کومتوجہ کرے دونوں رکعت لیخی نماز کی طرف ایک وم ایک دم متوجہ ہوکی کوئی نماز کی طرف توجہ ہوگی کہ اس کے متوجہ ہوکی کوئی کہ بات سے متوجہ ہوکی کوئی کہ اس کے متوجہ ہوکی کہ بات سے ایزا کی طرف توجہ کرنے ہوگی کہ اس کے متام ایزا کی طرف توجہ کرنے ہوگی کہ اس کے میں تشویش ہوگی۔اس کے میں تشویش ہوگی۔اس کے میں تشویش ہوگی۔اس کے میں تیں ایک طرف توجہ کرنے ہوگی کہ اس کے میں تشویش ہوگی۔اس کے میں تشویش ہوگی۔اس کے میں تشویش ہوگی۔اس کے میں تین ایک طرف توجہ کرنے ہوگی کہ ہیں۔

ایک صورت یہ ہے کہ جس جزوش مشغول ہوای کی طرف توجد کھے۔ اس کا طریقد ایک برزگ نے بڑا یا ہے۔ وہ یہ ہے کہ مثلاً سبحانک اللهم یاد ہے مت پڑھو کہ رہا ہوا ہونے کی وجہ سے زبان ہے خود نکاتا چلہ جائے۔ بلکہ جر جر جزوس کی کر پڑھو کہ اب سبحانک اللهم کہہ رہا ہوں اب ببار ک اسمک پڑھتا ہوں۔ اب لاالله غیر ک نکا آبا ہوں۔ اب بسم الله اب المحملالله علی بڈا۔ ہر جر لفظ کو ارادہ سے ادا کرو۔ جب قلب افکار کی طرف متوجد رہ کا توصادی کی طرف توجد در ہے گل۔ گا تا مدہ سلمہ ہے۔ النفس لاتتو جه المی شیئین فی توصادی کی طرف توجد در ہے گل۔ گونکہ قاعدہ مسلمہ ہے۔ النفس لاتتو جه المی شیئین فی ان واحد۔ اس طریق توجہ اول ہی دن خشوع ہوجائے گا۔ گریش ور ہے کہ اول اول نماز میں تکی اس وجہ ہوگا۔ کونکہ خیابات پریشان ہول گان سے توجہ ہی کرد کر کی طرف توجہ کرنی پڑے گا اس وجہ ہوگا۔ کونکہ خیابات پریشان ہول گان ہی خشوع میسر ہوجائے گا۔

جب بیتہ بیروساوی سے نجات کی ملی تواب ایک اور آفت میں جتلا ہوگا وہ بیا کہ یوں خیال کرے گا کہ طریقہ تو مل ہی گیا۔بس جب چاہیں گے کرلیں گے اس لئے اول تو کرتے نہیں اورا گرکرتے ہیں تو ہمیشہ نہیں کرتے۔مثار کخ تک اس میں جتلا ہیں اور بیرہا ہت ہے واعظ بی جلوہ برمحراب و منبر می کنند چوں بخلوت می رسند آس کاردیگر می کنند مشکلے وارم زدانش مند مجلس بازیرس توبہ فرمایا س جراخود توبہ کمتر می کنند (واعظین محراب و منبر پرجلوہ کرتے ہیں اور جب خلوت ہیں پہنچتے ہیں تو وہ دوسرے کام کرتے ہیں۔ جھے یہ مشکل وربیش ہے کہ مجلس کے دانشمندان یہ سوال کرتے ہیں کہ دوسر دل کو توبہ کی تنقین کرنے والے خود توبہ کیول نہیں کرتے)

اس کی مثال تو ایس ہے جیسے کوئی طبیب ناز کرے کہ جھے کو خارش کا تسخہ بڑا مجرب معلوم ہے مگر ساری عمر خارش جیس جتلا رہ کر مرجائے اور اس کا استعمال نہ کرے۔ سواس کونسخہ ہے کیا فائدہ ہو۔ کوئی انجان کسی بات ہے محروم رہے تو ایسی مصیبت نہیں جیسے کوئی جان ہو جھ کرمحروم رہے اس کے بارے جس کہتے ہیں ہے

فان کنت لا تدری فتلک مصیبة وان کنت تدری فائمصیبة اعظم (اگر تجھے اس کاعلم ہے تو یہ بردی مصیبت ہے)

اس تد ہیر کے ملنے کے بعد شیطان دوطریقہ سے دھوکا دے گا۔ ایک تو بید کہ ہم ہم لفظ ہر توجہ کرنے سے شروع میں دل تنگ ہوگا۔ پس شیطان بہکائے گا کہ بید بیر تو بہت مشکل ہے۔ تیر سے بس کی نہیں ہے۔ اور ایک اس طرح کہ یہ سمجھائے گا کہ طریقہ تو معلوم ہو ہی گیا ہے جب جی بس کی نہیں ہے۔ اور ایک اس طرح کہ یہ سمجھائے گا کہ طریقہ تو معلوم ہو ہی گیا ہے جب جی طریقہ تو معلوم ہو ہی گیا ہے جب جی طریقہ سے کا اس سے علی کر کیس کے ۔ گرخوب سمجھ نو کہ پچھ بھی دشوار نہیں ہے۔ وو چاردن اس طریقہ سے نوبی گیا ہے کہ میں طبیعت ذی تی کی مرکز جب کی گر پھر بہی قو ق عینی فی الصلون کی طریقہ سے نماز پڑھنے میں طبیعت ذی تی کر رہے گی مرکز کی ہر بھی ہوگا۔

عاصل بیر که خشوع کے حاصل کرنے کی بیصورت ہے۔ پس جب خشوع حاصل ہوجائے گاتو پھر نماز میں پہوگر آئی شدرہ گی۔ چنانچے فرماتے میں اللاعلی المخاشِعیْن کہ نماز بھاری ہے گرخافعین پر بھاری نہیں۔ پھراس کی نماز ایس ہوگی جس کے بارہ میں ارشاد ہے و الشجند و الشجند و الفین ہوگی جس کے بارہ میں ارشاد ہے و الشجند و الفینو ب بیوجاو (آبت بجدہ)۔

سجده كي حقيقت

بلندی والوں سے تو قرب ہوتا ہے ترفع سے اور یہاں قرب ہوتا ہے پہتی ہے۔ قرب تربیتی بہ بالا اختن است قرب حق از قید ہستی رستن است (قرب اس کانام نہیں کہ نیچے ہے اوپر جے جو و بلک قرب میہ ہے کہ ستی ہے جھوٹ جاؤ)
ہیں ان کے قرب کا مجی طریقہ ہے کہ پستی فنا حاصل کرلواور بحدہ کی حقیقت میں فن اور نیاز
مندی ہے۔ اس لئے وہ سبب ہے قرب کا۔ خلاصہ یہ کہ اول اول تو قیدیں بری معلوم ہوں گی۔
مگر پھریے قیدیں ایسی ہوں گی جیسا کہ شیخ شیرازی رحمہ اللّٰہ فر، تے ہیں ۔

اسیرش نخواہد رہائی زبند شکارش نجوید خلاص از کمند

(تیراقیدی قیدے رہائی حاصل کرتانہیں چاہتا اور تیراشکار کمندے خلاصی نہیں چاہتا)

چندروزاییا کر کے اس کامشاہدہ کراو۔ اولیس قرنی ہیں یا اور کوئی بزرگ ہیں ان کی بیصات تھی

کہ ساری رات دور کعت میں شم کردیتے یہ ل تک کہ شبح ہوجاتی ہررات کوایک ایک رکن کے لئے
مقرر کر لیتے۔ ایک دن فرماتے ہیں لیلہ القیام دوسرے دن فرماتے ہیں فیلہ الو کوع اوراس
رات کے اکثر حصد میں ای رکن کے اندر مشغول رہتے اور جب تھوڑی رات رہ جاتی تو بقیار کان
پورا کر لیتے اور کہتے افسوس کہ جمھے دل ہم کر نماز پڑھنے کا موقع نہیں متا۔ کاش کہ ایک رات ایک
ہوتی کہ اس کا ایک سراازل ہے ملا ہوا ہوتا اور دوسرا ابد ہے اور اس میں ارمان پورا کرتا آپ کواس
ہوتی کہ اس کا ایک سراازل ہے ملا ہوا ہوتا اور دوسرا ابد ہے اور اس میں ارمان پورا کرتا آپ کواس
ہوتی کہ اس کا ایک سراازل ہے ملا ہوا ہوتا اور دوسرا ابد ہے اور اس میں ارمان پورا کرتا آپ کواس
ہوتی کہ اس کا بی ہم ان کی شان ہی جدا ہے۔ ان کا تو بھی دل بی نہیں ہم تاان کی تو یہ حالت ہوتی اند
رہیں شہیں کہتا کہ پانی پرقادر نہیں ، اب دریا ہوتے ہوئے جاندھر کے بیار کی طرح بیا ہے ہیں)
اور رہ حالت ہوتی ہے۔

دلآرام دربر دلآرام جو لب از تشکی ختک و برطرف جو

(محبوب ہے ہم کناراورمجبوب کی تلاش، بیاس ہے ہونٹ ختک اور لب دریا سیرانی کے طلب گار)

اس وقت یہ قیودزلف یار کی قیود ہوجا کیل گے جس کی بیرحالت ہے۔

گرو و صد زنجیر آری کیسلم فیر زلف آل نگار مقبلم

(اگر دوسوزنجیر میں ہول تو تو ژوول، سوائے اپنے محبوب کی زلف کے بندش کے لیمی سوائے اپنے محبوب کی زلف کے بندش کے لیمی سوائے اپنے محبوب کی زلف کے بندش کے لیمی اور کا گرفت رہونا برداشت نہیں)

سوائے اپنے محبوب کے کسی اور کا گرفت رہونا برداشت نہیں)

اب تو قیدیں نظر آتی ہیں گر پھریے قیودزلف یار کی قیدیں ہوں گی کہ بھی ان سے نگلنا نہ جیا ہے گا۔

خ**لوت بامحبوب** چ کہتا ہوں کہ جومحت ہوگا وہ تو یہ جائے گا کہ ضوت ہوا درمجبوب کے ساتھ ہے تکلف باتیں کرنا شروع کرد ہے گوساری رات کیول نے گزرجائے۔ سووہ خلوت بی نماز ہے۔ واقعی اگر نماز نہ ہوتی توجن کے واقعات بڑھے ہوئے ہیں ان کے لئے کوئی خلوت کی صورت نہ تھی۔ کیونکہ اور تمام عبادات ہیں بولنا تو ضروری جائز ہے اس لئے ان ہیں لوگ اس سے بوئے چا لئے سے بند نہ ہوتے اور نماز ہیں ہے اس کی ممانعت۔ اس لئے جہاں نماز شروع کی اور تمام لوگ اس سے بات چیت کرنے سے بند۔ لیجئے نماز ہیں جن تعالیٰ کے ساتھ ضوت میسر ہوگئی اور می خلوت وہ چیز ہے۔ جس کی شبعت مولا نا قرماتے ہیں۔

جز بخلوت گا دخل آ رام نیست چ کنچ بے دور بے دام نیست (کوئی گوشہ بے دوڑ ودھوپ اور بغیر دام کے بیں ہے سوائے خلوت گا جن (کہیں) آ رام نہیں ہے) نماز ہی کیا یا کیزہ چیز ہے کہاس کی وجہ سےخلوت میسر ہوگئی اور جو قیود گراں تھیں انہی کی بدولت آسان ہوگئی اورخلوت بھی ایسی کہ اس کے اندر کوئی بھی حارج ہی نہیں ہوسکتا۔ جب نماز شروع کروی پھر بادشاہ بھی پچھنہیں کہ سکتا۔اگرسورہ بقربھی پڑھوتب بھی کوئی تقاضانہیں کرسکتا۔ جب نیت بائد دلی اورسب کو ہرادیا۔ ہاں کوئی ظالم ظلم ہی کرنے لگے تو جدابات ہے۔ ایسی آسان صورت ہے خلوت کی کہ جب کسی ہے جی گھبرائے بس انتدا کبر کہہ کرنیت یا ندھ او۔ نمازی کا کوئی کیا کرے گا۔ ہم نے دیکھا ہے کہ دوست مذاق میں گدگدی اٹھاتے ہیں گر جب نمازشروع کردی توسب الگ بین بات میں میا ہے کی بدوات مواقود کی بدوات۔ اگر قبود ند موتس تو لوگ کہتے کے میں ٹر انجی پڑھواور ہاتیں بھی کرو۔ آپ نے دیکھا کہ یہ قبود کیسی قدر کی چیز ہیں اس لئے الل محبت اس قید کوزلف یا رکی قید سمجھتے ہیں کیونکہ پیظوت بالمحوب قیود ہی ہے تو میسر ہوئی ہے۔ کیرانہ میں میرے عزیز ول میں ایک درویش تھے۔وہ خلوت کے لئے درواز ہ مربہرہ چوکی رکھتے نہ تھے کہ بہالو گول کا ٹا گوار ہوتا ہے بلکہ تخلیہ کی بیصورت اختیار کی تھی کہ بینھک میں عام منظر پر بیضتے عظر ہر وقت نفل پڑھتے تھے۔ا ٹرکوئی ملنے آیا توسلام پھیر کراس کا مزاج یو چھا اور پھرنی ز یر منے کھڑ ہے ہو گئے ۔ بھرسلام چھیر کر دو جار با تنس کیں اور پھرالندا سر کہدکر نیت باندھ لی خلوت اورانجمن ای کو کہتے ہیں۔غرض کہ خلوت کی خلوت تھی اور کوئی برا بھی نہیں ، نتا تھا۔

سویہ نماز الی چیز ہے کہ جس وات خلوت جا ہونماز شروع کر دوبس خدوت ہوجائے گی۔ تو گوی نماز خدوت گاہ حق ہے۔ سویہ کس وجہ سے خلوت گاہ حق بنی ، قیود ہی کی بدوست تو بنی ۔ ان قیود

ہے معلوم ہو گیا کہ نماز میں بہت بڑاروز ہے غرض نم زمیں روز ہ بھی بایا گیا۔ **نماز میں ج**ج

ای طرح نمی زمیں جج بھی موجود ہے۔ کیونکہ جج کی حقیقت ہے تعلق بالبیت۔ سونماز میں وہ موجود ہے۔ چنانچے تھم ہے 'فول و جھک شطر المستجد الحرام کرنماز کے وقت ، بیت الحرام کی جانب قصد کر کے رخ کرلیا کرو۔

سوتعلق بالبیت نماز کے اندرقلب میں بھی ہے اور خاہر میں بھی خاہر میں اور آلیہ کے اور خاہر میں اور آلیہ میں اور اس کو فرض کر دیا گیا ہے۔ اور قلب میں یہ کہ استقبال کعبر کی نبیت کی جاتی ہے۔ پس جونماز پڑھے گا اے برکات جج بھی میسر ہوں گے۔ استقبال کعبر کی نبیت کی جاتی ہے۔ پس جونماز پڑھے گا اے برکات جج بھی میسر ہوں گے۔ ای طرح نماز میں اعتکاف بھی ہے کیونکدا عتکاف کی روح و حقیقت ہے گنا ہوں سے دسکتا اسلامی میں اور میر خصوصیت) نماز کے اندر موجود المعتکف یعتکف اللہ نوب کلھاً۔ حدیث ہے اور پیر خصوصیت) نماز کے اندر موجود

المعتخف بعتخف اللذوت كلها، حديث باوري المصوصية) مماز لے اندر موجود بهد بنانچه نماز كاندر موجود بهد بنانچه نماز كاندر تمام كن بول ب ركب به نماز بين كون كناه كرسكتا به ان المصلوة تنهى كا بعض نے يمي تفسير كى به كه نمازى جب تك نماز بين ربتا باس وقت تك وه اس كو گنابول ب روكتى بهد واس كى اور تفسير ين بھى بين كريكى ايك لطيف تفسير ب متلاوت قرآن بھى نم روكتى بهد وقت تماز بين فرض قرآن بھى نم روكتى بهد وقت كان بين فرض موجود ب جس كے حديث بين بهت فضائل آئے ۔ جنانچة رائت نماز بين فرض بهدون قرائت نماز بين بين بوتى ۔

نماز کی جامعیت

پس جوشخص نماز پڑھے گا اس کو تلاوت قر آن کے فضائل بھی حاصل ہوں گے۔ خیال تو سیجئے کہ ذرائی مخضر چیز میں کیا کیا فضائل مل گئے۔ جج بھی مل گیا ،روز و بھی مل گیا۔ نلاوت قر آن بھی اورا عظاف بھی۔

بعض اذکارک فضیت اعادیث میں آئی ہے جیسے سمحان الله کراس کے ہارہ میں آیا ہے کے سبحان الله کراس کے ہارہ میں آیا ہے کے سبحان اللہ نصف میزان ہے نماز میں وہ بھی موجود ہے چنا نچدرکوع میں پڑھتے ہیں۔ سبحان رہی الاعلی اعادیث میں دعا کے بہت فضائل وارد ہیں العظیم اور تجدہ میں سبحان رہی الاعلی اعادیث میں دعا کے بہت فضائل وارد ہیں اور قر آن میں کہیں اور قصوص فی تخریس اور تحدیث میں دعا بھی موجود ہے اور دہ نماز میں پڑھا

ل لم أحدالحديث في "ما سوعة أطراف الحديث"

ہی جاتا ہے۔ نیز درود شریف کے بعد بھی دعا کی جاتی ہے۔ پس نم زمیں دعا کے فضائل بھی آھے۔ درود شریف کے کتنے فضائل ہیں وہ بھی نماز میں پڑھا جاتا ہے۔

غرض یہ کہ تمازی کسی برکت سے خالی نہیں۔ دعا ہے وہ اس میں موجود ثنا ہے وہ اس میں موجود ثنا ہے وہ اس میں موجود، ذکر مبارک ہے وہ اس میں موجود۔ بعض لوگ اولیاء القد کادم بھرتے ہیں اوران کے تذکرے کے دلدادہ ہوتے ہیں۔ سوان کا تذکرہ بھی تماز میں موجود ہے۔ چنانچہ ہررکعت میں بڑھتے ہیں۔ آللہ بُن اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمُ اس میں اولیاء القد بھی تو آئے۔

اب ز کو ق رہ گئے۔ شاید کوئی کے کہ نم زیس زکو ق کبال ہے۔ سوتھ کے کہ زکو ق کی روح ہے۔ انفاق فی سبیل اللہ ۔ فلا ہر ہے کہ نماز نظے تو پڑھو گئیس ۔ کپڑا تو پہنوہی گے اوراس میں خرچ بھی ہوہی گا (خصوصاً اس زمانہ میں کہ کپڑے کی بہت زیادہ قیمت ہوگئی ہے) لہٰذا انفاق بھی ہوگیا۔ اب کون می عیادت رہ گئی جونماز میں نہیں۔

شاید کوئی کہنے ملکے کہ نماز میں قربانی نہیں توسیجھ کیجئے کہ قربانی کی حقیقت باطنی ہے۔اپنے کوفن کردیتا اورائی خواہشات کومٹادیتا۔ سووہ نماز میں ایس ہے کہا پنے نفس سے پوچھو کہ قیود کے اندرمقید ہوکرانی خواہشات کوچھوڑ نایز تا ہے مولانا فرماتے ہیں ۔

معنی تکبیرای است اے ایم کاے خدا پیش تو ما قبریاں شدیم وقت ذک ابقد اکبر ہے کئ جم چنیں درذئ تفس کشتنی اللہ اکبر وایں شوم را مرببر تا وار مداجاں ازغنا تن چوں اسمعیل جاں بھو خلیل کردجاں تکبیر برجم نبیل

(تکبیر کی حقیقت یہ ہے کہ اے انقد ہم تمہارے سامنے قربان ہوتے ہیں.... فرخ کے وقت جو مار نے کے لائق ہے اللہ اکبر ہو... اور اس منحوں کا سرکاٹ ماروا در جان کو تکلیف ہے رہائی دو... مثل تن حضرت اساعیل علیہ السلام کے اور جان ما نند خیرات ابراہیم عدیہ السلام کے تکبیر بزرگ جسم ما نند مضرت اساعیل عدیہ السلام کے تکبیر بزرگ جسم ما نند مضرت اساعیل عدیہ السلام کے اپنا سراس محبوب حقیق کے سامنے رکھ اور اپنسی خوشی اس کی محبوب حقیق کے سامنے رکھ اور اپنسی خوشی اس کی محبوب حقیق کے سامنے رکھ اور اپنسی خوشی اس کی محبوب حقیق کے سامنے رکھ اور اپنسی خوشی اس کی مختوب میں اس کے خوش کون کی عبادت ہے جو نماز میں نہیں۔

نماز كاوقفه

پھر یہ کہ چارمنٹ بھی سب باتیں ہوجاتی ہیں۔ کیونکہ تخمینا چارمدے میں نماز ہوجاتی ہے۔ اول اون نماز و سے بی تھوڑی در میں ہوجاتی ہے اوراس پرلوگ اور نیادتی کرتے ہیں کہ جلدی جلدی پڑھتے ہیں۔
اس پرا یک حکایت یادآئی۔ کجبری ہیں دوطازم تھا یک اگریز کی ماتحتی ہیں۔ ایک تو سردشتہ دار کشتہ دار سے ایک وظیفہ وظائف سے فارغ ہوکرآتے اور سردشتہ دارصا حب الٹی سیدھی فکریں مار کراور بھی بے پڑھے بی فوراً ہی آئی دوظیفہ وظائف سے فارغ ہوکرآتے اور سردشتہ دارصا حب الٹی سیدھی فکریں مار کراور بھی بے پڑھے بی فوراً ہی آئی دوزائکریزنے کہا کہ سردشتہ دارصا حب ہی جہدہ ہی جلد واپس آجاتے ہو۔ نائب دریش آتا ہے۔ یہ کیابات ہاں نے جواب دیا جسنور بات بیہ کہتا تب سردشتہ دارصا حب نے تواب دیا جسنور بات بیہ کہتا تب سردشتہ دارصا حب نے تواب دیا جسنور بات بیہ کہتا تب سردشتہ دارصا حب نے تواب دیا جسنور بات بیہ کہتا تب سردشتہ دارصا حب نے تواب دیا جسنور بات بیہ کہتا تب سردشتہ دارصا حب نے تواب دیا جسنور بات بیہ کہتا تب سردشتہ دارصا حب نے تواب دیا جسنوں بات بیہ کہتا تب سردشتہ دارصا حب نے تواب دیا جسنوں ہوج کہ کر پڑھتے ہیں اور میں باد ہاں گئے ہیں جلد پڑھ کر آبان ہوں اور ووا نک ایک کر پڑھتے ہیں اس لئے ہیں جلد پڑھ کر آبان ہوں اور ووا نک ایک کر پڑھتے ہیں اس لئے درگتی ہے۔

غرض بعض کونمازی مشق ہوتی ہے کہ انہیں نماز کے شروع کرنے کی تو ضرورت ہوتی ہے بھر
انہیں کی بات کے قصد کرنے کی ضرورت نہیں رہتی ۔ زبان خود بخو دچلتی رہتی ہے جیسے کہ گھڑی کہ
اے کوک (چ بل) دینے کی تو ضرورت ہوتی ہے۔ پھر وہ خود بخو دچلتی رہتی ہے۔ اس طرح القدا کبر
پرتو کوک شروع ہوئی اور سمام پرختم ۔ اگر نماز اس طرح پڑھی جائے تو چارمنٹ ہے بھی کم لگتے ہیں۔
ایک آ قا اور نوکر تھے۔ وہ نمی زیڑھنے آتے تو آپس میں بحث ہوتی کہ پہلے کون فارغ ہو۔
نماز شروع کرتے اور ہرایک کی بھی کوشش ہوتی کہ پہلے میں فارغ ہوں۔ بس ادھر القدا کبر کہتے
اور ادھر نمی زختم ہوجاتی ۔ ایک شخص نے کہ کہ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اذکار تو گھر کرآتے ہوا ور اٹھک بیٹھک کرتا ہاتی رہ جاتا ہے وہ یہاں آکر بولئے ہو۔

اس پہلے فارغ ہونے پرایک قصدایک ہوشیاروں کے قصبہ کایادا یا۔عید کی اہامت میں دو شخصوں میں تنازعہ ہوا۔ اس نے کہا کہ نماز میں پڑھاؤں گااس نے کہا میں پڑھاؤں گا۔ آخر عین وقت پردونوں نے ایک دم سے اہامت شروع کردی۔ پچھان کے متقتدی ہو گئے پچھا کے۔ایک پہلے الحمد پڑھ بچھا ورا بھی دوسرے نے نتم نہیں کی تھی۔ جس نے پہلے فتم کی تھی دو تفہر گئے۔اس خیال سے کہ جونی سورة یہ پڑھے وارا بھی دوسرے نے نتم نہیں کی تھی۔ جس نے پہلے فتم کی تھی دو تفہر گئے۔اس خیال سے کہ جونی سورة پڑھ کر پہلے فتم کردون گا اور میری

بنوں گا۔لہذااس نے جوسورۃ پڑھی اس نے اس سے چھوٹی سورۃ پڑھ کرانقدا کبر کہہ کررکوع کر دیا مقتدی دوسرے امام کے بھی رکوع میں گئے۔بس اس جماعت کے ایک مقتدی نے اپنے پاس والے کے کہنی ماری اور کہا اونہہ۔مطلب میتھا کہ میں ہماراا مام نہیں تورکوع میں کیوں جاتا ہے۔

ال منتم كى حكايات پرجمیں بنى آتى ہے مرجم خوداس كے عامل ہیں۔ يہى چاہتے ہیں كه نماز جلدى ختم ہو۔ سوائے اِنَّا أَعُطَيْنَا اور قُلْ هُوَ اللَّهُ كَ جمیں اور كوكى سورة ہى يا دہيں۔ ہاں اگرسلطنت ال جائے یعنی امامت تو پھر دیھوکیسی کیسی لجی سورتیں پڑھتے ہیں كہ مقدى بھی كھڑ ہے گھڑے وہال ہیں آجا كیں۔

پڑھ چکے تو بجائے سلام کے زور سے ایک گوزرسید کیا۔

اس نے تو ہمشخرے نقل کی تھی ہاتی ہماری اصل نماز بھی الی ہی ہے نہ تعدیل ارکان کرتے ہیں نہاں کا اور کوئی حق اوا کرتے ہیں۔ بس جلدی آئی ہوتی ہے کہ کھی تھیک نہیں۔ اوھرائد اکبر کہا اوھر ختم۔

میں کہتا ہوں کہ اگر سنجال کر پڑھیں تو بھی چار منٹ صرف ہوتے ہیں۔ پھر اور جدی کرنے کی میں منزورت ہے۔ چارمنٹ کی تو ہات ہے۔ آئی دیر میں تو اب کے ڈھیر کے ڈھیر لے کر چلے آؤگے کے منزود کہ یا ایس چنیں بازار را کہ بیک گل سے خری گزار را شیم جال ایستا تمرہ وصد جال وہد سے انہوں وارد ہمت بیایہ آل وہد شیم جال ایستا تمرہ وصد جال وہد سے انہوں وارد ہمت بیایہ آل وہد

(ایسا بازار کہاں مل سکت ہے کہ ایک بھول کے بدے میں پہن ہی خرید لے۔ خقیر وفائی جان کینت ہیں اور باقی جان عط فرماتے ہیں۔ تمہمارے وہم و گمان میں نہیں آسکتا جو بچھ عطافر ماتے ہیں) جار منٹ میں اتنی وولت اافسوس ہے کہ اس پر بھی ہمارے بھائی نماز پڑھنے میں پس و بیش کرتے ہیں اور حالت یہ ہے کہ چو پالوں میں باتیں گھڑتے رہتے ہیں میں کہت ہوں کہ سجد میں باتوں ہی کے واسطے چلے آیا کرو۔ پھراس کی اصلاح بھی ہوجائے گی۔ آؤتو سہی۔

بہرطال نمی زکی ہیئت بتلار ہی ہے کہ نماز تمام عبد دات میں ممتازہ ۔ اپنے باطن ہے بھی کہ اس کے اندر تمام عبادات موجود ہیں اور اپنے ظاہر ہے بھی کہ جیسے نماز کی ہیئت خشوع وخضوع کی ہے اور کسی عبادت کی نہیں۔ اس طرح ذکر میں۔

نماز کی صورت

ذکر میں جینے منافع ہیں وہ بھی نماز میں ہیں۔ کیونکہ بڑمل کی ایک ہیت ہوتی ہے اور ایک روح اور ضروری دونوں ہی ہوتی ہیں۔سونماز کی روح ذکر ہے چنا نچیار شادفر مایا:

اقم الصلوة لدكوى . كميرى يادكرن ك لئة تماز يرها يجيد

یس جومنافع ذکر کے ہوں گے۔ نماز میں وہ بھی ہوں گے۔ بس نماز تمام فضائل کی جامع ہوئی اپنے ان اسرار کے بیان کرنے پراس وقت کے مناسب ایک کام کی بات یا وہ آئی۔ وہ یہ اس ذمانہ میں بعض لوگوں نے ہر چیز کے اسرارا یے طور پر بیان کرنے شروع کئے ہیں کہ گویا اس عمل مقصود ہی سراورراز ہے۔ سمجھ لیجئے کہ اگر بہی طرز رہاتو شاید چندروز میں الحاد تک فو بت آجائے رکونکہ جب ہر ممل کے اسراراورارواح بطور مقصود کے بیان کئے جا تیں تو اس کا نتیجہ یہ ہوگا کہ صرف ارواح کو ضروری ہمجھیں گے اورصورت کی طرف سے باعتمانی ہوجائے گی اوراس سے اندیشہ ہے کہ عبادت کی صورت نہ جھیوٹ جائے۔ کیونکہ جب کہ ان کے نزد یک عبادت کی روح تو ضروری ہوگی اوراس کی صورت ضروری نہ ہوگی تو اس صورت کی قید کو صدف کرویں گے اور مطلق تو کر پراکتفا کریں گے۔ در کر براکتفا کریں گے۔ در کر براکتفا کریں گے۔ دنانے آج کل ایک راز اور برکت نماز کی بیٹی بین کی جاتی ہے کہ جن عت کی نماز سے حنائے آج کل ایک راز اور برکت نماز کی بیٹی بین کی جاتی ہے کہ جن عت کی نماز سے حنائے آج کل ایک راز اور برکت نماز کی بیٹی بین کی جاتی ہے کہ جن عت کی نماز سے حنائے آج کل ایک راز اور برکت نماز کی بیٹی بین کی جاتی ہے کہ جن عت کی نماز سے حنائے آج کل ایک راز اور برکت نماز کی بیٹی بین کی جاتی ہے کہ جن عت کی نماز سے حنائے آج کل ایک راز اور برکت نماز کی بیٹی بین کی جاتی ہے کہ جن عت کی نماز سے حالے آج کل ایک راز اور برکت نماز کی بیٹی بین کی جاتی ہے کہ جن عت کی نماز سے کی نماز سے کہ جن عت کی نماز سے کہ جن عت کی نماز سے کر براکتوں کی جاتی کی جاتی کی جاتی کی جن سے کی نماز کی جاتی کو تھور کی بیٹی کی جاتی کی جن سے کہ جن عت کی نماز کی جو تو کی خور سے کی نماز کی جاتی کو تو کی خور سے کی خور کی خور کی خور کی خور کی خور کی خور کی کر براکتوں کی خور کی خور کی خور کی خور کی خور کی کی خور کی خو

چنانچہ آج کل ایک راز اور برکت نماز کی میجی بین کی جاتی ہے کہ جماعت کی نماز سے اتفاق ہوتا ہے اوراس کی میرتر تبیب بتلائی جاتی ہے کہ پانچوں نماز وں میں تو محلہ کے لوگ جمع ہوتے ہیں۔ پھر جمعہ میں شہر کے لوگ ۔ پھراس کی ضرورت ہے کہ دیہات کے لوگ جمع ہوں اس کیلئے عید ہے۔ پھرضر ورت ہے کے مختلف و مایتوں کے ہوگ جمع ہوں اس کیلئے جج تجویز کیا۔ پس میہ عیادات ایک چیز جیں کدان میں اتفاق کی رعابیت رکھی گئی ہے۔

سی منوان تو بہت اچھ ہے اور بہت خوب صورت ہے گراس کا ضاصہ یہ نگاہ ہے کہ عبددات بنفسہ مقصود نہیں بلکہ بعصالحبا مقصود ہیں۔ اس کا قال کسی وقت میں یہ بوگا کہ اگر اغراض بدون ذرائع کے حاصل ہو جو کیں گیا۔ اب ان اہل لی کیا ضرورت ہے۔ اس سے الحاد کا باب کھنتا ہے۔ یہ با تیں عوام الناس کے سامنے ہرگز نہ بیان کی جو کیں اورا کر بیان کر میں بھی تو کہددیں کہ عبدالت تو بنفسہا ہی مقصود ہیں۔ ہال ان سے میدمص کے بھی حاصل ہوتے ہیں جیسے کوئی جے کی ترغیب وے اور کیے کہ جج کرنے سے ایسے ایسے منافع حاصل ہوتے ہیں کہ مکہ کی سیر ہوتی ہے۔ ور یا بہر ز، شہر و یکھنے ہیں آتے ہیں گریہ چیزیں مقصود نہیں ہیں۔ مقصود اصلی رضاحت ہیں۔ ہال اس سے بیر مان علی مرتب ہوتے ہیں۔ اس طرح اعمال پر جومصالح مرتب ہوتے ہیں وہ مقصود بالذات نہیں بمکہ مقصود بنفسہا بہی اعمال ہوجائے ہیں۔ اس طرح اعمال پر جومصالح مرتب ہوتے ہیں۔ وہ مقصود بالذات نہیں بمکہ مقصود بنفسہا بہی اعمال ہیں خواہ یہ مصالح نہ بھی مرتب ہوں۔

نماز کی روح

بیان میہ ہور ہاتھا کہ ذکرنم زکی روٹ ہے۔ درمیان میں ایک کام کی بات بھی بیان کر دی اور چونکہ ذکرنماز کی روح ہے ای واسطے نماز کی فضیلت کے موکد کے لئے فر ہوتے ہیں۔

وَلَذِكُوا اللَّهُ اكْبُولِ كَاللَّهُ كَاللَّهُ الْكُبُولِ فَي اللَّهُ الْكُبُولِ فِي إِلَيْهِ اللَّهُ الْكُبُولِ فِي إِلَيْهِ اللَّهُ الْكُبُولُ فِي إِلَيْهِ اللَّهُ الْكُبُولُ فِي إِلَيْهِ اللَّهُ اللَّهُ الْكُبُولُ فِي إِلَيْهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّلْمُ اللل

اس لئے نمازیس اگریہ خاصیت ہوکہ تنہی عَنِ الْفَحُشَآءِ (برائیوں ہے روکتی ہے) تو تعجب کی بات نبیں ہے بعض لوگ یہ کہنے گئے کہ ذکر بڑھ کر ہے یعنی نماز ہے بھی۔ پس ذکر ہی کرلیا کریں ٹمازنہ پڑھیں۔

اس کا ایک لطیف جواب میرے عرض سابق ہے نکل آیا یعنی وبلد مُحُورُ اللّٰهِ اَکُبُورُ (اورامقد کی یاد ہوئی چیز ہے) کا اس کا بیہ مطلب نہیں ہے کہ ذکر امقد نمی زے ہوڑے کر ہے بلکہ بیست ہے ماقبل کی۔ پہنے نمی ذکی ایک خوبی بیان کی ہے اب آگاس کی معنت بتلاتے ہیں مطلب بیہ کہ نماز کی بیخامیت ہے کہ دہ ہرا نیول ہوئی اس لئے ہوئی مفاد کی بیخامیت اس کی کیوں ہوئی اس لئے ہوئی کہ وَ لِلِدِ تُحُورُ اللّٰهِ الْحُبُورُ (اس کی روح ہے ذکر القداور) المقد کا ذکر ہوئی چیز ہے اور ہر پہلو سے مفید کہ وَ لِلِدِ تُحُورُ اللّٰهِ الْحُبُورُ (اس کی روح ہے ذکر القداور) المقد کا ذکر ہوئی چیز ہے اور ہر پہلو سے مفید ہے جُھن ہے عِشن ہے ۔ عَشن ہی کُونُ اس خاصیت پر ہے۔

ان ذكر ني في نفسه ذكرته في نفسي وان ذكر ني في ملاء ذكرته في ملاخير منهم

یعنی جودل میں یاد کرتا ہے تو خدا اس کودل میں یاد کرتے ہیں (خداول سے پاک ہے مگر صرف شاکلۂ ایسافر مادیا) جوجمع میں یاد کر ہے تو حق تعانی اس کوجمع میں یاد کرتے ہیں۔
مگر صرف شاکلۂ ایسافر مادیا) جوجمع میں یاد کر ہے تو حق تعانی اس کوجمع میں یاد کر نے ہیں۔
موگ کے این کا کو بیاد کر نے ہے تی تعانی کے نہ کور ہے ۔ عاشق کو مجبوب کا نام لینا ہی نہا ہی تہا ہے ہیارامعلوم ہوتا ہے اور پھراس کا تو بی جھنا ہی نہیں کر مجبوب اس کا نام لیے۔

یہاں ہے ایک بڑی بشارت معلوم ہوئی کہ جیسے ہم خدا تعالیٰ کو چاہتے ہیں ایسے ہی وہ بھی ہم کو چاہتے ہیں گران کے چاہنے کا بظاہرا علان نہیں ہوتا۔ اخبار وآثار سے معلوم ہوتا ہے۔ مولا نا فریاتے ہیں

تعشق معشوقاں نہاں است وستیز عشق معشوقاں خوش وفر بہ کند لیک عشق معشوقاں خوش وفر بہ کند لیک عشق معشوقاں خوش وفر بہ کند امعشوقوں کاعشق پوشیدہ اور چھپا ہوا ہے ، عاشق کاعشق دوسوطبل اور شہز ئیوں کے ساتھ فا ہرو با ہر ہے لیکن عاشقوں کاعشق د بلا کر دیتا ہے اور معشوق کاعشق موتا اور فر بہ کر دیتا ہے ۔) سوجیسے عاشق معشوق کا طالب ہوتا ہے ای طرح معشوق عاشق کا طالب ہوتا ہے ۔ تشنگاں گرآب جو ئنداز جہال آب ہم جوید بعالم تشنگاں گرآب جو ئنداز جہال آب ہم جوید بعالم تشنگاں (پیاسے اگر پانی کے متلاشی ہیں تو پانی بھی ان کا طالب ہے)

قرب خداوندي

بلکہ میں تو یہ کہتا ہوں کرتی تھ لی کو بندہ سے جتنی محبت ہے اتنی بندہ کوتی تھ لی سے نبیں ہے اور اس کی ولیل یہ ہے کہ محبت موقوف ہے معرفت پراور ظاہر ہے کہ جیسی معرفت بندہ کی خدا کو ہے بندہ کو خدا کی نبیس۔ اور یہی معنی جیس آیت و سعن اقرب الیہ من حبل الورید (ہم اس کے شدرگ ہے بھی زیادہ قریب ہیں) کے کہ علا و معرق بندے ہم سے قریب ہیں و نعلم ماتو سوس به نفسه (تمہارے جی جی جو وسوسہ آتا ہے ہم اس کو (بھی) جاتے ہیں)۔ اس وجہ سے نمون اقر ب فرمایا کہ ہم قریب ہیں انتہ اقرب الینائیس فرہ یا کہ تم بھی ہم سے قریب

ہو۔سواس ہے قرب حقیقی مراد ہوتا تو دونو ل طرف ہے قرب ہوتا کیونکہ بیقر ب نسب متکر رہ ہے ہے۔اگرایک طرف ہے تر ب ہوگا تو دوسری طرف ہے بھی ضرور ہوگا۔

ر ہا قرب علمی سواس میں بیضر ورنہیں کہ اگر ایک طرف سے قرب ہوتو دوسری طرف ہے بھی ہو۔ تو قرب علمی خدا کی طرف ہے تو ہے۔اس لئے کہان کاعلم کامل ہےاور بندہ کی طرف ہے نہیں کیونکہ بندہ ہے غافل۔ پس بندہ تو خدا ہے دور ہوا اوراللہ تعالیٰ بندہ سے قریب بخرض حق تنہ کی کو پوری معرفت ہے اور معرفت ہی پر مدار ہے محبت کا۔اس لئے ان کو پوری محبت ہوگی ہم ہے۔ اگر کوئی کیے کہ حق تعالیٰ کو بندہ کی معرفت تو ہے تکرعیوب کے ساتھ کیونکہ بندہ میں ہزاروں عیب ہیں۔ پس جب اس کی معرفت ہوئی تواس کے ساتھ اس کے تمام عیوب کی بھی معرفت ہوئی۔ سوجس معردنت کے ساتھ عیوب کی بھی معردنت ہوتو وہ محبت کا سبب نہیں ہوسکتی یو بیں کہوں گا کہ بیاس ہے کہو جوصورت يرمرتا ہو۔جوصورت كاعاشق ہوتا ہے عيوب يرمطلع ہونے سےاس كومحبت بيس رہتى۔

اللدكي محبت

حق تعالیٰ کوجوہم ہے محبت ہے تو وہ اس لئے تہیں کہ ہمارے اندر کوئی خوبی ہے بلکہ اس لئے ہے کہ ہم ان کے بنائے ہوئے ہیں۔حضرت نوح علیدالسلام کے قصد میں ہے کہ آپ نے اپنی قوم یر بددعا کی قوم بلاک ہوگئی۔سب کچھ ہوجانے کے بعد حق تعالیٰ کا تھم ہوا کہ فلاں جگہ جا کر جالیس برس تک مٹی کے برتن بناؤ۔ چنانچہ ایس بی کیا۔اس کے بعد علم ہوا کہ سب کوایک طرف ہے تو ر و الو۔ چنانچانہوں نے تو ژنا شروع کیا مگردل پر بہت صدمہ تفاحق تعالیٰ نے فر مایا کہ تو ژنے ہے کچھ دل بھی دکھا۔عرض کیا کہ دل تو بہت دکھا۔ارشاد ہوا کہ بس ایسے ہی اپنی مخلوق کو ہلاک کرنا ہم کو نا گوار ہوگا جیسے برتن تمہارے بنائے ہوئے تھے ای طرح بندے ہارے بنائے ہوئے تھے۔

قارون کے قصد میں دیکھیئے کہ وہ اُو کہدر ہاتھا کہ اے مویٰ مجھے کو بچ وُ اور آپ فر ماتے تھے خذ با ارض کہا ہے زمین اسکو پکڑے یہاں تک کہ بالکل زمین میں دھنس کیا۔ حق تعالیٰ کی طرف ہے خطاب ہوا کہ اگرجمیں ایک د فعہ بھی بکارتا تو ہم فور ابچا لیتے۔

عتاب میں عنایت

سیر میں ہے کہ جب بندے گناہ کرتے ہیں تو زمین آسان کہتے ہیں کہ اے اللہ جمعی تھم دے کہ ہم ان پرٹوٹ پڑیں۔اس پرحق تعالیٰ فر ماتے ہیں کہ میرے بندوں کوتم نے تھوڑا ہی بنایا ہے۔ سوحق تعالی کی بندوں ہے اس قدر محبت ہے۔ حتیٰ کرحق تعالیٰ کے عمّاب تک میں بھی عن یت ہوتی ہے چنانچے ایک موقع پرارشادفر ماتے ہیں:

ولويؤا خذالله الناس بماكسبوا ماترك على ظهر ها من دآبة .

ا کران تدمیا ل اوگوں کے اعمال پرمواخذہ کرتے تو کسی جا ندار کوز بین پرنہ چھوڑتے۔

بظاہر میر کلام بے جوڑ سامعلوم ہوتا ہے۔ مقدم اور تالی میں بظاہر علاقہ نہیں معلوم ہوتا۔ بلکہ غلام تو ہے کہ بول فرماتے:

> ولويؤا خذالله الناس بماكسبوا ماترك عليهما من بشر. كاكرة دميول معموافذه فرمات توزين يركي آدمي كونه چوژت-

نہ ہیکہ مواخذہ تو صرف آ دمیوں ہے فرماتے اور ہلاک جانوروں کوبھی کردیے۔ بظاہر ہے بالکل بے جوڑ معلوم ہوتا ہے۔ سوبات ہیں ہے کہ عین عمّاب میں بھی ان کا شرف بتلایا ہے کہ مقصود بالکل بے جوڑ معلوم ہوتا ہے۔ سوبات ہیں ہے کہ عین عمّاب میں بھی ان کا شرف بتلایا ہے کہ مقصود بالکت انسان ہی ہے اور دوسری چیزیں اس کے واسطے بنائی گئی ہیں تو اگر ان سے مواخذہ کرتے تو بالن میں ہے کسی کونہ چھوڑ تے اور جب ان کونہ رکھتے تو جانور نرے کیا کرتے۔

کی رحمت ہے کہ عمّا ب میں بھی ہماراشرف بیان کیاجار ہاہے کہ انسان ہی اشرف المخلوقات ہے حق تعد کی کا انعام و یکھنے کہ جو تیاں نگا تھیں گرقد رومنزلت نہیں گھٹائی بھلاایہ آقال سکتا ہے۔ ایسے آقا کا بھی ادب اور یہی معاملہ ہے جیسا ہم کررہے ہیں۔

حق تعالیٰ کی رحمت

حق تعالیٰ کومحبت ہم ہے اس حیثیت ہے ہے کہ ہم اس کے بنائے ہوئے ہیں کو طبع نہ ہوں اور جواطاعت کرے اس کو بوچھٹا ہی نہیں ان برتو لمحہ برلمحہ فخر کرتے ہیں۔

اگرکوئی ذکر کا جلسہ ہوتا ہے شل وعظ وغیرہ کے توجب فرشتے یہاں ہے لوٹ کرج تے ہیں تو اس سے پوچھتے ہیں کہ میرے بندے کیا کررہ ہیں وہ عرض کرتے ہیں کہ آ پ کی تبییج اور تحمید کررہے ہیں۔ حق تعالی فرماتے ہیں کہ وہ کی جا ہے ہیں فرشتے عرض کرتے ہیں جنت کوطلب کرتے ہیں اور دوز خ سے پناہ مانتھے ہیں۔ ارشاد ہوتا ہے کہ گواہ رہو میں نے سب کو بخش دیا۔ فرشتے عرض کرتے ہیں کہ ان میں ایک محفی آ پ کے ذکر کیلئے نہیں آیا تھا بلکہ کی کام کے لئے فرش کرتے ہیں کہ ان میں ایک محفی آ پ کے ذکر کیلئے نہیں آیا تھا بلکہ کی کام کے لئے

آیاتھا۔اس کا مقعوداس جلسہ میں شرکت نہتی۔ حق تعالی قرماتے ہیں کہ ہم نے اس کو بخش دیا۔
اس لئے کہ جم قوم الایشقی جلیسہ (بیالیے لوگ ہیں جنگے ساتھ بیضے دالے محروم نہیں)
اب ری یہ بات کہ بندوں کی حالت قرشتوں سے کیوں پوچھتے ہیں۔انہیں توولیے ہی بدوں فرشتوں کے تمام باتوں کاعلم ہے۔ سواس کی وجہ یہ ہے کہ فرشتوں نے ایک وفعہ ہمارے متعلق ایک بات کہ دی تھی جس سے اب تک ان کا چھانہیں چھوٹا۔ سوان سے پوچھ کر یہ جنگاتے ہیں کہ دیکھو یہ وہ ی تو ہیں جن کے بارہ میں تم نے ایسا کہا تھا۔ فرشتوں کے پاس کوئی جواب شہیں ہوتا۔فرشتوں کے پاس کوئی جواب

المحعل فيها من يفسدفيها. كرآب زين بن اليكوفليف بنات بي جواس بن قسادكر ، من سے مراد عام تھا کہ وہ سب ایسے ہی ہوں سے سووہ موجبہ کلیے کے مدی تھے ہی سالبہ جزئیان کے مقابلہ میں کافی ہو گیا (لیعنی ایک ایسے خص کا بیش کردینا جومطیع کامل ہوان کی موجبہ کلیے تو ڑنے کے لئے کافی ہے۔ منبیں کے سارے مطبع ہوں تب ہی ان کا جواب ہوسکے سوفر شتے ایک دفعہ ہم براعتراض کرنے ہے کرے گئے۔ آج تک ان کا پیجیانہیں چھوٹا۔ جب کوئی موقعہ ہوتا ہے توحق تعالی جتماد ہے ایل۔ اس طرح فرشتوں کی بدلی ہوتی ہے عصراور منج میں۔جوفر شنے عصر کے وقت آئے تنے وہ صبح کے وقت رخصت ہوتے ہیں اوران کی بجائے دوسر نے فرشتے آتے ہیں۔ بھر وہ عصر کے وقت ھے جاتے ہیں۔اور دوسرے آجاتے ہیں۔ جب واپس ہوکرجاتے ہیں توان سے بو چھاجا تا ہے کہ جارے بندے کیا کررے تھے وہ عرض کرتے ہیں کہ یاالی جب ہم گئے تھے جب بھی نماز پڑھ رہے تھے اور واپسی کے وقت بھی نماز پڑھتے جھوڑ اامتدمیاں دونوں وقت فرشتوں کو جسکا دیتے ہیں اور بدلی بھی خاص اس وقت میں کرتے ہیں۔جوہنر کا وقت ہے۔اوراس وقت کی حالت ہو چھتے ہیں کہ میرے بندوں کوئس حال میں چھوڑ کرآئے۔ حالانکہ فرشتے ویکھتے سب ہیں جو پچھ بھی بندے کرتے ہیں _ کیوں کہ ان کی شان ہے یعلمون ماتفعلون (جوتم کرتے ہووہ اے جانتے ہیں) تکران سے صرف اسی وفت کی حالت ہو چھتے ہیں۔ بلا یو چھے وہ خود کہ نہیں سکتے ۔ سومطلب میہ ہوا کہ دیکھوسب پہی محرخوبی ہے سوااور پکی مت کہو صرف خوبی کی بات کہو برائی کی بات مت کہو صاحبو۔ حق تعالیٰ کواتن محبت ہے بندوں ہے اور بندے بیجارے کیا محبت کریں گے۔اگرتم کوحق تعالی ہے محبت ہے تو ہوں سمجھو کہ ادھراس ہے زیادہ محبت ہے۔غرض کہ عشاق کے نزدیک

توذكركا يكى نفع بى سب يكوي ب كه خداتعالى بهم كويادكري _اوراگر يج بوجهوبهم تويادكر في كابل نبيس كيونكدان كاذكر جنني ادب سے بوتا چاہيد يهاں اس كاعشر عشير بھى نبيس بيطلا عاكم دنيا كا خرائام تولودكيا يكونكدان كاذكر جنني ادب سے بوتا چاہيد يهاں اس كاعشر عشير بھى نبيس بيطلا عاكم دنيا كا نرانام تولودكيا يكونكا و يكتنى بوى رحمت نرانام تولودكيا يكونكا و يكتنى بوى رحمت بيام كون توزيان بھى تام لينے كے قابل نبيس مارى زبان كيسى ہے ۔ جارى توزيان بھى تام لينے كے قابل نبيس مارى زبان كيسى ہے ۔

ہزار باریشو کم دہن بمشک وگلاب ہنوزنام تو گفتن کمال ہے اولی است ہم تو مشک وگلاب سے منہ کوصاف کریں تب بھی نام لینے کے قائل نہ ہوں گررحمت و کیھے کہ پھر بھی ہمارے یاد کرنے پروہ ہم کو یاد کرتے ہیں۔ چنانچ ارشاد ہے فاذ کرونی اذکر کم (پس تم مجھے یاد کرو۔ میں (اپنی عنایت ہے) تہمیں یاد کرول گا)۔ اے صاحبوا محبوب کا محب کو یاد کرنا تھوڑی بات ہے ہمیں اس کی قدر نہیں۔

صى برنی حالت و کیمے۔ ایک و فعہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ابی ابن کعب سے فرمایا کہ مجھ کواللہ نے حکم کیا ہے تہمارے سامنے قرآن پڑھنے کا۔ اس پر ابی کعب نے کہا۔ اللہ سانی۔ کیا اللہ نے میرانام لیا ہے۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے قر، یاتھ! ہاں! انہوں نے تہمارانام لیا ہے۔ اس پرا بی ابن کعب دونے لگے۔ محبوب کے نام لینے کی قدران حضرات کوتھی۔

کوئی کے کہ یہ توخوشی کاموقع تھااس وقت رونا کیسا تو سمجھ لو کہ رونا ہمیشہ ٹم ہی کی وجہ ہے نہیں ہوتا۔حضرت حابی صاحبؒ فرمایا کرتے تھے کہا کیسرونا خوشی کا ہے اورا کیٹم کااورا کیسے روٹا ہے کم مازاری عشق کا تو یہ روناعشق تھا۔ بہرہ ل نماز کی روح ہے ذکراورذکر کی خاصیت ریہ ہے تو نماز کی ہمی ریفاصیت ہوئی۔ تو نماز کی بھی ریفاصیت ہوئی۔

ذكركي خاصيت

اس کے علاوہ ذکر کی ایک خاصیت ہے ہے کہ ذاکر کوکو کی خطرہ اور پریشانی نہیں رہتی اور ہے

بات عقل اور طبع دونوں انتہار ہے ہے۔ عقل تو اس لئے کہ تن تعالی فریاتے ہیں ۔

فاذ محرونی اذکر محم ، کہتم امتد کو یاد کر وو چہہیں یا دکریں گے۔

پس جب کوئی شخص خدا کی یاد کرے گا اس کے ساتھ یہ بھی سجھے گا کہ خدا تعالی مجھ کو یاد کرتے

ہیں اور قاعدہ ہے کہ جب کسی کو یہ معلوم ہوتا ہے کہ حاکم ہمارا خیال رکھتا ہے تو پھر اس کو پچھ خطرہ نہیں

رہتا۔ پس حق تعالی کو یاد کرنے ہے اس کو کسی تسم کا خطرہ نہ رہے گا۔

اورطبعا اس لئے کہ بیدام طبع ہے کہ جب کوئی شخص کسی کویاد کرتا ہے تواس کواور ہر طرف
سے کیسوئی ہوجاتی ہے۔ یعنی جس کو یاد کرتا ہے اسکے ساتھ کوئی چیز قلب جس جمع نہیں ہوتی ہیں
جب خدا تعالیٰ کویاد کریں گے توان کے ساتھ کیسوئی ہوگی۔ یکسوئی ہوجانے سے پھر کسی (اور)
طرف النفات نہیں ہوتا۔ اور پریٹائی مختلف پہلوؤں پرالنفات کرنے ہے ہوتی ہاس لئے ذکر
سے کی تتم کی پریٹائی نہیں روعتی اور میں اس پرتشم کھا تا ہوں اور گویہ یات اپنے برزرگوں کی تقلید
سے کہ در ہا ہوں کہ خدا کے یاد کرنے والے کے پاس دنیا کی نہ پریٹائی ہے، نہ برزرخ کی نہ آخرت
کی منہ بل صراط کی۔ گرمیں اس کوسائنس کی روسے مجھائے ویتا ہوں۔

وہ بیر کہ قاعدہ کلیہ ہے کہ جب کوئی چیز (ذہن میں) پائی جاتی ہے تواس کا مقابل نہیں رہتا اور پر بیٹانی مقابل ہے کیسوئی کی ۔ پس جب کیسوئی آئی تواس کا مقابل کہاں ۔ پس جوخص حق تعالیٰ کی یاد میں مشغول ہوگا وہ ہرگزیر بیٹان نہیں ہوسکتا ۔

مولانا فرماتے ہیں ۔

نیج کنجے بے دود بے دام نیست جز بخلوت گاہ حق آرام نیست (کوئی گوشہ بے دوڑ ودھوپ اور بغیر دام کے نہیں ہے ،سوائے خلوت گاہ حق کے (کہیں) آ رام نہیں ہے)

باتی اللہ کے سوائے جہاں بھی پناہ لو گے آفت سے چھٹکارہ نہ ہوگا _

گرگریزی برامید رائع جم ازا آنجا پیشت آید آفت (اگرکسی راحت یا آرام کی جگه پر بھا گیا ہے تو اس جگہ بھی تجھ کوکوئی آفت چیش آئے گی)

پس جب سارے ٹھکانے ایسے اور ایک ٹھکاٹا ایسا تو ای کواختیار کرنا چاہیے۔ اور ذکر کی اس خاصیت کارات دن مشاہدہ ہوتا ہے۔ چنانچے اہل اللہ کی حالت دیکھے لیجئے وہ نقروفاقہ میں اور طرح طرح کے امراض میں جتلا ہوتے ہیں واللہ تکلیف ان کے جسم تک محدود رہتی ہے۔ پریشائی جس کانام ہے وہ بھی نہیں ہوتی ، اور وہ برزیان حال یہ کہتے ہیں۔

کوئے نومیدی مرد کارمید ہاست سوئے تاریکی مرد خورشید ہاست (ناامیدی کی راہ نہ جاؤ، بہت کی امیدیں ہیں تاریکی کی طرف نہ چلو بہت ہے آ فاب ہیں) ایک رازاس کا کہ اہل اللہ کو پریشانی نہیں ہوتی ہے بھی ہے کہ یہ ہر واقعہ اللہ کی طرف ہے بجھتے ہیں اور اللہ سے ہان کی محبت۔ اس لئے جو ہات بھی ان کو پیش آئے گی وہ اس کومجوب کی طرف سے مجھیں گے۔ جب یہ ہوتی۔ سے مجھیں گے۔ جب یہ ہوتی۔ سے مجھیں گے۔ جب یہ ہوتی۔ در کیا گارانہیں ہوتی۔ در کیھئے اگر کوئی عاشق چلا جارہا ہوا در مجبوب بیچھے سے آگر اس کے زور سے دھول لگائے۔ سے در میں کے سے در در سے دھول لگائے۔

اوريه يين المركز كي كديمرامجوب إو خوشي من آكر كم كااوموآب بي!

اب تمنا ہوگی کہ ایک اور مارے۔اب و یکھنے کی بات یہ ہے کہ اس تکلیف کوراحت ہے کس چیز نے مبدل کر دیا۔ بس اختساب الی الحج ب نے کہ وہ دھول چونکہ مجبوب کا مارا ہوا ہے۔اس لئے وہ راحت ہوتی ہے چونکہ وہ مجبوب کے ساتھ وہ راحت ہوتی ہے چونکہ وہ مجبوب کے ساتھ مشغول ہوتے ہیں اس لئے ان کواس سے عین مشغول ہوتے ہیں اور مصائب کو مجبوب کی طرف سے بچھتے ہیں۔ اس لئے ان کواس سے عین راحت ہوتی ہے وہ تو بر ذبان حال یہ کہتے ہیں۔

ناخوش توخوش بود برجان من دل فدائے باردل رنجان من

صبر كاطريقه

یکی داز ہے اس کا کہ جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو یہود کے اس تول سے بہت مدمہ ہوا کہ خدا آسان پیدا کر کے تھک کیا تو اس نے پہلے ان خدا آسان پیدا کر کے تھک کیا تو اس نے پہلے ان کے قول کی نزوید میں بیآ یت نازل کی:

ولقد خلقنا السموت والارض وما بينهما في سنة ايام وما مسنا من لغوب.

(اورہم نے آسانوں کواورزین کواور جو پچھا تکے درمیان میں ہیں ان سب کو چھون میں پیدا کیااورہم کو تھکان نے چھوا تک نبیں)

اس کے بعدار شاد ہوا فاصبو علیٰ مایقو لون (پس ان کی ہاتوں پرمبر کیجے)۔ گرمبر کیے کریں ات بڑے مدمہ پرتو آ کے اس کی ترکیب بتلائی وسبح بحمد دبک قبل طلوع الشمس وقبل الغروب (اوراپ رب کی تیج و تحمید کرتے رہے (اس میں نماز بھی وافل ہے) مورج نکلنے سے پہلے (خمار فیج سے پہلے (ظہر وعمر)۔ طریقہ مبر کا کیا ہے۔ وہ یہ کہ آؤ ہم سے باتی کرنے کو شرے ہوجاؤ ہیں سب رنج وصدمہ جاتا رہے گا۔

اس کی مثال الی ہے جیسے کسی نے رنج پہنچایا اور محبوب کے کس جھڑوے میں پڑے ہوآؤ ہم سے باتیں کرلو۔کوئی کہ سکتا ہے کہ اس شخص کو صدمدرہ کا۔

ایک اور جگہ حضور صلی اللہ علیہ و کام کوار شاوے واصبر لکم ربک فانک ماعینا کہ آپ مبر سیجئے۔ آپ تو ہماری نگاہ کے سامنے ہیں۔ بیعاشقانہ لم اور مذہبر ہے رہے کے دور کرنے گی۔ میں ایک واقعہ بیان کرتا ہوں اس ہے اس کی تغییر سمجھ میں آ جائے گی وہ بیر کہ کسی پرایک شخص عاشق تھا۔اس کے سودرے مارے گئے ،نٹانوے درہ تک آ وبھی منہ ہے نڈنگلی ،اخیر میں ایک درہ لگا تو منہ ہے آ ونکلی کسی نے یو جھا کہ ننا نوے تک تو تیرے منہ ہے کچھ بھی نہ لکلا اور ایک درہ میں بیرحال ہوا۔ عاشق نے کہا کہ ننا نوے درو تک تو میرامحبوب کھڑا ہوا مجھ کو دیکے رہا تھا۔اس دجہ سے پچھ تکلیف نہیں معلوم ہوئی اورا خیر درہ میں وہ چلا گیا تھا۔ دیجمانہ تھااس لئے آ ونگی ای واسطے ایک عاشق کہتا ہے ۔ که من نیز ازخریدا رام اویم ہیتم بس کہ وائد ماہردیم

(يمي كافي ب كدمير المحبوب جان لے كه يس اس كے فريداروں مس سے موں)

اس کابرواحظ ہے کہ وہ دیکھ رہاہے۔بس بری تسلی الل اللہ کی ہے ہے کہ حق تعالیٰ ہمیں دیکھ رے ہیں۔اس سے بڑھ کرتسلی کا اور کوئی درجہ بی تہیں۔ اور دنیا میں بھی اس تتم کے سینکڑوں واقعات موجود ہیں کم مجبوب مجازی کے دیکھنے ہے تمام تکالیف راحت ہوگئ ہیں۔

خلاصہ بیک اہل اللہ چوککہ حق تعالی میں مشغول ہوتے ہیں اور ہرمصیبت انہی کی طرف سے سمجے ہیں اس وجہ سے انہیں کسی بات ہے پریشانی نہیں ہوتی اور چونکہ بیرنگ ان کا مرنے کے ونت بھی موجود رہتا ہے ، زائل نہیں ہوتا ، اس لئے جیسے زندگی کے واقعات میں انہیں پریشانی نہیں ہوتی اس طرح مرنے کے وقت بھی پریشانی نہیں آتی۔

موت کی پریشانی

پھراوپر سے اہل اللہ کوموت کے وقت میہ بشارت میمی دی جاتی ہے و ابشروا بالجنة التي كنتم توعدون نحن اولياء كم في الحيوة الدنيا وفي الآخرة موت كوثتكما جاتا ہے کہ محبرانا مت ۔ بعضے لوگوں نے بیان کیا کہ بعض لوگوں کوطاعون کے زمانے میں مرتے دیکھا کہ وہ اپنے پاپ اوراستاد کا نام لے رہے تھے کہ وہ کھڑے ہیں اور ہم کو بلا رہے ہیں۔وہ ما نوس شکل میں فرشتے تنے تا کہ بیگرائمی نہیں۔ سواہل الله مرنے کے دفت بھی خوش ہوتے ہیں۔ چنانچایک بزرگ کے مرنے کا وقت قریب تھا اوروہ خوشی میں آ کر کہدہ ہے تھے

وقت آل آمد کہ من عریاں شوم جسم بگذارم سراسر جاں شوم (اب وہ وقت آگیا کہ میں عریاں شوم کوچھوڑ کرسراسرجان ہوجاؤں) کیا بدلوگ بیہودہ تھے جوالیا کرتے تھے۔ واقع بہ ہے کہ ان کواس وقت نہایت خوشی کا عالم ہوتا ہے چرقبر میں و کیھئے ان کے لئے کیا خطاب ہوتا ہے۔ جس وقت منکر کمیر آتے ہیں اور سوال کرنے ہیں اور یہ جواب و ہے ہیں توحق تعالیٰ کی طرف سے ارشاد ہوتا ہے :

ان صدق عبدی ، كميرے بنده في كما

اس کے لئے جنت کی طرف دروازہ کھول دو نفرض سب راحت کا سامان کرویا جاتا ہے۔ پھر قیامت میں دیکھئے جو کہ بڑی گھبرا ہٹ کا وقت ہے کہ انہیں اس وقت بھی کوئی پریشانی نہیں ہوتی۔ چنانچے ارشاد ہے:

لایعنو نہم الفزع الا کبو ، کہان کوفزع اکبر بھی گھراہت میں نہ ڈالے گی۔

مولانا نفل ارحمٰن صاحب کو میں نے بیاشعار پڑھتے ہوئے سنا گویادہ اس کا ترجمہ نے رائے تھے ۔

عاشقال راروزمحشر با قیامت کا رئیست عاشقال راجز تماشائے جمال یار نیست رہادوز نے مواس میں اول تو جا کیں گے کیوں! وہ تو ان سے الگ رہنا چاہے گا چنا نچہ صدیث میں ہے کہ دوز نے کہے گا ۔ جزیا مومن فان نورک قداطفاناری کہ اے مومن جلدی ہے گزرجا تیرانور تو میری آگ کو بجھائے ویتا ہے۔

جب دوزخ خودان ہے پریشان ہوگی تو وہ انہیں کیا جلائے گی ۔ یہی اسے ٹھنڈی کردیں کے پھرایسے لوگوں کو کیا پریشانی ہوسکتی ہے۔

میں اال اللہ کی راحت کا ایک فوری ورجداوراک ہتلاتا ہوں۔ وہ یہ کہ اللہ والوں کے پاس دس منت کے لئے بیٹھ جائے۔ ان کے پاس بیٹے ہے آپ کے قلب میں بھی اظمینان ہوجائے گا۔ پس جب پاس بیٹے والے کواظمینان ہوجاتا ہے تو ان کے اظمینان کو کیا ہو چھتے ہو۔ بس اللہ کے ساتھ تعلق پیدا کرنا جا ہے بیٹے والے کواظمینان ہوجاتا ہے تو ان کے اظمینان کو کیا ہو چھتے ہو۔ بس اللہ کے ساتھ تعلق پیدا کرنا جا ہے جس سے ہرموقع پراظمینان ہو کہیں بھی پریشانی نہون دند نیا میں ندا خرت میں۔ دیکھی ذکر کی برکت۔ مما اڑکی ہرکت۔

 تو کی و ذکر اسم ربه فصلی (بامراد جواجو خص (خبائث عقائد داخلاق ہے) پاک ہو گیااور ا ہے رب کا نام لیتار ہااورنم زیڑھتار ہا) مگریہ یات اس وقت حاصل ہوگی جب کہ نماز کی پخیل کرے، وقت پر پڑھے، جماعت کے ساتھ ادا کرے،قر آن کی تھیج کرے،قلب کے متوجہ کرنے کی کوشش کرے اگر متوجہ نہ ہوتو کسی شخ ہے ہو چھے۔اورخووتو کرے بی دوسروں کواس کی ترغیب دلائے۔جوامی چیز ہوتی ہے۔اس کودوسروں کو بھی بتلاتے ہیں۔اس واسطےحق تعالیٰ فرماتے ہیں و تواصو ابالحق (اورا کی دومرے کو (اعتقاد) حق پر قائم رہنے کی فہمائش کرتے رہے)۔ جہاں تو قع ہوراہ پرآنے کی وہاں ضرور کہو گرزی ہے کہود وسرے کو ذلیل مت مجھو ممکن ہے کہ کوئی چیزال میں ایسی ہوکہ وہ اس کی وجہ ہے ہم ہے بڑھ جائے۔ اگر کسی کوسیاست کرنی پڑے تب ہمی حقیرمت مجموا کرکوئی کے کہ ریکیے ہوسکتا ہے کہ سیاست کی جائے اوراس کوحقیر نہ مجھا جائے۔ ا مام غزالی نے اس کی مثال لکھی ہے۔وہ یہ کہ کوئی بھنگی بادشاہ کے تھم سے شنرادے کے بید نگائے تو وہ سیاست تو کررہا ہے مگرشنرادہ کوحقیر نہیں سجھتا۔اس کوویسے ہی معزز مکرم سمجھ رہا ہے مگر بادشاہ کے تھم سے مجبور ہے ۔لہذا سیاست ادر حقیر نہ مجھنا دونوں جمع ہو سکتے ہیں۔امر بالمعروف اس طرح نہ ہونا جا ہے کہ کسی کو ذرہ برابر حقیر جانو۔ اگر خفکی کی ضرورت ہے نواس طرح نے خفکی ظا ہر کروجیسے بچہدواپنے میں مجلما ہے اور آپ اس پر غصے ہوتے ہیں۔غصہ تو ہے مگر جوش محبت کے ساتھ۔ کیا غصہ طع تعلق کرنے کے ارادہ ہے کرتے ہو۔ ہرگزنہیں۔ بلکہ بیرجا ہے ہو کہ کسی طرح دوالی لے۔ جوتماز نہ پڑھے ،تو پہیں کہ اس سے ملنا جلنا تچھوڑ دو بلکہ بیدد کیھو کہ کس طرح سے ہارا بھائی مسلمان نمازی ہوجائے گا۔ بس ویسے ہی کرو۔ نرمی سے بخی ہے، پچے دیے ہے نرش جیے بھی راہ پرآنے کی امید ہواں طرح کرو۔ البتہ مداہنت نہ ہوسوامر بالمعروف اس طرح مونا جا ہے اوراس طرح اپنے ساتھ دوسرول کو بھی فلاح میں لاؤ۔اب میں بیان ختم کرتا ہوں۔

> دعا کیجئے کے حق تعالیٰ تو فیق عمل کی مرحمت فرمائیں۔ آثین فقط بغضل اللہ و برحمة ۔ اشرف علی

ندا رمضان

ماہ رمضان کے متعلق بیہ وعظ ۹ رمضان السبارک مسوسا! هوکو جامع مسجد تھانہ بھون میں فرمایا، جسے عکیم محمد بوسف نے قامبند کیا۔

خطبة ما ثوره

يست بالله الرقين الرجيم

اَلْحَمَّدُ لِلَّهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغُفِرُهُ وَنُوْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكُّلُ عَلَيْهِ وَنَعُودُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ الْفُسِنَا وَمَنْ سَيِّنَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يُهْدِهِ اللَّهُ فَلاَ مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُقْدِهِ اللَّهُ وَحَدَهُ مُضِلًّ لَهُ وَمَنْ يُقْدِهِ اللَّهُ وَحَدَهُ مُضِلًّ لَهُ وَمَنْ يُقْلِلُهُ فَلاَهَادِى لَهُ وَنَشْهَدُ اَنْ لَااللهُ اِلَّا اللَّهُ وَحَدَهُ لَا هَبِهُ وَمَوْلُنَا مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ صَلَّى اللهُ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ اللهُ وَمَلْى الله وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ اللهُ اللهُ وَعَلَى الله وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ اللهُ اللهُ اللهُ الله وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِمُ اللهُ اللهُ الله وَاصْحَابِهِ وَاللهُ وَاسْتَلُمُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَاللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ وَاللّهُ اللهُ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ الللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللهُ اللّهُ

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ينادى الملك ياباغي الخير اقبل وياباغي الشراقصر ولله عتقاء من النار

(ارشادفرمایا جناب رسول الشعلی الله علیه وسلم نے که فرشته منادی کرتا ہے کہ اے خیر کے طلب گار آ مے براہ اور اللہ کے لئے بہت کے طلب گار آ مے براہ اور اللہ کے لئے بہت کوگ آزاد کے جائے ہیں)

متاعمسلمان

 اورکوئی فائدہ مرتب نہ ہوااس کا جواب ہے کہ القد ورسول صلی القد علیہ وسلم تو اس کو بھی مفید بتاتے ہیں کہ اس پر وعدہ تو اب فرماتے ہیں (اگر چہ مطالب پڑھنے کے برابر مفید نہ ہو) اور تم بے فائدہ کہتے ہو بتاؤ کس کو بچے مانیں لوگ کہتے ہیں کہ اسک تدبیر کرنی جا ہے کہ جس ہے رو ثبیاں ملیس ہے واقعی نفیک ہے ہماری بھی غرض اس قرآن ہے بہی ہے کہ آخرت کی رو ثبیاں ملیس جہاں سخت محتاجی ہوگی کہ انسان ایک ایک نیک کے لئے نگریں مارتا پھرے گا اور اس کا نصیب ہوتا بھی وشوار ہوگا۔

صاحبوا مسلمانوں ہیں اس وقت مرف کلام اللہ باتی رہ گیا ہے اور پکھ نہیں رہا اس کو بھی ترک کردو کے صاحبوا مسلمانوں ہیں اس وقت مرف کلام اللہ باتی رہ گیا ہے اور پکھ نہیں رہا اس کو بھی ترک کردو گے

ت کیارہے گا۔اس کے افعاظ بھی غلیمت مجھو۔ گوان میں مطالب سے واقت ہونے کے برابر فائدہ نہ ہو۔ ر کھا دے گا۔اس کے افعاظ بھی غلیمت مجھو۔ گوان میں مطالب سے واقت ہونے کے برابر فائدہ نہ ہو۔

تلاوت كاثواب

نیم جاں بستا نموہ صدحال دہد آئچہ وردہمت نیاید آل دہد نیم جاں بعنی حقیروف نی لیتے ہیں اور صدجان بعنی ہاتی جان اور حیات ابدی عن سے کرتے ہیں۔وہ کچھ عطافر ماتے ہیں جو وہم وگمان میں بھی نہیں ہوتا۔

خیراس تفسیر غیرمشہور کومت کو ۔ پہلی ہی صورت تمیں والی لے لو یکر ان تمیں کو خیال کرو کہ فی الحال تو تمیں نیکیاں لکھی گئیں گرآ خرت میں ان میں ترقی ہوکر کہاں تک پہنچیں گی ۔ کیونکہ حدیث میں ہے کہ حق سبحانہ تعالی صدقہ کے ایک خرما کو اس طرح پالتے ہیں جیسے کوئی اپنے پچھیرے کو دنیا میں پرورش کرتا ہے۔ پس بعض لوگوں نے دنیا ہیں تھوڑے اٹلال کئے ہوں مے اور تواب ان کا پہاڑوں کے برابر دیکھیں گے عرض کریں گے کہاس قدر کام تو ہم نے کیا نہیں۔ جواب مرحمت ہوگا کہ ہماری شان مربی ہونے کی ہے کہ جب ہے تم نے مل کر کے چھوڑا تو ہم اس کو پالتے رہے جس کی نوبت بہال تک پنچی ۔ اور یہاں تو عمل بھی ہوا ہے جس میں ترتی ہوگئی وہاں تو بعض احوال جس صرف آرزوی کرنے ہے اس میں بھی ترتی ہوجائے گی جہاں عمل بھی نہیں ہوا۔

چنانچے حدیث بیں آتا ہے کہ ایک شخص آخیر تک دوز نے بیں رہ جائے گا اور فریاد کرے گا کہ یاانلہ بھی کونکال کرجنم کے درواز ہ کی چوکھٹ پر بٹھا و بیجے و بیں بیٹھار ہوں گا۔ چنانچے ایسانی ہوجائے گا۔ آرز و کرے گا کہ میرامنہ دوز نے سے بھیر دیجئے یہ بھی منظور ہوگا کیجرادھر سے رخ بھیر نے سے جنت کے درخت نظر آنے لگیں گے جس سے میر نہ ہوگا اور عرض کرے گا کہ مجھ کواس درخت تک پہنچا وے وہاں درخت نظر آنے لگیں گے جس سے میر نہ ہوگا اور عرض کرے گا کہ مجھ کواس درخت تک پہنچا وے وہاں درخت نگر آنے نہ بردھوں گا۔ چنانچہ ایسا بھی کر دیا جائے گا۔ قصہ مختصر سے کراس کو جنت بیس داخل ہوجانے کا تھم موجائے گا۔ وہائے گا۔ کے نہ بردھوں گا۔ چنانچہ ایسا بھی کر دیا جائے گا۔ وہائے کا وہائے گا۔ وہائے گا

سوا گرتمیں نیکیاں ٹل جا کمیں اور وہاں ضرب کا بہت زیادہ قائدہ ہوتو کہاں تک نوبت بہنچ گی۔ اور جب تین حروف پراس قدر ملتا ہوتو کل کلام اللہ پر کتنا ملے گااور ضرب در ضرب دیے ہے کس قدر ہوگا۔ فضیلت رمضان

حدیث جوتلاوت کی گئے ہے۔ تر فدی شریف کی ہے اس میں حضورصلی اللہ علیہ وہلم نے رمضان شریف کی فضیلت ارشاد فرمائی ہے کہ ایک فرشتہ پکارتا ہے کہ باباغی النحیو اقبل النحی النتحی النحی النح

دیھو جب لوئی شاہی خوبی ہوئی ہوئی ہوتیہ کی کوسش کرتا ہے چھوٹے کی ، تواس وقت
رمضان المبارک کامہینہ ہے۔ خدائے تعالی کافعنل عام ہور ہا ہے۔ قیدی چھوٹ رہے ہیں۔ تم پر
مخصان المبارک کامہینہ ہے۔ خدائے تعالی کافعنل عام ہور ہا ہے۔ قیدی چھوٹ رہے ہیں۔ تم پر
مجھی تعزیر اس آخرت کی بہت می دفعات لگ چکی ہیں۔ اس لئے تم بھی انہی قید یوں ہیں ہو۔ پس تم
مجھی سعی کرد کہ تمہاری رہائی ہوجائے۔ اور یا یہ جملہ حضور صلی اللہ عدیہ وسلم نے اپنی طرف سے

فر مایا ہو۔ دونوں کا عاصل ایک ہوگا اس کے متعلق جو پچھ کہنا ہے اس کو ان شاء القد بیان کروں گا۔
مگراول بیہ سمجھے کہ اس وفت اس حدیث کو کیوں اختیار کیا گیا۔ وجہ بیہ کہ پہلے جمعہ کو حدیث
بیان کی تقی الصیام جنٹ بیعنی روزہ ڈ حال ہے گنا ہوں کے لئے۔ جس کا حاصل بیتھا کہ روزہ
گنا ہوں کے لئے ڈ حال ہے کہ اس کو اختیار کر کے معاصی ہے مجتنب ہوسکتا ہے۔
مرک معاصی کی ترکیب

اب اس امری ضرورت ہے کہ بعد معاصی ترک کرنے کے کیا ہونا جا ہے۔ تواس کے بارہ میں پرعض ہے کہ بحکیل کے دودرہے ہیں۔

ايك تخليد (اخلاق رذيله كودوركرتا) ايك تحليه (اخلاق حميده بهداكرنا)

یاایک تجلیہ اور ایک تحلیہ میں جی تخلیہ ہی ہوتا ہے۔ جیسے برتن کی جب بخیل کرنا چاہتے ہیں تو پہلے اس کومیل کچیل ہے صاف کرتے ہیں جس کانام تجلیہ ہے۔ پھراس پرقلعی یا اور دوسرا کام کرتے ہیں۔ یامریفن کی مثال بچھنے کہ جب سی کاعلاج طبیب کرتا ہے تو پہلے مادہ فاسد کونکا آنا ہے۔ اس کے بعد ایسی دوائیں استعمال کراتا ہے جس سے طافت بیدا ہو۔ جسم میں رونق وتا ذگ ہے۔ اس کے بعد ایسی دوائیں استعمال کراتا ہے جس سے طافت بیدا ہو۔ جسم میں رونق وتا ذگ آ جائے یا کسی مکان میں فرش اور جھاڑ فانوس وغیرہ سے زیائش کرتے ہیں تو پہلے اس کوشس و فاشاک سے پاک کرلیا جاتا ہے یا کسی کوعمہ ہ لباس اس وقت پہنا تے ہیں جب کہ اس کے جسم سے شمل کرا کرمیل کچیل دور کردیا جاتا ہے۔

غرض بہرکسب چیزوں میں تکیل دوہی طریقہ ہوتی ہوتی ہے تجلیے اور تحلیہ سے اور عادۃ تجلیہ مقدم ہوتا ہے تحلیہ سے کونکہ بدون ترتن کامیل مقدم ہوتا ہے تحلیہ سے کونکہ بدون ترتن کامیل مان کئے ہوئے اس برقاعی کردے۔ فاہر ہے کہ بوری صفائی اس میں نہ آئے گی۔ ہال بعض اوقات بوجہ بعض مصالح کے تحلیہ مقدم ہوتا ہے تجلیہ بر جیسے کسی مکان کی آ رائش مرنظر ہواور مہارت اس قدر نہوکہ بہلے بوری صفائی کر کے پھرآ رائش کریں۔ تویہ کرتے ہیں کہ پہلے سامان آ رائش کرکے تدریجا صفائی کرتے ہیں۔ موری قوارش کی وجہ سے ہوتا ہے اور عام قاعدہ پہلا ہی ہے۔

ای طرح صوفیا کرام تجلیہ اور تحلیہ مریدین کا کرتے ہیں کہ پہلے ان سے اخلاق رفی بلہدوور کرکے پھراخلاق حسنہ کا رنگ ان پر چڑھاتے ہیں۔ بالکل طبیب جیسی حالت ہے کہ پہلے اے الصحیح للبحاری ۳۱۳، الصحیح لمسم کتاب الصبام باب، ۳۰، س السنی ۱۹۰۴ ا مسہلات سے تجلیہ کرے اور پھر توت وغیرہ کی دوا کیں استعمال کرائے۔ متقد مین شیوخ کا یمی طریقہ تھا کہ پہلے تجلیہ کر کے پھرتحلیہ کرتے تھے۔ حکا بیت شیخ ابوسعیدر حمداللہ

اس مثال میں حکایت شیخ ابوسعید کنگوری کی سینے کہ یہ حضرت عبدالقدوں کنگوری کے بوتے ایس ابتدائے شباب میں پہنے عرصہ تک لا ابالی پھرتے سے ایک روز ایک جولا ہے نے بطور طعن کے بید کہا کہ بڑا افسوں ہے کہ آپ کے آباؤا جدادایے سے اور آپ کی حالت الی ہے ۔ یہ بات ان کے دل کو کھا گئی۔ اور لوگوں ہو دریا فت کر کے بلخ حضرت نظام الدین کی تلاش میں پہنچ کہ وہ ان کے داوا ہے فیض پائے ہوئے تھے۔ حضرت نظام الدین گوآنے کی خبر معلوم ہوئی تو وہ مع بادشاہ وقت کے (جو حضرت کے بہر معلوم ہوئی تو وہ مع بادشاہ وقت کے (جو حضرت کے معتقدین میں ہے تھا) استقبال کوآئے اور اپنے ہمراہ لے گئے پہر عملہ عیش وعشرت میں رہ کراپی اصلی غرض کو ظاہر کیا۔ حضرت نظام الدین ؓ نے فر مایا کہ اس حالت کو ترک کر دوتو وہ حاصل ہو۔ انہوں نے اپنی رضا طاہر کی تو حضرت نے با تکلف سامان بدن سے انہوں کو ترک کر دوتو وہ حاصل ہو۔ انہوں نے اپنی رضا طاہر کی تو حضرت نے با تکلف سامان بدن سے انہوں کی کوئی حضرت نظام الدین گئے کے گئے کی کوئی حاجت نہیں۔ جب ہم بلا کیں گئو آئا کہ ہمارا جمام جمونکا کرو اور ہمارے سامنے آئے کی کوئی حاجت نہیں۔ جب ہم بلا کیں گئو آئا نے خض اس حالت میں ایک طویل مدت گزرگی۔

شیخ نے ایک روز بھنگن سے پوشیدہ کہا کہ ان پرکل کوکوڑاڈال وینا۔ چنانچہ ایہا ہی ہوا۔ان کی زبان سے نکلا کہ گنگوہ نہ ہوئی جو میں بتا تا۔خبر دینچنے پرشخ نے فر ماید کہ ابھی قابلیت نہیں ہوئی۔ وہی خدمت سیر در ہی۔

ایک عرصہ کے بعد میہ ہوا کہ شخ کی لڑی نے کہوڑ پال رکھے تھے ان کو بلی کھا جایا کر تی تھی۔ شخ کے اک روز بلی سے تفاظت کرنے کی ضدمت ان کے سپر دکر دی۔ بیدات بھر جاگ کرمکان کے آس کی پاس حفاظت کرتے۔ پھر بھی شکایت ہوئی کہ بلی کبوڑ کھا گئی۔ اور دات کا وقت تھا انہوں نے اس کی جبتو کی کہ بلی کہاں کو جاتی ہے۔ معلوم ہوا کہ پائی آنے کا جو داستہ ہاں بیس سے جاتی ہے۔ اس وقت وہاں کوئی چیز اس میں بند کرنے کو خد لی ۔ انہوں نے اس میں این سروے ویا۔ کی روز جا گے ہوگئے تھے وہیں نیندا گئی۔ انتقاق سے بارش ہوئی اور پائی رکا۔ گھر کی ماما نے بانس ڈال کرصاف ہوا کے ان جاتی ہوئی خون آنود ہوگیا اور ان کے منہ سے یہ کرنا چاہا اور اس نے اس ذور سے بانس مارا کہ سرمیں لگ کر پائی خون آنود ہوگیا اور ان کے منہ سے یہ آئی کہیں وہ باولا نہ ہو۔ ان اور نگی کہ بلی تونیس آئی۔ وہ ماماڈر گئی کہ قصہ کیا ہے۔ شخ نے خبر ہونے پر فر مایا کہ کہیں وہ باولا نہ ہو۔

چنانچ پاوگ ان کواٹھ کرلائے۔ شخ نے دیکھ کہ صفائی ہو چکی ہے۔ اس وقت ذکروشنل میں لگایا۔ قرب خداوندی کی صورت

میری غرض اس حکایت سے میتھی کے شیوخ پہلے تجلیہ کرتے تھے اور پھر تحلیہ اور عایت اس تجلیہ ور ماضت کی مجی دفعہ اخلاق رذیلہ ہے اور ریاضت ایسا ہی تذلل ہے نہ کہ کم کھانا کم سونا۔ بلک بیتور یاضت کا ادنی درجہ ہے اور مجی شرط ہے پہندید گی عنداللہ کا۔

پس جب انسان اپنے کوا چھا گئے اوراس میں تذلل نہ ہوتو خدا کوا چھانہیں لگتا۔ یا در کھو کہ جب انسان اپنے کوا چھا گئے۔ یا در کھو کہ جب اپنے کوذلیل جانو محے تب ہی خدا کے مقرب بن جاؤ کے بیجب بری بلا ہے۔ صوفیا کرام اس کے علاج کے لئے بہت مہولت ہے تربیت کرتے ہیں۔

مثلاً کی مرید کودیکھا کہ بنا تھنا رہتا ہے اس کو تھم دیا کہ مجد میں جھاڑودیا کرو۔ ظاہر ہے کہ
اس خدمت ہے انسان اچھی ہیئت میں نہیں روسکتا۔ پچھ عرصہ بعدائ کا بجب ٹوٹ جائے گا۔ یا کی
میں کبرزیادہ ہے تو یوں تربیت کرتے ہیں کہ نمازیوں کی خدمت کیا کروپانی ہر کررکھا کروکہائ ہے
کبرجا تاربتا ہے۔ بیطریقہ پہلے فافقا ہوں میں ہوتا تھا۔ اب نہیں ہوتا اس طرح تو لوگ آج کل
ہوا گ جا کیں۔ غالبًا ایک بھی فیضیا ب نہ ہو۔ پہلے فرصتیں بہت تھیں۔ اور ذی ہمت بھی ہوتے تھے
عورتوں تک کی بی حالت تھی کہ شادی کرنے میں اللہ والوں کودیکھی تھیں۔ ایسے قصے ہیں کہ مستورات
نے اپنی لڑکیاں ہزرگوں کودے دیں۔ بادشا ہوں سے بو دجودان کی خواہش کے قطع نظر کرلی۔

چنانچ حضرت شاہ عبدالقدوئ کی بی بی ان کے بیر کی لڑک تھیں۔ ان کی ساس کو کتنا ہی وگوں نے کہا کہ جھے کو باؤلا ہی بیند ہے۔ سوگوں نے کہا کہ جھے کو باؤلا ہی بیند ہے۔ سلاطین اورامراء خواسنگار تھے ان سے شادی نہیں کی۔

اب توندائی ہمت شاس قدر عمر۔ بلکہ یہاں تک نوبت ہے کہ مرید ہوتے ہی خلافت کے طافت کے طالب ہوجائے ہیں اور مختلف ہیرا بول سے شیخ کی اجازت طلب کرتے ہیں کہ حضرت کوئی آئے تو تو بہ کرادوں یا کلمہ پڑھادوں۔ بوجہاس عذکے متاخرین شیوخ نے یہ کیا کہ تجلیداور تحلیہ دونوں ایک ساتھ کرتے ہیں کہ اس سے بھی کام چل جاتا ہے۔ خلاصہ یہ کہ ہر چیز ہیں تجلیہ اور تحلیہ کی ضرورت ہے۔ بہلے و مظاکا حاصل تجلیہ تق اور اس وقت ہیں تحلیہ مقصود ہے۔

افعال كاقتميس

تو پیجھئے کہ افعال کی دوشمیں ہیں۔ وجودی اورعدمی وجودی جیسے افعال وجودی پنماز وغیرہ، عدمی جیسے ترک ریا وغیرہ، عدم ہے مراد عدم محض نہیں بلکہ وہ افعال جوترک اختیاری ہوں افعال وجود ميه كالـسوبعض عنإدات تو اليي جي جس مي افعال وجود ميهم جي اورافعال عدى زياده جيسے روز ہ۔ کیوں کہاس میں تین جز وعدمی ہیں۔ایک ترک کھانے کا ، دوسرے ترک پینے کا۔تیسرے ترک جماع کا۔ اورایک جزو ہے وجودی اوروہ ان تینوں چیزوں کاعزم اور نیت ہے اور بعض عبادات میں تو باوجو بکہ وہ مرکب ہیں وجودیات اورعدمیات ہے مگرغلبہ وجودیات کو ہوتا ہے: جیے تماز وغیرہ۔اور جوافعال عدمیات کی قبیل سے ہیں۔ان کے کرنے میں زیادہ مشقت نہیں ہوتی کیونکہاں میں پچھ کرنانہیں بڑتا۔ بلکہ ایک شنے کوعدم اصلی پر باقی رکھا جاتا ہے۔ اورافعال وجودی میں مشقت زیادہ ہے کیوں کہ ایک شے کو وجو د کی طرف لا نا ہوتا ہے ۔ یہی وجہ ہے کہ قرآن شریف میں جوفر مایا گیاہے۔

واستعينوا بالصبرو الصلواة وانها لكبيرة الاعلى الخشعين اللين يظنون انهم ملقوا ربهم وانهم اليه راجعون.

لینی مددلومبراورنماز ہے اور بیٹک وہنماز دشوار ضرور ہے مگرجن کے قلوب میں خشوع ہے ان پر پہلے وشوار نہیں۔وہ خشوع کرنے والے وہ لوگ ہیں جو خیال رکھتے ہیں اس کا کہوہ بیٹک اپنے رب سے ملنے والے ہیں اور اس بات کا بھی خیال رکھتے ہیں کہ وہ بیشک اپنے رب کی طرف واپس جانے والے ہیں۔ ا كرمفسرين في مراد صوم ليا باس كوآيت مين بين فرما يا بلك صرف نماز كرماته اس تکم کوخصوص کیا اور یبی وجہ معلوم ہوتی ہے کہ عورتیں روز ہ رکھنے میں بڑی مستعدی کرتی ہیں اورنمازیرُ حناان پر قیامت ہوتا ہے۔اس لئے کہاقعال وجودی میںمشقت زیادہ ہےاور نہ کھاتے میں عورتوں کا کچھ کمال بھی نہیں۔اس لئے کہ اول تو مزاج بار دجس میں تحلیل رطوبات کم ہوتی ہے دوس کھانے یکانے سے طبیعت سیر ہوجاتی ہے اور مردوں میں بیامور تفقق نہیں ہیں۔

خشوع كياضرورت

نماز کو جوآیت جس دشوار کہا گیا ہے اس سے خاشعین کوشنٹنی بھی فر مایا ہے کہ وہ خاشعین پر

مشکل نہیں اس لئے خشوع کی بھی نسرورت ہے تا کہاس ہے نماز آ سان ہو۔اس واسطے خشوع پیدا کرنے کی ترکیب جھی الذین یظنون الخ میں ارشاوفر مائی۔ لیعنی وہ یوں خیال کرتے ہیں کہا ہے رب سے ملنے والے بیں بخدا یہ فشوع پیدا کرنے کے لئے عجیب ملاج ہے آ دمی ہرعبادت میں یمی خیال کریے کہ بیمیرا خدا ہے ملنے کا آخری وقت ہے تو بڑا خشوع ہوگا ای لئے رسول امتد صلى الله عليه وملم كاارشاد ب:

صلوة مو دع مروع مینی رخصت کئے گئے مخص جیسی نماز پڑھو۔

اور برے ایں چھوڑ،نے کی عمرہ ترکیب یہی ہے کہ جو کام کرویہ خیال کرلوکہ آخری وقت میں ہے۔ مدمرا قبہ ہردشواری کوآسان کرے گا۔اس مراقبہ کی میجھی خاصیت ہوگی کہ موت سے وحشت جاتی رہے گی اوراس کے معنی ظاہر ہوجا کمیں گے۔

الموت تعفة المؤمن. (يعني موت مؤمن كے لئے تخذب)

خرم آل روز کزیں منزل وہراں بروم راحت جال طلم وزیدے جاتاں بروم لیعنی و ہون بڑی خوشی کا دن ہے کہ اس عالم فائی ہے کو چ کروں۔ راحت جال طلب کروں اورمحبوب کے یاس جاؤں۔

پہلے میری سمجھ میں نبیس آیا کرتا تھا کہ رسول التد صلی التدعلیہ وسلم ہو جودیا و دائمی موت کے کس طرح ضروری د نیوی امور میں مشغول ہوتے ہتھے کیوں کہاس کے ساتھ طاہر اپیمکن نہیں۔ پھر سمجھ میں آیا کہ موت ہے جب تک وحشت ہوتی ہے اس وقت تک پیرقصہ ہوتا ہے اور جب موت ہے انس ہو گیا مجروہ ضروری مشاغل سے مانع نہ ہوگی۔ بیتقر برمتعلق خشوع کے بیعائقی۔

روز ہ کی عدمیت

بیان اس کا ہور ہاتھا کہ روز ہ میں عدمیت غالب ہے اور تماز میں وجودیت۔اس پر مجھ کواپٹا ا کیے خواب یا دائے گیا۔ میں نے لڑ کین میں ایک خواب دیکھا کدا یک سائل یوں سوال کرتا ہے کہا ت کے کیا معنی کہ روز ہ تو الند کا اور نما زرسول الند صلی المتدعیب وسلم کی اس کے جواب میں میں نے کہا کہ نماز میں جو کام کرنے پڑتے ہیں ان میں چونکہ شان عبدیت بڑھی ہوئی ہے اور حضور صلی التدعلیہ وسلم بھی عبد ہیںاس لئے نماز کی نسبت حضورصلی التدعلیہ وسلم کی طرف کی حمیٰ اورروز ہ کی حقیقت اکل ل كنز العمال: ٣٢١٣٨ ء كشف الحفاء للعجلوتي ٢:٣ - ٣

وشرب وغیرہ کا ترک کرنا ہے جس میں ایک صدیت واستغناء کی شان ہے اس نئے اس کی نسبت حق تعالیٰ کی طرف زیادہ مناسب ہے کہ وہ بھی مستغنی ہیں۔

نواس جواب کا حاصل بھی وہی وجودیت وعدمیت کا تفاوت ہے اور چونکہ روز و میں صرف گنا ہوں کا چھوڑ نا کمال نہیں ۔روز و میں وجودیت بھی مطلوب ہے ،ای کوحدیث:

یا ہاغی المخیر اقبل ویاباغی البشر اقصر (سن نزنری ۱۸۲) البین المخیر کے طالب متوجہ مواورائے شرکے طالب رک جا

میں جن کردیا گیاہے جس سے معلوم ہوا کہ اس میں بھی تجلیہ اور تخلیہ دونوں مطلوب ہیں کیونکہ پہلے جملہ سے ای اللہ م کیونکہ پہلے جملہ سے اعمال خیر کی طرف توجہ دلائی گئی ہے اور دوسرے میں معاصی سے بچنے کو کہا گیا ہے اورای کا نام تجلیہ ہے۔

ندائے فرشتہ

گزشتہ جمعہ کوتجلیہ کے متعلق ضرورت کی قدر بیان ہو چکا ہے اب تحلیہ کی صورت بتا تا ہوں ۔گر پہلے طلباء کا ایک اشکال دفع کئے دیتا ہوں۔

وہ یہ کہ صدیث یابا فی الخیر، الخ میں ندائے فرشتہ کاذکر ہے اور ذکر بھی اس طرح کہ روز مرہ ندا ہوتی ہے گرکوئی اس کوسنتانہیں۔ پھرندا پڑل کی کیا صورت ہے۔ جواب یہ ہے کہ جیسے خودسنتا قابل عمل ہے دوسرے کا خبر دیتا بھی قابل عمل ہے ہیں ہم رسول صلی اللہ علیہ وسلم ہے اس کی خبر معلوم کر کے مل کر سکتے ہیں۔ اگر جمار ہے حواس اس قابل نہیں کہ فرشتہ کی ندا کون سکیں تو یہ ہماری کی ہے ۔ ندا اور منادی پرکوئی شبہ نہیں ہوسکتا اس کے متعلق شملہ کا قصہ عرض کرتا ہوں جو جھے کو بالفعل سفر میں پیش آیا۔

وہ یہ کہ ال سفر جی مولوی انورشاہ صاحب بھی ہمارے ساتھ تھے۔ وعظ کے ایک جلسہ جی مولوی انورش و صاحب نے اعجاز قرآن کے متعلق تقریر فرمائی جو مشکل تھی تبجہ جی شہ آنے ہوگ مولوی انورش و صاحب نے اعجاز قرآن کے متعلق تقریرے کیا فائدہ ہوا۔ بعد میں جی نے اپنے بدذل ہو ہے اور عمو فا وہال لوگول نے اعتراض کی کہ اس تقریرے کیا فائدہ ہوگیا کہ بعضے مضاجی وعظ جی اس کے متعلق لوگوں سے کہا کہ مولوی صاحب کی تقریرے یہ تو معلوم ہوگیا کہ بعضے مضاجی علاء کے ایسے ہوئے ہیں جن کوآ پ لوگ نبیں سبجھ کتے گراس کی وجہ یہ بیس کہ اس تقریر جس کوئی نقص میں جو بیک ہوئے ہیں جن کوآ پ لوگ نبیں سبجھ کتے گراس کی وجہ یہ بیس کہ اس تقریر جس کوئی نقص میں اس کے سبجھنے کی قابلیت نہیں تو یہ تھیں آپ صاحبوں کا ہے نہ کہ عماء کا۔ اس

طرح فرشته کی ندا کوخیال سیجئے که اس کامسموع نه جو ناجها را نقص ہے ند که نداومنا دی کا۔ انتاع سنت

دوسرے اس مسموع نہ ہونے میں ایک تھمت بھی ہے وہ بیر کہ معلوم ہوجائے اس عالم کے علاوہ کوئی دوسراعالم بھی ہے کہ اس کی کا نتات کی دوسری شان ہے۔ البتۃ اس نداء کوقلب ادراک کرتا ہے۔ چنانچے تجربہ ہرایک کو بیشوق ہوتا ہے کہ رمضان المبارک آتے ہی قریب قریب ہرایک کو بیشوق ہوتا ہے کہ آؤ نیک کام کرلیں۔ بیای آواز کا اثر ہے جوقلب نے تی ہے۔

اب بعد دفعہ اشکال کے تجلیہ کی صورت عرض کرتا ہوں۔ پس رمضان کے متعلق اس کے دوطریقے وارد ہیں۔ ایک خاص، دوسرے عام۔ خاص سے مراد خاص اعمال سے تحلیہ اور عام سے مراد مطلق حسنہ سے تحلیہ ۔ سواس مجموعہ کے لئے دوحدیثیں نقل کرتا ہوں۔

ایک حدیث بیمی میں ہے کہ قرآن اور روزہ دونوں سفارش کریں گے۔قرآن کے گا کہ میں نے اس کوسو نے نہیں دیا۔اس لئے میری سفارش قبول فرما کراس کو بخش دیجئے گراس کا سے مطلب نہیں کہ تمام تمام رات بیداررہ کیوں کہ بیدسول الندسلی اللہ علیہ وسلم کی عادت نہی بلکہ مطلب بیہ کہ بہنست اور دنوں کے کم سونے دیا۔ چنانچہ کلام اللہ میں ہے۔

قليلاً من الليل مايه جعون. ليني رات كوبهت كم سوتے تھے۔ يزيد وورع كوش وصدق وصفا وليكن ميفزائے برمصطفیٰ

یون زید و تقوی میں کوشش کر ولیکن رسول انتصلی القدعلیدوسلم ہے آھے نہ بڑھو۔ معنی زید و تقوی میں کوشش کر ولیکن رسول انتصلی القدعلیدوسلم ہے آھے نہ بڑھو۔

رسول سنی التدعلیہ وسلم ہے آئے نہ بوھنا چاہیے۔ یہی کمال ہے۔ یہی ساری رات جا گنا ضرور

نہیں۔ مقبولیت قدم بقدم رسول سنی اللہ علیہ وسلم چلنے ہے ہی التی ہے۔ چنا نچہ حدیث میں قصد ہے کہ

تین مخص حضور سلی اللہ علیہ وسلم کی از واج مظہرات ہے آ ب سلی اللہ علیہ وسلم کی عبوت کی تحقیق وریافت

کر کے آپس میں کچھ کہنے گئے ایک نے کہ کہ میں صائم الد ہررہوں گا بھی افطار نہ کرول گا۔ دوسرا بولا

کہ میں سوتا چھوڑ دوں گا تمام رات نوافل پڑھا کروں گا۔ تیسرا بولا کہ میں نکاح ہی نہ کرول گا۔ حضور سلی

اللہ علیہ وسلم تشریف لے آئے اور قرما یا کہ اما انا فاصلی واد قلہ واصوم وافعل واتو و ہے۔

میں او نماز بھی پڑھتا ہوں اور سوتا بھی ہوں۔ جس سے بیغرض تھی کہ میر ااتباع کے بدون جارہ ہیں۔ اے مشکل الآثار للطحاوی ۲۸۸، مجمع الزوائد للهیشمی ۲۵۹۲

حقيقى شهرت

اس میں بیمجی راز ہے کہ اتباع سنت کے علاوہ دوسرے امورصورۃ موجب انتمیاز ہوئے سے سب عجب وشہرت کا ہوجاتے ہیں جوسم قاتل ہے۔

خولیش را بخور ساز وزار زار تا ترا بیرول کنند ازاشتهار لینی را بخور ساز وزار زار کنند ازاشتهار لینی اینی اینی اینی اینی اینی کردیں۔

اشتهار خلق بند محکم است بندایں ازبند آبن کے کم است خلائق بین مشہوراور ذی جاہ بن جانا ایک شخت تجاب ہے۔ راہ خداوندی میں بیر جاب قید آبنی

-2010-

اور بےجدایات ہے کہ ازخود شہرت ہوجائے۔ چنانچے حدیث بیل ہے کہ جب اللہ میال کسی کومجوب بناتے ہیں تو آسان وز بین بیل بواسطہ ملائکہ ندافر مان ہے ہیں کہ اللہ نے فلال کومجوب کرلیا ہے تم بھی مجبوب رکھو۔ جس کا بیا اڑ ہوتا ہے کہ اس کوسب مجبوب کہنے آلئے ہیں۔ گرا پی طرف سے قصد شہرت نہ جا ہے۔ اور جوشہرت منجانب اللہ ہوجائے اس میں مجھ خرا بی نہیں جیسا کہ مقبولین کی شہرت ہوجاتی ہے بلکہ بعد موت بھی یاتی رہتی ہے۔

ہرگز ند بمیر دآنکه دلش زندہ شد بعض شبت است برجریدہ عالم دوام ما المبین جس کوشش خقیق سے دوحانی حیات حاصل ہوگئ وہ اگر مربھی جائے تو واقعہ میں بوجہاس کے کہاس کولذت قرب کامل طور سے حاصل ہوجاتی ہاس لئے اس کوزندہ کہنا چاہیے۔

یہ کو قرآن کی سفارش کے متعلق مضمون تھا۔

روزه کی سفارش

روز ہ کے گا بیں نے دن میں کھانے پینے سے روکا اس طرح دونوں شفاعت کریں گے۔
اس سے معلوم ہوا کہ رمضان میں صرف روز ہ کائی نہیں بلکہ قرآن بھی پڑھا کرو۔ جس کا مہل طریقہ اس ماہ بیس راوت کے مردشواری ہے ہے کہ تراوت کے بھی یا قاعدہ بہت کم پڑھتے ہیں۔ یہ کمال میں شار ہوتا ہے کہ قلال حافظ نے ایک گھنٹہ میں اس قدر پارے پڑھے حالا تکہ کلام اللہ کے الفاظ تک درست نہیں ہوئے۔ نہ رکوع نہ جود و فیر و تھیک ہوتا ہے۔

گرتو قرآں بدیں نمط خوانی ہے بری رونق مسلمانی اگراس طور سے قرآن پڑھتا ہے تورونق مسلمانی کوزائل کرتا ہے۔

ادھرتو مقتد یوں کونہایت اضطراب ہوتا ہے کہ کوئی با قاعدہ پڑھنا چاہے تو وہ چین نہیں لینے

دیتے۔ غرض جب فارغ ہو کروالی ہوتے ہیں تو بچائے تواب کے مواخذ وسر پر ہوتا ہے۔

ازدردوست چه کویم بچه عنوال رفتم جمه شوق آمده بودم جمه حرمان رفتم

محبوب كدرواز _ _ كياكبول كس طور _ ش كيا- بور عشوق سيآيا تفا- بالكل محروم بوكر چلا-

بعض شائفین تلاوت کو پیشبہ ہوجاتا ہے کہ ہم پورے طورے کلام اللہ پڑھنے پر قاور نہیں بلکہ اٹک اٹک کر پڑھتے ہیں۔ کس وہ یہ بچھ کر تلاوت سے بیٹھ رہتے ہیں کہ ایسے پڑھنے سے کیا قائمہ ہے۔ تو یہ بچھ کی باوجودا تک اٹک کر بدشواری تلاوت کرنے ہے بھی دوہراا جرہوگا کیا قائمہ ہے۔ تو یہ بچھیں کہ ساف پڑھنے والے سے یہ بڑھ گیا۔ ممکن ہے کہ اس کا اکر ااس کے مگراس سے بینہ بچھیں کہ صاف پڑھنے والے سے یہ بڑھ گیا۔ ممکن ہے کہ اس کا اکر ااس کے دوہر سے بڑھ ج ئے۔ جسے اشر فی اور دورو ہے کہ کمیت پیس تو دورو ہے زیادہ ہیں اور کیفیت میں ایک اشر فی اور دورو ہے کہ کمیت میں تو دورو ہے زیادہ ہیں اور کیفیت میں ایک اشر فی بڑھی ہوئی ہے۔ اور جن کو بڑھنا نہ آئے ان کے لئے صرف سننے پر بھی تو اب

واذا قرئ القرآن فاستمعو اله وانصتوا .

یعن جب قرآن پاک پڑھاجائے تو خاموش ہوجا دُاوراس کوسنو۔ ''

موجود ہے۔اگر چہ تالی و تلاوت کرنے والا ، کے مثل ثواب نہ ہو لیکن ہے

مرا از زلف تؤموئ بسنداست موس راه ره مده بوئ بسند است

لعنی اگرمجوب ندمیے تو اس کا ایک بال ہی بہت ہے۔ اگر بال ندملے تو خوشبوہی سہی۔

جیسے قرآن کونزول ہے اس ماہ کے ساتھ مناسبت تھی وہیا ہی اس ماہ بیس اس کی جل وت

وساع كالجمي سامان كرديا كه تراوح كالمرفر ماياتا كه كوئي ثواب يحروم ندرب_

بماري حالت

یہ توبیان تھاتحلیہ کے طریق خاص کا اور اس کا طریقہ عام بیہ ہے کہ اس ماہ میں نصیلت رکھی گئی ہے کہ نفل کا اوا کرنا فرض کے برابر رکھا گیا ہے اور فرض کا اوا کرنا برابر ستر قرض کے چنانچہ حدیث میں ہے۔ من تقرب فيه نجصله كمن اوى فريضة في غيرة .الخ

یعنی جس شخص نے اس ماہ میں نز دیکی ڈھونڈی اللّٰہ تعالیٰ کی کسی خصلت کے ساتھ الواع نفل سے نو وہشل اس شخص کے ہے کہ جس نے ادا کیا فریصہ اس ماہ میں نول کے غیر میں ۔اس ماہ میں نفل کا ایسا تو اب ہوتا ہے جبیبا کہ دوسرے مہینوں میں فرض کا۔

جس میں ہرنیک کام داخل ہوگیا۔ پس یہ طلق خیر سے تحلیہ ہوا اور یہ تو اس تحلیہ کے باب میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا تعال دیکھے کہ میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا تعال دیکھے کہ کیا تھا۔ حضرت عائشہ رضی اللہ تعالی عنہا فرماتی ہیں۔ اذا جاء دمضان شلہ میز دہ گان اجو دہ بالنعیو من الویح المعرف سلة آپ اس ماہ میں نہایت تی اور عبادت کی طرف متوجہ ہوتے سے دصور صلی اللہ علیہ وسلم نے آپ تول سے بھی اور تعل سے بھی دونوں طریقہ سے کام کر کے دعنور صلی اللہ علیہ وسلم نے خود بھی کیا اور دوسروں کوام بھی فرمایا کہ اس فتم کاعملدر آ مرکو۔

اب اس باب میں لوگوں کی چار حالتیں ہیں۔ بعض کی تو یہ حالت ہے کہ نہ نیک کام کریں نہ براچھوڑیں۔ بعض کی ہیہ ہے کہ برے کام تو ترک کر دیں گرنیکی نہ کریں، بعضے نیک کام تو کریں گر اپنے اوقات کو بیہودہ معاصی میں گزاریں۔ بعضے فعل نیک اور ترک بدی دونوں کو جمع کرلیں۔ اگر کسی میں کامل ہمت نہ ہوتو وہ کم از کم حسنات واجبہ ومؤکدہ پراکتفا کر کے برائیاں تو چھوڑ وے۔ یہ ہے تجابیہ اور تحلیہ۔اے اللہ ہم سب کوتو فیق عطافر ہا۔ آئین

ل مسند أحمد ۱۹۲۱، ۳۰:۳۰ ، التوغيب والتوهيب للمبذري ۱۰۳۰۳ ، كنوالعمال ۱۱۷۹ ، مجمع الزوائد ۱۳۰۱، ۱۹۷۱ ، ۴۹۷ ستد أحمد ۱۳۲۳، ۲ ، ۱۳۰۱ ، السس الكبري للبيهقي ۳۰۵:۳ ، إتحاف السادة المتقين ۱۳۸:۷

ا لصَّوم

روزه کی فضیلت کے متعلق میہ وعظ ۱۳ شعبان ۱۳۳۸ اے کو برمکان تحصیلدارصا حب نکر رضلع سہار نپور بیٹھ کر فرمایا جوم گھنٹہ ۲۰ منٹ میں ختم ہوا مجمع دو ہزارا فراد کا تھا۔ مجر عبدانٹد صاحب نے قامبند کیا۔

خطبهٔ ما ثوره

يست بالله الرفيل الرجيم

ٱلْحَمَّدُ لِلَّهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغُفِرُهُ وَنُوْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكُلُ عَلَيْهِ وَنَعُودُ لِللَّهِ مِنْ شُرُورِ ٱلْفُسِنَا وَمَنْ سَيِّنَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يُهْدِهِ اللَّهُ فَلاَ مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُقْدِهِ اللَّهُ وَحُدَهُ مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُضُلِلُهُ فَلاَهَادِى لَهُ وَنَشْهَدُ اَنْ لَالِلَهُ إِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَمَنْ لِللهُ وَمَوْلَنَا مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ صَلّى اللهُ وَمَوْلَنَا مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ صَلّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَى الِهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ اللهُ اللهُ وَعَلَى اللهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى اللهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الله وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِمْ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِمْ اللهُ اللهُ اللهُ الله وَاصْحَابِهِ وَاللهُ اللهُ اللهِ وَاصْدَالِهُ وَاللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ الل

قال النبي صلى الله عليه وسلم قال الله تعالى كل حسنة تضاعف بعشر الى سبع مائة ضعف الاالصوم فانه لي وانا اجزى به.

ترجمہ: ارشاد فر مایا جناب رسول اللہ علیہ وسلم نے کہ اللہ تعالی فر ماتے ہیں کہ ہر نیکی دس گنا ہے سات میں کہ ہر نیکی دس گنا ہے سات سوگنا تک برد حمائی جاتی ہے سوائے روز و کے کہ وہ خاص میرے لئے ہے اور میں (خود) اس کی جزادوں گا۔

ستمہید: بیا یک حدیث قدی ہے۔ حدیث قدی جناب باری عزاسہ کا وہ ارشادہ جس کی الاوت بھی ندگی گئی ہو۔ بیحد بیث جس کواس وقت میں نے پیش کیا ہے اس میں جق تعالی نے روز ہ کی فضیلت بیان فر مائی ہے اس وقت میں مون اس لئے اختیار کیا ہے کہ اس وقت وقتم کے روز ہ کا وقت قریب ہے۔ تو وہ کل یا پرسوں ہے۔ تفصیل کا وقت قریب ہے۔ تو وہ کل یا پرسوں ہے۔ تفصیل اس کی بیہ کہ بحساب خاتی رویت کے پرسوں کو پندرہ شعبان ہے اور بعض تحریرات نے کل پندرہ شعبان ہے اور بعض تحریرات نے کل پندرہ شعبان ہے اور بعض تحریرات ہے کہ سے کہ جساب خاتی رویت کے پرسوں کو پندرہ شعبان کا روزہ رکھنا مستحب ہے۔

دوسر بروز وفرش كاولت بحى قريب م كه يورب ماه كاروز وفرض ئم چونكدولول فتم كروزه مسند أحمد ٣٤٩٠٢ ، الدرالمدور للسيوطى ٢: ١٨ ، الحاف السادة المعقيل ٢ ٨٨١ کاوت قریب تھااس کے مناسب معلوم ہوا کہ روزہ کی فضیلت اور پجراحکام بیان کردیئے جائیں۔
ہرچند کہ روزہ کے فض کل ایسے نہیں ہیں کہ کی نے نہ سے ہول۔ بفضلہ تعالیٰ ہمیش علماء کے مواعظ سے ہیں۔ کم وہیش خود بھی لوگ واقف ہیں۔ تواس حیثیت سے احتیاج بیان دہتی لیکن میں روزہ کی ایک فضیلت من حیث ہی (اس اعتبار سے کہ میں روزہ کی ایک فضیلت فاصہ بیان کرتا چا ہتا ہوں اوروہ فضیلت من حیث ہی (اس اعتبار سے کہ وہ فضیلت فضیلت نے میر احقہ وہ بھی نہیں بلکہ اس سے میں ایک فاص طرز سے روزہ کے چندا حکام مستعبط کروں گا اوراحکام بھی لوگوں کے سے ہوئے ہیں۔ لیکن حالت بیہ کہ من کران کو یا دنیس رکھتے ہیں اوراگر یا دبھی رکھتے ہیں تو ان کی عظمت نہیں۔ میں ایسے عنوان سے بیان کرتا چا ہتا ہوں کہ ان رکھام کی عظمت ظاہر ہوجائے۔

وسعت ثواب

حاصل یہ ہے کہ جتنی نیکیاں ہیں سب کا تواب کی گنا کر کے ملتا ہے اور وجداس کی ہیہ کہ جق تعالیٰ کی رحمت چونکہ واسعہ ہے اور منظور ہیہ کہ بندوں کو پہول جائے۔ اس لئے نیکی کا بدلہ برابر سرابر نہیں ملتا ہے۔ بلکہ اس میں اضافہ کا قانون ہے بخلاف گناہ کے کہ برابر لکھے جاتے ہیں۔ چتا نچار شاد ہے: من جاء بالحسنة فله خیر منها لیعنی جوخص نیکی لائے گااس کے لئے اس ہے بہتر ملےگا۔ مطلق مضاعفت تواس آیت ہے ثابت ہے اور دوسرے مقام پر اس کی تعیین بھی فرمادی۔ چٹانچ فرماتے ہیں:

من جاء بالحسنة فله عشر امثالها . الآيه

لینی جوش نیکی لائے اس کے لئے اس کی دس مشل اور جو برائی کر ہے واس کے برابر جزا ملے گ۔

اس سے مضاعفت اور خیریت قد کور آیت سابقہ کی تعیین ہوگئی اور یہ بھی معلوم ہوا کہ قانون عام ہے۔ اس لئے لفظ من عام ہے کوئی اس سے مخصوص نہیں۔ پس مضاعفت وس سے کم تو کسی حال میں نہ ہوگی اور جو حدیث میں نے اول پڑھی تھی اس سے منتہائے اکثری بھی اس مضاعفت کا معلوم ہوتا ہے کہ اخلاص کے تفاوت سے سات سوتک مضاعفت ہوتی ہے لین اگر کوئی ایک کا معلوم ہوتا ہے کہ اخلاص کے تفاوت سے سات سوتک مضاعفت ہوتی ہے لین اگر کوئی ایک بیسد دے تو سات سوچیوں کا اگر ایک روزہ رکھے تو سات سوروزوں کا ثواب لگتا ہے ۔ علی بند الیک آیت پڑھے تو سات سوقر آن کا ٹواب ملتا ہے۔

اس منتہا کو جو میں نے اکثری کہا تو وجہ اس کی یہ ہے لیکن سے کثر ت اضائی نہیں بلکہ فی تفہ اس منتہا کو جو میں نے اکثری کہا تو وجہ اس کی یہ ہے لیکن سے کثر ت اضائی نہیں بلکہ فی تفہ

کڑت مراد ہے کر آن وحدیث میں فور کرنے سے سات سوکی تحدید معلوم نیس ہوتی بلکہ فیر منابی مضاعفت ہوتی ہے۔ اور منابی سے مراد فیر منابی بالفعل مراد نہیں بلکہ بمعنی الاتقف عند حد (یعنی کسی حد پر موتوف نہیں) مراد ہے۔ چنا نچا اللہ تعالیٰ نے جواپی راہ میں فرج کرنے والوں کی ایک مثال ارشاد فرمائی ہے۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ اس مضاعفت کا انتہا نہیں۔ چنا نچا رشاد ہے: مثل اللہ ین ینفقون احوالهم فی سبیل الله کمثل حبة انبتت سبع چنا نچارشاد ہے: مثل اللہ یا دائد منابل فی کل سنبلة مائة حبة.

بینی جولوگ اپنے مالوں کواملد کی راہ میں خرج کرتے ہیں ان کا حال ایسا ہے جیسے ایک دانہ مودہ سات بالیس اگا دے اور ہر بال میں سودائے ہوں۔

اس کے خری ارشاد ہے: واللہ یضاعف لمن یشآء واللہ واسع علیم

یونی اللہ جس کے واسطے چاہیں اس ہے بھی ڈیادہ پڑھادیں اللہ تعالیٰ وسعت والے ہیں

یہ جملہ ماسبق کی علت ہے کہ اس مضاعفت سے جرت اور تعجب نہ کرواللہ تعالیٰ صاحب
وسعت ہیں۔ ان کے یہاں تنگی نہیں اوراس کے ساتھ ہی دھوکا ہیں پڑنے والے کاعلاج بھی
ارشاد فرمادیا کہ وسعت پرمغرورمت ہوجاؤ اور بیمت مجھوکہ ہماری نیکی قابل مضاعفت ہے۔
اس لئے کہ وہ علیم بھی ہیں۔ یعنی ہے بھی جانے ہیں کہ کس کی نیکی مضاعفت کے قابل ہے اور کس کی
نہیں۔ جس قدراخلاص زیادہ ہوگا اس قدرمضاعفت ہوتی جائے گی اور چونکہ اخلاص کی کوئی حد
نہیں لہٰڈوااس مضاعفت کی بھی تعیین نہیں کی جاسکتی ہے۔

نيكى كا قانون

الحاصل نیک کا قانون عام کہ جس ہے کوئی مومن مخصوص وستی نہیں ہے ہوا کہ ایک نیکی کے بد کے دی مات ہوتی ہے اور سات سوے آئے (غیر بد کے دی مات سوتک مضاعفت ہوتی ہے اور سات سوے آئے (غیر حد تک) مضاعفت ہوگئی ہے بیتو آیت ہے مضاعفت کا غیرمحد و د ہونا معلوم ہوا۔

اب صدیت لیجے مدیث میں آیا ہے کے حضور صلی الله علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ اگرایک شخص ایک چھو ہارا صدقہ کر سے تو اللہ تعالی اس کوا ہے وست مبارک میں لیتے ہیں اوراس کی پرورش فرماتے ہیں گھا یو بھی احد کم فلوہ لیعنی ایسے پرورش فرماتے ہیں لیعنی اس کو برو ھاتے ہیں ۔ جیسے ایک تہماراا ہے بچھرے کو پرورش کرتا ہے اور برو ھاتا ہے۔

پچیرے گی تخصیص اس لئے فرمائی کہ عرب کے لوگ گھوڑوں کو بہت مجبوب رکھتے تھے
اور وجراس کی ہیے کہ بیا یک جنگ جواور بہادر قوم ہے اور گھوڑا جنگ بیں بڑا کا م آنے والا ہے۔
قرار میں بھی اور فرار میں بھی ۔ اگر میدان میں قائم رہ کر حرب میں مشغول رہیں تواس میں بھی گھوڑا
قرار میں بھی اور فرار می بھی ۔ اگر میدان میں قائم رہ کر حرب میں مشغول رہیں تواس میں بھی گھوڑا
کام دینے والا ہے اور اگر مظوب ہونے کی حالت میں بھا گئے کی ضرورت ہوتواس موقع پر بھی
گھوڑے ہے نے زیادہ کوئی جائور کا م کائیس اور حرب میں یہی دوموقع ہوتے ہیں۔ بھی قرار ہوتا ہے
اور بھی فرار ۔ اور جیسے قرار ٹی الحرب (لڑائی میں برقر ادر بہنا) شجاعت شار ہوتی ہے اس لئے موقع
ہوتا ہے اپنی جان بچا کرنگل بھا گنا ہے بھی دری حواس ہے ہوتا ہے اور دری حواس جب بی ہوگی جب کے تو بھی فرونا ذرکر تے ہیں۔ اس لئے
کہ قرب کی شاعری نہا ہے سادہ رنگ لئے ہوئے ہے۔ بھم کے تو کھات وہاں نہیں ہیں۔ اس لئے
گھوڑا قرار اور فرار دونوں وقت میں چونکہ کا م آتا ہے۔ اس لئے وہ عرب کو بہت محبوب تھا اور ظاہر
کھوڑا قرار اور فرار دونوں وقت میں چونکہ کا م آتا ہے۔ اس لئے وہ عرب کو بہت محبوب تھا۔ اس لئے
صفور صلی امتد علیہ وہ کہ بیار امعلوم ہوتا ہے۔ خاص کر محبوب کا بچی تو اور بھی زیادہ محبوب ہوگا۔ اس لئے
حضور صلی امتد علیہ وہ سام فرماتے ہیں کہ جیسے تم بچھرے کو پالاکرتے ہوا کی طرح اللہ توائی اس کے
حضور صلی امتد علیہ وہ سام فرماتے ہیں کہ جیسے تم بچھرے کو پالاکرتے ہوا کی طرح اللہ توائی اس کے
حضور صلی امتد علیہ وہ سام فرماتے ہیں کہ جیسے تم بچھرے کو پالاکرتے ہوا کی طرح اللہ توائی اس کے
حضور صلی امتد علیہ وہ سے تیں کہ جیسے تم بچھرے کو پالاکرتے ہوا کی طرح اللہ توائی اس کے حسے تم کے تو ہو کہ کو بیاں کرتے ہوں کے جیسے تم بھی تھیں۔ کو پالاکرتے ہوا کی طرح اللہ تھائی اس کے جیس کے جیسے تم بھی تھیں۔

حتی یکون اعظم من احد لینی اس چھوارہ کی اتن تربیت فرمائے ہیں کہ وہ اصد پہاڑ ہے بھی زیادہ بڑا ہوجاتا ہے۔

اں حدیث کے اندراگرغور کیاجائے تو معلوم ہوگا کہ سات سو کی تخصیص تحدید کیلئے نہیں۔
اس لئے کہ چھوہارہ کے برابراحد پہاڑ کے نکڑے کئے جائیں تو سات سو کیا سنکھوں مہاستکھوں
سے بھی زیادہ پرنو بت بہنچ گی اوروزن کے عتبارے اگر چھوارہ کے برابر جھے کئے جائیں تو اور بھی زیادہ ہوجائیں سے مولا ٹافر مائے ہیں۔
زیادہ ہوجائیں مجے مولا ٹافر مائے ہیں۔

خود یابد ایں چنیں بازار را کہ بیک گل ہے خری گلزار را کہ بیک گل ہے خری گلزار را بیم جاں بستاند وصد جان دہم ہرچہ دروہمت نیابدآں دہم ایسابازارکہاں نصیب ہوگا کہ ایک بیمول کے بدلے تمام چمن کے مالک بن جاؤ لیعنی اللہ تعالی جان فانی لیتے ہیں اور باتی جان عزایت فرماتے ہیں۔جو مجمودہم وگمان میں نہیں آسکاوہ عطا کرتے ہیں۔

ثواب كامدار

بردھنا باعتبارا فلاص کے ہے جس قدرا فلاص زیادہ ہوگا ای قدر او اب بردھتا جائےگا۔
اورای واسطے صدیت بیل آیا ہے کہ میراصحانی اگر نصف مریعیٰ آدھ سیر جواللہ کی راہ بیل خرج کرنے ہے بہتر ہے تو اس کی وجہ کیا ہے۔ بیتو ہے کہیں کہان کی اللہ تعالیٰ ہے (تو بتو بہ) رشتہ واری ہے۔ مرف بات بیہ کہان حفرات کے اعدر خلوص اور محبت اس قدر تھا کہ اوروں کے اعدرا تنائیس اس واسطے ان کے صدقات وحسنات بروجتے چلے جاتے ہیں اور بیکوئی عجیب بات نہیں و نیا بیس بھی ہم اس کی نظیر دیکھتے ہیں کہا کہ بی کو میں اور بیکوئی عجیب بات نہیں و نیا بیس بھی ہم اس کی نظیر دیکھتے ہیں کہا کہ بی کام ہے۔ ایک آدی اس کو ضابطہ کے موافق کرتا ہے اور دل سے نہیں کرتا۔ اس کی چکھ قدر نہیں ہوتی ہاس کہ محبت سے اور دل لگا جو تی ہوتا ہے اور اس کے ساتھ قانونی معاملہ نہیں کیا جاتا بلکہ جی کر کرتا ہے۔ اس کے دل میں قدر ہوتی ہے اور اس کے ساتھ قانونی معاملہ نہیں کیا جاتا بلکہ جی جاتا ہی گھراں کو زیادہ نفع پہنچایا جائے۔

ید بحث تو مضاعفت کے متعلق تھی حضور صلی الله علیہ وسلم کے ارشاد ہے اور جناب باری تعالیٰ کے کلام یاک ہے۔ آ گے استثنافر ماتے ہیں۔

الاالصوم فانه لمی وانا احزی به کیکن روز واس لئے که وہ میرے لئے خاص ہے اور میں خود بی اس کی جزاووں کا بعنی ہر حسنہ میں مضاعفت ہوتی ہے۔

روزه كاخصوصى تواب

لیکن روزہ اس قانون ہے متنی ہے اس کے لئے دوسرا قانون ہے فانہ لمی۔ یہ وجہ ہے دوسرا قانون ہونے کی۔ یعنی وہ میرا ہے۔ میرے لئے خاص ہے اس لئے ہم اس کو قانون اور حسنات سے جدا قرار دیتے ہیں واما اجنوی (میں خوداس کی ہزاوں گا) لیعنی وہ قونون دوسرااس اس کے لئے یہ ہے کہ اس کی ہزا بلا واسط ملائکہ کے ہم خود دیئے۔ اراجی کمی کو علی ہوتو یہ ہے کہ سکتا ہے کہ جس عمل کی نسبت جناب باری تعلی یہ فرمادیں کہ ہم خود واس کا بدلہ دیں گو وہ ہزا یہ کو خطیم الشان ہوگی جیسے حاکم ہے کے کہ فلال کارگر اری کا انعام ہم خود ویں گے۔ ہر شخص سمجھ گا کہ خداجائے کیا عنایت ہوگی اور جب احتم الحاکمین بیفر مادے تو وہ جزاتو ہے حد ہوگی۔

کہ خداجائے کیا عنایت ہوگی اور جب احتم الحاکمین بیفر مادے تو وہ جزاتو ہے حد ہوگی۔

کہ خداجائے کیا عنایت ہوگی اور جب احتم الحاکمین بیفر مادے تو وہ جزاتو ہے حد ہوگی۔

بے صدکے یہ عن نہیں کہ غیر تمنای بالفعل ہوگی کہ اس بری ل ہو نیکا اشکال ہو بلکہ بے صد ہونے کی صورت ہیں ہے کہ غیر تمنای بالمغنی الاتفف عند حد ہے بیٹی وہ جزاکی وقت نمتم نہ ہوگ ۔ بیا تمیاز تو بالعثبار کیت کے ہاور ہوسکتا ہے کہ اختیار ہے اس میں اور اجز ہی ہے کہ اختیار ہوکہ روزہ کی جزاکیفا اور اعمال کے اجزیہ ہے متن زہوغ ضروزہ کے درمیان میں خواہ مقدار کے اعتبار ہے ہویا کیف کی روے ہواور حسنات ہے اس اجزاء کی نوع عیدہ ہوگی حدیث میں اس ہے بحث نہیں ہویا کیف کی روے ہواور حسنات ہے اس اجزاء کی نوع عیدہ ہوگی حدیث میں اس ہے بحث نہیں کہ وہ جزاء کیا ہے اور اس کو کیا مناسبت ہے اس لئے کہ حاکم کو بیضر ورنہیں کہ رعایا ہے وہ یہ جی بیان کر دیا کرے کہ یا جزاد ہی گا اور اس کو کیا مناسبت ہے اور نیز مقصود تو اختال کا امر کی ترغیب ہواور جزاء کیا بیان کر نا اس کا مدار نہیں مدار ترغیب احتال کا تو اہل اطاعت کے نزدیک اتنا بھی کا فی ہے کہ حاکم کو جوہ مناسبت بھی معلوم ہوں یہ کی ورجہ میں جوتو مضا تقدیمی تکر میہ کراس کی تعیین بھی ہوتو مضا تقدیمی تکر میہ کراس کی تعیین بھی ہوتو مضا تقدیمی تکر میہ کراس کی تعیین بھی ہوتو مضا تقدیمی تکر میہ کراس کی تعیین بھی ہوتو مضا تقدیمی تکر میہ کراس کی تعیین بھی ہوتو مضا تقدیمی تکر میہ کراس کی تعیین بھی ہوتو مضا تقدیمی تکر میہ کراس کی تعیین بھی ہوتو مضا تقدیمی تکر میہ کراس کی تعیین بھی ہوتو مضا تقدیمیں عملوم ہوں یہ کی ورجہ میں جوتو مضا تقدیمی تکر ورک نہیں۔ اور اسکے وجوہ مناسبت بھی معلوم ہوں یہ کی ورجہ میں جوتو مضا تقدیمی معلوم ہوں یہ کی ورجہ میں جوتو مضا تقدیمی کراس کی معلوم ہوں یہ کی ورجہ میں جوتو مضا تقدیمیں کی درجہ میں ورت میں کراس کی درجہ میں جوتو میں اس میں کراس کی درجہ میں کراس کی درجہ میں جوتو میں کراس کی درجہ میں کراس کی درجہ میں کراس کی درجہ میں کراس کی دورجہ میں کراس کی درجہ میں کراس کی درجہ میں کراس کی درجہ میں کراس کی درجہ میں کو دور میں کراس کی درجہ میں کراس کی کراس کی ک

بلاضر رلغزش

اس باب میں دولغزشیں ہوجاتی ہیں۔ایک لفزش تو این میں معنز ہیں گوا یک درجہ میں لفزش ہے۔
عمر دوسری معنز ہے تفصیل اس اجمال کی ہیہ کہ فضائل وٹواب کا جو دعدہ ہے اس پرا تمثال کو بنی کرنا کہ
ان فض کل اور ٹواب کے سبب تو عمل کرتا ہے۔ یا فزش تو ہے مگر معنز ہیں اس لئے کہ دعدہ تو ہو ہی چکا ہے

اس کا وجود تو متیقن ہے تو اس نے عمل کوائی شے پر بنی کیا ہے کہ اس کا وجود تھینی ہے۔ ثابت بالنص

ہے ۔ تو اس میں ضرر ہے تھیں کیکن ہو دلیل قلت محبت کی ہے اور بہی سبب ہے اس کے لفزش ہونے کا۔
اپ مطلب کی محبت ہے، ذات محبوب اس کو مجبوب نہیں۔اگر ذات محبوب اس کو مطلوب ہوتی تو فضائل
اپ مطلب کی محبت ہے، ذات محبوب اس کو مجبوب نیس ساگر ذات محبوب اس کو مطلوب ہوتی تو فضائل
تو کیا۔اگر انتشال امر میں کوئی تکلیف ہون ہی معلوم ہوتا تب بھی انتشال ترک نہ کرتا۔

ویکھود نیا میں اگر کسی ہے محبت ہوج تی ہے تواس سے ملنے میں کتنی کتنی مصبتیں جھیلتے ہیں۔ گوارااور نا گواراسب ہی پچھ برداشت کرتے ہیں۔ دالندا گرمجت صادق ہے تواس کامشرب تو یہ ہے کہ جس میں مجبوب خوش ہووہ کام کرنا جا ہیے۔

ہے مد ن میں ہوج میں معرب میں ہیں ہے۔ فراق دوسل چہ بیشدرضاے دوست طلب فراق اور وسل کی بچھ حقیقت نہیں مجبوب کی رضا طلب کرنا جا ہے آگر مجبوب فراق کو پہند فرما کمیں تو تم وصال کے عالب مت بنو۔اس کئے مجبوب کی مرضی کے خلاف کی تمنہ کرناافسوس کی بات ہے۔ صرف اس کی خوشنودی کے لیے کرنا جا ہے۔ جی کہ یہ کہنا کہ آپل جا کیں یہ بھی نہ جا ہے لیکن چونکہ ایک طبعتیں بہت کم جی زیادہ طبیعتیں ایس ہی جیں کہ انقد تعالیٰ کے دعدہ اور دعیدوں کوئن کرعمل کی تو فتل ہوتی ہے۔ اس نے حق تعالیٰ نے اعمال پر دعدہ فر مایا ہے ایک بنا تو عمل کی بیٹی جو کہ معزبیں۔ فہم حکمت

ایک بنادوسری ہے۔ وہ نہایت قطرناک ہے وہ کیا ہے تہم حکمت لینی عمل جب کریں مے جب اس عمل جب کریں مے جب اس عمل کی حکمت اور وجہ مناسبت عمل وجز انہی ہماری سمجھ میں آجائے۔انسوس ہے کہ اس زمانہ میں جس ندرتعلیم بڑھتی جارہی ہے اس قدراس بنا فاسد کا شیوہ ہوتا جاتا ہے جس کود کیھئے کہا علما و کیا جہلاسب اس میں جتلا ہیں۔

ماشاء امقد میرے جال کہنے پرشا پر بعض تعلیم یافتوں کوشبہ ہوا ہرکہ ہم تو خاصے لکھے پوھے ہیں۔ چنانچہ خواندہ لکھے جاتے ہیں۔ ہم کو جائل کیوں کہا۔ بات بیہ کہ جائل کے معنی بنہیں کہ لکھنا یا پڑھنا نہ جو نتا ہو۔ بلکہ جس ٹن کوکوئی نہ جانے وہ اس فن کا جائل ہے اگر ہیں ڈاکٹر نہیں ہوں تو اگراس فن جی دخل دوں تو میری حمافت ہے۔ اس فن کے اعتبارے میں جائل ہوں۔ جس شخص نے جوفن حاصل نہ کیا ہو وہ اگراس میں محقق ہونے کی حیثیت سے گفتگو کرے بیاس کی غمطی ہے اور اگر سائلا نہ گفتگو کرے بیاس کی غمطی ہے اور اگر سائلا نہ گفتگو کرے بیاس کی غمطی ہے۔

اس کی ایس مثال ہے کہ کسی طبیب کے پاس دومریض جو کون طب سے بالکل نا آشا ہیں آتک کی ۔ توابین آتک کی ۔ توابین اور دوائی ترکیب وغیرہ در یا فت کر کے دوابین شروع کر دیا۔ اور دوسرے نے بھی نسخہ تو لکھوایا گرنسخہ کود کھے کر آپ نے طبیب سے قبل وقال شروع کر دیا۔ اور دوسرے نے بھی نسخہ تو لکھوایا گرنسخہ کود کھے کر آپ نے طبیب کے فلال دوا کیوں نہ شروع کی ۔ کیوں حکیم صاحب آپ نے گل بنفشہ کیوں لکھا ہے۔ بجائے اس کے فلال دوا کیوں نہ سجو یز فر مائی اورگل بنفشہ پانچے ہی ماشہ کیوں لکھا۔ جبے ماشہ کیوں نہ لکھا فل ہر ہے کہ طبیب کویہ گفتگو اس مریض کی ضرور تا گوارگز رہے گی۔ اس کوتو اس قدرسوال کافی ہے کہ میرا مرض کیا ہے۔ اور دوا کی صرور با گوارگز رہے گی۔ اس کوتو اس قدرسوال کافی ہے کہ میرا مرض کیا ہے۔ اور دوا کیا ہے اور دوا کی صرور با گروئی طالب میم (جواس طبیب سے فن حاصل کرنے کے لئے رہتا ہے) آجاوے حالت میں اگر کوئی طالب میم (جواس طبیب سے فن حاصل کرنے کے لئے رہتا ہے) آجاوے اور دو ایجنے ہیں سوالات کرے کہ شخی نے اس دوا کی مقدار کی کیوں لکھی ہے اور بجائے اس کے اور دوا کیوں سائل گر جائے اس کے فلال دوا کیوں شہیں کھی تو طبیب برابر جواب دینے لگے گا۔ اس پر دو مریض سائل گر جائے کی فلال دوا کیوں شہیں کھی تو طبیب برابر جواب دینے لگے گا۔ اس پر دو مریض سائل گر جائے کی فلال دوا کیوں شہی کو اس کھی تو طبیب برابر جواب دینے لگے گا۔ اس پر دو مریض سائل گر جائے کہ فلال دوا کیوں شہی کو اس کھی سائل گر جائے کی

کیا وجہ ہے کہ ہم نے یمی سوال کیا تھا تو ہم پر تو عن بہوا۔ اور اس نے پوچھا تو آپ نے جواب و یا وہ طبیب ظاہر ہے کہ یہ ہے گا کہ بین حاصل کرنے آیا ہے اس کوسوال کاحق حاصل ہے اور اس کامقصود ہی ہے اور آپ کا مقصد بیٹیں۔ آپ کوتو شفا مطلوب ہے۔

صاحبوا بیمثال جب سمجھ میں آگئی تو اب اس سے صاف واضح ہوگیا کہ آپ صاحبوں کا حکمت سے سوال کرنا بالکل بے موقع ہے۔ تعجب ہے کہ شب وروز گرامونون اور فوٹو گراف اور کمروں و بنگلوں میں رہنے کاشغل ہواور سوال بیکریں کہ نماز کی فلاسٹی کیا ہے اور روز ہ کی حکمت کیا ہے۔ آپ اپنے امراض کا علاج سیجیجے۔

مجھے ایک دکایت یاد آئی۔حضرت مولانا گنگوہی ایک مرتبہ قصبہ رام پور جاتے ہوئے موضع اسلام گلر میں تشریف لائے۔ایک خان صاحب ایک جگہ کے رئیس اس مکان میں تھم رے ہوئے تھے۔ ان کوخیال ہوا کہ مولوی صاحب تنہا ہیں۔ ان سے باتیں کرنا جا ہیں۔ اب باتی کریں تو کیا کریں۔اس لئے کہ برخص ہے وہی ہا تنس کی جاتی ہیں جواس کے قداق کے موافق ہوں۔ سوچ بچار کرآپ یو جھتے ہیں کہ حضرت وہ چھوٹی جھوٹی یا تیں کون می ہیں جن ہے نکاح ٹوٹ جا تا ہے۔حضرت نے فر مایا کہ چھوٹی ہاتوں ہے ہمارے میہاں نکاح نہیں ٹو شالیعنی آپ کی مراوکن حیموٹی ہاتوں ہے ہے؟ خان صاحب کہنے لگے کہ حضرت میمی *کفرشرک* کی ہاتیں۔حضرت نے ہنس کر فر ما یا کہ خان صاحب جب کفرشرک چھوٹی با تیں ہیں تو آپ کے نز دیک بڑی با تیں کون می میں خان صاحب چپ رو مکئے ۔حقیقت میں اپنے مرتبہ سے زیادہ سوال کرنا خود ذکیل ہونا ہے۔ ا سے ہی ہمارے زیانہ کے تعلیم یا فرۃ حصرات ہیں۔ان کی مثال بعینہالی ہے جیسےا یک شخص پر فوجداری کامقدمہ ہو گیے ہے اوروہ دریافت کرتا پھرتا ہے کہ فعال دفعہ جوتعزیرات ہند میں ہے اس کی کیا وجہ ہے۔اس کے ذیر مرتو ضروری ہے کہ اس کوفکر ہوجائے اور وکلا ہے مشور ہ کرےاورا پی مرضی کی کوئی صورت تجویز کرے افسوی ہے کہ ہمارے اوپر ہزار وں مقدے فوجداری کے قائم ہیں ۔لیکن ہم کو تنبیہ نبیں ۔ ہم کوتو بیضروری تھا کہ قوانین دریا فٹ کرتے اورا پنی گلوخلاصی کی کوئی تدبیرنکالتے ہم اس کے چھے پڑ گئے کداس کی کیا دجہ ہے اور اس کی کیا دجہ ہے۔ احكام البي كي عظمت

ا سویہ بخت مصر ہے اس لئے کہ دوحال ہے خالی نہیں یا تو تھکم علل چھے مجھے میں آھیے یا نہیں۔ اگر سمجھ میں نہ آئے تب تو بیضر رہوگا کہ اقتال کوئی کیا تھافہم پراور فہم ہوائیں۔اس لئے احکام برعمل ای نہ کرے گا اوران کو نفو سمجھے گا جیسا کہ آج کل بہت سے ہمارے ٹوجوان نہ ہب کی پابندی صرف قومیت کے گا اوران کو نفو سمجھے گا جیسا کہ آج کل بہت سے ہمارے ٹوجوان نہ ہب کی پابندی صرف قومیت کے گا فاط سے کرتے ہیں احکام الہیدی کی محمقامت ان کے قلوب میں نہیں ہے بلکہ اس تشم کے سوالات کرنا یہ خودولیل اس کی ہے کہ عظمت نہیں۔

دیکھو گورنمنٹ کے احکام کی چونکہ دل میں عظمت ہے اس لئے ان کی وجہ بھی نہیں ہوچھی جاتی۔ اگر کوئی ہو چمتا بھی ہے تو یہ جواب ملا ہے میاں احمق ہوسر کاری تھم ہے اور یہاں علاسے حکمتیں اور علتیں دریافت کی جاتی ہیں۔

میں بقسم کہتا ہوں کہ علما جو جاننے کی چیزیں ہیں سب پچھے جاننے ہیں بہت ہے احکام کی حکمت بھی جاننے ہیں اور علت بھی تکراس حکیم کی مثل ہیں کہ جابل مریض کواس نے جھڑک و یا تھا اور اگر کوئی طالب علم سوال کرتا ہے تو و و شکفتہ ہو کر جواب دیتا ہے۔

ا کیٹ فض میرے پاس ایک فرائض کا مسئلہ لائے۔ اس میں بھیجا اور بھی تھے میں نے کہا ہے
میراث بھیج کو ملے گی۔ کہنے گئے کہ اس کی کیا وجہ ہے کہ بھیجی کونہ ملے گی۔ حالا نکہ دونوں بھائی بہن
میراٹ بھیج کو ملے گی۔ کہنے گئے کہ اس کی کیا وجہ ہے کہ بھیجی کونہ ملے گی۔ حالا نکہ دونوں بھائی بہن
میں۔ میں نے کہا جناب نوکری چھوڑی دیجے اور فارغ ہوکر ہمارے پاس رہے۔ ہم اول سے
صرف وتحوفقہ پڑھا کر سراجی آپ کو پڑھا کیں گے اس قوت اس کی وجہ ہے آپ سوال کرنے کے
قابل ہوں گے اور اب تو یہ جواب ہے کہ سرکاری تھم اس طرح سے ہے۔

بہرحال بیطرز ااور اس پربنائے کاررکھنا سخت معنر ہے کہ اگرمعلوم نہ ہوتب توعظمت و وقعت نہ ہوگی اوراگر کچھ بھی بھی آئے تو چونکہ علل وحکم منصوص کم بیں اس لئے اکثر تحسین وظنی ہوں گے کیونکہ بدون خداور سول کے بتلائے ہوئے ہماری رسائی حقائی تک کب ہوسکتی ہے۔ اس لئے کہ اللہ تعالی اور رسول کے علم ہے ہمارے علم کو جونسبت ہے وہ اس سے بھی زیادہ بعید ہے کہ جیسے ایک کہ اللہ تعالی اور رسول کے علم کو باپ کے علم کو جونسبت ہے وہ اس سے بھی زیادہ بعید ہے کہ جیسے ایک صغیرین بجے کے علم کو باپ کے علم سے۔

چنانچاب ملاحظ فرمائے کہ چھوٹے بچے کوآپ منع کرتے ہیں کہ کھٹا آم نہ کھاؤ اور دلیل اس کی کچھ بیان نہیں کرتے۔ دووجہ ہے آیک تو اس لئے کہ ہمارااس پرزوراییا ہے کہ ہم جو بات اس سے کہدویں کے بلادلیل و بلاچون و چرااس کو ماننا ضرور ہے۔ دوسری وجہ اس کی کم نہی ہے کہ اگر وجہ بیان کی جائے گی تو اس کی مجھ میں نہ آئے گی۔ صاحبو! کیا خداتعالی کا آتا بھی زورنہیں یا یہ گدن ہے کہ ہی راعم کافی ہے۔ جب تھوڑے حقوق اورتھوڑا تفاوت علم پرلم (علت) وکیف قطع ہوج تاہے۔ تو خدا وندتعالی شانہ کے حقوق وعلم تو کہیں زیادہ ہیں۔ تعجب ہے کہ خداتعالی ہے اس کا انتظار کریں کہ جب وجہ بھے بھی آجائے گی اس وقت یا نیں گے اور چونکہ وہ محس ہیں خالق ہیں اس لئے بعض جگہ تھم واسط خود بھی بیان فرمادیے ہیں جیسے بچہ کی مثال ہیں باب بعض مرتبہ کہتا ہے کہ کھٹے آم مت کھا و پھنسیاں نکل آئیں گ۔ اور جہاں بیان نہیں فرما یا وہاں اپنی طرف سے تراشا سخت معزہے۔

بعض لوگ اس کا وش اسرار کے عذر میں کہا کرتے ہیں کہ صاحب ہم کوخود تو شہر نہیں ہے لیکن بعض کا لفین پوچھتے ہیں ہم کیا جواب دیں اس لئے ہم پوچھتے ہیں سویہ بھی نا دانی ہے۔ وجہ یہ ہے کہ پوچھ پوچھ او چھے کر جواب دو گے تو کہاں تک دو گے ۔ کہیں تو بند ہوکر کہنا پڑے گا کہ ہم نہیں جانے ۔ اس سے بہتر یہ ہے کہ سیدھی بات کہدو کہ بھائی علماء سے پوچھو ہم نہیں جانے ۔ جب وہ علماء سے پوچھو ہم نہیں جانے ۔ جب وہ علماء سے پوچھو ہم نہیں گا ۔ اس سے بہتر یہ کے درب دی سیدھی بات کہدو کہ بھائی علماء سے پوچھو ہم نہیں جانے ۔ جب وہ علماء سے پوچھو ہم نہیں گا ۔ اس سے کو دنب لیس سے اور با قاعد وال سے گفتگو کر لیس سے۔

وہ قاعدہ یہ ہے کہ ہر فرہب جن کے پچے فروع اوراصول عقلی ہیں۔ نقل کواس میں وقل نہیں۔ تو جوفص اصول کوسلیم کے ہوئے ہے اس کوتواس قدر کانی ہے کہ جب اصول تمہارے مسلمہ ہیں تو فروع تم کو ضرورتسلیم کرنا ہوں گے اورا گراصول ہی مسلم نہ ہوں تو اول اصول میں گفتگو کرنا چاہے۔ جب اصول طے ہوجا سمنگے فروع خودان کے تابع ہیں۔ پس اس قاعدہ سے معلوم ہو گیا کہ مسلمان ہو کر اگر جز ئیات کی وجدوری فت کرے اس کے کوئی معنی نہیں۔ جز ئیات کی وجدوریا فت کرنے سے معلوم ہوتا ہے۔ اس کے کوئی معنی نہیں۔ جز ئیات کی وجدوریا فت کرنے سے معلوم ہوتا سے کہ اس کے کوئی معنی نہیں۔ جز ئیات کی وجدوریا فت کرنے سے معلوم ہوتا ہے۔ کہ اس کو اول تو حیدورسالت بیس گفتگو کرنا چاہیے۔

ہ جن ہے ہیں ایک مثال ہے کہ جیسے وہ خص ایک بادشاہ کی حکومت میں رہتے ہیں ایک شخص اہل اس کی ایک مثال ہے کہ جیسے وہ خص ایک بادشاہ کی حکومت میں رہتے ہیں ایک شخص اہل اس عت میں ہے ہواور ایک باغی ہے۔ جومطیع ہے اس کو توانین کی وجہ اور الم دریافت کرنے کی اس لئے ضرورت نہیں کہ جب اس نے بادشاہ کا بادش ہو ہونا اور اپنارے یا ہونا تسلیم کر لیا تو اب احکام میں جمت نگا نا ہے معنی ہے اس کے لئے یہی کافی ہے کہ جس کو میں بادشاہ ہونا ہوں۔ بیاس کے اس کے لئے یہی کافی ہے کہ جس کو میں بادشاہ ہوں۔ بیاس کے احکام ہیں اور یاغی اگر در بیافت کرے تو وہ اسلئے بیکار ہے کہ وہ ہادش ہو کو بادشاہ نہیں ما نتا۔ اس لئے بہا کے تو جیہ جزئیات کے اول تو اس سے بادشاہ کو بادشاہ منوائیں گے جب وہ مانے گا تو پھر احکام خود ہی اس کو مانتا ہوئیں گے جب وہ مانے گا تو پھر احکام خود ہی اس کو مانتا ہوئیں گے۔

غرض مخالفین کوجواب دینے کی غرض سے حکمتوں کا بوج چھنا تو جیسا مثاں ندکور سے مغہوم ہوا بالکل ہی لغوہاورائے عمل کے لئے اگر ہے تواس لئے لغو ہے کہ سلمان کا بس بید سلک ہونا جا ہیے ۔ زباں تازہ کرون یا قرار تو سینگیٹن علی از کار تو

زبان سے اقر ارکر نا جا ہے کوئی علت نہ ڈھونڈ نا جا ہے۔

اگرکوئی کیے کہ بعض بزرگوں کے کلام میں بھی احکام کی صمتیں پائی جاتی ہیں، توبات ہے کہ جن حضرات کی زبان سے بچھ حکمتیں نگلی ہیں وہ انہوں نے کسی سے پوچھ پوچھ کر حاصل نہیں کیس بلکہ اس کا طریق الہام کا بھی ہے کہ بدون کا وش انہوں نے عمل شروع کر دیا تھا۔ عمل کرتے کرتے حق تعالیٰ کی طرف سے ایک نورعطا ہو گیا اس سے سب حقا اُن کھل سے یہ تو تم بھی ایسان کی جو ایسان کی جو ایسان کی ہے کہ اور حقیقت میں شریعت نے بیاحسان کی ہے گھنٹیش حکمت سے منع کر دیا ہے اور اس میں

بڑی حکمت ہے اس لئے اگر حکمتیں سوج کرتم نے کمل کیا اور ہوں گی وہ تخینی جیسا پہلے معلوم ہوا تو حمکن ہے کہ بچاس برس کے بعد وہ حکمتیں مخدوش ٹابت ہوں تو جب بنا منہدم ہوگئی تو جن بھی خدرت کی خدر ہے گا۔ تو ان حکمتوں کا دروازہ کھولنا گویا اسلام پر سخت حملہ کرنا ہے۔ افسوس ہے کہ ہمارے بھائی اس راز کو بچھے نہیں۔ خلاصہ یہ ہے کہ اس پرا متال کوئی کرنا سخت معنر ہے۔ اس لئے روزہ کے متعلق بھی اس کے دریے مت ہو۔

روز ه کی خصوصیت

ضروری بات مجھ لوکہ روزہ کی جزاخود ہیں گے۔خواہ وہ جزا کچھ ہو۔اورخواہ اس جی وجہ مناسب تم کومعلوم نہ بھی ہو۔ آ گے فرماتے ہیں فاندلی ،روزہ میری شے ہے بیروزہ کی نضیلت ہے۔

ربی بید بات کہ روزہ کو اپنا کیول فرمایا۔ اس کے مختلف پہلو ہو سکتے ہیں ایک بید کہ جس قدر عبد دات ہیں ان کو کچھ نہ کچھ صورت بھی محسوس ہوتی ہے مثلاً نماز کی صورت رکوع ، جود، قیام ، تعود محسوس ، زکوۃ کی صورت اعطاء محسوس ہے ۔ ج کی صورت ارکان مخصوصہ میں اوا کرنا محسوس ہے ، ذکوۃ کی صورت اوا کرنا محسوس ہے ۔ خلاف روزہ کے ۔ نماز پڑھو تب سب کو معلوم ہوجائے گا کے نماز پڑھ رہا ہے۔ ج کو تو سب دیکھیں گے بخلاف روزہ کے ۔ نماز پڑھو تب سب کو معلوم ہوجائے گا کے نماز پڑھ رہا ہے۔ ج کو تو سب دیکھیں سے بخلاف روزہ کے کہ کہ کو تو بیل ہوت اس کے کہاں کی حقیقت چندا شیاء کا ترک ہے اوروہ محسوس نہیں۔

اگر کوئی کے کہ ہم ایک شخص کو صبح سے شام تک مقید رکھیں یا ہروقت اس کے یاس رہیں اگرکوئی کے کہ ہم ایک شخص کو صبح سے شام تک مقید رکھیں یا ہروقت اس کے یاس رہیں ا

تو معلوم ہوجائے گا کہ روز ہے یا نہیں ۔ تو وہ بھی محسوس ہو کیا۔

جواب میہ کہ اس ہے بھی روزہ کاعلم ہوگا اس کئے کہ پیشاب پا خانہ غسانی نہ میں جانے کے ونت تو پہرہ ہٹا ؤ گے۔ تو اس میں ممکن ہے کہ وہ روز وتو ژ ڈالے تو آپ کو کیا خبر ہوگ۔ غرضہ جہ بہ منہ اسی جنر میں فی اتران عربی اس تن ایک بھی اختال میں مکر روز و کے

غرض جب روز ہ ایسی چیز ہوئی تو اور عبادتوں میں توریا کا بھی اختال ہوسکتا ہے مگرروز ہ کے اندر ساختال بالکل نہیں ہے۔

اگرکوئی کہے کہ اگرکوئی ظاہر کردے کہ میرار دزہ ہے تو پھرروزہ شی بھی احتمال ریا کا ہوجائے گا۔ میں کہتا ہوں کہ اس صورت میں بھی ریانہ ہوگی۔ اس لئے کہ دیکھنے والوں کوروزہ کی صورت تو نظر آتی نہیں صرف اس کے اخبارے ہی معلوم ہوا کہ روزہ ہے اور

النحسر به محتمل المصدق و الكذب الينى خبريس جموث اور يح دونون كا حمّال ہے۔
ممکن ہے كذائ كوجموثا مجھا جائے بخلاف اور عبادتوں كے كذاگرا تكاریمی كرے تب ہمی وہ
انكار مفیر نہیں اس لئے كدمشاہدہ كے خلاف ہوگا ہی ایک معنی توفانه لمی كے بیہ وسكتے ہیں كہ بہ
میرے بی لئے خالص ہاس میں نمائش كا حمّال نہیں ہے۔
صلو ق اللّٰد كى حقیقت

دوسری وجہ فاند لی فرمانے کی ہے کہ جتنے اعمال ہیں سب میں عبدیت کی شکل ہے مشانی تماز کے وغیرہ یا بعض میں الی صفت ہے کہ مشترک ہے جیسے ذکوۃ کی حقیقت کداعطاء ہے کہ عبدکی بھی صفت ہے اورا آلد کی بھی بخلاف روزہ کے کہ جس کی حقیقت تو ک الا تحل و المشوب و المجماع ہے اوران امور ہے منزہ ہونا خالص صفت حق تعلیٰ کی ہے حق تعالیٰ اس سے پاک ہیں۔

اگر کوئی کیے کہ حدیث میں آیا ہے کہ شب معراج میں جناب رسول المدسلی المدعلیہ وسلم جب تشریف لے کے اورا لیے مقام پر پہنچ جہاں فرشتے بھی نہ جاسکتے تقے اورا ہے بڑھنا چا ہاتو ندا آئی۔

قف یا محمد فان رہ ک یصلی لینی تظہر وا مے محمسلی اللہ علیہ وسلم اس لئے کہ آپ کا رب نماز پڑھتا ہے اس ہے معلوم ہوتا ہے کہ صلوۃ ہی حق تعالیٰ کی صفت ہے۔

اس صدیث ہے مترین صدیث کوتو بیضرر ہوا کہ انہوں نے اس کے حدیث ہونے ہی ہے انکار کر دیا۔ اور کم علم اور کم فہموں کو بیلطی ہوئی کہ وہ اس کے ظاہر کا عقاد کر بیٹھے بات بیہ کہ یہاں صلاح قریب کے علی توجہ اور رحمت کے بیں جیسا قرآن شریف میں ہواللہ ی مصلی علی کے بی

اللہ تعالیٰ ایسے ہیں کہ تم پر رحمت ہیں ہے ہیں رہا یہ شبہ کہ رحمت وقوج قرمانا حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو آھے بر جے ہے کہ جناب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یوں تو ہر وقت مورد تجلیات اور رحمتوں کے رہبے ہے کہ جناب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یوں تو ہر وقت مورد تجلیات اور رحمتوں کے رہبے ہے کہ کسی کو انبیاء وادلیاء جس سے یہ مرتبہ حاصل نہ تھا لیکن اس وقت حق تعالیٰ نے جاہا کہ خاص تجلیات اور قرب خاص سے مشرف فرما ویں اور ان تجلیات خاصہ وقرب خاص کے اس لئے تھر رے رہنے کا تھم فرمایا کہ ابھی وقرب خاص کے لئے ضرورت تھی استعداد خاص کی ۔ اس لئے تھر رے رہنے کا تھم فرمایا کہ ابھی کھم وہ اللہ تعالیٰ تم پر اپنے انوار ورحمت فائض فرما رہے ہیں تا کہ تمہارے اندراستعداد تا م ہوجائے آئندہ تجلیات کی ۔ پس معلوم ہوا کہ یہاں نماز کے معنی نہیں ۔ غرض نماز خاص صفت بندہ کی ہے۔ بخلاف روزہ کے کہ اس میں شان تنزیہ کی ہے پس اس میں تحب ہے حق تعالیٰ کے ساتھ۔ اس کے فرماتے ہیں کہ وہ ہماری شے ہے۔

اس سے فرمانے ہیں نہوہ ماری سے ہے ایک لطیقہ غیبی

یہاں ہے ایک لطیفہ ظنی طریق ہے مستفاد ہوتا ہے وہ بہ ہے کہ جب قیامت کا دن ہوگا اور ظالمین کی نیکیاں مظلوموں کودی جا کیں گی تو بعض اہل لطا کف نے کہا ہے کہ روز ہ نہ چھنے گا۔ اس لئے کہ سرکاری جا کداد ہے۔ اس کوکوئی نہ لے سکے گا گراس کا دعویٰ لطیفہ کے درجہ میں ہے ممکن ہے کہ ایسا ہی ہواور اس کے ساتھ ہی ایک اور بات بھی یا دآئی۔ وہ بہ ہے کہ

انااجزی به . ش تودی اس کی جزادول گا۔

ایک تسخہ اناا جنوی بدیصیغہ مجہول یمی مشہور ہے اس کے معنی مشہور یہ ہیں کہ روزہ میرا ہے اوراس کے بدلہ میں دیا جاؤں گا۔ بینی اس کا بدلہ یہ ہے کہ میں اس کو ملوں گا۔ اور یہ صفحون کوئی نفسہ مح ہوکہ جن تعالی اس کے بدلے میں ل جائیں گے۔

اس پر جھ کوا یک حکایت یادآگئی کہ خلیفہ ہارون الرشید نے ایک دن در ہارکیا اور بیٹم کیا کہ جو خض جس شے پر ہاتھ رکھ دے گا اس کو وہی شے دی جائے گی چنانچ لوگوں نے اپنی خواہشوں کے موافق ایک ایک شے پر ہاتھ رکھ دیا۔ ایک لونڈی نے ہارون رشید کی کمر پر ہاتھ رکھ دیا۔ ہارون نے کہا یہ کیا۔ کہا کہ جب آپ میرے ہوگئے تو یہ چیزیں میری ہوگئیں اس لئے میں نے آپ کوانتخاب کیا ہے۔ بس جس کو خدانعالی ال سے ۔ اس کوسب تعتین ال گئیں۔

کوانتخاب کیا ہے۔ بس جس کو خدانعالی ال سے ۔ اس کوسب تعتین ال گئیں۔

خرض یہ صفحون تو فی نفسہ مح ہے کم خلطی یہ ہے کہ اس حدیث سے نکالا جاتا ہے جو خفس درا

بھی عربیت ہے مس رکھتا ہوگا وہ ہرگز اس ہے بیمعنی نہ سمجھے گا اس کئے کہ عربیت کے اعتبار ہے اس کا ترجمہ بیہ ہوگا کہ جزا دیا جاؤں گا۔ لیعنی نعوذ باللہ جھے کوکوئی جزا دے گا نہ بیر کہ میں جزا میں مل جاؤں گا۔ کہ بیاس کا ترجمہ نہیں ہے ہیں یہ نے خلط ہے جے وہی ہے

انا اجزی به لین میں اس کوجزا دوں گا۔اورروز ہ کی نصیات یہ کیا پہھے کم ہے کہ قرماتے میں کہ میں جزادوں گا۔خیر میں مضامین تو حبعاً بطورلطیفہ کے میں۔

روز ہ اور فدیہ

بحد کو فانه لمی (دوروز و میرے بی لئے ہے) ہے ایک مضمون فاص متعبط کرتا ہے جو کہ نہایت کارآ مدہ ہے۔ وہ بیہ کہ جب یفر مایا کہ روز ہ میرا ہے تو جب ہم نے روز و رکھا تو گویا ہم نہایت کارآ مدہ ہے۔ وہ بیہ کہ جب یفر مایا کہ روز ہ میرا ہے تو جب ہم نے روز و رکھا تو گویا ہم خوا مال سے بیک کہ ہو ہے کہ اگر حاکم ضلع کے لئے کوئی شے تحقہ کے طور پر بھی لے جاؤ فاص کر جب کہ حاکم خود فر مائٹ بھی کر ہے تو اس کا کس قد را ہتما م کر و گے۔ جہاں تک ہو سے گا عمدہ صاف ستھری شے لے فر مائٹ بھی کر ہے تو اس کا کس قد را ہتما م کر و گے۔ جہاں تک ہو سے گا عمدہ صاف ستھری شے لے در اگر بیان میں مند ڈال کر حق تعی کی وحاضر و ناظر جان کو کہنا کہ روز ہیں بھی اتنا یا اس ہے آ دھا بی ا ہتما م ہوا ہے بغضلہ تعالی اکثر لوگر تو روز ہ بی نہیں رکھتے اور کہتے ہیں کہ روز ہ کی فلا نمی ہے کسر تو قا بہمیہ ۔ تو جب یہ علت ہے تو ہم ا ہے اندر اس وقت کو مغلوب پاتے ہیں۔ خاص کر افعف نام کے مولو یوں کا تر جمہ بعض نے جب سے دیکھا ہے تو اور زیا دہ دلیری پڑو ھائی۔

اس زمانه مين ايك قرآن شريف كالرجم طبع مواب اس مين:

و على اللين يطيقونه فدية. جولوگ روزه كى طاقت ركھتے شہوں ان كے ذمه فديہ ہے۔ كى تغيير ميں لكھ ديا ہے كہ جوشخص روزه ندر كھے وہ فديد دے دے۔اس سے لوگوں كى جرأ ت بڑھ گئى اور بجائے روزہ كے فديد كوكا فى سجھ ليا۔

یادر کھوکہ کہ بیتنسیراس آیت کی بالکل غلط ہے اور وجہ بیہ ہے کہ بیتر جمہ کرنے والا بی علوم سے بالکل جا اس کے کہ مولوی تو مولا والا ہے اور فیم کی وجہ سے اگر کوئی مولوی ہوجائے تو شیطان بڑا عالم ہے بلکہ علم المملکوت وفرشتوں کا استاد مشہور ہے ۔ خدا جانے بیکہاں کی روایت ہے۔ کسی بزرگ کے کلام میں ہوتو اس کی بیتو جیہ ہوگئی ہے کہ علوم میں فرشتوں سے زیادہ ہے۔ بی

مطلب نہیں کے فرشتوں کومیاں جی کی طرح پڑھایا کرتے تھے۔ اور شیطان کاعلم میں زیادہ ہونااس سے معلوم ہوتا ہے کہ خودمونو بول کو برکا تاہے۔ مولوی کو وہی شخص برکا سکتا ہے جواس سے زیادہ علم رکھتا ہو۔ دیکھنے اگر وکلا وکوکوئی دھوکا دیے تو وہ وکالت دانی میں اس سے زیادہ ہوگا۔ جب مولو بول کو بھی دھوکا دیتا ہے تو معلوم ہوا کہ یہ مولو یوں سے زیادہ علم رکھتا ہے مگر صاحبوا علم تو اور ہی شے ہے علم وہ ہے جس کی ٹسیست قرماتے ہیں :

علم چه بود آنکه بنمایدت زنگ مرابی زول بزوایدت تو ندانی بر دایدت خود ندانی تو که حوری یا نجوز تو ندانی تو که حوری یا نجوز

حقیقت میں علم وی ہے کہ تم کوراہ حق دکھائے اور تہبارے دل سے گمرای کا زنگ دور کردے۔ تم کوسوائے بجوز (یہ چیز جائزہے)اورلا بجوز (یہ چیز نا جائزہے) کے پچھے خبر نہیں۔ تمہیں اپناعلم نہیں کہ تم مقبول ہویا مردود۔

جس نے تمام عمر ڈپٹی کلکٹری کی ہووہ قرآن کا کیا ترجمہ کرےگا۔ بڑا کمال اس ترجمہ کا یہ بیان کیاجا تاہے کہ محاورہ کے موافق ہے۔ میں کہتا ہوں کہ یہ سلم ہے لیکن جب غلط ہواتو کس کام کا۔اگر حوصت علیکم امھانکم . تم پرتمہاری ما تعین حرام کی گئی ہیں۔

کاتر جمد کوئی میرکنے کے کہ نماز پڑھوتو میرتر جمہ ہی نہیں۔ چنانچہ اس ترجمہ کا ایک مقام مجھ کو یادآیا۔ مورۂ یوسف میں ہے

ذهبنا نستبق. ہم آپس شرور نے لگ کے۔

استباق کا ترجمہ ان مترجم صاحب نے کیڈی کھیلنا کیا ہے۔ بیتر جمہ نقانا بھی بالکل غلط ہے اور عقلا بھی نقانا تواس کے کے لفت میں ویکھ لیجئے کہ استباق کے کے معنی کیا خلاف لفت ترجمہ بھی معتبر ہوگا۔ استباق کے معنی آپس میں دوڑ نا ہیں کہ دیکھیں کون آ سے نظے اور چونکہ عقل پرتی کا آج کل زور ہے اس لئے میں کہتا ہوں کہ عقلا بھی بیتر جمہ غلط ہے اس لئے کہ کبڈی کھیلنے میں اتی دور نہیں جایا کرتے کہ جس سے محافظ بچہ کی نسبت بھیٹر ہے کے کھا جانے کا اختال ہو۔ اگر ایس ہوتا تو حضرت یعقوب علیہ السلام ضرور جرح قرماتے۔

بہرصل وعلی الذین بطیقونه کی یے تغیر نہیں ہاورنہ فدید دیے والے بری ہو کتے ہیں۔ اورنہ ندید کہدر بری ہو سکتے ہیں کروزہ تہذیب نفس کے لئے ہے ہم تو خوومہذب ہیں اس

کے کہ اول تو یہ کہنا غلط ہے کہ ہم مہذب ہیں اور دوسرے تہذیب نفس روز ہ کی حکمت ہے نہ کہ نباہ وعلت ۔ بیخرالی اس کی ہے احکام کی مخترع حکمتوں پر بٹی کرتے ہیں۔ بیتوان کا ذکر ہے جوتا ویلیس کر کے روز ہ رکھتے ہی نہیں۔

روزه كي حقوق

بعض وہ ہیں جور کھتے ہیں لیکن اس کے حقوق ادائیں کرتے انہوں نے روزہ نام فقط اس
کور کھا ہے کہ کھانا چیا چھوڑ دیا جائے۔ صاحبو! اگر حاکم تم سے بہے کہ ہم کوایک آدمی کی ضرورت
ہے اور تم اندھا، ہمرالنگڑ ا، لولا ، اپا بچ محفل لے جاؤتو کیا حاکم اس سے خوش ہوگا ہم گرنہیں بلکہ حتی
الوسع اس کی کوشش کروگے کہ مرضی کے موافق آدمی ہولو روزہ میں بید قاعدہ کیوں مہمل چھوڑ دیا۔
آنکھ، زبان، ہاتھ، پاؤں سب بی کو گناہ سے بچانا چاہیے۔ دیکھو جب روزہ میں وہ چیزیں حرام
کردی گئی ہیں جو پہلے مہار تھیں تو جو پہلے سے حرام ہیں وہ تو بطریق اولی واجب الترک ہوں گ

اس واسطے حدیث شریف میں آیا ہے کہ بعض لوگوں کوروز ہیں سے صرف بھوک ہیا س اور جا گنا ہی میسر ہوتا ہے اور بعض لوگ اطمینان حاصل کرنے کے لئے دنیا کے تعلقات تو کم کرویتے ہیں لیکن بجائے اس کے شطرنج ، گنجفہ، غیبت، بدنگا ہی تاول و یکھنا اختیار کرتے ہیں یا در کھو کہ یہ افعال سم قاتل ہیں ان کو معمولی نہ بجھیں ۔ گر پھو کئنے کے لئے ایک چنگاری بھی کا فی ہے۔ خاہراً یہ افعال خفیف معلوم ہوتے ہیں لیکن واقع ہیں بخت ہیں۔

ادنی بات بہ ہے کہ شطر نے سے خفلت ہیدا ہوتی ہے اور خفلت تمام امراض کی جڑ ہے طبیبوں سے پوچھے کہ زکام کیا ہے اگر علاج میں ذرا خفلت کی جائے تو سینکڑ وں امراض کا مقدمہ بن جاتا ہے اس طرح ناول و یکھنا اس میں ہمی اس قدر مشغولی ہوتی ہے کہ سوائے اس کے قلب میں ہمی تہیں ہوتا۔ اگر کوئی کے کہ خفلت تو یکھری میں کام کرنے اور روثی کھانے پکانے سب میں ہوتی ہے تو چا ہے سب چھوڑ ویں۔ بات یہ ہے کہ کام ووقعم کے جیں ایک ضروری اورایک غیرضر وری۔ ضروری اشغال میں یوں تج ہوا ہے کہ معزمیں ہوتے۔ اس لئے کہ اس کو ضروری تجھ کرآ دی اس میں پھنتا ہے اور جب اس کو ضروری تحکرا دی اس کے معزمیں ہوتے۔ اس لئے کہ اس کو ضروری تجھ کرآ دی اس میں پھنتا ہے اور جب اس کو ضروری تحکرا تری اس کی طرف میں پھنتا ہے اور جب اس کو ضروری تحکوم کام کی طرف میں پھنتا ہے اور جب اس کو ضروری تی تھا تو اصلی کام کریں گے۔ اور جو تھوڑ کی تی خفلت اس جس ہو جاتی دے۔ اور جو تھوڑ کی تی خفلت اس جس ہو جاتی دے۔ اور جو تھوڑ کی تی خفلت اس جس ہو جاتی دے۔ اور جو تھوڑ کی تی خفلت اس جس ہو جاتی دے۔ اور جو تھوڑ کی تی خفلت اس جس ہو جاتی دے۔ اور جو تھوڑ کی تی خفلت اس جس ہو جاتی دے۔ اور جو تھوڑ کی تی خفلت اس جس ہو جاتی دے۔ اور جو تھوڑ کی تی خفلت اس جس ہو جاتی اس کی میں ہو جاتی ہیں ہو جاتی ہ

ہے اس کے لئے استعفار کا علم فر مایا ہے کہ استعفار سے وہ دھل دھلا جا نیکی اور غیر ضروری کی نبیت بیتو خیال ہے نبیس کہ بیضروری ہے اس لئے اس کوہی مقصود سمجھے گا اور وہ معنر ہے اور مورث غفلت ہے اور می خفلت ہو جے مفصی الی الکبائر بلکہ الی الکفر وکبیرہ گنا ہوں بلکہ کفر کی طرف پہنچائے والی ہوجاتی ہے بالحضوص ناول سے ایک بڑا ہی شخت مرض پیدا ہوتا ہے۔

وہ یہ کاس کے دیکھنے ہے بدمعاشی کے طریعے خوب یاد ہوجاتے ہیں ہمارے ناول کے شیدائی پرائے تصوں پراعتراض کرتے ہیں اور تاریکی اور خلاف تہذیب بجھتے ہیں لیکن اس تاریکی اور اس روشت تو ضائع جاتا ہے لیکن اخلاق پر برااثر نہیں پڑتا۔ اس لئے کہ وہ قصہ مریحاً کذب اور عادیاً مستحیل ہیں مثلاً گل بکا وئی کا قصہ بکا وئی کی تصویر اور جنون کی عملداری وغیرہ من الخرافات ان قصوں ہے وئی ترکیب بدمعاشی کی نہیں سیکے سکتا کیوں کہ اس میں وصال بکا وئی کا طریقہ ایک جن کا مہریان ہوکر پہنچا دیتا ہے تو اس کوکوئی کس طرح کے موال کر اس میں وصال بکا وئی کا طریقہ ایک جن کا مہریان ہوکر پہنچا دیتا ہے تو اس کوکوئی کس طرح مصل کرے گا۔ بخلاف نا ولول کے (ضبط کنندہ عرض کرتا ہے کہ نا ول کا طرز چونکہ ایسا دکھا یا جاتا ہے کہ واقعات ہوتے ہیں اس لئے اس کا اثر ضبیث پڑتا ہے کہ اکثر آ دی اس کے دیکھنے ہے عشق نسا میا اطفالین میں جنال ہوجاتا ہے اور قلب ہیں سوزش جیسی کیفیت ہوجاتی ہے اور میر بخت مصر ہوتا ہے۔ اا جامع) کہ اس میں انکھا ہے کہ مانا کے ہاتھ دوقعہ دیا جس کو ہرخض کرسکتا ہے۔

ای طرح بعض لوگ دنیا کے سب کام چھوڑ کرروزہ میں نیبت کے اندرمشغول ہوجاتے ہیں۔
چارآ دمی بیٹے گئے۔اس پرطعن ،اُس کی برائی اور جو کہا جاتا ہے تو کہتے ہیں کہ میاں روزہ بھی کسی طرح کئے۔
الحاصل روزہ میں ہاتھ ، پاؤں ،کان ،آ کھ سب کی حفاظت رکھنا چاہیے۔ان سب گنا ہوں سے روزہ کی برکت کم ہوجاتی ہے خصوص معدہ کا گناہ بعثی حرام کھانا اس کوتو ضرور ہی چھوڑ دو کہ بیٹمام خرابیوں کی جڑ ہے۔
حظافہ س

تھم تو ہی ہے کہ بہیشہ کے لئے اس کوترک کردو لیکن چونکداس طرح یک دم سے چھوڑ نا کم بہت ٹوگوں کوشاق ہے اس لئے بین بیرضرور کہوں گا کہ ایک بی ماہ کے لئے اپنفس سے سلح کرلو۔اورنفس سے کہددو کہ اے نفس صرف ایک بی ماہ کے لئے متنی بن جاؤ۔ پھرا ختیار ہے اس سے بیرفائدہ ہوگا کہ اب جونفس کوتفوی پہاڑ نظر آتا ہے۔اس کے بعد تقوی اس قدر مشکل نہ سمجھے گا اور شذہ شذہ داکی تقوی بھی میسر ہوجائے گا۔ دومرافا ندہ یہ ہے کہ ایک ماہ تق ہوجانے سے تقوی کی ایک حداوت محسوس ہوگی کہ جس
کوآپ اس وقت محسوس نہیں کرتے ہیں اور وجہ اس کی ہہ ہے کہ حق تعالیٰ کی اطاعت ہیں ایک
طلاوت ہے کیونکہ جس وقت یفنس رو کے گااس کے روکنے ہیں ایک حظ ہوگا کہ اس کے برابر کس
شے ہیں حظ نہیں ہے اس واسطے جوانول کو جولطف عبادت ہیں آتا ہے وہ بڑھا ہے ہیں نہیں ہوتا ہے
خود قوی تر می شود خم کہن خاصہ آل خمرے کہ باشد من لدن
خود قوی تر می شود خم کہن خاصہ آل خمرے کہ باشد من لدن
پرانی شراب تواورزیادہ تیز ہوجاتی ہے خاص کر وہ شراب جوجی تعالیٰ کی طرف سے ہوایعی
شراب محبت اور کیفیت باطنی۔

لیکن اگر جوانی گزرگی تو بردھا ہے ہی کوئیست ہجھنا چاہیے کہ آئندہ آنے والی حالت بیس
یہ بھی نہ ہوگا جواب ہوسکتا ہے۔ بہر حال فلسفی طور پر ثابت ہے کہ عیادت بیس لطف ہوتا ہے جب
اس طرح تقویٰ کے ساتھ پورام بینہ گزرجائے گا توشوال بیس آپ کویاد آئے گا کہ ہم نے نگاہ
کوروکا تھا کیسالطف آیا تھا۔ حلال کھانا کھایا تھا کیا نور پیدا ہوا تھا اور آپ کوایک اختیاز حلال اور حرام
میں ہوگا پھران ہی حظوظ کو جی چاہے گا اور ہمت بڑھے گی۔ اس طور سے ان شاہ اللہ امید ہے کہ
تقویٰ وائی حاصل ہوجائے گا تقویٰ ہے ہی فائدہ ہے کہ جوشخص تقویٰ کرتا ہے اس کو پریشانیاں
میس ہوتی ۔ ہرکام میں اس کو ہولت ہوتی ہے گرشرط سے ہے کہ اس نیت سے تقوی نہ کرے ، پھر
بعدر مضان شوال میں نفس سے بیسلے کرے کہ اس نیس ہرماہ میں ایک ہفتہ کے لئے تقوی اختیار
کرلے ۔ ای طرح رفتہ رفتہ دن ہو حاتا جائے ۔ حتیٰ کہ ایک دن وہ ہوگا کہ شخص متی کامل بن
جائے گا اور یہ علاج میں نے بزرگوں کے ملفوظات سے مجھا ہے۔

بعض بزرگول نے حال میں لکھا ہے کہ اگران کو میں میل چلنا ہوتا تھا تو لفس ہے ہے کہ دومیل سے کے کہ اسے نظمی دومیل میں مشغول ہوجا۔ پھر تجھ کو اختیار ہے جب دومیل ختم ہوگئے دومیل کے لئے پھر سلم کر لی۔ اس طرح تمام منزل ختم کر دی اور اگر ابتداء بی سے نفس کو بیمعلوم ہو کہ مجھ کوتمام راستہ سے شغل ہوگا تو ہرگز اس پر راضی نہ ہوگا لیکن صاحبو! تقوی کا کا بی اختیار نہ کرنا کہ کر جب بیشاب کرتا ہے تو ٹا مگ الگ کر لیتا ہے گر کھانے میں نجاست بھی سامنے آجائے تو وہ بھی کھا جا تا ہو۔ پس ٹا مگ کو تو بچایا اور منہ کو آلودہ کر لیا۔ اس طرح بعض لوگ وظیفوں کو تقوی سجھتے ہیں اور حرام سے نہیں نیجیتے ہیں۔

تقو کی کی صورت

تقوی ہرشے کا ہے۔ آنکھ کا تقوی ہیہ ہے کہ بری نگاہ ہے کی مورت یا مردکونہ دیکھے۔ زبان کا تقوی ہیں ہے کہ کسی کی خطام کا تقوی ہیں ہے کہ کسی کی خطام کا تقوی ہیں ہے کہ کسی کی خطام نہ کہ کسی کی خطام نہ کہ ہوت ہے کہ بری جگہ چال کرنہ جائے۔ کان کا تقوی نہ ہے کہ بری جگہ چال کرنہ جائے۔ کان کا تقوی میں ہے کہ کسی کی غیبت نہ ہے۔ راگ باج ہے ہی وضع میں بھی تقوی ہے کہ وضع خلاف شرع نہ رکھے۔ پیٹ کا تقوی ہے کہ وضع میں بھی تقوی ہے کہ وضع خلاف شرع نہ رکھے۔ پیٹ کا تقوی ہے کہ وضع میں بھی تقوی ہے کہ وضع خلاف شرع نہ دیکھے۔ پیٹ کا تقوی ہے کہ حرام مال نہ کھائے۔

شاید بہاں بیا شکال پیدا ہوگا کہ صاحب سب چیز دں کا تقویٰ ہے کیکن حرام آمدنی ہے کیے بھیں۔اس لئے کہ ہمارا توسب مال حرام ہے۔غلہ ہے دہ حرام آمدنی کا ہے لباس ہے دہ نا جائز۔ اب اس کو کیے چھوڑیں۔ بیخت مشکل ہے۔

جھے ایک حکایت یادآئی۔ کدایک مرتبہ چوہوں جس کمیٹی ہوئی۔ سب چوہے ہی ہوئے اس کا کھا تظام ہونا ہیں گفتگو ہوئی کہ بلی نے ہمارے بنی نوع کو بہت سمایا ہے ہمیشہ کھا جاتی ہا تھ پکڑلوں گا۔ کسی نے کہا جس کی رائے اس پر قرار پائی کہ اس کو پکڑیں۔ کسی نے کہا جس ہاتھ پکڑلوں گا۔ کسی نے کہا تا مگ پکڑلوں گا۔ کسی بڑا ہوں گا۔ کسی ہونا ہونا اور بولٹا شرقا آخر جس اس نا مگ پکڑلوں گا۔ علیٰ ہذا ایک بڑاچو ہا خرائٹ تھا چپکا سب کی یا تیں من رہا تھا اور بولٹا شرقا آخر جس اس نے کہا کہ صاحبزاہ وائی سب پھھے ہے گئیں جب وہ میاؤں کر ہے گواس کو کون پکڑے گا کہا کرد گے۔
نے کہا کہ صاحبزاہ وائی سب پھھے ہے گئیں جب وہ میاؤں کر سے گی تواس کو کون پکڑے ہوا ہیں جس کی بجہ کی ظاہر ہے کہ ذکن رہ بیتو کل تخواہ اور اس میں گزر کنے کا شکال ہے جس کا پچھے جواب بی نہیں۔ جس کی بجب کسی طاہر ہے کہ ذکن رہ بیتو کل تخواہ اور اس میں گزر کنے کا ایک اور ہا کہ جاتب ہوں گئی جرائٹ تو نہ ہوتی تھی میں۔ دین سے بہت دور جا گر سے ہیں۔ اس لئے مگر جس و بھتا ہوں کہ مسمان بہت تیاہ حالت جس جیں۔ دین سے بہت دور جا گر سے ہیں۔ اس لئے مگر جس و بھتا ہوں کہ مسمان بہت تیاہ حالت جس جیں۔ دین سے بہت دور جا گر سے ہیں۔ اس لئے ایک سہوتیں مظر ورت ظاہر کرتا ہوں کہ فقہا ، دیم ہم اللہ نے اللہ تعالی ان کو جزائے خیر دے ہمارے لئے ایس ہوتیں نظر ورت ظاہر کرتا ہوں کہ فقہا ، دیم ہم اللہ نے اللہ تعالی ان کو جزائے خیر دے ہمارے لئے ایس ہوتیں نظر ورت ظاہر کرتا ہوں کہ فقہا ، دیم ہم اللہ نے ہوئے جس کے کوئی جتالے حرام ہوتو بردا ہی ہر بخت ہے۔

وہ یہ ہے کہ فقہاء نے لکھا ہے کہ اگر کوئی شے قرض کے رو بیدے خریدی ج نے اور وہ قرض حرام سے اداکر دیا جائے تو اس شے میں خبث کا اثر نہیں آتا۔ گوجرام آمدنی کمانے کا گناہ ہوگا۔ تو آپ یہ سے اداکر دیا جائے تو اس شے میں خبث کا اثر نہیں آتا۔ گوجرام آمدنی کمانے کا گناہ ہوگا۔ تو آپ یہ سے کے کہ رمضان مجرکے لئے تمام اشیا کھانے چنے کی نقد نہ خرید ہے۔ بلکہ کسی مہاجن سے یا کسی دوسرے مسلمان سے بس کی آمدنی حلال ہو پچاس رو بیے قرض لے کرتمام جنس خرید لیجئے۔ اور پھروہ وہ سے مسلمان سے بس کی آمدنی حلال ہو پچاس رو بیے قرض لے کرتمام جنس خرید لیجئے۔ اور پھروہ

قرض جہاں ہے چاہ اداکر دیجے۔ اس طور ہے آپ ترام کے اثر ہے دمضان مجرکے لئے نی سکتے وہ سب سے زیادہ تخت سوال تھا اس کا علاج ہوگیا۔ گوترام روبیہ ہے قرض اداکرنے کا گناہ ہوگا۔ گرترام کھانے ہے تو بچے اور جو گناہ بالکل مہمل اور تفری کے طور پر کئے جاتے ہیں ان کے چھوڑ نے ہیں تو آپ کوکوئی عذر ہوئی نہیں سکتا۔ اس طور ہے آپ دمضان میں متی بن سکتے ہیں اور پھر اس تقویٰ کا اثر آپ خودد یکھیں گے میرے بیان کرنے کی ضرور تنہیں بیتو رمضان کے لئے ہوا۔ میں اس تقویٰ کا اثر آپ خودد یکھیں گے میرے بیان کرنے کی ضرور تنہیں بیتو رمضان کے لئے ہوا۔ میں اس تھی دون کے لئے اس مسلم سی کے بیتے کہ ہر ماہ میں سے تین دن کے لئے اس ملم سے تھوئی افتیار کر لے تو بقاعدہ من جاء بالحسنة فله عشر امثالها. یعنی جو خص نیک طرح تقویٰ افتیار کر لے تو بقاعدہ من جاء بالحسنة فله عشر امثالها. یعنی جو خص نیک الائے اس کے لئے اس کی دن مثل ہیں۔

مجھے اللہ ہے امید ہے کہ وہ تنین بجائے تمیں کے برکت میں ہوکر بقیدا یام میں بھی اللہ تعالیٰ آپ کوتقویٰ کی دولت ہے مالا مال کردیں گے۔

ایک کام کی بات اور یاد آئی اوروہ ایک چھوٹی ہے بچی ہے جھے حاصل ہوئی ہے۔ بعض مرجہ حقائق اور تھم مجانین اور بچوں ہے بھی ال جاتی ہے وہ بیہ کدایک پچی نے بیکہا ہے کہ نس جس لذت ولطف کا تقاضا کر ہے اس کے جواب میں اس کوروکومت بلکہ ترک کی مہلت وواور کہو کہ جنت میں چل کراس لطف ولذت کو حاصل کریں گے۔ حقیقت میں بید جمیب بات ہے بات یہ کہ کشس کو گھوٹن اورروکنا زیادہ تا گوار ہوتا ہے۔ اور آزادی اور اس کی خواہش کو پورا کرنا یا وعدہ کر لین آسان ہے۔ جنانچواس تربیر کا میں نے اول خود تجربہ کیا بہت ہی نافع ثابت ہوئی۔ پھر میں نے اور اور اس کو خابی تاب ہوئی۔ پھر میں نے اور اور اس کو خابی ہوئی۔ پھر میں نے اور اور اس کو خابی ہوئی۔ پھر میں نے اور اور اس کو بیا ہے۔ بیا ہم کیا۔

غرض یہ ہے کہ تد ہیر سیجے۔ اور اپنی اصلاح کی فکر سیجے۔ بے فکری بہت بری شے ہاں سے گنا و برد سے بیطے جاتے ہیں اور گنا ہ کے برد سے سے دل بے س بوجا تا ہے پھرا ہتھے برے کی بھی تمیز بہیں رہتی ۔ اور اب تو انقلا بات عالم سے بھی تمیز بہیں رہتی ۔ اور اب تو انقلا بات عالم سے بھی حمیہ برتی ہور ہی ہے اگر ان تغیرات سے بھی اصلاح نہ بوتو سخت افسوں ہے۔ حمیہ برات تعالی سے دعا سیجے کہ اللہ تعالی مل کی تو نیتی عطا فرمائے آئین یارب العالمین!

الصيام

مغفرت ذنوب کے متعلق میہ وعظ ماہ رمضان المہارک اسمال ھے کو جامع مسجد تھا نہ بھون میں قریباً ۲۰۰ سامعین کی موجود گی میں بیٹھ کر فر مایا جوسا گھنٹہ ۵ منٹ میں ختم کیا محمد عبدالقدنے قلمبند کیا۔

خطبهٔ ما ثوره

بست برالله الرحين الرَحيم

فاعل بالاختيار

رہ ایک حدیث ہے جو مشتمل ہے دوجملوں پر۔ ایک جملہ میں صیام رمضان کی فضیلت اوردوسرے میں قیام رمضان کی فضیلت اوردوسرے میں قیام رمضان یعنی رمضان میں شب بریداری کی فضیلت بریان فر مائی ہے۔خلاصہ بیہ کہ رمضان کی دوعب وتوں کی فضیلت حضور صلی القد علیہ وسلم نے بریان فر مائی ہے اول صیام کی دوسرے قیام کی۔ میں اس وقت ان دونوں عبادتوں کے فضائل بیان کرنا ضروری نہیں سمجھتا لیکن نہ

___الصحيح للبحاري¹ (۳۳٬۳٬۱۲۱) الصحيح لمسلم ، صلوة المسافرين ۱۵۵، سس أبي داؤد التطوع ب ۲۹ ، سس الساتي ۳ ۴۵٬۰۵۲، سس اس ماجة ۱۲۲۱ ، مشكواة المصابيح ۴۹۵۸

اس وجہ سے کدفی نفسہ بھی ضرور کی نہیں۔اگر ایسا ہوتا تو حضور صلی القد علیہ وسلم کیوں بیان قرماتے اور فضیلت کا انکار کیسے ہوسکتا ہے۔قطع نظر رمضان کی خصوصیت کے خودان دونوں عبادتوں میں بھی فضیلت ہے اور رمضان کی وجہ ہے اور زیادہ فضیلت ان میں بڑھ گئی ہے لیکن خودروزہ اس میں مشروع ہوتا بوجہ اس ماہ کی برکت ہے۔

ید مسئلہ تعصب اسلامی کا شعبہ نہیں۔ ہرسائنس پرست اور فطرت پرست کو بھی آخر کاریبی کہنا پڑے گا کہاس کا کوئی جواب نہیں۔

مثلاً انہوں نے زلزلہ کے معلوم کرنے کا ایک آلہ بنایا ہے۔ وہ یہ ہے کہ جب زلزلہ قریب
ہوتا ہے تو مقناطیس ہے تو ق جذب کی باطل ہوجاتی ہے۔ تو وہ آلہ اس شم ہے ہوگا کہ کہ مقناطیس
ہوتا ہے تو ہا چہا دیاجا تا ہے اور نیچے کوئی بجنے والا ہرتن رکھ دیاجا تا ہے جب وہ لوہا اس پر گرتا ہے تو وہ
بختا ہے گھر والوں کو معلوم ہوجا تا ہے کہ زلزلہ آنے والا ہے گھر چھوڑ جھوڑ کر چلے جاتے جی تا کہ گھر
گرے تو دب کرندم یں اور گھر چھوڑ کر چلے جانے میں کچھ حزج نہیں مسئلہ شرعیہ بھی ہے کہ جب
زلزلہ آئے تو فرارمستحب ہاں طاعون سے فرارممنوع ہے وہاں قرار ارضروری ہے۔
وجہ اس فرق کی ہے کہ طاعون سے تو مرجانا غالب نہیں ہے کوں کہ وہ لگائیس چنا نچہ

جب طاعون ہوتا ہے اگر اموات اوراحیاء کا شار کیا جائے تو عددا حیاء کا زیادہ ہوگا۔ اگر کسی جگہ دس ہزار آ دمی ہوں کے تو جیمہ ہزار اموات کی تعداد نہ ہوگی۔اگروہ لگتا ہوتا تو واقعی اس کاعکس ہوتا۔

رہی یہ بات کہ حکما کہتے ہیں کہ ایک کا طاعون دوسرے کا لگ جاتا ہے یہ بالکل غلط ہے بات یہ ہے کہ شریعت کی نظروہاں تک ہے کہ حکماء وہاں تک نہیں پہنچ سکے ۔ حکماء اور اطباء کی تو صرف اسباب ہی پر نظر ہے اور شریعت کواس سے آ سے کا بھی لحاظ ہے۔ پس طاعون کا لگنا ہے اصل محض ہے جس کو ہوتا ہے موڑ حقیق کی تا ثیر سے ہوتا ہے۔

اگرکوئی کے کہ ہم تو مشاہدہ کرتے ہیں کہ ایک کوطاعون ہوتا ہے پھر دوسرے کو بھی ہوجاتا ہے اس کا جواب وہ ہے جوحضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک اعرابی کو دیا تھا۔ ایک اعرابی نے سوال کیا تھارسول اللہ ایک اونٹ خارشی اگراونٹوں ہیں آ جاتا ہے تو سب کووہ خارش لگا دیتا ہے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: فعمن اعدی الاول ایسی بہتو ہتلاؤ کہ اول کوکس نے لگائی۔

یعنی آگرتمہارے نزد کے دوسرے کی خارش کا بھی سبب ہے، تواول کے اندر توبیسب مفقود ہے۔ اس کوکس نے لگائی جواول کے لئے سبب قرار دیتے ہوٹانی کے لئے بھی اس کوقر ارکیوں نددو۔ حقیقت یہ ہے کہ جس مخص نے صرف اسباب ہی کود یکھا ہے اس کی نظر اسباب ہی پر ہے ادراسباب ہی کووہ موڑ سجھتا ہے مولا نافر ماتے ہیں۔

عقل دراسباب می دار و نظر ہے۔ عشق ہے گوید مسبب رانگر
عقل دسباب کی طرف دیکھتی ہے عشق کہتا ہے کہ مسبب کود کجھنا چاہیے۔
اسباب پرست کی مثال ایس ہے جیسے کوئی دیباتی تاواقف دیکھے کدریل آرہی ہے اورا یک مختص سرخ جینڈی لیس سیتا ٹیرہ کہ
مختص سرخ جینڈی لے کر کھڑ اہو گیا اور وہ تھی ہد یہاتی سمجھا کہ سرخ جینڈی بھی سیتا ٹیرہ کہ
وہ ریل کو کھڑ اکر دیتی ہے۔ حالا نکہ کھڑ اکر نے والا دوسرا ہے سرخ جینڈی توایک علامت ہے۔
عشق من بیداؤ معثوقم نہاں جہ یار بیروں فتند اودر جہاں
فتنہ غلبہ حال اور جوش میں کہد دیا ہے مراد تصرف ہے یعنی یار تو جہان سے باہر ہے مگراس
کا تصرف جہان کے اندر ہے اور دہ خود نظر نہیں آتا۔

اگر ڈرائور شہواورر ال تقبر جائے۔ تو ہم بے شک جانیں کدسر خ جعنڈی مور ہے ہزار اے الصحیح للبخاری ۱۰۱، سن ابی داؤد، کتاب الطب باب: ۲۳، سن ابن ماجة: ۳۵۳۰

آپ مرخ جمنڈی دکھلا کیں وہ ہرگز نے تھہ ہے گی اورا کی طرح ہز جھنڈی سے چلے گئیں۔ اس طرح اگرا کے نے اہرائیم علیہ السلام کوئیں جلایا تو تعجب کی بات نیس بیتوا مراصلی ہے۔ بال جلاتا اس کا بیش کے شک تعجب اور جرت کی بات ہے۔ اس لئے کہ وہ تو ب اختیار کھن ہے اس کا تا ٹیر کر تا باعث جیرت ہوگی اورتا ٹیر نے کر تا اور نہ جلاتا تو امراصلی ہے مگر عقلوں پر پر دے پڑے ہوئے ہیں کہ اس کا تک سرت ہوگی اورتا ٹیر نے کر تا اور نہ جلاتا تو امراصلی ہے مگر عقلوں پر پر دے پڑے ہوئے ہیں کہ اس کا تک سرت ہوگی اورتا ٹیر نے کہ وہ ایک سے تھور کھا ہے اورا کی بنا پر میجر زات کا انکار کرتے ہیں حالا نکہ جیرت جلائے ہے ہوتا جا ہے تھا کہ وہ ایک امر جدید ہے اور تمام اسباب خواہ وہ بھی ہوں یا ظنی یا وہ می سب کی بھی کیفیت ہے۔ پس حقیقت امر تو اس کو مقتضی ہے کہ اسباب کا کسی درجہ ہیں بھی اعتبار نہ ہوتا۔ لیکن چونکہ بندہ ضعیف ہے اس کی نظر کوتا ہے ہا ہی لئے حق تحال نے دھن اپنی رحمت سے بیاقا عدہ مقرر فر ما دیا ہے کہ جہاں عادہ تا سب نظر کوتا ہے ہا ہی گئے تیں جو لکہ حتم ہو وہ ہاں اجازت نہیں دی۔

پس چوکد زلزلہ کا سبب ہلاک ہوناغالب ہے اس لئے اس کا توانتہار کیا گیا اورطاعون کا سبب ہلاک ہوناغالب ہیں ہے بلکہ محمل باحثال مغلوب ہے اس لئے اس کا سبب اعتبار نہیں کیا گیا۔ پس اگر اس مثال میں بیسوال کیا جائے کہ بیلو ہا کیوں گرا تو اس کا جواب بیدو گے کہ مقناظیس نے میصور ویا تو یہ جواب دو گے کہ مقناظیس نے کیوں چھوڑ ویا تو یہ جواب دو گے کہ زلزلہ کی خاصیت کیوں ہے تو ہی کہو گے کہ خواص کا ہم کو علم نہیں ۔ فیدا تعالی نے اس کواہا ہی پیدا کیا ہے پس اگر بیباں اگر سب سوالات قطع خواص کا ہم کو علم نہیں ۔ فدا تعالی نے اس کواہا ہی پیدا کیا ہے پس اگر بیباں اگر سب سوالات قطع ہو جا کیں گیا وجہ ہے پس معلوم ہوا کہ فدا تعالی کے افعال سے سوال نہ کیا جائے ہیں۔

لا یسنل عما یفعل و هم یسنلون لینی دو بین پوچهاجاتا جو پکھ کرتا ہے درآ دمی پوجھے جا کیں گے۔
پھر کیا وجہ ہے کہ اگر ہم ہی جواب دیں کہ خدا تعالی نے اس کوایہ ہی پیدا کیا ہے تو مجیب کے بخر پرخمول کیا جاتا ہے۔ حالا نکہ جیسا بیاعتراض ہم پر ہے ایسا ہی اہل س کنس پر بھی ہے۔ فرق ای قدر ہے کہ ہم ہر شے کا فاعل خدا کو مانے ہیں اور وہ طبیعت کو فاعل کہتے ہیں اور جیرت ہے کہ طبیعت کو فاعل بھتے ہیں اور جیرت ہے کہ طبیعت کو فاعل بھتے ہیں اور اس کو بے شعور بھی کہتے ہیں۔

الم شرع اوران کی الیی مثال ہے جیسے دوخض ہوں۔ انہوں نے ایک بہت عمدہ گھڑی ویکھی کداس کے پرزے نہایت عمدہ اور نہایت خوبصورت اور وقت بہت صحیح دیتی ہے۔اب ان دونوں میں اختلاف ہوا کہ یہ کیونکر بنی ہے۔ایک کہنا ہے کہاں کی صورت بننے کی میرہوئی کہ کہیں ے اس کا کیس بہتا ہوا چلا آیا اورا یک جگہ ہے بال کمانی اڑ کر آگئی۔ای طرح سب پرزے اتفا قا آ کر جمع ہوگئے۔اوراس تر تیب فاص کے ساتھ جمع ہوگئے ۔بس گھڑی بن گئی۔ووسرا کہتا ہے کہ نہیں اس طرح نہیں بن بلکہ اس کا کوئی بنانے والا ہے جو برداعاقل ، ہوشیار ، ذی اختیار ، ذی قدرت ذی علم ہے۔ باوجود اس کے کہاس نے بنانے والے کودیکھانبیں لیکن اس کے باوجود کو یقییناً جانتا ہے اب عقلاء خود ہی فیصلہ کریں بلکہ یہی اہل سائنس ہی ہتلا کیس کہ ان میں کون حق پر ہے۔ طاہر ہے کہ ہر مخص اول کوالواور گدھا بتائے گا اور دوسرے کوعاقل کیے گا پس ایہا ہی اہل شریعت اوراہل سائنس میں اختلاف ہے کہ اہل سائنس جن کی تظر اسباب پر ہےان کی مثال تواة ل صخص کی می ہے اور اہل شرع دوسر سے مخص کی طرح۔

حكماء فتقي

تھماء حقیقی واقع میں صرف اہل نثرع ہیں۔افلاطون کوئسی نے خواب میں دیکھاتھا۔ یو چھا کہ جالینوس اور ارسطور اور فلال فلال فلسفی منص قال لا یعنی اس نے کہانہیں۔ اس کے بعد اس نے پینی شہاب الدين سبرورديُّ اورشِّخ اكبَرُوغيره صوفيه حققين كانام ليا-قال هم الفلاسفة حقالي يعني افلاطون نه كها كه بيلوگ ہیں کے ملتفی اور وجہ رہے کے ملتفی کہتے ہیں حقیت شناس کواور حقیقت شناس واقع میں بہی لوگ تھے۔ بس حقیقت برشے کی بیہ ہے کہ جو پچھے واقع ہوتا ہے اس کا سوال مت کرو۔ سوال کرناممنوع ہے۔ جو بڑے عقل پرست ہیں وہ بھی آخر میں تھک کر اور پھر پھر اکریبی کہیں گے۔فرق اس قدر ہے کہ انہوں نے دھکے کھا کراوروفت ضائع کر کے بیہ بات کہی اورا بل شرع نے اول ہی کہددی تھی ۔ آنچہ دانا کند کند نادال لیک بعداز فر ایخ بسیار یعنی جو پچھ دانا کرتاہے وہی تا دان کرتاہے لیکن بہت ی خرابی اور دیسے کھانے کے بعد۔ حضرات صوفیا ءرحمہم اللّداس نکتہ کو مجھے اور انہوں نے فیصلہ کر دیا کہ کسی شے کی حقیقت کی جستجو کر نا دفت ضائع کرنا ہے جوضر وری ہے بیٹی اطاعت ،اس میں مشغول ہوتا جا ہیے خو د بخو د اسرار اورحقا مُق حسب استعدا دمعلوم ہو جا ئیں گے۔ چنانچہ جن کومعلوم بیں وہ اہل کے سامنے بیان كرتے بيں اور ناالل كي تبعث بير كہتے ہيں _ بامدى مكوئيداسرارعشق ومستي بگذارتا بمير ددررنج وخود پرتي

لیعنی ظاہر پرستوں کے سامنے عشق دمتی کے اسرار مت بیان کروان کورنج وخود پرتی میں مرنے دو۔ اور جواسرار سے سوال بھی کرتا ہے اس کو یہ کہتے ہیں _

و کیس نکشو ونکشاید بحکمت این معمارا

حدیث مطرب و ہے گودراز دہر کمتر جو

یعنی محبت ومعرفت واطاعت میں مشغول ہو۔ راز دہر لیعنی اسرار دخقائق کی فکر میں مت پڑو کیونکہ سے اسرار الٰہی کا معمانہ کسی سے مل ہوانہ مل ہو سکے گا۔

عبث ميں مشغوليت

یہاں سے غلطی طاہر ہوتی ہے ان لوگوں کی جو پو تھا کرتے ہیں کہ مریخ میں آبادی ہے۔ یانہیں۔راز دہرکی تلاش میں رہناا پاوقت ہر باوکرنا ہے۔ جناب رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم فریاتے ہیں من حسن اصلام المعو ، تو سحه مالا یعنیہ .

لعنی آ دمی کے اسلام کی خوبی سے کہ غیر نافع شے کوچھوڑ دے

حضور توتمام مرئ وغيره طے كئے ہوئے تنجاور او تيت علم الاولين و الا خوين جمري الا علم عطاكيا كيا ہے۔ جمز كواولين وآخرين سب كاعلم عطاكيا كيا ہے۔

آپ سلی القد علیہ وسلم کی شان تھی۔ آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے بیر فیصلہ ناطق قرماد ما ہے۔ کہ عبث کے اندر مشغول ہونا خولی کی بات نہیں ہے اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا مرتبہ تو بہت بڑا ہے حضرات اولیا ،اللہ بیں بہت ایسے ہیں کہ جو تھ کئ شناسی کے اندر حکماء سے بہت دور آ کے بڑھ گئے۔

بعض اہل کشف نے جنتیوں اور دوز خیوں کا عدد لکھ دیا ہے۔ مریخ تو کیا چیز ہے مریخ سے بردی بری چیزوں کی سیر کرلی ہے اور ان کوئل تعالیٰ نے ایسی توت کشفید عط فر مائی تھی کہ وہ جس جگہ کی جا ہے تھے تھیل کر لیتے تھے جب کہ افرادامت ہیں ایسے حصرات محققین موجود ہیں تو اگر خود حضور صلی اللہ علیہ

ل مجمع الروائد للهيشمي ٨ ١٨، مسد أحمد ١ ٢٠، كبر العمال ٣ ٨٢٩١ ٨٢٩٠ كبر العمال ٣ ٨٢٩١ ٨٢٩١ ٨٢٩١

وسلم حقائق بیان فر ماتے تو حکم ءاورصوفیاسب کے علوم ان کے سامنے گرو نتے مگرسجان اللہ کیا شفقت ہے کہ کہ چھا کہ اس میں ہے کہ کہ چھ بھی بیان نہیں فر مایا جگہ ان چیزوں کے سوال ہی سے روک دیا۔ اس لئے کہ دیکھا کہ اس میں کوئی نفع نہیں بلکہ احتمال ضرر کا ہے کہ اس میں مشغول ہوکر جوضر وری امر ہے وہ فوت ہوجائے گا۔

جیے باپ شفیق کہوہ ہادشاہ بھی ہو،اس کے ہال سب پچھ موجود ہے لیکن اگر بچہ چاہے کہ محتب کے دوران دوسرے شہر میں جا کر سیر کر آؤں ، تواجازت نہ ہوگی۔ اس لئے کہ اگر وہ سیروسیاحت میں مہاتو سلطنت کی قابلیت پیدائے ہوگی۔

حضور سلی الله علیه وسلم نے دیکھا کہ سیرگاہ تو بہت بڑی ہے اگراس کو بیان کیا جائے گاتو کوئی مدنہیں۔ اس لئے کہ سیرگاہ کے حد بنادی ہے اورامرونہی مقرر فرمادی اس لئے کہ سیرگاہ کے دکھلا نے بین احتال تھا کہ آپ ای بین رہ جائے۔ اور سلطنت کی لیافت آپ کے اندر بیدا نہ ہوتی اور خلیفۃ الله کہلا نے کے آپ سے تن نہ ہوتے۔ ای واسلے ارشاد فرمایا ہے:

لاتتكلموا في القدر . كرتقديرك بار على كلام مت كرو-

آج ایسے لوگ جوذ کیل اور جاہل ہیں اور جن کو پہتے بھی سلیقہ ہیں ہے وہ اعتراض کرتے ہیں کہ یہ کیا ہات ہے ۔ سویا ور کھوجس ہات کے اندر حضور صلی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی ہوئے وروخوض کرنے کوئن فرماویا ہے واقعی اس ہیں بہت خطرے ہیں اندر حضور میں بہت خطرے ہیں کہا نیوں ہیں بہت خطرے میں کہا نیوں ہیں بہت خطرے میں کہا نیوں ہیں بہت خطرے حضور کہا نیوں ہیں بہت اس میں کہا کرتے ہیں کہ بین کھونٹ شکار کوجائیو چوتھی کھونٹ شہر ہمائیو۔ اس طرح حضور نے جس کھونٹ میں شکار کرنے ہیں کہ بین فرماویا ہے واللہ وہال صدیا خطرات ہیں ۔

در را عشق وسوسہ اہر من بسی ست ہیں۔ ہشد ارد کوش راب پیام سروش دار لینی عشق کے راستہ میں شیطان کے وساوس بہت ہیں۔ ہوش رکھواور وتی کی طرف کال لگائے رہو۔

انتاع كي ضرورت

بدراہ وہ ہے کہ بے رہبر کے طے بیس ہوتا ہے اور جو بے رہبر کے طے کرنا جا ہے اس کے متعلق مولا نافر ماتے ہیں ۔

یار بایدراہ را تنہامرد ہے۔ بقلاؤز اندریں صحرامرد راہ حق قطع کرنے کے لئے یار پینی مرشد ضروری ہے۔ بلار ہبر کے اس صحرا میں قدم مت رکھو۔ حضرت فریدالدین عطار کہتے ہیں۔ برفیتے ہرکہ شدوررا وعشق ہرکہ شدوررا وعشق ہر کا میر بگذشت ونشد آگا وعشق بغیرر فیق بغیرر فیق بغیرر فیق بغیرر فیق بغیرر فیق بغیرر فیق بغیر مرشد کے جو محفق را وعشق پر چلااس نے اپنی عمر گنوائی اور عشق سے خبر دار نہیں ہوا۔
جن کی آئی میں وہ دیکھ رہے ہیں کہ را ہیں کیا گیا آفتیں ہیں کیکن جن کی آئی میں نہیں ہیں ان کو بیاتو جا ہے کہ آگھوں والوں کی افتدا کریں۔ آگر آگھ والا بوں کے کہ آگے نالی ہے تو اند مے ورنہ کرے ورنہ کرے گا۔

جیسے کہ ایک حافظ تی تابینا دعوت ہے آرہے تھے۔ ایک لڑکا ان کا ہاتھ پکڑے ہوئے گئے جارہا تھا۔ خندق آئی ۔ لڑکے نے کہا کہ حافظ تی کھائی ۔ حافظ تی بولے کہ ہاں بیٹا خوب کھائی۔ اس نے کئی دفعہ کہا انہوں نے بہی جواب دیا۔ آخر سرکے بل جاگرے۔ جب گرے تو کہا کم بخت یوں نہ کہا خندت ۔

جب کے جضور ملی اللہ علیہ وسلم نے ہمارے لئے ایک حدم تعرر فرمادی اس سے آ کے مت ہوجو تو ہم کونہ چاہیے کہ ہم آ کے ایک قدم بھی رکھیں۔ اگر ہم آ کے برحیس کے تو ہم اس شائستہ کھوڑے۔ سے بھی بدتر ہوں کے جورو کئے ہے رک جاتا ہے اور بڑھانے ہے بڑھ جاتا ہے۔ پس جب کہ ہم کومسئلہ قدر میں کلام کرنے ہے منع کیا گیا ہے تو ہم کور کنا چاہے۔

وجہ ممانعت کی بیہ کے اگراس میں گفتگو کی بھی تو اس مسئلہ کا پوری طرح انکشاف تو ہوگائیں اور خواہ مخواہ اور زیادہ شبہات پیدا ہوں گے اور جس قدراس میں کا وش کی جاتی جاسی قدر زیادہ شبہات پیدا ہوں گئے اس میں کلام کرنے سے قطعاً بند کردیا گیا جیسے کو کیمن اورافیون میں اس کے اس میں کلام کرنے سے قطعاً بند کردیا گیا جیسے کو کیمن اورافیون ہے کہ جس قدراول کوئی محف اس کواپنے لئے جو یز کرتا ہے یہاں تک مشاہدہ ہوااس مقدار پرنہیں رہتی بلکہ بڑھ جاتی ہے۔ اس لئے اطبااور ڈاکٹر اس کواول ہی سے بند کردیتے ہیں۔

مشكله تقذير

ائی طرح مسئلہ قدر ہے کہ اس کے متعلق ایک بات کا جواب و یا جائے تو جا رشیبے اور ہوں کے ۔ اس طرح مسئلہ چلا جائے گا کہیں ختم نہ ہوگا اور پریشانی بڑھتی چلی جائے گئے ۔ بدریا در منافع بے شاراست جڑ اگرخوا ہی سلامت برکناراست وریا میں منافع بے شار ہیں سلامتی کنارہ ہی پر ہے۔ دریا میں منافع بے شار ہیں کیکن سلامتی کنارہ ہی پر ہے۔

آ ب تو کیا چیز ہیں بڑے بڑے عقلائے یہاں تھکے چھوٹ مجئے ہیں۔ یس حضور صلی اللہ علیہ وسلم تواس دریا ہے خونخو ارکود کھے رہے تھے اور تبحور ہے تھے کہ ایسا دریا ہے کہ اس میں جاتے ہی غرق ہوجا کیں گے۔ نہ اس میں تیر کتے ہیں اور نہ کشتی میں جاسکتے ہیں حالانکہ صحابہ جیسے عالم اورعارف اورحضورصلی التدعلیہ وسلم جیسے بتلانے والے اگر جیا ہے توسمجھا دیتے لیکن حالت کیاتھی كه ايك مرتبه چند محابي مسئله مين گفتگو كرر بے منفے حضور صلى الله عليه وسلم تشريف لے آئے اورئ كرچېره ميارك سرخ بوگياا ورممانعت فريا كي كهاس مسئله ميس كلام نه كريس غرض حضورصلي الله عليدوسهم في جزئيا بهى جبيها كداس حديث بين اوركليا بهى جيسے حديث من حسن اسلام المرة تركه مالايعنية.

آ دمی کے اسلام کی خونی ہیہے کہ غیر ناقع شے کوچھوڑ دے۔

میں شختین علل واسرار و تھم ہے ممانعت فر مادی ہے۔ پس خدا تعالیٰ کوا ختیار کامل ہے کہ جس تخف کو چاہے برگزیدہ فر مالے۔اور جس ز مانہ کو جاہے باہر کت بنادے سی کو بیر مجال نہیں کہاس کی علت اوروجه سے سوال کرے پس لم کا سوال تو نضول بلکہ معنز تھبرا۔ ہاں کیفیت کا سوال ہوسکتا ہے اس لئے کہ اس میں امتداداور شکسل نہیں۔

تصرف حق تعالى

سوکسی وقت یا کسی شب یا کسی ماہ کے بابر کت ہونے کی کیفیت بیہ ہوتی ہے کہ حق تعالیٰ اپنی تجلیات میں ہے کوئی بچلی اس طرف منصرف فر مادیتے ہیں ۔اس ہے اس وفت کے اندر برکت ہوجاتی ہےاوراس سے تعجب نہ کرنا جا ہے اس لئے کہ اللہ تعالیٰ کی شان تواعلی اورار فع ہے جواللہ تعالیٰ کے مقبول بندے ہیں ان کی نظر میں بیاثر ہوتا ہے کہ دم کے دم میں کھے ہے کھ کر دیتے ہیں۔ حضرت عجم الدین کبری رحمته الله عدیه کوالهام ہوا کہ فلاں شہر میں ایک رئیس ہیں۔ان کے ایک صاحبزادے ہیں۔ آپ ان کی تربیت کیجئے۔ بیصاحبزادے حافظ شیرازی تھے بدوارستہ (آزادی) ہے پھراکرتے تھے اکثر جنگلوں میں رہا کرتے تھے اور بی غلط ہے کہ شراب پیا کرتے تنے ہال کسی قدر وارسی می می جس کی وجہ سے باپ ان کو بیوتو ف اور دیوانہ بیجھتے ہتھے۔ چٹانجیہ حضرت جم الدین اس شہر میں تشریف لائے اوراس رئیس کے ہاں پہنچے۔وہ رئیس بہت تعظیم سے ل مجمع الزوائد للهيثمي ١٨٠٨، مسند أحمد ١٠٥١، كبر العمال ١٣٠٠

پیش آئے۔ حضرت نے فرمایا کہ اپنے بیٹوں کو بلاؤ۔ انہوں نے سب کو بلایا گر حافظ صاحب کو سبب ان کی دیوائی کے چھوڑ دیا۔ حضرت نے فرمایا کوئی بیٹا باتی تونہیں رہا۔ ان رئیس صاحب نے کہا کہ حضورا کی رہ گیا ہے وہ چیش کرنے کے قابل نہیں ، دیوانہ سا ہے۔ حضرت نے فرمایا کہ مجھا ای کی ضرورت ہے۔ چنانچان کو بلایا تواس ہیت ہے کہ بچیڑ جس کیڑے سے ہوئے اور بال پریٹان۔ جب حافظ صاحب کی تظر حضرت شیخ پر پڑی تویہ تعمر پڑھا۔

آ ٹائکہ فاک را بنظر کیمیا کنند ہیں آیابود کہ گوشد چیٹے بماکنند

وہ لوگ کہ فاک کوایک نظرے کیمیا کردیتے بین کیااچھا ہو کہ ہماری طرف بھی پجی نظر کریں
حضرت نے فرمایا کہ برخوردار ہونظر کردم (برخوردار تیری طرف بیس نے نظری)

اس کے بعدے تو پھر حافظ صاحب کی حالت ہی وگرگوں ہوگئ پس جب کہ اہل اللہ کی نظر اور توجہ بیس کیوں نہیں بیر فاصہ بلکہ اس بی حاصہ بلکہ اس سے بڑھ کرتھ رف ہوگا وہ تو تا در مطلق ہے۔

مجامده كي ضرورت

جھے اس مقام پر ایک اندیشراور ہوتا ہے اس کئے درمیان میں اس کا جواب دے دینا ضروری ہوا۔ وہ بیہ کے مثاید کوئی مل جائے گا اندیشر میں اس کا جواب کی جائے گا ایک نظر میں کام بنا دے گا ، ہم کو ہاتھ یاؤں بھی ہلاتا نہ پڑیں گے اور اس لئے وہ بے فکر ہوں ایک نظر میں کام بنا دے گا ، ہم کو ہاتھ یاؤں بھی ہلاتا نہ پڑیں گے اور اس لئے وہ بے فکر ہوں اور ایسے فنص کے انتظار میں ہوں۔ چنا نچاس خیال کے بھی بہت لوگ ہیں۔ تو ان کی خدمت میں اور ایسے فنص کے انتظار میں ہوا۔ چنا نچاس خیال کے بھی بہت لوگ ہیں۔ تو ان کی خدمت میں عامل ہے کہ بے شک نظر میں بیاثر تو ضرور ہے لیکن استعداد شرط ہے اور استعداد پیدا ہوئے کے لئے مجام دریا ضت شرف عادی ہے۔

ریاضت مجاہدہ کی مثال وضوکی ہے کہ نہ زاوضوکا تی ہے بلکہ نماز مستقل علیحہ وقعل ہے جو مستقل اہتمام سے اداکر تاہوگی۔ اور نہ نماز کا تحقق بغیر وضو کے ہوتا ہے اس لئے کہ وہ شرط ہے ہاں اگر کسی کو پہلے ہی سے وضوعہ وگا مثلاً حسل کیا ہوتا اللہ بیس غوط لگا یا ہوتو پھر مستقل افعال وضوی ضرورت نہ ہوگ ۔

اک طرح شرا مجاہدہ کافی ہے اور نہ مجاہدہ سے استغتا ہے بہر حال مجاہدہ شرط ہے۔ آگے مقعمود کا ترتیب وہ حق تعالی کے اختیار میں ہے طالب کی تو یہ شمان ہوتا جا ہے ۔

ہارے معزت ایے موقع پریہ پڑھا کرتے تھے ۔

یابم اورایانیابم جبتوئے کی کئم جہلا حاصل آید یانیاید آرزوئے ہے کئم میں حاصل آید یانیاید آرزوئے ہے کئم محبوب کو پاؤں یانہ پاؤں اس کی جبتو میں لگا ہوا ہوں طے یانہ طے اس کی آرز وکرتا ہوں۔
اس شعر میں یا بم یانیا بم (پاؤں یانہ پاؤں) اور حاصل آید یانہ آید (طے یانہ طے) جوتعیم ہے مبالغہ کے لئے ہورنہ وعدہ تو یہ ہے۔ "واللہ ین جاہدوا ، المنے"

یعنی جولوگ ہمارے داستہ میں مجاہدہ کرتے ہیں تو ہم ان کوخرور ہدایت کرتے ہیں۔
مجاہدہ کرنے کا مطلب یہ بیس ہے کہ اپنے گھونے مارا کرے بلکہ مجاہدہ نفس کے خلاف کرنے
کا نام ہے اور مجاہدہ محض سب عادی کے درجہ میں ہے ورنہ کار بغضل است باتی بہانہ (کام نفل سے
بنآ ہے باتی سب بہانہ ہے) ملتا تو ہے تی کے دینے ہے کین ما نگنا اور جھولی کا ہونا بھی ضروری ہے
۔ مالدار تو جب ہی ہوگا جب سرکار گنیاں جھولی میں اپنے ہاتھ سے بحردیں کے لیکن جھولی ہونا بھی
ضروری ہے۔ پس بیاستعداد مثل جھولی ہی ہے۔ حافظ شیرازی کے اندراستعداد پہلے ہے تھی۔
چنانچ طلب کے اندر تمام جنگلوں میں تو بیلے ہے تھے۔ وفعۃ اللہ تعالی نے فضل فرمادیا۔ پس تم بھی
اگرالی استعداد حاصل کرلوتو بے شک ایک نظرہی کا فی ہوگ ۔ پیاس لگالو، پانی بہت ہے۔
اگرالی استعداد حاصل کرلوتو بے شک ایک نظرہی کا فی ہوگ ۔ پیاس لگالو، پانی بہت ہے۔
آ ہے کم جوشنگی آ ور بدست۔ یانی مت ڈھونڈ و، پیاس پیدا کرو۔ پانی بہت ہے۔

توجه كما المميت

آج کل بیرحالت ہے کہ کرنے کے تو پچھ نیں اور خود بے فکر بیٹھے ہیں اور اس کے منتظر ہیں کے کہ کوئی ہم کوولی بناد سے بہر حال اولیاء اللہ کی نظر اور توجہ بعد استعداد کے کام دیں ہے اور یہاں توجہ کے بیمعنی نہیں کہ پیرآئکھیں بند کر کے مرید کوسامنے بٹھا، دیں جیسا کہ متعارف طریقہ توجہ کا ہے بلکہ مطلب یہ ہے کہ الل اللہ کا جی جا ہے کہ فلال فخص کو پچھ حاصل ہوجائے۔

جیے استاد کے دوشا گرد ہوں۔ دونوں کا ایک سبق ہے ایک ہی لیافت کے ہیں اور ایک ہی عمر کے پہلی استاد ایک کودل ہے بتا تا ہے اور چاہتا ہے کہ اس کوآ جائے چٹا نچہ اس کوآ جا تا ہے اور دوسرے کونہیں چاہتا اس کونہونہ موجود ہے مشلا اور دوسرے کونہیں چاہتا اس کونہونہ موجود ہے مشلا ایک درزی کے دوشا گرد ہوں یا ایک لو ہار کے ہوں۔

بس توجہ کے معنی میں جیں کہ خاصان حق کو توجہ ہو کہ اس کو پھھ آجائے یہ بڑی دولت ہے۔ بس توجہ میں ہے کہ شیورخ کا جی چاہتا ہے کہ مرید کے اندر فلاں بات پیدا ہوجائے اور بے توجہ شیخ کے چھیس ہوتا۔ مولانا فرماتے ہیں۔

یار باید راہ راتنہا مرہ اللہ بنا فرائدریں صحرا مرہ راہ حق قطع کرنے کے لئے شیخ کی ضرورت ہے تنہاا پی رائے اور کما بول سے سلوک طے نہ کرناچا ہے۔ بے رہبر کے اس وادی میں قدم نہ رکھنا جا ہے۔

اس مضمون پرشبہ ہوتا ہے کہ بہت بزرگ ایسے بھی تو ہیں کدان کا شیخ کوئی نہیں تو اس شبہ کو مولا نار فع فر ماتے ہیں۔

ہرکہ تنہا نادرایں راہ رابرید ہنہ ہم بعون ہمت مرداں رسید اگر کسی نے شاذ و نادراس راہ سلوک کو تنہا بے محبت پیر قطع کر بھی لیا ہے وہ بھی پیروں ہی کی امداد ہمت و توجہ سے پہنچا ہے۔

یعن اول توابیا کم ہوا ہے کہ بے شخ کے کوئی اس راستہ چلا ہوا ورا گرشاذ و تا دراہیا ہوا ہے تو وہ
ہمی بدون توجہ مردان خدا کے ہیں پہنچا البتہ اس کو خرنہیں ہے کہ کون کون مقبولان حق میری طرف
متوجہ جیں۔ بچہ کو کیا خبر ہے کہ مال نے سوتے ہوئے میری راحت کے لئے کیا کیا گیا۔ کتنی دیر پنکھا
جعلا ہے اور کتنی دیریکس رائی کی ہے تو بدون توجہ کے تو کام کسی کا نہیں چلا۔ پس مجاہدہ اور دیا صن
کرکے کوئی مغرور نہ ہو۔ بہر حال جب بزرگوں کی توجہ جس بیا اثر ہے تو خالق کی توجہ جس تو کس ورت
مقدر ہوگا۔ بزرگوں کی توجہ کے لئے تو استعداد کی بھی ضرورت ہے اور وہاں استعداد کی بھی ضرورت

داد اورا قابلیت شرط نیست جم بلکه شرط قابلیت واداوست ان کی داد دی قابلیت کی شرط ہے۔

ان کی دادود بش کے لئے قابلیت کی شرط نیس ہے بلکہ ان کی داد بی قابلیت کی شرط ہے۔

ان کی عطا سے قابلیت بھی ہوتی ہے اور داد بھی ۔ وہ جھولی اور روپید دونوں ساتھ ساتھ دیتے ہیں۔ کر یموں کے یہاں دیکھا ہوگا کہ سائل کوظرف بھی دیتے ہیں اور اس میں چیز بھی دیتے ہیں۔ سرحال ان کی نظر کی کیا انتہا ہے ہیں اگروہ کی زمانہ کی طرف توجہ فرمادیں تو اس کی برکت میں۔ بہرحال ان کی نظر کی کیا انتہا ہے ہیں اگر وہ کی زمانہ کی طرف توجہ فرمادیں تو اس کی برکت کا کیا ٹھکا نہ ہے۔ حدیث شریف ہیں بھی اس کی طرف اشارہ ہے چنانچہ وارد ہے۔

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان دبكم نفحات في الدهر فتعرضو الهالم يعنى جناب رسول النصلى ابتدعليه وسلم في ارشاوفر مايا بي كه بيتك تهماد ب رب كے لئے زماند كا ندرجمو كے بيں فيوش كے پس تم اس كى جبتو كرو۔ پس انسان كوچا ہے كما يسے زمانے كو بہت غنيمت سمجھ۔

غفلت انساني

چنانچہ جن کی آنکھیں کھلی ہوئی ہیں ، وہ رمضان المبارک کے برکات کو کھلی آنکھوں محسوں کرتے ہیں اور جوغافل ہیں ان کو میر مہیندا ور دوسرے مبینے یکسال ہیں۔ رمضان آیا اپنی برکات اور انوار کا مینہ برسایا اور چلا گیا۔ان کو کچھ بھی خبر نہیں۔

ان لوگوں کی ایسی مثال ہے کہ جیسے کوئی شخص مکان کے اندر بیٹھا ہے اور باہر بیرحالت ہو کہ ایرا آیا اور شنڈی ہوا کیں چلیں اور بارش ہوئی اور لوگ اس سے خوش ہوئے اور اہر برس کر چلا گیا اور آ سان صاف ہو گیا اور بیر حضرت مکان کے اندر ہی رہے۔ان کو پچھ بھی خبر نہیں کہ یا ہر کیا سے اور آ سان صاف ہو گیا اور بیر حضرت مکان کے اندر ہی رہے۔ان کو پچھ بھی خبر نہیں کہ یا ہر کیا ہے کیا ہو گیا۔ اور رمضان میں تو یہ برکات اور انوار ہوتے ہی جس اور ذمانوں میں بھی بعض وقت ایسا ہوتا ہے کہ اگر اس وقت کوئی طالب ہوتو وہ ان برکات سے کہیں سے کہیں جا پہنچتا ہے۔ پس کسی وقت غفلت نہ کرے۔ای مضمون کو کسی شاعر نے کہیں ہے کہیں جا پہنچتا ہے۔ پس کسی وقت غفلت نہ کرے۔ای مضمون کو کسی شاعر نے کہیں ہے کہیں جا پہنچتا ہے۔ پس کسی وقت غفلت نہ کرے۔ای مضمون کو کسی شاعر نے کہیں ہے

یک چیٹم زون غافل ازاں شاہ نباش شاید کہ نگاہے کند آگاہ نباشی لیعنی حق حق ہوتا ہے۔ کند آگاہ نباشی لیعنی حق تعالیٰ سے ایک بل بجرغافل نہ ہوتا جا ہے مکن ہے کہ کسی وفت وہ تم پر توجہ فرمائیں اور تم ہے خبر ہو۔ سوغفلت اور بے خبری میں وہ الطاف وعنایات تمہارے حال پر نہ ہوں گی۔

اے ان کا تو اتنا ہزائق تھا کہ اگر کچھ بھی عطانہ کرتے تو اوھ بی تکتے رہے۔ دیکھوا گرکوئی محبوب یوں کے کہ ہم کو تکتے رہوتو جوعاشق ہوگا وہ بھی نہ کے گا کہ کیا دو گے اور کہے تو وہ عاشق نہیں۔ عاشق تو اس اجازت کو تنہمت سمجھے گا۔ اور اس کو عین اپنا مقصود جانے گا۔ ہم کو تو خدا تعالی کے ساتھا اس محبت ہوتا جا ہے کہ جو بچھ ہمارے یا س بے اور اول تو ہمارے یا س بے کیا جو بچھ ہے جات اور مال اور اول ووہ بھی ان کا ہی ہے۔ خیر مجاز آجو بچھ ہے اگر وہ سب بچھے لے لیس جان اور مال اور اول ووہ بھی ان کا ہی ہے۔ خیر مجاز آجو بچھ ہے اگر وہ سب بچھے لے لیس اس محبوم الکبیو للطبر انی 1 محبوم الرواند للھیشمی ۱۰ اسادہ المعجم الکبیو للطبر انی 1 میں اس کا ۲۲۳۰ میں السادہ المنفین

اورا کیک مرتبه ابنانام لینے کی اجازت ویں تو وائلد بہت ارزاں ہے ۔ متاع جان جاناں جان وینے پر بھی سستی ہے

اورایک بزرگ لکھتے ہیں _

آنگس کہ تراشناخت جاتا چہ کند ہے فرزند وعزیز وظانماں راچہ کند
جس کوآپ کی شاخت اور معرفت ہوگی وہ کیا کرے گاہال کو کی کرے گاجہ کو اور کیا کرے گااولد دکو۔
ایسے لوگوں کو ہمارے نو جوان تعلیم یافتہ دیوانہ بیجھتے ہیں وہ ان کو جواب دیتے ہیں۔
اوست دیوانہ کہ ویوانہ نہ شد۔ یعنی جود یوانہ نہ ہواوہ کی دیوانہ ہے۔
اوران کو نکما اور بریکار بجھتے ہیں اور وہ ان کے جواب میں یوں کہتے
تا بدانی ہر کرایز وال بخواند ہی از ہمہ کار جہاں بیکارہ ند
جس شخص کو الشد تعالی نے اپنی طرف بلالیا وہ و نیا کے تمام کاروبارے بیکارہ وہا تا ہے۔
ان کا فہ جب تو ہے ہے۔

دلآرامے کہ داری دل دروبند وگرچشم ازہمہ عالم فروبند جس جس مجبوب سے تمہارادل پھنساہوا ہے تم ملاوہ تمام دنیا ہے آئی میں بند کرلویعن بجر محبوب حقیق کے سب سے آئی میں بند کرلوئے

ان کی آنکھ میں تو بجر محبوب کے پرکھنہیں رہتا اور جو پکھان کے سامنے آتا ہے وہ اس میں بھی اس کامشاہرہ کرتے ہیں۔

بسکدورجان فگاروچیم بیدارم توکی بیدا میری جیدای شوداز دور پندارم توکی میری جان فگاروچیم بیدارم توکی بیدا میری جان فگاراورچیم بیداریس توبی بیابوا ہے جو پچھ ظاہر ہوتا ہے بیس تھی کو گمان کرتا ہوں۔

اورا یک حالت ہوجانا پچھ عیب نہیں۔ اس کی مثال موجود ہے دیکھو جب تم کوکسی شخص کو خصوص محبوب کا انتظار ہوتو جب بید کیفیت شد بد ہوگی اور بہت انتظار بردھے گا تو ذرا آ ہے بھی ہوگی تو بھی مجھوے کہ محبوب کا انتظار ہوتو جب بید کیفیت شد بد ہوگی اور بہت انتظار بردھے گا تو ذرا آ ہے بھی ہوگی تو بھی مجھوے کہ محبوب آ با ہے جوشے سامنے آئے گی اس کو وہی خیال کر وگے۔ اور جوش محبت میں تو بھی مجھوے کہ محبوب آ با ہے جوشے سامنے آئے گی اس کو وہی خیال کر وگے۔ اور جوش محبت میں ایسے خص کے منہ سے اگر پچھوکل اے بھی نگل جا تیس تو اس کو معذور کہا جائے گا۔

ایسے خص کے منہ سے اگر پچھوکل اے بھی نگل جا تیس تو اس کو معذور کہا جائے گا۔

گفتگو کے عاشقاں در کار رہ ہیں جوشش عشق کی وجہ سے ہے نہ ترک ادب کی وجہ سے ۔ عاشقوں کی گفتگو کار رہ بھی جوشش عشق کی وجہ سے ہے نہ ترک ادب کی وجہ سے ۔

شريعت اورحقيقت

اول جب حال کا غلبہ وتا ہے تو یہی کیفیت ہوتی ہے اور آخر میں میر کیفیت ہوجاتی ہے برکفے جام شریعت پر کفے سندان عشق ہے ہر ہوسنا کے نداند جام وسندان باختن ادھرشریعت کا خیال ادھرش کی شریعت وشق دونوں کے تفقضی پڑل کرنا ہر ہوسنا ک کا کام نہیں۔ شریعت اور حقیقت وونوں میں اعتدال آجاتا ہے کو یا کہ ایک میزان ہے کہ اس کے دونوں پر ایک پر رابر ہیں۔ کیا ممکن ہے کہ ایک میں اختلال آجائے اور پہلے اس سے مغلوب بوتے ہیں شیخ شیرازی ایسے حضرات کے ہارہ میں فرماتے ہیں۔

کمن عیب درولیش جیران وست جیز کیفرق است از ال می زند پاؤ دست درولیش جیران وست جیز کیفرق است از ال می زند پاؤ دست درولیش جیران وست کاعیب مت بیان کرو۔ وہ عشق میں ڈوبا ہوا ہے اس سبب سے ہاتھ وجیر مارتا ہے۔
بس ایسے جھٹرات معذور میں اقوال میں بھی ، افعال میں بھی گر خدا جا نتا ہے کہ کون معذور ہے کون نہیں ہے کون نہیں ہے بعض لوگ مکاری سے صوفی بنتے میں اور بزرگوں کے اقوال لوگوں کے سامنے مین کرنقل کرتے ہیں تا کہ لوگ معتقد ہوں ان کے بارہ میں مولا نا فرماتے ہیں۔

۔ خالم آں تومیکہ چشمال دوختد ہیں۔ ازخن ہاعالمے راسوختد بڑے ظالم ہیں وہ لوگ جوآ تکھیں بند کر کے ایس باتوں ہے ایک عالم کوہ میران کرتے ہیں۔ بہتوا توال کے بارہ میں ہے اورافعال کی نسبت کہتے ہیں۔

اے بیا الجیس آدم روئے ہست ہیں ہمروسے نباید دادوست لعنی آدمیوں کی شکل میں بہت سے شیطان بھی ہیں۔ پس ہرایک کے ہاتھ میں ہاتھ نہ ویٹا جا ہے۔ یعنی ہرایک سے بیعت نہ کرنی جا ہے۔

پی ایسے اوگ معذ ورئیں ہوں گے۔ دیکھوعدالت میں گنوارا گرکوئی گنتا خی کر ہے و معذور سمجھا ج نے گا اور عاقل کی گردن نا پی جاتی ہے۔ کیا خدا کو خبر نہیں ہے کہ کون شریر ہے اور کون سما دگ سے کہدر ہا ہے۔ سمادگی میں تو دلر بائی ہی دوسری ہوتی ہے میں اس کو بیان کرر ہاتھا کہ عشق و محبت کا مقتضی تو یہ تھا کہ اگر بچھ ندماتا تب بھی ند ملتے چہ جائیکہ ماتا بھی ہے پس طالب کی شان سہ ہوتا عاہدے کہ ہروت اس طرف توجہ در کھے۔ منرور ایسا وقت ملے گا کہ اس مرفضل ہوجائے گا اس طرف ہے کہ نہیں۔ کوئی لینے والا ہونا جا ہے جافظ شیرازی فرمائے ہیں۔

عاشق کہ شد کہ یار بحالش نظر تکرد ہے اے خواجہ در دنیست وگرنہ طبیب است اے خواجہ جو بھی عاشق ہوا محبوب نے ضروراس کے حال پر نظر کی ہے۔ حق میہ ہوجود ہے۔ حق میہ ہے کہ دور ہی نہیں ہے ور نہ طبیب موجود ہے۔

پس رستہ یہی ہے کو اپنے آپ کو مٹادے۔ ذہانت سے یہاں کا مہیں چاتا مولانا فرماتے ہیں۔

فہم و خاطر تیز کردن نیست راہ ہیں ہے بلکشکتگی کی منرورت ہے۔ بجر شکتہ لوگوں

فہم و خاطر تیز کر تابیح تی تک چہنچ کی راہ نیس ہے بلکشکتگی کی منرورت ہے۔ بجر شکتہ لوگوں

کے فضل خداوندی کسی کو قبول نہیں کرتا۔

فليفهومنطق

آئ وہ زمانہ ہے کہ کوئی روزہ کی فلاسٹی بیان کرتا ہے، کوئی نماز کی ، حالانکہ اصل فلاسٹی یہ ہے۔
جملہ اوراق وکتب ور نارکن جہ سینہ رااز نورجق گزار بناؤ۔
تمام اوراق اور کتابوں کوآگ میں جموعک دو۔ سینہ کواتو ارحق عظر اربناؤ۔
ان لوگوں کی ایس مثال ہے کہ ایک شخص کو بھائی کا تھم ہوا تو اس کوقو فکر ہونا چاہیے تھا اورو کلا
سے ل کراپنے اوپر سے الزام کو دفع کرنا چاہیے۔ اس نے مید تو کیائیس۔ وہ اس میں مشغول ہوا کہ
بھائی کی حقیقت بیان کرنے لگا۔ کہ بھائی اس طور سے ہوتی ہے یاس کی کیفیت یہ ہے کہ اس
کوشختہ پر کھڑا کرتے ہیں پھر کلے میں اس کے بھائی پہناتے ہیں اور تحقیق لیتے ہیں۔ ایسے ہی یہ
لوگ ہیں کہ جن بلاؤں میں خود جتلا ہیں ان کا تو فکر نہیں اور نصول قصوں میں جتلا ہیں۔ اربے تم
دوزہ کی فلائن کیا بیان کرتے ہوتم کوا بی فلائن کی بھی خبر ہے کہ یا در کھویہ فلائنی اور محقولیت کی
دوزہ کی فلائنی کیا بیان کرتے ہوتم کوا بی فلائنی کی بھی خبر ہے کہ یا در کھویہ فلائنی اور محقولیت کی
دوزہ کی فلائنی کیا بیان کرتے ہوتم کوا بی فلائنی کی بھی خبر ہے کہ یا در کھویہ فلائنی اور محقولیت کی
دوزہ کی فلائنی کیا بیان کرتے ہوتم کوا بی فلائنی کی بھی خبر ہے کہ یا در کھویہ فلائنی اور محقولیت کی
دوزہ کی فلائنی کیا بیان کرتے ہوتم کوا بی فلائنی کی بھی خبر ہے کہ یا در کھویہ فلائنی کیا بیان کا م رہتا ہے۔

ایک منطق طالب علم کی حکایت مشہورے کو ایک تیلی کے بیہاں تیل لینے کیلئے بہتیجے۔ ویکھا کہ تیلی تواہد کام میں مشغول اور بیل چل رہائی اس کے سکتے میں بڑی ہے۔ طالب علم صاحب کومرض تھائی کہ ہمرشے کی علات تحقیق کرتے تھے۔ پوچھا کہ کیول میاں تیلی اتم نے اس بیل کے سکلے میں گھنٹی کے اس بیل کے سکلے میں گھنٹی کے ورد الی ہے۔ تیلی جا کہا کہا کہا کہا کہا کہ اس کے بیٹے سے جھے کومعلوم ہوتار ہتا ہے کہ بیل چل رہا ہے کہنے گئے کہا گھائی جانے کہا کہا کہ مولوی صاحب اگر کھڑائی کھڑامر ہلایا کرے۔ میں بیٹے کیلئے چلنالازم مساوی تو ہے بیس۔ تیلی نے کہا کہ مولوی صاحب

آ پ تشریف لے ج ہے میرے تل نے منطق نہیں پڑھی۔اییانہ ہو کہ وہ بھی ایسے احتمالات سیکھ لے۔ میں آپ کو تیل بھی نہیں دیناد کیھئے وہ اپنی منطق دانی کی بدولت تیل سے محروم دہے۔

ایک نوی کی حکایت مولانا نے لکھی ہے۔ ایک نوی صاحب کشتی ہیں بیٹے جب کشتی ہیں بیٹے جب کشتی ہیں بیٹے جب کشتی ہی تو آپ کونوکا کچھ جوش آیا۔ ملاح سے بوچھا، میاں ملاح تم نے کھیٹو بھی پڑھی ہے۔ ملاح نے کہا تی منبیں نوی نے کہا کہ منبی نوی نے کہا کہ منبی نوی نے کہا کہ منبی نوی کے کہا کہ منبی نوی کے کہا کہ منبی ایک منور میں آگئی۔ ملاح نے کہا میاں نوی صاحب کچھ تیرنا بھی سیکھا ہے نوی کہا تہیں۔ کہا تم سے نوا پئی ساری عمر ہی ہر یادی۔ کہا میاں نوی صاحب کے سنویباں نوک کا منبیل آئی۔ یہاں شرخو سے کام چلنا ہے۔ مولانا نے اس مقام پر نکھا ہے کہ سنویباں نوک کام نہیل آئی۔ یہاں شرخو سے کام چلنا ہے۔ پس بوچھو پاچھومت۔ کام میں لکو۔ کام کرتے کرتے اللہ تعالی کافضل ہوگا۔ علوم تم پر خود بخو د منکشف ہوجا کیں گے مولانا فرماتے ہیں۔

بنی اندر خود علوم انبیاء ﷺ ہے کتاب و بے معید واستا اینا ندر بے کتاب و بے معین واستا دانبیاء جسے علوم دیکھو گے۔

تجليات كى تا ثير

اس وقت تم ان علل اورفدا منی ہو چھنے والوں پرانسو گے۔ بہرحال حق تحالی کی بجی اور نظر میں سے

تا ٹیر ہے کہ وہ شے باہر کت ہوجاتی ہے۔ پس رمضان المبارک کی طرف بھی کسی تم کی بجی فرمائی ہے کہ

جس ہاں میں سے برکت آگی اور جس طرح زمان کی طرف سے بجی ہوتی ہے اوراس میں ہرکت آجی تی

ہے۔ ای طرح کسی مکان کی طرف آگر بجی ہوگی تو وہ مکان بھی متبرک ہوجائے گا۔ چنا نچے کوبے اندر

بھی بجی الی ہے کہ جس میں اس میں برکات اورانوار میں۔ اوراس کی طرف تلوب کوشش ہوتی ہے۔

کھبہ راہروم بچی می فرود ہیں اس میں برکات اورانوار میں اوراس کی طرف تلوب کوشش ہوتی ہے۔

کھبہ راہروم بچی افزوں ہور ہی ہے بیابراہیم عدیالسلام کے اضلام کی بدولت ہے۔

جس شے کو ہر گزیدہ کیا جاتا ہے اس کا میں مطلب ہوتا ہے کہ اس پر تجلیات خاصہ میں سے

کوئی بچی فائز ہوتی ہے ایک بات طلباء کے کام کی یاد آئی۔ وہ سے کہ مجمد (ایک فرقہ ہے

جو ضدا تعد گی خائز ہوتی ہونے کا قائل ہے) نے الو حسمن علی العوش استو ی ، الشتعالی

بی شے میں جسے ہم جو کی پر میشے میں۔ ان لوگوں نے خدا تعالی کی کچھ قدر نہ جائی اور عرش کو انہوں

بیشے میں جسے ہم جو کی پر میشے میں۔ ان لوگوں نے خدا تعالی کی کچھ قدر نہ جائی اور عرش کو انہوں

نے بڑھادیا۔ کیونکہ مشقر بھتے القاف عاد ہ مشقر با کسر القاف سے اوسع (لیمنی جس چیز پرقرار پکڑا جاتا ہے وہ زیادہ وسیع ہوتی ہے قرار پکڑنے والی چیز ہے) ہوتا ہے۔ حالا نکہ عرش کو ذات باری تعالیٰ ہے کو بی بھی نسبت نہیں۔ ایسی بھی نسبت نہیں ہے جسے رائی کے دانہ کو ہم ہے ہے۔ اگر کوئی رائی کا دانہ ہمارے قدم کے نیچ پڑا ہوتو کیا عاقل کہ سکتا ہے اور کیا یہ محاورہ سجے کہا جا سکتا ہے کہ ہم اس پر جیٹھے ہیں۔ رائی کا دانہ بچارہ کیا چیز ہے۔ پس عرش کہاں اور خالق عرش کہاں۔ پس محق ہیں۔ معنی اس آبیت کے بیٹیس ہیں جو مجمد نے سمجھے ہیں۔

اب رہی یہ بات کہ پھر کیامعنی ہیں تؤسلف صالحین نے اس آیت اور جواس کے مشاب اورآیات ہیں ان کے بارہ میں بیفر مایا ہے کہان کے معنی کی تعین نہ کرو۔اوران کے معانی کواللہ کے حوالے کرو۔ مرف اثنااع تقادر کھو کہ جو پچھ مراد ہے وہ حق ہے اوراسلم طریقہ آبات متشابہات میں يك ہے۔ باقی متاخرین نے اس میں پھے تاویل فر مائی ہے بعض نے بید کہ استوکی کے معنی استول ہیں اورمعنی یہ بیں کہ اللہ تعالی عرش پر غالب ہیں۔اورایک تاویل احقر کیا کرتا ہے کہ استوی علی العوش بمعنى برتخت تشستن كنامير بإنفاذ امور وتصرف في الامور مين تصرف كرباب يناني بعض جگاس كے بعدمدبو الامو (وه برامركى تدبيركرتاب) كا آنابطوراس كتغيرك،وسكاب-. (اوردوسر عمقام ميں ہے الله الذي خلق السموت والارض في ستة ايام ثم استوی علی العوش ، الله بی به بس نے آسان وزین کو چھون میں پیدا کیا۔ پھر تخت پر قائم ہوا استویٰ میں ضمیر اللہ کی طرف ہے۔ سود ہاں حسب قاعدہ القرآن یفسر بعضہ بعضا بعض جز قرآن کا بعض جز کی تغییر کرتا ہے بیے کہا جا سکتا ہے کہ یہاں بھی مراد جمل البی بدا عتبار صفت رحمانیہ کے ہے فاقیم)ایک تاویل ہمارے حضرت حاتی صاحب رحمتداللہ علیہ نے بجیب وغریب فرمائی۔ وہ پیہے کہ القد تعالیٰ نے بیٹیس فر مایا۔اللہ علی اسعرش استویٰ (اللہ عرش پر بیٹھے ہیں) تا کہ بیالا زم آئے کہ اللہ تعالی عرش پر بیٹھے ہیں بلکہ الرحمن فر مایا ہے۔ پس مطلب یہ ہے کہ اہتد تعالیٰ کی صفت رحمت عرش کومحیط ہے اور عرش تمام عالم کو گھیرے ہوئے ہے۔ بیس حاصل یہ ہے کہ ابتد کی رحمت تمام چیز وں کو گھیر نے ہوئے ہے کس اس تاویل ہے۔

بیآیت و معت د حمتی کل شیء . میری رحمت ہر چیز ہے وستے ہے۔ کی مرادف ہوگی۔ اور عرش کی خصوصیت اس لئے ہوگی کہ تعلق رحمت کا اولاً باا واسطه اس کے ساتھ ہوا ہے اور دوسری اشیاء کے ساتھ بواسط اس کے ہے ہیں حاصل میہ ہوا کہ القد تعالیٰ کی صفت رحمت کی مجلی اس پراولاً ہوتی ہے۔

تجل سے معنی

یباں ۔ بخل کے معنی بھی واضح ہوگئے کہ بخل ہے معنی یہ ہیں کہ کی صفت کا تعلق بجلی لہ (جس
کیلئے بخل کی گئی ہے) ہے ہوجائے ۔ جمل کے معنی چک د مک کے نہیں ہیں جیسے عوام بجھتے ہیں۔
بھے کو بخل کے لفظ پر ایک دکایت یاد آئی۔ میرے ماموں صاحب نے ناناصاحب کی عجیب
دکایت بیان فرمائی کہ ناناصاحب ذکر و مغل کرتے ہے لیکن کوئی کیفیت وارد نہ ہوتی تھی تو شخت جیرانی
مالک کوایسے وقت بہت پریشانی ہوتی ہے خصوصاً اگر کوئی دست گیرنہ ہوتو اور بھی زیادہ مصیبت
ہے اور یہی وہ جیرانی اور بھنگ جس کی نسبت ارشاد ہے۔ وو جدک صالا فھدی ۔ اور اللہ تعالی نے
ہے اور یہی وہ جیرانی اور بھنگ جس کی نسبت ارشاد ہے۔ وو جدک صالا فھدی ۔ اور اللہ تعالی نے
ہمارین صالاً کی تفییر ہیں بہت جیران ہوئے ہیں۔ کی نے بچھ کیکن
مفسر بین صالاً کی تفییر ہیں بہت جیران ہوئے ہیں۔ کی نے بچھ کیکن
جو بات میرے دل کو تق ہے وہ یہ ہے کہ بیضا است بھی جیرانی اور بھنگ ہے جو سالک کو کشور کا رہے
ہیں آتی ہے اور فھدی ہیں سلوک کا ابتدا مراد ہے اور

الم نشوح لک صدر ک. کیا ہم نے آپ کی خاطر آپ کا سینہ کشادہ نہیں کردیا۔
الم نشوح لک صدر ک. کیا ہم نے آپ کی خاطر آپ کا سینہ کشادہ نہیں کردیا۔
ال قسم کی بھٹک سالک کو پیش آئی ہے تو آگر کوئی مرشد کالل موجود ہوا تو وہ تھی کرتا ہے اور کہتا ہے۔

المدیدی کی راہ مت چل کیونکہ خدا کے نقل سے بہت کی امید ہیں ہیں۔

ظلمت یعنی مدعیان مزور کی طرف مت جاؤ خورشید یعنی سنور باطن لوگ موجود ہیں۔

اور یہ بھٹک ابتدا ہیں ہوتی ہے پس اس قسم کی جرائی اور بھٹک تا ناصا حب کوشی اور دہر کامل اور بھٹک ابتدا ہیں ہوتی ہے پس اس قسم کی جرائی اور بھٹک تا ناصا حب کوشی اور دہر کامل کوئی موجود نہ تھا۔ ایک مکار درولیش بنا ہوا آیا اور اس نے کہا کہ چربی صاحب میں آپ کو بخل دکھی وہوں کی عقل گم ہوجاتی ہے۔

وکھلا دول گا حضرت بیطلب ایسی شے ہے کہ لکھے پڑھوں کی عقل گم ہوجاتی ہے۔

عشق رانا زم کہ یوسف را بیاز ارآ ورد ہے جہا جمچو صنعا زاہد سے راز میر زنار آورد

عشق کو بحدہ پرناز ہے کہ یوسف علیہ السلام کو باز ار میں لاتا ہے اور مقام صنعا کے زاہد جسے عشق کو بحدہ پرناز ہے کہ یوسف علیہ السلام کو باز ار میں لاتا ہے اور مقام صنعا کے زاہد جسے عشق کو بحدہ پرناز ہے کہ یوسف علیہ السلام کو باز ار میں لاتا ہے اور مقام صنعا کے زاہد جسے عشق کو بحدہ پرناز ہے کہ یوسف علیہ السلام کو باز ار میں لاتا ہے اور مقام صنعا کے زاہد جسے عشق کے زنار ڈلواد یتا ہے۔

طلب کے کرشے

بعض مرتبداس طلب کی آگ میں بہت بڑی بڑی غلطیاں ہوجاتی ہیں۔ حق تعالیٰ کی عنامیت ہے۔ ابتدا ہی سے شیخ کامل میسر ہوجائے اورا کر طلب پیدا ہوجائے وست کیرکوئی شہوتو ہوری مصیبت ہے۔

غرض ناناصاحب اس کے بہکانے جس آھے۔ اس نے کہا کہ فوٹ گڑھ چلو۔ وہاں ایک ویران مجداور تنہا جگہ ہے۔ دیاسلائیاں اس وقت نئی تی چلی حمیل ان مجداور تنہا جگہ ہے اس میں دھلاؤں گا۔ چنا نچہ وہاں گئے۔ دیاسلائیاں اس وقت نئی تی چلی تھیں۔ کوئی جانتا نہ تھا کہ کیا ہوتی جیں کہنے لگا کہ وضو کر کے دور کھت پڑھواور لا الدالا اللہ کی ضربیں لگاؤ۔ جب بیضر جیں ذکر کی لگانے گئے تو اس مکار نے چھے سے ایک دیاسلائی تھینی جس سے تمام مسجد روشن ہوگئی۔ اول ناناصاحب کو جرت ہوئی اس کے بعد پھینیے طے اور مسئلے تصوف کا یا وآیا کہ حق تھ لئی کی شان تو یہ ہے کہ نورغیب کے ما منے کوئی ظلمت ہی تی نہیں رہتی ۔

چوسلطان عزت علم برکشد ہیں جہال سر بخسیب عدم درکشد جب شہنشاہ حقیق علم عزت کینچتے ہیں جہال گریبان عدم کی طرف سر کھینچتا ہے یعنی جب انوار الٰبی کا غلبہ ہوتا ہے تو ما سوایاتی نہیں رہتا۔

توبیکیانورے کہ میراسایہ آگے پڑر ہاہا ورنورغیب کے ساتھ ظلمت مجتمع ہورہی ہے۔ چھے جود یکھالود یکھا کہ دیاسلائی جلار ہاہے نکال کر جوتا خوب پیا۔

ایک اور دکا بت یا د آئی۔ ایک نومسلم نے جھ سے بیان کی تھی کہ یں پہلے مہنت تھا۔ را تو ل
کو جا گا تھا۔ دل میں طلب پیدا ہوئی کہ جس کا نام جیتے ہیں اس کو دیکھیں۔ ای طلب میں تیران سرگر داں تھا کہ ایک شخص ملااس نے کہا کہ ہلکی ہی جوت پرمیشر کی میں دکھلا دوں گا۔ میں نے کہا اچھا۔ پینا نچیدہ وقتی جھے کہاد یکھا یہ ہے پرمیشر کی ہوت نے دو تھے کہاد یکھا یہ ہے پرمیشر کی جوت میں نے دوئی اچھاتی کو دتی ہے۔ بیجھے شبہ ہوا کہ ریکسی جوت میں نے دوئوں ہے۔ بیجھے شبہ ہوا کہ دو روشی اچھاتی کو دتی ہے۔ بیجھے شبہ ہوا کہ ریکسی جوت ہی تو تار وسکون ہو تا چا ہے۔ باس چل کر دیکھا تو ایک کو جوت میں تو و قار وسکون ہو تا چا ہے۔ باس چل کر دیکھا تو ایک کھوا ہے۔ اس کے سر پراس نے گا راجما رکھا ہے۔ میں نے اس جل کر دیکھا تو ایک کہوا ہے۔ اس کے سر پراس نے گا راجما رکھا ہے۔ میں نے اس سے کہا کہ تو نے جھے کو فریب دیا۔ اس نے کہا کہا رہے کو ل بیوتو ف ہوا ہے۔ دنیا میں یوں بی کام جاتا ہے۔ میرے یاس رہ کر یوری کھوا یا کر۔ کیوں بیوتو ف ہوا ہے۔ دنیا میں یوں بی کام چانا ہے۔ میرے یاس رہ کر یوری کھوا یا کر۔ کیوں بیوتو ف ہوا ہے۔ دنیا میں یوں بی کام چانا ہے۔ میرے یاس رہ کر یوری کھا یا کر۔ کیوں جوتو ف ہوا ہے۔ دنیا میں اور کیا کہ دن سے اس

ند جب سے اتر کیا اور مسلمان ہو گیا کہ شاید مسلمانوں ہیں کوئی ایسامل جے ہیں نے اس سے کہا کہ تمہارا کوئی اعتبار نہیں ہے اگر مسلمانوں میں کوئی نہ ملاتو اسلام کو بھی جواب وے دو گے ہم مقصود ہی کو نہیں سمجھے تو مصرف اس قدر ہے کہ اپنے خالق کا یقین ہوج ہے اور یہ یقین ایسی شے ہے کہ ذرہ ذرہ عالم کا اس پر دلالت کرتا ہے چٹانچہ ایک اعرابی کہتا ہے۔

البعوة تدل على البعير والاثريدل على المسير فالسماع ذات
الاہراج والارض ذات الفجاج كيف لاتدلان على اللطيف المخبير
الاہراج والارض ذات الفجاج كيف لاتدلان على اللطيف المخبير
الدين جب ينگنيال اونٹ كے وجود پروالات كرتى بيں اورنقش قدم چھينے والے كے وجود
پروال ہوگو۔
پروال ہوتو يہ اس برجول والا اور زبين كشاده راه والى كون نداللدتعالى كے وجود پروال ہوگو۔
الس بيايا عم ہے كہ ايك جنگى كو بحى عاصل ہاں لئے كوفطرى ہاں نے كہا كر بم اسلام
کونہ چھوڑوں گا۔ خواہ يہ تقصود حاصل ہويانہ ہو۔ بیس نے كہا كر بم كوكيے ليلى ہو۔ اس نے كہا هيں نے اسلام بيں ايكى بات پائى ہے جوكى ند بہ بين ہيں۔ بين سے بوچھاده كيا؟ كہنے لگا توحيد جھكو بہت تعجب ہوا اور بيا ثر توحيد کے فطرى ہونے كا ہا وراس كا يقين دلائل كے يقين ہے براہ كر ہوتا ہے۔
الك معقولى ہرا يك ہے بوچھا بھرتا تھا كہ بتلاؤ خداكى كيا وليل ہا ہك جنگى طافھ لئے اللہ ہوكا اس ہے بوچھا اس نے لئے دكھا كر ہما ؟ ہاں آپ كوخداكے وجود بيں بھى شك ہے۔ بيل ہوكا اس ميں فطرى منظرى منظرى سے بوچھا اس نے لئے دكھا يا تھا۔
الدرجس كى فطرت سليم نہ ہواس كا عمده علاج وہى ہا ہوت وہود بيل ہي ہوا ہے۔ بيتھا يقين فطرى اور جس كی فطرت سليم نہ ہواس کا عمده علاج وہی ہو بولا میا ہوں نے بھا گے۔ بیتھا يقين فطرى اور جس كی فطرت سليم نہ ہواس کا عمده علاج وہی ہو جوگوار نے دکھلا يا تھا۔

یس ای واسطے حضرت عمرضی اللہ عند نے فرمایا ہے۔ السنان یون ع اکثو همایون ع الفو آن جس قدرقر آن پاک برائی ہے روکن ہاں ہے زیادہ سنان یعنی بھالا روکتا ہے۔

مولا تا محمد یعقوب صاحب کا قصیدہ ہے اسمیں اول شعر پس یہی شمون ہے۔

الوعظ ینفع لوبالعلم و الحکم
وعظ تافع ہے اگر علم ویکم ہے پر ہواور تلوار ہے لوگوں کے لئے بہت بڑاوعظ ہے۔

اب اس زمانہ پس بجائے تلوار کے اللہ تعالیٰ نے طعون مقرر فرماویا ہے۔

وہ ایساواعظ ہے کہ بڑے لیم چوڑے والوں کی تعداد بہت ہوجاتی ہے جات بہاور سے بہاور فراق ہے۔

نمازی بہت بڑھ جاتے ہیں اور روز ورکھنے والوں کی تعداد بہت ہوجاتی ہے۔ مربعض ایسے بہاور

میں کہاس وقت بھی نہیں چو کتے یا چندروز طاعون تک پڑھی جب کام نگل کیا ۔ چھوڑ دی گویا اس لئے پڑھی تھی کہ بلائل جائے۔

جیے ایک ہزرگ نے ایک شخص ہے کہا تھا کہ اگر چالیس روز تک تئبیرہ اولی ہے تماز پڑھو کے تو ہم ایک ہجینس ویں گے اور مصلحت اس میں سیجی تھی کہ چالیس دن میں اس کونماز ہے مجت ہوجا نیکی ۔ پھرخواہ کچھ ملے گایا ند ملے گا بہ چھوڑ ہے گانہیں۔ چالیس روز کے بعد آیا کہ لاؤ ہمینس ۔ انہوں نے کہا کہ میرے پاس بھینس کہاں۔ میں نے تو اس مصلحت ہے کہ دیا تھا۔ تو آپ کیا کہتے بیں کہ جاؤ پھرہم نے بھی بے دضو ہی ٹر خائی ہے۔

میر گفتگواستطر اوا آمگی مہلے سے مید دکا بیتیں بیان کرر ہاتھا کہ ایک نے جلی ویا سلائی سے وکھائی تھی ایک نے پکھوے سے رسوجلی کے میمنی نہیں جولوگ سمجھتے ہیں۔

ذکروشغل کےاثرات

ای طرح بعض لوگ ذکروشغل کرتے ہیں اور ان کو پچھا انوارنظر آیا کرتے ہیں۔ وہ ان کوخدا
کا نور پچھتے ہیں۔ یادر کھوکا کٹر اوقات توبیاس کے دہائے کے الوان ہوتے ہیں۔ جواس کو ظرآتے ہیں۔
آج بی ایک خط ایک شخص کا دبل ہے آیا ہے ان کا دہائے ضعیف تی ہیں نے ان کو بجائے ذکروشغل کے درود شریف کو پڑھنے کو لکھا تھا۔ آج کے خط میں انہوں نے لکھا ہے کہ میں نے درود شریف پڑھا تھا۔ اس کے خط میں انہوں کے لکھا ہے کہ میں نے درود شریف پڑھا تو ایک چکھوا۔ میں نے ان کولکھ دیا کہ اس کی طرف انتفات شکرو۔ مم بوجہ پاس شہونے کے خریرے اس کی حقیقت نہ مجھو گے اپنے کام میں گئے رہو۔ تو وہ اس کے دمائے کی صورتیں ہیں جو متمثل ہو کرنظر کے سامنے آگئیں۔

حفرت مولانا گنگوبی رحمتہ اللہ عدید ہے ایک مرید نے عرض کیا کہ حفرت جھے کو ایک روشی نظر آتی ہے اور اس بیس سنبری حروف بیس پچھ کھا ہے حفرت نے فر مایا کہ تم عداج کراؤاور ذکر و شغل وغیرہ جھوڑ وو تہارے و ماغ بیس بیوست ہے اور بیمقد مہ ہے جنون کا ۔ اس نے کہن نہ ، نا نہ علاج کرایا اور نے کا م کو چھوڑ ا آخر خشکی بڑھی جنون ہو گیا۔ بالکل بر ہنہ مارے ، رے پھرتے شے نہ علاج کرایا اور نے کام کو چھوڑ ا آخر خشکی بڑھی جنون ہو گیا۔ بالکل بر ہنہ مارے ، رے پھرتے شے نہ ماز نہ روزہ اور میر سے سامنے حضرت نے ان کو وصیت فر مائی تھی کہ کھا یہ بیا کرو تے تو ت آئے گی اور یہ فرمایا تھا کہ ویکھو حد برٹ بیس آیا ہے۔

المومن القوى خير من المومن الضعيف وفى كل خيرً مومن قوى مومن ضعيف سي بهتر باور جرايك فيرب-

غرض یہ ماہ بھی حق تعالی کی جیلی خاص ہے بانضیلت ومبارک ہوگیا اوراس نضیلت ہے تلبس حاصل کرنے کواس میں روزہ مقرر کیا گیا اوران نضائل کوحضور صلی القد عدید وسلم نے بہت بیان فرمایا ہے گر میں بوجہ اس کے کہ اس ہے بھی ایک اہم مضمون اس وقت چیش نظر ہے اس وقت ان فرمایا ہے گر میں بوجہ اس کے کہ اس ہے بھی ایک اہم مضمون اس وقت چیش نظر ہے اس وقت ان کو بیان کرنا جیا ہتا ہوں۔

روزه کی شان خاص

ارادہ بیتھااس کے بیان میں زیادہ ونت صرف کیا جائے گا مگر خدا تعالیٰ کے قبضہ میں ہے، نہ کلام اختیار میں ہےاور نہ کوئی شے بقول مولا تا کے ہے

ی تر ا و و خو و بخو و ا زلب خن خو د بخو د زبان سے کلام جاری ہوتا ہے

ہم تہ بیر میں بہت ویرنگ کی گرالحمد للہ بیسب مضامین بھی بہت مفید ہیں وقت بریا رنہیں گیا
اور وہ مضمون جو میں بیان کرنا چا ہتا ہوں وہ صیام کے متعلق آیک ایسا مضمون ہے جس کی طرف
التفات بہت کم ہے یا التفات ہے توعمل نہیں کرتے ہتو جہیں اوراس مضمون کے دو جز و جیں۔ آیک میں توایک عامیانہ خیال کی اصلاح ہے اور دوسرا خاص مضمون ہے وہ ایک علمی مضمون ہوا اور پہلامضمون کمی ہے۔ بسط جس قدر بوگا وہ عملی مضمون ہوگا اور وہ بیہ کہ بیتوسب جانتے ہیں
اور پہلامضمون مملی ہے۔ بسط جس قدر بوگا وہ عملی مضمون ہوگا اور وہ بیہ کہ بیتوسب جانتے ہیں
کہ روز ہ فرض ہے اور اس فرض روز و ہی کی فضیلت میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم فر ہ رہے ہیں کہ جس
گوروز ہ فرض ہے اور اس فرض روز و ہی کی فضیلت میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم فر ہ دے ہیں کہ جس
لوگ اس فضیلت کو بھی جانتے ہیں کیکن بیٹیں جانتے کہ وہ کس شان کا روز ہ ہے جس کی یفضیلت
ہا اور آیا بی خاصیت ہر روز ہ ہیں ہے یہ وہ کوئی خوس روز ہ ہے۔ سویہ بھی صدیت سے بی معلوم ہوتا

رغم الله دغم الله وغم الله وغم الله الله صفور صلى الله عليه وسلم في ارشا وفره يا كه اس كى اك في كم الله وغم الله وأك مين ل جائے - اس كى الك فياك مين ل جائے - اس كى الك فياك مين ل جائے - اس كى الله ووجن فيا بين في الله ووجن في الله و الله

ل الصحيح لمسلم، القدر ٣٣٠، سن اس ماحه ٢١١٨، ١٥٩ مسلد أحمد٢ ٢٥٠، مشكوة المصابيح ٥٢٩٨ على الصحيح لمسلم كتاب البروالصله ٢٠، مشكوة المصابيح ٣٩١٣، الدرالمثور ٣٠٠١ ا ماں باپ کو بردھا ہے میں پایا اور اس نے جنت نہ حاصل کی (بینی ان کی خدمت کرے)

دوسر اوہ جس کے سامنے میر اذکر آیا اور اس نے درود شریف نہ پڑھا۔
شیر اوہ جس کے اوپر رمضان کا مہین آیا اور اس نے گناہ معاف نہ کرائے اور وہ اس طرح نکل گیا۔
اس حدیث ہے معلوم ہوا کہ رمضان یا روزہ بیل خود معافی کا اثر نہیں بلکہ اس کے اندر خاص شان ہوتا جا جی اور وہ خاص شان وہ ہے جس کو حضور صلی اللہ علیہ وسلم ارشاد فریاتے ہیں۔
من لم یدع قول الزور و العمل به فلیس لله حاجة ان یدع طعامه و شو ابد جاس ہے اس جاس جو خوص روزہ میں یاطل بولنا اور براکام کرنا نہ چھوڑ نے تو اللہ تعالی کو پچھ حاجت نہیں ہے اس بات کی کہ چھوڑ دے اپنا کھانا اور اپنا چینا۔

یہ ہے وہ شرط کہ جس کے پائے جانے ہے روز ہ کے اندرمعانی کی شان آجاتی ہے اوراس شرط کا حاصل ہے معاصی کا چھوڑ دینا۔ سواس کی طرف عام کا التفات نہیں یا التفات ہے تو عمل نہیں ہے۔ روز ہ کا اور

د کی لیج کہ کتنے ہیں ایسے لوگ جنہوں نے رمضان سے پہلے کی حالت بدل دی ہو۔ جو حالت رمضان سے پہلے تی وہ اب بھی ہے جن کواڑ کوں اور عور توں کو گھور نے کی عادت تھی وہ اب بھی گھور تے ہیں۔ جو غیبت کیا کرتے تھے وہ اب بھی کرتے ہیں۔ کوئ سافعل ہے کہ کہ کے اس ہے اور جو پہلے سے پرایا حق کھار ہے تھے وہ اب بھی کھار ہے ہیں۔ کوئ سافعل ہے کہ کس نے اس کے کورمضان کی وجہ سے چھوڑ ا ہو بلکہ رمضان کے آنے سے اور زیادہ وبال بڑھ چائے گا۔ اس لئے کہ جبیبا کہ مکان کے مقدس ہونے سے معصیت کے اندر شدت آجاتی ہے۔ ای طرح زمان کے مقدس ہونے سے معصیت زیادہ بڑھ جاتی ہے۔ ای طرح زمان کے مقدس ہونے کا بھی میں اثر ہے کہ اس سے معصیت زیادہ بڑھ جاتی۔ جیسے کوئی مسجد کے باہر چیٹھ کرشر اب چیئے تو گناہ ہے لیکن مسجد کے اندر بیٹھ کر چینا اور زیادہ گناہ ہے کہ رمضان سے جس سے کہ کان ، آنکی، ہاتھ یا وُں ، تمام جوارح کی حفاظت کرو۔

تقوى كي مشق

ایک بات کہتا ہوں اگر چہ میر ہے منہ ہے اچھی نہیں معلوم ہوتی اس لئے کہ ہم کوتو یہی کہتا لے سس ابی داؤد ۲۳۲۲ ، سن التر مذی ۷۰۷ ، مشکو ۃ المصابح ۹۹۹۰ چاہیے کے دائمی تقویٰ اختیار کرولیکن کیا کیا جائے لوگوں کودیکھا جاتا ہے کہ بہت بلہ وُں میں مبتلا ہیں تو جس طرح موی علیہ السلام نے ساحروں سے فر مایا تھا۔

القوا ما انتم ملقون. ليعني ۋالوجو كچيم كوۋالنا ب

حالاتکہ بظاہر ہے گنہ ہ کا امر معلوم ہوتا ہے اس لئے کہ بحر کر نا اور نبی کا مقابلہ کرنا تو کفر ہے لیکن چونکہ یہ فر ایسا اس اسے برکہ میرا بیہ چونکہ یہ فر ایسا میں ہرکہ میرا بیہ مشورہ فر ایجہ ہوجائے گا۔ ان شاء اللہ تعالی دوام تقوی کا ، جس بھی کہتا ہوں کہ اگر آ ہے ۔ دائمی تقوی کی نہ ہوسکے تو صرف اس ، ہرمضان جس تقوی اختیار کر و بعد درمضان کے تم کو اختیار ہے۔ تقوی نہ نہ ہوسکے تو صرف اس ، ہرمضان جس تقوی اختیار کر و بعد درمضان کے تم کو اختیار ہے۔ کہ نفس کی اس کا مطلب بیہ کہ نفس کی مت کر و بلکہ مطلب بیہ کہ نفس سے ایک ماہ کے لئے تقوی پر اس کو راضی کر داور بہ کہوکہ اے نفس ایک سے ایک ماہ کے لئے ماہ کے لئے تقوی پر اس کو راضی کر داور بہ کہوکہ اے نفس ایک ماہ کے لئے ماہ کے لئے کہ ماہ کے لئے کہ کا میں جا ایک ماہ کے لئے کا دور جب مہینہ گزر جائے تو ایک ماہ کے لئے دور جب مہینہ گزر جائے تو ایک ماہ کے لئے دور جب مہینہ گزر جائے تو ایک ماہ کے لئے دور جب مہینہ گزر جائے تو ایک ماہ کے لئے دور جب مہینہ گزر جائے تو ایک ماہ کے لئے دور جب مہینہ گزر جائے تو ایک ماہ کے لئے دور جب مہینہ گزر جائے تو ایک ماہ کے لئے دور جب مہینہ گزر جائے تو ایک ماہ کے لئے دور جب مہینہ گزر جائے تو ایک ماہ کے لئے دور جائے تو ایک ماہ کے لئے تقوی کی سکھلاؤ۔

ایک بزرگ نے ای طریقہ سے نفس کوذ اکر دائی بنائے کی تدبیر بتلائی ہے مثلاً تم کومظفر گر جانا ہے تونفس ہے اگر ہے کہتے کہ اے نفس مظفر گریٹینے تک انتداللہ کرتونفس ہرگز راضی نہ ہوتا نفس سے سلح کی ۔ اے نفس صرف اسٹیشن تک ذکر کر لے پھر جب اسٹیشن تک پنچے تو کہو کہ اے نفس صرف نا نو تہ تک انتدالتہ کر لے ۔ ای طرح نا نو تہ پہنچ کر را مپور تک سلح کر لے ۔ حتیٰ کہ مظفر گر تک اللہ اللہ کرتے چلے جا ہے ۔ اگر ابتدا ہے فس پر بارڈ التے تونفس بھی منقاد (تا بعدار) نہ ہوتا۔

لیکن ان بزرگ نے کسی بزرگ ہی نفس کودیکھا تھا۔ ہمارالنس تو اس حکمت کواول ہی ہے سمجھ کر بھی کہنا نہ مانے ۔ القد تعالیٰ ناس کر ۔ اس نفس کا کہ اس نے بہت راہ مارا ہے تاہم باوجود شرارت کے اس بی بید قاصا ہے کہ اگر اس کوراہ پرلانا چاہیں تو بچھ تو آبی جاتا ہے۔ اس کی بچہ کی شرارت کے اس بی بید کی دن کا صیت ہے کہ بچہ بہلائے ہے بہل بھی جاتا ہے ۔ پس تم بھی نفس ہے کہ دو کہ عمید کے دن تک تو متقی ہوجا۔ بعد ہیں تجھ کواختیا رہے۔

اگر کوئی کے کہ عیدتک متی ہونے ہے کیا نفع ۔ تفوی توجب ہی کارآ مدہے جب کہ مرنے تک ہو۔ مساحبو! میں اس میں ایک فائدہ سمجھے ہوئے ہوں ۔ وہ یہ ہے کہ ایک تد ہیر ہے داگی تفویٰ حاصل کرنے کی اور وجداس کی ہیہے کفس جو تفوی کی طرف ماکل اور معصیت سے نفور نہیں ہوتا۔ ال کی وجہ یہ ہے کہ تقوی کی لذت اور معصیت کی کدورت سے واقف نہیں۔ اس کو بیخبر بی نہیں کہ تقویٰ کے اندر کیا لذت اور نور ہے اور معصیت کے اندر کیا کدورت اور ظلمت ہے اور وجہ اس کی بیہ ہے کہ چونکہ جمیشہ معصیت ہی میں رہا ہے اس لئے نور تقویٰ سے آگا بی نہیں ہے اور جب کہ نور تقویٰ سے آگا بی نہیں تو بقاعدہ

الاشياء تنبين بصدها. اشاء الى ضدول عظامر موتى بين

معصیت کی ظلمت کا بھی احساس نہیں۔ پس ضرورت اس کی ہے کہ اس نوراورظلمت یا یوں کہو

کہ اس لذت اور کدورت سے واقف بتایا جائے۔ جب اس کوتقویٰ کی لذت حاصل ہوگی تو معصیت

میں کدورت محسوس ہوگی۔ پس لامحالے تقویٰ کی حرص اور معصیت سے نفر ت بیدا ہوگی۔ جب پورے
مضمان المبارک ہیں متنقی رہو گے تو پھے تواحساس ہوگا۔ لذت تفویٰ وکدورت معصیت کا شوال ہیں
جب کہ میعادس کی گئم ہوجائے گی ، تو اس ہی نوراور حلاوت ولذت کو یا دکر ہے گا اور یہ کہا گئے۔
بازگو از نجد وازیاران نجد جہ تا در ود بوار راآری بوجد
پھرنجداوریاران نجد کی داستان بیان کروتا کہ درود بوار وجد ہیں آئیں۔

اور پیریسے گا

بازدیوانہ شدم من اے صبیب جہ بازسودائے شدم من اے طبیب اے صبیب اے صبیب کاریس سودائی ہوا۔

اوراس وقت اس کو ولولہ ہوگا ،طلب ہوگی اوراس حالت ہے ایک جست کرے گا اوراس کو کہ اوراس کو کہ اوراس کو کہ کا اور اس کو کہ کا اور وہ زبان کو کہ کا اور وہ زبان حال یا قال ہے یہ کہے گا ۔

ہرکے کودور ماند ازاصل خویش ہیں بازجوید روزگار وصل خویش لینی جو خص اپنی اصل سے جدا ہوتا ہے پھراس زمانہ وصال کو جو یا ہوتا ہے۔ پس وہ ای طرح رفتہ رفتہ متق بن جائے گا۔

معصيت اوراطاعت

اگرکوئی کے کہ جیسے معصیت کے وقت طاعت کو یاد کرے گا ای طرح طاعت کے وقت معصیت کو یاد کرے گا۔ پس وہ بین بین رہے گا۔ طاعت کا غلبہ کیسے ہوگا۔

جواب اس کابیہ ہے کداول دومقدے مجھ لینا جا ہیں۔ وہ بیہ ہیں کہ ہرشے کا میلان اپنی اصلی حالت کی طرف ہوتا ہے۔ ہرعضراینے جز کی طرف راجع ہوتا ہےاورد دسرامقدمہ یہ جھو کے مسلمان کی اصلی حالت طاعت ہے اور معصیت عارضی اور وہ کسی عارض کی وجہ سے ہوتی ہے۔اور وجہ اس کی بیہے کہ ط عت گواختیاری شے ہے لیکن اس کے مناشی اور اصول فطری ہیں۔ چنانچہ و کیھئے غیر عاقل بچوں میں گوطاعت نہیں ہے لیکن طاعت کے مبادی ادر مناشی کہ اخلاق حمیدہ ہیں موجود ہیں۔ دیکھئے بچیہ جھوٹ نہیں بولتا۔ جب کھے ہوش آ جا تا ہے اور دوسرے سے سیکھتا ہے اس وقت بولتا ہے اور جو کھھ اس ے یوچھو بے تکلف بتادیتا ہے کہتھ نع بناوٹ اس میں نہیں ہوتی۔ خاکساری ہے کینہ پروری نہیں۔ بحد میں ایک مغت تو صوفیا کی ت ہے۔ وہ یہ ہے کہائے مرنی ہے رہ جہج تب بھی اس کی طرف دور تاہے۔ مال مارتی ہے اور بچے امال ہی اوں پکارتا ہے۔ اس واسطے اللہ تعالی نے موک علیہ السلام كوارشا دفر ما يا ب كدا ، موى جمار سراته اليسار جوجي بجد مال كے ساتھ ۔ اگرغور كيا جائے توبچہ کے اندرلا کھوں یا کیزہ صفات ہیں۔ بچہ طبع ہے فرما نبر دار ہے اور بہت صفات ہیں اوراسلام نے میں صفات سکھلائے ہیں۔ پس جب بیصفات فطری ہیں اور بیاصلی حالت ہے تومعصیت میں طاعت یادآئے ہے معصیت کوچھوڑ کر طاعت کی طرف آ ؤگے۔ یہ ندہوگا کہ طاعت میں معصیت کو یاد کر کے طاعت ہے معصیت کی طرف آؤ۔ چنانچہ ایسا کہیں نہ ویکھا ہوگا کہ تارکین ونیاطالبان ونیاہے ہوں۔اورایسےلاکھوں قصے ہیں کہ طالبان ونیا تارکان دنیا ہو گئے۔

اب راز سجھ میں آگیا ہوگا کہ رمضان میں متل بن جانے سے کس طرح دائی متلق بن جاؤ کے۔ دیکھا آپ نے کہ کیا سبل ٹسخہ ہے۔

حلال وحرام

يهاں ايك آيت كى عجيب تفير بمجه من آئى ہوہ يہ كر آن مجيد من كے . كتب عليكم الصيام كماكتب على الذين من قبلكم لعلكم تتقون اياما معدودات.

تم پرروزہ فرض کیا گیا ہے جس طرح تم سے پہلے لوگوں پر فرض کیا گیا تھا۔اس تو قع پر کہتم متنی بن جاؤ یتھوڑے دنوں روزہ رکھ لیا کرو۔

ایاماً معدودات کے عال بیں گفتگو ہوئی ہے کہان ہے۔مفسرین نے ایک صوموا

مقدر زکال کراس کامعمول بنا پاہے اور یے فر مایا ہے کہ تنقون کے متعلق نہیں ہوسکتا۔ اس لئے کہ تفویٰ نؤ دوا ما مطلوب ہے وہ ایا با کا عامل کیے ہوسکتا ہے لیکن اس تقریر ہے اس کا تنقون سے معمول ہوتا سمجھ میں آسمیا ہوگا مطلب ہے ہوگا کہ چندر وزمتی بن جاؤیہتم کودائی متقی بنادےگا۔

ہاتی ہے بات کہ بینسیر کس نے کی نہیں سو یہ کوئی بات نہیں تو اعد شرعیہ وعربیہ کی موافقت کے بعد نقل خاص کی ضرورت نہیں۔ بہر حال کیسی آسان ملح نکل آئی۔

اب يہاں پرايک اخکال باتی رہا۔ وہ يہ کہ کہ آپ شايد ايوں کہيں گے کہ ہم آگھوں کی بھی حفاظت کرليں گے اور ہاتھ پاؤں سب جوارح کی۔ لين يہ حضرت شم عليه الملام (اس پر ملامت ہو) کا تقوی ہم ہے شہو سے گا اوران ہی حضرت پر دارو مدار ہے۔ اس لئے کہ يہ بمز لہ حوض بدن کے ہا ورویگر جوارح بمز لہ نالیوں کے جیں۔ جواس ہے منشعب (نگلنے والی) ہوئی جیں لیس جیسا حوض جیں پانی ہوگا تالیوں جی وی ا آئے گا اگر حوض جیں پانی پاک وصاف ہوگا تالیوں جی جی گا گر حوض جیں پانی پاک وصاف ہوگا اورا گر حوض جیں پاک صاف ہوگا اورا گر حوض جیں ناپاک اور خراب پانی ہوگا۔ پس اگر پيٹ جس جرام غذا ہے تو جوارح سے افعال بھی خبیث ہی صادر ہوں گے اور اگر حلال غذا ہے تو افعال بھی خبیث ہی صادر ہوں گے اورا گر حلال غذا ہے تو افعال بھی خبیث ہی صادر ہوں گے اور اگر حلال غذا ہے تو افعال بھی خبیث ہی صادر ہوں ہے دو حرام ہے ، کپڑ ابدن پر ہے دو حرام ہے۔ دو بیہ ہوں گے اور ہماری حالت سے کہ گھر جس جس ہی دو حرام ہے ، کپڑ ابدن پر ہے گھاس کھودیں تو حلال غذا کھا کھی تو ہم ایسے خت کام کے عادی نہیں جی ۔ بیا شکال ہے۔ کھاس کھودیں تو حلال غذا کھا کھی تو ہم ایسے خت کام کے عادی نہیں جیں۔ بیا شکال ہے۔ حلال کی صورت

جواب اصلی تو اس کا بیہ ہے کہ پچھ ہی ہوسب چھوڑ واور تقوی اختیار کرو کین میں ویکھا ہوں کہ کوئی نہ چھوڑ سے گا۔ اس لئے اس کی ہمل صورت اس کے لئے بھی بتلا تا ہوں کو دل تو چا ہتا نہ تھا کہ بتلا وک کو دل تو چا ہتا نہ تھا کہ بتلا وک کی کہ والت و کھ کر والتہ بہت دل دکھتا ہے کہ خلاف شریعت کر کے دین تو تباہ کرتے ہیں ونیا بھی ہر باد کررہے ہیں۔ اس لئے ایسی صورتیں بتلانے ہر جسارت ہوتی ہوتی ہوتی ہے ورند فی الواقع یہ باتیں خا ہر کرنے کی نہیں ہیں۔

موصا حبو! بیخت اشکال بھی تمہارا رفع کرتا ہوں۔ وہ بیہ کہ اس پیٹ کا علاج بیہ ہے کہ تم اپنی پہلی جنس اور پہلے رو بید کوقفل کر کے رکھ دواور رمضان رمضان کے لئے جنس کسی جاجن ہے ادھار کے لویارو پے قرض کے کراس ہے جنس خریدلو۔ پھراس ادھارکوا پی آبدنی ہے اداکر دینا اگرکوئی کہے کہ مہاجن کے پاس رویید یا اناح طال کہاں ہے آیااس کے پاس تو سودو غیرہ کا ہے۔
بات یہ ہے کہ اگر سلطنت کے اندردو شخص ہوں ایک توباغی ہوا ورایک رعایا بیس ہے جونمبر دار ہے۔
دونوں مثلاً زیادت ستانی کے جرم کے مرتکب ہوئے تو اس نمبر دار کوتو زیادت ستانی کی قید ہوگی
ادریا فی کی اس پر قید نہ ہوگی۔ اس کے لئے یہ جرم ہی نہیں۔ اس کوسرا ہوگی بعناوت پر وہ
اگر بعناوت سے معافی چاہے تو سب کھایا معاف ہے اس کفر تو بمنز لہ بعنوت کے ہے۔ اس کے
ہوتے ہوئے احکام فرعیہ کا مخاطب ہی نہیں اور ہم جی رعایا میں ہے اس مہاجن کے لئے سود
وغیرہ جرائم نہیں ہیں اس کے بیجرائم کفر کے اندر کھپ گئے اور ہمارے لئے یہ سب جرائم جیں۔
وغیرہ جرائم نہیں ہیں اس کے بیجرائم کفر کے اندر کھپ گئے اور ہمارے لئے یہ سب جرائم جیں۔
کاموا خذہ کیا جاتا ہے اور جب کہ وائرہ اطاعت ہی کئل جائے تو پھراس ہے ہر بات پرگرفت
کاموا خذہ کیا جاتا ہے اور جب کہ وائرہ اطاعت نبیں کرتا۔ یہ شکایت نہ ہوگی کہ فلاں شرادت

اب آپ کی بھے میں آگیا ہوگا کہ مہاجن ہے جوقرض آپ لیں گے اس میں کوئی شبہ نہوگا بیاس اشکال کی مہل تذہیر ہے جوآپ کو پیش آیا۔ بی نہ جا ہتا تھا کہ بیان کروں۔اس لئے کہ اس زمانہ میں قیاس فاسد بہت شائع ہے۔ایسا نہ ہو کہ لوگ اس کوئن کر قیاس کریں اور حرام گیری اور حرام خوری پر کمریا ندھیں۔اب فرمائے کیا عذر ہے تفوی اختیار کرنے میں۔

طالب علمی کارنگ

اگرکوئی کے کہ ہم تو ڈاڑھی کٹاتے ہیں ، پاجامہ شخنے سے ینچے رہتے ہیں۔ واڑھی کئی ہوئی اور شخنے چھے ہوئے ہوئی مشکل اور شخنے چھے ہوئے ہم کوا ہتھے معلوم ہوتے ہیں۔ توبیہ کوئی عذرتہیں۔ اس کوچھوڑ دینا کوئی مشکل شہیں۔ کیونکہ کوئی دنیا کی کارروائی اس پرموتو ف نہیں اور مشکل تو واللہ کچھ بھی نہیں ہے۔ اس پر بھی اگرکوئی تقتوی نہ کرے تواس کو یہی کہا جائے گا۔

ستم کو ہم کرم سمجھے، جفا کو ہم وفا سمجھے ہے جواس پر بھی نہ وہ سمجھے تواس بت کوخدا سمجھے لیں بت کوخدا سمجھے پس اب ۳۰ رمضان المبارک تک تو خدا کے لئے متنی بن جاؤ۔ بعد ۳۰ رمضان کے دیکھا جائے گا۔ ایک دفعہ تم کواس کا ڈا کفتہ آجائے پھر توان شاءائندرفتہ رفتہ تم کودین اپن طرف سمجینج لے جائے گا۔ ایک دفعہ تم کواس کا ڈا کفتہ آجائے پھر توان شاءائندرفتہ رفتہ تم کودین اپن طرف سمجینج لے

گا۔ جیسے کوئی ایک دفعہ طالب علمی کرلیتا ہے تو پھراس کے اندرایک سادگی اور بے تکلفی ایسی آ جاتی ہے کہ خواہ کسی درجہ پر پہنچ جائے مگروہ طالب علمی کارنگ نہیں جاتا۔

شاهجمانیور پس ایک کورٹ انسپکٹر سے۔ ان کے اوضاع واطوار پس ایک محبوباند اور بے تکلفی کا نداز تھا۔ پس نے تحقیق کیاتو معلوم ہوا کے انہوں نے عربی طالب علمی کی تھی۔ بس وہ ریک گیانہیں تھا۔ ای طرح جو تحق اہل اللہ کی جماعت پس ایک دفعہ آپھنتا ہے وہ کو کہیں پھر لے کئی پھر آئے گا۔ ابنیں تو پھر کسی وقت آئے گا اورا گرزندگی پس نہ آئے گا تو مرکرتو ضرور ہی آئے گا نیمس ایک گانہیں ۔ ابنیس تو پھر کسی وقت آئے گا اورا گرزندگی پس نہ آئے گا تو مرکرتو ضرور ہی آئے گا نہیں ۔ جرعہ خاک آمیز چوں گئد ہے۔ گر بودصانی ندائم چوں گئد ہو ۔ یہ ایسا مجنون بنادیتا ہے آگر بالکل پاک وصاف ہووے لیے تو تہ معلوم کیا کرے گا۔

پس ہمارا پہتقوی طہارت ذکر جومع صی اور ظلمات ہوا وہوں میں ملا ہوا ہے جب بیاثر وکھا تا ہے تو اگر بیٹر است صاف کی طرح صاف ہوجائے۔ تو خدا جانے کیا حالت کر دے ای واسطے میں مشورہ ویا کرتا ہوں کہ اپنے بچوں کواٹل اللہ کے پاس کے جاؤ اوران کے پاس رکھو۔ اگر چہ وہاں رہ کرنہ نماز پڑھیں نہ روزہ رکھیں لیکن بیرخالی اللہ کے پاس کا رہنا پھل پھول لا تا ہے پچھلے سفر میں میں مجھلی شہر گیا تھا۔ میں نے بیمضمون بیان کیا تھا کہ میں اولا وکواٹگریزی پڑھانے کومنع نہیں کرتا۔ اگریزی پڑھانے گرم کر نہ بناؤ اور جوز ما نہان کی تعطیل کا ہے اس کے دوجھے کر دو۔ آ دھا حصہ کھر رہ اگریزی پڑھا کہ گرم کر نہ بناؤ اور جوز ما نہان کی تعطیل کا ہے اس کے دوجھے کر دو۔ آ دھا حصہ کھر رہ کرتے ہیں کرتقر ہی وا سائش میں گزاریں اور آ دھا حصہ کی کامل کی صحبت میں رکھواور اس کا وعدہ ہم کرتے ہیں کہ ہم ان کوروزہ نماز کے لئے بھی نہیں کہیں گے۔ چندروز ہی میں دیکھ لینا کہ وہ دین کا ہوکر رہے گا اور اس وجہ سے لوگ ان کے پاس اول دکوئیں جیجے کہ بیرد نیا ہے جاتے رہیں گے۔

جناب حافظ محمضامن صاحب رحمته الله عليه كى خدمت ميں ايك هخص آنے لگا تھا۔اس كے كسى عزيز نے كہا كہ جب سے بيآپ كى خدمت ميں آنے لگا ہے كسى كام كانبيس رہا۔ حضرت نے فر ما يا كہ بھائى ہم تو بگاڑتے ہى ہيں۔اگرتم كو پسندنہ ہوتواس كوروك دو۔ قير بيتو برو بوگوں كا كام ہم الله بھائى ہم تو بگاڑتے ہى ہيں۔اگرتم كو پسندنہ ہوتواس كوروك دو۔ قير بيتو برو بيتو كوں كا كام ہے۔ ہوجا كي بينا بنائيس _ محراتنا تو ضرور ہوگا كہ عقائدتوان كے مجمع ہوجا كيں ميں مير كافر تو نہ بين مير مير محمون تھا مجمع في معرف تھا مير كے دعظ كا۔

اب وہاں کے ایک مولوی صاحب رئیس کا خط آیا ہے کہ اگر اجازت ہوتوا ہے بچوں کو وہاں

بھیج ووں۔ میں نے جواب میں لکھ دیا ہے کہ اگران کو بھی رغبت ہو بھیج دو۔ اس لئے کہ اگر خودررغبت ہو بھیج دو۔ اس لئے کہ اگر خودررغبت ہوتو محبت نافع ہوتی ہے الحاصل صحبت نیک کی طرح رمضان کا تقوی بھی دل میں ان شاء اللہ گھر کر لے گا اور شوال اور دیگر مہینوں میں وہ وقنا فو قنا انجرے گا۔ اب بتلا ہے اس سے زیادہ آسان طریقہ جا ہے ہوتو اس کے معنی سے جی زیادہ آسان طریقہ جا ہے ہوتو اس کے معنی سے جی کہا میں کہ کام ہی نہیں کرتا جا ہے ہو۔ بہتو عملی مضمون تھا۔

تصوف اورفقه

للناس فيما يعشقون مذاهب

(جس چیز میں لوگوں کاعشق ہوااس میں ان کے مختلف نداہب ہیں)

ماراتو فرجب بيہے۔

ماہر چہ خواندہ ایم فراموش کردہ ایم جنہ الاحدیث یارکہ بھراری کنیم جو کچھہم نے پڑھاتھا۔ بجز حدیث یار کے سب کوفراموش کردیا ہے۔ اس (حدیث یار) کی

بس آگریقول حضور سلی اللہ علیہ وسلم کے ارشاد پر منطبق ہوجائے تو سجان اللہ ہم اس کو حدیث سے جانچیں گے۔ اگراس کسوٹی پر بھی درست رہا تو سراور آئھوں پر ہے۔ ورنہ جناب ہم کو پہند مہیں۔ اگر کوئی کے کہ صدیث پر کونظبق نہ ہو، تصوف پر تو منطبق ہے۔ تو حضرت بیدد کیھناہے کہ تصوف کیا ہے جانب دسول اللہ علیہ وسلم کی جس نے تصوف کیا ہے۔ تو صوف کی جس نے تصوف کی جس نے دیگ بدل کر تصوف نام رکھا ہے اور فقہ بھی حدیث ہی ہے جناب دسول اللہ علیہ دل لیا ہے اس لئے فقہا فقہا فریاتے ہیں۔ القیاس مظہر لا شبت لیدی قیاس نص کے تھم کوظا ہر کرنے والا ہے تا بت کرنے والا نہیں فریاتے ہیں۔ القیاس مظہر لا شبت لیدی قیاس نص کے تھم کوظا ہر کرنے والا ہے تا بت کرنے والا نہیں

ابت کرنے والاعکم کانص ہے۔ پی تصوف اور فقہ جدا جدا شے نہیں ہیں ہاں رنگ مختلف ہیں۔
عبار اتنا شتی و حسنک و احد
عنوان مختلف ہیں معنون ایک ہی ہے۔ ہرایک عنوان انہی مضمون کی طرف مشیر ہے۔
عنوان مختلف ہیں معنون ایک ہی ہے۔ ہرایک عنوان انہی مضمون کی طرف مشیر ہے۔
ہبرر نکے کہ خوابی جامہ می ہوش ہی من انداز قدت رامی شناسم
جس رنگ کی جوڑا جا ہے ہی لے میں انداز قد سے بہچان لوں گا۔

محبوب خواہ کی رنگ ہے آئے اور کسی لباس میں آئے عاشق اس کو ہر طرح پہچان لے گا۔ اور جو نہ پہچانے وہ عاشق نہیں ہے۔ پس حدیث ایک ایسامجوب ہے کہ جس نے اس کو پہچان لیا ہے تو وہ خواہ فقہ کے رنگ میں جلوہ گر ہویا تصوف کے لباس میں طاہر ہو پہچان لے گا۔

ہاں اگر صدیث ہی نہ ہوتو اس کی بہچان کیے ہوگی۔اس سے فورا قلب میں استز کا رہوگا۔ہم کوتھوف کا انکار نہیں ہے اس لئے ہم بہ جواب نہ دیں گے کہ تصوف پر منطبق نہیں ہے۔ دعویٰ ہمارا یہ ہے کہ یہ قول ٹی نفسہ سے نہیں کہ کم کھاؤ کم ہواوراس کی دلیل یہ بیان کرنا کہ بھوک اور پیاس کی تکلیف نفس کو ہو، بیان کی ولیل ہے اوران کی مسلم ہے۔

شرعی مجاہدے

 روز ہ کی برکت خاص میہ ہے کہ عادت کے وقت نفس کونبیں ملا۔ اور بیکوئی نہ کیے کہ عادت دو جارروز میں بدل جائے گی پھریمی عادت ہوجائے گی کہ رات کو کھایا کریں۔ بات بیہ ہے کہ نفس ایسی شے ہے کہ خواہ کتنا ہی زیانہ گزرجائے گروہ تقاضا اس کانبیس جاتا۔

ایک چوری حکایت مشہور ہے کہ وہ ایک ہیر کا مرید ہوگیا۔ ہیر نے چوری سے تو ہہ کرائی۔

ھانقاہ میں رہنے لگا۔ میں کو جب سب اٹھتے تو و کھتے کہ ہرا یک کی ایک جوتی دوسر سے کی جوتی کے ساتھ رکھی ہے۔ دو چاردان تک تو صبر کیا گھر تحقیق کرنا شروع کیا تو چورصا حب بکڑے گئے۔ بکڑ کر ہیر کے پاس لے گئے۔ بیر کے پاس لے گئے۔ بیر سے بوچھا کہ یہ کیا حرکت ہے۔ کہا سنے حضرت بات یہ ہے کہ جھے عادت تھی چوری کی۔ جب وہ وفت آتا ہے تو میر نے نفس میں تقاضا ہوتا ہے، تو چوری تو میں کرتا موں۔

مادت تھی چوری کی۔ جب وہ وفت آتا ہے تو میرے نفس میں تقاضا ہوتا ہے، تو چوری تو میں کرتا ہوں۔

منہیں، ہوی مشکل سے نفس کواس ہیرا بھیری پر راضی کرتا ہوں۔

توجناب یفس صاحب وہ ہیں کہ خواہ کتنا ہی ذیانہ گر رجائے گر عادت کا تقاضا ہوتا ہے گر خونے نے اور لطیف ہوئین ہوتا ہے ضرور۔ اور شریعت کے جاہدے جو گیوں کے سے مجاہدے نہیں ہیں کہ اپناہا تھ سکھالو یا کئی تی سال بھو کے رہو یا بالکل معبتل ہو کر آبادی کو چھوڑ کر ویرانہ اختیار کرلو۔ شریعت کے مجاہدے نہایت لطیف اور آسان اور نفع میں بہت زیادہ اس پر جھے کوا یک صاحب علم کا مقولہ یاد آیا۔ وہ علم معقول ومنقول کی مثال میں فر مایا کرتے سے کہ علم معقول کے اندر جوشخص عرکھیا و ساس کی مثال اس شکاری کی ہے کہ تمام بدن شکار میں دہے۔ شام کو گھرائے تو بچوں کے ایک مثال اس شکاری کی ہے کہ تمام بدن شکار میں دہے۔ شام کو گھرائے تو بچوں کے ابا کے تمام دن میں سور کا شکار کیا تھا جو کسی مصرف کا نہیں ۔ نہ اس کا گوشت کام کا نہ کھال کام کی۔ ہاں جشمیں بہت بڑا اور شکار بھی بردی مشکل ہے ہوا۔

روز ہا ور تعلیل طعام

میری دلیل (یکن ان یقول الحصم ان عدم وجد انکم الدلیل لایستلزم عدم الدیل و ایضاً یلزم الاحتحاج بعدم الدلیل و هولیس بصحیح عندنا کماهو مصوح فی اصول الفقه) ممکن ب کرفصم بیاعتراض کرے کرتمهارادلین کاعدم وجدان عدم دلیل کوستلزم نبین اور نیز لازم آتا ب احتجاج عدم دلیل سے بیدار منزو یک صحیح نبین جیس اصول فقہ میں اسکی صریح کی ہے، چونکہ اس کے متعلق تصوص معلوم ہیں ۔ان میں شہونا دلیل ب عدم دلیل کی اور چونکہ بدون دلیل کے حکم عابت نبین ہوتا اس لئے بیاحتجاج بالدلیل سے بعدم دلیل کی اور چونکہ بدون دلیل کے عدم

الدلیل نہیں۔ ۱۲ منہ) یہ ہے کہ اگر روز ہ کا کمال اس پر موقوف ہوتا تو کہیں تو اللہ تعالیٰ اور جناب رسول انتصلی انتدعلیہ وسلم فر ماتے کہ کم کھاؤ۔ کسی حدیث میں ایسامضمون نہیں۔ ہاں اگر ہے تو اس کے خلاف ہے قرماتے ہیں:

کلوا واشربوا حتی بتین لکم العبط الابیض من المخیط الاسودهن الفجر

یخی مج ہوئے ہے پہلے کھاؤ ہو۔

اس لئے میری بجہ ش تو یہ تائیں کرمضائیت کی نشلت تقلیل طعام پرموتوف ہے۔

اب یہاں پرایک شبہ باتی رہا۔ وہ یہ کہ حدیث میں آیا ہے

خلوف فم المصائم اطیب عند الله من ربع المسک لیخشبو ہے بھی زیادہ پاکیزہ ہے۔

یعی صائم کے مند کی بد بوائد کے زویک مشک کی خوشبو ہے بھی زیادہ پاکیزہ ہے۔

اور یہ بوای وقت پیدا ہوتی ہے جب کہ معدہ میں چکھ نہ ہو۔ جب معدہ بالکل خالی ہوتا ہے

تواس سے چھے رواتی اوپر کی طرف صعود کرتے ہیں۔ ان کا اثر مند میں بھی آتا ہے تواس حدیث تواس سے یہ کے دونہ اگر زیادہ کھایا اور وہ کھانا معدہ میں رہا تو ظوف کا وجود کہاں ہوگا اور لیج ایک دومری حدیث ہے کہ حضور صلی القد عید وسلم فریاتے ہیں کہ بعض کا وجود کہاں ہوگا اور لیج ایک دومری حدیث ہے کہ حضور صلی القد عید وسلم فریاتے ہیں کہ بعض کو کے ایس مطوم ہوتا۔ اس سے بھی معلوم ہوتا۔ اس مطلوب ہیں۔

نہیں۔جومیری سمجھ میں آیا ہے وہ بیان کر دیا۔

آگرکوئی کے کہ جناب اگر حدیث میں تقلیل طعام کو کمل صوم ہونا ہیں آتا تواس کے خلاف پید بھرنے کا بھی ذکر نہیں آیا تواس اعتبار ہے دولوں مساوی ہو گئے۔ اگر چہ بیرشبطی ہے گر ہمارے مرائع کے دولوں مساوی ہو گئے۔ اگر چہ بیرشبطی ہے گر ہمارے مدعا کو معزبیں ۔ اس لئے کہ ہمارا مقصود تو بیہ ہے کہ تقلیل کمل صوم نہیں ہے اور بیڑا بت ہے کیا تیرے تاب کے خلاف کے داکائی بیان کرتے ہیں۔

حدیث میں ہے کہ اگر کوئی روزہ دار کوافظار کرادے اس کے گنا ہوں کی مغفرت ہوجاتی ہے اوراس کو بھی اتنا ہی تو اب ملتا ہے سحابہ نے عرض کیا بارسول اللہ ہمارے سب کے پاس روزہ دار کے افطار کرانے کی قدر نہیں ہے آ پ سلی القد علیہ وسلم نے قرما یا کہ بیٹو اب تو اللہ تعالی اس فخص کو بھی دے دیتے ہیں جو تھوڑے دورہ ما ایک جھو ہارہ یا ایک گھونٹ یائی پرافظار کرادے اور جواس کو بھی دے دیے ہیں جو تھوڑے دورہ ما یا یک جھو ہارہ یا ایک گھونٹ یائی پرافظار کرادے اور جواس کو بھی دیا جھوٹ سے سیراب کریں گے۔

اس سے معلوم ہوا کہ ہینے بحر کر کھلانا تواب کی بات ہے اوراس کا پیٹ بحر کر کھانا ذرائقص نہیں ورنہ اس کی اعاشت باعث نضیلت نہ ہوتی ۔ پس بحما اللہ ثابت ہوگیا کہ تقلیل طعام کوروزہ سے کوئی تعلق نہیں ۔ باقی یہ ظاہر ہے کہ بہت زیادہ کھانا اوراناڑی کی بندوتی کی طرح بھرنا بینا پہند ہے۔ بس تفصیل ہے ہے کہ جوخص قو می ہواس کے لئے کسی قدر قلت بہتر ہے اور جوضعیف القوئی ہواس کے لئے قلت طعام نہیں چاہیئے ۔ اس کوقلت سے تشویش ہوگی ۔ اس واسطے ہمارے بزرگ اس زیانہ میں تقلیل طعام کا مشورہ نہیں دیتے بلکہ ہیں کہ پیٹ بھر کر کھاؤ۔ اس سے قوت آئے گی ۔ قوت ہوگی تو کا م بھی کر سکو کے ۔ اورا گر تقلیل کی تو تو کی چونکہ اس زمانہ میں ضعیف ہیں اور زیادہ ضعف ہوکر باعث تشویش اور پریشانی ہوگی ۔

آگرکوئی کے کہ جب پہیٹ بھرنے سے قوت آتی ہے تو زیادہ کھانے سے اور زیادہ توت آئے گی۔

توجواب بیہ ہے کہ قوت کا مدار ہے ہضم پراور ہضم جب ہوتا ہے کہ پہیٹ کے برابر یا پچھ کم
کھایا جائے اور پہیٹ بھرنے کے بعد جو پچھ کھایا جائے وہ ہضم نہیں ہوتا۔ لہٰڈا اس شہد کی مخبائش منہیں۔ بیوہ مضمون تھا جو خواص کے منعلق تھا۔

روزه کی حکمت

۔ ایک بات مفیداور یادآئی۔وہ یہ ہے کہ میں نے دعویٰ کیا تھا کہ مجاہدہ ترک عادت کو کہتے ہیں الحداثداس كى دليل بهى صديث سي بحصيص آئى۔

ایک فخص حضور صلی القدعلیہ وسلم کی خدمت اقدس میں حاضر ہوا۔اس نے روز ہ کے متعلق مختلف سوالات کئے منجملہ ان کے بیسوال بھی کیا۔

كيف من صام الدهر قال لاصام و لاافطر

یعنی پارسول اللہ دہ فخص کیسا ہے جو ہمیشہ دوزہ در کھفر مایا کہ اس نے نہ دوزہ دکھا اور نہ افطار کیا۔

ایعنی اس کاروزہ در کھنا اور نہ در کھنا ہر ابر ہے۔ تو حضور صلی اللہ علیہ دسلم نے جوروزہ در کھنے نہ در کھنے

کو ہرا ہر فرمایا تو اس کی کیا وجہ ہے۔ وہ یہ ہے کہ حکمت روزہ کی نہ رہی۔ اس لئے کہ حکمت تو تھی ترک
عادت اور اب اس کو کہی عادت ہوگئی اور اگر کم کھا ناہی حکمت ہوتی تو ایسا نہ فرماتے اور صوم واؤد علیہ
السلام کی فضیلت بھی اس حکمت کی بناء پر ہے۔ اور یہ اس سے بیہ بھی معلوم ہوگیا کہ میری تحقیق تصوف پر منظمی ہو کہ جس کو صوفیا مطلوب کہتے ہیں وہ کم کھانے ہیں مخصر نہیں ہے۔
تصوف پر منظمی ہے کہ ایک غلطی عوام کی ہے کہ روزہ ہیں بھی معاصی ہے اجتناب نہیں کرتے فلاصہ یہ ہے کہ ایک غلطی خواص کی ہے کہ روزہ ہیں بھی معاصی ہے اجتناب نہیں کرتے وار اور ایک غلطی خواص کی ہے کہ مرازہ ہیں۔ بھر القد دونوں کے متعلق کافی بیان اور ایک غلطی خواص کی ہے کہ مرازہ ہیں۔ بھر القد دونوں کے متعلق کافی بیان اور ایک غلطی خواص کی ہے کہ مرافع ہے اول جزو

من صام رمضان ایماناً و احتسابا غفوله ماتقدم من ذنبه جس شخص نے رمضان کے روزے ایمان اور ثواب مجھ کرر کھے تو اس کے اگلے پچھلے گناہ سب گناہ معاف ہوجا کیں گے۔

کابیان بروار اب دوسر بے جزوکابیان ان شاء اللہ تعالی دوسر بے وقت بروگار اب اللہ تعالی بے دعا کیے کے حق تعالی بم کومعاصی ہے بیخے کی تو فق عطافر بادیں۔ اور دوزہ کی برکات تھیب کریں۔
واخر دعو انا ان الحمد لله رب العالمين
و صلى الله تعالى على خير خلقه سيدنا و مو لانا محمد
واله واصحابه اجمعين ، آمين

___الصحیح لمسلم کتاب الصیام باب:۳۱ ، رقم ۱۹۵٬۱۹۲، مس آبی داؤد ۲۳۲۵ ، مسن الترمدی ۲۰۷۷، مس البسائی ۳۰۲۰/۱۵۰۲۰۹۰۱مشکوة المصابیح ۲۰۳۳ ____ الصحیح للبحاری۱ ۲۰۱۱ ۳۰۱لصحیح لمسلم صلوة المسافرین ۱۵۵، مسن أبی داؤد باب ۲۹

الفطر

احکام فطرہ کے متعلق یہ وعظ ۲۹ رمضان السبارک اسسالے کو جامع مسجد تھانہ بھون میں بیٹھ کر فرمایا جوس گھنٹہ میں ختم ہوا حاضری قریباً ایک ہزار کی تھی ۔سیداحمد حسن سنبھلی صاحب نے قلمبند کیا۔

خطبه ما ثوره

يست مالله الرَّمَيْنُ الرَّحِيمُ

ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَنُؤْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوٰذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ ٱنْفُسِنَا وَمَنُ سَيِّئَاتِ ٱعْمَالِنَا مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلاَ مُضِلُّ لَهُ وَمَنَّ يُضُلِلُهُ فَلاَهَادِيَ لَهُ وَنَشْهَدُ أَنَّ لَّاإِلَهُ إِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لَاشْرِيْكَ لَهُ وَنَشُهَدُ أَنَّ سَيَّدَنَا وَمَوْكَا مُحَمِّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَى الِّهِ وَأَصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ.اَمَّابَعْدُ فَاعُوْدُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّجِيْمِ. بِسُمِ اللَّهِ الرَّحَمٰنِ الرَّحِيْمِ. انما يوفي الصبر ون اجرهم بغير حساب. (الزم:١٠) ترجمہ:ستنقل مزاج والوں کواس کا جربے ثنار ہی ملے گا

تمہید: بیا یک بڑی آیت کانکڑا ہے اوراس میں کسی خاص موقع کے باکسی خاص عبادت معلق مضمون نبیں ہے۔ایک عام صمون ہاوراس وقت کا مقتضا بیتھا کے کو کی ایسامضمون بیان کیا جاتا جس کوصیام وفطر ہے منابست ہوتی ۔زیاوہ مناسبت فطرے ہوتی کیونکہ احکام صیام وقیام کے مختلف موقعوں پر بیان ہو چکے ہیں۔اس وقت موقع احکام فطر کے بیان کرنے کا تھا۔سو پیہ مناسب تھا کہ ای کی خصوصیت کے موافق کوئی آیت یا حدیث ہوتی جس میں اس کے احکام ندکور ہوتے اور بیآ بت جو پڑھی ہے۔اس کو کوئی خاص خصوصیت اس مقام سے نہیں ہے کیکن تا ہم اپنے عموم کے اعتبار سے ظاہراً کچھڑ یا دومنا سبت صیام ہے معلوم ہوتی ہے تگر چونکہ حدیثوں میں عمید کے متعلق ایسامضمون آیا ہے کہ تن تعالی روز ہ داروں کی نسبت ملائکہ سے فرماتے ہیں۔

ماجزا ۽ اجير وفي عمله. اجرگاس ڪام س کيا جزا ہے اوروہ کہتے ہیں جزائد ان یوفی اجوہ اس کی جزا یہی ہے کہاس کا جر بورادیا جائے۔ ای طرح بیمضمون آیا ہے کہ رمضان کی آخری شب میں امت کی مففرت ہوجاتی ہے اوراس کی وجہ یوفی اجوہ اذاقصی عملہ جب وہ اپنا کام پوراکرے تواس کو اس کا پورا اجرویا جائے گا۔

فر الی ہاوراس آیت میں بھی صابرین شامل للصائمین (جوروز ہ داروں کے شامل ہیں) کے تو فیہ اجر (اجرت پوری دینے) کا ذکر ہے۔اس اعتبار سے اس کی خصوصیت مضمون فطر ہے بھی ٹابت ہوگئی۔ چنانچہ اول اس کا ترجمہ س لیٹا چا ہے اس کے بعدان صدیثوں کو س لیا جائے۔ صبر کے مواقع

پس تن تعالی قرماتے ہیں: اندها یو فی الصابو ون اجو هم بغیر حساب (متعقل مزاج والوں کواس کا اجربے حساب بی ملے گا) بعنی اس کے سوااور کوئی بات بیس ہے۔ بعنی بیام خرور خقق ہے کہ جم کرنے والوں کوان کا جربورا ویا جائے گا۔ مبر کے معنی ہیں رو کئے گے ، بھی کسی چیز ہے رو کنا ہوتا ہے اور کھنی جیز پر دو کنا ہوتا ہے مثلاً معاصی نے نفس کورو کنا اور بھی کسی چیز پر دو کنا ہوتا ہے مثلاً معاصی نفس کورو کنا اس صورت ہیں اس کا صلح ن آتا ہے اور مثلاً شدت وفقر میں رو کنا ہے مصائب پر ہوتا ہے اور اس صورت ہیں مرکا صدفی آتا ہے جینے و الصبویان فی المسواء و الضواء (اور مبرکر نے اور اس صورت ہیں مرکا صدفی آتا ہے جینے و الصبویان فی المسواء و الضواء (اور مبرکر نے والے خوش حالی اور بخی ہیں) جب اس کا صلاحلی ہوتو مراد یہ ہوگی کہ کسی فضل پر ٹابت وقائم رہ والے خوش حالی اور بخی ہیں) جب اس کا صلاحلی ہوتو مراد یہ ہوگی کہ کسی فضل پر ٹابت وقائم رہ اور اس کا تحقق عبادات کے موقع پر ہوتا ہے بعنی عبادت پر سوم برے تین موقع ہوئے۔

ا۔ معاصی ہے مبرکرنا ۲۔ مصائب بیں صبر کرنا ۳۔ معاائب بیں صبر کرنا آیت بیں عام صبر کی فضیلت ہے۔ مطلب بیہ ہے کہ جوبوک صبر کرنے والے بیں ان کوان کا اجر پورا دیا جا ہے گا اور بغیر حساب اس لئے بڑھایا کہ پورا دیئے ہے صرف یہ معنوم ہوتا تھا کہ اجر بیں کی نہ ہوگ ۔ دبی بیہ بات کہ زیادہ ملے گایا نہیں اس میں دونوں اختال تھے ۔ پس بغیر حساب بڑھانے ہے ہے اس اختال کو متعین فریا دیا یعنی پورے اجر ہے بھی زیا دہ عطافر مایا جائے گا مطلب یہ کہی تو کیا ہوتی اور زیادہ مرحمت ہوگائی

یم جال بستاندو صدجال دہم ہے آئچہ دروہمت نیایدآں دہم نیم جال بیعنی جان فانی لیتے ہیں اور سینکڑول جان بینی جان باتی عطا کرتے ہیں۔ وہ عنایت کرتے ہیں جو تمہارے وہم میں بھی نہیں آسکتا۔ صدے مرادے کمٹیرند کرتعین عدو تخصوص کی۔ چنانچیآ کے خود کہ ہے ۔

خود کہ یابد ایں چنیں بازارا ہما کہ بیک گل ہے خری گزاررا

ایسابازارکہاں نصیب ہوگا کہ ہرایک بھول کے بدلے سارا چن خری لاو۔

ظاہرے کے گل سے گزار ہزار جھے بڑھا ہواہے اوروہ زیادتی اس قدر ہوگی کہ جس کا حساب نہ ہوگا۔

میں دوج

قانون اجر

دین شل ایر کا قانون سے کہ کی جائز نہیں رکھی گئی اور زیادتی جس قدر بھی ہوجائے اس کی روک نہیں اور ممل کا قانون سے ہے کہ جس طرح اس میں کی جائز نہیں ۔ حدود کی۔ ای طرح لحاظ واجب قرار دیا گیا۔ حتیٰ کہ فرض نماز ہے جونمام عبا دات میں افضل ہے اور قرب جس قدر فرائفل ادا کرنے ہے ہوتا ہے کی عبادت ہے اس قدر نہیں میسر ہوتا۔

چنانچ مدیث میں ہے کہ حق تو الی فرماتے ہیں میرابندہ جھ سے فرائش کے واسط سے جو قرب حاصل کرتا ہے ویبا قرب اور کی عبادت سے اس کوئیس حاصل ہوتا۔ گراس میں زیادت جا تر نہیں۔ مثلاً ظہر کے فرض چار ہیں کوئی شخص پانچ یا چھ پڑھنا چاہے تواس کو اجازت نہیں بلکہ ایسا کرنا حرام ہے۔ لیس کام توات ہی کرو جہتنا بتلا یا ہے اور زیادہ مت کرواورا جرکی انتہائیس۔ سجان الند کیا شان کر بی ہے کہ محنت کی زیاد تی کوئے کردیا اور اجرکی زیادت کا وعد وفر مایا البتد نوافل میں تکثیر کی اجازت ہیں۔ مثلاً شب وروز نوافل پڑھنا چاہے تو اجازت ہے گر طلوع وفروب واستوار کے کا اور بعد العصر (عصر کے بعد) ممانعت ہے ان اوقات میں پڑھنا گناہ ہے۔ سواس میں بھی علی الاطلاق کثرت کی اجازت نہیں۔ کیا عمانیت ہوگی کی جوئی تو طاعت میں ہوگی۔ کیا عمانیت ورحمت ہے کہ اجرکا تو حساب نہیں اور طاعت حساب ہی ہے ہوگی تی بری طاعت ہوگی۔ کیا عمانیت ہوگی۔ کیوزہ اور دورہ وار کے منہ کی بدوئی تو لیا کومشک کی خوشہو سے زیادہ ورزہ وار کے منہ کی بدوئی تو لی کومشک کی خوشہو سے زیادہ محبوب ہے۔ محبوب ہے۔ محرم معمان کے بعد یا گر 47 رمضان کو چا غدنظر آجا ہے تو ہو ہو کی اور مبغوض می وجا تا ہے بین عید کے دور روزہ وار کے منہ کی دور دور دور دور دور دور دور دور دور کی اور مبغوض می وجا تا ہے بین عید کے دور روزہ وار کے منہ کی دور دور دور دور دور دور دور دور کی اور مبغوض میں اور طاحت نین کی دور دور دور دور دور دور دور دور دور کی اور مبغوض الی ہے۔ ای راز کوائل القد نے مجمل ہے چنانچے فرماتے ہیں:

يزمد وورع كوش مدق وصفا الله وليكن ميفزات بمصطفا

زہدہ پر ہیزگاری اورصد تی وصفایش کوشش کر وگر نیا تنا کہ رسول امتد سلی اللہ علیہ وسلم ہے بڑھ جائے۔
شارع پر زیادتی کرنا کو یا شریعت بیس اصلاح دینا ہے اوراس کوناتھ سمجھنا ہے اور طاہر ہے
کہ قانون شاہی کا مقابلہ کرنا بغاوت ہے۔شریعت کے آگے مت بڑھو۔ جہاں اوراسرار ہیں
برعت کے حرام ہونے میں وہاں ایک ریجی حکمت ہے کہ حق تعالی بندوں کے ساتھ سہولت جا ہے
ہیں اور بندہ اپنی ذات برختی کرتا ہے۔ چنانچے فریاتے ہیں:

یوبدالله بکم الیسرو لایوید بکم العسو التدتوالی کوتمبارے ماتھ و دخواری منظور نیں۔
صدیث میں ہے کہ جناب رسول اللہ علیہ وسلم نے ری کا ایک مراستون سے بندھا
ہواد یکھا۔ فرمایا یہ سے باندھا ہے۔ عرض کیا گیاھذہ الذینب، بیزینب نے باندھا ہے۔ عراوت
کرتی رہتی ہیں۔ اور او گھ آتی ہے تو گئی نہیں ذرااس سے سہارا لے لیتی ہیں اور رات مجرعیادت
کرتی میں فرمایا اس کو تو ڈ ڈالو۔ جب تک طبیعت تازہ ہے نماز پڑھے: فیصل احد کم
نشاطہ اور جب تک تم کونشاط رہے اس وقت تک نماز پڑھتے رہو) جننا بناو یا اتنا کرواور جب
نشد غالب ہوسور ہو۔ ان الله یحب ان یو تی رخصہ کمایہ حب ان یو تی عزائمہ

بینی اللہ تعالیٰ محبوب رکھتا ہے اس بات کو کہ اس کی رخصتیں ادا کی جا کیں جیسے کہ اس بات کو محبوب رکھتا ہے کہ اس کی عزیمتیں بحالائی جا کیں۔

خدا تعالی اس کوبھی پیند کرتا ہے کہ یہ بندہ ہے اور مختاج وضعیف ہے اور اس کی سہولت سے خوش ہوتے ہیں کیونکہ وہ رحیم خوش ہوتے ہیں کیونکہ وہ رحیم ہیں حتی کہ بعض اقسام رخصت میں یعنی رخصت اسقاط میں عزیمیت پر ممل بھی نا جا کڑے۔ چنا نچے اگر کوئی مخص پوری نما زسفر میں پڑھے گا تو عاصی ہوگا۔

اس کے متعلق حضرت عمر رضی اللہ تعالی عند نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم ہے عرض کیا تھا کہ قرآن مجید میں ہوتو قصر کرو۔ سواب قرآن مجید میں ہے ان خفتم پینی اگرتم کودشن سے اذبت کا خوف ہوتو قصر کرو۔ سواب تو خوف نہیں رہا۔ پس اب اس قید کے اعتبار سے سفر میں قصر نہ ہونا چاہیے۔ آپ نے فر مایا کہ بید انعام تھا اور خاص تھا اب عام ہوگیا۔ فاقبلو اصد فقہ (اللہ تعالی کے انعام کو قبول کرو)

چنانچداگره کم انعام دےاورکو کی نہ لے تو مورد عمّا ب ہوتا ہے _ چول طمع خواہدزمن سلطان دیں ہم خاک برفرق قناعت بعدازیں

اله سن أبي داؤد، التطرع باب. ١ ، مس ابن ماجه ١٣٤١ ، مسن البسائي قيام الليل ب ١٣٠٠ عسن البسائي قيام الليل ب ١٣٠ مسد أحمد ٢ ٨٠١ ، حلية الأولياء، ٢ ١٠١٦ ٢٤١١ كو العمال ٥٣٣٥،٥٣٣٣

جب شاہ دین ہم سے طبع کے خواہشند ہوں اس کے بعد ہم کو قناعت کور ک کرنا جاہیے۔ دعا کی اہمیت وافا دیت

یمی لطف وعمّایت پنی ہے اس کا کہ حضرت یاری عز اسمهٔ وعا کومحبوب قرماتے ہیں اور وعانیہ كرتے سے ناخوش ہوتے ہيں۔ چنانچ صديث يس ہے: من لم يسال الله يغضب عليه . (جو مخص الله تعالی ہے نہیں مانکٹا اس پر ناراض ہوتے ہیں) عجیب بات ہے کہ بندہ ناراض ہوتا ہے ما تکنے سے اور حق تعالی ناراض ہوتے ہیں نہ ما تکنے سے اور ما تکنے سے خوش ہوتے ہیں اورد کھتے عام عادت ہے کہ دروازہ پر سائل آتا ہے اور تک کرتا ہے اورالحاح والحاف (مبالغہ) ے مانگتا ہے تو ہر مخص ناراض ہوتا ہے اورای واسطے شریعت نے بھی ٹی مابین العباد (بندوں کے درمیان) لحاظ کیا ہے ان طبائع کا کہ مانگنے کو پہندنہیں فر مایا اوران لوگوں کی مدح کی ہے جوالحاف ے نہیں ما تگتے چنانچے قرآن مجید میں ہے: لایسنلون الباس المحافا (وہ لوگوں سے ما تکتے میں الحاح اور مبالغہ نبیس کرتے) اور اس امر طبعی کا اس درجہ لحاظ فر مایا کہ اس کوشر کی بنا دیا۔ ممرحق تعالیٰ الحاح ہے خوش ہوتے ہیں۔ چنانچہان اللہ یحب استحسین فی الدیء حدیث میں وارد ہے یعنی الله تعالی محبوب رکھتے ہیں ان لوگوں کوجود عا میں الحاح کرتے ہیں کیونکہ اس میں احتیاج اورا کسار بندہ کوظا ہر ہوتا ہے اوراس احتیاج کی وجہ سے حدیث میں دعا کو مخ العبادة فرما یا ہے۔ لیعنی عبادت كامغز دعاہے۔اى تذلل دائتقاء كى وجہ سے نماز جو ہڑى محبوب ہے حق تعالیٰ كونواس لئے كـاس میں مذلل زیادہ ظاہر ہے۔ میں وجہ ہے کہ روزمرہ پانچ بارفرض کی گئی ہے۔ تا کہ ہروفت موقع ملے اظہارا فتا وکا جو کہ تن تعالی کومجوب ہے۔ پس بندگان نفس تؤ تکرارصلوۃ سے بیجیتے ہیں کہ ہم پرمشقت ڈ الی گئی مگران کو پیڈ برنہیں کہ حق تعالی غایت محبت ہے تمہاری ان حرکات کومجبوب رکھتے ہیں۔اس لئے اس کو باربار دیکھنا جانبے ہیں۔جیسے بچہ کو ہال شہلاتی ہے اگر چیکس قدر تھک بھی جائے۔صرف اس لئے کہ چاتا ہوااحیمامعلوم ہوتا ہے البتہ جب دیکھتی ہے کہ زیادہ چلنامھتر ہوگا توروک لیتی ہے۔ شيطان كأمكر

ایک لطیفہ ہے جس سے ایک عمرہ نتیجہ لکاتا ہے کوئی عورت تھی جس کولوگوں نے ایک وقعہ دیکھا کہ رستہ جلتے ہوئے اپنے بچہ کی انگلی پکڑے ہوئے ہے اور سوکن کے بچہ کو کندھے پر چڑھائے کے سن النرمذی: ۳۲۷۳، اِنعاف السادۃ العنفیں ۳۰، مشکوۃ المصابع ۲۲۳۸ ہوئے ہے۔ عورتوں کو تعجب ہوا اور انہوں نے کہا کہ بی تمہاری خوبی کی بات ہے کہ سوت کے بچہ سے اس قدر محبت کرتی ہو۔ وہ بچاری تھی تجی۔ کہا کہ وجہ اس کی بیہ ہے کہ جھے کوسوت کا بچہ چان مجرتا ہمرتا ہے۔ اس لئے بیس نے اس کوا پانچ کرویا۔ ایک نتیجہ معتر ضہ تو رہے کہ دشمن جا ہے کہ مشمن جا ہے۔ کہ دشمن جا ہے۔ کہ دشمن جا ہے۔ کہ دس کے بیس ہے کہ دشمن جا ہے۔ کہ دس کیسی ہی دوئی ظاہر کرے وہ دشمنی ہی ہوتی ہے۔

ا یک شخص تھے جوشیطان پرایک ہزارروز مر ولعت کیا کرتے تھے۔

اللهم العن ابليس. لين اسالتدا بي رحمت مدور فرماد مشيطان كور

ایسے لوگوں کی مجبت رہی ہوگی جن کا یہ ذہب ہوگا کہ لانت عبادت ہے۔ اتفاق سے برسات میں لیٹے سے کہ شیطان آیا اور کہا جلدی ہٹود یوار گرتی ہے۔ چنانچہ وہ ہٹ گئے اور دیوار گریزی کہنے گئے آپ تو میر ہے کہ اوراس احمان میں گئے آپ تو میر ہے کہ نہاں۔ آپ کون ہیں؟ یہ بیچارے واقف نہ سے کہ دیمن ہواراس احمان میں بھی اس کے پچھ دام ہیں۔ اس نے کہا کہ میں وہی ابلیس ہوں جس پرایک ہزار باریومیہ لعنت کیا کرتے ہیں۔ اس نے کہا یہ احمان کیے کیا۔ اس نے کہا یہ احمان میں ہوں ہے۔ من مات قدمت الهدم فهو شہیں ہے حقیقت میں بدخواہی ہے۔ اس لئے کہ صدیت میں ہے۔ من مات قدمت الهدم فهو شہید (جو محمد کی کی جن کرنے سے اس کے نیچوب کرمر جائے وہ شہید ہو۔)

سویس نے تم کوشہادت ہے محروم رکھنا جاہا۔

ای طرح ایک حکایت مولاتا نے مثنوی میں لکھی ہے کہ ایک بار حضرت امیر معاویہ دستی اللہ تعالیٰ عنہ کو تہد کے لئے شیطان نے جگایا۔ پہچان کر پوچھا کہ تجھ کو کیا مناسبت سینے لگا۔ آخر کبھی تو میں بھی اسی وضع کا تھا۔ پرانی حالت کا جوش آجاتا ہے۔ بقول شخصے (مومن خان مومن)

مجمعی ہم بھی تم بھی تھے آشنا شہیں یادہو کہ نہ یادہو

انہوں نے فر مایا کہ میں ایسے دھوکوں میں نہ آؤں گا۔ اس وقت کہا کہ میں کل تہجد کے وقت

آب کوسلا کر بہت بچپتایا کیونکہ آپ نے سے کو بہت گریہ وزاری کی جس سے آپ کا مرتبہ اور بردھ

گیا۔ میں نے دل میں کہا کہ آئ جگا دوتا کہ اور مرتبہ نہ بڑھ جائے ۔ مولا تانے تھیک کہا ہے ۔

دشمن ارچہ دوستانہ کو بدت دام داں گرچہ زوانہ کو بدت دین وشمن اگر چہ زوانہ کو بدت سے نین وشمن اگر چہ تم سے دوستانہ طور پرکوئی بات کے تو اس کو جال ہی سمجھوا گرچہ دانہ کی بات کر سے بینی وشمن اگر چہ تا ہے دوستانہ طور پرکوئی بات کے تو اس کو جال ہی سمجھوا گرچہ دانہ کی بات کر سے بینی و سال می سمجھوا گرچہ دانہ کی بات کر سے بینی اس کو کو دھیلہ جسم ہے۔

زانکہ صیاد آور بانگ صغیر ہے تاکہ گیر دمرغ راآل مرغ میر اسبب سے شکاری پرندہ کی بولی بولتا ہے تاکہ وہ پرندے پکڑنے والا پرندے کو پکڑے۔
اس سبب سے شکاری پرندہ کی بولی بولتا ہے تاکہ وہ پرندے پکڑنے والا پرندے کو پکڑے دائی واسطے اہل اللہ نے فرمایا ہے کہ شیطان کے کروحیلہ سے نہایت اہتمام کے ساتھ بچنا چاہے۔

چاہیے۔ اس لئے کہ اس کا کمرنہایت بخت ہے ۔ بھی توابتداء ہی سے گناہ کاراستہ بتا تا ہے جس کی مذابع ہے۔

مدافعت اکثر اشخاص کو بہل ہے اور بھی نیک کے پیرا یہ ہیں گناہ کرا تا ہے جس کا مقابلہ اور نہم نہایت مذابع ہے۔

دشوار ہے اور جیسا شیطان مکار ہے نفس بھی ایسا ہی مکار ہے اس کے فریب سے بھی عذر رکھنا چاہیے۔

ایک نتیجہ اس حکا یت سے یہ بھی نکلا اس کو اپنے بچہ کی حرکا ہے مجبوب تھیں ۔ ان کے دیکھنے کے لئے اس کو بیادہ چلایا لیکن اس کے قبل سے زیادہ بھی اس کو نہ چلنے دیتے۔

لیخیر حسا ۔

ای طرح حق تعالی ہم سے عبادات کا کام لیتے ہیں وہ ان حرکات کو پند کرتے ہیں لیکن خل سے زیادہ خود نہیں کرنے دیتے۔ کتنی بڑی رحمت ہے چٹانچہ اللہ تعالی کاار شاد ہے۔ رہا و لاتحملنا مالاطاقة لنابه (اے ہمارے پروردگار ہم پرایسے معمائب اور واقعات نے ڈالئے جس کی ہم کو برداشت نہیں ہے)

اس تعلیم کے ضمن میں جہ الیا ہے کہ ہم طاقت سے زیادہ کام نہیں لیا کرتے ہیں۔ یہ معاملات ہیں خدا تعالیٰ کے۔ کوئی شخص واقعات دیکھے پھر کہا ب اللہ میں خور کرے تو ہر جگہ رحمت ہی رحمت نظر آئے گی۔ غرض وہ ہمارے خل سے زیادہ ہم کو کام کی اجازت نہیں دیتے۔ چہا تجہا گر مجاہدہ کی حرص میں کوئی دو پہر کونماز پڑھے تو مواخذہ ہوگا۔ غرض خدا تعالیٰ کی عجیب رحمت ہے ممل میں تو صدے زیادہ ممنوع اوراجر میں زیادت موجود۔ ای لئے بغیر حساب بڑھ دیا۔

ال کابیمطلب بین کااس قدراجر ملے گاجوہ ارے حماب سے باہر ہاں گئے کہ قرماتے ہیں۔ و کل شیء احصینه فی امام مین کینی ہم نے ہر چیز کوایک واضح کتاب میں منبط کردیا ہے۔ ان کے احاظ علمی سے کوئی شے خارج نہیں بلکہ مطلب رہے کہ تم نہیں شار کر سکتے ۔جیسا کہ دوسری جگر فرماتے ہیں۔

ان تعدوا نعمة الله الاتحصوها العن الرئم تعت ضدادندى كوشاركرنا عاموتونشاركر كسار كرا على المرح في المرح بين المرح بين مرح بين مرح بين مرح بين المرح بين المر

لاتصو حانبیں احاطہ کر سکتے تم ان کا) میں عدم احصاء کی اسناد مخاطب کی طرف اس کی واضح ولیل ہے۔ اس طرح اس آیت میں بغیر حساب کے بیمعنی ہیں کہتم حساب نہیں کر سکتے۔ ورنہ وہ اللہ تعالیٰ کے انداز وسے باہر نہیں ہے۔ وہ تو خوب بالنفصیل جائتے ہیں۔

حاصل بیرکیمل محدود ہے اور متمائی ہے اور اجر غیر محدود اور غیر متمائی جمعنی لاتقف عند حد (کسی حد پر موقوف خبیس ہے)۔ بیتو اس آیت کے متعلق بیان تھااب وہ حدیثیں من لی جا کیس جن کی تسبت میس نے وعدہ کیا تھا کہ اول اس آیت کا ترجمہ من لیما جا ہے پھر حدیثوں کا مضمون بیان کیا جائے گا۔

نعمت فقر

سووہ حدیثیں دو ہیں جن کامضمون مختصراً عرض کرتا ہوں۔امام احمد نے حضرت ابو ہر برق ہے رمضان کی ہے کہ فرمایا جناب رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم نے کہ جب اخیر شب ہوتی ہے رمضان کی توالند پاک میری امت کی مغفرت فرماتے ہیں۔عرض کیا صحابہ نے کیاوہ لیا ہ القدر ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ نہیں لیکن العامل انمایو فی اجوہ اذا قضی اعمله لیعن جب کام کرنے والا کام بورا کر دیتا ہے تواس کو بوری مزدوری اللہ جاتی ہے۔

محر میں بھے لوکہ بورا ہونا کے کہتے ہیں۔ ٹھکے داروں سے بوچے لو جب کہتے ہیں کہ بل بورا ہو گیا مطلب میہ ہوتا ہے کہ جانچ میں پورا ہو گیا۔ جنانچہ جب جانچ میں وہ تقمیر پوری نہیں ہوتی تو تھم دیا جاتا ہے کہ اس کواز مرٹو بناؤ ہیائش میں پورا ہونا معتبر نہیں جب تک منظوری کے نمونہ کے موافق شہوجائے۔ ذرا متنبہ ہونا جا ہیے۔

گریبان اوروہاں کے معالمہ بین اتنافرق ہے کہ یہاں تواگر تھم ہوا تھا تمیں فرلا تک سزک بنانے کا اوراس کو انتیس تک ہوش نبیں اور تیسویں بین ہوش آیا تو تمہار ہے تمیں کے تمیں ہر یا دھے۔ یہ تو یہاں کے قانون میں ہوش آجائے اور قانون خدائی یہ ہے کہ اگر تیسویں روزہ میں بھی ہوش آجائے اوراس کو باقاعدہ اوا کیاجائے اور مامضی (گزرے ہوؤں) سے معذرت کرلی جائے تو تیسول شمکانے لگ جاتے ہیں اور مقبول ہوجائے ہیں۔ گرکون قدر کرے۔ چونکہ آسانی اور مہولت سے رفعت میسر ہوتی ہے، یہی سبب ہوگیا ہے قدری کا

مركداوارزال فردارزال ومد المنظم المحال ومد المنظم المنظم

جو شخص کسی چیز کوارزال لیتا ہے وہ ارزال دے بھی دیتا ہے اس کی قدر نہیں کرتا۔ چنا نچہ بچہ نا دان جیتی موتی کوا یک قرص نان کے عوض میں دے دیتا ہے۔

اے گرانجال خواروبد متی مرا ہیں زاں کہ بس ارزاں خریدتی مرا ہی اے اس کہ اس ارزاں خریدتی مرا اے کا بل تو تے جھ کو بے قدر بجور کھا ہے وجہ سے کہ شی تھ کو مفت لی گا ہوں۔ حضرت ابراہیم بن اوہم رحمت اللہ علیہ کے سامنے کی نے فقر کی شکایت کی قرمایا کہ اس کی قدر مجھ سے بچھو اس کے لئے میں نے سلطنت چھوڑ کرفقرا فقیار کیا ہے۔ اس کی قیت میں جو تا ہوں۔ چنا نچیا کیک بارا پ نے جنگل میں کو ئیں میں وضو کے لئے پانی نکا لئے کوڈول ڈالا پہلی بارا پ نے جنگل میں کو ئیں میں وضو کے لئے پانی نکا لئے کوڈول ڈالا پہلی بارچا نہ کی کو اس کے کہا ہے کہ دیا۔ پھر دوبارہ ڈول ڈالا تو سوتا بھر کر ڈول نکاا۔ پھر آپ نے اس کو کھینک دیا۔ پھر دوبارہ ڈول ڈالا تو سوتا بھر کر ڈول نکاا۔ پھر آپ نے اس کو النہ دیا۔ پھر تیس کی بان کی کو النہ میں باری اس کو کھی کہا ان کی باری! آپ میراامتحان کرتے ہیں، سے چیز ہی تو میرے پاس بہت تھیں۔ اے اللہ اب میں پانی آپ گیا۔ باری! آپ میراامتحان کرتے ہیں، سے چیز ہی تو میرے پانی بیت تھیں۔ اے اللہ اب میں پانی آپ گیا۔ اگر فقر ایک چیز نہ ہوتی تو جنا ہی کہا تہ ہو اوا میں ہیں تو احد بہا ڈر اس کو کیوں پندا ور افتیار فرماتے کے لئے سونا کر دیا جاتے اس کو کیوں پندا ور افتیار آپ کے لئے سونا کر دیا جاتے اور ایا گر آپ کے ایک بھر تو ہو ہتا ہوں کہا جو گا ہوا ہوا جو گا ہوا ہوا ہو بہا تہ ہوں کہا دیا تھر گا ہوا ہوا کہا کہ میں بیٹیس چاہتا میں تو بہتا ہوں کہا جو گا ہوا ہوا ہو بہا تو بین کی دن بھوکار ہوں اور کس دن شکم سے ہوں۔

نعمت میں تو تعمت پرنظر ہے اور صبر میں منعم پر۔ جواس راز کو بجھ گیا وہ نقدان کو وجدان پرتر بیج
دے گا اور ایسا بی شخص تو قف عدم قبول دعا ہے بھی تنگ شہوگا۔ بلکہ خوش ہوگا۔ اور علا مت مجبوبیت
کی سمجھے گا۔ جیسے کوئی حسین شخص ما تکنے جائے اور گھر والا اس پر عاشق ہوتو وہ ٹالل ہے کیونکہ اس
کو شدمت سے تعلق ہے لہٰ ذاحیا ہتا ہے کہ بید میر سے پیش نظر رہے اور مجھ سے بات چیت کرتا رہے اور
اس وجہ سے وہ اس کو شے مطلوب کے دیئے میں تا ٹی کرتا ہے۔ ایک طبیب امر دسین کی حکا بت
ہے کہ کوئی عاشق مزاح پاگل خبطی اس پر عاشق تھا۔ اتفاق سے بید بی رہوا اور ملائے کے لئے وہی
طبیب بلایا گیا۔ پس وہ مریض دعا کرتا تھا کہ میں انچھا شہوں۔ اگر انچھا ہو گیا تو پھر حکیم صاحب
طبیب بلایا گیا۔ پس وہ مریض دعا کرتا تھا کہ میں انچھا شہوں۔ اگر انچھا ہو گیا تو پھر حکیم صاحب
کا ہاتھ میرے ہاتھ کو کیوں مجیط ہوگا۔ جولذت میں عاشق کے محیط اور مجبوب کے محاط ہوئے سے
کا ہاتھ میرے ہاتھ کو کیوں مجیط ہوگا۔ جولذت میں عاشق کے محیط اور مجبوب کے مخاط ہوئے سے
کا ہاتھ میرے ہاتھ کو کیوں محیط ہوگا۔ جولذت میں عاشق کے محیط اور محبوب کے محاط میں لیے اور معشوق آگر اس کو اپنی اپنی بغل میں لیے لیان

وونوں میں جوفرق ہےاس کوعشاق جانتے ہیں۔ یہاں سے انداز ہ کرنا چاہیے اس نعمت کا

الاانه بكل شيء محيط. يادر كھو وہ اللہ تعالى ہر چيز كوا حاطيس لئے ہوئے ہيں۔
ادر پھرية كيوں آئيں گے۔ بہر حال فقر كی طرح اور جتنی تعتیں مفت مل گئيں ان كی قدر
شہیں۔ انہی نعتوں میں سے بیغت بھی ہے جس كامیں بیان كرر ہاتھا كہتن تعالى كا عجیب قانون
ہے كہ اگر تيسويں روز وہيں بھی تدارك كر لے تو پچھلے انتيس بھی مقبول ہوجاتے ہيں۔
ہر حال جس پورا ہوئے پروعدہ ہے وہ وہ ہے جونمونہ كے موافق ہو۔ اور اگر نہ ہوتو تو بہ
کر كے موافق كر لياجائے۔ اس وقت وعدہ ہے مغفرت (يوفی اجرہ) (اس كی اجرت پوری دی جائے گی) ایک حدید تو تو ہے۔

نيك صحبت كااثر

ورسری حدیث وہ ہے جس کو بہتی نے حضوت انسٹ سے روایت کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علی اللہ علی

ارجعوا قدغفرت لكم وبدلت سيئاتكم حسنات

اپی گروں کوجاؤ میں نے تم سب کی مغفرت کردی تمہار سیکات کو سنات سے بدل دیا۔
اور جن تعالیٰ کواجرو یٹا تو ہے گرفرشتوں کواس لئے بار بارجلاتے ہیں کہ انہوں نے آپ ک
نسبت ظاہر ااعتراض کیا تھا کہ اتجعل فیھا من یفسد فیھا ویسفک الدماء و نحن
نسبت ہم محمد ک و نقدس لک کیا آپ پیدا کریں گے ذمین میں ایے لوگوں کو جواس میں
فساد کریں گے اور خوزین یاب کریں گے اور ہم برایر تین کرتے دہتے ہیں آپ کی حمد کے ساتھ
اور تقذیس کرتے دہتے ہیں۔

_ ____العلل المتاهية ٢٠١٢، المعجم الكبير للطبراني: ١٩٢١، مجمع الزوائد ٢:١٠) بلفظ مختلف اور یہ کارم بلا تغیبہ ایسا ہے جیے کلکٹر کے کہ ہم ایک عملہ فلاں کا م انجام وینے کے لئے تجویز کریں گے اور اس پر پرانا عملہ کے کہ حضور دوسری جماعت کی کیا حاجت ہے ہم تو خدمت میں حاضر ہی جی جی کام ہوہم ہی ہے لیجئے۔ تو بید نفخر ہے نداعتر اض بلکہ و فاداری ہے۔ لیکن صورة اعتراض تھا۔ حق تعالی اس کے جواب دینے کے لئے قیامت تک ملائکہ جمع کر کے انسان کے اعمال محمودہ ان کو جملاتے رہیں گے تاکہ ان کے خیال کی تغلیط اور انسان کے فضائل کی تاکہ ان کے خیال کی تغلیط اور انسان کے فضائل کی تازگی ان کے سامنے ہوتی رہے۔

چنانچا کیا اور صدیث میں ہے جہاں ذکر اللی یا وعظ وغیرہ ہوتا ہے تو ملا ککے تھے وہاں جمع ہوکر ذکر سنتے ہیں اور معنلا فر ہوتے ہیں جب والیس جاتے ہیں جن تعالی دریا ہفتہ فریاتے ہیں میرے بندے کیا کر دیا ہفتہ فریاتے ہیں میرے بندے کیا کر دہے ہتے۔ اگر چہوہ سب کچھ جانے ہیں مگر صبیب کا ذکر تو اچھا معلوم ہوتا ہی ہے۔ دوسرے ملائکہ ہی کی زبان سے ان کے فضائل کا بیان کرانا ، جس میں راز

انی اعلم مالاتعلمون. میں اس بات کوجات ہوں جس کوتم نہیں جائے

کا ظاہر ہوتا ہے زیادہ مناسب ہے۔ پھر فرشتے عرض کرتے ہیں کہ آپ کاذکر کررہے
تھے۔ارشاد ہوتا ہے اور کیا کرتے ہیں۔عرض کرتے ہیں کہ جنت ملنے اور دوز نے ہے بچنے کے نے
دعا کرتے ہیں۔ارشاد ہوتا ہے کہ کیا انہوں نے جھے یا جنت وہ وز نے کودیکھ ہے؟ عرض کرتے
ہیں نہیں اگر و کھے تو اور بھی زیادہ رجاء وخوف کا غلبہ ہوتا۔ ادشاد ہوتا ہے کہ میں نے سب کو بخشی دیا۔ ملائکہ عرض کرتے ہیں کہ حضور فعال شخص اس مجلس میں بغرض ساع ذکر نہیں آیا تھا بلکہ کی
دیا۔ ملائکہ عرض کرتے ہیں کہ حضور فعال شخص اس مجلس میں بغرض ساع ذکر نہیں آیا تھا بلکہ کی

ال سے بیغرض نہیں کہ اس کو کیوں بخشا جاتا ہے وہ اس کا الل نہیں اس لئے اس کی مغفرت رہونی چاہیے بلکہ وہ ملائکہ گویا پولیس جس سے خفیہ پولیس جیں کہ ان کا کار منصبی یہی ہے کہ واقعات کو کہ حقافا کو کہ حقافا کریں۔ یس جب وہ ماموراس پر جیں اور اس جس مرضی باری ہے تو بیصورت اعتراض اور اس بندہ کی برخواجی کی شدر ہی۔ ارشاد ہوتا ہے: غفوت له هو القوم الایشقی جلیسهم بیخی جس نے اس کو بخش دیا برخواجی کی شدر ہی۔ ارشاد ہوتا ہے: غفوت له هو القوم الایشقی جلیسهم بیحتی جس نے اس کو بخش دیا اس کے کہ جن لوگول میں وہ جیفاتھا وہ ایسے جیں جن کے پاس جیفے والا بھی محروم نہیں رہتا۔

اس کے کہ جن لوگول میں وہ جیفاتھا وہ ایسے جیں جن کے پاس جیفے والا بھی محروم نہیں رہتا۔

برزرگوں کی ہم شینی بھی بردی وولت ہے۔

حضرت سيدنا ومولانا قطب الاقطاب غوث الاعظم رحمته الله عليه ہے کسي نے عرض کيا که

حضرت فل ن مردہ کے لئے دعائے مغفرت فر مادیجے۔ فر ما یا کہ وہ مخص میرام بدتھا یا میرے وعظ میں کہی جیشا تھا یا مجھ سے ملاقات تھی یا بھی سے دور سے دیکھا تھا یا مجھ کو جانتا تھا۔ عرض کیا گیا کہ ان باتوں میں سے کوئی بھی بات نہ تھی۔ فر ما یا کہ مجراللہ تعالیٰ سے کسی طریقہ سے مغفرت طلب کروں بین خصوصیت کی وعا کروں پھرخوو ہی فر ما یا کہ خصوصیت کی وعا کروں پھرخوو ہی فر ما یا کہ خصوصیت کی تو کوئی وجنہیں ہے ہاں اس طرح وعا کرتا ہوں:

ربنا اغقولنا ولاخواننا اللين امنوا

(اے ہمارے پروردگار بخش دیجئے ہم کواور ہمارےان بھائیوں کو جوا کیان لائے ہیں) کہ میالفاظ عام ہیں ۔ان میں سب کے لئے دعاہے خواہ وہ مخصوص حضرات ہوں یا اجنبی۔

بزرگوں کی صحبت بوی دولت ہے۔
ہم کشینی باخدا کو تشبیند در حضور اولیاء
ہم کہ خواہد ہم نشینی باخدا کو چاہیا کہ دولیائے کرام کے پاس بیشا کرے۔
جو خص خدائے تعالی ہم شینی کاخواہاں ہوتواس کو چاہیے کیاولیائے کرام کے پاس بیشا کرے۔
حدیث اناجلیس من فہ کو لی (جو جھے کو یاد کرتا ہے میں اس کا جلیس ہوں) اس کی موجہ
ہماس طرح کے اولیاء چونکہ ڈاکر جیں ایس وہ ہمنشین خداجیں نوان کے پاس جیشے والا بھی ہمنشین خداجی ہوتوان کے پاس جیشے والا بھی ہمنشین خداجی ہوتی رحمت ہے گوخودان میں سے شہو۔
خداہے جسیا کہ ظاہرے ۔ بردرگوں سے لیٹار ہنا بھی بوی رحمت ہے گوخودان میں سے شہو۔
روز ہ دارول کی فرحنیں

بہرحال یوم فطریس فرشتوں ہے ارشاد ہوتا ہے کدا نے فرشتو! کیا بدلہ ہے اس شخص کا جواپنا کام پورا کر چکے۔وہ عرض کرتے ہیں جزاء ہان یوفی اجو ہُ (بینی اس شخص کا بدلہ سے کہ اس کی اجرت پوری دی جائے)

پھرارشاد ہوتا ہے کہ اپنے گھر کو ج ؤ ۔ میں نے تم کوسب کی مغفرت کردی اور تمبار ہے سینات

کو حسنات سے بدل دیا۔ میدہ صدیثیں ہیں تتم صوم ویوم عیر کے متعلق جن کا تعلق آیت ہے بھی اوپر

ذرکور ہو چکا اور اگر صابرین کی تغییر صرحمین ہے کی جائے تو آیت کا اور زیادہ تعلق ظاہر ہوجائے گا

اے صاحبو! اب تک تو ہم رمضہ ن میں خالی ہاتھ دہے۔ اگر بقیہ ایام بھی ای طرح گزر صحے

تو حسرت اس کا انجام ہے ۔ پس تین چاردن جو یاتی ہیں ان میں بھی تلافی ممکن ہے، تلافی کرلو۔

تو حسرت اس کا انجام ہے۔ پس تین چاردن جو یاتی ہیں ان میں بھی تلافی ممکن ہے، تلافی کرلو۔

ایم عید ہیں علاوہ مجاورت صیام کے اور خاص برکات بھی ہیں۔ چنانچہ اس میں افضل

العبادات بعنی نماز ہے اور پھر صدقہ فطر ہے۔ اور نادار حسرت نہ کریں کہ ہم برکات صدقہ ہے محروم ہیں۔ بیری میں جہ م محروم ہیں۔ بات سے ہے کہ صدقہ پچھ صدقہ مالیہ میں مخصر نہیں ہے بلکہ کپڑ اپہننا صدقہ ہے۔ ہیوی کے منہ ہیں لقمہ دینا نیز خود بھی کھانا صدقہ ہے۔ مطلب سے ہے کہ جب سامور سب اللہ کے واسطے بہالائے جا کی توسی صدقات میں شار ہوتے ہیں۔

مثلاً بیوی کواس نبیت سے کھلائے کہ اس کا نان ونفقہ میرے ذہبے فرض ہے اس کوادا کرتا ہوں۔اورای طرح کپڑا مثلاً اس نیت سے پہنے کرحق تعالیٰ نے ستر ڈ ھکنا فرض اور ہاقی جسم کا مستور کرنامستحب فرمایا ہے۔ سوان نیتوں سے مباح بھی عبادت ہوجاتا ہے اورامور دنیا و یہ بھی دیتی عبادات ہوجاتے ہیں۔لوگ یوں خیال کرتے ہیں کہ بیوی بچوں کی خدمت کرناونیا میں داخل ہے حالانکہ رہیجی دین میں شار ہے اورای طرح سوتا بھی جوراحت ہے عبادت ہو جاتا ہے۔ جیے کوئی مخص عیادت عملی خواہ علمی کرتا ہوتھک کرسو جائے توبیسونا بھی عبادت ہے۔ کیونکہ سونے والے کایہ قصد ہے کہ بیل راحت حاصل کرے پھرخدمت البیہ بین مشغول ہوجاؤں گا۔ اورعبادت كا ذر بيدعبادت ہوتا ہى ہے۔اس واسطےنوم العالم عبادة حديث ميں آيا ہے بعني عالم كي نیندعبادت میں شارہ جابل کے جا گئے ہے عالم کا سونا بہتر ہے اورلطف حق ویکھئے کہ عید میں علاوہ عبادات کے جمع کرنے کے ہمارے امور طبیعہ کا بھی لحاظ کیا گیاہے کیونکہ عمادت بوجہ رعایت امرعادی کی سہولت سے اداہو جاتی ہے اور متروک نہیں ہوتی۔خوابی نخوابی ہوہی جاتی ہے۔ چنانچه عيد مل سامان فرحت طبعي كاجمع كيا كيا - لباس وزينت سے آراسته مونا، خوشبو نگانا، جمع ہونا ، اظہار بشاشت کرنا ومثل ذلک۔ چنانچ اس کے دلائل جزئیا جزئیا بھی وارد ہیں اور کلیا حدیث للصائم فرحتان (روز وداركيك دوفرتس بن) كاعموم بهي ال يردال ب_يعن حضور صعی التدعلیہ وسلم نے ارشادفر ۱ یا ہے کہ روز ہ دارکو دوقرحتیں حاصل ہوتی ہیں۔

فرحة عندالافطار وفرحة عندلقاء الرحمن

(ایک فرحت افطار کے وقت اورا یک فرحت ابتد تعالیٰ کے لقا کے وقت)

سوایک توافظاراصغرہے جوروزانہ ہوتا ہے اور دوسراافظارا کبرہے جوجموعہ دمضان کاافطارہے لیعنی عمید واوران ووٹوں کو جناب رسول مقبول صلی القدعلیہ وسلم کا کلام جومجملہ جوامع النکلم کے ہے الم سنن السانی کتاب الصیام باب ۲۰۱۰، مسید احمد ۳۳۵،۲۵۲، کے العمال ۲۲۵۹۳ ش ف ہے۔ پس یوم عید جامع ہوگیا عبادات وفر حطبعی کا پھر خودان عبادات میں ہھی فرح وف طبعی
کا کا کا کا درکھا گیا ہے۔ چنا نچہ جوش سرت میں مسلمان کا طبعی امر ہے اللہ اکبر ہمتا۔ سونماز میں
ہی داخل کیا گیا۔ ولت کبو وا للہ ایسی اللہ تعالی کی برائی بیان کرو۔ کی بید سی تفسیر کی گئی ہے۔ غرض
جوامر طبعی تھا اس کو جزونماز کردیا اور چونکہ موقع تھا ظہار سرور کیٹر کا واقل المجمع ثلاث کم ہے کم
جوع میں تین ہوا کرتے ہیں۔ تین تکبیریں ایک رکعت میں اور تین دوسری رکعت میں مقروفر مائیں
اور بعض بعض صی بیڈ کے بزوی کے زائد بھی ہیں گرتین ہے کم نہیں۔ پھر قرار است کے صل ہے رکوع و تجدہ
اور بعض بعض صی بیڈ کے بزوی کے کہ اظہار سرور کے کلمہ کا تو اتر بھی امر طبعی ہے اور ہے رکعت ثانیہ
عیں تو ظاہر ہے یاتی پہلی رکعت میں تغیل اظہار کے کلمہ کا تو اتر بھی امر طبعی ہوگئی۔ غرض امر طبعی
کو جزونما ڈیٹا دیا گیا۔ ریتو نماز کا بیان تھا۔

صدق قطر: اب مدق فطرکا و کرکیا جاتا ہے اور بیصدقہ صاحب نصاب کے ذمہ ہے کہ وہ اپنی طرف سے اورا پے نابالغ بچوں کی طرف سے اوا کرے۔ اولا دبالغ اور بیوی کی طرف سے داجب نہیں اگر بیوی اور بالغ اولا دخود مالدار بنصاب صدقہ فطر ہوں آؤخو داپنی طرف سے اداکریں ورندان کے ذمہ بھی داجب نہیں۔

اگر گیہوں سے صدقہ فطرادا کیا جائے تو ہونے دوسیر نمبری سیر سے اداکرناچاہے اور اگر پورے دوسیر دے دے تو زیادہ بہتر ہے اوراگر جو دیوے تواس سے مضاعف (دوچند) دیوے یکر سردوچندوزن کے اعتبارے دیا ہو بعضی اردوکی کتابوں بیس لکھا ہے فلط ہے بلکہ مطلب سے ہے کہ جس برتن بیس پونے دوسیر گیہوں اوری اس سے دوچند بڑے برتن بیس جتے جو ساویں وہ صدقہ فطر بیس دیے جا کیں گے۔ حاصل میہ کہ دوچند ہونے بیس کیل یعنی ناپ کا اعتبارے وزن اور تول کا اعتبار نہیں خوب بھی لو اور یا در کھوائی طرح جن کے نام صدیت بیس آئے ہیں مثلاً تمروہ گندم اور تول کا اعتبار نہیں آیا ہے جیسے کی ، چاول، پنے وغیرہ سواس کا تھم میہ کہ کسک سے مضاعف ہیں اور جن کا نام نہیں آیا ہے جیسے کی ، چاول ، پنے وغیرہ سواس کا تھم میہ کہ کسک سندوس کی برابر قیمت میں وے دیا جائے۔ بنگال میس چاول کا یہی تھم ہے کہ چاول اسے وینے رہیں ہوتے وہاں آئے ہوں وغیرہ سیری ہوتے وہاں آئے ہیں اندازہ کرنے کا طریق جز شیاتو دیکھا نہیں گر تواعد سے سیہ جو جس آتا ہے کہ کا تا تا بہالاد ہیں جس زرخ ہے فروخت ہوتے ہیں اس کی قیمت کا اعتبار کیا جائے۔ کیا اس کی قیمت کا اعتبار کیا جائے۔ کیا اس کی قیمت کا اعتبار کیا جائے۔ کیا مردق فطرنماز سے پہلے وینا من سب ہے۔ جناب رسول مقبول الم مقبول

صلی القدعلیہ وسلم کی مجی سنت ہے اور اس میں حکمت بیہ کہ جیسے تمہارے عیدہے ایسے ہی مساکین ک عیدہے تو اگر نمازے پہلے ان کو پہنچ جائے گا تو بچارے پکا کر کھالیں سے بیتو می ہمدر دی ہے۔ زمر دستنول کے حقوق

مدعمیان، جدردی تو جمه درد ہیں۔ اس لفظ کا مصداق تو دہاں نظر ہی نہیں آیا۔ چنانچہ برتاؤ ظاہر ہے۔ نفظ نام ہے کہ جدر دان توم ہیں۔ دیکھتے جو جدر دقوم ہوتے ہیں و وہتو لو کر دں کے ساتھ مجھی باوجودان پرحکومت ہونے کے ترحم اور نرمی سے کام لیتے ہیں۔

مامون الرشيد ايك خليفه جيل جن كے زمانه بيس سلطنت اسلامي كابرُ اعروج تھا۔ ان كے بہال حضرت يكيٰ بن النم قاضى مہمان تھے جوامام بخاريؒ كے استاد جيل رات بيس ان كے مہمان كو بياس كى ۔خودانہوں نے كہاكسى غلام كوآپ نے كم كرديا ہوتا فرمانے گئے غلام بچارے تھے تھا كے رات كوسوج تے جيل۔ دل كو كوارانہيں كه ان سے رات كوسوج تو جيل۔ دل كو كوارانہيں كه ان سے رات كوسوج تو جيل۔ دل كو كوارانہيں كه ان سے رات كوسوج تو جيل۔ دل كو كوارانہيں كه ان كا كرام ست كو بھى كام ليا جائے۔ ذرا بھى شان كا خيال نه كيا۔ اور حضرت شان كيا چيز ہے مہمان كا كرام ست ہے اور كوبيد ما موں معتزلى ہے مگرز مانہ كى بركت ہے۔

ای کی بید حکایت ہے کہ ایک باررات میں اس نے غلام کو پکارا یا غلام یا غلام ۔وہ اٹھا برد بردا تا مواکہ یا غلام یا غلام کے جاتے ہو۔ خدا کا خوف نہیں ۔کوئی وقت ہمار ہے چین ہی کانہیں اور خلیفہ خاموش متے۔ یکیٰ بن اسم قاضی کو غلام کے اس گستا خانہ کلام پر غصر آیا۔خلیفہ نے کہا کہ میں اس طریق ہے اوراس حمل سے اپنے اخلاق کی اصلاح کرتا ہوں۔

اب توامراه ملاز مین کی بری گت بناتے ہیں۔ان لوگوں کو چونکہ ذک اختیار ہیں اس لئے زیادہ ترحم اختیار کرنا چاہیے کیونکہ حکومت کی حالت میں اتلاف حقوق پرزیادہ قدرت ہونے سے اس کا دقو چنداں بعید نبیس اور بعضے امراء ایستھے بھی ہوتے ہیں جن کوال اللہ کی صحبت نصیب ہوگئی ہے کیونکہ یہ بات الل اللہ کی صحبت نصیب ہوگئی ہے کیونکہ یہ بات الل اللہ کی صحبت نصیب ہوتی ہے کیونکہ یہ بات الل اللہ ہی ہوتی ہے کیان کواس کا برا اخیال رہنا ہے کہ کی کوہم سے تعلیف نہ ہو۔

ایک قصد حدیث میں ہے کہ لیلۃ البراۃ میں جن برسول الدسلی اللہ عبیہ وسلم کو حضرت جبر تیل علیہ السلام نے مکان کے باہر سے پکارااور خودا ندر نہیں آئے کہ رات کا وقت تھا۔ حضرت عاکشہ مکان کے اندر تھیں۔ کچھ بدن وغیرہ سونے میں کھل جاتا ہے۔ تو حدیث میں آیا ہے کہ جناب رسول اللہ علیہ وسلم اس طرح باہرتشریف لے گئے کہ

قام رویدا۔ یعنی آہتہ کھڑے ہوئے وانتعل رویدا یعنی جوتا آہتہ پہا۔ وفتح الباب رویدا۔ یعنی دروازہ آہتہ کھولا وخوج رویدا۔ یعنی تشریف لے گئے آہتہ واغلق الباب رویدا۔ اوردروازہ کو آہتہ بند کردیا۔ ہرجگہ رویداکہا۔ کہال تک شنے دالاسبق نہ سے گا۔ الباب رویدا اللہ اللہ کا ہے کہ تائم کی آ کھ نہ کمل جائے۔ یہ مدگی کیا ہمدردی کا دعویٰ کرتے ہیں فقط زبان سے کہتے ہیں کرتے ہیں۔ قوال یعنی کیرالقوال ہیں اورافعال نہیں یعنی کیرالعمل نہیں۔

حضرت عثمان رضى الله تعالى عند قرمات عيل: انتهم الى امام فعال احوج منكم الى امام فعال احوج منكم الى امام فوال. (بيتى تم لوگ برنسبت واعظ وامام قوال كزياده يماج بو)

الل شریعت بولتے کم بین کرتے زیادہ ہیں۔

خلاصہ بیان: غرض عیدالفطر بی بھی مساکین کی رعایت سے تقذیم صدقہ کا تھم ہے اوراس بیل غربی بیوں کے ساتھ ہدردی ہے تاعید وعید ندہو جائے بلکہ سارے کی بیل عید ہوجائے۔ سب مسکینوں کو پہنچتا جاہے جاہے وہ نہ یکاویں۔ گراطمینان تو ہوگیا کہ سب بھائیوں کے پاس کھانا موجود ہے۔ پس اس طرح صدقہ مقرر کردیا۔ اور چونکہ حاجت مندکودے کر بھی مسرت طبق ہوتی ہے تواس عبادت بی بھی سروطبی کی رعایت رکھی گئی۔

تیسری عبادت اس ہوم کی امر بالمعروف ہے جس کے لئے خطبہ مقرر فر مادیا۔ بیمی طبعًا علامت محبت کی ہے کہ اپنے بھائیوں کی خیرخوائی کی جائے اور محبت سے زیادہ سروط بی کس چیز میں ہوگا۔ توبہ تو احکام خاص ہوم عبد کے ہوئے۔

اب چونکہ روزہ کی عادت پڑھی تھی۔ جب عید کے دن لقمہ منہ میں جائے گا روزہ یادآئے گا
اورار مان ہوگا کہ کاش پندت قائم رہتی۔ ہی عید سے الگے دن سے بھر صیام شروع فرما دیا۔ اگر تی جا ہے تو

پھر چیرروزے دکھ لوتا کہ ارمان پورا ہوجائے بلکہ فضیلت بھی حاصل ہوجائے۔ قانون رحمت ہے کہ

من جاء بالحسنة فلله عشو امثالها، جوایک نیکی کرتا ہے اس کواس سے دس کنا ماہا ہے۔

پس اس اعتبار سے ایک ماہ رمضان اوران جیوروزوں کے رکھنے سے سال بھر کے روزوں کے رکھنے سے سال بھر کے روزوں کا تواب ہو ایک اندوں کا تواب ہو ہے۔

کا تواب ل جاتا ہے۔ ہیں ان احکام کو بجولواور یا در کھواور میں نیک دے۔ آئین!

النسوان في رمضان

روزه کی آسانی کے متعلق بیدوعظ ۲۹ رمضان ۱۳۳۵ ادر کو بوقت میں ا اپنے مکان میں کری پر بیٹھ کر مستورات کی فرمائش پرفرمایا جوایک گھنٹہ ۴۵ منٹ میں ختم ہوا۔ مولانا ظفر احمد صاحب نے قلمبند فرمایا۔

خطبه ما ثوره

المست الله الرقيل الرحيم

اَلْحَمُدُ لِلَّهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْتُهُ وَنَسْتَغُفِرُهُ وَنُوْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُودُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ اَنْفُسِنَا وَمَنُ سَيَّنَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يُهْدِهِ اللَّهُ فَلاَ مُضَلَّ لَهُ وَمَنْ يُشْهَدُ اَنْ لَااللهُ اِلاَ اللَّهُ وَحُدَهُ مُضِلًّ لَهُ وَمَنْ يُصَلِّلُهُ فَلاَهُ اللهُ وَمَوْلَنَا مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ صَلَّى لَا شَرِيْكَ لَهُ وَنَشْهَدُ اَنْ سَيِّدَنَا وَمَوْلَنَا مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ صَلَّى لَا شَرِيْكَ لَهُ وَنَشُهُدُ اَنْ سَيِّدَنَا وَمَوْلَنَا مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَى اللهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ الْمَابِعُدُ فَاعُودُ لِللَّهُ مِنَ الشَّهُ مِنَ الشَّهُ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ. الله فَاعُودُ اللهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِمُ المَّامَعُدُ فَاعُودُ اللهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِمُ المَّامِعُدُ فَاعُودُ اللهُ عِلْمُ اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى اللهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِمُ المُسْتَعُلُ الرَّحْمُ اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى اللهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِمُ الشَّهُ المُعَلِّلُهُ المُؤْمُونُ السَّمِنُ الشَّيْطُنِ الرَّحِيْمِ. بِشُمِ اللّهِ الرَّحُونُ الرَّحِونُ السَّيْطُنِ الرَّحِيْمِ . يَسْمِ اللّهِ الرَّحُونُ الرَّحِيْمِ .

عسى ربه ان طلقكن ان يبدله ازواجاً خيرا منكن مسلمات مؤمنات قانتات تائبات عبدات سائحات ثيبت وابكارًا. (النعريم ٥)

ترجمہ: اگر پیفیبر سلی امتد علیہ وسلم تم عور توں کو طلاق دے دیں تو ان کا پر وردگار بہت جلد تمہارے بدلے ان کو بہت جلد تم ہے اچھی بیبیاں دے دے گا جواسلام والیاں ایمان والیاں فرہ نیر داری کرنے والیاں توبہ کر نیوالیاں عباوت کر نیوالیاں روز و رکھنے والیاں بول گی کچھ بیوہ سچھ کٹواریاں۔

ا ہل ہیت

یہ ایک آیت ہے سور اُتحریم کی جس میں از وائے مطہرات رضی ابقد تھ کی عنہن کو خطاب ہے۔ جس کا سبب نزول ہے کہ حضور صلی انقد عدید وسلم کے دولت خانہ میں ایک واقعہ ہو گیا تھا جس ہے۔ حضور صلی القد علیہ وسلم مکدر ہو گئے تھے۔ اجمالاً صرف اتنا جان لینا کافی ہے کیونکہ مقصود بیان تفصیل پرموقو ف نبیس۔ چونکہ حق تعالی کو حضور صلی القد علیہ وسلم کی ناگواری منظور نبیس۔ اس لئے حق تعالی منظور نبیس۔ اس لئے حق تعالی سے اس کا علاج ہے گیا کہ از واج مطہرات کو عمال ہے گئے اور ان کو دھمکی دی گئی۔

ان آیات میں ای عماب کاذکر ہے اور یہ دھمکی ایسی ہے جس سے معلوم ہوتا ہے کہ از واج معلیم اے کو معنوں میں اللہ کامل و پندارتھیں معلیم اے کو معنوں ملی اللہ کامل و پندارتھیں اللہ کامل و پندارتھیں کیونکہ یہاں جہنم و فیرہ کی و جسمی نہیں دی گئی نہ کی آفت ارضیہ وجاویہ سے ڈرایا گیا بلکہ دھمکی بیدی گئی کہ اگرتم حضور صلی اللہ علیہ و سلم آم کو طلاق دے ویس کہ اگر می حضور صلی اللہ علیہ و سلم آم کو طلاق دے ویس اور ہم آپ کو تم سے بہتر بیبیاں و سے دیں۔ اور ظاہر ہے کہ بید حملی عاش بی کودی جاسکتی ہے جو بیوی عاش نہ ہواس کے تی میں یہ کہ بھی و حملی نہیں بلکہ وہ تو اس کو بشارت سمجھے گی۔ خصوصا جب کہ عدم عاشتی نہ ہواس کے تی میں یہ کہ بھی و حملی نہیں بلکہ وہ تو اس کو بشارت سمجھے گی۔ خصوصا جب کہ عدم عبت کے ساتھ یہ بات بھی ہو کہ شوہر کے یہاں کھانے پہنے کی بھی تھی ہو۔ و نیا کی بیش وراحت بھی نہ ہوجیسا کے حضور کے یہاں حالت تھی کہ بعض دفعہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم کے یہاں فاقہ بھی ہوتا تھا۔

حفرت عائشہ رضی اللہ عنہ افر ماتی ہیں کہ بعض دفعہ دوم بین تک ہمارے گھر میں چواہا نہیں جاتا تھا۔ بس کچھ جھوادے اور پانی کھا لی کر گر دکر لیتے تھے اور پیخت تھی کی حالت اوائل جمرت بیل تھی۔ بعد میں بید حالت تو ندوی تھی کی وفکہ جب فتو حات کی کشرت ہوئی تو آپ کے پاس اس قد رسامان آتا تھا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک ایک آبی کو موسواونٹ عطافر مائے۔ ایک اعرائی کو بحر یوں کا اتبابرا اس کی حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک آبی کو موسواونٹ عطافر مائے۔ ایک اعرائی کو بحر یوں کا اتبابرا اس کی دفیا ہے تھی اور ہزاروں بحر بیاں دے و بیا اس کی دلیل ہے کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس بہت سامان تھا مراس پر بھی بیتو سنج اپنے لئے نہیں تھا بیکہ دوسروں بی کہ آپ تھی۔ اس کی دلیل ہے کہ آپ صلی اللہ علیہ واسطے تو یہ حالت تھی کہ اگر شام کو پھی مونا چا ندی آیا تو رات سے پہلے بھی۔ خرج فرمادیت تھے۔

چنانچدایک دفعہ عمر کی نمازے سلام پھیر کر حضور صلی اللہ علیہ وسلم بہت تیزی کے ساتھ اپ دولت خانہ ہیں تقریف لے گئے۔ صحابہ واس سرعت سے تشویش ہوئی یہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے والی تشریف الا کرفر مایا کہ میرے گھر ہیں پہھی مونا رکھا تھا جوابھی تک تقسیم نہیں ہوا تھ اور نبی کو من سب فہیں کہ دات کواس کے گھر ہیں دیناررہے۔ اس لئے ہیں نے جا کراس کی تقسیم کا انتظام کردیا۔

اس وجہ سے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے یہاں بعض دفعہ فتو حات کے بعد ہی تنگی ہوجاتی تھی کیوجاتی تھی کیونکہ آپ تی ہوجاتی تھی کیونکہ آپ تی ہوجاتی تھی کے دینا کی ہوجاتی تھی کیون کے بعد ہی تنگی ہوجاتی تھی کیونکہ آپ تی ہوجاتی تھی کیون ایسا دیکھ ہو یا اللہ مفلس نہ ہے تی آ دمی کیون والی نے آ دمی کیون والی ایک ایک آ دمی کوسوسوا وزن اور بکر یون کار یوڑ جنگل بحرا ہواد ہے دیں۔

غرض اول اول تو آپ صلی القدعلیہ وسلم کے یہ س فاقہ کی نوبت آتی تھی اور فتو حات کے بعد میدتو ندر ہاتھا بلکہ آپ اپنی سب بیبیوں کا سال بھر کا خرج آیک دم ہے دے دیارتے تھے گر پھر مجھی زیادہ وسعت نہتی کیونکہ مال آپ کے یہاں جمع تو ہوتا ہی نہیں تھا اور اس سال بھر کے خرج کی نعمیل تو معلوم نہیں گرحضور صلی الله عدید وسلم کی دعابیہ ہے.

بعض لوگول کوایک حدیث سے شہر ہوگیا ہے۔ وہ یہ کہ حضورصلی اللہ علیہ وسلم نے ایک دفعہ حضرت علی و فاطمہ و حضرات حسنین رضی اللہ تعالیٰ عنہم کواپٹی عبامیں واخل فر ما کرفر مایا مطرت علی و فاطمہ و حضرات حسنین رضی اللہ تعالیٰ عنہم کواپٹی عبامیں واخل فریا کرفر مایا اللہ معولاء اهل بیت ہیں)

اس سے بعض تقلمندوں نے سے بھاہے کہ ازواج مطہرات اہل بیت میں داخل نہیں۔ حالانکہ حدیث کا مطلب یہ ہے کہ اے اللہ بیت میں سے جیں۔ ان کوبھی انعمایر یا الله لیڈھب عنکم الوجس اہل البیت ویطھر کم قطھیوا کی فضیلت میں داخل کرلیاجائے۔ یہاں حصر مقصود نہیں کہ بس یہی اہل بیت جیں اور ازواج مطہرات اہل بیت نہیں کرلیاجائے۔ یہاں حصر مقصود نہیں کہ بس یہی اہل بیت جیں اور ازواج مطہرات اہل بیت نہیں جی اس دریہ جواس حدیث کے بعض طرق میں ہے کہ جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ان حضرات کو عمام میں داخل فر ماکر یہ دعاکی توام سلمہرضی اللہ عنہا نے عرض کیا کہ یارسول اللہ بیجے بھی ان کے ساتھ شامل فر ماکر یہ دعاکی توام سلمہرضی اللہ علیہ کرتم اپنی جگہ ہو۔ اس کا یہ مطلب ہے کہ تم ماتھ حضرت اس کا یہ مطلب ہے کہ تم کوعباء میں داخل کرنے کی ضرورت نہیں تم تو پہلے بی سے اہل بیت میں داخل ہو دوسرے حضرت علی تھا۔ یہ علی حضرت ام سلمہ توعبا میں کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ علی حضرت ام سلمہ توعبا میں کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ علی حضرت ام سلمہ توعبا میں کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ علی حضرت ام سلمہ توعبا میں کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ علی حضرت ام سلمہ توعبا میں کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ علی حضرت ام سلمہ توعبا میں کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ علی حضرت ام سلمہ توعبا میں کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ علی حضرت ام سلمہ توعبا میں کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ علی دیت میں کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ علی حضرت ام سلمہ تو بیا ہوں کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ علی دیت میں کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ دیت میں کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ دیت کی خوباء میں کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ دیت کونکر داخل کیا جاسکتا تھا۔ یہ دیت کونکر کیا جاسکتا تھا۔ یہ دیت کی خوباء میں دیا کونکر کیا جاسکتا تھا کیا کہ دیت کی خوباء میں دیت کی خوباء میں کا دو دو سرے حصر کی دیت کی دو در سے دیت کی دیت کی دیت کی دیت کی دو در سے دیت کی دو در سے دیت کی دیت کی دو دو سرے دیت کی دیت کی دو در سے دیت کیا کہ دو در سے دیت کی دو در سے دیت کی دو در سے دو در سے دیت کی دو در سے دو در سے دیت کی دو در

لے مس التو مذی:۲۰۲۲-۲۰۲۲ مستد أحمد ۲۰۲۲ مستد أحمد ۲۰۰۲ مستد أحمد ۲۰۰۲ مستد

توادكالات كاجواب تمايه

اصل مدعا کے لئے ولیل اول تو لغت ہے کہ آل محمصلی القدعلیہ وسلم جی از واج اولا واضل ہیں و دسرے قرآن کا محاورہ میں ہے۔ حق تعالی نے ابراہیم علیه السلام کے واقعہ جی جب کہ ملائکہ نے ان کو ولدگی بشارت دی اور حضرت سمارہ کو اس بشارت پر تعجب ہوا، ملائکہ کی طرف سے بیقول نقل فر مایا ہے۔
قالو ا تعجبین من امر الله و حملة الله و بر کاته علیکم اهل البیت انه حمله محمله

ترجمہ: فرشتوں نے کہا کہ کیاتم خدا کے کاموں میں تبجب کرتی اور (خصوصاً) اس خاندان کے لوگوتم پراللہ کی (خاص) رحمت اور اس کی (انواع اقسام) کی برکتیں (نازل) ہوتی رئتی ہیں بے شک وہ (اللہ تعالی) بڑی تعریف کے لائق (اور) بڑی شان والا ہے۔ ظاہر ہے کہ یہاں الل بیت میں حضرت سارہ علیجا السلام یقییناً واخل ہیں کیونکہ خطاب انہی سے ہے معلوم ہوا کہ اہل بیت میں از واج نبھی داخل ہیں۔

ازواج مطهرات

جب یہ ثابت ہوگیا اوراد حربہ ثابت ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے آل محد کے لئے یہ وعافر مائی ہے کہ ان کارزق بعقدر قوت ہوتو خودازواج کے لئے حضور صلی ابلہ علیہ وسلم نے قدر قوت ہے نے یہ درقوت ہے نے دیادہ کی مقدار معلوم نہیں مگراس دعا ہے اجمالاً اتنا معلوم ہوگیا کہ ازواج کا سالا نہ نفقہ قدر قوت سے زیادہ نہ تھا۔ پھراس پر حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی ازواج مطہرات کی بھی تھیں ۔ خصوصاً حضرت زینب و حضرت عائشہ رضی اللہ عنہما کی سخادت تو مشہور تھی اور حضور صلی اللہ عنہ ہی ۔ اور بخیل تو ان بیس ہے ایک بھی تھی اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم تو تنی بنے بی ۔

آپ سلی املہ علیہ وسلم اس قدرمہمان نواز سے کہ ایک وقت میں بعض وفعہ بارہ بارہ مہمان آپ سلی اللہ علیہ وسلم اس قدرمہمان نواز کے بیال ہوتے سے اور گھر میں گھڑے کے پانی کے سوا کچھ بھی نہ ہوتا تھا۔ اس خاوت اورمہمان نوازی کے سماتھ تو اگرزیا وہ سامان بھی آپ سلی امتد عدیہ وسلم کے یہاں ہوتا جب بھی تھوڑا تھا چہ جا نیکہ آپ سلی امتد علیہ وسلم کے یہاں بہتی تھوڑا تھا چہ جا نیکہ آپ سلی امتد علیہ وسلم کے یہاں بچھ سمامان جمع بھی نہ ہوتا تھا۔

یس ایس حالت میں حضرات از واج مطہرات کا رسول انتدسلی الندعلیہ وسلم کی خدمت میں رہنے کی تمنا کرنا ان کی عافیت محبت کی دلیل ہے اوران کی بیرحالت خوداس آیت ہے معلوم ہور ہی ہے کہ جن تعالی نے ان کو صرف ہے وہ مکی دی ہے کہ مکن ہے کہ حضور صلی التدعیہ وسلم تم کو طلاق و ہے کراور نکاح کرلیں اس وہ مکی ہی ہے معلوم ہوتا ہے کہ از واج مطہرات حضور صلی التدعلیہ وسلم کی عاشق تھیں۔ اگروہ و نیا دار ہوتیں اور حضور صلی التدعیہ وسلم سے ان کو محبت نہ ہوتی تو اس وہ مکی کا پہلے عاشق تھیں۔ اگروہ و نیا دار ہوتیں اور حضور صلی التدعیہ وسلم سے ان کو محبت نہ ہوتی تو اس وہ مکی کا پہلے مجمی اثر نہ ہوتا اور ایس حالت بیں اس کا نز ول عبث ہوتا حالانکہ ایسانہیں ہوا اور نہ ہوسکیا تھا۔

از وائ مطہرات میں جو بھی سوکنوں جیسے واقعات ہوئے ہیں تو وہ دنیا دار مال کی وجہ سے نہیں تو وہ دنیا دار مال کی وجہ سے نہیں ہتے بلکہ ان سب کا منشا صرف میں تھا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی عنایات ومحبت کسی کے ساتھ زیادہ در کچے کر باہم رشک ہوتا تھا اور یہ محبت وعشق کے لوازم ہیں ہے ہے ۔

باسابہ ترائی پندم ہے عشق است وہزار بدگمانی (بین بیس) رہے عشق است وہزار بدگمانی بوتی ہیں) میں تبراروں بدگمانیاں ہوتی ہیں) عاشق تھی بزاروں بدگمانیاں ہوتی ہیں) عاشق تو یوں چا بتا ہے کہ میرے مواکی کومیرے مجبوب کی خبر بھی شہو۔ چنانچہ ایک بزرگ نے حتی تعالیٰ سے دعا کی کہ میں آپ کے کسی عشق کود کھنا چا بتنا ہوں۔ تھم ہوا کہ فلال بہاڑ پر جاؤ۔ وہاں تم کو ہمارا ایک عاشق ملے گا یہ وہاں پنجے اور جاکر اس کوسلام کیا۔ بس سلام کی آ واز سنتے ہی اس نے ایک جی ماری اور فور آ مرگیا۔ یہ بزرگ بڑے جیران ہوئے کہ یہ کیا تصدیم۔ میں تو اس سے ملے اور جا کہ رہاں کو میں اور فور آ مرگیا۔ یہ بزرگ بڑے جیران ہوئے کہ یہ کیا تصدیم۔ میں تو اس سے ملے اور جا تر ان ہوئے کہ یہ کیا تصدیم۔ میں تو اس سے ملے اور جا تر ان ہوئے کہ یہ کیا تصدیم۔ میں تو اس سے ملے اور جا تر ان ہوئے کہ یہ کیا تھا۔ یہ میری آ واز سنتے ہی شم ہوگیا۔

حیف ورچشم زدن صحبت یارآ خرشد کی اسر ندیدیم و بهار آخرشد (افسوس پلک جھیکت عاموم بهارتم ہوگیا) ایس پلک جھیکت عاموم بهارتم ہوگیا۔ بھی پھول کو جی جرکرد یکھا بھی ندھا کہ موسم بہارتم ہوگیا) حق تحقال ہے اس کاراز دریافت کیا۔ جواب ملااس شخص کواب تک بید خیال تھا کہ بس امند تعالیٰ کو جانے والا دنیا جس تنہا ہیں ہی ہوں۔ اس خیال ہیں بیخوش تھا اور مست تھا۔ تمہارا سلام اور اس جی رحمت اللہ من کرا ہے خبر ہوئی کہ نہیں اور بھی خدا تعالیٰ کے جانے والے دنیا ہیں موجود جی (اور قباء ہے کہ فوظ نہیں ہوں) اس کا اس کواس قدر نم ہوا کے تحل ندکر سکا اور فورا جان دیدی۔ جب عشق کا یہاں تک تقاضا ہے تو بھلا ناشق کو یہ کیونکر گوارا ہوسکتا ہے کہ محبوب کو کس دوسرے کی طرف زیادہ توجہ ومیلان ہو۔ ای وجہ ہے از دائ مطہرات ہیں بھی بھی چھیچھیٹر چھاڑ ہوجائی تھی جس کا مشاخص اس کا مشاخص ہوجائی تھی جس کا مشاخص است دوسرے کی طرف زیادہ توجہ وسلان کے محبت و حرص تھی بلکہ تحض صفورگی محبت اس کا مشاخص۔ جو جائی تھی جس کا مشاخص است عطافر ما نہیں اور غلام ما ندی جن خوص سے دنیا ہو جائے وہ میں است علیہ وسلم کوئی تھی کی خوص سے حضور صلی استہ علیہ وسلم کوئی تھی لیے نو جات عطافر ما نہیں اور غلام ما ندی جن خوص سے دنیا ہوں سے حضور صلی استہ علیہ وسلم کوئی تھی لیے نو جات عطافر ما نہیں اور غلام ما ندی جنانچے جب حضور صلی استہ علیہ وسلم کوئی تھی لیے نو جات عطافر ما نہیں اور غلام ما ندی

اور مال ومتاع اور باغات غنیمت میں بمثرت آئے اور آپ صلی الشعلیہ وسلم نے مسلمانوں میں استے تقسیم فر مایا تواس وقت حضرات از واج مطہرات نے بھی حضورصلی الشعلیہ وسلم ہے درخواست کی کہ جسیا آپ صلی الشعلیہ وسلم دوسروں کو بے در اپنے عطافر مار ہے ہیں تو ہم کو بھی مال غنیمت میں ہے بچھ عطافر مار ہے ہیں تو ہم کو بھی مال غنیمت میں الشعلیہ وسلم منا اور جارے نفقہ میں بھی پہلے سے زیادہ بچھ اصرار کیا جو حضورصلی الشعلیہ وسلم کو الشعلیہ وسلم نے اس سے انکار کیا۔ از واج مطہرات نے بچھ اصرار کیا جو حضور صلی الشعلیہ وسلم کو الشعلیہ وسلم کو است خیر کا نزول ہوا۔ جن میں حضرات از واج کو افتیار دیا گیا ہے کہ اگر وہ متاع دنیا کی طالب ہیں تو بس ایک دفعہ بی بحرکر دنیا لے لیس اور حضور صلی الشعلیہ وسلم ان کو طلاق متاع دنیا کی طالب ہیں تو اس مالی الشعلیہ وسلم اور دار آخرت کی طالب ہیں تو اس صالت میں حضور صلی الشعلیہ وسلم اور دار آخرت کی طالب ہیں تو اس صالت میں حضور صلی الشعلیہ وسلم اور دار آخرت کی طالب ہیں تو اس صالت میں حضور صلی الشعلیہ وسلم اور دار آخرت کی طالب ہیں تو اس صالت میں حضور صلی الشعلیہ وسلم رکھنا جا ہیں۔

يايها النبي قل الازواجك ان كنن تردن الحيواة الدنيا وزينتها فتعالين امتعكن واسرحكن سراحاً جميلا، الخ.

ترجمہ: اے نی اکرم صلی انشدعلیہ وسلم آپ اپنی بیو یوں سے فرماد یجئے کرتم اگر و نیوی زندگی (کاعیش) اور اس کی بہار چاہتی ہوتو آؤیس تم کو پچھ مال ومتاع (دنیوی) دے دوں اور تم کوخو بی کے ساتھ رخصت کروں۔

جب بیآ یات نازل ہو کیں تو سب ہے پہلے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت عاکثہ صدیقہ رضی اللہ عنہا کو بیآ یات سنا کیں اور فر مایا جواب بیں جلدی نہ کرنا بلکہ اپنے والدین ہے مشورہ کرے جواب وینا حضرت عاکشہ رضی اللہ عنہا فرماتی ہیں کہ حضور صلی اللہ عنہ و بید خیال ہوا کہ عاکشہ کم سن بھی جیں اور بھین شن و نیا کی حرص ہونا کچھ بعید نہیں تو ایسا نہ ہو یہ جلدی ہے و نیا کو اختیار کرلیں۔ اس کے فرمایا کہ اپنے والدین سے مشورہ کرے جواب و بینا کیونکہ ان کے متعلق آپ سے مفارفت کی رائے بھی نہ ویں آپ سلی اللہ علیہ وسلم کوا طمیمینان تھا کہ وہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے مفارفت کی رائے بھی نہ ویں آپ سلی اللہ علیہ وسلم کوا طمیمینان تھا کہ وہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے مفارفت کی رائے بھی نہ ویں گر حضرت یا کشروضی اللہ عنہ این مقارفت کی رائے بھی نہ ویں گر حضرت یا کشروضی اللہ عنہ اللہ علیہ ویا کہ ویا سے دیا کہ ویا ہے۔ گئیر کوئن کرفوراً جواب ویا۔

فی هذا استاموا ہوی . کیااس معاملہ ش اپنے والدین سے مشورہ کروں گی۔ قد اختوت الله ورسوله والدار الآخوة. میں نے اللہ ورسول سلی اللہ علیہ وسلم کوافتیار کیااوروار آخرت کو۔ ان کے اس جواب سے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو بہت مسرت ہوئی۔ کیونکہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کوان سے بہت محبت تھی۔ عشق ومحبت

ا حادیث پی آتا ہے کہ حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا نکاح اس وقت ہوا تھا جب کہ یہ چے سال کی تھیں اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے گھر ہیں جس وقت آئی تھیں اس وقت ان کی عمران کی عمران کیا ہوتی ہے۔ ہندوستان ہیں تو توسال کی اور کا ہر ہے کہ لوسال کی عمران کیا ہوتی ہے۔ ہندوستان ہیں تو توسال کی اور کھر داری کے قابل نہیں ہو سکتی ۔ محرعر ہیں نشو ونما اچھا ہوتا ہے وہاں نوسال کی لڑکیاں اٹھان ہیں انچھی ہوتی ہیں۔ اس لئے حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نوسال کی عرضور صلی اللہ عنہا نوسال کی عرض ہوتی ہیں۔ اس محرجی جین تو دنما وہوتی ہی ہیں۔ نشو ونما اچھا ہونے ہے جین تو زائل نہیں ہوجاتا۔ تو اس عمر ہیں بچپن کی با تمی تو ہوتی ہی ہیں۔ نشو ونما تجھا ہونے ہے ہیں وہوتی ہی جیں ہوتی بچھا ہونے ہے ہیں تو زائل نہیں ہوجاتا۔ تو اس عمر ہیں اگر مال ومتاع دنیا کی زیادہ حرص ہوتی ہی تجب نہیں۔ بچوں کو زیور ، سکتے کی حرص ہوتی ہے۔

مگر حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا با وجودائ کم کی کے بڑی بڑی عورتوں ہے عقل وہم واوب ہی مشکل مسائل میں رجوع ہیں کم منتھیں۔ بلکہ سب سے بوحی ہوئی تھیں۔ بڑے بڑے صحابہ ان سے مشکل مسائل میں رجوع کرتے تھے۔ ای عقل وہم کا بیاثر تھا کہ توسال کی عمر ہیں بھی بھی بھی ان کے اندر بچیوں کی می حرص وطبع فہتی بلکہ واناعورتوں کی طرح استعناء کی شان تھی۔ بڑی بات بیتھی کہ جھے حضور صلی اللہ علیہ واناعورتوں کی طرح استعناء کی شان تھی۔ بڑی بات بیتھی کہ جھے حضور صلی اللہ علیہ والم کو ان سے محبت تھی وہ بھی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو ان سے محبت تھی وہ بھی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی عاشق تھیں۔ چنا نچہ یہ جو اب دے کرعوض کرتی ہیں کہ یا رسول اللہ میری ایک ورخواست ہے۔ کی عاشق تھیں۔ چنا ہے گا۔ مطلب فرمایا وہ کیا؟ کہا ، وہ بید کہ آپ میر سے اس جو اب کو دوسری از واج سے بیان نہ فرمایے گا۔ مطلب میں اور قیب کہ ہو اب کی موتو وہ الگ ہو جائے رائے کیا جو اب دیں تو اوجو اسے کہ موجو ہے۔ کہ میں میں اند عنہا نے کیا جو اب دیا تو ہیں بٹلا اور رقیبوں کی تعداد پچھ مجھے بتا نے کی ضرورے نہیں ۔ اور ارشاد فرمایا کہ اگرکوئی جمھے جے بتا نے کی ضرورے نہیں ۔

توحضرت عائشہ رضی المدعنہا کی اس درخواست سے ان کی محبت کا رنگ معلوم ہوگیا کہوہ

یوں جا ہتی تھیں کہ حضورصلی اللہ علیہ وسلم میں جواسے شریک ہیں وہ کم ہوجا نمیں تواجیعا ہے اوراس میں ووسرں کے ساتھ برائی کا قصد نہ تھا بلکہ اپنے لئے بھلائی کا قصد تھا کہ حضورصلی اللہ علیہ وسلم تنہا میرے بی لئے ہوں اوراس تمنامیں عاشق معذور ہوتا ہے ایک رنگ تو یہ تھا۔

ایک رنگ بیتھا کہ حضرت ام حبیبہ نے ایک وفعہ حضورصلی اللہ علیہ وسلم ہے عرض کیا کہ
یارسول اللہ آپ میری بہن ہے شادی کر لیجئے۔حضورصلی اللہ علیہ دسلم نے فرمایا کیا تم کو یہ گوارا ہے
؟ انہوں نے کہایارسول اللہ میں آپ کے پاس اکیلی تو ہوں نہیں بلک اب بھی میرے شریک بہت
ہیں تو اگر اس فیر میں میری بہن شریک ہوجائے تو اس سے معتبر کیا ہے۔ غیروں کی شرکت سے
بہن کی شرکت تو پھرا ہون ہے حضورصلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ میمیرے واسطے حلال نہیں۔
بہن کی شرکت تو پھرا ہون ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ میمیرے واسطے حلال نہیں۔
عشق کا ایک رنگ یہ بھی ہے جو حضرت ام حبیبہ میں تھا کیونکہ وہ بہن کا سوت ہونا محضور اس خطورت ام حبیبہ میں اللہ علیہ وسلم کے
لئے گوارا کرتی تھیں کہ میری بہن کو بھی حضور سے خاص تعلق ہوجائے جواس کے لئے سعادت
آخرت کا سبب ہو۔ اس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ حضرت ام حبیبہ ہے سالی اللہ علیہ وسلم کے
التحلق کی گنٹی قدروان شیس۔

بہرمال جب یہ آیت تخیر نازل ہوئی تو سب ازوان نے حضور ہی کواختیار کیا۔ ونیا کوکس نے بھی اختیار نہیں کیا۔ اس ہے بھی معلوم ہوتا ہے کہ ان کوحضور صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ کی درجہ کی محبت تھی کہ فقر وفاقہ اور تنگی میں رہنا منظور تھ گرحضور صلی اللہ علیہ وسلم ہے عین کہ منظور تہ تھی۔ چنا نچہاں محبت ہی کی وجہ سے ان کوحق تعالی نے جہنم کی دھمکی وغیرہ نہیں دی بلکہ صرف اس سے ڈرایا کہ ویکھو بھی تم کو حضور صلی اللہ علیہ وسلم اپنے سے علیمہ و نہرہ بین دورتم بیت بھیا کہ اگر منظور تہ کہ کو الگ کردیا تو ہم ہے بہتر بیبیاں کہاں سے ملیں گی۔ خوب سجھ لوکہ اگر حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے کہ کو طلاق وے دی تو تو تعالی تا در بین کہ وہ تم ہے بہتر بیبیاں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کود سے کہ کو طلاق وے دی تو تعالی تا در بین کہ وہ تم ہے بہتر بیبیاں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کود سے کہ کو طلاق وے دی تو تعالی ان بید له از واجا خیر منگن بیتر ایمالا ان کی خیر بت کا ذکر تھا۔ آگے اس خیر بت کی تفصیل ہے کہ دہ بیبیاں کیسی ہوں گی۔

مسلمات كي خصوصيات

مسلمات مؤمنات قانتات تانبات عبدات سائحات. وواسلام والیال ہوں گی اور ایمان والیال اور عبادت اللہ تعالیٰ سے توب کرنے والیال اور عبادت

اورس کی ت ہول گی. سائحات کی تفسیر عنقریب آتی ہے۔ بیٹو تشریعی صفات ہیں آ کے تکویی صفات ذکور ہیں ٹیبلت و اہکار أ۔

ال مقام پرایک اشکال طالب علانہ ہے۔ وہ یہ کہ کیا حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے وقت میں از واج مطہرات سے خیر وبہتر عورتیں موجود تھیں۔ اگرنہیں تھیں توبیہ دھمکی کیسی؟ اورا گرتھیں توبیہ بظاہر بہت ایدیہ ہے کہ ان سے بہتر عورتیں دنیا میں ہوں اور حق تعالیٰ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے لئے کمتر تیجو یز قرما کمیں۔

دوسرے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے کمال فیض وقوت تا جیر صحبت پر نظر کر کے ہیں جھی میں نہیں آتا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی صحبت یا فتہ عور توں ہے بہتر کوئی ایسی عورت ہو سے جس نے ابھی تک حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی صحبت حاصل نہیں کی اور خور فس جس بھی تو ہے بانست النہ اللہ علیہ وسلم کی بیمیو تم معمولی عور توں کی طرح کا حدمن النہ ان اتفیتن (اے نی اکرم صلی اللہ عیہ وسلم کی بیمیو تم معمولی عور توں کی طرح نہیں ہو) اس آیت جس قلب ہے مطلب ہے ہے لیس احد من النہ ساء کھٹلکن کہ کوئی عورت تم جیسی نہیں ہو اور از واج مطہرات کا متقی ہوتا معلوم تو تا بت ہوا کہ ان کے مشلک کی کوئی عورت دنیا جس اس وقت نہیں ۔ اور یہی ممکن ہے کہ تب نہ ہواور تقدیم اس طرح ہو۔ مشل کوئی عورت دنیا جس اس وقت نہیں ۔ اور یہی ممکن ہے کہ تب نہ ہواور تقدیم اس طرح ہو۔ یہی انساء النبی دینات کیفیر کن ،

اس اشکال کا جواب میں نے ایک عالم کے خادم سے سا ہے۔ وہ اپ شیخ سے قبل کرتے تھے کہ
انہوں نے یہ فر مایا کہ از واج مطہرات کی خیریت تو حضوصلی اللہ علیہ وسلم کے نکاح بی کی وجہ سے تھی۔

قبل از نکاح تو وہ اور دوسری عور تمیں یکسال تھیں۔ پھراگر آپ صلی اللہ علیہ وسلم ان کوطلاق دے دیتے

قوان سے خیریت کم جوجاتی اور دوسری جس بیوبی سے نکاح کر لیتے نکاح کے بعد وہ ان سے

بہتر ہوجاتی ۔ پس خیر امکن بالفعل کے اعتبار سے نہیں فر مایا کہیا بلکہ مالیودل کے اعتبار سے فر مایا کیا ہے۔

بہتر ہوجاتی ۔ پس خیر امکن بالفعل کے اعتبار سے نہیں فر مایا کہیا بلکہ مالیودل کے اعتبار سے فر مایا کیا ہے۔

مفات کو بیان کرتا ہوں جوجن تعالی نے خیریت کے متعلق بیان فر مائی جیں کیونکہ مقصود بیان کا انہی

صفات سے مستنبط ہے قو فر ماتے جیں۔

صفات سے مستنبط ہے قو فر ماتے جیں۔

مسلمات ، کہ وہ عورتی مسلمان ہوں گی اوراسلام جب ایمان کے مقابل مستعمل ہوتا ہے۔ بہتراس مسلمان ہوتا ہوں گی ۔ بہتراس مسلمان ہوتا ہے۔

مؤ منات: لیعنی دہ ایمان والیال ہوں گی۔اس میں درتی عقائد کابیان ہے کہ جن چیزوں کی تقیدیق ضردری ہے جیسے تو حید درسالت ومعا دوغیرہ ان سب پران کوایمان ہوگا۔ یہاں تک تو عقائد داعمال کاذکر ہوا آ گے قرمائے ہیں۔

فسنت: کہ وہ صاحب قنوت ہوں گی جس کے معنی خشوع وخضوع کے ہیں۔ میرے نزدیک اس میں حال کی طرف اشارہ ہے کہ ایمان واسلام کے ساتھ وہ مصاحب حال بھی ہوں مے جس میں اصل خشوع وخضوع ہے جو حاصل ہے قنا کا اور فنا ارفع احلال ہے اور ممکن ہے کہ قتت سے مرادیہ ہو کہ وہ زون کی مطبع ہوں گی۔

تنبت: وہ آو برکرنے والی ہوں گی۔ یعنی وہ مل کے ساتھ آو برکرنے والی ہوں گی اور پہنلیر
اس آیت کی ہے جوسورہ ڈاریات میں ہے۔ کانو اقلبلا من اللیل مایھ جعون و بالا سحار هنم یستغفرون (وہ رات کو بہت کم سوتے سے اور اخیر شب میں استغفار کیا کرتے سے ایستغفرون لتقصیر هم فی العبادة (لیمی سے) جس کی تغییر میں علماء نے فرمایا ہے۔ ای یستغفرون لتقصیر هم فی العبادة (لیمی اپنی عبادت میں کوتا ہوں پر استغفار کرتے سے) کہ وہ رات کو بہت کم سوتے ہیں اور زیاوہ حصد رات کا عبادت میں صرف کرتے ہیں اور زیاوہ حصد رات کا عبادت میں صرف کرتے ہیں اور جے وقت استغفار کرتے ہیں کہ بائے ہم ہے کہ بھی شہورگا۔ شخ شراز فرمائے ہیں:

فرس کشتہ ازبس اشب راندہ اند ہیں سحر کہ خروشاں کہ دایا تدہ اند (ساری رات کھوڑا دوڑایا بعنی عبادت میں مصروف رہے اور سے کے دنت اپنی کوتا ہی کا اظہار کرتے ہیں)

یک تغییر یہال مناسب ہے کہ وہ بیبیال ایک ہوں گی کہ باوجود کمل کے پی تقییر سے تو ہر کریں گی۔
عبدات: اور وہ عور تیس عباوت کرنے والی ہوگی لیعنی تو ہہ کے بعد بھی وہ عبادت وکمل میں تقییر نہ کریں گی۔ ہماری طزح نہ ہوں گی کہ ہم تو ہہ کے بیش تقییر نہ کریں گی۔ ہماری طزح نہ ہوں گی کہ ہم تو ہہ کے بھرات کن وکرتے اور کمل میں کوتا ہی کرتے ہیں۔ بھلا یہ کون ی تقلمندی ہے۔ اس کی تو ایس مثال ہوئی جسے تریاق کے بھروے کوئی سائی سے کٹوائے۔

دوسرے آج کل بہت ہے آدی تو بہ کو ہر گناہ کے لئے کافی سیجھتے ہیں حالا تکہ حقوق العباد میں ۔ محض تو بہ کافی نہیں بلکہ بندول سے حقوق معاف کرانا یا ادا کرنا بھی لازم ہے اور حقوق اللہ ہیں بھی تو بہ سے صرف گناہ معاف ہوتا ہے ادائے حقوق کے لئے تو بہ کافی نہیں۔

مثلاً کسی نے نمازیں قضا کردی ہوں۔ زکوۃ نددی ہو، حج ند کیا ہوتو توبہ سے گناہ معاف ہوجائے گالیکن قضا کروہ نمازوں کی قضالازم ہوگی۔زکو قائیمی گزشتہ سالوں کی لازم ہوگی۔ جج کے لئے بھی وصیت وغیرہ لا زم ہوگی۔ آ گے فرماتے ہیں۔

مشحت: يمي صفت اس ونت مقصود بالبيان ہے۔ جمہورسلف نے سائحات كي تفسير صائمات کی ہے کہ وہ بیبیاں روز ہ رکھنے والی ہوں گی اور بعض نے اس کی تغییر مہاجرات کی ہے۔اس میں بھی معنی صوم کے مرعی و محفوظ ہیں۔ کیونکہ ہجرت میں بھی کھانا پینا جھوٹ جاتا یا کم ہوجا تا ہے۔اول تو گھر ے بے کھر ہونا ترک مالوف میں صوم کے شل ہے کیونکہ انسان کوایے گھر سے بھی بہت الفت ہوتی ہا ورجیے کھانا چینا چھوڑ نااس کوگراں ہے ایسے ہی وطن کوچھوڑ نااور کھرے بے کھر ہونا بھی گرال ہے و دسرے لغت میں غور کرتے ہے معلوم ہوتا ہے کہ سیاحت کے اصل معنی ترک مالوف کے ہیں۔ مید مغہوم اس کے سب معانی میں مشترک ہے۔اب جس میں ترک مالوف زیادہ واضح ہوگا وہ سیاحت كامصداق زياده ہوگا اورجس ميں بيمغېوم كم ہوگا وہ سياحت كامصداق دوسرے درجه ميں ہوگا اور ظاہر ہے کہ ترک طعام وشراب وغیرہ میں جو کہ حقیقت صوم ہے ترک مالوف زیادہ ہے۔ کیونکہ غذا پر حیات انسان کا مدارہے اس سے مجنعل مالوف ہے اور سی کواس سے جارہ نبیں اور بدون گھر کے بہت سے لوگ زندہ ہیں اوررہ سکتے ہیں اس لئے ساحت کی اصل تغییر صور تہیں ہونا جا ہے۔

جس نے بجرت سے تغییر کی ہے اس نے بھی معنی صوم کی اس میں رعایت کی ہے کہ بجرت بھی صوم کی مثل ہے اور اس میں کھا تا پیٹا بھی چھوٹ جا تا ہے کیونکہ سفر میں کھانے کا وہ انتظام نہیں ہوتا جو گھر میں ہوتا ہے۔ بے وقت تو اکثر ہی ملتا ہے اور سیده صف مردوں کی تعریف میں بھی وار د ہوا بسورة توبيل آياب

التائيون العابدون الحامدون السائحون الراكعون الساجدون الآمرون بالمعروف والناهون عن المنكر والحافظون لحدو دالله. (وہ ایسے ہیں جو (مکناہوں ہے) تو بہ کرنے والے میں اور (اللہ کی)عمادت کر تیوالے ہیں اور حمد کر نیوالے ہیں اور روز ور کھنے والے ہیں رکوع کر نیوالے اور سجدہ کرنے والے نیک باتوں کی تعلیم کر نیوالے اور بری باتوں سے باز رکھنے والے اور اللہ کی صدور (احکام) کا خیال رکھنے والے میں)

جس کی تغییر بعض نے صائمون بی ہے کی ہے اور بعض سے سیاحت وسغرے کی ہے

جوغز وہ کے لئے ہویا طالب علم کے لئے یا ج کے لئے۔ کیونکہ سیاحت مطلقہ شرعاً مطلوب نہیں کہ امریکہ اور پیرس اور چین کی مصنوعات دیکھنے کے لئے سفر کرو۔

سياحت الدين

اگرآن کل کے توجوا توں کو یہ تغییر بالسیاحت اس آیت کی ال جاتی تو ووای سے اکتشافات جدیدہ اور سیاحت متعارفہ کو ثابت کر لینے جیسے انہوں نے انگریزی تعلیم کا ثبوت اطلبو االعلم ولو بالصین سے نکالا ہے اوراستدلال اس طرح کیا کہ حضور ہیں نے چین سے بھی طلب علم کا امر فرمایا ہے حالا نکہ وہال اس وقت علم وین بالکل نہ تھا رمحض معنوعات کا علم تھا رمعلوم ہوا کہ پیلم بھی شرعاً مطلوب ہے۔

ال کاجواب ہے کہ اول آوید صدیت ابت نہیں ۔ محدثین نے اس کو ضعیف بلکہ بعض نے به اسل کہا ہے۔ قال السخاوی فی المقاصد و ہو جھین عن انس و هو ضعیف من الوجھین اللہ قال ابن حبان انه باطل الااصل له و ذکرہ ابن المجوزی فی الموضوعات (صس) و معلوم و مال ابن حبان انه باطل الااصل له و ذکرہ ابن المجوزی فی الموضوعات (صس) و دسرے اگر بطریق تنزل اس کو مان بھی لیا جائے تو خوداس صدیث ہی کے الفاظ ہے معلوم ہوتا ہے کہ حضور ملی اللہ علیہ وسلم اس میں ایے علم کی تحصیل کا ذکر قرمارے جیں جو چین میں شق اس کیوں کہ اس میں انفظ ولوہ جو کہ لغة فرض و تقدیرے لئے ہاور فرض معدومات کے ساتھ خاص ہوتا ہے موجودات کو فرض نہیں کیا جاتا۔ اب تو اس صدیث ہے بھی یہ نابت ہوگیا کہ حضور بین اللہ علم کی تاکید فرمارے جیں کو وجین میں اس وقت مفقود تھا اور بطور فرض کے فرمارے جیں کہ اگر چدو علم کی تاکید فرمارے جیں کہ اگر چدو چین بھی اس وقت مفقود تھا اور بطور فرض کے فرمارے جیں کہ اگر چدو

ای طرح اگران لوگوں کواس آیت کی تفییر نظر پڑجاتی تو وہ اطلبو العلم و لو بالصین کی طرح اس آیت ہے بھی علم مصنوعات پراستدلال کرنے لگتے اور اگر سخت پر نظر پہنچ جاتی تو وہ عور توں کے لئے بھی سیاحت امریکہ اور سیاحت لندن کو ثابت کرنے لگتے کیونکہ جولوگ عبدالدیناروعبدالدرہم بیں ان کو ہر جگہ و نیابی سوجمتی ہے۔ جیسے کی نے ایک بھو کے سے کہا تھا کہ وواور دو کے ہوتے ہیں۔ کہا چاررو ٹیاں۔ حالانکہ مطلق سغر مقاصد شرعیہ سے نہیں بلکہ سغر کے متعلق واور دو کے ہوتے ہیں۔ کہا چاررو ٹیاں۔ حالانکہ مطلق سغر مقاصد شرعیہ سے نہیں بلکہ سغر کے متعلق تواکہ حدیث ہیں بیا تا ہے۔

______ الاعتدال ٢٠١٠، لسان الميزان: ١:١٠٩٠،٢٦١١ كرالعمال ٢٨٩٩

السفر قطعة من العذاب فاذا قضى احدكم نهمة فليعجل الرجوع الى اهلة. معزجتم كانكراب جب كام بويك، جلدى الياسية كمرلوث آد

ہاں جوسنروین کے واسطے ہوجیے کی اورطلب علم وجہاد وغیرہ تو وہ البتہ مشروع ہے اور لغت بیس بھی لفظ سیاحت مطلق سفر کے لئے موضوع نہیں بلک سیاحت کے معنی بیں الذہاب فی الارض للعباد ہ والسائ الصائم الملازم المسجد کذافی القاموں۔ ہیں سخت یا سخون سے مطلق سفر کی فضیلت ٹابت نہیں کی جاسک ۔

الصائم الملازم المسجد کذافی القاموں۔ ہیں سخت یا سخون سے مطلق سفر کی فضیلت ٹابت نہیں کی جاسک ۔

پس سلف نے خوب سمجھا ہے السحون اور سخت کی تفسیر سیاحت سے بھی کی تو اس میں عبادت کی قیر برد صادی کہ اگر سفر ہوتو طلب علم کے لئے ہو یا جج کے لئے یا جہاد کے لئے اور حدیث میں بھی تو ہے۔ دسیاحة امنی المجھاد فی صبیل اللہ اس سے بھی معلوم ہوا کہ مطلق سیاحت وسفر اس امت کی عبادت نہیں جب تک اس کوعبادت کا ذریعہ نہنا یا جایا۔

اب میں اس تفصیل کے بعد تصر مسافت کرتا ہوں کہ سائحات کی تغییر یا سیاحت سے یاصوم سے اور دانج معنی صوم کے ہیں مگر دونوں میں وجداشترک میہ ہے کہ سیاحت میں بھی بعض دفعہ کھانے پینے کونہیں ملتا کیونکہ سیاح کامقصود کوئی خاص مقام نہیں ہوتا وہ تو ویسے ہی مارامارا مجرتا کرتا ہے اوراس کا بیحال ہوتا ہے۔

وست ازطلب نہ دارم تا کام من برآیہ ﴿ یاتن رسد بجاناں یا جاں زتن برآید (میں طلب ہے اس وقت ہاتھ نہیں ہٹاؤں گا جب تک میرا کام بن نہ جامے یو تو میرا بدن محبوب تک پہنچ جائے یامیری جان نکل جائے)

اور بیرجالت لندن اور پیرس کے سفر بیس کہاں جس میں کھانے پینے کے لئے صد ہافتم کے سامان ساتھ ہوتے ہیں۔ کہیں سوڈ اکہیں برف۔ بیرحالت صرف ای سفر میں ہوتی ہے جو خدا کے لئے ہوجیسے جہاد کا سفریا خالب علم کا سفریا جج کا سفر۔

اس پر جھ کوایک دکایت یا وآئی۔ اس سے سیاحت الدین کی شان معلوم ہوگی۔ ایک قاری صاحب جوریاست رام پور کے رہنے والے تھان کو ج کاشوق ہوااس وقت ان کے پاس صرف ایک روپیہ چارآئے تھے۔ بس ای طرح انہوں نے جج کاارادہ کرلیا۔ ایک روپیہ کے تو چنے ہمنوائے اور چارآئے کا ایک تھیلا سلوالیا جس میں وہ چنے بحر لئے اور پیادہ پاچل کھڑے ہوئے۔ ایک الصحبح للبخاری ۲ ۱۹۸۱ء میں ابن ماحۃ ۲۸۸۲ء مشکرۃ المصابح للبخاری ۳ ۲۸۹۱ء انسان ابن ماحۃ ۲۸۵۲ء مشکرۃ المصابح عن حمل الأسفار: ۲۲۵۰۱ء مشکرۃ المصابح عن حمل الأسفار: ۲۲۵۰۱ء مشکرۃ المصابح عن حمل الأسفار: ۲۲۵۰۱ء

دن کوروز ہ رکھتے۔ راستہ میں اگر جراطلب کھانامل گیا تو کھ سیاور ندایک مٹی چنے کھالئے اور پائی بی لیا۔ای طرح کی صبینے میں جمبئی بہنچ واقعی بیسیاحت ہے جوابحق باالصوم ہے۔

اب بمبئی ہے آگے دریا تھا اس میں تو چرنا مشکل تھا اور جہاز میں سوار ہونے کیلئے ٹکٹ کے دام چاہئیں اوران کے پاس دام کہ س، جب حاتی جہاز پرسوار ہونے گئے تو یہ بھی جہاز میں پنچے اور کپتان سے کہا کہ جھے بھی جہاز میں نوکری کی ضرورت ہے اس نے ان کی صورت عالمانہ اور برزرگانہ دیکھی تو عذر کردیا کہ آپ کی شان کے لائق میرے پاس کوئی طاز مت نہیں وہ صورت سے بھی گیا کہ بیکوئی نیک اور برزرگ آدمی ہیں۔

نور حق ظاہر بود اندرولی ہیں نیک بیں باشی اگرامل ولی (انوارالٰبی ولی میں نمایاں ہوتے ہیں اگر تواہل دل ہے تو آن کا ادراک کرسکتا ہے) کسی نے اس کا ترجمہ کیا ہے۔

مرد حقانی کی پیشانی کانور ہے کہ کب چھپار ہا کا کور کہ کہ کہ چھپارہتا ہے پیش دی شعور قاری صاحب نے فرمایا کہ آپ لائن اور غیرلائن ہے بحث نہ سیجے جونو کری بھی ہوکیسی ہی ذلیل ہو میں کرلوں گا۔ (کیونکہ ٹوکری مقصود تھوڑا ہی تھی جہاز میں سوار ہوکر ملہ پنچنا مقصود تھا) کہتان نے کہا کہ آپ ہو کے کہا کہ آپ ہو سے گی۔ کہاتم بتلاد تو ایک وہ کیا نوکری ہے؟ کہا میرے پاس صرف بعثی کی توکری فالی ہے۔ قاری صاحب نے فرمایا کہ جھے منظور ہے۔ کپتان بڑا جیران ہوا کہ ہو اگھ ایک ہو گاری صاحب کو عاجز کرنے کے لئے کہ اس کے ساتھ ایک کام مشقت کا بھی ہے تم ہے نہ ہو سکے گا۔ اگر تم کوای پراصرار ہے تواچھا یہ بورااٹھاؤ۔ وہاں دواڑھائی من کا ایک بورا پڑا ہوا تھا۔ قاری صاحب اس کی طرف چلے اور ہم اللہ کہہ کر ہاتھ لگایا اور جن تعالی ہے جوا فیایا ہے تو سرے اوپر لے گئے۔ اور پھر کھ دیا اب آپ کا کام ہم کہ کہ کر ہاتھ اور کہا شاباش شاباش شاباش اچھا ہم نے تم کو طلازم کرایا۔ اس کو بڑی جرت ہوئی کہ اس و بلے کہ کہ دور آ دمی نے افراد اور ہیوں کا دار جو گاہدے کہا ہوئے کہ دور آ دمی نے افراد اور ہیوں کا دار جو گاہدے کہا ہوئے کہ دور آ دمی نے افراد اور ہیوں کا دار سے بیار سے کہا ہم ہوئے کہا تا بوجھا تھا بھتے تھے۔ پہلے کم دور آ دمی نے افزاد اور ہیوں کا دار تہ بیدل طے کے ہوئے کہا تا بوجھا تھا بھتے تھے۔ ریاضتیں کرنے والے اور ہیوں کا دارت بیدل طے کے ہوئے کہا تا بوجھا تھا بھتے تھے۔ اس وقت اور ہی کے اور جو کی بھتان سے کہا در اسے کہا ہوں نے گئرے تھا نہوں نے گئی کہتان سے کہا در اس وقت اور بھی دوئر بہ آ دمی جو تھی گئرے تھا نہوں نے گئی گئان سے کہا

کہ ہم کوبھی کوئی ملازمت جہازی دے دیجے اس نے کہا کہ بہی بھتگی کی ملازمت تم کوبھی ال سکتی ہو وہ اس کے لئے آمادہ نہ ہوئے تو قاری صاحب نے فرمایا کہ اربادلند کے بندوجے سے کیوں محروم رہتے ہو۔ اگرتم کو اس کام سے عار آتی ہے تو تم یہ نوکری منظور کرلو۔ تمہارا کام بھی جس بی کردیا کروں گا۔ چنانچے کئی آومیوں کا کام اپنے سر لے لیااوراب میصالت ہوئی کہ دوڑانہ جہاز کے یا فانوں کو کہائے اور دھوتے تھے۔ ہائے ۔

ایں چنیں شیجے گدائے کو بہ کو بہ ہوئی عشق آمد الا ابالی فاتقوا
(ایبانقیرصغت شیخ عشق میں برا الا ابالی ہے لیں ڈرتے ہی رہو)

ریعشق کی نیرنگیاں ہیں اس کا مجھ ضابط نہیں ہے۔
عشق را تازم کہ پوسف را ببازار آورد ہی ہمچو صنعا زاہدے راز برز تار آورد
(عشق کواس پرنازے کہ حضرت پوسف علیا اسلام کو ہر بازارے آیا صنعا جسے زاہد کوز تاریب بنادیا)

بس اس کا ایک ضابط تو رہ جاتا ہے کہ شرقی صدود پر رہے باتی سب رخصت اورا گرکوئی عاشق مجذوب ہوگیا تواس کے لئے بیضا بط بھی نہیں رہتا۔

قاری صاحب دن کویہ کام کرتے۔ نمازوں کے وقت دوسرے کپڑے شل کرکے پہن لیے اوردات کو تہجد میں قرآن خوش الحانی ہے پڑھتے ایک دفعہ کپتان بھی رات کو قاری صاحب کے پاس گزرا۔ ان کا قرآن می کر گھڑا ہو گیا اور سنتار ہاجب آپ نمازے فارغ ہوئے تو ہو چھا، کہ تم یہ کیا پڑھ رہے تھے۔ فر مایا کہ یہ ہمارے ضدا کا کلام ہے۔ کپتان بولا کہ ہم کو بھی سکھلا ؤ۔ ہم کویہ اچھا معلوم ہوتا ہے فر مایا کہ اس کے پڑھنے کے لئے پاک ہوتا شرط ہے۔ اس نے کہا ہم نہالیس کے بڑھنا پڑتا ہے نہا ہم نہالیس کے ۔ قاری صاحب اس کے کہا ہم نہالیس کے ۔ قاری صاحب کے ایک کلمہ پڑھنا پڑتا ہے۔ اس کے لئے ایک کلمہ پڑھنا پڑتا ہے۔ اس کے دو یا کی ہوتی ہے۔ کہاں ہاں ہم سب پچھ کریں گے۔

چنانچ قاری صاحب نے اس کوشل کرایا اورشل کے بعد کلمہ پڑھایا پھر چندسور تیں چھوٹی جھوٹی جھوٹی سکھلا کیں۔ وہ کپتان ہروفت کلمہ یاسور تیں پڑھتا پھرتا تھا۔ وہ سرے انگریزوں نے جو اس کا کلمہ اور قرآن پڑھتے ہوئے سنا، کہا ہے کہا پڑھتے ہو۔ کہا بیے ضدا کا کلام ہے ہم کواچھا معلوم ہوا اس لئے پڑھتے ہیں انگریزوں نے کہا تم قواس سے مسلمان ہیں ہم مسلمان ہیں ہوا انگریزوں نے کہا کہا کہا کہا کہا تھا ہے کہا کہا کہا ہے ہے ہم کواچھا کہ کرآتے ہیں۔

وہ قاری صاحب کے پاس آیا اور کہا کیا ہم مسلمان ہوگیا ہے؟ فرمایاتم کو آئ خبر ہونی تم تو کئی دن ہوئے مسلمان ہو چھے۔ بیس کراول تو اس کو تخیر ساہوا۔ پھر قر آن کی نورانیت نے اپنی طرف کھینچا اور کہا کہ پچھ پروانہیں۔ اب بس ہم مسلمان ہی رہیں گے۔ گراس کلام کو نہ چھوڑیں گے۔ چٹا نچراس نے اپنی میں سے بھی کہ دیا کہ ہم تو مسلمان ہوگئے ہیں۔ اگر ہمارے ساتھ رہنا چا ہواسلام قبول کروور نہ ہم ہے کوئی تعلق نہیں۔ پھر جب جہاز جدہ کے قریب پہنچ ، تو اس کیتان نے بھی اپنی عہدہ سے میں میں میں اور قاری صاحب سے ساتھ جاکر جج کیا اور بڑا ایکا مسلمان ہوگیا۔

یہ قصداس پر یادآ گیا تھا کہ سیاح کے پاس زادراہ نہیں ہوا کرتا۔ وہ تو مارامارا پھراکرتا ہے جسے بہ قاری صاحب سیاح ہوکر نج کرآئے۔

عمروبن دینارفرماتے ہیں کہ ہیں جج کوجار ہاتھا۔ ایک نوجوان لڑکے کودیکھا کہ بدون زاد وراحلہ کے قافلہ کے ساتھ ہے۔ ہیں نے پوچھا، صاحبزادے کہاں کا قصد ہے۔ کہابیت حبیب کا میں نے کہا،اورتم نے زاد وراحلہ کچھ بھی ساتھ نہ لیا۔ تو فوراً جواب دیا

فان الزاد اقبح كل شيء اذاكان الوفود على الكويم (كيونك سامان ساتھ لينا برقىء ہے براہ جبكہ وجود كريم كورواز ه پر بوں)

على اس جواب ہے جما كر معمولی خفل نہيں بلك عاش ہے عروبن و ينار فرماتے ہيں كه پھر ميں اس لڑك كوئى ميں و يكھا جب كہ سب لوگ قربانياں كررہ ہے تھے، اس نے حسرت كے ساتھ آسان كی طرف نظرا تھ كی اورع ض كي ، براالها! سب لوگ آپ كی جناب ميں نذر پائي كرر ہے ہيں اور مير ہے پاس بجزائي جان كے بجھنيں ہے۔ اگر يقبول ہوجائے تو حاضر ہے ۔ يہ كہ كرايك جي مارى اور جان و ب دى ۔ عروبن و ينار فرماتے ہيں كہ اى وقت ميں نے ہاتف كي آواز كی كہو و كہو ہو كے تو اس كے تھے اس كے تي كہ اى اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی دولت سب كی قربانياں اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی دولت سب كی قربانياں اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی دولت سب كی قربانياں اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی دولت سب كی قربانياں اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی دولت سب كی قربانياں اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی دولت سب كی قربانياں اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی دولت سب كی قربانياں اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی دولت سب كی قربانياں اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی دولت سب كی قربانياں اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی دولت سب كی قربانياں اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی دولت سب كی قربانياں اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی كی دولت سب كی قربانياں اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی دولت سب كی قربانياں اس سال قبول ہوگئيں اور اس كے تي كی كی دولت سب كی قربانیاں اس سب كی قربانیاں اس كی تو دولت سب كی قربانیاں اس کی تو دولت سب كی تی دولت سب كی تو دولت سب کی تو دولت سب كی تو

خیرید مضمون جی میں اسطر اوا آگیاتھا جس کوهمون مقصودے زیادہ تعلق نہ تھا مگر کچھ مضا نَقَدْ بیس اس کی بھی ضرورت تھی کیونکہ اب جی کا بھی موقع آرہاہے۔

سراياانعامات

بہر حال بعض علماء نے جوسائ کی تغییر سیاحت کندہ ہے کہ انہوں نے سیاحت کرنے دالے کو تثبیہ ابالصائم سائے کہد دیا ہے۔ صائم کو سیاحت کرنے والے کے سی تھ تثبیہ دے کر سائح میں کہا گیا۔ پس اصل تغییر سخت کی صائمات ہے اور قول جمہور دلیل مستقل ہے کہا کہ علماء غسرین کہا گیا۔ پس اصل تغییر سکت کی تغییر روز ورکھنے والیاں ہیں تواس سے نے سخت کی تغییر دوز ورکھنے والیاں ہیں تواس سے معلوم ہوا کہ دوز ہ بڑی عباوت ہے کیونکہ تخصیص بعد تعیم اہتمام کے لئے ہوتی ہوتی ہوتو حالانکہ مسلمات معلوم ہوا کہ دوز ہ بڑی عباوت ہے کیونکہ تخصیص بعد تعیم اہتمام کے لئے ہوتی ہوتی مائی مایا ہے جس اور عبدات میں روز و بھی داخل تھا مگرا تد تعالی نے اس کو اہتمام کے ساتھ الگ بیان فر مایا ہے جس سے اس کی خاص عظم ت وفضیلت معلوم ہوئی کہ بی بہت بڑی عبادت ہے مگراس سے ناز نہ کرنا کہ ہم

منت منہ کہ خدمت سلطال ہمی کئی ہے۔ منت شناس از وکہ بخدمت بداشتت (تواس بات کا احسان نہ رکھ کہ باوشاہ کی خدمت کرتا ہے بلکہ باوش ہ کاممنون احسان ہو جس نے کچنے ملازم رکھ لیاہے)

دیکھو! اگر کسی سائیس کوعید کے دن ؟ قاسے آٹھ آنے انعام ملنے کی امید ہوا وراس کوآٹھ ہزار لل جائیس تو وہ ناز کرے گایا حیا ہے گڑ جائے گا۔ کہ مجھ ٹالائق پراییا انعام۔ای طرح آپ اس پرناز نہ سیجئے کہ آپ روز ہ رکھ رہے ہیں بلکہ ابتد تعالیٰ کا احسان مائے کہ انہوں نے آپ سے یہ کام لے لیا اور شکر کے طور پر یوں کہتے ہے

تقدق اپنے خدا ہے جاؤل میہ پیار آتا ہے جھ کوانش اوھر سے انعام میہ وم پرم اوھر سے انعام میہ وم پرم حضرت جننے کام حق تعالیٰ ہم ہے لے رہے جیں، میخودانع م ہے جھرانعام پرانع م کیما؟ انعام ترجوا کرتا ہے اور یہال خود میا جائی کی سرا پالغامات ہیں ورزہم کی قابل تھے کہ حق تعالیٰ کی عبادت کر سکیں اس کوشنے فرماتے ہیں ہے ۔

منت منه که خدمت سلطان جمی کنی 🌣 منت شناس از و که بخدمت بداشتند

(توباد شاہ پراپنااحسان نہ مجھ کہ تواس کی خدمت کرتا ہے مگر باد شاہ کا تجھ پراحسان ہے کہ اس نے مجھے خدمت کرنے کی اجازت دی ہے)

سهولت صوم

اس وقت بیان ہے ایک مقصورتو نصلیت صوم تھی جو مختفراً بیان ہوگئی۔ دوسرامتصور سہولت صوم کا بیان ہے جس کا بیان اس جمعہ کے وعظ میں ہو چکا ہے۔ گربعض با تبس اس وقت بیان نہ ہو کی تھیں وہ اب بیان کروں گا۔ کو یا بیاس کا تبتہ ہوگا۔ اس لئے اہل طابع کو بھی مناسب ہے کہ ان دولوں کوایک ساتھ ہی طبع کیا جائے۔

اب سنے کہ اس آیت ہے بھی ایک وجہ سہولت صوم کی معلوم ہوتی ہے گراس کے لئے ایک مقدمہ سیجھنے کی ضرورت ہے وہ یہ کہا تا بالذکر فضول نہیں ہوا کرتا۔ بلکہ اس سے بھی کچھ فا کھ ا مقدو ہوتا ہے۔ جب دو چیزوں کوذکر میں مقتر ن کیا جاتا ہے توان دونوں میں پچھ تعلق وارتباط ومناسبت ومشابہت ضرور ہوتی ہے۔ جس کی دلیل دوحدیثیں ہیں۔

ایک یہ کہ رسول اللہ معلی اللہ علیہ وسلم نے آیت فاجتنبوا الوجس من الاوثان واجتنبوا قول الزور (تم لوگ گندگ سے بعنی بتوں سے (بالک) کنارہ کش رہواورجموئی بات سے کنارہ کش رہو)۔ کی تغییر میں فر مایا ہے عدلت شہادہ الزور بالمشرک باللہ کم جموئی گوائی شرک باللہ کے جموئی گوائی شرک باللہ کے جموئی گوائی شرک باللہ کے برابر کردی گئی۔ حالا تکہ آیت میں محض اقتران ذکری ہے اس کے سواتسویہ برکوئی امر بظاہروال نہیں۔

دوسرے جس وقت حضور سلی اللہ علیہ وسلم نے صفاومروہ کے درمیان سعی فر مائی ہے تو ہے آیت پڑھی ان الصفا و المعروۃ من شعائر اللہ پھر ارشاد فر مایا بندا بمابدا اللہ ہے بھر یہاں بھی محض تر تیب ذکری کی وجہ سے صفا کومروہ پر مقدم فر مایا۔ اور خود جمارے محاورات میں بھی ہے بات ہے کہ جب کوئی ایک وو چیزوں کو ذکر میں مقتر ن کرے جن میں باہم ارتباط نہ ہو یوں کہتے ہیں کہ اس میں اوراس میں کیا جوڑ ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ اقتران فی الذکر نضول نہیں ہوا کرتا بلکہ اس سے مقترین میں مناسبت و تعلق پر ولالت ہوتی ہے۔

لے سن أبی داؤد ۲۵۹۹ء سن الترمذی ۲۳۰۰ء سن ابن ماجهٔ ۲۳۵۲۰ء مشکوه. ۳۷۷۹ کے سنن التومذی ۱۹۲۰ء ۱۹۲۷ء سن السبالی کتاب الحج باب، ۱۹۲۰ء باب ۱۹۲۱ء باب:۲۲۱ء سنن ابن ماجة:۳۵۰۳ء مؤطا مالک:۳۵۲ اب بیجے کہ اس آیت میں تق تعالی نے سائل ہے کہ اس کی تغییر ابھی معلوم ہو پھی ہے کہ اس کے معنی روزہ رکھنے والیوں کے بیں مقرون کیا ہے نیبت و ابکار ا کے ساتھ ۔ جومفات غیرا فقیار یہ بیں اورصفات غیرا فقیار یہ سب سے زیادہ سبل بیں کیونکہ ان بیس پہری بھی کرنائبیں پڑتا بلکہ وہ بدون ارادہ وافقیار کے خود بخو د ٹابت بیس حتی کہ ارادہ وافقیار کے خود بخو د ٹابت بیس اوراو پر ابھی معلوم ہوا کہ اقترن حکمت سے فالی نہیں۔ تو معلوم ہوا کہ صفت صوم کوصفات غیرا فقیار یہ مقرون کرنے بیں بھی پہری شکر سے نزد کیک مہی ہے کہ غیرا فقیار یہ سے مقرون کرنے بیں بھی پہری حکمت میر سے زدو کیک مہی ہے کہ صوم بھی مثل صفات غیرا فقیاریہ کے بہل ہے کہ اس بیس بھی پہری فقیل وجود ہی کرنائبیس پڑتا ۔ ایس صوم بھی مثل صفات غیرا فقیاریہ کے بہل ہے کہ اس بیس بھی پہری فقیل وجود ہی کرنائبیس پڑتا ۔ ایس

ر ہایہ کہ بیصفات غیرافتیار بدکیے ہیں توسنے کہ میو بت تواس کئے غیرافتیاری ہے کہ لغت میں شیج بت بکارت کے مقابل ہے۔اورشرعاً شیب وہ ہے جوصاحب زوج ہوچکی ہے پھراس ہے فرفت ہوگئی ہے۔ بوجہ طلاق یاموت کے اور بکروہ ہے جوابھی تک صاحب زوج نہیں ہوئی۔ پس ھیج بت کے مغہوم میں دوجز ہیں۔ ایک صاحب زوج ہوتا جونکاح برموتوف ہے اور نکاح گولعض صورتول میں حقیقنا عورت کی مفسوب موتا ہے مگراس کی نسبت الی ضعیف ہے کہ کو یا بمز لدعدم کے ہے اوراس بنا پر اگر کوئی بوں کہنے لگے کہ عورت خوداینا نکاح نہیں کرتی بلکساس کا نکاح ولی کرتا ہے توبیہ بات غلطنبیں۔ کیونکہ اگر وہ صغیرہ ہے تب تو ظاہر ہے کہ اس کا نکاح میں کچھیجھی دخل نہیں اور ا کر بالغہ ہے تو نکاح اول میں جو کہ میو بت کا پہلا جزو ہے اس کالزوم تعلق شرعاً معدوم ہے ۔صرف اس کاسکوت بی اذن قرار دیا گیااوراس بنا پر گو بیجه اس کے کہاس کوا تناا ختیارتھا کہا تکار کر دیتی اس کے سکوت کونکاح کا سبب اختیاری کہا جائے گا۔لیکن پھربھی بیا ختیار عادت طبیعہ کے اعتبار ہے مثل عدم اختیاری کے ہے ۔ یہ توجز اول کی حالت پر اور دوسراجز وید ہے کہ نکاح کے بعد فرنت ہوجائے۔ یہ تو بالکل ہی عورت کے اختیار میں نہیں کیونکہ فرقت اگر طلاق سے ہے تووہ زوج کے اختیار میں ہے عورت کااس میں کھھا ختیا رہیں اور موت سے ہے تو یکسی کے بھی اختیار میں نہیں اورجن صورتوں میںعورت کوطلب فرفت کا اختیار بھی ہے وہاں قضا قاضی شرط ہے یامتار کت زوج ضروری ہے تو وہاں بھی فرفت مورت کے اختیار میں نہ ہوئی بلکہ زوج ہی کے اختیار میں ہوئی۔ کیونکہ جہاں قضاء قاضی ہے فرفت ہو سکتی ہے ان صور توں میں قاضی زوج کے قائم مقام ہوجاتا ہے۔ رہی

ردت وہ نا گوار و مکر وہ اورمسلمان کی شان ہے بعید ومستنگر ہے۔اس کے اعتداد کی کوئی وجہ ہیں۔ اپس ھیج بت کواگراہیے جزواول کے اعتبار ہے من کل الوجوہ غیرا ختیاری تنکیم نہ بھی کیا جائے تب جزونانی کے اعتبار سے تو یقیناً غیرا ختیاری ہے کہ اس صفت کا شبوت عورت میں بدون اس کے اختیار کے ہوجاتا ہے۔ توجز واخیر شویت کی علت تا مدکا ہرحال میں غیرا نقتیاری رہا۔ اگرمجموعه اجزاء برانظر کی جائے تب بھی مجموعہ افتیاری وغیرافتیاری کاغیرافتیاری ہوتا ہے تو ہو بت غیرافتیاری ہی رہی۔اور بکارت کا غیرا ختیاری ہونا تو ظاہر ہے کیں سخت کا ثبیت وابکا را کے (وہ اس اقتران کی مشل ایک اور صفت ہے اقتران ای کا ہم اڑ ہے تقدیر اس کی یہ ہے کہ سور و احزاب میں صائمین وصائمات كاقتران محافظين فروجهم ومحافظات كساتحد ذكريس واقع بواب اورحفظ فروج اہل طیائع کاسلیمہ کا اوران میں ہے بھی پاکھنوص اناٹ کا امرطبعی ہے تواس امرطبعی کے ساتھ اقتران نیزموید برصوم کے مشابہ امورطبید ہونے کا جوکہ بے حدیمل ہوتے ہیں جیسا کہ متن میں مذکور ہے بیمضمون بعد میں ذہن میں آیا۔اس لئے حاشید میں لکھ دیا گیا۔ ۱۴ منہ) ساتھ مقرون کرنا بتلار ہاہے کہ صوم مثل امورطبعیہ کے ہل ہے اور واقعی غور کیا جائے تو معلوم ہوگا کہ صوم امرطبعی ہے کیونکہ امرطبعی وہ ہے جس کے لئے قصدوارادہ کی ضرورت نہ ہواورظا ہرہے کہ کھانے پینے کے لتے تو قصد وارادہ کی ضرورت ہے اور نہ کھائے اور نہ ینے کے لئے قصد وارادہ کی کیا ضرورت ہے۔ ترجی بھی نہیں۔ ہم گھنٹوں بدون کھانے پینے کے کام میں لگے رہتے ہیں اس وقت اس حالت پر التفات بھی نہیں ہوتا کہ ہم اس وقت کھاتے پہنے نہیں ہیں۔

ووسرے بیہ بھی ظاہر ہے کہ انسان کے زیادہ تر اوقات نہ کھانے اور نہ چینے ہی کے ہیں۔ کھانے چینے کے تو چنداوقات معین ہیں۔اس سے بھی معلوم ہوا کہ نہ کھانا نہ بیناامراصلی ہے۔ اگر کھانا پینا امراصلی ہوتا تو اس کے اوقات زیادہ ہوتے مگرواقعداس کے خلاف ہے اوراصلی میں اصل سہولت ہے۔

ر ہا یہ شبہ کہ ندکھانے پینے کی حالت میں جوالتفات شراب وطعام کی طرف نہیں ہوتا تو بیاس وقت تک ہے جب تک بھوک ندیگے اور جب بھوک گئی ہے تو خاص التفات ہوتا ہے۔
اس کا جواب میہ ہے کہ اول تو بھوک میں بھی طعام وشراب کی طرف التفات برکاری کی حالت میں بوتا ہے اوراگر کسی کام میں لگ جائے تو کھانے پینے کی تو کیا بھوک کی خبر نہیں ہوتی۔
حالت میں بوتا ہے اورا گر کسی کام میں لگ جائے تو کھانے پینے کی تو کیا بھوک کی خبر نہیں ہوتی۔

چنانچہ بہت واقعات ایسے ہو چکے ہیں اور کم وثیق برخض کواس کا تجربہ ہوتا ہوگا اوراگر مان بھی لیاجائے کہ بہوت واقعات ایسے ہو چکے ہیں اور کم وثیق برتا ہوتا ہوتا ہوگا اوراگر مان بھی لیاجائے کہ بھوک میں طعام وشراب کی طرف النفات ہوتا ہے تواس کا توا نکار ہی نہیں ہوسکتا کہ بید ایک عارض کی وجہ ہے ۔اب معدوان رطو بات اصلیہ کے ہضم کی طرف متوجہ ہوگی جس سے تکلیف ہوتی ہوتی جا تارہےگا۔

اب يبال سے ميں ايك اورشبه كاجواب دينا جا ہتا ہوں جس كاجواب دينا جمعه كو (ياد نه رہا ہوگا ورنداس وعظ ميں بھى ندكور ہے اامنه) بھول كيا تھا۔ وہ بيركه ندكھا نا اور نه چينا اگر آسان ہے توكس كوم بينه بھرتك بھوكار كھ كرديكھا جائے معلوم ہوجائے گاكہ نہ كھا نا كيوں كر آسان ہے۔

اس کا جواب یہ ہے کہ عدم اکل کی حقیقت فی نفسہ دشوار نہیں بہت سے بہت آپ یہ کہہ سکتے ہیں کہ استداد عدم اکل دشوار ہے۔ تویہ دشواری استداد عارض سے بہوگئی ندکہ حقیقت عدم اکل سے۔ اور شریعت نے جوعدم اکل وشرب کی حدمقرر کی ہے وہ ممتد نہیں ہے۔ اسلئے صوم کچھ دشوار نہیں ہے اور شریعت نے جوعدم اکل وشرب کی حدمقرر کی ہے وہ ممتد نہیں ہے۔ اسلئے صوم کچھ دشوار نہیں ہے ہیں اب مب اشکالات رفع ہو مجئے اور مہولت صوم کا بید عوی نے غیار ہوگیا۔

نمازروزه کی پابندی کافرق

پھرافتران سخت ولیبت وابکارا علاوہ خصوصیت مقام سے اس سہولت میں ایک اوراضا فد ہوگیا۔ وہ یہ کہ اس جگہ عورتوں کے روزہ کا ذکر ہے اورعورتوں کوطبعًا بھی روزہ اس لئے آسان ہے کہ ان میں رطوبت وہرودت زیادہ غالب ہوتی ہے۔ ہاں کوئی ضعیف ونجیف ہوتو اور بات ہے ورشہ عام طور سے مزاج عورتوں کا رطب و بارو ہے اورا لیے مزاج والے کوروزہ وشوار نہیں ہوتا۔ روزہ حارویا بس مزاج والے کوزیادہ گراں ہوتا ہے۔ یمی وجہ ہے کہ عورتی نماز میں توست ہیں مگرروزہ میں بچیاں بھی ہمت والی ہیں۔

نیز عورتوں کا طرز ممل بھی بتلا تا ہے کہ ان کو روز ہسمل ہے ۔ وہ بید کہ عورتیں جب بھی نذرومنت مانتی ہیں تو زیادہ تر روز ہ کی منت مانتی ہیں۔ نماز کی نذر کوئی کوئی کرتی ہے کیونکہ نماز ان کوگران ہے۔اس میں پابندیاں بہت ہیں اورافعال اختیار یہ بھی زیادہ ہیں۔

پایندی کا توبہ حال ہے کہ نماز میں بات بھی نہیں کر سکتے۔ گوہمارے ہاں ایک ہُوھیا ہے وہ تو نماز میں بولتی رہتی ہے مگر یہاں بڑھیا عورتوں کاذکر ہے جو مجھددار ہیں اوروہ ہُڑھیا تو پاگل ہے اور بیہ خاص پابندی عورتوں پرسب سے زیادہ بخت ہے کیونکہ ان کو بولنے اور ہا تیں کرنے کا زیادہ شوق ہوتا ہے۔ اور نماز میں افعال اختیار بے زیادہ اس طرح ہیں کہ ہیں قرائت ہے ہمیں ذکر بھی قیم ہے، بھی قعود ، بھی رکوع ہے ، بھی بچوداور روزہ نہ بچھ پابندی ہے نہ بچھ کام کرتا پڑتا ہے۔ ہر طرح آزادی ہے۔ جدھر چا ہود کھو جہاں چا ہوچلو بھرو۔ چاہے با تیں کرو، چاہے سور ہو، روزہ ہر حالت میں موجود ہے مگر نماز میں ان سب پابند یوں کے ساتھ ایک آزادی الی ہے جو کسی عبادت میں بھی نہیں ۔ وہ یہ کہ نماز کی حالت میں انسان مخلوق کی تعظیم بجالانے ہے آزاد ہوجاتا ہے۔ اگرایک اونی سپاہی بھی نماز میں ہواور یادشاہ وقت اس کے پاس ہے گزر جائے تو وہ بھی عدم تعظیم کاشاکی نہ ہوگا۔ گوکا فربی بادشاہ کیوں نہ ہو۔ بشر طبکہ وہ نماز کی حقیقت سے واقف ہو۔ روزہ میں سے بات نہیں ہے روزہ میں تو آب کے کہ کرتا پڑے گ

خلوت گاه حق

جھے اپنے پھو پھا کے بھائی مولوی ظہیرالدین مرحوم کا قصہ معلوم کر کے بڑی توقی ہوئی۔ وہ درو ایش آدی تضاورا لیے آدی کو تلق کے اختلاط سے تکلیف ہوتی ہے۔ توانہوں نے گوششنی کی سیصورت اختیار کی کہا پٹی بیٹھک میں رہنے اور ہروقت نماز پڑھتے رہتے۔ بیٹھوت درا جہی تھی۔ اور ہروقت نماز پڑھتے رہتے۔ بیٹھوت درا جہی تھی۔ اس طاحت میں بھی کوئی ان سے طنے آجا تا تو نماز کا سلام پھیرکر وہ ایک دوبات کر لیتے تھے اور بھر ضرورت بات کر کے پھرالندا کہر کہ کر نماز شروع کردیے۔ اس طرح سے جلوت میں بھی طنوت ہوگئی تھی۔ ورندا گر خلوت کی بیصورت اختیار کرتے کہ جنگل میں چلے جاتے یا گھرکے کواڑ بند کر لیتے تواس سے شہرت ہوجاتی اور شہرت کے بعدائمان کو چین نہیں ماتا۔ لوگ خواہ مخواہ تو اس کھیر لیتے ہیں جن سے بدفلق بھی نہیں کی جا سکتی۔ بس بیز کیب بہت اچھی تھی کہ نماز کی کمڑت کرتے ہیں۔ اس کے تر تھی اس کے نیاز کی کمڑت کرتے ہیں۔ اس کے تر تھی اس کے نیاز کی کمڑت کرتے ہیں۔ اس کو تر تر بی بہت اچھی تھی کہ نماز کی کمڑت کرتے ہیں۔ اس کو تر تر کی بہت اچھی تھی کوئی آفت پیش آئے گئی کوئی از گرکسی راحت یا آرام نہیں ہے سوائے خلوت گاہ تی تھی کوئی آفت پیش آئے گئی کوئی کو شرائیس کے تواس جگہ تھی تھی کوئی آفت پیش آئے گئی کوئی کو شرائیس کے کوئی خلوت گاہ تی کہ کہیں آرام نہیں ہے کہ خلوت ورائیس کی کوئی خلوت کا ہیں آرام نہیں ہے کہ خلوت ورائیس کے جرہ میں بند ہو کر رہو بلکہ مطلب بیہ کہ خلوت ورائیس کی کوئی بھی خلوت گاہ تیں تر کہا ہیں ہیں کوئی پکھ شکایت ہی نہیں خلوت کی ہی تا ہوئیس کی کھی گئی ہیں تر کہا ہیں تی نہیں خلوت کی کہا گئی تر کیب سب سے زیادہ بہتر ہے کہاں میں کوئی پکھ شکایت ہی نہیں کر و جس کے لئے نماز کی تر کیب سب سے زیادہ بہتر ہے کہاں میں کوئی پکھ شکایت ہی نہیں کی کہیں تر کیب سب سے کہا کہا کہا کہا کی تر کیب سب سے نیادہ بہتر ہے کہاں میں کوئی پکھ شکایت ہی نہیں تو ترائیس کی کہا گئی تر کیب سب سے نیادہ بہتر ہے کہا سب سے نیادہ بہتر ہے کہاں میں کوئی پکھ شکایت ہی نہیں نے کہا

كرسكنا _وظيفه مين مشغول رہے ہے بھي آرام نبين السكتا _

چنانچہ میں ایک بارنماز کے بعد وظیفہ پڑھ رہاتھا۔ ایک صاحب چیجے ہے آئے اور میرا کندھا کچڑ کے مصافحہ کا مطالبہ کیا۔ اورا گرکوئی یوں چاہئے کہ آٹکھیں بند کر کے سونے کا بہانہ کرکے پڑر ہوں تو اس طرح بھی چین نہیں مل سکتا۔

ایک دفعه پسیوماره کیا تھا۔ گرمی کاموسم تھا۔ رات کوسفر کیا تفاضح نیند کا غلبہ ہوا۔ ایک تخلید کے مكان ميس ونے كے قصد سے جاليا ۔ أيك صاحب جوج كوجاتے تھے ملنے كيلي آئے اور بلندآ واز ہے کہا، السلام علیم _ اس وقت مجھے کچھ کچھ فیند آ چلی تھی ۔ محران کے سلام سے فیند کا فور ہوگئی میں جاگ تو کیا مرمی نے قصدا آئیس نہ کھولیں۔ اورویے ہی آئیسیں بند کے پڑار ہا۔ بعض حاضرین نے ان ہے کہا کہاس وفت آ نکھ لگ گئی ہے۔ آپ تشریف لے جائیں کہنے لگے واہ! ہم حج کوجارہے ہیں۔ہم تومصافحہ کر کے جا کمیں گے۔ان ہی بعض حاضرین احباب نے کہا، بھائی بیدونت مصافحے کانبیں مگرانہوں نے ایک نہ مانی۔اورای حالت میں اپنے ہاتھوں کومیرے ہاتھوں ہے رکڑ کراورایے نز دیک مصافی کرے چلتے ہوئے۔ان کا تو مصافی ہوا مگرمیری نیند برباد ہوگئی۔ لکھ کر ہمارا نام زمین پر منا دیا 🖈 ان کا تھا تھیل خاک میں ہم کو ملادیا پس تجربہ ہے معلوم ہوا کہ سونے کی حالت میں بھی محلوق چین نہیں لینے دیتی ہولا ناتو ہول فرہاتے ہیں _ کر کریزی برامید راج 🌣 ہم ازآں جاپیٹ آید آفتے (اكركسى راحت يا آرام كى اميدير بهاكما بواس جكه بحي تحدكوكونى آفت بين آئى) کیونکہ میں تؤراحت ہی کے لئے نیند کی صورت بنا کرلیٹا تھا مگراس حالت میں بھی آفت کاسامنا ہوا۔بس ان آفات ہے نجات نماز ہی میں مل سکتی ہے۔ تو تماز میں گوداخلی یابندیاں میں مرمخلوق سے بالکل آزادی ہوجاتی ہے۔ بول کہنا جا ہے کہ نم زی خدا کا غلام ہوکرمخلوق کی غلامی

نمازروزه كافرق

باتی دوسری آزادیاں روز ہیں زیادہ ہیں کہ تماز ہننے بولنے اور رونے اور پیٹاب پاخانہ سے ٹوٹ جاتی ہے۔ روز ہیں ایس آزادی ہے کہ دہ کس بات سے نہیں ٹوٹنا۔ سوائے اکل وشرب و جماع کے۔ وہ بھی اس وقت جب کہ عمداً کھایا پیاجائے اور بھول کر کھالی لے تو پچھے ہرج نہیں

ے آزاد ہوجاتا ہے۔ توبیآزادی تو نماز میں سب سے زیادہ ہے۔

اورنماز میں عمدہ نسیان سب برابر ہیں وہاں جیتے مفسدات ہیں ہرحال میں مفسد ہیں۔

ہاں ایک مولوی صاحب کی مرید نیوں کا ند جب لیاج ئے تو پیش ب یا خانہ ہے بھی روزہ تو گئے گا۔ ان مرید نیوں کی بیہ حالت تھی کہ مغرب کی اذان سنتے ہی اور تو سب کھانے پینے کی طرف دوڑ تیں۔ اوروں کا افطار تو چھوارہ اور چھاکیوں سے مطرف دوڑ تیں۔ اوروں کا افطار تو چھوارہ اور چھاکیوں سے ہوتا تھا اوران کا افطار رفع حاجت ہے ہوتا تھا۔ بیچاری دن مجر پیشاب پا خانہ کود ہائے مجرتی تھیں۔ مغرب کے وقت ان کوسب سے پہلے اس کا اقتضا ہوتا تھا۔

خیر بیرتوایک لطیفہ تھا در نہ روز ہیں ایک آزادی ہے کہ دہ کسی کام سے نہیں ٹوٹنا جب تک عمرا اکل دشرب د جماع نہ ہو۔ بید دوسرامقصود بالبیان تھا کہ روز ہ بہت ہل ہے اس کی تفصیل جمعہ کے وعظ میں ہوچکی ہے بعضی اسی وقت روگئی تھین وہ اب بیان کردی تکئیں۔

میمنمون میں نے اس لئے بیان کیا ہے تا کہ لوگ روزہ کوگرال نہ مجھیں کیونکہ بعضے لوگ ایسے موجود ہیں جوروزہ کوگرال مجھتے ہیں۔ چنانچہای لئے توختم رمضان پرآخری جمعہ کو کہتے ہیں الوداع الوداع یا شہر رمضان۔ کہا ہے رمضان رخصت رخصت اور ہار ہاراس لفظ کا تکرار کرتے ہیں اور جوخص دوباریا تین ہار کیے رخصت رخصت توسارے زبان وانوں ہے پوچھ لو کہ وہ کیا کہیں گے۔ سب یول بی کہیں گے کہ پاپ کاٹ رہا ہے۔ اگراس کو صرت ہوتی تو ہار بار رخصت رخصت کہتا۔

نیز اگران کورمضان کے جانے کی حسرت ہوتی تو رمضان کے آنے کی خوثی بھی تو ہوتی۔

تو ابتدائے رمضان میں ایک خطبہ مرحبا مرحبا یا شہر رمضان کا بھی پڑھنا چاہیے اور وہاں تکرار مرحبا
مفید مسرت ہے بید کا ورہ کے موافق ہے۔ اورصاحبوا بیسب زبانی دعوے ہیں ورنہ دلوں کو ٹول
کرو کھے لیا جائے ان نوگوں کورمضان کے جانے کی حسرت ہوتی ہے؟ ہرگز نہیں۔ آج رمضان کی
19 تاریخ ہے۔ نہ معلوم کنٹوں کی خیتیں گڑر ہی ہوں گی کہ کی طرح آج ہی چا عرب ہوجائے۔ خصوصا
بیدین کر کہ بعض جگہ آج ۱۳۰ تاریخ۔ گروہ وہ ہیں گی تعمیں ہے۔ ہمارے یہاں تو آج ۲۹ ہی ہے۔ اب
اس حالت میں کیسے مان لیا جائے کہ ان کورمضان کے جانے کا رنج ہو اور آنے کی مسرت ہوتی ہوتی
بلکہ حالت اس کے برنکس ہے کہ رمضان کے آنے سے گرانی ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی

ہاں گئے اس کے آنے ہے گرانی اور جانے ہے مسرت ند ہونی جا ہے۔ فرحت افطار

ہاں ایک طرح اختیام رمضان شرعاً بھی موجب فرح ہے کہ اس خیال سے فرح ہوکر الحمد لقد خدا تعالی تے ہم سے بیکام لے لیا _

شکر مقد که نه مردیم ورسیدیم بدوست آفری باد بری است مردانه ما (الله تعالی کاشکرے کہ ہم خیریت سےدوست تک بینی گئے ہماری اس ہمت مردانہ بہ قرین ہے)

چنانچ اکثر علاء نے حدیث للصائم فوحتان فوحة عند الفطو وفوحة عند لقاء الوحمن کی تغییر میں بہی فرمایا ہے کہ افطار کے وقت جوفر حت ہوتی ہے وہ اتمام ممل کی وجہ سے ہوتی ہے کہ خدا کاشکر ہے کہ اللہ تعالیٰ نے بیکام لے لیا۔ اور دوزہ تمام آفات سے منزہ ہوکر پورا ہوگیا۔ اور بعض نے فرحت افطار کا سبب ظاہری بیان کیا ہے کہ افطار کے وقت زوال جوع اور تناول غذا وشراب سے خوشی ہوتی ہے اور بیا ختیا ف تفسیرا ختلاف شماق پرجن ہے۔ لوگوں کے خمات خوشی ہوتی ہے اور بیا ختیا ف تفسیرا ختلاف شماق پرجن ہے۔ لوگوں کے خمات جوع اور تناول عذا ویک کوافطار کے وقت کھانے یہنے کی خوشی ہوتی ہے اور کی کواتمام ممل کی۔

اختلاف فداق پرایک حکایت یادآئی۔ایک بادشاہ نے ملک کی چارستوں کی چارعورتیں اکھٹی کرکےان کوداخل محل کیا تھا۔ایک مشرقی تھی ،ایک مغربی ،ایک جنوبی ،ایک شالی ، گھراس نے سب کی ذہانت ولطافت مزاج کاامتحان کرنا چاہا تو ایک رات میچ کے قریب سب سے پوچھا کہ بتلاؤاب کیا وقت ہے۔ سب نے بالا تفاق کہا کہ مجمع قریب ہے۔ بادشاہ نے ہرایک سے دلیل پوچھی کہ کم کوکل کے اندر بیٹے ہوئے کس طرح معلوم ہوا کہ مجمع ہوچکی ،ایک نے جواب دیا کہ میری نتھ کا موتی ٹھنڈ اہوگیا ہے۔ جوابرات مجمع کی ہوا سے شنڈ ہوجاتے ہیں۔ دوسری نے کہا کہ شمع کی روشی وہی ،ایک ہے۔ چوتی نے کہا کہ شمع کی روشی وہی ہوگئی ہے۔ چوتی نے کہا کہ شمع کی روشی وہی ہوگئی ہے۔ چوتی نے کہا کہ خان کا مزہ منہ میں بدل گیا ہے۔ چوتی نے کہا کہ پیشاب آرہا ہے جو بی کو پیشاب یا خانہ کی ضرورت ہوا کرتی ہے۔ بات ایک بی تھی گھرا فتلا ف فیرات کی وجہ بیان کی وجہ بیان کی۔

ای طرح فرحت صائم کی توجیهات ش اختلاف نداق سے اختلاف ہوگیا۔ ہم جیسول اے سن السانی کتاب الصیام باب ۱۳، مسد احمد ۳۳۵،۲۵۷، کسر العمال ۲۳۵۹۳ نے فرحت دینو یہ پر محمول کیااورا کا برنے فرحت دیدیہ پر۔ منگیل صوم

اب ایک تیسرا مقصود اور ہے اس کو بیان کر کے میں ختم کردوں گا۔ وہ یہ کہ جس طرح صوم سہل ہے ایسے بی تخیل صوم بھی مہل ہے اور یہ ضمون بھی جمعہ کو بیان سے رہ گیا تھا اور اس کے بیان کی ضرورت اس کے ہے تا کہ ہم تخیل صوم کی فکر کریں۔ بہت لوگ اس جس کوتا بی کر تے بیان کی ضرورت اس کے ہے تا کہ ہم تخیل صوم کی فکر کریں۔ بہت لوگ اس جس کوتا بی کر تے بیل حالا نکہ یہ نہایت اہم ہے۔ حدیث جس ہے: من لم بدع قول الزور والعمل به فیل حالے ان یدع شرابه و طعامة جو تحق بیہودہ با تیں اور بیہودہ عمل ترک نہ کرے فلیس لله حاجة ان یدع شرابه و طعامة جو تحق بیہودہ با تیں اور بیہودہ عمل ترک نہ کرے تو اللہ تا کی ضرورت نہیں کہوہ بھوکا اور پیا سارے۔

اس میں منبیہ ہے کہ روزہ میں ترک اکل وشرب وغیرہ سے زیادہ ترک محر مات کا اہتمام کرنا چاہیے کیونکہ اکل وشرب و برناع فی نفسہ تو حرام نہیں بلکہ روزہ کی وجہ سے ایک وقت خاص وحد منعین تک ممنوع ہوگئے ہیں اور قول زور وگل زور تو فی نفسہ حرام ہے ۔ لیمی جموٹ ،غیبت ، زنا سود، رشوت وغیرہ جب تم نے محر مات کا ارتکاب کر کے روزہ کو ناقص کر دیا تو اللہ تعالیٰ کو تہار سے بھو کے ہیا ہے رہنے کی کیا ضرورت ہے ۔ اس کا یہ مطلب نہیں کہ جموٹ اور غیبت اور سود ورشوت سے روزہ ٹو نہیں ٹو فنا مگر ان اندہ ل کے ساتھ جوروزہ ہوتا ہے وہ الیا سے روزہ ٹو نہیں! روزہ تو نہیں ٹو فنا مگر ان اندہ ل کے ساتھ جوروزہ ہوتا ہے وہ الیا سے روزہ ہے نہیں اور ہوئے کہ کہ اس کے کہ تا دی کی ضرورت ہے اور وہ وہ کی تہار سے سانے ایک مضفہ گوشت لا کر رکھ دے جو نہ ترکت کر سے نہ کام کر سے اور جب اس سے کہا جائے کہ میاں ہے سے کہا جائے کہ میاں ہے سے کہا تھا اور بیآ دمی ہے کہ تا ہے گہا تھا اور بیآ دمی ہے کہ تا ہے کہ معقول آدمی کو کہا تھا اور بیآ دمی ہے کہ تا ہے کہ وہ ان ناطق اس پرصادت ہے ۔ پس جسے یہ مضغة الم معقول آدمی تھا مگر کام کا آدمی نہ تھا ایسے بی حیات کے کہ تا ہے کہ معقول آدمی تھا مگر کام کا آدمی نہ تھا ایسے بی حیات کے کہ اس کے کہ تا ہے کہ معقول آدمی تھا مگر کام کا آدمی نہ تھا ایسے بی کے کہ تا ہے کہ دورہ دورہ ہوگا مگر کام کا روزہ میں کے کہ تا ہے کہ دورہ کھی اسے کہ کہ تا دمی تھا مگر کام کا آدمی نہ تھا ایسے بی کہ تا ہے کہ دورہ کھی اور دورہ میں اور دیات کا دورہ ہوگا مگر کام کا روزہ شہوگا ہے کہ کہ کہ دورہ دورہ کو کہ کہ دورہ دورہ ہوگا گر کام کا روزہ شہوگا ہے۔

اس حالت میں آپ ایسے روزہ دار ہوں کے جیسے ایک نوجوان موہوی صاحب گاؤں میں گئے شے اور دہاں جا کر وعظ میں بے نمازیوں کی خوب خبر لی کہ بے نمازی آ دمی سوراور کتے ہے جس کئے شے اور دہاں جا کر وعظ میں بے نمازیوں کی خوب خبر لی کہ بے نمازی آ دمی سوراور کتے ہے بھی بدتر ہے۔ اس پرگاؤں کے چوہدری خفا ہو گئے اور او ٹھیاں لے کر رات کو مولوی صاحب کا قیام تھاوہ یہ خبرس کر گھیرایا ہوا آیا اور کہا مارنے کو اکتھے ہو گئے جس مخص کے بہاں مولوی صاحب کا قیام تھاوہ یہ خبرس کر گھیرایا ہوا آیا اور کہا اللہ سس آبی داؤد ۲۳۱۲، سس النومدی ۲۰۵، مذکو فی المصابیح ۱۹۹۰

مولوی صاحب آپ اپنی جان کی خیر مناؤ۔ گاؤل والے آپ کو مارنے کے واسطے آگئے۔

ہما، کیوں؟ کہااس لئے کہ آپ نے ان کوسوراور کر بنایا تھا کہا ہی اتنی بات پرخفا ہیں ان سے تو

میں نے لوں گا۔ چنا نچہ گاؤں والے جب سامنے آئے تو مولوی صاحب نے پوچھا کہ بھائیو! تم

کیوں آئے ہو؟ سب نے کہا بم تم کو ماریں کے کیونکہ تم نے بم کوسوراور کتے ہے بدتر کہا ہم مولوی
صاحب نے کہا کہ بی نے تم کوسواور کتے ہے بدتر نہیں کہا بلکہ بنمازیوں کو کہا ہے اور تم تو نمازی
ہو۔ بتلاؤتم نے بھی آخری جھ کی نماز بھی پڑھی ہے؟ کہا ہاں! کئی وفعہ پھر پوچھااور عید بقرعید کی
نماز بھی پڑھی ہے؟ کہا بی تو ہرسال پڑھتے ہیں۔ کہا پھرتم بے نمازی کدھرے ہوئے تو نمازی
ہو ہے نمازی تو وہ ہے جس نے عمر بھر میں ایک وفعہ بھی نماز نہ پڑھی ہو۔ بیس کرگاؤں والے خوش
ہو کئے کہ بم بھی نمازیوں میں وافل ہوگئے۔
ہو گئے کہ بم بھی نمازیوں میں وافل ہوگئے۔

توجیے یہ لوگ نمازیوں کی فہرست میں داخل ہو کرخوش ہوگئے ایسے ہی ہم اپنے کوروزہ داروں میں شامل بجھ کرخوش ہیں۔ گوگاؤں والوں کی بیخوشی ایک معنی کوسی بھی تھی ۔ وہ کو پکے نمازی سے مرکھ کے اس نمازیوں کے سامنے بے نمازی شے مر پھر بھی غنیمت سے کیونکہ بیرعید کے نمازی میرٹھ کے اس مسلمان بیرسٹر ہے تو اچھے تھے جس سے عید کے دن مسلمان ملنے گئے تو وہ کہتا ہے کہ ویل (Well) آج آپ لوگوں کا عید تھا اس کم بخت کواس سے بھی عارتی کہ اسلامی عیدکوا پی طرف منسوب کر ہے۔ تو وہ گاؤں کے عید کے نمازی اس سے بدر جہا بہتر تھے۔ وہ اسلامی عیدکوا پی عید تو بھے تو بھے اور سال بھر میں ایک و فعد تو خدا کے سامنے جھک جائے تھے۔ گوبی وقتہ نماز پڑھنے والوں کے انتہار سے وہ بنمازی ہی ہیں۔ جیسا کہ جی وقتہ معمولی نماز پڑھنے والوں کے انتہار سے وہ بنمازی ہی ہیں۔ جیسا کہ جی وقتہ معمولی نماز پڑھنے والوں کے کے سامنے بینی اس میں بیرے جیسا کہ جی وقتہ معمولی نماز پڑھنے والوں کے کہا سے بنمازی ہیں جس کومولا نافر ماتے ہیں۔

بیج وقت آیرنماز اے رہنموں ہی عاشقاں ہم نی صلوۃ وانموں (نمازتویا نج وقت آئی ہے مگر عاشق ہمیشہ نماز میں رہتے ہیں)

اس کا پیمطلب نہیں جیسا کہ آج کل کے جاہل صوفیوں اور طحدوں نے سمجھا ہے کہ آج نئے وقت کی کچھ خطب کے آج نئے وقت کی کچھ خطر ورت نہیں۔ بیتو اہل طاہر کی ٹماز ہے عاشقوں کی ٹماز تو مراقبہ ہے جو ہروقت ہو سکے۔ بیمطلب بالکل غلط ہے کیونکہ اس میں نصوص کی تحریف ہے جس سے مولا نا ہری ہیں بلکہ مطلب سے مطلب بیا ہے وقتوں کی ہے کہ عام لوگ تو صرف پانچ وقت کی ٹماز پڑھتے ہیں اور عشاق چونکہ ہروقت ان بانچ وقتوں کی

نماز کی فکر میں مشغول رہے ہیں وہ ہرونت نمازی میں ہیں کیونکہ صدیث میں ہے۔ من کان استظر الصلوة فہو المصلوة ماکانت تعجیسہ! (جوش نماز کا انتظار کرتا ہے لیس وہ نماز میں ہے جس کیلئے وہ مجبوس ہے) او کماقال کے منتظر صلوق نمازی میں ہے اور عشاق ہرونت نماز کے انتظار اور فکر میں رہ جو ایر اور فلا ہر ہے جوالیا ہوگا وہ پائے وقت کی نماز کا پابند کول نہ ہوگا؟ غرض عشاق کی حالت تو بیہ جوحد برث میں ہے جعلت پائے وقت کی نماز کا پابند کول نہ ہوگا؟ غرض عشاق کی حالت تو بیہ جوحد برث میں ہے جعلت فوق عینی فی الصلوفة کران کونمازی میں جین ملتا ہے

اس لئے ان کی طبیعت ہروفت تماز کی طرف راغب و ماکل رہتی ہے اوراس کی فکر گئی رہتی ہے کہ کب وفت آئے اور تماز پڑھیں ۔ تو ان کا ملین کے مقابلہ میں تو ہم اور آپ بے تمازی ہیں اور ہمارے آپ کے سامنے تمازی ہیں اور ہمارے آپ کے سامنے تمازی ہیں اور ہمارے آپ کے سامنے تمازی ہیں جو یوں کہتا تھا کہ آپ لوگوں کا آج عید تھا۔ اس نے ایس انگریزی پڑھی تھی کہ ذبان بھی اردونہ رہی ۔ افسوس انگریزی تو صبح ہو لیے کی کوشش کرتے ہیں اور ان کی تقلید کرنے والے ان کی رئیس میں اردونہ میں اور وانے گئے۔

کانپور میں ایک خانساہاں کو جو ہندوستانی تھا میں نے یہ کہتے ہوئے سنا کہ ہم یہ بات سننائہیں مانگا۔ بھلاان کم بختوں کو کیا ہوا جن کی اردوزبان مادری زبان ہے جو سمجھے بولنے پر پوری طرح قادر جیں۔ انگر پر تو معذور جیں کہ ان کی زبان غیر ہے گروہی تقلید کا شوق جس سے عقلین مسنح ہورہی ہیں۔ جیل۔ انگر پر تو معذور جیں کہ ان کی زبان غیر ہے گروہی تقلید کا شوق جس سے عقلین مسنح ہورہی ہیں۔ بہر حال تکیل صوم کی سخت مغرورت ہے در نہ ہما راروز و برائے نام روز و ہوگا۔ کام کاروز و نہ ہوگا اور جس دول کام کاروز و نہ ہوگا اور جس دول کی کرتا ہوں کہ تکیل صوم بھی بہت بہل ہے بچھ دشوار نہیں۔

جمیل کے درج

گراول ایک مقدمہ بھے لیجئے۔ وہ بیاکہ بھیل کے دودر ہے ہیں۔ ایک بھیل مغروریدوسری بھیل کامل

متحیل ضروری وہ ہے جس سے شفصان سے نکل جائے اوراس کو ناتص نہ کہ سکیں۔
اور تکیل کامل ہے ہے کر فع نقصان کے علاوہ اس بیل کھے حسن وخو کی اور پھول چیاں بھی لگ جا کیں۔
اور تکیل کامل ہے ہے کر فع نقصان کے علاوہ اس بیل کھے حسن وخو کی اور پھول چیاں بھی لگ جا کیں ۔
جسے ایک تو حسن ہے جو جن کے مقابل ہے جس کا حاصل ہے ہے کہ ٹاک اور نقشہ اچھا ہو
المادہ المحدیث فی " موسوعة اطراف المحدیث المبوی المشریف" ہے فتح المادی لابن عمر المحدیث الم

اوررنگ نگھرا ہوا ہو۔ دومرے زینت کا درجہ ہے کہ علاوہ حسن کے لباس اور زیور بھی بہت کچھ ہو۔ پس پخیل ضروری توحسن کا درجہ ہے اور بخیل کامل زینت وآ رائش کا درجہ ہے۔

اب بیجے کے روز وکی بھیل ضروری تو کچھ بھی دشوار نہیں بلکہ بہت ہی آسان ہے کیونکہ وہ بھی عدمی ہے اس میں پچھ کر نائیس پڑتا۔ اس کا حاصل صرف بیہ ہے کہ محر مات کونزک کردو۔ فیبت نہ کرو، جھوٹ نہ بولو، از ائی جھڑا نہ کرو۔ نگاہ بدنہ کرو۔ رشوت نہ لو۔ سود نہ لو۔ اور یہ سب عدمیات بیں۔ پس روز ہ کی تھیل ضروری محض سکوت اور نوم سے بھی ہو سکتی ہے۔ اس کے لئے نفلیس پڑھنے اور تاوت قرآن کرنے یا درود واذکار بجالائے کی ضرورت نہیں۔ اگر کوئی شخص ون بھرسوتا رہے مرن نماز کے وقت جاگہ کرنماز پڑھ لیا کرے تواس کا روز ہ کا طب ہوگا ناتھ نہ ہوگا۔

فقہا اپنے جوکٹر تنوم کوروزہ میں مکروہ لکھا ہے وہ اس کے لئے ہے جوروزہ کا وقت کا شنے کے لئے سویے اور جومحر ہات سے بیخ کے لئے سویے اس کے واسطے کرا ہت نہیں۔ نیز وہ کرا ہت اس کے مسویے اور جومحر ہات سے بیخ کے لئے سوئے اس کے واسطے کرا ہت نہیں۔ نیز وہ کرا ہت اس کے لئے ہے جس کو جا گئے میں ابتلاء فی الحر مات کا اندیشہ نہ ہواور جس کو بیا ندیشہ ہوکہ میں جا گئے کی صالت میں لڑائی جھکڑ ہے اور جموٹ فیبت سے نہ نی سکوں گا اس کے لئے سونا مکروہ نہیں ۔

(كفتم اين نتزاست خوابش بردهي)

تو ویکھا آپ نے کہ یمیل ضروری کس قدر آسان ہے جو خاموش رہے اورسوتے رہنے ہے مسل ہوسکتی ہے۔ البیتہ یمیل کامل میں زیادت اعمال کو بھی دخل ہے کہ روزہ میں تلاوت قر آن زیادہ کرو۔ ان اعمال سے روزہ کی تحمیل زیادہ ہوگی گرمطلق بھیل اس پرموتو ف نہیں۔ بس جس کو پھیل کامل کی ہمت نہ ہو وہ تھیل ضروری کو ہاتھ ہے نہ دے کہ اس میں تو پچھ کرنا ہی نہیں برات یا گھھوں غیبت ہے بہت پر ہیز کرو کیو کہ عورت بی نہیں جو غیبت کا بہت مرض ہے۔ وہ عورت بی نہیں جو غیبت نہ کر ہے اور مضان میں تو بہت ہی جرام ہے اور رمضان میں تو بہت ہی بڑا گناہ ہے کہ وہ عالمی اور عیب تا عمال صالحہ کا ثواب بڑھا ہے ایسے ہی گنا ہوں کا گناہ بھی بڑھ جاتا ہے جسے شرف مکان کو کمل صالحہ کا ثواب بڑھا نے اور گم ہدے گناہ بڑھانے میں وض ہے۔ میں شرف مکان کو کمل صالحہ کے تواب بڑھانے اور گم بردھانے میں وشل ہے۔ میں مشالا کو کی شخص سمجد میں نماز پڑھے تو تو اب زیادہ ہے اور اگر مجد میں مشالا کرے تو گناہ بھی بیست خارج مجد کے ذیادہ ہوگانے خوب بھی لو۔

پھرغیبت میں ندمعلوم لوگوں کو کیا مز ہ آتا ہے۔تھوڑی دیر کیلئے اپنا جی خوش کر لیتے ہیں۔ پھرا کر

اس کوخر ہوگئ اوراس سے دشمنی پڑگئ تو عمر بحراس کا خمیاز و بھکتنا پڑتا ہے اورا کر ذرا اول میں حس ہوتو غیب کرنے کے ساتھ بی قلب میں ایسی ظلمت پیدا ہوتی ہے جس سے بخت تکلیف ہوتی ہے جیسے کسی نے گلا گھونٹ ویا ہو۔ اس لئے میں مستورات سے کہتا ہوں کہتم خاص طور پر اس سے نیخے کا اہتمام کرو۔ کیونکہ تنہارے بہاں اس کا بازار بہت گرم ہے عورتوں کوروز و کا شوق تو بہت ہے مگر جتنا شوق ہے اتنابی ان کاروز و تاقص ہوتا ہے اور وہ صرف اس منحوں غیبت کی وجہ سے کیونکہ اور گنا ورشوت اورظلم اور سود وغیرہ سے میکن کا اور سود وغیرہ سے میکن کو تا ہوں کے لئے روز و میں اپنی زبان کوروک لو۔

اب توایک دن یا ڈیڑھ ہی دن رمضان کارہ گیا ہے۔ جتنا حصہ باتی ہے اس میں تواپی ہخشش کرالو۔اور بخشش کرانے کا طریقہ یہی ہے کہ گزشتہ گنا ہوں سے تو بہ کرو۔اور آج سے اپنی زبان کو گنا ہوں ہے روک لواس سے تو بخشش ہوجائے گی اور روزہ کا ال ہوجائے گا اور جس قدر ہوسکے اعمال صالحہ میں زیادتی کرلواس سے تعمیل ہوجائے گی۔

شب قدر کی عبادت

میں اس مدیث کا اس وقت پھراعادہ کرتا ہوں جو چھد کے بیان میں پڑھی تھی حضور صلی اللہ علیہ وسلم فریاتے ہیں: دغم انف رجل ادر ک رمضان فانسلخ قبل ان یغفر لله کہاس فخص کی ٹاک رگڑ جائے مٹی میں ل جائے یعنی وہ ذلیل ہوج ہے جس نے رمضان کو پالیا اور وہ اس کی اٹی مغفرت سے پہلے تم ہوگیا۔

ظاہر ہے کہ رسول اللہ علی و تا ہے کہ دعائس قدر سخت ہے آپ کی و عایا بدعا کے قبول ہوئے میں کیا شک ہے (اور اس پر جوشبہ ہوتا ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی تو بدعا بھی و عاہو کر گئی ہوئے میں کیا شک ہے اس کا جواب جمعہ کے وعظ میں و یا جا چکا ہے جس کا حاصل ہیہ ہے کہ بیتھم اس بدوعا کا ہے جواز راہ بشریت ہواور جو بدوعا تشریقی طور پر اس کا بیتھم نہیں)۔

صاحبو۔ ہم نے بدرمضان پالیا ہے جواس وقت قریب فتم ہے اگر ہم نے اسمیں اپنی مغفرت نہ کرائی تو ہم اس وعید میں واض ہوجا کیں گے اس اہتمام کے ساتھ اپنی مغفرت کا اہتمام کرنا چاہیے۔ کیاڈ بر حدن ہو۔ اس موقع کرنا چاہی ہے۔ کیاڈ بر حدن ہو۔ اس موقع کوننیمت بجھنا چاہی دن ہو۔ اس موقع کوننیمت بجھنا چاہی۔ بدر حمت و برکت کا وقت ہے۔ کیا خبر پھر کس کورمض ن تصیب ہوتا ہے کس الے صنن التر مذی: ۱۳۵۴ء مسئد احمد ۲۵۳: ۲۵۳

کوئیں۔ ابھی کچھ حصہ رمضان کا باتی ہے جس کی نضیات یہ ہے کہ اس میں فضل کا تواب فرض کے برابر ہے اور فرض کا تواب سر فرضوں کے برابر ملتا ہے اور لیلۃ القدر کی عبادت کا تواب تواسی سال کی عمادت سے بھی زیادہ ہے ۔

اے خواجہ چہ پری زشب قدرنشانی ہے ہرشب شب قدراست اگر قدر بدانی

(اے خواجہ چہ پری زشب قدر کی نشانی کیا ہو چھتا ہے اگر تو قدر بھھتا ہے تو ہردات البلۃ القدر ہے)

جو خص شب قدر میں مردود تھا گرآج کی رات مقبول ہو گیا تواس کے لئے بہی رات البلۃ
القدر ہے بس اس ہے بھی بہتر ہے۔ بس اگر شب قدر گزرگئی تواس کاغم نہ کرو۔ خدا تعالی ہے
ملاقہ جوڑنے کی فکر کرو۔ جب ان سے علاقہ جوڑلو گے تو وہ تمہارے واسطے رمضان کی اخبررات
کو بھی شب قدر کر سکتے ہیں۔

ایک بزرگ فرماتے ہیں۔

ایک فضیلت رمضان کی ہے ہے کہ اور اعمال کا تو اب محدود ہے کہ دس گئے ہے سات سو گئے تک ملتا ہے اور روز ہ کا تو اب غیر محدود ہے کہ اس کے تو اب کی کوئی حد ہی نہیں۔ بیس نے اس مضمون کوایک وعظ میں بہت تفصیل کے ساتھ بیان کیا ہے کہ روز ہ کا تو اب غیر تمتا ہی ہمعنی لا یا تعف عند صد ہے۔ وہ اس بارے میں بہت ہی اچھا وعظ ہے۔ خدا کرے جلد شائع ہوجائے۔ توان فضیاتوں کون کر جو حصہ تھوڑ اسار مضان کا باتی ہے اس کی قدر کرتا چاہیے اور جو پچھ ہو سکے اس میں کر لینا چاہیئے۔ جونوت ہوگیا وہ تو قبضہ کے باہر ہے گرجو باتی ہے اس کوتو فوت نہ کیا جائے۔ کیس اب قصد کر لوکہ آئ کا دن طاعت ہی میں گڑاریں گاور ذبان کو گنا ہوں سے بچا کمیں کے ۔ اس وقت سے کام میں لگ جاؤ۔ قرآن پڑھوا ور نفالیس پڑھوا ور خدا کو یا دکر وہ تو بدواستغفار کرو اور اپنی کوتا ہی پر رفح وافسوں کر وان شاء اللہ اس طرح تم اس رمضان کی برکات سے محروم نہ رہو گے اور اس وعید میں داخل نہ ہوگے جو صدیث میں نہ کور ہے ۔ بس یہی میرانت صورتھا کہ ڈیڑھ دن یا ایک دن تو شریعت کے موافق اپنی طالت بنالواور اس میں تو خدا تو گی کوراضی کر لو سو بجمراللہ مختم طور بر یہ مقصد بوری طرح بیان ہوگیا۔

اب دعا کرواللہ تعالی ہم کوتو فیق علی عطافر ما کیں اور رمضان کی برکات ہم
کونصیب فرما کیں۔ جن میں سب سے بڑی برکت ریہ کے اندتعالی ہم
سے داشی ہوجا کیں اور ہماری مغفرت فرما کیں۔ آمین ثم آمین.
و صلی الله علی خیر خلقه سیدنا محمدو علیٰ آله
و اصحابه اجمعین

وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العالمين.

رمضان فی رمضان

یہ وعظ ۲۲ شعبان ۱۳۳۱ ہے بروز جمعہ جامع مسجد تھانہ بھون ہیں ہیں ا کرفر مایا۔ جسے خواجہ عزیز آئس مخدوب صاحب نے قامنبند فر مایا۔

فوات: پیشتر حضرت والا نے جمعہ کے دوسرے خطبہ کے ختم کے قریب رمضان المبارک کے متعلق ایک مختصری تقریر فر مائی جوذیل میں نقل کی جاتی ہوکر مستقل وعظ فر ، یا وہ مختصر تقریر اور مغصل وعظ بالتر تبیب نقل کئے جاتے ہیں۔

تقرير قبل وعظ

روزه کے حقوق

ماحوا ہم لوگوں کوخوش ہونا چاہیے کہ رمضان المبارک کامہید آرہا ہے۔ سب جائے ہیں کہ روزہ گنی بڑی عبادت ہے اور بیمہیند کس قدر بابر کت ہے۔ ہمیں چاہئے کہ روزہ کے حقوق ادا کرنے کا بہت اہتمام رکھیں اور ہمیشاس کے حقوق ادا کرنے رہیں۔ رمضان المبارک کے ختم تک اس کا خاص طور سے خیال رکھیں کہ کوئی گناہ مرز دنہ ہونے پائے۔ بالخصوص ، غیبت ، بری نگاہ مرام روزی بالکل ہی چھوڑ دیں گویہ گناہ ہمیشہ ہی ہے لئے جیں اوران کو ہمیشہ ہی کے لئے جھوڑ دینا جا ہے۔ گاہ ہمیشہ ہی سے اور زیاج ہے۔

ایک عباوت رمضان المبارک کی تراوت کے ۔ اس میں پریشان نہ ہوں کہ صاحب گرمی میں کھڑ انہیں رہاجا تا ۔ ابھی تو بفضلہ را توں کو شنڈ رہتی ہے اورا گر پکی مشقت بھی ہوتو کیا ہے ۔ یہ رمضان المبارک کی خاص عباوت ہے ۔ آخر دنیا کے واسطے بھی تو کتنی کتنی مشقتیں اٹھائے ہیں۔ صرف ایک گفنڈ کا کام ہے پھر تھوڑی تھوڑی ویر بعد سلام پھیرتے رہتے ہیں اور ہرچا ردکعت کے بعد آرام کے لئے وقفہ ماتار ہتا ہے ۔ اس میں پکھا کرلیا کریں ۔ لیکن امام کے ساتھ فورا نماز میں شامل ہوجاتا جا ہے۔ یہ بہوئے ۔ غرض اس مارک مہید میں نہا ہے۔ یہ بہوئے ۔ غرض اس مارک مہید میں نہا ہے خوش کے ساتھ عباوت کرنی چاہئے مبارک مہید میں نہا ہے خوش کے ساتھ عباوت کرنی چاہئے اور جننے گنا وسب کو چھوڑ و بیتا جا ہے ۔ یہ اہم کوق ہیں رمضان المبارک کے۔ اور جننے گنا وسب کو چھوڑ و بیتا جا ہے ۔ یہ اہم کوق ہیں رمضان المبارک کے۔

باتی اس ہے قبل کاحق میہ ہے کہ جاندگی تحقیق کی جائے۔ سواب تک جوتحقیق ہوئی ہے اس سے تابت ہوتا ہے کہ شعبان کی پہلی بدھ کی روزتھی۔ تو بدھ بدھ ۲۹، للندا بدھ کے روز جاندگی تلاش جاہیے۔ بدھ کے دن جاندکور یکھیں۔ اگرنظر آ جائے تو دوسرے دن سے روزے رکھیں۔ اور تر اوش اک دن ہے شروع کردیں۔ورنہ ۱۳ دن پورے کرکے شروع کریں بیہ ہے تھم چاند کے متعلق۔
لیکن جوکوئی چاند دیکھے دہ مدرسہ میں اطلاع کردے کیونکہ بہت ہے مسائل ایسے باریک ہیں جن کواٹل علم ہی جانچ ہیں۔
جن کواٹل علم ہی جانچ ہیں۔ لہذا خودا پی تحقیق پر کمل نہیں چاہیئے ۔ کسی عالم کے فتوی کے موافق عمل کرتا چاہیے۔ اوراگر میہ ثابت ہوجائے کہ شعبان کی پہلی منگل کو تھی تو پھر چاندمنگل کی شام کو بھی دیکھنا چاہیے۔ بہرحال میچاند کے احکام ہیں اوروہ جو ہیں بیان کر چکا ہوں اجمالاً روزہ کے حقوق تھے۔

میں نے اس واسطے استے جملے اس وقت کہددیے ہیں کہ بعد نماز کے شاید بعض ہیارے چلے جا ئیں۔ ورندا کر بعد نماز کے بھی کھیر نا ہوتو بیان کا بھی ارادہ ہے۔ جس کا بی چاہ سننے کے لئے تھیر جائے اور جو اس وقت حاضر نہیں جیں ان کو بھی یہ احظام پہنچادیں۔ خصوص عورتوں کوغیبت سے حاضر نہیں جیں ان کو بھی یہ احظام پہنچادیں۔ خصوص عورتوں کوغیبت کی خور نماز کی بارندی کی ذرازیادہ تا کید کر دیں۔ بیٹے بتیں بہت کرتی بین اور ایٹ نماز کی بھی پابندی کم ہوتی ہیں۔ اورا کشر نماز کی بھی پابندی کم ہوتی ہیں۔ خوب اچھی طرح سمجھادیں کیونکہ مردوں کے ذریے ان کاحق ہے۔ بیل۔خوب اچھی طرح سمجھادیں کیونکہ مردوں کے ذریے ان کاحق ہے۔ کیا کہا تھا اور ابتم کیا کر رہی ہوں

خطبهٔ ما ثوره

يست بمراللهُ الرَّمْنَ الرَّحِيمِ

الْحَمُدُ لِلْهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغُفِرُهُ وَنُوْمِنُ بِهِ وَنَوَكُلُ عَلَيْهِ وَنَعُودُ فَ اللّهِ مِنْ شُرُورِ الْفُسِنَا وَمَنْ سَيِّنَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَهْدِهِ اللّهُ فَلاَ مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُقْدِهِ اللّهُ فَلاَ مُضِلًّ لَهُ وَمَنْ يُقْدِهِ اللّهُ فَلاَ مُضِلًّ لَهُ وَمَنْ يُقْدِهِ اللّهُ وَحَدَةً لَا شَرِيْكَ لَهُ وَمَنْ يُقْدِهِ اللّهُ فَلاَ مَا يَعْدُهُ وَرَسُولُهُ وَحَدَةً لَا شَرِيْكَ لَهُ وَنَشْهَدُ اَنْ لِللّهِ اللّهُ وَحَدَةً لَا شَرِيْكَ لَهُ وَنَشْهَدُ اَنْ سَيِّدَنَا وَمَولئًا مُحَمَّدًا عَبْدُةً وَرَسُولُهُ صَلّى اللّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَنَشْهَدُ اَنْ سَيِّدَنَا وَمَولئًا مُحَمَّدًا عَبْدُةً وَرَسُولُهُ صَلّى اللّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَى اللّهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ المَّابَعُدُ فَاعُودُ بِاللّهِ مِنَ الشّيطُنِ وَعَلَى اللّهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ المَّابَعُدُ فَاعُودُ بِاللّهِ مِنَ الشّيطُنِ وَعَلَى اللّهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ اللّهُ المَّامَةُ فَاعُودُ فِي اللّهِ مِنَ الشّيطُنِ الرّجِيْم. فَهُرُ وَمُضَانَ الخ

تمہید: بیسب کومعلوم ہے کہ دمضان المبارک کامہینة قریب آپنچاہے۔لہذا مناسب بلکہ واجب ہے کہ دمضان المبارک کامہینة قریب آپنچاہے۔لہذا مناسب بلکہ واجب ہے کہ دمضان المبارک کے متعلق کی صفر وری مضافین بیان کروئے جا کیں اور وہ مضافین مختلف ہیں۔ ایک تتم تو ان مضافین کی ہے فضائل رمضان کے۔ایک تتم ہے آ داب رمضان المبارک کے۔ایک تتم ہے تقوق رمضان المبارک کے۔

حقوق اورآ داب بیس میں نے اپنی اصطلاح کے موافق بیفرق رکھاہے کہ حقوق تو وہ ہیں جو واجب ہوں اورآ داب وہ ہیں جو غیر داجب ہوں لیکن ہیں آ سانی تعبیر کے داسطے ایک سم کانام آ داب رکھتا ہوں اور ایک کاحقوق فرض بیک رمضان المبارک کے متعلق مضامین مختلف ہیں۔ اب و کیجنے کے قابل بیاب ہے کہ کون سامضمون زیادہ ضروری ہے اس کومقدم رکھا جائے اور اگر وقت رہے تو دوسرے مضامین کے متعلق بھی بیان کر دیا جائے ورز ضروری امرتو فوت نہ ہو۔ تو ان متنول قسموں کی شان اور درجہ ہیں فور کرنے سے برخض سجے سکتا ہے کہ سب سے زیادہ ضروری کوئ انہیت مضروری کوئ سے متعلق جو مقوق واجب ہیں وہ سب سے زیادہ ضروری اہمیت مضروری اہمیت میں ابتدان کے متعلق جو مضمون ہوگا وہی سب سے زیادہ ضروری کوئے حقوق کے فوت

ہونے ہے معنرت ہے اور آ داب کے فوت ہونے ہے معنرت نہیں گومنفعت میں کی واقع ہوج کے اور تمام عقلاء کا اس پراتف ق ہے کہ معنرت کا دفع کر نازیادہ ضروری ہے بہذسبت منفعت کے حاصل کرنے کے ۔ تو حقوق کا آ داب سے زیادہ ضروری ہونا اور زیادہ اہم ہونا اس طرح ٹابت ہوا۔

ر ہانضائل کا درجہ۔ سووہ دراصل ترغیب کے لئے موضوع ہیں۔ توبیشعبہ ل کے باب ہیں ہے ہے نہ کہ مل کے اور حقیقت ہیں مقصود علم ہے بھی اللہ ہی ہے۔ عمل ہی کی اعائت کے واسطے فضائل کاعلم فالم رکیا جاتا ہے تا کہ مل کی رغبت پیدا ہو۔ کیونکہ جعیتیں ضعیف ہیں محض امراور نہی عمل کے لئے محرک نہ ہوتے۔ ان کی تاثیر ہیں قوت پیدا کرنے کے لئے شارع نے طریقہ اعائت کا پر کھا کہ ترغیب نہ ہوتے۔ ان کی تاثیر ہیں قوت پیدا کرنے کے لئے شارع نے طریقہ اعائت کا پر کھا کہ ترغیب اور ترہیب ہے بھی کام لیا۔ یعنی رغبت والہ کراوامر پر ابھارااور خوف والہ کرنواہی ہے روکا۔ تو حقیقة فضائل ترغیب کے لئے بیان کئے جاتے ہیں جن کا تعلق علم سے ہاوراس عمل ہے بھی مقصود عمل ہے بھر عمل شرخیب کے مقصود عمل ہے بھر عمل سے بھی دودر ہے ہیں ایک درجہ کا تعلق ہوتی ہے۔ ہورائیک ورجہ کا تعلق حقوق ہے۔

خلاصہ بیک کیلم وعمل میں مقصود حقوق کا اہتمام ہے۔

ماه رمضان كااجتمام

تنیوں قسموں جس اہم اوراقدم ہی ہوا لینی حقوق کا اہتمام ۔ لہذا جس اس وقت ای مضمون پر اکتفا کرتا ہوں ۔ کیونکہ حقوق فی نفسہ بھی اہم ہیں ۔ علاوہ اس کے ہم لوگ زیادہ کوتا ہی ان ہی کے متعقق کرتے ہیں یعنی رمضان المبارک کے حقوق کی ہم کو پر واا ورا ہتما م ہیں ۔

اس کے فضائل کا تو کم وہیش علم ہے بھی ۔ تفصیل نہیں تو اجمالا تو ضرور ہے کیونکہ ہر خض جانتا ہے کہ رمضان المبارک بہت فضائل کا مہینہ ہے ، بہت اجر کا مہینہ ہے ، بہت عبادت کا مہینہ ہے ، بہت اجر کا مہینہ ہے ، بہت عبادت کا مہینہ ہے ، بہت کر رمضان المبارک بہت فضائل کا مہینہ ہے ، بہت اجر کا مہینہ ہے ، بہت عبادت کا مہینہ ہے ، بہت کر کہت کا مہینہ ہے ، بہت اجر کا مہینہ ہے ، بہت عبادت کا مہینہ ہے ، بہت کی اور جب کا میں مضمون ہے کہ اس کا مقام ہے گئی ۔ گئی کے قدرا ہتما م کر نیر جس درجہ جس بھی مطلوب ہے اس پر نظر کرنے ہے معلوم ہوتا ہے کہا س کا بھی کسی قدرا ہتما م کے بیایوں کہتے کہا گرا ہتما م ہیں تو ضرور ہے جب نفض کل کا علم ہے آ واب کا بھی کسی قدرا ہتما م کیونکہ جب اور حبر کرکہ چیز کے لئے ادب کا بھی کسی قدر علم ہے کیونکہ جب رمضان کے متبرک ہونے کا علم ہے اور حبر کرک چیز کے لئے ادب کا بھی کسی درجہ جس تو جب برکت کا اعتق د ہوا تو او ب کی بھی ضرور ہے قلب بیل پیدا ہوگئی غرض اس کا بھی کسی درجہ جس ابتمام اور علم ہے گو ہوا جمال کے درجہ بیل ہے کیا نو بھور ہوتا ہے کہا تھی جسی عبر کرت کا اعتق د ہوا تو اور ب کی بھی ضرور ہے تیکن بھتر رضر ورت اس کے ساتھ ہی علم متعلق ہے۔ اس متمام اور علم ہے گو ہوا جمال کے درجہ بیل ہو گئی نیک نوتور شرور درت اس کے ساتھ ہی علم متعلق ہے۔

باقی رہے حقوق سوان کے متعلق نہایت درجہ کا اظال واقع ہور ہا ہے علماً بھی اور عملاً بھی یہ یہ اس طرف بھی ذہن بھی نہیں جاتا کہ رمضان المبارک کے بھے حقوق بھی ہیں ۔اس واسطے کہ ہم دیکھے ہیں کہ رمضان آنے سے لوگ زوائد کا تو اہتمام کرتے ہیں مثلاً دودھ کا بندو بست کر لیا جاتا ہے۔ صفائی کرائی جاتی ہے۔ پچھ برف کا انتظام سوج لیا جاتا ہے۔ شکر ، مجوری بختم بالنگو وغیرہ بختح کر لیا جاتا ہے۔ ساکہ بوتا ہے۔ یہ لیت ہیں کہ گھر میں کنزی بھی ہے منسل وسل کا بھی اہتمام ہوتا ہے۔ یہ تو اہتمام ہوتے ہیں لیکن سے بھی ذہن میں بھی نہیں آتا کہ بھائی رمضان المبارک کا مہینہ آتا ہے، لا وُغیبت سے شہیخ کا کوئی غیب انتظام کریں۔ یہ بہی نہیں ہوتا کہ باہم مشورہ کر کے چندا حباب نے یہ طے کر لیا ہو کہ اگر کوئی غیب انتظام کریں۔ یہ بہی نہیں ہوتا کہ باہم مشورہ کر کے چندا حباب نے یہ طے کر لیا ہو کہ اگر کوئی غیب کرنے کا توالک دوسر سے کوروک ویا کرے ۔ ٹوگ دیا کرے اکثر و نیا کے کاموں میں تو ایک دوسر سے اعانت کی حاجت ہی شہیں بھی جی جاتی ہے۔ دیں کا کام ایسا آسان بھی کھی جاتی ہیں کی اعانت کی حاجت ہی نہیں گر ہیں جی جاتی ۔ اس کے لئے بھی ذہن میں آتا ہی نہیں کہ اپن میں کسی کی اعانت کی حاجت ہی نہیں جی تھیں جی جاتی ۔ اس کے لئے بھی ذہن میں آتا ہی نہیں کہ اپن میں التزام کر لیں۔

کانپور میں ہم نے ویکھا کہ بعض تحبین نے بیائٹزام کر بیافقا کہ جب رمضان المبارک کا مہینہ آتا توایک دودن پہلے ایک دومرے سے درخواست کرتے تھے اورآپیں میں مشاورت کرلیتے تھے کہ جس کے منہ سے غیبت لگلے دومرا فوراً ردک دے کہ روزہ ہے۔ روزہ میں غیبت مت کرولیت تھے کہ جس کے منہ سے غیبت لگلے دومرا فوراً ردک دے کہ روزہ ہے۔ روزہ میں غیبت مت کرولیکن ایساالتزام بہت ہی شاذ و تا در ہے۔ بس بید کھے لیجئے کہ میں نے ساری عمر میں اس متم کا بیا یک ہی جلسدد یکھا ہے بہر حال ان لوگوں کو توجہ تو تھی۔

ای طرح اس کا فران میں جی جھی خیال نہیں آتا کہ بھائی قرآن مجید سننے کا زمانہ آرہا ہے کوئی الیا حافظ علاش کر وجواچھا اور سی پڑھتا ہو۔ بھائی اس کے پیچھے تر اور تح پڑھی چاہیں۔ جو تجوید کے ساتھ قرآن مجید پڑھتا ہو۔ کلام مجید جس کورمضان المبارک کے مہینہ کے ساتھ ایک خاص تعلق ہے ۔ کیونکہ وہ نازل بی اس ماہ مبارک میں ہوا ہے بھی اس کے سننے میں بھی آپ کو اہتمام کی فکر ہوئی ہے ۔ کیونکہ وہ نازل بی اس ماہ مبارک میں ہوا ہے بھی اس کے سننے میں بھی آپ کو اہتمام کی فکر ہوئی ہے ۔ کیونکہ وہ نازل بی اس ماہ مبارک میں ہوا ہے جس میں اور سستی ہڑھے ۔ اورا گرکوئی تجوید کے ساتھ پڑھے ۔ اوالا حافظ تجویز کیا جاتا ہے تو مخالفت کی جاتی ہے کہ تر اور کے میں دیر لگے گی ۔ کھڑا نہیں رہاج نے گا۔ فرش رمضان المبارک کے لئے پہلے سے اور توسب اہتمامات اورا نظامات کئے جاتے ہیں کہ خرض رمضان المبارک کے لئے پہلے سے اور توسب اہتمامات اورا نظامات کئے جاتے ہیں کہ سے میں سیہ مورافظاری میں یہ مولیکن ہم نے کہیں نہیں دیکھا کہ اپنے تفس کا آمادہ کیا ہوکسی نے کہیں مطلق غیبت نہ کروں گایا گراہوں کے ترک کاعزم کیا ہوکہ میں بالکل گناہ نہ کروں گایا گراہوں کے ترک کاعزم کیا ہوکہ میں بالکل گناہ نہ کروں گایا گراہوں کو گویا رمضان

المبارک کے حقوق کے باب میں بہت ہی زیادہ کوتا ہی اور بہت ہی بے پروائی ہے عملاً بھی کوتا ہی ہے۔ اورعلماً بھی کوتا ہی ہے اہتمام بھی حقوق کا کم ہے اور ان کاعلم بھی کم ہے اس واسطے پیضمون ضروری ہوا۔ معصیبت کے آثار

تو میں اس وقت رمضان المبارک کے حقوق کے متعلق بیان کرنا چاہتا ہوں۔ آیت میں جو میں نے تلاوت کی ہے اس میں ہر چند مضمون فضائل رمضان کا ہے کیکن میں ای آیت سے حقوق رمضان کو مستبط کرنا چاہتا ہوں۔ بعض مقد مات کی تمہید کے بعد ایک مقد مہ تو اجمالا میر کی تقریر سے معلوم ہوا ہوگا۔ کہ رمضان المبارک کے چند حقوق ہیں۔ ان کا خلاصہ کیا ہے؟ یہ ہے کہ جملہ معاصی کوڑک کرنا چاہئے خواہ وہ معاصی یوم کے متعلق ہوں یا لیل کے متعلق ہوں۔ عماوت کے متعلق ہوں یا عبادت کے متعلق ہوں۔ یہ کو یا خلاصہ ہے حقوق رمضان کا کہ کل معاصی کوڑک کوڑک کے متعلق ہوں یا معاملات کے متعلق ہوں۔ یہ کو یا خلاصہ ہے حقوق رمضان کا کہ کل معاصی کوڑک کرد ہے۔ اس میں وہ امور بھی آگئے جن سے روز و میں خلل آجا تا ہے یا تر وا آئے میں خلل آجا تا ہے۔ غرض سب معاصی سے احتر از لازم ہے ایک مقد مہ تو یہ ہے جوخلاصہ ہے حقوق رمضان کا۔

وو درامقدمہ بیہ ہے کہ معصیت اپنی ذات کے اعتبار سے بھی اور اپنے اثر کے اعتبار سے بھی اور اپنے اثر کے اعتبار سے بھی ایک تشم کی ظلمت اور تاریکی ہے حدیثوں ہے اس کی تائید ہوتی ہے۔ لیعنی معصیت کے ان آثار سے جو بیان کئے ہیں جناب رسول مقبول صلی اللہ علیہ وسلم نے۔

ان آثار کا حاصل میہ کے فرم نے ہیں جناب رسول الند سلی اللہ علیہ وسلم کہ جوکوئی ممناہ کرتا ہو ایک سیاہ و هم ہاس کے قلب کے اوپر پیدا ہوجاتا ہے آگر وہ توبیہ کرلیتا ہے توحق تعالی اس دهبه کوصاف کردیتا ہے۔ اورا گرتو یہ بیس کرتا اور پھرعود کرتا ہے اس ممناہ کی طرف اوراس پراصرار کرتا ہے تو وہ وہ مہد پھیلتا ہے۔ پھر پھیلتے وہ بہت بڑا ہوجاتا ہے۔ یہاں تک کہ محیط ہوجاتا ہے سارے تو وہ وہ بہت کی تلاوت فرمائی۔

كلا بل ران على قلوبهم ماكانوا يكسبون.

(ہر گزایب نہیں بلکہ انکے دلول پرانکے اٹمال (بد) کا زنگ بیٹے گیاہے)

اس کا ترجمہ مولانائے کیا ہے

بر کناه زیکے ست برمراًت ول ایک ول شووزی زیک باخوار و مجل چون زیک باخوار و مجل چون زیادت گشت ول را ایش گر وو نیرگی

لیکن تا ئید کے واسطے عرض کرتا ہول کہ اگر ذیرا بھی وسوسہ ہوتو خود مشاہدہ کر لیجئے اور اپنے قلب ک

طرف رجوع کرکے اوراپنے قلب کوٹول کرد مکھ لیجئے کہ گناہ صادر ہو جانے کے بعد قلب من ظلمت محسوس ہوتی ہے یانہیں۔

تو میں اس کی تکفریب تو نہیں کرتا لیکن ہے کہوں گا کہ وہ تبھوٹ تو نہیں بولٹا گر دھوکا میں صرور ہے کہ بے چارے غریب نے ظلمت کے مقابل جو چیز ہے یعنی ٹوراس کا بھی مشاہرہ ہی نہیں کیا۔ اے بھی احساس ہی لور کانہیں ہوا۔

معرفت كامدار

یہ سلم مسلم مسلم عقلیہ ہے کہ الاشیاء تعرف باضدادھا کہ ہر چیزا پی ضد ہے پہانی جاتی ہے جب ہے۔ ہوتی ہے جس نے جس کے جس نے جس نے جس نے جس کے جس نے جس کے کہ خس کے جس کے جس کے جس کے جس کے کہ خس کی میں ہوگی۔ کیونکہ اے خبر ہی نہیں کہ میدان فراخ کس کو کہتے ہیں اور فراخی کیسی ہوتی ہے۔

چوں آل کرمے کہ در عظے نہال ست 🏠 زمین و آسان وے ہمال ست

(جو کیٹر ایکھر میں پوسید و ہے اس کیسئے زمین وآسان وہی ہے)

لیکن جس شخص نے میدان دیکھا ہوگا اگر اس کوکھٹری ہیں قید کردیا جائے تواس کی وحشت کا پچھٹھکانہ اوراس کی شکی کی پچھ انتہا نہ ہوگی۔ اس طرح جس نے انوار کا مشاہدہ کیا ہوا گراس کوظلمات میں لاکرڈال دیں تواسے ظلمت سے کیا وحشت ہو تحق ہے جس نے عرجر ظلمت میں پرورش پائی ہو وہ کیا جانے کہ لور کیسا ہوتا ہے اورانوار کس کو کہتے ہیں جیسے مٹی کا کیڑا کہ چونکہ اس کوخوشبو کی خبر نہیں اس لئے بد ہو کی بھی خبر نہیں اس لئے وہ خوشبو بد ہو کا تام س کرسو چتا ہے کہ خوشبو کیا جو ہوتی ہے۔ پھول کا نے جو اس میں کہ دو ہے کہ مان کے سامنے کے دوشبو بد ہو گاتا میں کرسو چتا ہے کہ خوشبو کیا گئے ہیں گران کے سامنے چون ہوتی ہے۔ پھول لائے جا نمیں تو وہ تو یہی کہ دو سے کہان میں کیا رکھا ہے ہم توانمیں نہیں جا ہے۔ لوگ کہتے ہیں خوشبو خوشبو خوشبو۔ ہماری بچھ میں تو آتا نہیں کہ خوشبو بھی کوئی چیز دنیا میں ہے اور کہتے ہیں کہ پاغانہ میں بد ہو جو بی بھی کوئی چیز دنیا میں ہے اور کہتے ہیں کہ پاغانہ میں بد ہوجو تی ہے۔ میں کہ وہ کوشبو بھی کوئی چیز دنیا میں ہے اور کہتے ہیں کہ پاغانہ میں بد ہوجو تی ہے۔ میں تو آتا نہیں کہ خوشبو بھی کوئی چیز دنیا میں ہوئی۔ میں میں ہوئی۔ میں میں تو آتا نہیں کہ خوشبو جی تھیں تو بھی نہیں جو میں ہوئی۔

بربربرں ہے۔ بہ ہم اس کے بہت ہا کہ موروہ سامید کی حقیقت ہی نہیں جان سکتا۔ اس واسطے کہ سمامیہ جس نے بہت وحوب نہ دیکھی ہو وہ سامید کی حقیقت ہی نہیں جان سکتا۔ اس واسطے کہ سمامیہ سفایل ہے دھوپ کے دھوپ کے معرفت سامیہ سے ہو سکتی ہے اور دھوپ کی معرفت سامیہ سے ہو سکتی ہے ایک کی معرفت کا مدار دوسرے کی معرفت پر ہے دونوں لازم ملزوم ہیں۔

حضرت بہاں تک اس قاعدہ کا اثر ہے کہ بعض اہل اللہ نے جن پرغلبہ ذکر کا تھافتم کھا کر ہرتوں بعد کسی غافل کے واقعہ کو دیکھ کر کہا کہ واللہ! ہم بیشہ جانتے تھے کہ و نیا میں کوئی غافل بھی ہے بیگمان تھا کہ دینا میں جتنے لوگ ہیں سب ذاکر ہیں۔ توبات مہی ہے کہ چونکہ وہ ابتداء ہی ہے ولی ماورزاد تھے ذکران کے لئے امرفطری ہوگیا تھا۔

پوچھا کہ الشاکبر! کیاایے بھی لوگ دنیا میں ہوا کرتے ہیں جوئی تعالیٰ کی یادے عافل ہوں۔ نورطاعت

غرض جب الل نور نے الل ظلمت کونہ پہچانا تواگر اہل ظلمت اہل تو رکونہ پہچانیں تو تبجب کیا۔ تو بہرحال معصیت کا ظلمت ہونا محسوس نہ ہوئے کی وجہ یہ ہے کہ اس شخص نے بھی طاعت کے نور کونیس و یکھا۔ اگر نور طاعت کو بھی لیتا تب معلوم ہوتا کہ معصیت میں کیسی ظلمت ہوتی ہے اگریفین نہیں آتا تو اس کوامتحان کر کے دیکے لیتا تب معلوم ہوتا کہ معصیت میں کا عت ہے اگریفین نہیں آتا تو اس کوامتحان کر کے دیکھوڑیا دہ نہیں دوچار ہی دان سی یا ایک ہی رات ہی موالا نافر ماتے ہیں ۔

کر کے دیکھوڑیا دہ نہیں دوچار ہی دان سی یا ایک ہی رات سی موالا نافر ماتے ہیں ۔

خواب را جگوا رامشب اے ہر ہی ہی ہو درکوئے بے خواہاں گذار اے گزار اے گزار کردے اور کی اللہ دالے پاس ایک رات گزار اے گزار اے گزار کے ایک رات سونے کوئرک کردے اور کی اللہ دالے پاس ایک رات گزار اے گزار اے گزار اے گزار کے اور کی اللہ داکھی)

ایک دن توابیا کرو کہ رات کوسوتا چیوڑ دواور جا گئے والوں کے محلّہ کوگز رجاؤ۔ تب جمہیں معلوم ہو کہ جا گئا گئا کتنی بڑی دولت ہے جس کے سامنے سوئے کی کوئی حقیقت نہیں اب تک تو تم نے کی و یکھا کہ سوتا کیا ہے۔ ایک دن جا گنا بھی تو دیکھا او کیا ہے۔ تب معلوم ہو کہ ہم کتنے بڑے خسارہ میں اور کس قدر رٹو نے میں بین غرض ہے۔ خسارہ میں اور کس قدر رٹو نے میں بین غرض

کی شہد درکوئے بنواہاں گزار (ادرایک رات ان بنواہوں کی کا لطف و کھے اور میں میں گئے کہ جاکران کے ساتھ عبادت کراو بنیس بنگہ سب جاکر بے نواہوں کو و کھے لو۔ یہ بھی نہیں کہتے کہ جاکران کے ساتھ عبادت کرلو بنیس بلکہ صرف ان کی حالت ہی و بکھ لو۔ ان کے پاس کوہی ہوکر گزرجاؤ۔ ان کے اتوارتم پر منعکس ہوئے۔ اس وقت منکشف ہوگا کہ ہم سراسر خواب بیس جی سرابر غفلت بیس سراپا ظلمت بیس بہرحال امتحان ہے کہ تھوڑے دنوں طاعت اختیار کر کے ویکھ لو جہیں خود سراپا ظلمت بیس جیس بہرحال امتحان ہیں ہیں۔ کہ تھوڑے دنوں طاعت اختیار کر کے ویکھ کو تارک کیا کہ معاص کے دوراس کیفیت کو وہ بن میں محفوظ رکھ کر معاص کے اوراس کیفیت کو وہ بن میں محفوظ رکھ و جو حالت غلیہ ہماری بیخی سماصی۔ اس کے بعد بھراس حالت کا شرک مواز نہ کرواس وقت معلوم ہوگا ہوگا تھا ہے۔ اس وقت معلوم ہوگا ہوگا تھا ہے۔ اس وقت معلوم ہوگا ہوگا تھا ہے۔ اس وقت معلوم ہوگا میں زمین آسان کا فرق ہے۔ اس وقت معلوم ہوگا کہ دونوں بیس زمین آسان کا فرق ہے۔ اس وقت معلوم ہوگا کہ دونوں بیس زمین آسان کا فرق ہے۔ اس وقت معلوم ہوگا کہ دونوں بیس زمین آسان کا فرق ہے۔ اس وقت معلوم ہوگا کہ دونوں بیس زمین آسان کا فرق ہے۔ اس وقت معلوم ہوگا کہ دونورتھا یہ ظلمت ہے وہ اور چیز تھی یہ اور چیز ہے۔ تو عبادت اگر خلوص ہے بھی نہ بھی نہ کروئی سے دونورتھا یہ ظلمت ہے وہ اور چیز تھی یہ اور چیز ہے۔ تو عبادت اگر خلوص ہے بھی نہ بھی نہ کھی نہ کروئی سے دونورتھا یہ ظلمت ہوگا کے دونورتھا یہ ظلمت ہوگا کہ دونورتھا یہ طرف کی نہ بھی نہ کھی نہ کروئی کے دونورتھا یہ طرف کے دونورتھا کے د

امتیان کی کے لئے کروجب بھی ان شا والقدتی کی بیرتفاوت محسوس ہونے لگے۔اورا گرخلوص ہے کہیں نصیب ہوئی عبادت تب تو کچھ انتہا ہی نہیں۔ میں کہتہ ہوں امتحان ہی کے لئے کچھ دن عبادت کرلو۔ اور بیٹس اپنی طرف سے نہیں کہتا۔ اکا ہر کا ارشاد ہے جس سے معلوم ہوتا ہے کہ امتحان کی نمیت سے بھی عبادت کر لیٹا کا فی نہیں حقیقت پر ہونئی ہے ایک درجہ میں۔ چنا نچے مولا نافر ماتے ہیں ۔ سے بھی عبادت کر لیٹا کا فی نہیں حقیقت پر ہونئی ہے ایک درجہ میں۔ چنا نچے مولا نافر ماتے ہیں ۔ سالمیا تو سٹک بودی دل خراش جہ آزموں را یک ذمانے خاک باش ربسوں تو تم دلخراش پھر (متکبر) ہے رہے ، آزمائش اور امتحان کی نظر سے پچھ دن خاک بین کرد کھے لو) یون نہیں فرمایا۔

ازخلو سے یک زمانے خاک باش (خلوص سے ایک زمانہ خاک بن جاؤ (تواضع اختیار کرو) بلکہ یوں فرمایا ہے ۔

آ زموں را یک زیانے خاک باش (ایک زیانہ بطور آ زیائش کے خاک بن کرد کھے لو)

ایسی خلوص ہے تو فیق طاعت نہیں توامتخان ہی کے لیے پچھے روز خاک بن کرد کھے لو پھر
تو بہت دنوں بن کرد کھا۔ لیکن کیاد کچھا۔ پچھ بھی نہیں اب پچھ روز خاک بن کربھی دیکھو تب
تفاوت معلوم ہوگا کیا معلوم ہوگا ؟ میں معلوم ہوگا۔

در بہاراں کے شود سرمبزسگ ہے خاک شو تاگل بروید رنگ رنگ

(موسم بہاریس پھر کب سرمبز ہوتے ہیں خاک ہوجاؤ تورنگ برنگ کے پھول آگیں گے)

تفاوت بیمعلوم ہوگا کہ مدتوں پھررہ سے تھے لیکن بھی ایک پھول بھی ڈیکھلا لاکھوں ہارشیں

ہوتی رہیں خاک بن دیکھا تو بس ایک بارش بی کافی ہوگئی طرح طرح کے پھول کھل گئے۔تمام
میدان معطرومعنم ہوگیا تو مولا نا نے تضریح فر مائی ہے کہ۔

آ زموں را یک زمانے خاک ہاش (بھورآ زمائش کچھ عرصہ کے لئے خاک بن جاؤ) امتحان بی کے لئے کچھ روز خاک بن کردیکھوتو معلوم کیا آپ نے تفاوت معلوم کرنے کا طریقہ؟ صحبت کا اثر

اس طرح ہے اگرامتحان کیا جائے گا تو ظلمت اورنور میں تفاوت معلوم ہوجائے گا۔اوراس وفت معلوم ہوگا کہ واقعی معصیت بخت ظلمت ہے۔ چنانچہ جن کونورنصیب ہو گیا ہے ان کا خودمشاہرہ ہے کہ جن گناہوں سے پہلے مدتوں تک پریشانی تو کیا ہوتی حظ حاصل ہوتا رہا اور جن گناہوں میں مدتوں مشغول رہنے ہے بھی حس نہیں ہوتا تھا۔ پریشانی کا آج عزم تو کیاان کا حدیث النفس بھی ہونے لگتا ہے تو ہے انتہا پریشان ہوجا تا ہے اور بیجالت ہوجاتی ہے جس کومولا تا فر ماتے ہیں۔ برول سالک برارال غم بود الله عرزباغ ول خلالے کم بود (سالک کےدل میں ہزاروں رہے فیم صاور ہوتے ہیں اگر باطنی حالت میں ذرابرابر کی ہوتی ہے) ا یک تنکا بھی اگر ہاغ دل میں کم ہوجاتا ہے تو بس پوچھومت کیا حالت ہوتی ہے لیکن میہ پریشانی ای کومحسوس ہوتی ہے جوسا لک ہو چنانچہ صدیث میں ہے کہ جس کی عسر کی نماز جاتی رہی فكا نماو تر ماله و اهله ، وولث كيااس كاسارامال ودولت جمن كيا توجناب رسول متبول صلى التُدعليه وسلم كاارشاد اورول كوتوعلم اليقين كے ذريعة سے صادق معلوم ہوتا ہے ليكن ابل الله اس ارشاد کوعین الیقین کے ذریعہ ہے جانتے ہیں اور اہل اللہ کی تو بری شان ہے۔ ہم لوگوں کوجن كونه كي علم ب ندادراك ب البته فهو منهم من داخل بون كاشرف عاصل ب -اى كى برکت سے ان مفرات کا ایک چینناہم پر بھی پڑ گیاہے اور ایک حالت تمیز کی پیدا ہوگئ ہے۔ اس وقت ایک نظیر یا وآمنی حدیث شریف می عشاء کے بعد بات چیت کرنے کی مما نعت اور کراہت آئی ہے۔اس کا عقادتو تھاطالب علمی کے زمانہ میں کیکن ذوقاس کا درجہ معنزت نہیں معلوم تھااس وقت ہے اس تعل ہے وحشت عقل تم طبعی نہتی۔ اور اب یہ کیفیت ہے الحمد لللہ کے عشاء کے بعد اگرکوئی سامنے بھی آ کھڑا ہوتا ہے تو بچ جائیے اس قدرغصہ آتا ہے کہ گولی ماردوں۔ کیوں غصر آتا ہے اب میں بیان نبیس کرسکتا کہ اس کی وجہ کیا ہے۔ بس ان حضرات کی محبت کا اثر ہے اور پھی نبیس ۔ ولین دیے باگل نشستم (لیکن ایک عرصه تک پیول کے ساتھ کشست و محبت رہی) لیجئے اتنی تمیز تو اندھے ہونے پر بھی حاصل ہوجاتی ہے۔حالا نکہ ہم اندھے ہیں لیکن اتناحس تو ہمیں بھی ہونے لگاہے اور واقعی بعضے اندھوں کو دیکھا ہے کہ ٹولنے سے بیل کارنگ بتا دیتے ہیں ۔ لین کمر پر ہاتھ پھیراا در بتلا دیا کہ سفید ہے گویا ہا صرہ سے نہیں لیکن مس کرتے کرتے لامیہ میں بھی باصرہ مودع ہو گیا اور و دبیت ہو گیا۔ گوآئکھیں درست نہیں لیکن چھوتے چھوتے تکرار ا تصال کی پر کت ہے ہاتھوں ہی میں آنکھوں کی صفت پیدا ہوگئ کہ ٹو لئے سے رنگ محسوس ہونے لگا۔ ال طرح حفرات الل الله كي محبت من رہتے رہتے ہميں بھى كچھ كچھوں ہونے لگاہے ك ہاں واقعی عشاء کے بعد جا گنابڑی وحشت اور کراہت کی چیز ہے تو میں نے بیا یک نمونہ پیش کیا ہے۔ پس جب اہل القد کی صحبت سے کچھ تھوڑی بہت تمیز ہم لوگوں میں بھی ہونے تھی کہ پہلے جونکم البقین تفاوہ پھر گویا آنکھوں سے نظر آنے لگا تو جو پوری بوری اطاعت کرے گا وہ تو کیوں نہ و کھے لے گا کہ واقعی جوصفور نے فرمایا کہ و تو اہلہ و مالہ وہ بالکل تھیک ہے۔ ٹھیک تو پہلے بھی مانے ہوئے تھالیکن اب خووا پی آنکھوں سے نظر آسمیار اوراس کو مشاہرہ ہو گیا کہ واقعی میں اٹ کیاای کو کہتے ہیں مولا تا ہے اب خووا پی آنکھوں سے نظر آسمیار اوراس کو مشاہرہ ہو گیا کہ واقعی میں اٹ کیاای کو کہتے ہیں مولا تا ہے بردل سالک ہزاراں غم بود ہی کرز باغ ول خلالے کم بود (س ایک کے دل میں ہزاروں رنج فرم صادر ہوتے ہیں اگر باطنی حالت میں قرابرابر کی ہوتی ہے)

تو یہ کو یامسزت ہے معاصی کے درمیان میں اور یہ کو یا ضرر ہے نافر مانی کے درمیان میں اور یہ کو یا ضرر ہے نافر مانی کے درمیان میں ایکن بیضررائے محسوس ہوتا ہے جو بھی طاعت کے نفع کا مشاہدہ کر چکا ہو۔ تو گو یا انعکاس سے انوار کے تعویر ابہت احساس ظلمت کا ہونے لگتا ہے تو بہر حال کیا اس کا امتحان ممکن نہیں ہے۔ اس امتحان سے محسوس ہونے لگتا ہے کہ واقعی معصیت کے درمیان میں پر بیشانی ہوتی ہے پر بیشانی امتحان سے بھی محسوس ہونے لگتا ہے کہ واقعی معصیت کے درمیان میں پر بیشانی ہوتی ہے پر بیشانی

اس کوا بی آنکموں سے نظر آنے تنی ہے۔

تواس کویس بیان کرد ہاتھا کہ یاتو گناہوں بیل برتوں مشغول رہنے پرجمی پریشانی

کا حساس نہ ہوتا تھا یاطاعت اختیار کرنے کے بعد آج حدیث انفس ہونے ہی بے حدثم اور
پریشانی لاحق ہوجاتی ہے اور جوابندا ، ہی ہے حالت بیل مشغول ہیں ان کی حالت تو پوچھو ہی

مت معصیت کے دیکھنے ہی سے پریشان ہوجاتے ہیں۔خودار تکاب بھی نہیں کیا۔ دوسرے
مرتکب ہی کود کھے کر میات ہوتی ہے کہ ایک بزرگ تھا انہوں نے کس کو کہیں معصیت میں جالا

د کھولیا۔گھر جو گئے اور چیشاب جو کیا تو دیکھا کہ بجائے پیشاب کے خون آتا ہے اس قدر کلفت
اور تکلیف انہیں ہوئی کئی معصیت کے ارتکاب کودیکھنے ہے معصیت کے ارتکاب کودیکھ کر بی اس قدر دول گیر ہوئے کہ پریشان میں پیشاب کی راہ سے خون آئے لگا۔خودار تکاب تو بڑی چیز ہے۔
دھزات اہل اللہ تو دوسرے کومرتک دیکھنے ہے حد پریشان ہوتے ہیں اس واسطے بھا گئے ہیں
خطزات اہل اللہ تو دوسرے کومرتک دیکھنے ہے تھی انہیں تکیف ہوتی ہوتی ہے۔

ظلمت معصیت

دوسرامقدمہ بیہ ہوا کہ معصیت کے درمیان میں ظلمت ہے توایک مقدمہ تو میں پہلے عرض کرچکا ہوں کہ رمضان المبارک کے حقوق کا حاصل ترک معصیت ہے۔ دوسرا مقدمہ بیہ ہوا کہ معاصی جو ہیں وہ فلمت ہیں اور تیسرا مقد مدید ہے کہ ہر چیز اپنی ضد نے فرار کرتی ہے۔ یہ قاعدہ عقل ہے یعنی ظلمت نور سے ہما گئی ہے اور نوظلمت سے مرتفع ہوجا تا ہے۔ اور ہر چند کہ ہرضد میں بعض خارتی ولائل سے بیخاصیت زیادہ پائی جاتی ہے اور بیام مشاہدہ سے شعین ہے کہ ایک ضد پر کم یعنی مثلاً نوراور ظلمت ہے محض تر بہ ما میں دافع ہونے کی زیادہ صادق آتی ہے اور ایک ضد پر کم یعنی مثلاً نوراور ظلمت ہے محض تضاد کی بناہ پر تو نور سے ظلمت رفع ہوجاتی ہے اور ظلمت سے نور مرتفع ہوجاتا ہے کیونکہ فی نفسہ دونوں میں مغت ارتفاع کیسال ہے لیکن اگر خور سے مشاہدہ کیا جائے تو نور میں زیادہ تو سے رفع کی ہے اور ظلمت میں کم قوت ہے نور میں تو اس قدر توت ہے کہ فلمتیں جا ہے کتنی ہی جمع ہوجا کیں نور ان کا دافع ہوجاتا ہے ۔ ظلمت میں یہ خاصیت نہیں ۔ البتہ ظلمت میں یہ خاصیت ہے کہ اگر اسباب ظلمت کے جمع ہوجا کیں تو وہ نور کے ساتر ہوجاتے ہیں مزیل نہیں ہوتے تو نور تو رافع فلمت ہوجا تا ہے ۔ ظلمت میں تو وہ نور کے ساتر ہوجاتے ہیں مزیل نہیں ہوتے تو نور تو رافع ظلمت ہا دوظلمت ساتر نور ہے اپنے اسباب کا عقبار ہے۔

 ہے۔ البت ہنڈیا کے باہر نورکوز اکل کہتے یا مستور کہتے یا مشخل کہتے وہاں البتہ وہ مشخل ہوگیا ہے۔

باتی نورکواس کی حاجت نہیں کہ کی سبب کے واسطہ سے پھیلے یہ نہیں ہے کہ خودنور کے علاوہ

کو کی اور سبب نور ہو۔ بخلاف نفلمت کے جوا ہے اگر رفع نور بیں سبب کی بخت ج ہیںے لا ہنڈیا کی

مثال سے واضح ہو چکا ہے لیعنی چراغ پر جوظرف کورکھا گیا تو جس حد تک وہ ظرف نظام تھا وہیں تک مثال سے واضح ہو چکا ہے لیعنی چراغ پر جوظرف کورکھا گیا تو جس حد تک وہ ظرف نظام تھا وہیں تک فللمت کے بیال کی حد سے باہر تھا وہاں ظلمت نہ بی بی کے۔

یوں بیجھے کہ دوطرفیں ہیں اس کی صدک ۔ ایک تو باہر کی طرف اور ایک اندر کی طرف ۔ باہر کی طرف جوصد ہے بینی جواس کی محیط ہے وہاں ہے تو نور کو دفع کر سکا۔ اور جو صدائدر کی طرف ہے وہاں ہے نور کو دفع کر سکا۔ اور جو صدائدر کی طرف ہے وہاں ہے نور کو ذائل شہر سکا۔ یہاں تو وہ ظرف اس نور کو ایک صدخاص تک دفع کر سکا۔ باتی ٹور میں ایک توت ہے کہ دہ ساتر ظلمت یا حزیل ظلمت صدے اندر اندر تک نہیں ۔ یہ نہیں کہ جہاں تک چراغ ہو وہاں تک شہو نہیں! بلکہ نورا پی شعاعوں ہے نورانی کرتا ہے اور دہ خاص اس حد تک جس حد تک چراغ ہے ۔ البت اگر کسی وجہ ہے کہیں شعاع نور دائی کرتا ہے اور دہ خاص اس حد تک جس حد تک چراغ ہے ۔ البت اگر کسی وجہ ہے کہیں شعاعیں وہ چیز ہیں کہ جس حصد میں شعاعی وہ چیز ہیں کہ جس حصد میں ظلمت ہے وہاں البت ظلمت دے نہیں ہے بلکہ ایس ظلمت ہے کہ مرکب ہے نور نظمت ہے جس سے ظلمت ہوگی جس کے طلمت اور نور سے ہیں ۔ چنا نچہ سا سے کی حقیقت یہی ہے کہ وہ ایک کیفیت ہے وہ نور ضعیف ہوگی جس کے طلمت اور نور ہے۔

بہرحال بینوس ننس کا مسئلہ ہے جو میں کے طور پر ذہن ہیں آگیا۔ اس مضمون ہے جو میں بیان کرر ہاتھا اس کا پچھزیا وہ تعلق نہیں کیکن پچھاتی ضرور ہے کیونکہ طاقت جونور ہے اور معصیت بوقا ہے ان ہیں ہے ہی برایک کا۔ دوسرے پراٹر ہوتا ہے نورطاعت کا توبیا ٹر ہوتا ہے کہ وہ ظلمت معصیت ہوتو کا محصیت ہوتو کا محصیت ہوتو کو دورکر ویتا ہے اور ظلمت معصیت کا یہ اٹر ہوتا ہے کہ اگر ظلمت معصیت ہوتو نورطاعت کا اٹر کم ہوتا ہے۔ صرف اس قدرتعلق ہے اس مضمون ہے۔

محرمقصوداصلی بیفرع بیان کرنائیس بلکہ مقصوداصلی بیہ کے کظلمت اورنور میں تضاو ہے لیعنی نورجو ہے وہ ظلمت کا رافع ہوا کرتا ہے۔ بیگو یا تئیسرا مقدمہ ہوا میں ان تنیوں مقد مات کا مختصرا مجراعا وہ کرتا ہوں۔ پہلامقدمہ تو بیہ کرمضان المبارک کے حقوق بیر ہیں کہ جملہ معاصی کوڑک کروے وہمرامقدمہ بیہ کے کہ معصیت ظلمت ہے۔ تیسرامقدمہ بیہ کے کہ فوردافع ظلمت ہے۔

نور کی حقیقت

ان تینوں مقد مات کے بعد اب سمجھ بیس آگیا ہوگا کہ اس آیت بیس جو بیس نے تلاوت کی ہے رمضان المبارک کے حقوق کی طرف اشارہ ہے کیونکہ حق تعالیٰ نے اس آیت بیس رمضان المبارک کی ایک خاص نصیلت بیان فر مائی ہے جس کا حاصل ہے ہے کہ بیرمہینہ نورانی ہے۔ چنا نچہ نورانی ہوتا اس کا ابھی ڈکور ہوگا۔

اب ان مقامات کو شخضر کر لیجئے کہ نور کی خاصیت ہے دفع ظلمت جب نور کی خاصیت دفع ظلمت جب نور کی خاصیت دفع ظلمت کھیں تو اس کا مقتصنی ہے ہوا کہ ظلمت دفع ہوا اور وہ تھی معصیت تو معصیت کو ترک کرنا گویا حقوتی رمضان میں سے ہوا ہے دلالت ہوگئی۔

ای طرح بیمبیند تورائی ہے وہ اس طرح کرتی جل شانۂ قرماتے ہیں شہر رمضان الذی انزل فیہ القران هدی للناس وبینت من الهدی والفوقان بینی ایرامبینہ ہے جس میں قرآن تازل ہوا۔ اور قرآن کی خاصیت ہے هدی للناس وبینات من الهدی والفوقان، بیسب مادے والسر تر آن می تر آن مجید کے تورہوتے یر۔ هدی، بینات، فوقان.

بدی و بینات تو ظاہر ہے۔ رہافرقان سوفرقان کے کہتے ہیں ممیز بین الحق والباطل کو لین قرآب مجیدے فرق ہوتا ہے تق اور باطل میں ۔ اور یہ حقیقت شناس بی نور ہے کیونکہ نور یہ تھوڑا ہی ہے کہ اس میں چک اور د مک ہو ۔ کہیں چک اور د مک پر مغرور نہ ہوج نا کہ پچھتارے سے نظرآنے گئے تو مجھ لیا کہ ہمارے قلب میں نور پیدا ہو گیا۔ ارے! و ونور ہی کب ہے قلب میں تو وہ نور ہے کہ اس کے آگے نورٹم کی بھی پچھ حقیقت نہیں ۔ مولا نافر ماتے ہیں

سٹس تبریزی کہ نور مطلق است ہی آفیاب ست وزانوار حق ست

(حفرت ٹس تبریزی جوسرا پانور ہدایت اور آفیاب ہدایت اورانوارالی ہے منور ہیں)

اب ٹس تبریزی کوئی نور تنے کیاان سے کوئی لاٹین روثن ہوجاتی تھی ۔ حکماء بھی نور کی حقیقت کو کچھ سجھے ہیں گرعوام وہاں تک نہیں بہنچ ۔ حکماء علم کو کہتے ہیں کہ نور ہے حالا نکہ علم آنکھوں سے نظر آنے والانور نہیں مثلاً ہم کو علم ہے کہ زید قائم تو کیا اس علم کی وجہ ہے کوئی جبک ظرآنے گئی۔
اگرا ندھیری کو تھری ہیں بھی تصور کریں اور زید کا اوراک کریں تو کیا کوئی چبک محسوس ہوگ ۔ اس تصور ہے کون ی چبک بیدا ہوگئی ۔ عوام نور کی حقیقت ہی کوئیس جھتے ۔

یکی وجہ ہے کہ بہت سے لوگ جب القدائق کی کی بیصفت سفتے ہیں کہ الله نور المسموت والارض تو یہ بیجھتے ہیں کہ نور من بھی کوئی چمک دار چیز ہوگی۔اے صاحبو! چمک اس کے سامنے کیا چیز ہے وہ تو وہ نور ہے کہ چمک بھی ظلمت ہے اس کے سامنے! مگر جہلاء یہی بیجھتے ہیں کہ اللہ کے نور ہیں بھی چمک ہوتی ہے۔

چنانچاس وقت دوقے بساختہ یادہ گئے۔ایک توہمارے نضیال ہی کا ہے ہمارے نخیال میں ایک بزرگ تے وہ کرش غل ۔ یہیں تھا نہ بھون کا واقعہ ہے اس زمانہ میں ویا سلائی نئی نئی چلی میں ایک بزرگ تے وہ کرش غل ۔ یہیں تھا نہ بھون کا واقعہ ہا اللہ فض کہیں ہے آئی اس تھی۔ بہت ہے لوگوں نے تو دیکھی بھی نہتی ۔ایک درویش کا مری جا اللہ فض کہیں ہے آئی اس اس کے اس سے کہا کہ میں تہمیں خدا کا نور دکھا دوں گا بیر مشاق تے ہی انہیں باور آئی ا۔ واقعی طلب وہ چیز ہے کہ بہت سے طالب وہوکوں میں بھی جتلا ہوجاتے ہیں۔ جب حقیقت نہ معلوم ہو۔ مقام وعدہ کا ''غوث گڑھ'' قراریا یا کہ وہاں چل کروکھا کمیں گے۔

غوث گڑھ ایک جھوٹا ساگاؤں بہاں ہے جین کوس کے فاصلہ پر ہے وہاں بہتی کے باہرایک ویران مسجد ہے اس نے کہا کہ اس مسجد جیس لے جاکر جہیں اللہ کا نور دکھا کیں گے کیاسب کے سامنے اللہ میاں کوا بنا جلوہ دکھا تے ہوئے نعوذ بائد شرم آتی تھی۔ کیا نعوذ بائند ان جیس عورتوں کی صفت ہے۔ گرصا حب! طلب عجیب چیز ہے پچھ بچھ جس نہیں آتا۔ طلب کے اندر ایک شان حیرت کی ہوتی ہے جہ بھی پر طلب غالب ہو۔ اس واسطے یوں دعا کرنی چا ہے کہ جن تعانی طلب اور علی دونوں عط کرنی جا ہے کہ جن تعانی طلب اور علی دونوں عط فر مائے زے عشق اور نری طلب کے اندر عقل مغلوب ہوج تی ہے۔ بہت لوگ عشق عربیں سے گئے ہیں۔ عقل مغلوب ہوج تی ہے۔ بہت لوگ

ایک بنیا کی تھالی کم ہوگئ تھی۔ اس نے سب جگہ تو ویکھائی گرگھڑے کے اندر بھی ویکھا اس کے جواب ویا کہ بید کسی نے کہا ارے بیوتو ف اتھالی اور گھڑے کے اندر بیا کیا حمالت ہے تو اس نے جواب ویا کہ بید تو میں بھی جون کہ گھڑے کے اندر تھالی نہیں جاسکتی گراحتیا طأو کیولیا۔ تو وہ کیا بات تھی۔ حرص تھی ۔ ابھی کوشش و نیا کا کسی کوشش وین کا۔ اس بنیا پر اس قدر مشق تھالی کا غالب ہوا کہ جہ س ہونا عقل بھی جا زئیوں رکھتی و بال بھی تلاش کرلیا۔

اس قصہ ہے بھی وہی مسئلہ ٹابت ہوتا ہے کہ جب طلب کا غلبہ ہوتا ہے توسمجھ جاتی رہتی ہے اور جب عشق غالب ہوتا ہے توعقل بر باد ہوجاتی ہے لکھے پڑھے آ دمی جاہل کے کہنے ہیں آ گئے نوف گڑھ کہنے اس نے کہا کہ پہنے دورکعت پڑھو چر کچھ وظیفہ بتاویا کہ ایسے آنکھیں بندکے پڑھے رہا جس وقت ہیں کہوں فورا آنکھ کھول دینا پھر جو ویکھو کے وہ انڈ کا نور ہوگا۔ بچاروں نے سارے جنن کئے اول دورکعتیں پڑھیں چر جیٹے غریب آنکھیں بند کر کے اوروظیفہ پڑھنا شروع کیا۔ تھوڑی ویر بعد چیھے ہے آواز آئی ''جول''۔ انہوں نے جوآنکھ کھولی تو دیکھا کہ تمام مہروش کیا۔ تھوڈی ویر بعد چیھے ہے آواز آئی ''جول''۔ انہوں نے جوآنکھ کھولی تو دیکھا کہ تمام مہدوش کے تو طالم نے کیا شرارت کی تھی کہ پس پشت کھڑے ہوکرا کیک دیا سلائی جلاکر ''جول'' کردیا دیکھا کہ تمام مجدور سے تھے کہ بش نے ویکھا کہ سامیمی کرتمام مجدور سے دین ہے وہ بول کہتے تھے کہ بش نے ویکھا کہ سامیمی پڑر ہا ہے۔ میں نے سوچا کہ بیر تو خدا کا تو رہے۔ اس میں ظلمت کیسی بیہ خدا کا تو رکیما ہے جس میں جاتی ہوئی دیا سلائی کے تو بہا تھ میں جاتی ہوئی دیا سلائی کے تو بہا تھ میں جاتی ہوئی دیا سلائی کے تو بہا تھ میں جاتی ہوئی دیا سلائی کے تو بہا تھ میں جاتی خوب ہی جوئی دیا سلائی کے گھڑے ہیں اٹھ کر اور جوتا نکال کروہ جوتے ہے جوتا۔ بیرصا حب کی خوب ہی مرمت کی ۔ کہا تالائی بیضدا کا تو رہے جب بجات ہوئی صاحب اس دھوکا باز ہے۔

توغرض وہ کیابات تھی اس نے نور چیک کا نام مجھا تھا اس سے دھوکا وینا جا ہا علم بھی کیا کام کی چیز ہےا ورزیادہ دھوکا توجب ہوتا جب اس نور کے ساتھ ظلمت بھی نہ ہوتی چٹا نچا بیا بھی ہوسکتا ہے۔

ایک دکایت

اس شعبدہ پر ایک حکایت اپ استاد حضرت مولا تا مجمد یعقوب صاحب رحمتہ اللہ علیہ کی اور آئی۔ مولا تا فرماتے ہے کہ ہم نے بجین جس سناتھا کہ و بوالی کی رات کوجن بازاروں میں نکلتے ہیں اور ان کی بہجیان سے ہے کہ ان کے ماین بیس ہوتا۔ د بوالی کی رات آئی ہم شوق جس اور جنون میں جنوں کے بازار میں پہنچ و بوالی کے چراغ چل رہے تھے د کھا کہ جمع تو بہت ہے مرکسی کے ماین بیس نہ ادھر نہادھ ربہت سے لوگ ان میں سے ایسے بھی تھے جنہیں ای دن اول بارد یکھا تھا۔ مہلے سے انگل جان پہچان بی نہیں تھی ان پر تو جن ہونے کا گمان ہوسکتی تھا تھا کہت ہوں جہاں بہچان تی نہیں تھی ان پر تو جن ہونے کا گمان ہوسکتی تھا ایکن بہت سے ایسے بھی تھے جن سے جان پہچان تھی ان کے بارہ میں بیتا و بل کر لی کھکن ہے کہ جن انہی کی صورت بھی آگئے ہوں جن سے جان بہچان ہوں ہی جگر پھر اپنے کو وجود د کیکھتے ہیں تو یہاں بھی سائے ہیں بڑے ہیں تھے جران کہ اس انہوں ہوں بھی سوچو تو فورا سمجھ میں آگئے کہ میاں جمد بھی تھی سوچو تو فورا سمجھ میں آگیا کہ میاں بیکھر نہیں۔ بیکھر بیارہ بیکس کے جن ہوسکتی ہوں۔ مولا تا ذہین تھے بیکھر بیارہ کی میں موجو تو فورا سمجھ میں آگیا کہ میاں جو بی دون کا گھر بیارہ کی جن ون کو کی نہیں۔ بیکھر بیارہ کی جن ون کو کی نہیں۔ بیکھر بیکپن کی سوچو تو فورا سمجھ میں آگیا کہ میاں جو بی دون کے جن ون کو کی نہیں۔ بیکھر بی بی بیکس کے جن جن ون کو کی نہیں۔ بیکھر بی بیکس کی جن ون کو کو نور کی بین کی میاں کی بین کی دون کو کی نہیں۔ بیکھر بی بیکس کی جن بین کو دون کو کی نہیں۔ بیکس کی بین کا قصد ہے گر ذوان سے بیارہ بی بیارہ بی بی بی بین بیل ہوں کو کی نور کو کی نور کی کی بین کی جن دی ون کو کی نہیں۔

تواس شعبدہ بازکو سوجھی نہیں ورنہ وہ بھی کوئی ایب بی پکھنڈ کرتا کہ مشتق نے زیارت کواپنا ساہے بھی نظر نہ آتا۔ گر باطل کے پیرنہیں امقد تعالیٰ کسی اور طریق سے اس کورسوا فرمادیتے۔ تو غرض! عوام کا بیا عقاد ہے کہ لور چک کو کہتے ہیں۔

ایک اور خفس تفاہمارے یہاں کا نپور میں آی تھا۔ اس کی بھی تمنایتی کہ س طرح خدا کا نور و میں نے کہا کہ بھ کی خدا کا نور تو خود میں نے کہا کہ بھ کی خدا کا نور تو خود میں نے بھی نہیں و یکھا۔ پھر میں تہمی کیا دکھا سکتا ہوں۔ اور میں کیا دیکھتا حضرت موی علیہ السلام نے بھی نہیں و یکھا تو تمہاری ہماری تو کیا حقیقت ہے۔ اور انہوں نے تمنا بھی کی لیکن تمنا پر بھی صاف نہیں و یکھا تو تمہاری ہماری تو کیا حقیقت ہے۔ اور انہوں نے تمنا بھی کی لیکن تمنا پر بھی صوبر نہیں جواب ل گیا۔ کہ لن تو انہاور لن فر مایا یعنی بھی نہیں نہیں و یکھ سکو سے لیکن بیتا ہید بھی مو بر نہیں بیل گیا۔ کہ لن تو انہاور کن و تشمیس ہیں۔

ایک ونیا ک تابید اور ایک آخرت کی تابید

آخرت کی تابید تو غیر محدود ہے لیکن دنیا کا جوا''ابد' ہے وہ حقیقۃ ابدی نہیں کیونکہ ابد تو وہ ہے کہ لااخو لد، جس کا خیر ہی نہ ہولیکن یہ بھی محاورات میں ابد ہی کہا جاتا ہے۔ اور جس کا طرح ابدیت کے صیفہ ہے کہ ابدیت کے صیفہ ہے بھی مدت محدود مراد ہوتی ہے ای طرح کبھی مدت محدود و کے صیفہ ہے بھی ابدیت مراد ہوتی ہے وہ میں ارشاد ہے ان علیک لعنتی الی یوم المدین (اور بیشک تھے ہر میری لعنت رہے گی قیر مت کے دن تک)

مردودابدي

یہاں المی یوم المدین ہے مراد غیر محدود ہے گربعض کے فہم لوگ اس کوابدیت غیر محدود مجھ کرشیطان کی نجات کے قائل ہو گئے کہ صرف قیامت تک اس پر سنت رہے گی گھرندر ہے گی۔ حامات کے ۔ حامات کہ ہے ابدیت غیر محدود لیکن اس گی۔ حامات کہ ہے ابدیت غیر محدود لیکن اس کی۔ حامات کہ ہے اس طرح کرتے ہیں جسے کہ تابید محدود کو تعبیر کرتے ہیں اس واسطے کہ ہم لوگوں کی عقول ضعیفہ کی رعایت ہے قرآن مجید ہی رہے موادات میں نازل ہوا ہے۔ سوہم ابدیت غیر محدود کو بھی اس طرح تعبیر کیا کہ جی اس ما بدیت غیر محدود کو بھی اس طرح تعبیر کیا کرتے ہیں کہ قیامت تک بدیات نہ ہوگی یعنی بھی نہ ہوگی۔

دوسرے میرکرد نیادارالعمل ہےاوراس کی انتہا قیامت ہے۔ پس جب ایک شخص دنیا کے ختم تک ملعون رہا۔ اب دارالجزاء میں ناجی ہوئے کا اس کے کب احتمال ہے۔ اس طرح بھی ابدیت غیر محدود لازم آگئ گولفظ کواس پروال نه ما تا جائے اس واسطے پیس کہت ہوں کہ قرآن مجید کے بچھنے کے سیاع کو بی کی صرف ونحو کے علاوہ محاورات سے علم کی بھی ضرورت ہے۔ محاورات نہ جانے ہی کی وجہ سے بی کی صرف ونحو کے علاوہ محاورات سے علم کی بھی ضرورت ہے۔ محاورات نہ جانے ہی لی وجہ سے ہے کہا بس شیطان قیامت تک تو مروور ہے گا بس قیامت میں مرحوم ہوجائے گا نعوذ باللہ! بالکل غلط بلکہ عجب نہیں کفر ہو بیاعت و اس واسطے کہ شیطان کے مروورا بدی ہوئے پر سب کا اجماع بھی ہا ورمنصوص بھی ہاس آیت میں۔ شیطان کے مروورا بدی ہوئے پر سب کا اجماع بھی ہا ورمنصوص بھی ہاس آیت میں۔ کھٹل الشیطن اذقال للانسان اکفر فلما کفر قال انی بری نے منک الی اختاف الله رب العلمین فکان عاقبتهما انهما فی النار خالدین فیہا و ذلک جزآء الظلمین.

(شیطان کی کامثال ہے کہ اول تو انسان سے کہتا ہے تو کا قربوجا پھر جب وہ کا قربوجا تا ہے تو اس وقت (صاف) کہدویتا ہے کہ میرا تجھ سے کوئی واسط نہیں کہ میں تو انتدرب العالمین سے ڈرتا ہوں سوآ خری انجام ان دونوں کا یہوا کہ دونوں دونر خیس گئے جہاں ہیں ہے اور طالموں کی ہی جگہ ہے)

بہرحال بدابدیت کم ختم نہ ہوگی اور ان ترانی میں اس کا تکس ہے کہ لفظ ابدیت کا ہے مگر مراوا مہت محدود ہ ہے سوبعض کواس میں غلط نہی ہوئی اور اس غلط نہی کی وجہ ہے معتر لداس کے قائل ہو گئے کہ یہاں تابیدوائی مراد ہے۔ آخرت میں کویت نہ ہوگی مگر بیغلط ہے یہی عقیدہ متو اتر المعنی ہے کہ آخرت میں دویت باری تعالیٰ ہوگی اور وہ جب عوام مونین کو بھی ہوگی ۔ تو حصرت علیدالسلام کی شان تو بہت ارفع واعلی ہوگ ۔ تو حصرت علیدالسلام کی شان تو بہت ارفع واعلی ہاں کو کیوں نہ ہوگی اور وہ جب عوام مونین کو بھی ہوگی ۔ تو حصرت علیدالسلام کی شان تو بہت ارفع واعلی ہاں کو کیوں نہ ہوگی اور وہ جب عوام مونین کو بھی ہوگی ۔ تو حصرت علیدالسلام کی شان تو بہت ارفع واعلی ہاں کو کیوں نہ ہوگی اور وہ جب عہال اس تر انی محمول ہے تا بید محدود پر نہ کہ تا بید دائم پر ۔

طلب صادق كااثر

بہر حال میں نے اس شخص ہے کہا کہ یہاں دنیا میں رویت شرعاً محال ہے کہنے وگا میں جانیا ہوں اور یہ بمراعقیدہ ہے مگر کی کروں شوق ایسا ہے کہ میں اس تمنہ ہے بازنبیں آسکتا میں تو طلب کروں ہی گا چاہے کامیا بی نہ ہو۔ چنانچہ کیفیت اس کی بیتھی کہ بے انتہا سوزش اور ور داور کرب میں جبلہ تھا۔ رات مجراس قدر بے چین رہتا تھا کہ بچھ نہ پوچھے۔ جانے کتنا زمانہ اس حالت میں گزر چکا تھا۔ اس کے پاس جینے ہے ایک در داور سوزش می محسوس ہوتی تھی۔

پہلے وہ ہندونھا بھی کہتا تھا میں نہ ہب بھی ای تمنا میں بدل چکا ہوں۔ چنا نچیا سلام کے قبل بھی ای طلب میں تھا نیعنی ہندوہونے کی حالت میں بھی۔ کہنے لگا میں بڑے بڑے رشیوں، جوگوں اور مینوں سے ملاکین سب نے جواب دیدیا کہ یہاں تو بی مالاج پنا ہے۔ جمائی ہم
تو تہمیں خداکا ٹورٹیں دکھا کتے البتہ ایک نے وعدہ کیا کہ پرمیشر کی جوت ہم تہمیں دکھا دیں گے
پھراس نے کیا کیا کہ مغرب اور عشاء کے در میان مجھے جھوٹیڑی کے اعدر لے جا کہ باہر کی طرف
اشارہ کیا اورا یک روشی نظر آئی جوچل رہی تھی۔ اور آہتہ آہتہ آگے کواچھلتی ہوئی سرک رہی تھی
اس نے کہا و کھیا ہے جوت پرمیشر کی۔ جس اس کی طرف دوڑ آتو اس نے جھٹ میرا ہاتھ پکڑلیا
کہ ہاں! ہاں یہ کیا کرتا ہے ادے ہیں نے کہا جس تو مرف جوت ایسی تھوڑ ابی ہے
کہاں کی کوئی تاب لاسکے۔ جس نے کہا جس تو مرف جس کی کو پھر رہا ہوں۔ آگر پرمیشر کی جوت میں
جس کے کہا کہ موال تو اس سے یڑھ کرکیا ہے میتو میری عین تمنا ہے۔

غرض وہ تو بوڑھا تھا ہیں جوان ہاتھ چھڑا کردوڑتا ہواجواس روشی کے پاس پہنچا تو کیا
د کھتا ہوں کہ ایک چھوا ہے اس کے سر پر بہت کی ٹی جی ہوئی ہے اوراس ٹی پر ایک چرائ رکھا ہوا
ہے جس ہیں موثی ہی بتی پڑی ہوئی ہے کہتا تھا کہ اول تو ہیں اس روشی کود کھتے ہی دھوکا ہیں آئی کیا
ہوگا نو رائقہ میاں کا لیکن جب ہیں نے اس روشی کوا چھلتے ہوئے دیکھا تو اس پر جھے شبہ ہوا واقعی
عقل بھی بری نھت ہے ۔ ہیں نے ول ہیں کہا کہ بیٹو را چھلتا کیوں ہے آ دئی جو ٹر ریف ہوتا ہے
اس ہیں بھی وقار ہوتا ہے۔ اچھلتا کو دتا نہیں بیٹو پر میٹر ہے ہیا چھلتا کو دتا بچوں کی طرح کیوں چلتا
ہے ۔ اس سے جھے شبہ ہوا اس لئے ہیں بھاگا کہ آخر دیکھوں تو ہے ، جراکیا ہے اس نے جھے پگڑا بھی
گر میں ہاتھ چھڑا کر بھاگ ہی گیا۔ لوٹ کراس ہے کہا کہ داہ باوا بی اچھا پر میٹر دکھا یا وہ ہنے نگا کہ
گر میں ہاتھ چھڑا کر بھاگ ہی گیا۔ لوٹ کراس ہے کہا کہ داہ باوا بی اچھا پر میٹر دکھا یا وہ ہنے نگا کہ
بچہ میرے پاس تو بہی ہے کہ جھو نپروی میں رہ اور اس پراموج کیا کر۔ یہاں تو بیٹھے کچوری
اور بالائی اور مشائی لئے جو کہ بس میٹھوا ور نیکن ان کو بھلا ان چیز وں کی کب ہوئی تھی ۔ اس وران

اس نے کہا کہ باواجی! یہ چیزیں مجھے درکارٹیس۔ مجھے توخود بیسب حاصل تھا۔اب میں نے اس کو جو چھوڑا ہے تو اس طلب کے اندر کہ کسی طرح خداکود کیے لوں اس طلب کے اندر کہ میں طرح خداکود کیے لوں اس طلب کے اندر کہ میں طرح خداکود کیے لوں اس طلب کے اندر کہ میں از مندی اختیار کی ہے۔

مرص حبوا طلب عجیب چیز ہے واقعی اگراس نے غداکوہیں ویکھا تواس طلب کا متیجہ

ا تناتو ہوا کہ اس وقت خدا کے دیکھنے کے قابل تو ہو گیا یعنی مسلمان تو بنا۔ ہائے یہ کششے کہ عشق دارد نہ گذاروت بدیں سال ہے بجنازہ گرنیائی بحزار خواہی آمہ (ووکشش جوعشق اپنے اعدر دکھتا ہے اُس کی خاصیت یہ ہے کہ مجبوب اگر جنازہ پر نہ آئے گا تو مزار پر ضرور آئے گا)

طلب تو وہ چیز ہے کہ مطلوب کوطالب کے درواز ہیں حاضر کر دیتی ہے پھرطالب کومطلوب کے درواز ہیں حاضر کر دینا تو سچھ بھی مشکل نہیں۔

مقام صديق

مدده مضمون ہے جس سے حضرت صدیق رضی الله تعالی عند نے ایک اعتراض کا جواب دیا تھا كوكر ال طرح كمعراج شريف ك قصه يس كفار حفرت صديق رضى الله عند ك ياس آئ اورانہیں اطلاع دی کتم نے سنابھی تنہارے دوست نے ایک اور بھی دعویٰ منکر کیا ہے کہ مجھے آسان مر بلایا گیا تھا۔ مجھے معراج ہوئی ہے میں سب آسانوں بلکہ عرش تک کی سیر کرآیا ہوں تم نے سنا بھی ہی ایک اورنی بات ہوئی ہے اب تک تو مرف نبوت ہی کا دعویٰ تھا۔ بداس سے بڑھ کر ہوئی۔ آپ نے فرمایا برده کرتونبیں ہے بلکہ محث کرہے جب میں اس کی تعمدیق کرچکا ہوں کہ آسان والے یعنی فرشتے ان کے باس آتے ہیں تو اگر بیآ سان والوں کے پاس پہنچادیئے گئے تو عجب ہی کیا ہے۔جس كے يہاں بادشاء آتا ہواگراس كودر بار ميں بلاكتو والله كھي جيرت كى بات نبيس ميں جب جرئیل علیہ السلام کی نسبت جو کہ سدر ق النتہیٰ کے بستے والے ہیں اور عرش جن کالثیمن ہے بہت مدیق کر چکاہوں کہ وہ خودمحرصلی اللہ علیہ وسلم کے درواز ہ ہر حاضر ہوتے ہیں تو اگر محرصلی اللہ علیہ وسلم جرئیل علیہ السلام کے شیمن پرتشریف نے جانے کا دعویٰ فرمائیں تو کیا میں ان کی تکذیب کردوں گا۔ تم لوگ بیوتوف ہوکہ ایک موٹی بات میں جھ کودھو کرد ہے آئے ہوا کر محرصلی اللہ علیہ وسلم سہتے ہیں تو مجھے ایمان لانے اور انہیں سچا سمجھنے میں کوئی تال نہیں ہوسکتا۔ بدوہ جواب ہے جوحصرت ابو بکرصدیق رضی الله تعالى عندنے كفار كے مقابلہ بيس بيش كيا تھا۔ غرض عشق ميں يہاں تک خاصيت ہے كہ _ کشیٹے کے عشق داردنہ گذاردت بدیں سال 🌣 بجازہ کرنیائی بمزار خوابی آمد (و و کشش جوعش این اندر رکھتا ہے اُس کی خاصیت بیہے کی مجوب اگر جناز و پر ندآ ئے كاتومزار برضرورآئےگا)

قبرمين زيارت رسول صلى الله عليه وسلم

اس پرایک لطیف نکت بعض اہل لطا نف نے کیا ہے۔ بعضے نکتے ایسے ہوتے ہیں کہ وہ علوم تو نہیں ہوتے میں کہ وہ علوم تو نہیں ہوتے میں کہ کہ ایک تو نہیں ہوتے میں کہ کہ ایک اگر متاید ہوں نصوص سے تو ان میں بھی ایک علم کی شان پیدا ہو جاتی ہے دعویٰ تو نہیں کیا جاتا۔ اختال کا درجہ ہے ایک محمل ہے یہ بھی۔ یہ جوحہ یٹ میں ہے کہ جب مومن دفن کر دیا جاتا ہے تو اس کے پاس فرشتے آگر تین سوال کرتے ہیں ان میں ہے کہ جب مومن دفن کر دیا جاتا ہے تو اس کے پاس فرشتے آگر تین سوال کرتے ہیں ان میں سے ایک ہی سوال ہوتا ہے۔

ما تقول في حق هذا الرجل ليحني بيكون بزرك بير.

وہ کہتا ہے کہ بیجر صلی اللہ علیہ وسلم میں جو ہمارے پیغبر ہیں۔ جو ہماری ہدایت کے لئے حق تعالٰی کے پہال سے بینات لائے اور آیات لائے یہ ہے ضمون حدیث کا۔

یباں میسوال کیا گیا ہے کہ ہذا محسوس ہاشارہ حسیہ کے لئے ہے وہاں قبر ہیں حضور صلی اللہ عبید دسلم کہاں ہوں گے۔جو ہذاہے یو چھاجائے گا۔

جہور نے اس کا میہ جواب دیا ہے کہ ہرمون کے ذہن میں اس وفت حضور صلی اللہ عبیہ وسلم حاضر ہوں مے علم ضروری کے طور پر ۔ حق تعالیٰ کی تا ئید ہے اس کی میہ صورت ہوگی کہ مون کے قلب میں اس وقت علم ضروری کے طور پر یہ ہوگا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی نسبت ہو چھ رہے قلب میں اس وقت علم ضروری کے طور پر یہ ہوگا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی نسبت ہو چھ رہے تیں ۔ یہ جواب بالکل کا فی ہے لیکن بعض اہل لطا نف اس طرف بھی گئے ہیں ۔ یہ تفا تو احتمال کے ورجہ ہیں گرعشاق نے تحقق کر رہا ہے شوق میں ۔ اس کا دعویٰ تو نہیں کیا جا سکتا ۔ ہاں تمنا اور شوق کے درجہ ہیں گیا حرج ہے اگراس امید ہے متلا دہو۔

وہ کہتے ہیں کہ میر کیوں نہ کہہ دیا جائے کہ اس کے اور رسول کے درمیون بیں جینے جیا بہیں وہ سب اٹھ دیئے جا کیں اللہ علیہ وسلم جلوہ نما ہوں گے۔اب چونکہ فیخص مشرف وہ سب اٹھ دیئے جا کمیں سے اور جبی نتا ہے کہ میر آ پ صلی اللہ علیہ وسلم جیں اس لئے فرشتوں کے سوال کا جواب آ سانی کے مماتھ و دے رہا ہے۔

اور بیر فع حجاب تو ہاں میں بھی دواختال ہیں۔ایک تو بیا کے حضوراً پی جگہ میر ہیں بیا پی جگہ پر رہے اور درمیان کے حجاب آخیں اور بیا کہ حضور صلی امتد علیہ وسلم ہی کرم فرما ئیں۔بعض عشاق شدت شوق میں اس طرف چیے گئے کہ حضور صلی الندعیہ وسلم خودمومن کی قبر ہیں تشریف لائمیں گے۔ بعضے عشاق نے میبھی کہاہے کہ اگر موت کی تمنااللہ اور رسول اللہ سلی اللہ عدیدہ سم کی زیارت کے شوق میں کرے تو جائز ہے بی شوقا الی القاءر سول اللہ بھی تمناموت کی جائز ہے کچھ حرج نہیں۔

استاذی حضرت مولانا محریعقوب صاحب رحمته الله علیه بهبت زنده در خصان پرشوق کی حالت عالب بھی صاحب حلال بزرگ تھے اس حدیث کے متعلق کسی طالب علم نے سوال کیا تھا کہ قبر بیس جورسول الله کی زیارت مشہور ہے اس کی کیااصل ہے۔ میتن کرمولا تا پرحالت طاری ہوگئی اور بیشعر پڑھل محشے کہ عشق داردنہ گذاردت بدیں سال ہے بجتازہ گرنیائی بجزار خوابی آ مد کششے کہ عشق داردنہ گذاردت بدیں سال ہے بجتازہ گرنیائی بجزار خوابی آ مد (وہ کشش جوعشق اپنے اندررکھتا ہے اُس کی خاصیت بیہ ہے کہ مجوب آگر جنازہ پرندا ہے گاتو مزار برضرور آ ہے گا)

اور فرمایا کہ مقتضی تو اس تعلق کا جوہم کو جناب رسول مقبول صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ ہے ہیہ تھا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی عمراتی طویل ہوتی کہ آپ ہرامتی کے جنازہ پرخو دنشر بیف لا کر نماز جنازہ پڑھتے مگر خدا کی حکمتیں ہیں آپ کی وفات ہی جس مصلحت تھی ۔ خیر ااگر یہ دولت حاصل نہ ہوگی تو کیا عشق کی خاصیت خالی جا سکتی ہے اگر جنازہ پرنہیں تو مزار ہی پرلا کر کھڑا کر دیا کہ د کھے نویہ ہوگی تو کیا عشق کی خاصیت خالی جا سکتی ہے اگر جنازہ پرنہیں تو مزار ہی پرلا کر کھڑا کر دیا کہ د کھے نویہ وہی محبوب ہیں جن کے شوق اور محبت ہیں تم نے عمر گنوا دی ۔ اور اینے آپ کوفنا کر دیا۔

محربیسب مشاقین کے نکات ہیں اور ممکن ہے کہ ان کے گمان کے موافق ان کے اس شوق کو پورا بھی کردیا جائے کیا عجب ہے کہ گویہ ذیارت عام نہ ہولیکن حق تعالی بعض خاص خاص عشاق کی کشش شوق میں میر خاص سے گھا کہ اور ان کی اس امید کو اناعند ظن عبدی ہی کی بناء پر پورا کردیں تو کی جی ہی ہی ہے۔

عبزيت كإخاصه

میں اس کوعرض کرر ہاتھ کہ طلب وہ چیز ہے کہ خود مطلوب کوطالب کے دروازہ پر جاضر کردیتی ہے تو اگر طالب کومطلوب کے دروازہ پر جاضر کردیتی تو کیا تعجب ہے۔ تو اس شخص کی طلب نے اس کومطلوب کے دروازہ پر تو پہنچ ہی دیا جو اسلام ہے اور جو یاب حقیق ہے رویت یاری تعالیٰ کا خیررویت نہیں ہوئی تو رویت کے قابل تو بنادیا۔ ہوستاک کے لئے تو یہ کم طالب حادق اور عاشق کے لئے تو یہ کم جا کھا ب

ل مسلم أحمد ٢ ١٠١٥ ١١٠١ الترغيب والترهيب للمنذري٢ ٢١٩ ١٠٢١ الترغيب

مرا از زلف توموئے بندست ہی ہوں رارہ مدہ بوئے بندست ہی ہوں رارہ مدہ بوئے بندست (جھے ہیں ہے) ، رہے آپ ملی اللہ علیہ و کلے ہوئی ہوں جھے ہیں ہے) ، رہت اللہ علیہ و کا برائی ہوں جھے ہیں ہے اللہ اللہ کی ہوئے جہائی ہوئے کہ اللہ کا ہموقع پر کھے جہائی ہوں کے ایک موقع پر کھے جہائے اللہ اللہ کی ہوئے جہائے ہوں اگر مسلی اللہ علیہ و کلم کے بال ایک سی بی بی بار ہے ہوئے ہیں کہ برے تھم ہے وہ سب لوگوں کو تسیم کے گئے اس حدیث کے قال کرنے کے بعد شیخ کھے جیں کہ برے نوش قسمت سے وہ لوگ! لیکن ہم بھی برقسمت نہیں خیر! اگر بال ہم کے بعد شیخ کھے جیں کہ برے نوش قسمت سے وہ لوگ! لیکن ہم بھی برقسمت نہیں خیر! اگر بال ہم کے نبید کہ اس واقعہ کی خبرتو بینے گئی اور اس مقام پر انہوں نے بہ شعر کھا ہے ۔ مرا از زلف تو موت بہندست ہے ہوں رارہ مدہ بوئے بہندست میں از بھی عاش صادت کی جی شاور کی جو سے بوٹ ورجہ کی ہوں جھے ہیں ہی ۔ را باتھی عاشق صادت کی جی شان ہے جس کو ہر چیز جس جا ہے کی ورجہ کی ہوا ہے محبوب ہی کا جلوہ نظر آتا ہے کہتے ہیں نا ۔ کا جلوہ نظر آتا ہے کہتے ہیں نا ۔

خوش ہے یعنی اس کی تو نق ہے)

وكرنه عاشق مسكين نه بيج خرسندست (وكرنه عاشق مسكين كس بات ہے خوش ہے)

شی کہتا ہوں جس کا نام عبدیت ہے بڑی مشکل ہے۔ سب حادات کا حصول آسمان ہے عبدیت ہی کا حاصل کرنا مشکل ہے۔ حضرت بھی یفضلہ عبدیت کائل عطا فرمائی گئی تھی۔ گویا عبدیت اس نام نامیس حضرت کوئی ایک حصہ ہے۔ ایک حفص نے آکر عرض کیا کہ حضرت کوئی ایک ترکیب ارشاد فرمائی کہ جس سے زیارت جناب رسول مقبول صلی اللہ علیہ وسلم کی حاصل ہو جائے۔ فرمایا آبا۔ آپ کا بڑا حوصلہ ہے کہ آپ کا ذہن حضورصلی اللہ علیہ وسلم کی زیارت تک پہنچا ہے۔ آپ کی نظر بہت دور پہنچی ، واللہ! ہم تواپنے کو حضورصلی اللہ علیہ وسلم کے گئیدشر ایف کی زیارت کے قابل بھی نہیں سیجھے۔ اگر وہ تی اللہ ایم تواپنے کو تصورصلی اللہ علیہ وسلم کے گئیدشر ایف کی زیارت کے قابل بھی نہیں سیجھے۔ اگر وہ تی اللہ ایم تواپنے کو بسائنیمت ہے۔ اس سے آگر وہ ای تاب کو فود حضورصلی اللہ علیہ وہ کی زیارت کی تمنا ہے۔ نہیں جا تا۔ آپ بر کوگ بی کہ آپ کو فود حضورصلی اللہ علیہ وہ کی خطرت حافظ فرماتے ہیں۔ اللہ اکبراکیا کھی کانا ہے عبد یہ کا۔ اور یکی ہے وہ حالت جس کو حضرت حافظ فرماتے ہیں۔ بخدا کہ رشم آیدز دو چھم روش خود ہی ہے وہ حالت جس کو حضرت حافظ فرماتے ہیں۔ بخدا کہ رشم آیدز دو چھم روش خود ہی ہے۔ اور دل رکتا ہے کہ ان نظروں سے محبوب کود یکھوں)

قتم کھاتے ہیں کہ میرا جی اس سے بھی جھجکتا ہے اور رکتا ہے کہ محبوب کوان نظروں سے دیکھوں عش**اق کی شان**

د کیھئے عاشق اس ہے بھی جھجکتا ہے کہ مجبوب کوآ تکھا تھا کر دیکھے اور کوئی یہ نہ سمجھے کہ بیزو ہے۔ عقلوں کا غداق ہے۔ صحابہ ہے زیادہ تو کوئی عقلند نہ تھا۔

ایک محالیؓ ہے کسی نے حضور ملی اللہ علیہ وسلم کا حلیہ مبارک پوچھا تو آپ کہتے ہیں کہ ارے یہاں و یکھا تھا کسی نظر مجرکر جو بیان کر دوں بیٹھ کر کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا بیرحلیہ تھا۔ ہمت

بى نظر بحركر و كمين كالبحى شادونى -

ایک کافررکیس کی شہادت ما حظہ ہوجوحد یبید بیں صحابہ کی حالت و کھے کرا پنی توم کے پاس
سیا تھا۔ انہوں نے ہوچھا کہ کیا حالت ہے اصحاب محمصلی اللہ علیہ وسلم اس نے بہت ہے واقعات
حضورصلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ اوب وعظمت کے بیان کر کے مختصراً یہ حالت بیان کر دی کہ
لا یحدون المنظر المیہ ۔ لیعنی محور کرنہیں و کھے سکتے

ہاتھ دوسری باریکڑ کراپی بارگاہ کی طرف جذب فرمائے)
امید بھی صرف اتنی کے شاید ایسا ہوجائے اور واقعی خرسندی امید پہلی ہوتی ہے ولو گان
تو ھما یہاں تک کہ اشعب طماع کی حکایت ہے۔ یہ عمولی شخص نہیں ہیں۔ بڑے معتبر علاء میں
ہے گزرے ہیں گربے چارے مجبور تھے طمع کے ہاتھوں ان کی طمع کی بہت ی حکایتیں مشہور ہیں۔
چنانچہ ایک بارانہیں بہت ہے لڑے چھیڑ چھاڑ رہے تھے۔ جوآ دی کسی بات میں مشہور
ہوجاتا ہے۔ قاعدہ ہے کہ لوگ اے چڑایا کرتے ہیں۔ انہوں نے لونڈوں سے کہا کہ میاں فلال
جوجاتا ہے۔ قاعدہ ہے کہ لوگ اے چڑایا کرتے ہیں۔ انہوں اونڈ میں سے کہا کہ میاں فلال
جا کھا نا بٹ رہا ہے یوں ہی جھوٹ موٹ کہدویا اپنا پیچھا چھڑایا۔ لونڈے دوڑ کراس طرف کو جھیئے۔
انہیں دوڑے ہوئے جاتا دیکھ کرآپ کیا دل میں کہتے ہیں کہ ابی شاید بٹ ہی رہا ہوا ورخو دہمی چیچھے دوڑ نے گئے۔

حضرت ہم ان پرتو ہیتے ہیں لیکن ہم سب مبتلا ہیں ایسے ہی عدم تد بر میں ۔ان کی طبع تو سب کومعلوم تھی ہماراعام تدبیر کسی کومعلوم نبیں۔ ہمارے دحو کا کاکسی کا پینڈنبیس وہ کیاعدم تدبرہے اور ہم کیول کردھوکا میں آ جاتے ہیں۔ وہ بیہ کہ ہم اول تولوگوں کوایے جھوٹے حالات اور ضع ہے ا پنامعتقد بناتے ہیں جب لوگ معتقد ہوجاتے ہیں تواب ان کے اعتقاد سےخود ہی استدلال کرتے ہیں کہ ہم چھاتو ضرور ہوں کے جب تو لوگ معتقد ہیں ہمارے۔اگر ہم پچھے نہ ہوتے تو کیا سارے کے سارے بے وقوف ہی ہیں اگرہم واقع میں پچھے نہ ہوتے تواتے سارے لوگ ہمارے کیوں معتقد ہوجائے ۔معلوم ہوتا ہے ہم ضرور کچے ہوگئے اور پینجرنہیں احمق الناس کو کہ میں نے تو دھو کا دیکر لوگوں کواپنا معتقد بنایا ہے۔اگر ہم کوئی ترکیب نہ کرتے اور پھر بھی لوگوں کا ہمارے ساتھ اعتقاد ہوتا اس میں تا اختال ہو بھی سکتا تھا لیکن یہاں ہم ہی نے تو تر کیبیں کر کے لوگوں کو غلطیوں میں اور تلبیس میں ڈالا ۔ہم ہی نے تو سارا کارخانہ اور منعوبہ گانٹھا کہ کسی طرح لوگوں کومعتقد بنانا چاہیئے اور جب لوگ معتقد ہو گئے تو اب ہم اس منصوبے کو بھول گئے۔اوراب خود ہماراا پنااعتقادان کااعتقاد ہے۔ ہم ان کے اعتقاد پر بنا کرتے ہیں اپنے اعتقاد کی تو کو یا جماراا عقاد بواسط ان کے اعتقاد کے ہے اوران کااعتقاد بواسطہ ہماری تلمیس کے ہے تو گویا ہمرااعتقاد ہماری ہی تلمیس پربنی ہے۔ گویا ہم اپنی ہی تلسيس سے اپنے معتقد بيل تو ہم اشعب طماع پر كيا بنتے بيل ہم خودالي بى به ہودگوں بيل بتلا بيل۔ یہ تو محض تفریع اور تمیم فائدہ کے لئے عرض کیا گیا ہاتی میرااصل مقصود اس حکایت کے نقل کرنے ے بیے کہ طلب اور محبت وہ چیز ہے کہ امیدموہوم پر بھی طالب مسرورر ہتا ہے ای واسطے کہا گیا ہے۔ اگرچه دورا فمآدم بدین امید خرسندم 🚓 کهشایددست من بارد گرجانان من میرد (ایگر چدوور پژا ہوں لیکن اس امید پرخوش ہوں کہ شاید ہما رامحبوب حقیقی از راہ کرم ہمارا ہاتھ دوسری بار پکڑ کراپی بارگاہ کی طرف جذب فریائے) توغرض بيدنداق ب عاشق كاكتفوز اسابهي اكرل جائے تب بھي اسے كافى ہے۔ كہتے ہيں نا _

ذكرميرا جحوب بهترب كدال محفل ميس

کہیں بیسنا تھا کہ بھاراذ کر محبوب کی محفل میں ہور ہاتھا تو بس ای پرخوش ہو گئے کہ خیرا کر ہم اس محفل میں ہیں منصقو ہماراذ کرتو تھا۔بس ای پر بے جارہ خوش ہے کے میراذ کرتو اس محفل میں ہے۔ مشہور ہے نا کہایک دیہاتی عورت اپنے شوہر پر عاشق تھی لیکن دہ اس کی طرف التفات ہی نہ

کرتاتھا۔ ایک دفعہ شوہ گاجریں کھار ہاتھا۔ پبندی کا ٹ کاٹ کوٹ کر چینکہ جاتا تھا کھاتے کھاتے آپ کو جوجوش ہوا تو ہوی کے ببندی تھینج کر ماری منہ پرزورے۔اوروہ اس کی آنکھ پرجا کر کئی۔اب آنکھ بند بھی اور آنکھ میں درد بھی لیکن آئی حالت میں اس نے ڈومنی بینائن کو بلایا اور اپنے باپ کے گھریہ کہلا کر بھیجا کہ کھائی تھی گاجر ماری تھی بیندی۔۔اماں سے کہیں کہ کہ کھی ماگ جبوڑ نے لگا ہے اب آگئے ہیں بھلے دن۔ چھیڑ جھاڑ تو شروع ہوگئی ہے۔میرے گاجر کی پیندی تو ماری۔اگرنہ مارتے تو میں کیا کر لیتی۔

تویہ کیا عاشق ہے۔ اگر عاشق ہے تو محبوب کے دربار میں اپنابرا درجہ ہرگزنہ جا ہےگا۔
اور عاشق کوتو شرم آئی ہے درجے مانگتے ہوئے کیونکہ وہ اپنی حقیقت خوب جانتا ہے کہ میں ہوں

کیا۔ اس واسطے میں کہتا ہوں کہ یہ بھی ایک گونہ رویت ہی ہے کہ رویت کی قابلیت ہوجائے۔
اگر حقیقی رویت بیں ہے تو حکمی تو ضرور ہے۔

مساوات اسلامي كاسبق

اس نوسلم نے اپنا تھے۔ شوق رویت اورای شوق میں اسلام لانے کا جو جھ سے بیان کیا تو جھے۔
شہبوا کہ جب اس کی طعب کسی جگہ پوری نہ ہوگی تو عجب نہیں کہ بیا اسلام کو چھوڈ کر عیسائی ہوجائے۔
کہیں کوئی پادری صاحب کئے لگیں کہ میں دکھلا دوں گا جہیں خدا کا نور۔ پھر وہ بھی کوئی دھوکا دے
اور سکنس الوں کا دھوکا شاید بجھ میں بھی نہ آئے میں نے صاف کہدویا کہ بھائی تہمارا کیا اعتبار۔ جھے
قوی شہبوا ہے کہیں تم اسلام ترک نہ کردو کیونکہ تمہارا مقصودتو یہ ہے کہ میں خدا کو دکھ لوں۔
جہیسی خدانہ دکھائی دے گاتو پھر تم اسلام کو بھی چھوڈ سکتے ہوجیسے کہ ہندوں کے نہ بب
کوچھوڈ کرای تمنا میں سلمان ہوگئے ہوگئے ہوگئے تہ نہیں۔اب اسلام کو بیسی چھوڈ وں گا چا ہے کا میاب
ہوں یانہ ہوں۔ یا لکل گواراور لڑھ تھا لیکن اس نے ایسے علام ومعارف بیان کئے کہ میں دیگر وہ گیا ۔
ہوں یانہ ہوں۔ یا لکل گواراور لڑھ تھا لیکن اس نے اسے علام ومعارف بیان کئے کہ میں دیگر دہ گیا۔
ہوں یانہ ہو جس نے کہا کہ ہمین کیے اطمینان ہو کہ تم اسلام نہ چھوڈ و گے اس نے کہا کہ
اسلام میں میں نے ایک الی خاصیت پائی ہے کہ نہ کی فہ ہب میں تھی نہ ہوجی ہوگی نہ ہوجی ہو تھا وہ
کون می خاصیت ہے کہا اس فہ ہب میں تو حید الیک کا مل ہے کہ کسی فہ ہب میں نہدیں ہو جھے اوہ
حیر سے ہوئی کہ یہ بھی ہے کہا اس فہ جب میں تو حید ایک کا مل ہے کہ کسی فہ بہ میں نہیں۔ بھی ہو جھے یہ ہو تو حید کیا چڑ ہے میں نے پوچھا مثلاً کہا دیکھتے ہے کہا تو حید کیا چڑ ہے میں نے پوچھا مثلاً کہا کہا جا تھے بیں ورنہ ساری تو میں ایسے شخص کوا ہے باتھ بھلا کر کھلا تے ہیں ورنہ ساری تو میں ایسے شخص کوا ہے نہ میں ایسے شخص کوا ہے ہیں ایس ایس کو کھی کو اپنے سے گھا ہوا

اور ذکیل بچھتے ہیں میداور بات ہے کہ شادی بیاہ نہ کریں۔ بیتوا پئی اپنی مصلحت ہے باقی حقیر کو کی منبیل بچھتے ہیں میداور بات ہے کہ شادی بیاہ نہ کریں۔ بیتوا پئی کسے کھلے ہوئے واقعہ سے کیاانٹہ کہیں اور استدلال بھی کسے کھلے ہوئے واقعہ سے کیاانٹہ کے بندے اب بھی ایسے موجود ہیں جومساوات کرتے ہیں اگر طوعاً نہیں تو کر ہا سہی۔

ایک حکایت اپنی کر ہاگی اورایک حکایت ووسرے کی طوعاً کی سنا تا ہوں مجھے توبید حکایت پیش آئی کہ میں ایک وفعہ کالی گیا۔ وہاں ایک فخص تھا نہا بہت صاف تھرا، اجلے کپڑے پہنچہوئے ہوئے ہوئے ہوئے جائے مسلمان ہوئے جائے مسلمان کے گاؤل والوں سے معلوم ہوا کہ یہ پہلے بھٹلی تھا اب مسلمان ہوگیا ہے گئی وہاں کے چودھری ساتھ کھا تا پلانا تو در کناراس کے ہاتھ کا برتن بھی نہیں لیتے تھے۔ ہوگیا ہے کہاں وہ بھی موجود تھا۔ اور وہاں کے رئیس بھی سب جمع تھے۔

بعض لوگوں نے مجھے سے خواہش کی کہ میں اس موقع پران لوگوں کو سمجھا دوں کہا بیا پر ہیز نہ کیا کریں۔اس کی سخت ول شکنی ہے۔ میں نے ول میں کہا کہ زے سمجھانے سے پچھے کام نہ نکلے گا ۔ سمجھانے سے توسب اس وفت ہاں ہاں کہددیں گے پھر بعد کوکون پر دا کرتا ہے جس نے کہاایک بدھنے میں پانی منگا وُجب پانی آئمیا تو میں نے اس نومسلم ہے کہا کہ پیوٹونٹ ہے منہ لگا کر۔اس نے بیا پھر بدھنااس کے ہاتھ سے لے کرمیں نے بھی ٹونٹی ہی سے مندلگا کراس کے بیچے ہوئے یا نی میں سے پیا۔ چھر میں نے سب سے کہا کہ ہو۔ حضرت سوامان کینے کے کسی سے کوئی عذر نہ بن پڑا۔ سب نے جیسے تیسے پیا۔ پھر میں نے کہا کہ دیکھو بھائی اب اس سے پر ہیز نہ کرنا۔ کہنے لگے ا بی بس! اب منه بی کیار ہا پر ہیز کرنے کا تم نے تر کیب ہی ایک کی کہ ہمارا ارادھرم ہی لے لیا۔ اب اطمینان رکھواب ہم اے اپنے ساتھ کھلائیں بلائیں کا بساس سے پر ہیز ہی کیارہ گیا جب اس کا جھوٹا پانی ہی تم نے پلوادیا۔ خیرسب کو ہڑی خوشی ہوئی لیکن پینے وقت جھ کینے سب تھے لیکن چونکہ میں خوو بی چکا تھا اس لئے کسی کی ہمت نہ پڑی کہ انکار کروے اور کچی بات رہے کہ میں بھی ، یا دے جھے۔ بی تو گیالیکن اندر ہے جی رکتا تھا۔ امتدمی ف کرے اور پچھاس کے ساتھ ہی نہیں بلکہ کی کوجھوٹا یانی یا جھوٹا کھ نا ہو مجھ ہے نہیں کھا یا بیاجا تا۔ یخت رکاوٹ ہوتی ہے آ سر کبراس کاسب ہے تواللہ معاف کرے اورا گرضعف طبیعت ہے تو معذور ہے یا کوئی معتقد ہے کہد لے کر لطافت ونظافت ہے۔نفس کی شرارت تو و کیجئے خود ہی ایک خوب صورت عنوان بھی ہتلا دیا۔کسی ہزرگ کے سامنے کا بچاہوا بھی جھے نہیں کھایا ہیا جاتا۔ میں کیا کروں طبیعت مثلاتی ہے ای لئے میں خود جو کھانا کھاتا ہوں تو بالالتزام ای طرح کھاتا ہوں کدد بکھنے والے بھی نبیں کہدیکتے کہ یہ کی کے سامنے کا کھایا ہواہے۔ بلکہ بیمعلوم ہوتا ہے کہ بس اتنائی نکالا گیاہے۔

اس قدرصاف کرکر کے اور تر نیب کے ساتھ کھا تا ہوں کہ کی کود کھے کرنفرت نہیں ہو تھی۔
میں اور بھی لوگوں کو کھاتے ہوئے دیکھتا ہوں کہ چاروں طرف آلودہ کردیتے ہیں جس کود کھے کرگھن آنے لگتی ہے اور پانی میں بیروہم ہوتا ہے کہ یہاں مندلگا ہوگا یہاں تھوک لگاہوگا۔ بس مجھ سے توکسی کا نے جموٹا یانی پیاجائے نہ جھوٹا کھا نا کھا یا جائے۔

ہاں کسی کواپٹے ساتھ کھانے ہیں شریک کر لینے سے نفرت نہیں ہوتی۔ اب میں اپنی اس طبیعت کو کیسے بدل دوں ۔ میں نے تو بھی ہزرگوں کا بھی جھوٹا کھا نانبیں کھایا نہ بھی جھوٹا یائی پیاالا نادرا مگر پھربھی اللہ تعالی نے ان حضرات کی برکت سے محروم نیس رکھاان کے ہاں تجی چیزیں ہی اتنی تھیں کہ ان کی برکت سے ہی کافی ہوگئی جھوٹی چیزوں کی ضرورت ہی چیش نہ آئی ۔ بس تجی ہی چیزیں حصول برکت کے لئے کافی تھیں۔

خیر یہ تو نکتہ شاعرانہ ہے۔ شاعروں کی خاطر سے بیان کر دیا ہے ورنہ دراصل ہزرگوں کے یہاں کوئی چیز الی نہیں جس کوجھوٹا کہہ عیں اور جس کوجھوٹا کہتے ہیں وہ بھی تجی ہی چیز ہے اس میں بھی بچی چی جی تو خرض یہ دکا یت تو کر ہا کی تھی جو جھے کو چیش آئی اوراس پر بھی حق تعالی کاشکرا واکرتا ہوں کہ کوطبعا کر اہت ہوئی گر الحمد للدعقلا اس کونہا یت خوش کے ساتھ گوارا کیا۔ یہ بھی حق تعالی میں کی تو نیش تھی۔

حق برستی

آب دوسری حکایت طوی کی عرض کرتا ہوں ۔ مولوی جمال الدین صاحب بھوپال بیس مدار المهم منتے گویا وزیر ریاست نے ۔ وزارت اس وقت تو ضابط بن کی رہ گئی ہے ۔ اس زمانہ بیس تو واقعی سلطنت تھی۔ کیونکہ بہلے اسنے ضابطے نہ ہے اور پھر خودا یک بڑی رکیسہ نے ان سے نگاح بھی کر میا تھی ۔ کیونک بہت بڑا مرتبہ تھا گر تھے بڑے حق پرست ۔ یہاں تک کدوہ رئیسہ بوجہ انتظامات ریاست کے پردہ نہیں کرتی تھیں ۔ ایک دفعہ مجد بیس نماز پڑھنے گئے مولوی ، مال الدین عالم تو تھے بی ۔ نماز پڑھا نے کے کولوی ، مال الدین عالم تو تھے بی ۔ نماز پڑھا نے کے لئے لوگوں نے آگے کھڑا کردیا۔

ا تفاق ہے ایک واائق مولوی صاحب بھی موجود تھے انہوں نے ہاتھ پکڑ کر پیچھے ہٹا ویا کہ تم

نماز نہیں پڑھا سکتے۔ تم اس قابل نہیں اور کوئی پڑھائے گر جب کس کی تھی کہ وزیر صاحب کے سامنے اور کوئی پڑھانے کے لئے بڑھے بالخصوص ایسے موقع پر۔ جب کوئی نہ بڑھا تو وہ آپ خود جا کرمصلے پر کھڑے ہوگئے کہ ہم پڑھا کیں گے اور یہ کہا کہ تہاری ہوی پر وہ نہیں کرتی ۔ اور تم اس کو گوارا کرتے ہو۔ لہذا تم ویوٹ ہواور ویوٹ کے پیچے نماز پڑھنا مروہ تح ہی ہے۔ یہ فقہ کا مسلکہ ہے بیکہااوراللہ اکبر! وزیر صاحب جماعت ہیں ٹریک رہے۔ نماز پڑھ کر بھی پھٹیس بولے مسلکہ ہیں ہوئے اور میں ہے جو اس وقت اجلاس ہیں تھیں آپ نے بور وٹرک بھکہ وہیں ہو سے بہنچ رئیسہ کے پاس۔ وہ اس وقت اجلاس ہیں تھیں آپ نے بور وٹرک میں ہونے ویوٹ کہتے ہیں اور میرے پیچے نماز نہیں پڑھتے ۔ تم نے جھے بھی والی کیا۔ موا۔ لوگ جھے ویوٹ کہتے ہیں اور میرے پیچے نماز نہیں پڑھتے ۔ تم نے جھے بھی والیل کیا۔ بوا۔ لوگ جھے ویوٹ کہتے ہیں اور میرے پیچے نماز نہیں پڑھتے ۔ تم نے جھے بھی والیل کیا۔

حق پری اور ہمت تو دیکھئے برسراجلاس سے کہہ دیا۔ گویاسارا ملک ہاتھ سے دے دیتا گوارا کرلیا۔ گراول تو حکومت پھر بردھیا۔ تو مولوی جمال الدین ایسے حق پرست تھے۔ اسلام دوستی

ایک باران کے یہاں کوئی تقریب تھی یا جلستھاجی بھی کھانا کھلا یا جار ہاتھا۔ باوجودات التدار کے ان جی قاضع اس درج تھی کہ کھانا خودر کھر ہے تھے۔ اس دوران جی ایک بھتگی آیا اوراس نے کہا میال میں مسلمان ہوتا چاہتا ہوں جھے مسلمان کرلو۔ مدارالہمام صاحب نے کہا میال سلام! میال جی مسلمان کولیا۔ پھر خدمت گار سے کہا کہ اسے تمام جی لے جا کوشل کراؤ اور ہمار جوڑا پہنا کر میہاں لاؤ۔ جیرت سب کوہوئی گرائی وقت جوڑا پہنا کر حاضر جا کوشل کراؤ اور ہمار جوڑا پہنا کر میہاں لاؤ۔ جیرت سب کوہوئی گرائی وقت جوڑا پہنا کر حاضر کردیا گیا۔ تھے مولوی کے سے بی کھا او دسترخوان پر بڑے بڑے ہوئے مولوی کا ایا۔ تھے اس لوگوں کی ناکیس چڑھ گئیں۔ مثی جی نے کہا۔ وہ چھ تو مولوی خال اور بیک بھی گھاتے ہے۔ اس لوگوں کی ناکیس چڑھ گئیں۔ مثین کے ماتھ نہیں کھاتے گا۔ اس کے مرائی مقاوں گا کیونکہ یہاں وقت اس کے ذمہ ایک بھی گناہ نہیں۔ بالکل پاک اورصاف ہے کہ یہاں ایک فخص بھی ا تناپاک صاف بالک پاک اورصاف ہے کہ یہاں ایک فخص بھی ا تناپاک صاف بی سے ساتھ جی کہاں ایک فخص بھی ا تناپاک صاف بی سے ساتھ جی کے ساتھ کھی کر جی کھاؤں گا۔ ہرایک کوکہاں بید دولت نصیب ہوگئی ہے۔ سیدولت نویس بیوگئی ہے۔ سیدولت نویس نے اپنے کے خصوص کر کھی ہے تمہاری قسمت کہاں کہ ایے فخص کے ساتھ کھانے کا شرف

عاصل کرسکویس تم کواظمینان دراتا ہوں کہ بٹس اسے تمہارے ساتھ کھانے کے لئے نہیں بھلاؤں گا۔ بیس خوواس کے ساتھ بینے کر کھاؤں گا۔ تم مت بھراؤ۔ الگ کھاؤیس اپنے برتن جس اس کوشریک کرتا ہوں۔ یہ کہ کر کھانا منگوایا اور کہا آؤیھائی ! ہمارے ساتھ بینے کر کھاؤ۔ اب وہ بنچ کہ بس مرار المہام صاحب کے سماتھ بینے کر کھاوں گرانہوں نے زبردی بھلالیا کہ بھائی ! تم اب بھنگی کہاں رہے تم تو اب ہمارے بھائی ہوگئے۔ غرض ایک برتن بیس دونوں نے کھانا کھایا۔

واللہ! حکا بت توبہ بڑی مزیدار ہے گر ذراعمل کر کے دیکھتے کیسی بدمزہ ہے گر صرف اولاً بدمزہ ہے اور اللہ مزہ ہے اور ہے اور عمل کے بعد تو واللہ وہ حلاوت ہے کہ بیان جس نہیں آسکتی گرصاحب اولاً تو پورا جہاواور بڑا سخت مجاہدہ ہے۔ بیانہیں کا حوصلہ تھاور ندایسے خص کے ساتھ تو بہت ہی برابر تا و کرتے ہیں۔

تكبر كى صورت

بیر حالت تکم کی ہے کہ اے خطاب بھی کرتے ہیں تو ان الفاظ ہے اب ادہمتگی کے۔ ایک عبد الکریم تھ جو ہمارے ہاں مسلمان ہوگیا تھا اس کولوگ بھنگی کا کرکے پکارتے تھے۔ بعد مسلمان ہوچانے کے بھی لوگ ایسوں کو بھنگی کا اور پھار کا کہنا نہیں چھوڑتے۔ بڑے افسوں کی بات ہے۔ گرخیر یہ بھی فنیمت ہے کہ ''کا' بڑھا دیا۔ بھنگی اور پھارت کہ دیا۔ بھنگی اور پھارکائی کہا کیونکہ آخراس کا باپ تو بھنگی ہی تھا گر بیزیادہ خوش کی بات اس لئے نہیں کہ محاورہ بیس بیاضافت مضاف مضاف الہید بیس تغایر کے لئے نہیں آئی بلکہ تحسین کل م کے لئے بھور زائد کے لائی جاتی ہے جیسے ''دا' ہے اللہ اللہ بھی تغایر کے لئے موضوع گرا کر تحسین کل م کیلئے زائد بول جاتا ہے اور یہ کو کرمعلوم ہوا۔

یوں معلوم ہوا کہ میں تھانہ ہمون میں ایک سید تھے کر تھے بیچار نے رہے انہوں نے اپنے مہاں ایک بہلی کر لی تھی۔ خریب آ دلی ہے ورے کرایہ پریسراد قات کرتے تھے۔ شریف آ دمی ، ذات کے سید۔ گرالند بچہ ہے مفلی بھی عجب چیز ہے سب پچھ کرالیتی ہے وہ کئے کہ میں ایک گوئں میں اپنی بہبی کرایہ پر لے گیا وہاں رات کو تھرانا پڑا۔ اول تو سب سے زیادہ ذکیل جگہ گئے ہے تھے تھرایا ہوئے ہے گئے کہ میں ایک گوئی ہوئے ہے تھی شرم آئی کہ میں سید ہوں بس اندر بی اندر اونٹ کررہ گیا۔ استے میں مکان والے کے ہوئے گئے کہ میں جانا ہوا تو بیٹھا بی تھا۔ بیت اور کے نے آ واز دئی کہ او بہلیان کے انجس لے لے کے کہ میں جانا ہوا تو بیٹھا بی تھا۔ بیت کر بس آگر بھی کر بس آگر بھی کر بسیان کے اور سے آگر بھی کر بسیان کے اور سے آگر بھی کر بسیان کے اور سے آگر کہا کہ بہلیان کے اور سے آگر بھی کر بسیان کے اور سے آگر بھی کہا کہ بسیان کے اور سے آگر بھی کہا کہ بسیان کے اور سے آگر بھی کر بسیان کے اور سے آگر بھی کہا کہ بسیان کے اور سے آگر بسیان کے اور سے آگر بسیان کے اور سے آگر بھی کہا کہ بسیان کے اور سے آگر بھی کر بسیان کے کر بسیان کے کہا کہ بسیان کے اور سے آگر بھی کر بسیان کے اور سے آگر بھی کر بسیان کی تو لگھی کہا کہ بسیان کے اور سے آگر بھی کہا کہ بسیان کے اور سے آگر بھی کر بسیان کے اور سے آگر بھی کر بسیان کے گار سے اور کر بسیان کے کر بسیان کے اور سے آگر بسیان کے اور سے آگر بھی کر بسیان کے اور سے آگر ہو کر بسیان کی کر بسیان کے کر بسیان کے اور بسیان کے اور بسیان کے کر بسیان کے کر بسیان کے کر بسیان کے اور بسیان کے اور بسیان کے کر بسیان کے کر بسیان کے کر بسیان کے اور بسیان کے کر بسیان کر بسیان کے کر بسیان کر بسیان کے کر بسیان کی کر بسیان کے کر بسیان کے کر بسیان کر بسیان کر بسیان کر بسیان کی کر بسیان کی کر بسیان کر بسیان کر بسیان کر بسیان کر بسیان کی کر بسیا

بہبی چلانے لگے ہیں تو کیا ہمارے باوا بھی بہلبان ہو گئے ۔بھس لے لے بھس لے لے۔جاہم تجس نہیں لیتے تیری بھی ایسی تیسی اور تیرے بھی کی بھی ایسی تیسی ۔ کہنے لگے میں نے ای وفت تسم خدا کی کھالی کہ گھر چینچتے ہی چھوڑ وں گا اس کمبخت پیشہ کو۔ چٹانچیآ تے ہی مہلی اور بیل چے ڈالے۔ تو میرصاحب کا ذہن خواہ گخواہ اس طرف گیا کہ یہاں اضا فیمقصود ہے واقع میں اس لڑ کے ے یوچھواس کا مطلب یہ نہ تھا احل البیت اور کی بما قیہ کے '' کا'' لفظ تو برائے بیت ہی تھا۔ جیسے

ایک میاں جی سکندرنامہ پڑھارے تھے جب پیشعرآیا۔ بزرگابزرگی و ہا بیکسم

تواس کامطلب اس طرح بیان کیا۔ بزرگا یمی بزرگا۔ بزرگی یمی بزرگ و با کے معتی لغت میں دیکھ کر بتا ئیں۔ بیلسم برائے بیت ہے آھے چل بھائی۔ تو غرض کا جو ہے یہ برائے بیت ہے لوگ ا تناحقیر سمجھتے ہیں کہان کامقصوداس بکارنے ہے کہ او بھٹکی کے یہی ہے کہ او بھٹکی لیعنی تو ایسی ذ کیل توم ہے ہے اور صاحب اب بھی ایسے متنکبرلوگ موجود ہیں۔

اینے ایک عزیز بی کا نہایت افسوسناک واقعہ ہے وہ ایک دوسرے قصبہ کے رہنے والے۔ ہمارا بيرقصبه بردامتكبرمشهور بمرجهال تك من ديكها بون بيهال تكبرا تنانبيس البية تيزي ب_اورقصبات میں بہت تکبر ہے۔ چنانچہ یہاں ہے ایک قصبہ میں جہاں وہ عزیز رہنے ہیں ہماراایک طالب علم کسی ا ہے کام کو کیا وہ نومسلم ہے۔وہ جمار کالز کا تھا۔مسلمان ہو کیا ہے ۔وہاں جا کراس عزیز کومعلوم ہوا کہ یہ پہلے چمار تھا ہو چھا کیا پڑھتے ہو؟ کہا قرآن مجید! یہ س کر انہوں نے اے بہت گالیاں ویں اور کہا خبر دار!ا بے پہمار کے جوتو نے قرآن پڑھا۔ تواور قرآن کا پڑھنا۔ا بے کہیں تو پے گا تو نہیں۔

توبیانہوں نے جناب نصیحت کی۔ بھلاکتنی دلیری اور گستاخی کی بات ہے میں نے کہا خدا تعالیٰ كافركوچا بيل تومومن كرديں اورمومن كوچا بيل تو تعوذ بالله كافر كردي اس كى قدرت ہے ذرنا جا ہے۔ قدرت كاكرشمه

اس کی وہ قدرت ہے۔

کعبہ میں پیدا کرے زندیق کو اللہ الاوے بتخانہ سے وہ صدیق کو ير گلزارابراہيم" كاشعرے يهال صديق ہمرادحفرت ابراہيم عليه السلام ہيں جبيها كه قرآن مجيد مين "انه كان صديقا نبيا" (بيتك ووسرايا صدق ني يتنے) ووبت خانہ سے كعبہ یں آئے بت خانہ کیا؟ آ ذر کی آغوش! یا کسی بت خانہ بیس پیدا ہوئے ہوں یہ پرورش پائی ہو۔ جمھے تاریخ کی تحقیق نہیں۔ گرآ ذرکا آغوش بت خانہ تو تھ ہی۔ بلکہ اس کے ماہنے بت خانہ کی بھی کیا حقیقت تھی ۔ بینئلزوں بت خانہ کی بھی کیا حقیقت تھی ۔ بینئلزوں بت خانہ تو اس آغوش اوراس بازوہی سے تو وجود میں آگئے۔ بت خانہ تو کیا چیز ہے وہ تو بت گرتھا گر خدا تعالی کی وہ قدرت ہے کہ اس بت خانہ میں صدیق کو پیدا کردیا ۔

کو بیدا کرے زندیق کو

کعبہ ہمراد مکہ ہے شعراء وغیرہ سارے شہر کو کعبہ کہد دیتے ہیں کیونکہ کعبہ ہی ہی وجہ ہے ۔ تو وہ شہر ہوا ہے اور زندیق ہے مراد ابوجہل ہے لیعنی مکہ میں ابوجہل جیسے کا فرا کفر کو پیدا کر دیا۔

اس کوفر مائے ہیں۔حضرت حافظ شیرازی رحمۃ القدعلیہ _

حسن زبصرہ بلال ازجش سبیب ازروم 🦙 زخاک مکہ ابوجہل ایں چہ بوانجمی ست حضرت حسن بصری کوبھرہ ہے اور حضرت بلال کوجش سے اور حضرت صہیب روی کوروم سے جذب قرمایا اور خاک مکه فکریدے ابوجہل پیدا ہو یکس قدر عجیب قدرت ہے اور عجیب تصوف ہے کیا ملیامیٹ کیا ہے تکبر کو۔ فرماتے ہیں کے جبش میں حضرت بدال رضی اللہ عنہ کو پیدا کر دیا۔ یہاں گمان بھی نہتھا کہابیابر افخص ہیدا ہوگا کسی کوخبر نہتھی کہ بیبال بلال پیدا ہوں کے جومحبوب اور مقبول ہوں کے جناب رسول مقبول میں اللہ علیہ وسم کے۔ایسے کہ جوخدا کے محبوب بیں اوران کا اتنابر اورجہ ہوگا کہان كى نسبت حضور سلى القدعلية وسلم يول فرمائيس كرا السائل الم كون سائمل كرتے ہوكہ جب ميں شب معراج میں سیر کرتا ہواجنت میں پہنچا تو میں نے اپنے آ گے آ گے تہباری جو تیوں کی تھسکھساہٹ نی۔ اس سے بدلازم نہیں آتا کے نعوذ باللہ حضرت بلال حضور صلی القد علید وسلم سے بھی برا ھ مستحے۔ نہیں! مکدآ کے آئے جو جارے تھے فادم کی حیثیت سے جارے تھے صور تا آ کے تھے عنی آ کے نہ تے جیسے ارجاع الفعیر قبل الذکر ہوتا ہے کہ وہاں گومرجع موخرے ذکرالیکن رمبة مقدم ہے تو بھائی تحویش تائید بھی اس کی موجود ہے اور دنیا میں بھی تو بہت ہے امراء ایسے ہوتے ہیں جن کے آگے آ کے خادم چیتے ہیں۔ای طرح حضرت بلال جنت میں کوحضور صلی القد علیہ وسلم کے آ سے آ کے چل رہے تھے گر تھے حضورصعی التدعلیہ وسلم کے خاوم لیکن بیر تبدکیا کچھ کم ہے کہ خاوم کی وہشم ہے جونخدوم کے آگے آگے جلتی ہے۔

تو بھلا یہ کی کو خبر تھی کہ حبشہ میں دو کا لے کلوٹے لوگوں کے درمیان ایک اس درجہ کا شخص پیدا ہوجائے گا اور کس کو خبر تھی کہ حسن بھری ہمرو میں اورصہیب روی جیسے بزرگ وارالنصال ی

مس پیدا ہوں کے۔ بھلاکوئی سجھ سکتا تھا ک

من زبھرہ بلال ازجش صہیب ازروم ہے زفاک مکہ ابوجہل ایں چہ بوالجمی ست (حضرت حسن بھری کو بھرہ سے اور حضرت بلال کوش سے اور حضرت صہیب روی کو روم سے جذب قرما یا اور خاک مکہ مکرمہ سے ابوجہل پیدا ہو یہ کس قدر عجیب قدرت ہے اور عجیب تضرف ہے)

حسن توبھرہ میں پیدا ہوں اور ہلال حبث میں اورصہیب روم میں اور مکہ کی خاک میں کون پیدا ہوا ابوجہل! ہاں تو حضرت خدا ہے ڈرنا جا ہے۔ا پے ایمان پر بھی مغرور نہ ہونا جا ہیےا درکسی کو حقیر نہ بھٹا جا ہیے ہے۔ غافل مرو کہ مرکب مروان مرورا

ہائے خوب ہی تعلیم ہے۔

عافل مرو کہ مرکب مردان مردرا ہیں درسنگلاخ بادیہ ہیا بریدہ اند (غفلت سے مت چل کہ حق تعالی کے رائے کے شیران طریق بڑے بڑے مجاہدات سے سلوک کو طے کیا ہے) اور _

نومید ہم مباش کہ رندان بادہ نوش ہے تا کہ بیک خروش بہ منزل رسیدہ اند (اس راہ میں ناامیدمت ہوتا کہ بہت سے رندان بادہ خوار لیننی گنا ہگا را یک آ ہ اور ایک نالہ سے منزل کو بطریق جذب طے کر لیتے ہیں)

خدا كامقابله

واقعی ارتفان بادہ توش نا گہ بیک خردش بمزل رسیدہ اند سیدہ بھوا بھی ہے۔ مشی محمہ جان مار ہرہ کے جوکا نیور بٹس رہے سے خود مجھ سے ایک حکایت بیان کرتے سے کہ مار ہرہ بٹس ایک آزاد مشرب شخص تھا۔ کوئی عیب و نیا کا شدتھا جواس میں موجود نہ ہو۔ لوگ اس کی شرارتوں پر جب اے نصیحتیں کرتے کہ بھائی خدا ہے ڈروتو وہ یہی کہد دیتا کہ میاں تمہیں کیا۔ ہم جانیں اور ہمارے القد میاں کو یا نازتھ اس کوئی تعالی کہ رحمت پر۔ بس حضرت لوگ تو سمجھاتے مایوں ہوگئے کہ اب کو یا نازتھ اس کوئی تعالی کی رحمت پر۔ بس حضرت لوگ تو سمجھاتے سمجھاتے مایوں ہوگئے کہ اب اس کی اصلاح نہ ہوگئی کی رحمت پر۔ بس حضرت لوگ تو سمجھاتے میرا حال کیا ہوگا بس میں اس کی اصلاح نہ ہوگئی لیکن ایک ون دفعتا اس کے منہ سے بید نکلا کہ خدا جانے میرا حال کیا ہوگا بس میں جھٹا۔ کہتے ہی اس پرایک حالت طاری ہوگئی۔ خدا جانے میر اکیا حال ہوگا۔ بیتو بولا پھر پولنا بھی چھٹا۔ کہتے ہی اس پرایک حالت طاری ہوگئی۔ خدا جانے میر اکیا حال ہوگا۔ بیتو بولا پھر پولنا بھی چھٹا۔ کہتے ہی اس پرایک حالت طاری ہوگئی۔ خدا جانے میر اکیا حال ہوگا۔ بیتو بولا پھر پولنا بھی چھٹا۔

اورکوئی کام ندتھ۔اس کے رونے سے میں معلوم ہوتا تھ کہ کلیجہ یا ہرنگل پڑے گا۔ ہر چندلوگ آسلی دیتے تھے مگر کسی طرح صبر ہی ندآتا تھا۔ یہاں تک کہ اس حالت میں تبسرے دن انتقال کیا۔کوئی شک کرسکتا ہے اس مخص کے شہید ہونے میں تواب و کھنے یہ ٹھیک ہے یا نہیں۔

نومید ہم مباش کہ رندان بادہ نوش ہے ناگہ بیک خروش بدمنزل رسیدہ اند (اس راہ میں ناامیدمت ہوتا کہ بہت ہے رندان بادہ خوار یعنی گنا ہگارا یک آ ہاورا یک تالہ ہے منزل کوبطریق جذب طے کر لیتے ہیں)

تو کھی کسی کو حقیر نہ بھنا چ ہے کہ یہ بھتگی ہے، یہ جمار ہے۔ مولا نافر ماتے ہیں۔

نیچ کافر را بخواری منگرید ﴿ که مسلمان بوڈنش باشد امید

(کسی کافر کو ذات کی نظر سے مت و کھنا کیونکہ ابھی ممکن ہے کہ وہ کسی وقت ہیں اسلام
قبول کر کے حسن خاتمہ سے مشرف ہوجائے)

کسی کا فرکوئی ذلیل نہ بجھنا جا ہے کہ شاید مسلمان ہوجائے نہ کہ مسلمان ہونے کے بعد بھی ذلیل سمجھا جائے کہ ریتو نعوذ باللہ! خدا کا مقابلہ ہے۔خدا جائے آئندہ کیا ہونے والا ہے اور ہماری قسمت میں کیا ہونے والا ہے۔اور ہماری قسمت میں کیا لکھا ہے۔

توان منٹی جمال الدین کی دکایت میں نے بیان کی تھی اس نومسلم کے اس قول پر کہ اسلام میں تو حید بہت کامل ہے تو اس نے جمھے ہے یہ کہ چونکہ مسلمانوں کی خاصیت تو حید ہے اس سے اب میں ان سے جدائے ہوں گا۔اب میں اسلام کونہ چھوڑ ول گا خیر!اس سے جھے کی ہوئی۔ تو رکے آئیار

اس پرید دکایت یا آگئی تھی کہ لوگ ' نور' چیک کو بیجھتے ہیں۔ حالانکہ نور کہتے ہیں اس کو جو طاہر سفیہ ومظہر لغیرہ ہواچی جو خور ہی ظاہر بوا در دوسرے کو بھی ظاہر کر دے۔ بس حقیقت سے بنور کی۔ اب انتدنو رائسموت کی تفسیر میں استدارہ کی تاویل کی حاجت ہی نہیں کیونکہ القد تعالی سموت اورارض کو ظاہر ہے بہر حال نوراس کو کہتے ہیں جوخود بھی ظاہر ہے بہر حال نوراس کو کہتے ہیں جوخود بھی نظاہر ہواور دوسرے کو بھی نظاہر کے۔

تواب وہ شبزیں رہا کہ ہم نے تو نماز پڑھی تھی کوئی تورنبیں پیدا ہوا۔ ہم توروزہ رکھتے ہیں کوئی نورانیت قلب میں محسوس نہیں ہوتی۔ طاعت میں کوئی نورنظر نہیں آتا۔ اب میشبدر فع ہو کیا کونکہ لور چک دمک کا نام نہیں ہے۔ بلکہ نوروہ ہے جس کی میں نے ماہیت عرض کی کہ طا ہر انتفسہ ومظہر لغیر ہے۔ فیرعوام کیا مجھیں اس کولیکن اس کی علامتیں اور آثار ہیں جن سے وہ نور کی حقیقت مجھ سکتے ہیں۔ اگر آگ دکھائی نہیں دیتی تو دھواں تو دکھائی دیتا ہے۔ دھو کی سے تو پہچان سکتے ہیں کہ آگ موجود ہے آثار کیا ہیں اس نور کے؟

ترفری کی حدیث ہے اس آیت کی تغییر عمی فیمن یو دالله ان بھد یه بشوح صدرہ لله الله علیه کہ جب شرح صدرہوتا ہے تو تورقلب میں داخل ہوتا ہے کی نے پوچھابار سول الله علیه وسلم و ما علامة نور کے داخل ہونے کی کیاعلامت ہے فرمایا المتجانی عن دارا لغرور والانا به الی دار المخلود فی دنیا ہے تعلق کا کم ہوجانا اور متوجہ ہوجانا آخرت کی طرف سیطامت ہے تو کو تو تا المناز المنا

اب یہاں ہے معلوم ہوگیا کہ دمفیان المبارک کا وہ مہیدہ جو مجمع النور ہے اس واسطے کہ
اس مہید میں قرآن مجید نازل ہوا جس کی شان ہے کہ ہدی ہے، بینات ہا ورفر قان ہا وران
میں ہے ہرایک صفت ولالت کرتی ہے قرآن مجید کے نور ہونے پر ۔ فرق ن ہونا بھی ای پر ولالت
کرتا ہے کیونکہ فرق بین الحق والباطل انکشاف پر ہے ۔ اور انکشاف ور ہے ہوتا ہے جیسا کہ
او پر بیان ہوا ہے ۔ اور ایک ہدی کا مادہ ہے وہ بھی ولالت کر رہا ہے قرآن مجید کے نور ہونے پر۔
کیونکہ رستہ ای چیز سے نظر آتا ہے جس کی شان ہونا ہر لافقہ ومظہر لغیر ہ ۔ اس کو تو ہر شف ہوتا ہے
ادھر بینات ہے جس کے معنی ہیں ولائل واضحات ۔ اس کا موضع ہوتا ہے بھی کاشف ہوتا ہے
ادھر بینات ہے جس کے معنی ہیں ولائل واضحات ۔ اس کا موضع ہوتا ہے بھی کاشف ہوتا ہے

_لي إتحاف السادة المتقين للزبيدي ١٠،٣٩٤ ١٠،٢٥٥ الدر المنثور للسيوطي: ٣٣٣٠

جومرادف ہے نورکا۔ تو قرآن مجید کی سب صفیم ایسی جی جن ہے اس کا نور ہونا ثابت ہوتا ہے۔
تو حاصل اس آیت کا یہ ہوا کہ رمضان المبارک ایس مہینہ ہے جس میں ایسی نورانی چیز آئی۔
تو کو یا پر انوار ہے میم مہینداور ذات الانوار ہے یہ مہینہ۔ اور جب ذات الانوار ہے تو اس کارافع
الظلمات ہونال زم ہے۔

اب رافع ہونے کی دوصور تیں ہیں۔ ایک تو رافع ہوتا ہے تکوینی اورا یک رافع ہوتا ہے تکوینی اورا یک رافع ہوتا ہے تشریعی ۔ سور فع تکوین تو بافقیا کی بنایا اسلام اللہ اس کو مجمع الفقیا کی بنایا اسلام ظلمت نواس میں مفقو دکیا۔ چنا نچہ شیاطین بھی اس میں قید ہوجاتے ہیں اور رفع تشریعی باس میں قید ہوجاتے ہیں اور رفع تشریعی با فقیار عبد ہے۔ اس لئے اس برآ کے تفریعاً فر مایافیمن شہد منکم المشہر (پستم میں سے جو بافتیار عبد ہے۔ اس مبینہ ہے تو اس کوظمات کے رفع کا آلہ تم بھی بناؤ۔ اس محفی اس مبینہ کو یا ہے کہ اس مبینہ کو بائے اس مبینہ ہے تو اس کوظمات کے رفع کا آلہ تم بھی بناؤ۔ اس طرح سے کہ اس میں خاص عبادت کرولینی روز و رکھو اور اس کے انوار کوآلہ بناؤ رفع ظلمات کا۔

حاصل میں کہ اس کی الی مثال ہے جیسے ایک الٹین رکھی ہو بردی مسجد میں اور ہیکہا جائے کہ اس سے کا م لو۔ اور جہاں جہاں ظامتیں ہوں وہاں لے کرجاؤ تا کہ وہ رفع ہوں میتھوڑا ہی ہے کہ رکھی رکھی ساری و نیا کی ظلمات کے رفع کے لئے وہ کافی ہوجائے ای طرح تم کو بھی میمینہ کیا ملا ہے گویا ایک ساری و نیا کی ظلمات کے رفع کے لئے وہ کافی ہوجائے ای طرح تم کو بھی میمینہ کیا ملاہت کیسے الٹین عطا ہوئی ہے گراس کو کی ظلمت میں لے بھی تو جاؤ ۔ اگر کہیں نہ لے جاؤ تو بیٹھے بیٹھے فلمت کیسے رفع ہوجائے گی۔ یوں چاہیے وہ ٹوراییا ہی تو ی ہوجس سے ظلمتیں بلااستعال بھی رفع ہوجتی ہوں گر تی تو ہوجائے گی۔ یوں چاہیے وہ ٹوراییا ہی تو ی ہوجس سے ظلمتیں بلااستعال بھی رفع ہوجتی ہوں گر نہیں تن تا کہ مکلف کا مکلف ہوتا ہی تو معلوم ہوور نہ اگر اس مہینہ میں اٹھال ظلمانیہ پر بھی قد رت شہوتی اور طاعات بالاضطرار صا در ہوتیں ۔ بخلاف فرشتوں کے تو یہ بھی رفع بھویں میں واغل ہوجا تا شہوتی اور اس صورت میں مکلف کا کیا کمال تھا اور اس کو کیا بر کت حاصل ہوتی ۔

انسان كى فرشتوں پرفضيلت

یکی ظہور کمالات وعطا برکات اس کی وجہ ہے کہ انسان کو مکلف طاعات کا بنایا کہ ان شاء افعل و ان شاء فیم یفعل کہ ان کا اختیار مشابدا ضطرار کے ہے وہ ترک طاعات پر قادر نہیں۔ انسان کوان پر خاص شرف ویٹا تھا۔

چنانچە صديث مي ب كه جب حق تعالى فى معرت دم عديدالسلام كوپيداكرنا و بالولمائكد فى عرض کیا کہ وہ تو کھا کیں گے بھی پیش کے بھی فاجعل لہم الدنیا ولدار الاخرة ـ ان کے حمہ میں دنیا کر دیجئے ہارے حصہ میں آخرت ۔ ارشاد ہوا کہ ہرگز نبیں۔ بھلا جس کو میں نے اسیتے دونوں ہاتھوں سے بنایا ہے اور جس کوصرف کن کہدکر پیدا کیا ہے دونوں کو برابر کر دوں لیعنی تم کو کہ صرف کن کہدکر پیدا کیا ہےاورانسان کوجن کومیں نے اپنے دونوں ہاتھوں سے بنایا ہے کیسے برابر کر دوں۔ اب رہا یہ کہ دونوں ہاتھوں سے پیدا کرنے کے کیامعنی ہیں۔سواس کاحقیقی علم نوحق تعالیٰ ہی کو ہے باقی حاصل مطلب ہیہ ہے کہ انسان کو خاص توجہ اور عنایت اور اعتنا کے ساتھ پیدا کیا ہے۔ یعنی خلاصہ ارشاد کا بیہے کہ ان کی توع بلحاظ مجموعہ کے ملائکہ کی توع سے برجمی ہوئی ہے۔ بینیس کہ ہر قرد ہر فرے افضل ہے بہاں سے میدمسئلہ معلوم ہوا کہ انسان ملائکہ سے بھی افضل ہے ولو باعتبار بعض الافراد-اورکیا یہ بات فضیلت ظاہر کرنے کے لئے کافی نہیں ہے کہ فرشتوں کوتوانسان کی خدمت سیرو کی گئی کیکن اس کوان کی کوئی خدمت سیر دنبیس کی گئی۔ بیا کیاتھوڑی بات ہے کہ سارے کام انسان کے ملائکہ کے سیرد ہیں۔ یہال تک کہ خودان کی خدمت بھی اوران کی چیزوں کی خدمت بھی ۔ان کی جس کھاس کوئیل کھاتے ہیں اس کی بھی۔ کیونکہ قوت نامیدے کام لینے والے وہ ملائکہ ہیں جو مد برات جیں ارض وسمو سے میں جس کے کے منطقہ جی بھی ملائکہ بی تصرف کرتے ہیں۔جس وقت نطقہ قراردیا۔ای وقت ایک فرشتہ فورا متعین کردیا گیا پہلے اس نے علقہ بنایا پھرعرض کیا اب کیا کروں۔ پرمضغه بنایا پرعرض کیااب کیا کرول غرض اخیر تک برابر فرشنه تصرفات کرتار جتاہے۔

اطباء بیجے ہیں کہ قوت مولدہ کام کرتی ہے چلو بیٹھو بھی۔ توت ہیچاری کام کیا کرسکتی ہے۔ جب تک کوئی قوت سے کام لینے والا نہ ہو۔ یہ صاحب حکماء کہلاتے ہیں! یہ حکماء ہیں؟ حتماء ہیں کہ طبیعت کوعد بحمۃ الشعور بھی مانتے ہیں اورا پسے افعال بدید کوبھی اس کی طرف منسوب کرتے ہیں۔ جب بہت لاڑ پڑی کہ بھلا کوئی عدیمۃ الشعور ایسے افعال بھی کرسکتا ہے تواخیر میں ذرا متاخرین کوڈ حیلا ہونا پڑا اور کہنا پڑا کہ ضیعفۃ الشعور ہے۔ حکم پھر بھی اعتراض باتی ہے۔ یعنی ان کے قول کوڈ حیلا ہونا پڑا اور کہنا پڑا کہ ضیعفۃ الشعور ہے۔ حکم پھر بھی اعتراض باتی ہے۔ یعنی ان کے قول کا حاصل تو یہ ہوا کہ طبیعت بے عقل تو نہیں کم عقل کا حاصل تو یہ ہوا کہ طبیعت بے عقل تو نہیں کم عقل ہے گئی وہ اعتراض تو پھر بھی باتی ہے کہ معقل سے ایسا فعال بدید کیسے صا در ہو سکتے ہیں بلک اب اعتراض اور قوی ہوگیا کیونکہ ہم و کھتے ہیں کہ بی عقل کا تقرف تو ایک نوع احد پر چلتا رہنا ہے۔ جسے مشین کہ ایک مرتبہ تھما دو سے سے کام کرتی

رہتی ہے تو جوعدیم انشعورہے وہ کا م کواتنا نہ بگاڑے گالیکن جو کم شعورہے وہ بہت بگاڑے گامشین ہے کا م اتنانہیں گڑتا جتناا ناڑی ہے۔

سوواقعی ان حکی و نے بیکی افت کی بات کہی ۔ بس سید کی بات بین کے مسلمان ہوجہ و اوراس کے قابل ہوجاؤ کہ اللہ میاں فرشتوں سے بیسب کام لیتے ہیں۔ پھر کوئی اشکال ہی باقی نہیں رہتا۔ ان حکما و نے اس قدر ٹھوکری کھائی ہیں کہ کہیں پناہ نہیں ملتی۔ ہرجگہ اعتراض بخلاف اہل جن کے جو قائل ہیں خدا کے قادر مطلق اور مختار مطلق ہوئے کے ان پر کوئی اشکال ہی نہیں واقع ہوتا۔ البتہ حکما و کی طرف سے ان پر افجہ سے جس پران کو براناز ہے کہ افتیار توقد یم ہے ہوتا۔ البتہ حکما و کی طرف سے ان پر افجہ بیاتر جے بلامر تے ہے۔ جواب یہ ہے کہ مرق ارادہ ہے کہ اور دی موال میں ہوئے ہوا؟ جواب یہ ہے کہ ارادہ کی محت ہیں ارادہ کیوں مرقح ہوا؟ جواب یہ ہے کہ ارادہ کی حقیقت ہی ہیں ہوگہ کا کا ذاتی ہے خواہ ایول میں ہوئے کہ اس کا ذاتی ہے خواہ ایول کیا گیا ہے کہ کسی طاحی وقت ہیں ارادہ کیوں مرقح ہوا؟ جواب یہ ہے کہ ارادہ کی حقیقت ہی ہیں ہوئے اور ذات اور ذاتی کے درمیان اس طرح طروم ولازم کے درمیان تک طرح طروم ولازم کے درمیان تک طرح طروم ولازم کے درمیان تک طرح مطروم ولازم کے درمیان تک اسلام جعل کا محال ہاں گو ہے۔ بیں بند ہوگیا تا طقہ ایک اسلام خیساری اشکالات کو کی کردیا۔ اور دوا صولاً دفروعاً ہر طرح سے بے خواردہ گیا تا طقہ ایک اسلام نے ساری اشکالات کو کی کو اور دو ما مولاً دفروعاً ہر طرح سے بے خواردہ گیا تا طقہ ایک کے ساری اشکالات کو کل کردیا۔ اور دوا صولاً دفروعاً ہر طرح سے بے خواردہ گیا تا طقہ ایک کو سال کا دورہ کیا۔

انسان کی حیثیت

بہر حال تنخیر ملائکہ ہے انسان کا کتنا بڑا شرف ٹابت ہوا البتہ بیضرور ہے کہ بیشرف ای وقت تک ہے جب تک حق تعالی ہے اس کوتعلق ہے دیکھو! ہمارے یہاں کوئی مہمان آتا ہے تواہد بیٹوں ہے اس کی خدمت کراتے ہیں۔ حالانکہ بیٹا نسبت میں اس فخص ہے زیادہ قریب ہوتا ہے گرمہمان ہونے کی وجہ ہے وہ بیٹے سے زیادہ معزز ہے لیکن اس وقت تک معزز ہے جب تک وہ مہمان ہونے کی وجہ سے وہ بیٹے سے زیادہ معزز ہے کیکن اس وقت تک معزز ہے جب تک وہ مہمان ہونے کی وجہ سے وہ بیٹے سے زیادہ گرائی کسی حرکت ہے اس تعلق کو منقطع کردیا تو پھرای جٹے ہاتھوں جس کو خدمت کرنے کا حکم تھا جو تیاں بھی لگوائی ج تی جی ۔

چنا نچہ کانپور میں ایک شخص نے چند صحاء کی دعوت کی تھی۔ میزبان کے لڑکے نے سب کے ہاتھ وہلائے ان میں سے ایک صاحب جو مدعیان صلاح میں سے بتھ آزاد سے تھے انہوں نے اس قد رنالائق حرکت کی کہ اس لڑکے کے رخسار پر محبت نفسانیہ سے ہاتھ مجھیرا۔ صاحب مکان نے و کچھ لیا۔ نوراً خدمت گارکھم دیا کہ ان سب نالائقوں کو کان سے پکڑ کر ہا ہر تکال دو۔ ایک نالائق کی وجہ سے بھی ہے چارے تکا لے

گئے۔لوصاحب یا تو مہمان تھے بیٹا خدمت کرر ہاتھا یا نو کروں سے کان پکڑوا کر نکالے گئے۔ تو حق تعالیٰ نے انسان کو دنیا میں اپنامہمان کر کے بھیجا۔ اور فرشتوں کواس کے کام میں نگاد یا۔ بقول ڈوق

دنیا ہیں ہے جو پکھ دہ سب انسانوں کیلئے ہے ہے۔ آراستہ سے گھر اک مہمان کے لئے ہے اور اگر مہمانی کے اہل ہیں وقت تک ہے جب تک ہم مہمانی کے اہل ہیں اور اگر مہمانی کے ظاف ذراکوئی حرکت کی تو کان پکڑ کر نکال دیئے جائیں گا تنافرق ہے کہ وہاں ای وقت ذکیل کر کے نکال دیئے جائے ہیں گا تنافرق ہے کہ دہاں ای وقت ذکیل کر کے نکال دیئے جائے ہیں یہاں ایک میعاد مقرر ہے دسترخوان کے لئے اس میعاد تک ہوئے ہم ہے کہی بی نالائق حرکتی سرز دہوں ہم مہمان بی قرار دیئے جاتے ہیں جیسے بعضے میعاد تک کو ہم ہم ہوئے ہوئے ہیں کہ جب کی نے دسترخوان پر کھانا شروع کر دیا تو کر یم انتفس میز بان اس کی نالائقیوں پرچشم پوئی کرتا ہے اور مہر کرتا ہے کہ اب جس کیسے اس کھاتے ہوئے کواٹھادوں لیکن جب میعاد تم ہوگئے اور گھر سے ہوگئے باہر پھروہ جوتے ہے جوتا۔ انہیں کے ہاتھوں ذکیل کرائے جا کیں میعاد تم ہوگئے۔ اور گھر سے ہوگئے باہر پھروہ جوتے ہے جوتا۔ انہیں کے ہاتھوں ذکیل کرائے جا کیں گیاں گیاں سے دیا ہو تا دائیان کا کمال کے جن سے کہ اب خدمت کرائی جارتی ہے لیکنی لما نگ سے۔ بہر طال بیٹا بت ہوا کہ انسان کا کمال نیادہ ترائی پڑئی ہے کہ اس سے اضطرارا کا منہیں لیا جاتا۔ وہ اپنے اختیار سے باجوہ کرتا ہے۔

ماه رمضان كى عبادات

اس لئے رمضان کواس کے لئے اضطرار آرافع ظلمات اعمالیہ نبیں بنایا گیا۔ بلکداس کوخود تھم ہوا ہے ان ظلمات کو رافع اس کوتم خود بناؤ ۔ یعنی اپنے اختیار سے مجاہد و کر کے رمضان کو پرانوار بناؤ ۔ اس طرح سے ان انوار کو کل ظلمات میں پہنچاؤا ہے عمل کے ذریعہ سے ۔ اس لئے قرمایا فیمن شہد منگم الشہر فلمیصمہ ، تواس طرح ہے آیت ولالت کرتی ہے حقوق رمضان کے وجوب شہد منگم الشہر فلمیصمہ ، تواس طرح ہے آیت ولالت کرتی ہے حقوق رمضان کے وجوب یہ ۔ جسے کہ بیس نے تقریم بیان کی بعد مقد مات کے ۔

اس مہینہ پرعلاہ وصوم کے اور بھی چندع یا دہمیں مشروع ہیں۔ان میں ہے ہرعبادت کی حقیقت میں غور کرنے سے میرابید وی ٹابت ہوجائے گا کہ واقع میں میں ہیں ہیں نے ہمور سے جنانچہ جموعہ میں سے۔ ازایک عبادت ہے اس کے اندرروز ہ کی جوآبیت میں صرت کے ذکور ہے۔ ۲-ایک عبادت ہے اس کے اندر تر اور تک کی جس کی طرف ذکر قرآن سے اشارہ ہے ۳-ایک عبادت ہے اس کے اندراعت کا ف کی جس کا ذکر بعد میں ہے۔ ۳-ایک عبودت ہے اس کے اندراحیاء لیالی قدر کی جس کا ذکر دوسری آیتوں میں ہے۔ ۵-ایک عبادت ہے اس کے اندر کثرت تلاہوت قرآن مجید کی۔ اس کی طرف بھی ذکر قرآن ہی میں اشارہ ہے۔

یہ گویااس وفت پانچ عبادتیں ذہن میں حاضر ہیں۔اب ہرایک کی حقیقت میں اور ذات میں غور کرنے سے جومیں نے دعوی کیا ہے اس کی تائید ہو گی سب کوتھوڑ اتھوڑ ابیان کرتا ہوں۔ سکٹم مت تلاوت

چنانچدایک عبادت ہے تلاوت قرآن مجید کیونکہ حق جل علاشانہ کے ارشاد ہے رمضان شریف کامل نزول قرآن ہونا جابت ہوتا ہے۔ اس ہے مناسبت تلاوت قرآن مجید کی رمضان شریف کامل نزول قرآن ہونا جابت ہوتا ہے۔ اس ہے مناسبت تلاوت کی کثرت کی حدیث قولی شریف کے ساتھ ظاہر ہوتی ہے باتی خاص رمضان المبارک بیس تلاوت کی کثرت کی حدیث قولی یافعلی میں میری نظر سے نبیں گزری لیکن میری نظر وسیع نبیں ممکن ہے کوئی روایت ہو جو میری نظر سے نہ گزری ہوئیکن ایک سنت اس وقت میرے ذہن میں ہاس سے استعدلال کرنا کائی ہوگا۔ وہ یہ کہ حضوصلی اللہ علیہ دسلم میرسال رمضان المبارک کے مہینہ میں حضرت جرئیل علیہ السلام کے ساتھ قرآن مجید کادور فر مایا کرتے تنہ اورجس سال حضوصلی الشعلیہ وسلم نے وصال فر مایا۔ اس رمضان میں جبرئیل علیہ السلام نے دوبار دور کرایا۔ چنانچر آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس سے قرب وفات پر استعدال فر مایا یعنی معلوم ہوتا ہے میرے لئے اگلار مضان آنے والانہیں ہے۔ میں اس وقت تک زعم میمیں رہوں گا۔ اس لئے دود فعد دور کرایا گیا تا کہ اگلے رمضان کا دور بھی اس رمضان میں ہوجائے۔

اب یہ ظاہر بات ہے کہ یہ دورجو ہرسال رمضان المبارک میں ہواکرتا تھا غیرتر وا تک میں ہوتا تھا۔ لہٰذااس سنت سے اور دوسر ہے اس حدیث سے کہ رمضان شریف میں اور دنوں سے زیادہ آپ اجتہاد فرماتے تھے۔ اور تل وت ہمیشہ مطلوب ہے تو رمضان میں زیادہ مطلوب ہوگی۔ ان دونوں سے مدعا تا بت ہوسکتا ہے۔

غرض اس معلوم ہوا کہ ایک عبادت رمضان المبارک کی مطلوب عبادات میں سے
تلاوت قرآن مجید بھی ہے اور قرآن مجید کا تورہونا ہدی للناس وبینات من الهدی
والفر قان میں بیان فرمائی دیا ہے بہی ولیل کافی ہے اس عبادت کے تورہوئے گی۔
ایک جزورمضان المبارک کی عبادات کاروزہ ہے جس کواس آیت میں ارشاد فرمایا گیا ہے۔ فعن

شهد منكم الشهر فليصمه . (تم من عي جوفض ال مبيندكو پالے اسے چاہئے كدوز وركے) ترك معصيت

اب رہاروزہ کا نور ہوتا۔ سونور کرنے ہے معلوم ہوگا کہ روزہ کس طرح ہے نور ہے توروزہ کی حقیقت دیکھنی چاہیے کہ کیا ہے حقیقت یہی ہے لذات کا ترک کر دینا، شہوات کا ترک کر دینا۔ تولذات کے ترک ہے اور شہوات کے ترک ہے خود مشاہدہ ہوسکتا ہے کہ قلب کے درمیان ایک کیفیت نور کی اور انشراح کی پیدا ہوجاتی ہے۔ وجہ یہ ہے کہ معاصی ہیں دودر ہے ہیں۔ ایک تقاضا کو وہ بالفعل اور ایک اس تقاضا کو وہ بالفعل اور ایک اس تقاضا کو وہ بالفعل کا فرت میں گر بالقوہ قلمت ضرور ہے اور بالفوہ شرط ہے بالفعل کی اور شرط کا فوت مستزم ہوفت مشروط کو۔ اور دوزہ سے تقاضا کی ہوگئر میں گر بالقوہ قلمت ضرور ہے اور بالقوہ شرط ہے بالفعل کی اور شرط کا فوت مستزم ہوفت مشروط کو۔ اور دوزہ سے دوزہ اس طرح نور ہوا۔

کین یہ یادر کھنے کی بات ہے کہ قوت کے مرتفع ونٹی ہونے کے معنی اصطلاح میں ضعیف ہوجائے کے جیں نہ کہ بالکل معدوم ہوجانا۔ اور یہ بہت کام کی بات ہے جس کے نہ جائے کی وجہ سے مہت غلطیاں واقع ہور ہی جیں۔ چنانچے عموماً! اس وقت کے صوفیاء ترک لذات کی تبدت اور ترک تعلقات کی نبست یہ بچھتے ہیں کہ ان کے قطع کا تھم ہے۔ حالانکہ یہ الفاظ اصطلاحی جیں۔ ان کو افت یہ محمول نہ کرنا چاہے۔ لوگ یہ بچھتے ہیں کہ لذات کو بالکل فنا کردینا چاہیاں واخلاق ذمیمہ بالکل معدوم ہوجائے چاہیئں۔ تواس خلطی ہیں پڑنے سے بی شرر ہوتا ہے کہ بعد مجابدہ کے جب و کہتے ہیں کہ نفس ہوجائے جا کہ بعد مجابدہ کی جرب و کہتے ہیں کہنس ہوجائے جی کہ بعد مجابدہ کی جرب و کہتے ہیں کہنس ہیں ان چیز وں کا پھر تقاضا ہونے لگا ہے تو مایوں ہوجائے ہیں کہ جہار اسارا مجابدہ ہی ہر بادگیا۔

اور مایوس ہونے سے میضر بہوتا ہے کہ پہلے جوتھوڑی بہت مجاہدہ کی تو فیق تھی اس کو بھی ترک کر بیٹھتے ہیں جب اس کوترک کر دیتے ہیں تواس کی دجہ سے جومواد خبیشہ بین استحلال ہوگیا تھا۔ وہ جاتا رہتا ہے اور پھراس مواد خبیشہ بین جوش وخروش بیدا ہوکر معاصی کا صد در ہونے لگتا ہے۔ و پھیے کتن ضرر ہوا ذرائی اصطلاح کے نہ جائے ہے تو تو ت کے مرتفع ہوئے کے معنی قولت بین استحل ل واعیہ ہوجانے کے ہیں۔ جب یہ بحد میں آگیا تو اب مرتب بھتے کہ دوزہ بین خاصیت ہے استحلال واعیہ شہوت کی جس کا درجہ اولی ضعیف ہوجائے گا اور معاصی سے احتر از آسان ہوگا اور طاعت کی تو فیق ہوگی۔ جب معاصی سے ہوجائے گا اور معاصی سے احتر از آسان ہوگا اور طاعت کی تو فیق ہوگی۔ جب معاصی سے

احتر از ہوگا جوسب ظلمت میں اور طاعت کی تو نیق ہوگی۔ تو طاہر بات ہے نور پیدا ہو ہی گا۔ اس اعتبارے روز ہ بھی نور ہوا۔

ایک عبادت تی تراوت کے اس کا نور ہونا بھی ظاہر ہے۔ اول تو خود صدیث میں ہے الصلوة نور اور سے نور ہونا اس سے بھی معلوم ہوتا ہے کہ جیسے لور کی خاصیت بیہ ہے کہ وہ ظلمت کور فع کرتا ہے۔ اس طرح نماز مرتفع کرتی ہے منکرات اور شہوات کوجیبا کہ ارشاد ہے: ان المصلوة تنها ی عن الفحشة ، والمنکو (جینک نماز بے حیاتی اور برے کا مول سے روکتی ہے) اور منکرات وشہوات کا ظلمت ہونا ظاہر ہے۔ غرض تراوت کا نور ہونا اس طرح سے معلوم ہوا۔

جامع جميع عبادات

ا کے عبادت اعتکاف ہے۔اس کی حقیقت ہے ضلوت اور خلوت میں جونور پیدا ہوتا ہے۔ ظاہر بات ہے کوئی شک وشبہیں۔

ایک عبادت احیاء ایالی قدر رمضان ہے۔ بیاحیاء توسب راتوں میں عبادت ہے لیکن خود

ایالی قدر کی عبادت کی فضیات قرآن مجید میں ذکور ہے۔ لیلة القدر خیر من الف شہر ،

انزل الملائکة والمروح فیہا باذن ربھم۔ (شب قدرایک ہزار مہینہ (کی عبادت) سے

ہر ہر ہے اس میں فرشتے اور حضرت جرائیل علیہ السلام القد کے تھم سے افرتے ہیں) ملائکہ اہل نور

ہیں۔ اور ظہر ہے کہ نوروالوں کی صحبت ہے نور پیراہوتا ہے۔ اہل اصطلاح کی صحبت سے صلاح

کا مادہ پیراہوتا ہے۔ اہل فسق کی صحبت سے فسق کا مادہ پیراہوتا ہے اہل اطلات کی صحبت میں ظلمت

ہوتی ہے۔ اہل نور کی صحبت میں نور ہوتا ہے۔ یہ خاصیت خاص ہے شب قدر کے ساتھ۔

ہوتی ہے۔ اہل نور کی صحبت میں نور ہوتا ہے۔ یہ خاصیت خاص ہے شب قدر کے ساتھ۔

فلاصہ بیہ کہ رمضان کیا ہوا مجمع انوارہوا۔ بول توسب طاعات انوار ہیں۔ مگریہ خاصیت رمضان المبارک ہی ہیں ہے کہ تمام انوار اس میں جمع ہو گئے ہیں پھراس میں جوعب دت بھی ہے اپنی کامل ہیئت کے ساتھ ہے۔ بخل ف دوسری عبادات جامعہ کے جن میں یہ بات نہیں۔

مثلٰ اہل لطا نف نے نماز کو جامع جمیع عبر دات کہا ہے۔اس طرح کہ نماز کے اندر نماز تو ہے ہی۔تلادت قرآن مجید بھی ہے۔ کھا تا چینا بھی نماز کے اندر ممنوع ہے وہ کو باروز ہ کے معنی ہوئے

الصحيح لمسلم كتاب الطهارة باب ۱، رقم: ۱، صن الترمدي ۱۵، ۳۵، سن السائي کتاب الرعدي ۱۵، سن السائي کتاب الزگوة باب: ۱، سنن ابن ماحه ۱۲،۰٬۳۸۰

نمازی متوجہ ہوتا ہے فائد کعبہ کی طرف، وہ کو یائے گے معنی ہوئے۔ کسی سے ہوتا جا آنہیں اور مبحد

کے اندرای رہتا ہے ۔ تو گویا نماز ہیں معنی اعتکاف کے بھی ہوئے۔ پکھی نہ کھے نہ پچوخرج بھی کرنا پڑتا کے مثلاً کپڑا ہی بنایا جانماز ہی خریدی گویا معنی زکو ۃ اور انفاق کے بھی نماز کے اندر پائے گئے۔

تواس طرح سے بعض عباوات کے غیر رمضان ہیں بھی جامع الانوار ہیں۔ گرا تنافرق ہے کہ نماز کے اندرتو اور عباوات کے صرف معنی ہی پائے جائے ہیں۔ اور رمضان المبارک ہیں ہرعباوت کے اندرتو اور عباوات کے صرف ایک اپنے ماعت کاروزہ اس کی صورت اصلی کے اعتبار سے کوئی چیز ساعت کاروزہ اس کی صورت اصلی کے اعتبار سے کوئی چیز ساعت کاروزہ اس کی صورت اصلی کے اعتبار سے کوئی چیز سیس سستفل ماعت کے اعتبار سے کوئی چیز سیس سستفل مور پر موجود ہیں۔ صوم ہے وہ مستفل قرآن مجد کی تلاوت ہے وہ مستفل اعتکاف ہے وہ مستفل علی قدر کی بیداری ہے وہ مستفل ہیں۔ بیغا صیت کی زمانہ ہیں یا کی طاعت مرابیا لی قدر کی بیداری ہے وہ مستفل سیسب مستفل ہیں۔ بیغا صیت کی زمانہ ہیں یا کی طاعت میں بینی ہیں کہ مرمضان شریف میاسی کے اندر۔ اس سے آپ قدر کر سکتے ہیں کہ رمضان شریف میاسی کے اندر۔ اس سے آپ قدر کر سکتے ہیں کہ رمضان شریف میا جی بید ہے جب بیائی چیز ہے تو جو اس کے حقوق ہیں ان کواوا کر ناظروری ہوا۔ وہ حقوق کیا ہیں ؟ کیا چیز ہے جب بیائی چیز ہے جو جو تاس کے حقوق ہیں ان کواوا کر ناظروری ہوا۔ وہ حقوق کیا ہیں؟ کی کے معمول معاصی

اید تو وہ حقوق ہیں جومشترک ہیں تمام طاعات رمضان ہیں اور ایک حق ہے خاص خاص طاعات کے متعلق اور معاصی ہیں نماز کے متعلق اور معاصی طاعات کے متعلق اور معاصی کا ترک کرنا۔ مثلاً روزہ کے متعلق اور معاصی ہیں نماز کے متعلق اور معاصی ہیں بہال نماز سے مراووہ نماز ہے جو خاص ہے جس کوڑ اور کے کہتے ہیں جونی زعام ہے وہ مراز ہیں ہے۔
غرض ہرا یک کے متعلق جدامعاصی ہے مثلاً روزہ کے متعلق جومع صی ہیں وہ ووشم کے بیل۔ ایک تو وہ تنم جس سے روزہ کی حقیقت میں فرق آجائے لیعنی عدم اسماک عن مفطر ات ہیں۔ ایک تو وہ تنم جس کے روزہ کی حقیقت میں فرق آجائے لیعنی عدم اسماک عن مفطر ات الصوم یا جوان آدی نے جس کوا ندیشہ جماع کے ارتفاب کا ہومس اور تقبیل ہے احتر از ندکیا۔

یہ بھی اس بی کے ساتھ حکماء کمتی ہے۔

اورایک وہ شم جن سے روز ہ کی حقیقت میں تو فرق نہیں آتالیکن کمال میں خل ہیں جیسے بری نگاہ ہے کسی کود بکھنا مکسی کی غیبت کرتایا کوئی تا جائز کام ہاتھ ہے کرتایا پاؤں سے ناجائز موقع کی طرف چلنا۔ شطرنج مختبط کم بلنا ، گاتا بجانا یا سنتا یا تاہج دیکھنا وغیرہ وغیرہ اور سب سے بردھ کر اہتج اور اشتع ہے ہے کہ دوزہ ہی شدر کھے۔

چنانچ پارسال رمضان کرمی ہیں آیا تھا۔ اب ہرسال دی دی ون مقدم ہوتا چلا جائیگا لیعنی اس سے پہلا رمضان پور ہے جون میں تھا۔ گر بہتیر ہے لوگول نے جو نمیں ہی ماریں بیٹھکر۔اب کارمضان جون کے مہینہ ہے دی دن پہلے شروع ہوجائے گا بینی ۲۰ سی ہے۔ اگلے سال ان شاء النداور دی دن پہلے شروع ہوگا۔ پھرا پریل میں پڑے گا۔

غرض گری کازمانہ شروع ہوجانے کے بعد بھی بہت دنوں تک سردی ہی رہتی ہے اب بھی را توں کود کیھئے تھنڈ ہوتی ہے۔ دن کوبھی اور سے شوم کوبھی۔ایسی گرمی پریشانی کی نبیس ہوتی اب جب کی سے کھسک کرا پر ہل کے اخیر عشرہ میں رمضہ ن شروع ہوں گے تو اور سردی ہوگی۔ پھر اا اپر ہل کو اور سردی میں ہوں کے پھر کیم اپر بل کو اور سردی میں ہوں گے پھر مارچ میں آجا کمیں گے تو اور سردی ہوگی۔

یں ہوں سے ہور رہے ہے وال ہے ڈرنکال دو کیونکہ سردی ہی کی طرف جارہے ہیں اور جب تک گرمی غرض اب اپنے ول ہے ڈرنکال دو کیونکہ سردی ہی کی طرف جارہے ہیں اور جب تک گرمی میں ہیں گرمی ہے بھی نہ ڈرنا چاہیے کیونکہ وہ گرمی بھی اب رفتہ رفتہ سردی ہوتی جاتی ہے جیسا کہ مٹ ہدہ کر لیا۔ اور میرا خیال ہے کہ عجب نہیں کچھز مانہ کے بعد گرمی ہی بالکل جاتی رہے۔

احلاف حق

مجھے خیال اس لئے ہوا کہ میں نے اپنے استاد حضرت مولا نامحمہ یعقوب صاحب رحمت اللہ عدیہ ہے اس کے متعلق ایک پیشین کوئی سی ہوہ چیٹین کوئی یا تو کشف ہے یا فرامت ہے کیونکہ مولا تا کاد ماغ بہت سی تھا۔ ہزرگوں کے جدا جدا حالات ہیں مولا نا کو کشف سے بہت مناسبت ہی ۔ گوکشف ہونا کوئی ایسے زیادہ کمال کی بات نہیں لیکن صاحب فراست بھی غضب کے تھے۔
ایسے عالی دماغ اور سی المحرز ان تھے کہ ہیں نے معتبر ذریعہ سے سنا ہے کہ پہلے یہ کیفیت تھی (بعد کو یہ کیفیت کم ہوگئی تھی کیونکہ ایک بار گھوڑ سے ہر ہے کر گئے تھے جس سے دماغ پرصد مہ پہنچا تھا) کہ کوئی ایک دفعہ بھی چا دراوڑ ھ کر دے دیتا تھا تواسے سونگھ کر بتادیتے تھے کہ یہ مرد نے اوڑ ھا ہے کوئی ایک دفعہ بھی چا دراوڑ ھ کر دے دیتا تھا تواسے سونگھ کر بتادیتے تھے کہ یہ مرد نے اوڑ ھا ہے یا عورت نے اس قدر سے دماغ تھا ان کے صاحبر ادہ مولوی تھیم معین الدین صاحب موجود ہیں۔
انہوں نے بجیب غریب حکائتیں مولا نا کی صحت دماغ کی سائی تھیں۔

اب اس پیشین گونی کو یا تو کشف کہتے یا فراست بیجئے۔ پیس کم سن تھا لینی انھارہ انہیں برس
کی عمرتی۔ اس وقت حصرت نے ایک موقع پر فر مایا تھا کہ بھائی چند روز بیس ہندوستان بھی
کشمیر ہوجائے گا۔ حالانکہ اس زمانہ بیس بڑی سخت گرمی پڑتی تھی گرممکن ہے مولانا کو خفیف فرق
محسوس ہو چلا ہو۔ صاحب چندسال تک تو پچھ فرق معلوم نہ ہوا۔ البتہ مولانا کی وہ بات یا در ہی۔
پھرتو بیس ہجی تھوڑ ا بہت فرق محسوس کرنے لگا۔ اور اب تو بہت ہی فرق ہو گیا ہے جو سخت گری کا ذمانہ
ہونا چا ہے اس میں بھی سردی ہوتی ہے نہ اس واسطے میں کہتا ہوں کہ ڈرومت جب کرمی میں سردی
ہونا چا ہے اس میں بھی سردی ہوتی ہے نہ اس واسطے میں کہتا ہوں کہ ڈرومت جب کرمی میں سردی

سرواجویش نے اس وقت کہا آس پریاد آس کیا لیک قصہ لطیف۔ یہاں تھانہ بھون پیس کے سامنے

سی نے نقل کیا کہ پورب پیس دی کو فہ کر بولتے ہیں۔ مطلب بیٹھا کہ یہاں تو بولتے ہیں مثلاً دہی پیٹھی

ہے کھنے میں بولتے ہیں دہی میٹھا ہے۔ تو آپ من کر بولے کہ پورب بیس کیا دہی کو دہا کہتے ہیں۔

ایک اس سے بڑھ کر ہوئی۔ میرے ایک عزیز ایک بڑے عاقل صاحب سے یہ حکایت

بیان کرنا چاہتے تھے انہوں نے اس طرح تمہیدا ٹھ ئی کہ بعضا لیے بیوتو ف ہوتے ہیں کہ پوری

بیان کرنا چاہتے تھے انہوں نے اس طرح تمہیدا ٹھ ئی کہ بعضا ایم بیوتو ف ہوتے ہیں کہ پوری

بات تو سفتے نہیں ہے ہو ہے سمجھے خواہ گؤاہ رہے ہیں ٹا نگ اڑا کر ناحق دوسروں کے سامنے ذکیل

اور شرمندہ ہوتے ہیں۔ چنا نچہ ہمارے وطمن کا واقعہ ہے ایک صاحب نے ایس ہی جمافت کی تھی۔

وہ داتھ ہے کہ ایک محفق ایک صاحب کے سامنے یہ بیان کر دے ہے کہ پورب ہیں دہی

کو فہ کر بولے ہیں۔ یہاں تک جنتی پائے تھے کہ وہ مخاطب صاحب بڑے یہ جھے کہ گؤائش ہی

ندر کھی۔ انہوں نے کہا کہ آپ نے میں چپ کیوں ہو گئے پورا واقعہ تو سائے گھر کیا ہوا؟ عزیز نے
کہا کہ اب اس حکایت کا عزوبی ندر ہا۔ میں اب آپ سے کیا کہوں کہ کیا ہوا۔ یکی ہوا جواس وقت
ہوا کہ انہوں نے بھی یہی کہا کہ کیا و ہا ہو لئے ہیں۔ پھر تو وہ صاحب اس قدر شرمندہ ہوئے جس کی
حدثیں کہ ناحق میں نے بھی میں بول کرا بنی حماقت ظامر کی۔

اسلے میں نے بید کا بت بیان کی کہ وہ وہ کا فذکر وہ مجھا۔ ای طرح میں نے نمروی کا فذکر مہم جھا۔ ای طرح میں نے نمروی کا فذکر مہم اور ایولا۔ تو مروا پر بید حکا بت یا وا آئی تھی۔ غرض ڈرومت کہ اب کے دمضان گری میں آ رہے ہیں ۔ اطمینان رکھوان شاءاللہ بہت آ سان رہیں گے۔ اورا بھی معلوم ہوگیا کہ نصف شعبان کو جوروز ہ اب کے دکھا تھا وہ بھی کچھ معلوم نہیں ہوا۔ آپ ان شاءاللہ تعالی دیکھ لیجئے گا کہ بہت ہی آ سانی کے ساتھ روز ہگر ریں گے۔ (چنا نچہ یفضلہ بہ برکت تول حضرت اب تک نوروز سے نہا بت ہولت کے ساتھ ہو بھے ہیں کیونکہ ظاف موسم بجائے گری کا تچھی خاصی سردی پڑرتی ہے بالخصوص بوجہ بارش ہوجائے کے آئی سردی ہڑ رہی گئے ہے کہ تراوی میں اور نماز نجر میں چاور کی حاجت ہوتی بارش ہوجائے کے آئی سردی ہڑ رہی گئے ہے کہ تراوی میں اور نماز نجر میں چاور کی حاجت ہوتی ہو اور دن جرابرر ہتا ہے امید ہے کہ تم رمضان تک ان شاءاللہ یکی کیفیت رہے گی)۔ اورون جرابرر ہتا ہے امید ہے کہ تم رمضان تک ان شاءاللہ یکی کیفیت رہے گی)۔

اور ایوں کوئی عہدی کیے کہ چاہے سردی ہویا گری جمیں تو روزہ بیں تکلیف ہی ہوتی ہے تواس کا کوئی علاج ہی نہیں کیونکہ اس کے معنی تو یہ ہوئے کہ روزہ ہی فرض نہ ہوتا۔ اور بیل اور شکایت کرتا ہوں کہ جو یوں کہتے ہیں کہ گری کی وجہ ہے روزہ نہیں رکھا جاتا تواگر گری سبب ہوتا روزہ نہ رکھنے کا توجس وقت غلبہ ہوتا۔ گری کا ای وقت کھاتے ہیئے۔ میرامعمول ہے کہ بیل بعد تماز فجر منزل پڑھتا ہوں جنگل کونکل جاتا ہوں۔ بیل نے پارسال رمضان ہیں ویکھا کہ شع کا وقت ہے تھنڈی پڑھا تھی ہوا جا کہ ہیں اوقت ہے تھنڈی ہوا چل رہی ہے اورایک صاحب ہیں جی تر بوز اڑا رہے ہیں۔ بھلا فرما ہے ہے کہ نہیں سراوت تھا تر بوز کھانے کا۔ کیا اس وقت گری ستار ہی تھی رکی اس وقت ہیاں کا غلبہ تھا؟ پچھنہیں شرارت تھا تر بوز کھانے کا۔ کیا اس وقت گری ستار ہی تھی ۔ کیا اس وقت ہیاں کا غلبہ تھا؟ پچھنہیں شرارت ہے۔ برمہ شی ہے۔ غرض میروزہ رکھنا تو پوراا تلاف تی ہے خلاصہ یہ کہ روزے کے تو بیر تھوت ہیں۔

تمازتراوت

و دسری عبادت ہے تر اور کے۔ اس کی الی گت بناتے ہیں کہ خدا کی پناہ! اتنی بڑی نعمت اور سیجھتے ہیں کہ لواب کم بختی آئی۔ ہیں رکعتیں پڑھنی پڑیں گی۔ کوئی حدہاور جوکوئی حافظ ہوے ذرا مجود پھرتو گویا قیامت کا سامنا ہے اول تو ایسے حافظ کوکوئی تجویز ہی نہیں کرتا۔ اورا گر کر بھی لیا تو جلدی یر سے کی فر مائش کر کرے اے ایسا تھ کرتے ہیں کہ آئندہ کے لئے وہ تو بہ کر لیتا ہے کہ انہیں تو اب مجھی سنا وَں گانہیں ۔ یعنی بوں جا ہے ہیں کہ صرف اٹھک بدیٹھک ہوا در ہیں یوری ہوجا کیں ۔ کانپور میں بے جارے ایک حافظ تھے جوذرا رکوع سجدہ اطمینان کے ساتھ ادا کرتے تھے اور تومه میں بھی کچھ دیرلگائے تھے۔ حافظ عبدالله مرحوم مہتم جامع مسجد نے خود سنا کہ لوگ بعد تر او یک کے اس معجدے نکلتے ہوئے یوں کہدرہ ہیں۔ارے میال تر اوت کی کیا ہیں قید خانہ ہے۔ بس جا کر مچینس جاتے ہیں۔رکوع میں گئے تورکوع بی میں ہیں۔سجدہ میں چلے گئے تواب سر بی نہیں اٹھتا۔ التحیات پڑھنے بیٹھے تواب کسی طرح سلام ہی نہیں پھیرتے۔جان مصیبت میں آ جاتی ہے۔ غرض بوں جاہے ہیں مقتدی کہ امام بس التحیات ہی پڑھ کرسلام پھیر دیا کرے اوراس کو بہت پسند کرتے ہیں۔ جو حافظ ریل ہوا ورریل بھی کون سی مال گاڑی نہیں ،پنجرنہیں ،ڈاک نہیں ، اسپیشل ہوا وراب انقد بھلا کرے ایجا دکر نیوالوں کا ریل ہے بھی بڑھ کر ہوائی جہاز چل گئے ہیں۔ اب تولوگ بیرچا ہیں گے کہ حافظ جہاز ہوں کیکن لوگ ابھی ہوائی جہاز وں پر سوار مبیں ہوئے ورندان شاء اللہ اس کی تمنا بھی کرنے لگیس گے۔ایک حافظ تنے نامینا۔مرگئے ہیں بے جا رے۔ان کے تیز پڑھنے کا حال کچھ نہ یو چھوبس کن کن کن کن کن شکوراً بن بن بن بن بن غفوراً _ شکورا ، غفورا کے سوا کچے خبر نہیں کہ کیا الفاظ منہ سے نکل رہے ہیں اور یہ پیتہ تو کیا چل سکتا کون سارکوع پڑھ رہے ہیں یا کون سایارہ ہے بس اندھا دھند آئدھی کی طرح اڑے چلے جاتے تھے عمر متفتدی ان ہے ایسے خوش! کے سبحان ابتد! کیا ہلکی پیھلکی تر اوت کے پڑھاتے ہیں۔اور بیس تہمیں اس ہے بھی زیادہ ملکی پھنگی کی ترکیب بتادوں۔ وہ میرکہ بالکل نہ پڑھو۔ تو میں نے ترکیب ایسی بنادی ہے کہ اس سے زیادہ ملکی پیمنگی تر اور کے ممکن ہی نہیں کیونکہ ملکی پھلکی ہونے کے بھی مراتب ہیں جیسے جلدی کے مراتب ہیں جلدی کی حکایت نئے۔

ایک نائی کوکی اس کے جمان نے کوئی ضروری خط دیا کے فلاں شخص کوج کر دے آ۔ وہ خط اس سے کہیں کھو گیا۔ تھا بڑا چالاک۔ شریر نے کیا حرکت کی کہ ایک ساوہ کا غذ لے کراورا ہے ایک ساوہ ہی لفافہ بن بند کر کے بس مکتوب الید کے پاس بہنچ سے اورا سے دے کر کہا کہ میاں نے بیلفافہ آ ب کے افافہ بن بند کر کے بس مکتوب الید کے پاس بنج سے اورا سے دے کر کہا کہ میاں نے بیلفافہ آ ب کے نام بھیجا ہے اس نے کہا اوراس پر بچھ پینہ تو لکھا بی بیس ہے نائی نے کہا حضور جلدی بہت تھی پینہ لکھنے کی فرصت بی نامی نے برتو کھول کرد کھا تو اندر بھی ایک ساوہ کا غذر کھا ہوا ملاجس پر کوئی تحریر نہیں ۔ الب

کردیکھا کہ شاید دوسری طرف لکھا ہو۔ گرادھر بھی کورانظر آیا۔ اب تو بڑے چکرائے۔ نوچھا میاں پکھ
کہوتو آخریہ معمہ کیا ہے کہ نہ باہر پکھ لکھ ہے نہ اندر۔ یہ خط ہی کیا ہوا۔ اس نے کہا حضور میں نے
تو عرض کیا بہت جلدی تھی پکھ لکھ ہی نہ سکے۔ بوچھا پکھ ذبائی کہد دیا ہے۔ کہا حضور کہ س بہت ہی
جلدی تھی۔ ذبانی کہنے کی بھی فرصت نہیں ہوئی تو یہوا سخر و بن کے کیا ہوا۔ یہ کوئی جلدی تھی۔

خیر تو تمثیلی حکایت ہے جلدی کی ۔ ایک حکایت دیکھی ہوئی بھی ہے۔ حضرت مولانا محمد لیفقو ہے صاحب رحمتہ القدعلیہ کے یہاں ایک ملازم تھا عبدالللہ بڑائی ہے وقوف تھا (پھر مزاحاً فر مایا) اورلوگ بھی اس نام کے اس وقت موجود ہیں ان ہیں ہے کوئی مراذبیں کہیں کسی کوشہ ہو۔ وہ تو ہے چارے مرجمی گئے ۔ یہ ں جتنے اس نام کے ہیں وہ تو ماشاء اللہ ذائدہ ہیں (جلسہ وعظ ہیں ایک ٹوجوان صاحب اس نام کے موجود تھے۔ جو حضرت کے پر جوش خدام ہیں ہے ہیں۔ انہیں کی طرف حضرت کا اشارہ تھا۔ انہوں نے اپنی تھاندی کا اس طرح ثبوت ویا کہ بھرے جمع ہیں آپ پکار کرفر ماتے ہیں کہیں ہیں بھی ایس ہی ہوں پھر بعد کو بہت پھیتا ہے کہ واقعی مجھ سے تمافت ہوئی کیونکہ ہمرصورت ہے کہت آ داب بجلس کے خلاف تھی)۔

دنیا ہیں بینے بڑے ہی کم عقل آدمی ہوتے ہیں۔ ایک دن آپ گھری طرف سے دوڑے ہوئے آئے ایک دن آپ گھری طرف سے دوڑے ہوئے آئے اور کہا کہ اجی مولانا گھر ہیں سے یوں کہا ہے کوئی کام تھا جلدی کا۔ وہ گھر ہیں سے کہلا کر بھیجہ تھا کہ جلدی جا کر کہہ آئے ہو دوڑے ہوئے اور کہا مولانا یوں کہا ہے ، مولانا نے جب یوچھا کیا کہ ہے تو آپ کیا فرماتے ہیں کہ ابھی تو بھول گیا ہوں۔ یعنی دوڑنے کی طرف توجہ زیادہ تھی۔ اہتمام بیتھا کہ جلدی جا کر خبر دوں۔ اس اہتمام میں دوسری طرف توجہ رہی نہیں اوراس خبر کو بھول گئے جو پہنچائی تھی۔

ہمارے یہاں بھی ایک طائب علم تھے عیدوشاہ! مرکئے بے چارے میں نے ایک دن بداکر
ان ہے کہا کہ م حافظ ظریف احمد کو جانے ہوائی نے کہا ہی ہاں جانیا ہوں۔ میں نے کہا دہاں جا و آپ آ گے میں کہتا ہی کہ وہاں جا کر ہیکر و لیکن کون انتظار کرتا ہے۔ بس سے نئے ہی کہ وہاں جا و آپ چل و ہے۔ میں کہتا ہی کہ وہاں جا و آپ چل و ہے۔ میں انتظار کرتا ہے۔ بس سے میں نے واپس بلا کر پوچھا کہتم چل کہاں و یئے کہا حافظ ظریف کے یہاں میں نے پوچھا وہاں جا کرکیا کروگے۔ کہا بس چلا جا و کی جو جھم ہوا تھا کردوں گا وہ عجب چیز تصف حب۔ یہ جدی کہ جدی کے کہتر اور کے کہتا ہو کہ کہتر اور کے کہتا ہو کہ کہتر اور کے کہتر اور کے کہتا ہے کہتر اور کے کہتر اور کی کو کو کہتر کی کہتر کو کہتر کو کہتر کی کہتر کی کہتر اور کے کہتر اور کی کو کو کھوں کو کہتا کہ کر کی کر کی کو کو کو کھوں کو کہتر کی کے کہتر اور کے کہتر اور کی کو کو کھوں کی کر کھوں کو کھوں کے کہتر اور کھوں کو کھوں کی کھوں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کی کھوں کو کھوں کی کھوں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کو کھوں کے کھوں کو کھوں کے کھوں کو کھ

پڑھے میزیں بالکل۔ چٹانچے بعضے ایسا بھی کرتے ہیں۔ارے بندے فداکے جب ہم کیاتر اور کا کا ۔اورا کیک مشقت اٹھائی تو پاؤ گھنٹہ کی مشقت اور کی۔اورزیادہ وقت تواشحتے بیٹے بیں لگئا ہے۔اورا کیک مشقت افراکی مشقت افراکی کے بیٹے بیں لگئا ہے۔اچھی طرح اداکر کے پڑھنے بیں اور تھیدٹ کر پڑھنے بیں آز ماکر اور گھڑی لے کرد کھے لو۔ دس پٹلارہ منٹ سے ڈیا دہ تفاوت نہیں نگلے گا۔

پھرافسوں ہے صرف دس پندر ومنٹ کے لئے قرآن کو بگاڑ کر پڑھا جائے اور تراوی کوخراب کیا جائے۔ پھرتر اور کے سے فارغ ہوکر کوئی کام بھی تونہیں محض باتیں کرنے کے سواافسوس کی بات ہے کہ تراوت کو تو یوں خراب کرواور کھانے کو نہ خراب کرو۔ بلکہ رمضان میں تو اور مہینوں ہے زیادہ لذیذ کھانے کا اہتمام کرتے ہو کہ بھن ہوا گوشت بھی ہو، چٹنی کیلئے انچور بھی ہو، وہی بڑے بھی ہوں، پچلکیاں بھی ہوں، گھونکھنیاں بھی ہوں۔شربت بھی ہووغیرہ وغیرہ۔ پھرشرم نہیں آتی کہ غذائے جسمانی تواوزوں سے اچھی ہواورغذائے روحانی کوخراب کرے کھاؤ۔ سبحان ابتدا کیاا چھافیصلہ ہے۔ اور نماز کی مخسین میں بیر بھی واخل ہے کہ اذان وقت سے پہلے نہ ہو۔ بعض معجدوں میں رمضان میں ریجی ہوتا ہے کہ عشاء کی اذان وقت سے پہلے دے دیتے ہیں۔بس ملاں جی نے کھانا کھایا ورالندا کبر پکار دیا۔ بلک بعض معجدوں میں تو وقت ہے پہلے نماز بھی شروع کر دیتے ہیں زیادہ اہتمام اس کوہوتا ہے کہ تر اور کے سے جلدی فارغ ہوکر لیٹ جا کیں۔اور لیٹنے کو یوں جی جا ہتا ہے کہ پانی چیتے ہیں بےصد۔ ریخت غلطی ہے بعنی طبأ بھی مصر ہے۔ ذرا بیاس توروک کریانی بیس تو تراوت کے بھی بشاشت ہے ہوں اور قرآن بھی اچھی طرح سنسکیں۔ ہمت والوں نے نویہاں تک کیا ہے کہ امام ابوحنیفہ رحمتہ اللہ علیہ ۲۱ قرآن شریف ہررمضان میں ختم کرتے ہے۔ ایک ختم تو روز انہ دن کوکرتے اور ایک رات کواور ایک وہ جو ہمیشہ تر اوسے میں پڑھنے کامعمول تھا۔ غرض اس ایک مهیند میں اسمے قرآن شریف پڑھتے تھے تو دیکھوایک امتد کے بندے وہ بھی تو تھے۔ غرض تراوح کہ جومخصوص عبادت رمضان السبارک کی ہےاس کے وہ حفوق میں جو میں نے عرض کئے کہ ٹھیک وفت پر بھی ہوں ،رکوع جود بھی اچھی طرح ہو،تشہد بھی اچھی طرح ہوجلدی مت كروتل وت جواس ميل كي جائے وه بھي اچھي طرح ہو_

عبادت تلاوت قرآن

ایک عباوت رمضان المبارک کی تلاوت قرآن ہے اس کے حقوق میں سے یہ ہے کہ تھے کے

ماتھ پڑھا جائے لیکن اس کی عامت ہے کہ اول تو اس کا اہتمام ہی ہیں ہے۔ لیے کا طریقہ بی ہیں اس کے اور اگر طریقہ ہی سکے لیا تو اس پڑلی ہیں کرتے اور اگر عمل کرتے ہیں تو یاران طریقت پریشان کرتے ہیں۔ کوئی کہتا ہے قرآن پڑھتے ہو یو بی گہتا ہے قرآن پڑھتے ہو یو بی گہتا ہے قرآن پڑھتے ہو یا گاتے ہو کوئی کہتا ہے قرآن پڑھتے ہو یا گاتے ہو کوئی کہتا ہے قرآن پڑھتے ہو یا گاتے ہو کوئی کہتا ہے بیافاظ کو تو ڈمروڈ کر کیوں ادا کرتے ہو اس فرفر پڑھتے چلے جاؤ۔ نہیں معلوم یہ فرفر کیا صیف ہے کیا فتر ہے جو ماضی ہے اور جس کا مقصد فرار ہے بھٹی بھا گئے کے۔ مادو ہیں فرفر اس کو کہتے ہیں جہاں بھا گیا ہوا پڑھا جا تا ہو۔

ایک ہمارے دوست ہیں علیم صحب انہوں نے تراوی ہیں قرآن سانا چاہا گر پڑھتے ہے۔ چنا نچہ و لاالفسالیں کو جو بح مخرج سے اداکیا مقتری گڑ گئے کہ ہم ان کے پیچے تراوی نہ پڑھیں گے۔ چنا نچہ ان ہے جاروں کو دہاں ہے جدا ہونا پڑا۔ اب یہ مصیبت ہے کہ کوئی تھے کے ساتھ پڑھے کے ساتھ پڑھے تو لوگ پڑھنے ہیں دیتے ایک تلوق پریثان کرنے گئی ہے لینی بعضوں نے تو بیستا سنے یاد کردکھا ہے کہ و لاالف الین کو و لاالفالین پڑھتے ہیں بچھتے ہیں کہ آخر یہ ظاور فی ہا ہم مشاہم ہیں کہ و دولوں اصف سے ہیں پھر سے ہیں کہ آخر یہ ظاور فی باہم مشاہم ہیں کہ و دولوں اصف سے ہیں پھر دولوں میں مفائرت کیسی۔ ای طرح دوسروں نے ہیں ستانسنے یا دکرلیا ہے کہ و لاالف الین کو ۔۔۔ و اللہ الین پڑھتے ہیں اور داور ض کے لئے ش کو ڈرامونا سایڑھ دیا۔

اس موٹے باریک پر جمھے وہی حکایت یادا تی ہے کہ لکھنٹو میں تھے ایک مولوی صاحب
معقولی جوامامت بھی کرتے تھے۔ وہاں ایک مولوی مہدی تھی وہ بیان کرتے تھے کہ ان معقولی
مولوی صاحب کی بید عادت تھی کہ قریب قریب ہر جہری نماز کے اندر پہلی رکعت میں تو تبت
اور دوسری رکعت میں قبل ہوائند پڑھتے تھے اور وہ تھے تو مولوی محرقر آن پڑھتے تھے بہت غلط
۔ صاحب بعضاتو بہت ہی خلط پڑھتے جیں بعنی اکثر اہل علم کوبھی تھے کی جانب التفات نہیں۔

بریلی میں ایک صاحب من المجنة والناس کی بجائے من المجمات والنس پڑھتے سے آپ نے یہاں کا الف وہاں جالگا یا۔ یعنی والناس میں جوالف ہے اس کو گرا کرمن الجنة میں بڑھا دیا۔ ایساناس کیا۔ بس ان سے یہی کہنا جا ہے کہام ہے جند۔

عاملوں نے بھی توابیا بی ٹاس کیا ہے انکامعمول ہے کہ اگر کسی کا ٹاس کر تا ہوتو سورہ ٹاس اس طرح پڑھنے کو بتلاتے ہیں قس اعوذ برب الناس ٹاس ٹاس ملک الناس ٹاس ٹاس الدالناس ٹاس ٹاس ال غرض ناس كے لفظ كو ہر جگہ ٣ وفعہ پڑھنے كو كہتے ہيں تو معلوم ہوتا ہے قر آن شريف اردويس ہے كہ يہاں ناس كے وہي معنى ہيں جواردو ميں ناس كے ہوتے ہيں جيسے كہتے ہيں كہ فلانے كاناس جائے لينى ستياناس ہولا حول ولا قوق.

تو بعض لوگ قر آن شریف کی اس طرح کت بناتے ہیں جسے کی برھیانے بازی گشت بنائی مولوی مہدی کہنے اللہ ب کے بجائے ابی لحب برا ھے تھے۔
مولوی مہدی کہنے گئے کہ سنتے سنتے میرے کان پک گئے کہ جب دیکھوتیت پداالی لحب و تب کہنے کئے کہ ہب دیکھوتیت پداالی لحب و تب کہنے کئے کہ ہب دیکھوتیت پداالی لحب و تب کہنے گئے کہ ہب نے کہا کہ فات ہوں ہا اور شہرت ہے۔
گئے کہ ہی نے ایک روز جا کر ضلوت ہیں کہا کہ مولا نا آپ کی اتی برای تو شان ہا اور شہرت ہوں نے کہا کہا ناظ پڑھتا ہوں۔ انہوں نے کہا آور کیا پڑھوں کہایوں پڑھا تیجے ابی لہب اور کیا پڑھوں کہایوں پڑھا تیجے ابی لہب اور کیا پڑھوں کہایوں پڑھا آہت لہب اور کیا ہوت ہیں آئ کل لہب اور کیا ہوت ہیں آئ کل لہب اور کیا ہوت ہیں اور ہے تا ہا کہ دور ایک اللہ ایک ہوت ہیں آئ کل سے پڑھا کروں پکار کرنہ پڑھا کروں سبحان اللہ! کیا خوب مطلب مجھے۔ یہ مولوی ہیں آئ کل کے دانہوں نے تا ہوں ہیں اور ہے تو ہیں اور ہے تو ہیں اور ہے تو ہیں۔ انہوں نے مولوی ہیں آئ کل اور بی نہوں نے ہوت ہوت ہیں۔ انہوں نے کو کہدر ہے ہیں اور ہجے تو ہیں ہوں نے انہوں نے مولوں کہا کہ بھا کی اور ہی ہیں۔ انہوں نے کھول کر کہا کہ بھائی ابولہب ہیں حاصلی نہیں ہے ہوتی ہیں سنہوں نے کھول کر کہا کہ بھائی ابولہب ہیں حاصلی نہیں ہے ہوتے ہیں۔ انہوں نے کھول کر کہا کہ بھائی ابولہب ہیں حاصلی نہیں ہوتے ہے۔

الم بی و تا کہ دونے کہیں ان کی بچھیں آیا۔ یہ مولوی آ دی ہیں صاحب جوا تنا بھی نہیں سبحھ سے ہا ہوز پڑھا کرونے کہیں ساحب جوا تنا بھی نہیں سبحھ سے ہا ہوز پڑھا کہیں ساحب جوا تنا بھی نہیں سبحھ سے ہا ہون ہیں۔ انہوں نے میں اور کی میں اور کی ہوا کہ دونے کی میٹ کی کو کہ تو کی میٹ کی کو کہ تو کہ کہ دونے کی میٹ کی کو کہ تو کہ کہ دونے کی میٹ کی کو کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کو کہ کرد کی میٹ کی کو کو کہ کرد کی دونے کی کو کہ کو کہ کرد کی دونے کی کو کہ کو کہ کرد کی دونے کی کو کو کہ کرد کی دونے کی کو کو کو کہ کرد کی دونے کی کو کو کرد کی کو کو کرد کی کو کو کی کو کو کرد کی کو کو کو کرد کی کو کرد کی کو کرد کی کو کرد کی کو کرد گی کو کرد کی کو کرد گی کو کرد کرد کرد کرد کرد کرد کرد کرد کرد

آج کل مولوی ہوتا کیا مشکل ہے ایک آ دھ کی ب صرف ٹوکی پڑھ لی۔ پچوقر آن حدیث کا ترجہ دیکے لیا۔ بس مولوی بن گئے۔ چنا نچے جمیں ایک ایسے بی مولوی صاحب اب کے سفر میں طلح کنڈ اایک مقام ہے ضلع اعظم گڑھ میں۔ وہاں میرے ایک دوست میں تحصیلدار۔ میں ان کا بلایا ہوا وہاں گیا تھا۔ ایک صاحب جومولوی صاحب کہلاتے تھے ملئے آئے جوسب پچھ گزار تھے کنی تبجد گزار اور شاید مال گزار بھی ہوں لینی امیر بھی ہوں۔ عربھی بہت تھی مگر عمر بحرکسی نے ان کو خرابی قرآن مجید کے ترجمہ و کی شہ بتائی تھی۔ وہالا نکہ بعضوں کے لئے ترجمہ و کھنا حرام ہے کو خرابی قرآن مجید کے ترجمہ و کھنے کی شہ بتائی تھی۔ وہ لانکہ بعضوں کے لئے ترجمہ و کھنا حرام ہے اب لوگ ہمیں متعصب کہتے ہیں متعدد کہتے ہیں گرہم کسے اجازت دیدیں۔ کیا ان تجربوں پر خاک ڈال دیں اور ایک تجربہ بیں متعدد کہتے ہیں ایک تجربہ جھے اس وقت یا دآگیا۔ ہاں تو ان

صاحب نے پہلے ہے آیت پڑھی یا پہا المذین (موا الا تقولوا راعدا (اے ایمان والو) تم ہوگ (لفظ) راعنا مت کہا کرواور انظر تا کہد یا کرو) اوراس کا ترجمہ پڑھا کہا ہے ایمان والو! "راعنا" مت کہوں پھرآپ کیا گئے ہیں کہ تلاوت کرتے وقت کیار اعنا کالفظ چیوڑو یتا چاہے کے وقت کیار اعنا کالفظ چیوڑو یتا چاہے کے وقد اللہ تعالیٰ نے فرمایا ہے کہ مت کہوں اراعنا" یہ تواس آیت کا پیمطلب آپ سمجھے مجھے اس قدر حیرت ہوئی کہ جس کی انتہائیس کیونکہ اس سے پہلے ایسا عجیب مطلب میں نے کہی نہ مناتھ میں نے کہا کہ جاؤ ہم نہیں بتاتے کہ کیا مطلب ہے ۔ اس مطلب ہے کہ خبر دار جوتم نے کبی ترجمہ و کھے کر قرآن جب بھی پڑھا۔ اس آیت میں بیاری تلاوت کرتے رہواور تم راعنا بھی پڑھے رہوباتی جومطلب ہے اس آیت کا اسے تم جسے کوڑھ مغزوں کے سامنے کیا بیان کیا جائے اندھوں کے آگے رووے اپنی آئکھیں کھووے۔ اس خبر دار جو کبھی ترجمہ و کھوا۔

توحفرت وہ جاال سمجھاتھا کہ ابی اہب جو چیچے سے کہاتھ تویہ مطلب ہے کہ آ ہت پڑھا کرو۔انہوں نے کہامولوی صاحب ڈوب جاؤ کیاخوب مطلب سمجھے۔ لقعہ

تصحيح مخارج كى ابميت

تو حضرت بہ حالت ہورہ ہے فہم کی اور بے تو جہی کی جیسے چھوٹی کوموٹا کر کے پڑھ دیا تو بڑی طرح ہوگئی ایسے ہی بعض حروف کو بچھتے ہیں کہ اگر باریک کر کے پڑھ دیا۔ تو وال ہوگئ اوراگرموٹا کر کے پڑھ دیا تو ضاد ہوگیا بس اس برقناعت کررکھی ہے۔

غرض اول تو تصحیح خارج کی طلب بی نہیں اورا گرطلب بھی ہوئی کسی کو تو بنیس کہ مثل کریں۔

ہلکہ علاء سے تحقیق کرنے بیٹے جائیں کہ و لا الصالین کو لا الطالین پڑھناچا ہے یا و لا الدالین الدن والین الدا والفتاوی بی ضالین والین الدا والفت کی بی ضالین والین کا سوال کرتا ہے۔ حالا نکہ ش کھڑت ہے گام مجید بیس موجود ہے مثلاً و الصحی بی ضالین والین جب بحث جب ہوگی تو ولا صالین بی بیس فرض اس تسم کی نضول شخیق تو ہر خص کرتا ہے کریے تو فیق کسی کونیس ہوتی کہ مثل کے کہیں کچھ حاصل ہوتا ہے۔

ہوتی کہ مثل کرے کیونکہ یون تو مثل ہی ہے آتا ہے نزی تحقیق علمی ہے ہیں کچھ حاصل ہوتا ہے۔

ہوتی کہ مثل کرے کیونکہ یون تو مثل ہی ہے آتا ہے نزی تحقیق علمی ہے کہیں کچھ حاصل ہوتا ہے۔

ہوتی کہ مثل کرے کیونکہ یون تو مثل ہی جیا کہ ش کی صفحت کیا ہے۔ کہا میاں اگر میں نے صفحت ہیان ہے کسی طرح ایان بھی کردی تو اس سے کیا ہوتا ہے ش کی جیئت اور کیفیت جو ہے وہ نزے بیان سے کسی طرح مظاہر ہوجا گئی جب تک کہا سی کواوا کر کے بھی نہ بتایا جائے کھریے شعر پڑھا نہا ہیت برجت

گرمصور صورت آل دلستان خواہد کشید ہیں لیک جیرانم کہ نازش راچیاں خواہد کشید (اگرمصور نے اس محبوب کی نصور بتا بھی لی گمراس بات سے جیران ہوں کہ اسکے نازادا کی کس طرح تصویر بنائے گا)

سبحان الله! وہ جوالیک آن ہے اور اداہے وہ صفات نخارج کے بیان کردیئے ہے کیے معلوم ہوگی۔ وہ جوالیک لوج ہے وہ کیے معلوم ہوگا۔ وہ تو ساع ہے متعلق ہے۔

اب کی نے توجہ کرکے خیرمتن بھی کرنی تواب وہ نشانہ المامت ہے سب کا۔ مولانا فتح محمد صاحب اور کی تشریف لے ستے ۔ فرماتے ستے کہ میں نے جواول بار فجر کی نماز پڑھائی توبس قیامت ارے ہی کہ میں نے جواول بار فجر کی نماز پڑھائی کی۔ سنام بھیرتے ہی ایک صاحب نے اعتراض بڑا کہ وجوہ یو مند ناضوہ الی دبھا ناضوہ ہے۔ مولانا نے ہر چند فرمایا کئیس بھائی میں نے ایک ناظوۃ ۔ میں آپ نے دونوں جگہظ پڑھی ہے۔ مولانا نے ہر چند فرمایا کئیس بھائی میں نے ایک جگہظ پڑھی ہے۔ مولانا خیران کہ اب اے سمجھائی میں کیے۔ سمجھ جگہظ پڑھی ہے۔ آبیک جگرض کروہ نیس مانا۔ مولانا جیران کہ اب اے سمجھائی فرمایا کہ اچھا اب یہ تو وہ جوفن جو یہ جانتا ہو۔ مگر مولانا نے ایک عجیب طریقہ سے اے سمجھایا فرمایا کہ اچھا اب یہ تناؤ کہ میں نے دونوں جگدا یک سایڑ ھا تھا ہا بھے فرق تھا۔ کہا تھا تو فرق ۔ خیروہ ہٹ دھر منہیں تقا۔ ورشاس کا بھی انکارکر دیتا۔ فرمایا بس اتحایی فرق ہے شاورظ ہیں۔

اورصاحب پڑھے لکھے لوگ بھی تو کثرت ہے اس غلطی میں جتلا ہیں۔ اوراس قدراس پر جمود ہے کہ اگر کوئی اتباع کرتا جا ہے تو اس کے پیچھے پڑجاتے ہیں۔ پھر جب الل علم جو مسلح ہیں ان کی بیرحالت ہے تو عوام کوکیا کہا جائے۔

غرض پرستی

اک لئے حضرت امام غزالی رحمت الله علیے فرماتے ہیں اے عزیز اصحت کی کیا امیدر کھ سکتے ہو۔
جب تمہارے طبیب ہی بھار ہیں ہے ہی ہے واللہ بداستاناء بعض خودا طباء ہی بھار ہیں۔ بید شہیں کہنا
کہ مولوی زنا کرتے ہیں یا شراب چیتے ہیں لاحول والآقوق۔ گرا یک علت ہے وہ ہیں بھی اپنے
اندر پاتا ہوں۔ اس سے ہی خود بھی بری نہیں وہ علت کیا ہے؟ غرض پرتی اور غرض پرتی وہ چیز ہے کہ ۔
چوں غرض آمہ ہنر پوشیدہ شد ہی صدیجاب از دل بر موئے و بدہ شد
چوں وہ قاضی ہدل رشوت قرار ہی کے شناسد ظالم از مظلوم زار

(جب غرض آئی ہنر پوشیدہ ہوااورسینکڑوں پروہ دل کی طرف ہے آئکھوں برآ جا تا ہے جب قاصنی خو د فیصلہ کے وقت رشوت ہے دل خوش کرر ہا ہوتو ظالم اورمظلوم کی پہچان کس لمرح ممکن ہوشکتی ہے)

بیغرض وہ چیز ہے کہ جب حاکم دل میں بیٹھان لے کہ فلاں سے ایک ہزاررو پہیلوں گا مچر رودادمقدمہ کی اس کی آنکھوں میں الثی ہی نظر آئیگی ہے ہے شاسند ظالم ازمظلوم زار

مجروہ پنہیں ویکھے گا کہون ظالم ہےاور کون مظلوم ہے۔اس غرض نے ہم کو تباہ کررکھ ہے۔ وہ غرض مال ہے، جاہ ہے، شہرت اعتقاد ہے۔ بس اس نے تاس کردیا۔ الامن شاء الله منهم۔ بس بیدڈرتے ہیں کہ اگرحق کا اتباع کریں گے تو آ مدنی کم ہوجائے گی۔معتقد کم ہوجا کیں گے۔ میں کہتا ہوں کہاس حالت میں وہ ہمارے کیا معتقد ہیں خودا پنے معتقد ہوئے۔ جانچ تو یہی ہے کہ ہم انتاع حق کا کریں۔ چرد یکھیں کہ کون جمارے معتقدر ہتے ہیں کون ہیں وہ تو علماء سے یہ یو حصے ہیں کہ چدمی فر مایند علماء دین دریں مسئلہ۔اوریدالشے ان سے بوجھتے ہیں کہ چدمی فر مایند جہلاء دنیا کے ضاد با پیرخوا ندیا دواوا ندریں مسئلہا ندریں فتو کی۔ جب دیکھا کہ ولا الضالین کے سیح پڑھنے ہے جہلاء ناراض ہوتے ہیں اور بداعتقا دہوئے جاتے ہیں بس غلط بی پڑھنا شروع کردیا۔

اب دیکھتے علماء دین نے اینے فتویٰ سے رجوع کرلیا۔ میں کہتا ہوں فتویٰ بھی نہ ہو غیرت اورشرافت كيجي تو خلاف ب كهوام ب ذركرحل كاتباع كوچيور اجائة تحق كمقالب يم عوام كوجوتى يرمارة عابيد بدخوب مجه ليج كاكرحق كالتباع اى كونصيب موسكتاب جس كى بيشان مو لا يخافون لومة لانم (ملامت كرنيولاول كي ملامت تنبين وْرية) إلى اخدا عام بي تخلوق کوجهاڑومارے _بس آ زاد ہوکرر ہے۔ ہزرگوں کوتو بیہاں تک آ زادی حاصل تھی اور یہی ہونی جا ہیے _ ضق میگوید که خسروبت برتی می کند 🚓 آرےآرے می کند باخلق وعالم کارنیست مخلوق اگر کیے کہتم بت بری کرتے ہوتو جوآ زادنیں ہیں وہتو اس قول کی تر دیدکریں گے کہ نہیں صاحب میں بت برتی نہیں کرتا۔میرےایے عقیدے نہیں ہیں اب جیمے کرللو ہو کروجا ہوں ک اور جوآزاد ہیں وہ کس کے کہنے کی پچھ پروائے کریں گے۔ بلکے صاف کہددیں گے۔ آرے آرے کی تم باخلق وعالم کارنبیت

(ہاں ہاں مس كرتا موں مخلوق اور ونيا ہے كوئى كامنبيں ہے)

ہاں ہم بت پری کرتے ہیں جاؤ کرلو ہمارا کیا کرتے ہو۔ کس کے باپ کے غلام ہیں نوکر ہیں جوڈریس کے باپ کے غلام ہیں نوکر ہیں جوڈریس کس بت پرست ہی سب ہیں جوڈریس کس بت پرست ہی سب کے سب چیوڑ دو ہمیں۔اور حضرت میں خدا کی تشم کھا کر کہتا ہوں کہتی ہیں وہ اڑ ہے کہ اگر کوئی مختص حق کو قبول کر کے استغناء برتے اور یہ کہددے۔

ہرکہ خواہدگو بیاؤ ہرکہ خواہد گوہرو ہے دارو کیرو صاحب ودربال دریں درگاہ نیست (جس کا دل چاہے آئے جس کا دل چاہے شآئے ، ہمارے پاس کوئی دربان تو نہیں ہے)

تو ہڑے ہڑے ہر کش اس کے دروازے پرناک رکڑیں گے گردل کے اندر دغدغہ نہ ہوکہ سب چھوڑ دیں گے تو ہائے کیا ہوگا لاحول ولا تو قامخلق سے ڈرکرجن کوچھوڑ دیتا نہایت ہی اوچھی بات ہا ورخصوس آمدنی کے لئے۔عارف شیرازی فرماتے ہیں۔

حيف باشدول دانا كدمشوش باشد

وائش مند کا فلب روٹیوں کے لئے مشوق ہوا افسوں کی بات ہاں کا تو یہ شرب ہوتا جا ہے۔

موصد چہ ہر پائے رہزی مرش جہ چہ فولاد ہندی ہی برمرش

امید وہرائٹ نباشد زکس جہ ہمیں ست بنیاد توحید وبس

(مؤصد کے پاؤں پراگر سونے کا ڈھیرلگا دیا جائے یا اس کے سر پرتگوار رکھ دو، ان کوتو نہ

کس سے امید ہوتی ہے نہ کس سے خوف ہوتا ہے اور بہی توحید کی بنیاد ہے)

اور حفرت یہ توایک خاص مسئلہ کے متعلق گفتگوتھی ۔ ایسے بی تمام احکام اور اعمال میں ماہرین

کوچا ہے کہ مستقل رہیں ۔ جہلاء کی مرض کے حق کے خلاف بھی اتباع نہ کریں اگر سب ایس کرنے

گیس تو جہلاء کا بھی حوصلہ نہ بڑھے۔ اور جہلاء کو بھی چا ہے کہ ان سے اپنے مرض کے اتباع کے ختھر

گیس تو جہلاء کا بھی حوصلہ نہ بڑھے۔ اور جہلاء کو بھی چا ہے کہ ان سے اپنے مرض کے اتباع کے ختھر

شد ہیں ۔ تو اے عوام اس مولوی کوچھوڑ و جوتم ہے ڈرکر تہاران بھر خیال ہوگیا ہے۔ وہ تو معلوم ہوتا ہے

شد ہیں ۔ تو اے عوام اس مولوی کوچھوڑ و جوتم ہے ڈرکر تہاران نظر ہے خود بی گر جائے گا۔

یہ توان عوام کا ذکرتھا جوعلماء ہے تعلق رکھتے ہیں۔ گران ہے اپنے نراق کے اتباع کا انظار کرتے ہیں۔ کرتے ہیں۔ کرتے ہیں۔

انتاع كىضرورت

بعضے عوام وہ ہیں کہ علاء سے تعلق ہی نہیں رکھتے ہیاوگ کتا ہیں اور تر جے دیکھ کرایئے آپ

کوعلماء ہے مستغنی سیجھنے لگے ہیں کہ بدوں ماہر کے بتائے ان تک کسی کی نظر پہنچ ہی نہیں عتی۔ اس واسطے ہرامر میں شیخ اور ماہر کے اتباع کی حاجت ہے کیونکہ ایک چیز بظاہر خیر محض نظر آتی ہے لیکن ماہراس سے منع کر دیتا ہے کیوں؟ اس لیے کہ وہ مفھی ہے الی الشراوراس شر تک غیر ماہر کی نظر فی الحال وسیجے ہے قاصر ہے۔

رسول کائی واقعہ ہے ایک مثال عرض کرتا ہوں۔ ایک استفتاء میرے پاس آیا وہ مثال ایک مثال مسلم کی تحقیق کے حمن میں مجھے پیش آئی۔ وہ مسئلہ تو خیرسب کومعلوم ہی ہے لیکن مجھے اس کی مثال عرض کرنا ہے کہ ہرفن میں بہت ی باریک با تنمی الی ہوتی ہے جنہیں اہر ہی ہجھتا ہے غیر ماہر ہیں ہجھ سکتا۔ چنا نچے جو بات میں عرض کروں گاوہ اس سے پہلے شاید کسی کے ذہمن میں بھی ندا تی ہوگ۔ ایک محفیات المہارک کا ایک محفی نے استفتا کیا کہ میرے کھر میں بچھ ایسا سلمدہ کہ جب رمضان المہارک کا مہید قریب آتا ہے تو بچہ پیدا ہو جاتا ہے اور روز ہے دودھ، چلہ چھٹی میں قضا ہو جاتے ہیں بچرسال مہید قریب آتا ہے تو بچہ پیدا ہو جاتا ہے اور روز ہے دودھ، چلہ چھٹی میں قضا ہو جاتے ہیں بچرسال المہارک کا اس کیا کرے جب قضاروز ہے بیس رکھ کی تو کیا فدید دیدے۔

صوم کا پیدا نہ ہوگا کہیں گے کہ فدیہ تو وے ہی چکے ہیں لہٰذا مجھے یہ لکھٹا پڑا کہ جائز نہیں فدیہ دینا جب تک صحت وقوت سے ناامید ہی نہ ہوجائے تو دیکھئے یہاں فدیہ طاہراً اہل علم کے نز دیک بھی فخر ہے لیکن کتنے بڑے شرطیم کوسٹارم تھا۔ تو میں نے بیدوا قعد مثال کے طور پر پیش کیا۔

بہرحال عوام کی خواہ کوئی فتم ہوسب کے ذمہ حق سے ہے کہ اپنے کوعلاء کا تابع بنادیں نہ ان سے موافقت کی تو تع رکھیں نہ ان سے مستغنی ہوں اور نہ کی حال میں ان سے مزاحمت کریں۔ پس ان کا ادب میہ ہے کہ دو مزاحمت نہ کریں اور تمہاراا دب میہ ہے کہ اگر وہ مزاحمت کریں تو تم متاثر نہ ہو۔ تم تو تا ئب ہو۔ جناب رسول مقبول صلی اللہ علیہ وسلم کے۔

تعور ی دیرے گئے وجدان کی طرف نظر کر کے دیکھو! اگر جناب رسول مقبول سلی اللہ علیہ وسلم ہے بھی عوام مزاحمت کرتے۔ تو کیاحضور سلی ابند علیہ وسلم بھی ان کی خاطر سے موافقت کر لیتے۔ پھر یا تو ٹائب ہونے کی حیثیت سے تم بھی وہی کر وجوحضور سلی اللہ علیہ وسلم کرتے ہتے ورنہ نیا بت کا کام چھوڑو۔

یاکمن ایا پیل بانال دوئ کہ ایناکن خانہ برانداز پیل (یاتو فیلبان سے دوئی مت کرنایا پھراس کے لئے دوازہ بہت برایناؤ تا کہ وہ عہاتی کے داخل ہو) واقع یا کمن ہا پیل بانال دوئی ہی ایناکن خانہ برانداز پیل یا کمن ہا پیل بانال دوئی ہی یا بناکن خانہ برانداز پیل یا کمش برچہرہ نیل عاشقی ہی یا فرد شوجامہ تقوی بہت این کمش برچہرہ نیل ایا تو فیلبان سے دوئی مت کرنا یا پھراس کے لئے دروازہ بہت برا بناؤ تا کہ وہ مع ہاتھی کے داخل ہو ... یا تو اپنے چہرہ پر عاشقوں کی ملامت نداگا یا پھر جام تقوی کو دریا نے عشق میں ترکردو لیمنی زام دیک کے بجائے عاشق حق بنو)

تواس پر بیسب گفتگو بڑھ گئتھی کہ ماہرین سے مزاحت کرتے ہیں غیر ماہرین، سوائے ماہرین! تم ان کی مزاحمت کی پچھ پروا نہ کرو۔ حق بات پڑمل کروامقد پرتو کل کرکے بیسب کلام دواوضا پر بڑھ کیا تھا۔ تو غرض تلاوت قرآن مجید میں تو بیکوتا ہیاں ہیں۔

بعض کوتا ہیاں قرآن مجید کے متعلق اور تئم کی ہیں۔ چنا نچے بعضے کوگ قرآن مجید کو بے وضو مجھوتے ہیں یہ بھی حرام ہے۔ بعضے رحل قرآن یا کتاب پرر کھ دیتے ہیں بیا کثر میں دیکھتا ہوں طالب عمول کو کہ اس کی سمجھ پروا ہی نہیں کرتے۔ نقتہا ء نے تو یہاں تک ادب کمحوظ رکھا ہے کہ رو نیوں پر برتن رکھنے کی بھی ممانعت کی ہے کہتے ہیں کہ رونی کے اوپر برتن رکھنانہیں چاہیئے کیونکہ سے رزق کی ہے اولی ہے جب روٹی کا بیاد ہے تو قرآن مجید کا تو بہت ہی بڑااوب چاہیئے۔ اعت کا ف کی حقیقت

ابرہ کمیااعتکاف سواس کی روح ہے ضوت اور خلوت کی حقیقت ہے ترک تعلقات ۔ خود نفس رمضان میں مقتصیٰ موجود ہے ترک تعلقات کا لیکن ترک تعلقات کے بھی معنی بجھ لیجئے ترک سے مراد تقلیل ہے بعنی جو تعلق غیر ضروری ہوئے ہی ماترک معنر نہ ہواس تعلق کو ترک کروے۔ چاہے وہ ضرر دنیا کا ہوچا ہے آخرت کا اور جو تعلق ضروری ہواس کو ترک نہ کرے کیونکہ جو تعلق ایسا ہے وہ معنز ہیں۔ مثلاً اپنے کمانے کھانے کے لئے دنیا میں مشغول ہوتا اور اپنی بی دنیا کا تعلق نہیں بلکہ جو تعلق ہیں۔ جو تعلق دوسرے کی دنیا کا تعلق نہیں۔ جو تعلق دوسرے کی دنیا کا بھی ہوجس کا نفقہ اس کے فیصے واجب ہے دہ تعلق بھی معنز ہیں۔

میں نے بار ہا کہا ہے اوراب پھر بانگ دہل کے ساتھ ڈینے کی چوٹ کہتا ہوں کہ اگرکوئی فخض تنجز ابواور وہ صبح ہے شام تک پکارتا ہے۔ لےلوکد و لےلوتز کاری یا کوئی پھیری والا دن بھر لے لوسوئی اور لےلودھا گا کہتا پھرے اس کے قلب کے اندرڈ رہ برابرظلمت پیدا نہ ہوگی۔استے برنے اور لیے چوڑ ہے کام اوراتنی صداؤں اورنداؤں ہے بھی اس کو مطلق ضرر نہ ہوگا۔

اورایک فخص ہے جس کو بولنے کی ضرورت نہیں ہے۔ بالکل فارغ بیٹا ہے وہ کسی سے صرف اتنانہ پوچھ لے کہ تہہیں خبر ہے زید کہاں ہے جب کہ زید سے اس کو پچھ تعلق نہ ہو یا بلاضرورت بیدوریافت کرنے کہ زید کر آئے گا جس شم کھا کر کہتا ہوں کہ جو اس سے ظلمت پیدا ہوگی وہ اس سے نہیں ہوگا۔ اب اس سے زیاوہ جس کیادلیل پیش کرسکتا ہوں کہ شم کھار باہوں۔ اگر یقین نہ ہوخو ہمیز پیدا کر کے دکھے لو۔ واللہ! آٹھوں سے نظرا جائےگا کہ قلب کھار باہوں۔ اگر یقین نہ ہوخو ہمیز پیدا کر کے دکھے لو۔ واللہ! آٹھوں سے نظرا جائےگا کہ قلب کا تاس ہوگیا۔ فلمت نے احاط کرایا۔ نورانیت پر باوہوگئی۔ انشرائ غارت ہوگیا۔ وہ جوایک تعلق مع اللہ پیدا ہوگیا تھا اس کے درمیان ایک تجاب قائم ہوگیا۔ اس واسطے کہ من حسن اسلام مع اللہ پیدا ہوگیا تھا اس کے درمیان ایک تجاب قائم ہوگیا۔ اس واسطے کہ من حسن اسلام فخص کے ایک فضول جملہ نے اسلام کی زینت کو۔ اسلام کے نورکو پر بادکرویا۔ فخص کے ایک فضول جملہ نے اسلام کی زینت کو۔ اسلام کے نورکو پر بادکرویا۔ تو وجہ کیا کہ اس فحص کو ضرورت تھی کہ لے لوکدو، لے لوٹر کا ری۔ اسلام کے اسلام کی نہا کہ اس ابی داؤ دہاں۔ اورائی کو خورکو کا اس ابی داؤ دہاں۔ اس

بس اب اس میں فرق بیہ کے داہدان خنگ تو ضروریات کورک کرتے ہیں اور حققین صوفیاء
غیر ضروریات کو جم نے ویکھا ہے کا یک صاحب وظیفہ پڑھ رہے ہیں۔ اب ان سے کوئی ضروری
بات پوچھنا جاہتا ہے تو ہوں ہوں کرتے ہیں۔ چاروں طرف اشارے کرتے ہیں۔ سر بلاتے ہیں۔
ہاتھ چلاتے ہیں۔ آنکھوں سے گھورتے ہیں۔ اب جا ہے کوئی سسرا سمجھے یا نہ سمجھے یا جوچا ہے بچھ لے
گر بولنے کے بیں۔ کیونکہ جس نے عمل بتایا ہے اس نے درمیان میں بولنے سے منع کرویا ہے۔
ارے الو ضرورت کے موقع پر تماز تک بیں تو بولتا جائز ہے گونماز باطل ہوجا کیگی ۔ بلکہ بعض صورتوں
میں واجب ہے بیتیراوظیفہ کہاں کا نکلا ہے جونماز سے بھی بڑھ گیا۔ جمافت اور جہالت اور پھوئیس۔
صرورت فی میں واجب ہے بیتیراوظیفہ کہاں کا نکلا ہے جونماز سے بھی بڑھ گیا۔ جمافت اور جہالت اور پھوئیس۔

حضرت یہاں ہے تابت ہوتی ہے ضرورت فقد حضرت جریج ایک عابد تھے امم سابقہ کے۔ ان کا قصہ جناب رسول مقبول صلی الله علیه وسلم نے نقل فر مایا ہے کہ وہ کسی صومعہ میں رہ کرعباوت کیا کرتے تھے ایک دن ان کی ماں آئی اور صومعہ ہے باہر پکارنے لگی۔ارے جریج !ارے جریج ! جریج ان بزرگ کا نام تھا۔ وہ اس وقت نغلیں پڑھ رہے تھے۔ بیچارے بڑے گھبرائے کہ اللہ کیا کروں کیا نہ کروں۔ادھرتو مال ہے اگر جواب نہیں دیتا تو مال کی دل فیمنی ہوتی ہے اور مال کا دل تو ژنا گناه ہے ادھر نماز ہے اگر بول ہوں تو نماز جاتی ہے اور نماز کا تو ژنا میں گناہ ہے۔ بیچارے فقیہ نہ تقے ورت يريشان ندموتے خودحضور ملى التدعليد وللم فرمايا بالو كان فقيها الاجاب امة. بالآخران كي مجه ميں يبي آيا كه مال كاحق القدكے برابز بيس موسكتا۔ مال كادل تو ژناا تنابرانبيس جتنا خدا کی نماز کا توڑ نالہٰ ذاوہ نہ یو لے اور نماز میں مشغول رہے۔ جب دیر تک کوئی جواب نہ ملاتو مال غصبہ میں بید بددعا دیکر چلی کئی کہ اللہ ! جیسا بیمبرے بکار نے سے نبیس بولا اور مجھے پریشان کیا کہ میں تواتنی دور ہے اس کے دیکھنے کے اشتیاق ہے آئی تھی اور اس نے میری بات بھی نہ ہوچھی اس طرح تواہے ہریشان لجيئيو ااوربه بددعادي كما اعالقداات موت ندآئ جبتك كربيد تذبول كامندنده كمجد ل مجعلی مانس نے کوسامجی تو غضب کا۔ آخرتج بے کا تھی۔ مجھتی تھی کہ تقدیں ہی کی وجہ ہے اس نے جھے ہے بے رخی کی ہے۔ خدا کرے تقدی ہی اس کا ملیا میٹ ہوجس پرا ہے بڑا نا زہے۔ بس حضرت! چونکه مال کاحق تصاس وقت واقع میں که نماز میں بھی بولتا بس اس کی وعاقبول __ لم أجد الحديث في "موسوعة أطراف الحديث النبوى الشريف"

ہوگئ۔ وہاں ایک عورت تھی۔ قریب کے گاؤں میں رہتی تھی اور دیہا تن تھی آوارہ ہوگئ تھی۔ اس کے ایک بچہ پیدا ہوا حرام کا ۔ لوگوں نے ہو چھا کہ یہ س کا ہے؟ اس نے سمجھا کہ اگراور کی کا نام لیتی ہوں تو جھاڑا پڑھتا ہے ہو چھے بچھ ، لاگواہ لاؤ ، شہادت دو ، یہ دہ سو بھیڑے ۔ ایسے کا نام کیوں نہ لے دوں جو کوئی جھٹڑا ہی نہ بھیلے۔ جوسب سے الگ تھلگ رہتا ہواور جس کا کوئی حامی اور مددگارہی نہ ہوتا کہ جوکوئی جھٹڑا ہی نہ بھیلے۔ جوسب سے الگ تھلگ رہتا ہواور جس کا کوئی حامی اور مددگارہی نہ ہوتا کہ جلدی سے معاملہ دب و با جائے زیادہ تضیحتی نہ ہو۔ بس جناب اس گرھی نے کیا کیا ہے چارے جلدی ہے معاملہ دب و با جائے زیادہ تضیحتی نہ ہو۔ بس جناب اس گرھی نے کیا کیا ہے چارے جہتے کی انام لیے ہے گراؤ ہوں۔

لوگوں کی بیرعادت توہے ہی کہ بلا تحقیق روایات کومعتبر تمجھ لینتے ہیں چنانچہ اب بھی و کھے لیجئے۔ بالخضوص اس معامد میں تو تحقیق جانے ہی نہیں۔بس جنا ب لوگ اس عورت کو لے کراس ہیجارے عابد کے اوپر جاچڑ ھے کہ تو ژ ڈ الواس کی عمبادت خانہ۔اس نے ہمیں اسنے دنوں دھو کے میں رکھا۔خلوت خانەتوژىچوژ زېردى اس كونكالا اور كىنے كىگے كيوں ئالائق تىرى يەحركتىں _ ئىچىم بېچىقە تىنچے كەبرا عابد ہے بڑازام ہے۔ تیرے میا ممال وہ تمجھ کیا کہ ماں کی بدد عاقبول ہوگئے۔ بیسب ای کا نتیجہے۔ حمر حضرت! آخر مقبول بندہ تھا۔بس فضل النی کے نازیر، کیونکہ اس طریق میں اگر کوئی کرتا بھی ہے تو اینے درجہ سے تب بھی بالکل نہیں گرجا تا۔ گو بادشاہ بادشا بی ہےمعزول ہوکروزارت یرآ جائے مگروہ ٹاز اوروہ و ماغ شاہی کا پھربھی رہتا ہے لڑکے سے بوچھا بتلا رے تیرا باپ کون ہے؟ اس نے کہ فلانا چرواہا ہے جوجنگل میں فلاں جگدر ہتا ہے اب تولوگ بڑے معتقد ہوئے اور بڑے گھبرائے ۔ قدم چوہنے لگے کہ مقد حضور ہماری خطامعان فرمادیں۔ لایئے ہم آپ کا عبادت خانہ سونے کا بنادیں ، جاندی کا بنادیں انہوں نے کہا بھائی میراتو وہی گوندی کا حیونپر ا ا تجما ہے۔ جھے سونے چاندی کا مکان نہیں چاہیے جھے تواپنے ای جھونیز ہے میں پڑار ہے دو۔ اس كوفر ما كرحضور فرمات بين لوكان فقيها الاجاب احدار و فقيد بوتا توايي ماس کو جواب دیتا۔اورٹمازکوتو ژ دیتا۔اب بیاکہ یابیتکم عام ہےخواہ فرض نماز ہویانفل یا خاص ہے فل بی کے ساتھ۔ اس کافقہانے فیصلہ کیا ہے جبیا اس واقعہ میں ایک فیرفقیہہ سے بے حرکت صادر ہوئی ہے ۔ایسے ہی اس حدیث کوئ کراگر کوئی غیر نقیہ ہرجگہ بولنے لگے برو برخواہ فرض نماز ہو یانفل تو بیکام فقہا مکا تھا کہ انہوں نے اس کو طے کردیا کہ بیٹکم خاص ہے نوافل کے ساتھ ۔

له أحد الحديث في "موسوعة أطراف الحديث البوي الشريف"

اس شرط سے کہ مال باپ کوخبر نہ ہو کہ بینماز پڑھ رہا ہے۔ فرض نماز کے دوران میں اگر ماں بھی بولے تو جواب نہ دے۔ ہال اضطراری احوال اس سے مشتنیٰ جیں۔ جیسے کوئی اندھا کنوئیں میں گرتا ہو سجان اللہ! مجھے تو فقہاء کی توبت اجتہاد بیاور ملکہ استفاط پر بیشعر آجاتے ہیں۔ واقعی حضرت دنیا کی مجھ اور ہے دین کی اور ہے۔

نہ ہرکہ چرہ برافروشت ولبری وائد ہی نہ ہرکہ آئینہ، واردسکندری وائد ہزاد کنتہ باریک تروموای جاست ہی نہ ہرکہ سربتر اشد قلندری وائد ہزاد کنتہ باریک تروموای جاست ہی نہ ہرکہ سربتر اشد قلندری وائد (جس نے اپنا چرہ روش کیا، حسن کا نکھار کیا، ضروری نہیں کہ وہ ولبری بھی جانتا ہوں اور جوفض آئیندر کھتا ہے ضروری نہیں کہ وہ سکندری یعنی آ واب شاہی بھی جانتا ہو ہزار کلتہ بال سے زیادہ باریک ہے اس راہ میں پرسر کے منڈ انے والے کے لئے ضروری نہیں کہ وہ قلندری بھی جانتا ہو)

حقیقت میں بیموزای ہے کہ کما ہیں پڑھ لیں اور فقیہ ہو گئے۔ کما ہیں پڑھنے سے کیا ہوتا ہے۔

وعظ وفتو کی کے اہل

نقیدوہ فخص ہے جس میں خداداد ملکہ اجتہاد کا ہو۔ جو مخص ایک مسئلہ بھی نہ جاتا ہو وہ نقیہ ہوسکتا ہے اور جو مخص ایک لا کھ مسئلے جاتا ہو وہ نقیہ نہیں ہوسکتا۔ تفقہ اور چیز ہے اور صبط جزئیات اور چیز ہے اور جی وجہ ہے کہ علماء نے فیصلہ کردیا ہے اور علماء نے کیا فیصلہ کیا ہے خود حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فیصلہ فر مادیا ہے کہ وعظ کہ کا اہل ہر مخص نہیں ہے کو فکہ ہر منصب کا وہ کی اہل ہوسکتا علیہ وسلم نے فیصلہ فر مادیا ہے کہ وعظ کہ کا اہل ہر مخص نہیں ہے کو فکہ ہر منصب کا وہ کی اہل ہوسکتا ہے جواس منصب کے شراکط کا جامع ہو۔ یہ تھوڑا ہی ہے کہ ایک آدھ کتاب دیکھی اور واعظ بن مجھے راور جاکر منبر سنجال لیا۔ حضرت اس منبر کی کا حاصل کرنا کوئی آسان کا منہیں ہے۔ یہ منصب نبوت ہے جوانبیا و علیہ مالسلام کے سیچ وارث ہیں وہ بی اس کے اہل ہیں)۔

عبدالرحمٰن خال مساحب مرحوم ما لک مطبع نظامی کے مطبع جیں ایک ایسے ہی صاحب کا خطآیا
لکھا تھا کہ میرے پاس شرح وقایداردو کی تو ہاس سے فتو کی لکھ لیتا ہوں۔ بیشرح وقاید کی خرابی ہے
اور فلانی کتاب فلال فن کی ہے۔ جس کی وجہ سے لوگوں کو بہت فیض پہنچ رہا ہے مگر ہاں لوگ ایک
فیض سے محروم ہیں لیعنی طب سے۔اب اس کو بھی جاری کرنا چا ہتا ہوں کی فیض جاری ہے ایک یہ بھی جاری کرنا چا ہتا ہوں کی فیض جاری کر دوں۔
مجی جاری کرنا چا ہے تھے۔لکھا تھا کہ طب احسانی اردو کی بھیج دوتا کہ یہ فیض بھی جاری کر دوں۔

اب بیتھوڑا ہی ہے کہ کماب دیمھی اور وعظ کہنے لگے کماب دیمھی اور نسخہ لکھنے لگے اس واسطح حضور سلى الله عديدو سلم في فيصله فرمادياب الايقص الاامير او مامور او مختال ليعنى وعظ تین فخص کہتے ہیں۔ایک حاکم ، دوسرے وہ جو مامور ہولینی جس کوحاکم اسلام نے اس کام کیلیے مقرر کیا ہو یا الل حل وعقد نے جوجا کم کوجھی حاکم بناتے ہیں۔ یہ الل علم کے بچھنے کی بات ہے کہ الل حل وعقداصل ہیں اور حاکم ان کا ٹائب ہے بیعنی جوالل الرائے ہوں مثلاً علماء مشائخ کیونکہ میں دین کے سمجھ دارلوگ ہیں۔وہ جس کووعظ کہنے کی اجازت دیدیں یاان کا نائب جوامبرالمومنین ہے و ہ کسی کو مامور کر دے۔ تو یا خود حاکم یا جس کو حاکم یا بسے علما متنق ہو کر مامور کر دیں وہی وعظ کہ سکتا ہے۔ تبسرااگر کے تو وہ متکبر ہے معلوم ہوتا ہے دنیا کا طالب ہے۔ جا ہتا ہے کہ پچھرو پیدکوئی رقم ہاتھ آ جائے۔اے جائز نہیں وعظ کہتا۔

ای طرح فتوی لکھتا ہر مخص کا کام نہیں جا ہے کتا ہیں بھی ختم ہو پکی ہوں۔ ہاں اپنے بزرگوں کے سامنے کسی نے بیکام کیا ہوا دران بزرگوں نے پیند بھی کیا ہواس کوالبت جائز ہے۔ یوں پھر بھی کوئی لغزش یا نظطی ہوجائے مجمعی مجھاروہ اور بات ہےوہ بشریت ہے۔تو پیخص ہے اہل فتو ک کھنے کا جیسے مطب کرنے کا وہی الل ہوتا ہے جس نے کسی ماہراورتجر بدکار طبیب کے مطب میں نسخے لکے لکے کرمریضوں کا عذاج کیا ہواور اس کے عذاج کواس طبیب نے پسند کیا ہو۔اس کے نسخ جواب دکھلائے جانے ہیں طبیبوں کوتو اگر کوئی معاندنہ ہوگا تووہ کیے گا کہ با قاعد وتسخہ ہے۔

كتاب اورصحبت كااثر اورفرق

توجنا بمحض كمابوس ميس كياركها بيزى كماب بني كاتوبياثر موتاب كه كمه معظمه ميس أيك مواوی صاحب عظیم آباد پٹنے کے ج کوآئے تھے۔ان کے باس ایک کتاب تھی جس میں جاج کے لئے ہدایات تھیں اے دیکھے دیکھے کرسارے کام کرتے تنے وہاں ایک شخص تھاجعفرآ فندی۔ آگرہ کار بے والا تھا۔ اے ہندوستا نیوں سے بہت محبت تھی۔ جس ہندوستانی سے بہت محبت تھی جس ہندوست نی کود کھتا اس سے ملتا۔ چنانجہ ان مولوی صاحب ہے بھی ملا۔ علیک سلیک کی ۔مولوی صاحب نے اس کتاب میں کہیں بیلکھادیکھا تھا کہ ذراما تکنے والوں سے بیچے رہنا۔ بہت لوگ جب قبہ بہنے ہوئے چرتے ہیں مگر ہوتے ہیں سائل۔ بڑے بڑے شاندار لوگ گدا گری کا پیشہ کرتے <u>أ</u> مسند أحمد ۲۳۱٬۲۳۲٬۳۵۱۸۳۲۲ ۲۹٬۳۵٬۳۳۱٬۸۳۲٬۸۳۳٬۸۳۳٬۵۳۳٬۶۳۳٬۵۳۳٬۶۳۳٬۵۳۳٬۵۳۳٬۸۳۳٬۸۳۳٬۸۳۳٬۸۳۳٬۸۳۳٬۸۳۳٬

میں مولوی صاحب کو بدگانی ہوئی کہ یہ بھی کوئی سائل معلوم ہوتا ہے۔ ضرور پکھ مانگے گا۔ آپ نے بہت بے رفی سے پوچھا پکھ کہنا ہے بیخض جعفر بڑا سخر وقع سمجھ کیا کہ انہوں نے مجھے سائل سمجھا۔

ہاتھ جوڑ کرعرض کیا حضور پکھ عنایت ہوجائے۔ بہت حاجت مند ہوں بہت غریب ہوں۔ حضو رچار وقت کا فاقہ ہو چکا ہے۔ مولوی صاحب نے ڈانٹ کرکہا ہے جیا، بے شرم!ایبا عمدہ لباس اور انتا لمباچونہ بھی کا تھے شرم نہیں آئی۔ کہنا ہے چاروفت کے فاقہ سے ہوں جھوٹا کہیں کا۔ دور ہو یہاں ہے، بے حیا کہن کر جمیل ما نااور چلا گیا۔ بڑا کا۔ دور ہو یہاں ہے، بے حیا کہن کا فرض خوب ہی ڈائٹا۔ گراس نے برانہیں ما نااور چلا گیا۔ بڑا می خوش مزاج تھی کتاب ہے۔ کیے موقعوں پرکام دیتی ہی خوش مزاج کے سے سے موقعوں پرکام دیتی ہی خوش مزاج تھا۔ بڑا موقع پرکتاب کام آئی۔ بیجان اللہ!

ا یک د فعد مولوی صاحب میرے پاس بیٹھے تھے ۔جعفراؔ فندی جووہاں ہوکر گزرے تو میں ان کی تعظیم کے لئے کھڑا ہو کیا۔اب تو مولوی صاحب بڑے پریشان کہ بیتو کوئی بڑا شخص معلوم ہوتا ہے وہ آ کرمیرے پاس بیٹھ گئے کہنے لیکے صاحب مجھے ان مولوی صاحب ہے بوی شکایت ہے۔ پس نے ان سے کہاتھا کہ جمجھے جارونت کا فاقہ ہے۔ اس وقت ان کی جیب میں رو یے بھی بول رہے تھے اگریہ چارا نے مجھے دیدیتے توان کا کیا بگڑ جاتا۔ مجھےان سے بڑی ٹکایت ہے۔ مولوی صاحب بے جارے ذلت کے مارے دبے جاویں۔شرم کے مارے کئے جاویں کہتے لگے للد! معاف فرماد بجئے میں نے سخت متاخی کی میں نے بہجانانہیں تھا۔ واللہ میں نے آپ کوسائل سمجماتھا۔ وہ بولے کہ مولوی صاحب بیاتو بتائے آب نے جھے سائل کیے بجھ لیا۔ آخر آپ نے کیاعلامت مجھ میں سائل ہونے کی دیکھی کہاصاحب! میں نے کتاب میں پڑھا تھا کہ بوے بڑے شاندارلوگ مکہ میں بھیک ما تکتے ہیں۔ وہ بولے! مولوی صاحب! کچھ عقل ہے بھی تو کام لیا ہوتا۔صاحب زی کتاب کے بحروے تو نہیں رہنا جا ہے کہا کتاب میں بھی دیکھتا تھا اور صاحب تح می بڑے بڑے عبا اور قبا والے یہاں پر بھیک ما تکتے ہوئے خود بھی و کھے لئے تھے۔انہوں نے پوچھا مولوی صاحب ایرتو بتاؤتم نے جن کو بھیک مائلتے دیکھا وہ عمامہ دالے تھے پاکسی ترکی ٹو بی والے کو بھی کہیں بھیک مانٹکتے ہوئے تم نے دیکھا کہا۔ ہاں صاحب واقعی سب عمامہ دالے ہی تھے تركی ٹو پی والاتو ان بھيك مائنگنے والوں ميں كوئي نہيں تھا۔جعفرنے كہا كەميں تو تركی ٹو بی ہيئے تھا۔ سوبتلائے كتاب من بدكمال كلما تھا كەصرف ممامدوالے بى بحيك ماتنتے بيں۔ تركى تو في والے نہیں ما نگئے۔ توصاحب! نری کتاب سے فن حاصل کرنے کا توبہ نتیجہ ہوتا ہے۔ بھائی کت ب
تواعانت کے لئے ہوتی ہے۔ اہل مہارت کی صحبت کے بغیر بخدا اور بخدا اور بخدا اور بخدا جس کوفن کا
حاصل ہونا کہتے ہیں۔ ہرگز میسرنہیں ہوسکتا چاہے جتنی کتابیں پڑھ چکا ہو۔ اورا گر پچھ بھی شہ
پڑھا ہولیکن اہل مہارت کی صحبت اٹھائے ہوئے ہوتو فن کا حصول ممکن ہے بلکہ کٹر ت واقع ہے۔
آ خر حضرات صحابہ رضوان انقد تعالی عیہم اجھین میں کیابات تھی کہ بعد کے بڑے بڑے بڑے
عارف اور عالم ان کی گر دکو بھی نہیں پہنچ سکے۔ کیا وہ سب کے سب لکھے پڑھے تھے بہت کم ایسے تھے
جوا صطل کی عالم ہوں۔ ور نہ زیادہ تر توائی محض ہی تھے چنا نچہ خود حضور صلی اندعلیہ وسلم کا ارشاد ہے:

نحن امة اميةلا نكتب ولانحسب (مسندأحمد ١٢٢:٢)

'' ہم لوگ توایک ای جماعت ہیں نہ ہم حساب جا نیس نہ کتاب جا نیس''۔ ''

و کیمئے!حضور سلی اللہ علیہ وسلم فخر کرتے ہیں اپنی امت کی امیت پر ، تو گویا اس امت کی خاص فضیلت اُمی ہونا ہے۔ پھر ہا وجود اُمی ہونے کے محابہ جو بینظیر تنف کہ نہ ابوطنیف آن کے برابر ، نہ اولیس قرنی ان کے برابر ، نہ جنید اُن کے برابر ، نہ کوئی غوث آن کے برابر ، نہ کوئی قطب ان کے برابر ۔ تو وہ کیا چیز تجے اور وہ کیا دولت تھی جس نے ان کوسب سے بڑھا دیا تھا۔ بس یہ دولت تھی ہے

جمال جمنشیں درمن اثر کرد

گلے خوشہو نے درجمام روزے ہے رسید ازدست محبوبے برستم بدو گفتم کمشکی یا عمیرے ہے کہ ازبوئے دلآویز تومستم بحفا من گل تاجیز بودم ہے ولیکن مدتے باگل نشستم بحفال من گل تاجیز بودم ہے ولیکن مدتے باگل نشستم بحال ہم نشین درمن اثر کرد

(میرے جمنشیں پھول نے میرے اندراثر دال دیا جمام خانہ کی خوشبو دارمٹی ایک دن میرے مجبوب کے ہتیری خوشبو مشک ہے یا عزرہ کے تیری خوشبو میرے میں سنے کہا کہ تو مشک ہے یا عزرہ کے تیری خوشبو سے میں مست ہور ہا ہوں کہا کہ میں ایک نا چیزمٹی ہوں لیکن کچھ مدت تک پھول کی صحبت میں رہی ہوں ، میرے ہم نشین پھول نے میرے اندرا پنااثر ڈال دیا ورنہ میں تو وہ نہ میں جوں جو پہلے تھی)

بس میتی صحابہ رضی اللہ تعالی عنہم کے پاس دولت کی کی طویل محبت تھی کسی کی کم رکم کا ل

اللہ معرف کی بھی خالی نہیں رہا۔ البت اسملیت کے مراتب میں تفاوت تھا۔ چا ہے زبان حاصل کی ہویانہ

کی ہور کمال تو ہرخض نے حاصل کر لیا تھا۔ زبان اور چیز ہے کمال اور چیز ہے۔ اب کتا ہیں تو بہت

می پڑھ لیتے ہیں لیکن اہل مہارت کی محبت میں رہنے کا بالکل اہتمام نہیں جہاں تم نے کتا ہیں پڑھی تھیں اگر کسی مربی کی محبت ہیں اٹھائے ہوئے تو اپنے کو بھی اہل مہارت میں سے نہ بھتے بھائی تم

تھیں اگر کسی مربی کی محبت ہیں اٹھائے ہوئے تو اپنے کو بھی اہل مہارت میں دیدو۔ وہ تہمیں تا و

تو پہلے مربیہ بو بھر مربی بنا چندروز کے لئے اپنے آپ کو کسی مربی کی بپردگی میں دیدو۔ وہ تہمیں تا و

دے دیکر مربیہ بنائے گا۔ جب خوب کھل جاؤگے اور مربیہ بنائے والے بھی تھد یق کر دیں گے کہ

ہاں اب مربیہ بن گئے تب مربیہ بنوگے۔ تہمارا خود بی سیجھ لین کہ ہم اب مربیہ ہوگے ہرگز کافی نہیں

مربیہ وگیا۔ جب تیرے پاس کوئی ایسی مہک اور کوئی ایسا معیار نہیں جس سے تو یہ جائے گے کہ میں

مربیہ وگیا۔ جب تیرے پاس کوئی ایسی مہک اور موئی ایسا معیار نہیں جو کے گا اپنے نفس سے اور وہ کی جائے اس کوئی آلہ شاخت ہے کامل ۔ لہم آال کی جائے معتبر ہوگی اور تیری جائے ہرگز معتبر شربہ ہوگی اور تیری جائے ہرگز معتبر شربہ ہوگی کے کہ اس کوئی آلہ شاخت ہے کامل ۔ لہم آال کی جائے معتبر ہوگی آلہ شناخت ہے اس کوئی آلہ شناخت ہے تیں۔

جیے کوئی سیب کا مربہ بنا کرد کے تو خود سیب یہ جانچ نہیں کرسکتا کہ بیں مربہ ہوگیا ہوں
یانہیں۔ اس کے کیا دانت ہیں جو کیل کر بتا دے گا۔ البتہ جو مربہ بنا نیوالا ہے اس کے دانت
ہیں جو کیل کر بتا دے گا وہ دانت تلے د با کر فوراً بتا دے گا کہ باں ہوگیا تو تم کوا بھی کسی نے دانت
تلے یا ہیر تلے د بایانہیں کہیں سرنہ گئے ہو کہیں کچ نہ پڑ گئے ہو۔ غرض اصل چیز تو حقیقت کمال ہے
محرز عم کمال اور دعویٰ کمال نے اے خراب کر دکھا ہے۔

خود بنی کےمضرات

فرخ آبادیش ایک واعظ صاحب مدگی کمال کے ملے جھے ہیں یہ ورخواست کی ۔ بیس نے کہا میرے یہاں بیعت کی چند شرطیں ہیں ان میں سے ایک شرط تمہارے لئے یہ ہے کہ وعظ کہنا چھوڑ وو کیونکہ تم عالم نہیں ہو کہنے گئے صاحب! میں تو بہت ہی احتیاط کے ساتھ مضامین بیان کرتا ہوں جھے اجازت ویدی جائے میں نے کہا اگرا حتیاط سے بھی بیان کرتے ہوتب بھی تہمارے نقس کا علاج بہی ہے کہ وعظ کہنا چھوڑ وو۔ پھر بھی ہے حداصرار کیا کہ جھے تو اجازت ہیں ہے کہ معظ کہنا چھوڑ وو۔ پھر بھی ہے حداصرار کیا کہ جھے تو اجازت ہی

ویدو۔ میں نے کہا تھا جھے ابھی اس میں بھی شک ہے کہ احتیاط کے ساتھ بیان کرتے ہوگے۔
کہنے گئے میں تو آپ بی کی گنا میں یا حضرت مولانا محمد قاسم رحمتہ اللہ عدید کی کتا میں ویکھا کرتا
ہوں۔ بس انہی کتا بول کے مضامین میرے بیان میں ہوتے ہیں۔ میں نے کہا ممکن ہے تم ارتباط
میں کچھ گڑیز کرتے ہو یا سلسلہ ممکن ہے خلط ملاتے ہو یا ایسے عنوان سے ان مضامین کونقل کرتے ہو
میں کہ سننے والوں کو خلط بھنی ہوتی ہو۔ اس لئے اگر تمہارا ایسانی اصرارہ وعظ کہنے کی اجازت دے
دینے پر تو یہ کرو کہ جھے پہلے ایک اپنا وعظ نمونہ کے طور پر سندوتا کہ میں یہ تو اندازہ کرلوں کہ تم کہاں
مار احتیاط برتے ہو۔ حضرت انہیں اپنا وی اوپر یہاں تک عقیدہ اور دلیر استے کہ اس پرداختی
ہوگئے اور جھٹ وعظ کہنے ہیں گئے کہ اسچھائی لیس۔

اول ہی ہیں آپ نے ایک قصد تھی کیا کہ ایک دن چاروں صحابہ حضرت علی کرم الندہ جبد کے یہاں جمع ہوگئے ۔ حضرت علی دعوت کے واسطے ہدید کے طور پر گھر ہیں سے شہدلائے اس شہد ہیں ایک بال پڑا ہوا تھا۔ چاروں صحابہ نے ایک دوسرے سے کہا کہ یہ جو بال ہاں کی کوئی مثال سوچو یہ کی مثال ہے کہ مثال ہیں گی اب جھے کو یا دہیں کہ یہ سی چیز کی مثال ہی گئی اب جھے کو یا دہیں کہ یہ سی نے کہا قلال حالت کے مشابہ ہے کے مشابہ ہے کے مثال ہوں کے کہا قلال حالت کے مشابہ ہے کہا قلال حالت کے مشابہ ہے۔

میں نے کہا جب وعظ متم کر چے کہا چھا یہ قربتا و یہ تصر جوتم نے نقل کیا وہ کون کی کتاب میں ہے۔ میری کتاب میں ہے کہنے گئے یہ تو یا ونہیں رہا کہ کس کتاب میں ہے کہنے گئے یہ تو یا ونہیں رہا کہ کس کتاب میں ہے گئے یہ تو یا ونہیں رہا کہ کس کتاب میں ہے گئر ہاں و یکھا ہے کہیں۔ میں نے کہا یہ آپ کی احتیاط ہے کہ ایسامہمل قصہ جوکسی اہل حق کی کتاب میں نہیں ہے اس کو بیان کر دیا۔ اب توسمجھ کئے کہتم کو وعظ کہنے کی اجازت نہیں دی جا تھی کہنا جو بیان کر دیا۔ اب توسمجھ کئے کہتم کو وعظ کہنے کی اجازت نہیں دی جا تھتے ہے کہ حضرت انہوں نے نہیں مانا برابر وعظ کہتے ہیں۔ یہ تو گوارا اکر لیا کہ مجھ سے تعلق نہیں رکھا اور یہ گوارا نہ ہوسکا کہ وعظ کہنا چھوڑ دیں۔

اب کیا علاج ایسے جہل مرکب کا۔ بیں تشم کھا کر کہتا ہوں کہ جہل وہ چیز ہے کہ اگر کسی کواپنے جہل کی خبر ہوجا یا جہل کی خبر ہوجا ہے جہل پر مطلع ہوجا تا جہل کی خبر ہوجا ہے جہل پر مطلع ہوجا تا ہے۔ جیسے صحت کا اول ورجہ مرض کی اطلاع ہے موٹا مسئلہ عقل کا ہے کہ جس کواہی مرض کی اطلاع ہے۔ جیسے صحت کا اول ورجہ مرض کی اطلاع ہے موٹا مسئلہ عقل کا ہے کہ جس کواہی مرض کی اطلاع نہ ہوگی وہ علاج ہی نہیں کر بگا۔

خدا تعالیٰ بچائے بیخود بنی الیی بری چیز ہے کہ حضرت حافظ اس کو کفر ہے تعبیر کررہے ہیں اور داقعی بیہ ہے بی الیمی بری چیز فر ماتے ہیں ۔

فکر خود و رائے خود ورعالم رندی نیست ہے کفرست دریں ند ہب خود بینی وخود رائی (عشق و محبت کے رائے میں اپنی فکر اپنی رائے نہیں چلتی یہاں تو بس محبوب کی چلتی ہے۔اس ند ہب میں خود بینی وخود رائی کفر ہے لینی نہایت ہی آتے ہے)

تودیکھا آپ نے بیآ نت نازل ہورہی ہے حق جل علاشاعہ صاف فرمارہے ہیں۔ ہل يستوى المذين يعلمون والمذين لايعلمون-كبيل عالم اورجابل بحي يرابربو يحتة بيل-اب اس وقت عوام الناس نے ایک عجیب وغریب مستی اور شورش بریا کررکھی ہے اور علماء کومجبور کرتے ہیں کہ وہ مجمی شریک ہوں۔خیر!عوام الناس پرتو حیرت نہیں مگر جیرت ہے علماء پر جوان ہے مغلوب ہوکران كے تابع ہو كئے ہيں۔ ميں كہنا ہول كه عوام الناس كے دبانے سے اوران سے وب كر جوعلماء تابع ہو گئے ہیں کیا وہ بچھتے ہیں کدان کی بچھ قدر ہے وہ بھی جانتے ہیں کہ بیٹلاء دل سے ہمارے موافق نبیں ہیں۔ہم سے دب کر ہمارے تا بع ہو گئے ہیں۔ اگر یہی حال ہے تو پھراور کی بات میں تا بع بنائیں سے پھراورکس میں۔خلاصہ بیکهان کے مرید ہوجاؤ کس قدرشرم کی بات ہے۔ کاریگر بعنی مادیات اورحسیات تک کا کار میربھی جواینے کام میں ماہر ہواس ہے کوئی خلاف قاعدہ کام تو لے لو۔ ہارے مہال تغیر کا کام جاری ہے۔ایک معمار نے ایک کام کو ایک طریقہ ہے بنانا جایا مرہم غلط سمجھے۔ہم نے دوسراا نداز تجویز کیا کہبیں اس طرح بناؤ۔اس نے کہا صاحب یول نہیں ین سکتا۔ ہم نے کہا تہمیں اس سے کیا بحث ! جس طرح ہم کہدرہے ہیں ای طرح بنادو۔ ایک ووسرامعمار تغااس نے بھی کہا کہ ارے جس طرح مالک کہیں ای طرح بنادے بچنے کیا۔ بس جناب ہم سے توبے جارہ بول ندسکا اس بربہت تیز ہوا اور کھڑا ہوگیا۔ کہ توبرا کاریگر ہے آتو ہی بناجوقیامت تک بھی بن محے نہایت تیزلہد میں اس نے کہا حالا نکدیتھوڑ ابی تھا کہ بن بی ناسکتا۔ بن او جاتا اس طرح بمی جس طرح بم لوگ که رہے تھے مربے کینڈے بنآ اے اس تصورے بھی شرم آئی کہ جود کھیے گا یاگل کیے گا بنانے والے کو یکو برا کہنے والے متعین نہ ہوں۔ پھر بھی اہل کمال کوغیرت آتی ہے کداس کے ہاتھ سے ایسا کام ہوجس کود کھے کرلوگ کہیں کہ یکی انا ڈی کا کام ہے۔ غرض جب اس نے یوری تقریر کی تب ہمیں اپنی تجویز کی غلطی معلوم ہوئی کہ واقعی ہی تھیک

كبتا تفاريم نے كباب وتوف! تونے يہنے بى بورى بات كيوں نہ كبدري تقى۔

نو میں کہتا ہوں کہ معماروں کوتو آئی غیرت ہو اور مولو یوں کواتی غیرت بھی نہ ہو بس وہ کیاغرض نے ساری خرابی ڈال رکھی ہے _

چوں غرض آ مرہنر پوشیدہ شد ہی صدحجاب ازدل بسوئے دیدہ شد (جب عرض دل بسوئے دیدہ شد (جب عرض دل بس آئی ہنر پوشیدہ ہوا سینکڑ دل پردے تن بین سے مانع ہوجاتے ہیں جودل سے نکال کرآ تکھوں پر جھاجاتے ہیں)

آ داب ما درمضان

اعتکاف کے تعلق سے بی تقریر شروع ہوئی تھی ۔غرض خلوت اور ترک تعلقات کی حقیقت محققین ہیں وہ محققین ہیں وہ محققین ہیں۔ غیر محققین ہیں۔ غیر محققین ہیں۔ اگراس عزم میں پھتتی ہوگی توعوام خودان کے عوام کوا پٹا تا بع بنا کمیں خودان کے تا بع ہرگز نہ بنیں ۔اگراس عزم میں پھتتی ہوگی توعوام خودان کے سامنے کردن جمکا دیں گے۔ اوران کا اجاع کریں گے ان شاء اللہ تعالی ۔ اوراگر نہ کریں گے تو جمہیں کیا است علیہم بمصبطر۔

ایک عبادت احیاء لیالی قدر ہے۔ اس احیاء کاموجب نورانیت ہونا مشہور ومعلوم ہے قلاصہ بید کہ دمضان المبارک کے حقوق کو جوکہ مجمع الانوار ہے پوراا داکر واور خلاصدان حقوق کا کیا تھہرا کہ جواحکام واجبہ بیں ان کی پوری پابندی کرواور جوامور منکر اور مکروہ بیں خواہ صنعائر ہوں یا کہائر ہوں بالکل چھوڑ دو۔خواہ فضائل بیس کی رہے مضا تقد بیس۔

غرض رمضان المبارك كى اصل عبادت تو روزه وتراوی اوران كى تنزیم ہے اور كثرت تلاوت واعتكاف وشب بيدارى اس كے متعلقات _ان سب كى اصل بينى اصل الاصول وہ احكام واجب كى اسل بينى اصل الاصول وہ احكام واجب كى بابندى اورامورمئكر ومكر وہ سے اجتناب ہے اس سے آگے اپنى اپنى ہمت ہے۔

اس کی الیم مثال ہے جیسے مہمان کے سامنے جو چیزیں رکھی جاتی جیں۔ ان جی اصل چیز اور گوٹ ہیں۔ ان جی اصل چیز تو گوشت روٹی ہے باتی مربہ اچار ، چٹنی بیزینت جیں دسترخوان کی اور عین بھی جی جی ہمان کے اور لطف افزاجیں اور کھا توں کی۔ اگر کوئی شخص اپنے مہمان کے سامنے بیزا کد چیزیں تورکہ و دے مشلا چٹنی بھی گران کے سوااور پھی جی ہیں۔ نہ شکلہ چننی بھی گران کے سوااور پھی جی سے نہ خشکلہ ہے نہ کوشت ہے ، جواصلی غذا ہے اب وہ مہمان کیا کھاؤں۔

مربہ کھاؤں، اچارکھاؤں، کھانے کی چیز تو ایک بھی نہیں۔ بیتو سب لگانے کی چیزیں ہیں۔
اگر ای طرح تم نے اپنا رمضان اس حالت میں حق تعالیٰ کے سامنے چیش کیا کہ اس میں
اصل چیز تو ہے نہیں۔ مگرزوا کہ جیں تو وہ کیا قبول ہوگا۔ اورا گرتہارے پاس اصل چیز تو ہے مگر
زوا کہ نہیں، یعنی اگرون بھر بری نگاہ ہے، غیبت سے اور جینے گناہ جیں سب سے بچے دہو۔ اپنی
آمدنی حلال رکھو۔ پھر چاہے رات کوا پھی طرح پر کر سور ہو۔ تہجد بھی نہ پڑھو۔ وظیفے بھی نہ پڑھو۔
آمدنی حلال رکھو۔ پھر چاہے رات کوا پھی طرح پر کر سور ہو۔ تہجد بھی نہ پڑھو۔ وظیفے بھی نہ پڑھو۔
مگر سے کہ گناہ کے پاس نہ پھنگو۔ تو تہمارار مضان بخد ااس شخص سے اچھاہے کہ تبجد بھی ہے، چاشت
کر رہا ہے، وظیفے بھی جی ہیں۔ تلاوت بھی ہے سب پچھ ہے مگر ساتھ ہی ہے بھی کر رہا ہے کہ غیبتیں بھی
کر رہا ہے، یرائی بھی کر رہا ہے عور توں کو بھی تک رہا ہے لہوولوں میں جبھی جنتا ہے لڑ نا جھڑ نا بھی

اگرہمت نہ ہوبہت سے سیپارے ختم نہ کرو۔ سود خوب پڑپڑکر۔ بس فرض ، سنت تمازیں تو اٹھ کر پڑھ لیا کرو۔ ہاتی آ رام سے مہینہ بحرگز ارو۔ محرضدا کے واسطے گناہ کوئی نہ کروتو بیا چھا ہے اور اگرہمت ہوتو گناہ کو بھی چھوڑ واور طاعات کو بھی لو۔ یہ تو پھر سیجان اللہ تور کل ٹور ہے۔ اور یہ مہینہ قابل تو ای کے کہ اس میں ایسانی کیا جائے لینی واجبات وفضائل سب کو جمع کیا جائے۔ قابل تو ای کے ہے کہ اس میں ایسانی کیا جائے لینی واجبات وفضائل سب کو جمع کیا جائے۔ صدیت میں مصدیت میں ہے کان رصول اللہ صلی اللہ علیہ و مسلم اجود من الربیح المعر سلة لا مینی رمضان شریف آتے ہی اس قدرطاعت میں مشغول ہوتے تھے جمعے ہوا چھوٹ تکتی ہے کہ اڑی چلی جاتی ہے کہ ارشی جلی جاتی ہے کہ ای کہ ایسانی کے ساتھ۔

غرض رمضان کا جومبینہ ہے اصل بیس ترک دنیا کے داسطے ہے گیارہ مہینے خوب بیش وآرام میں گزارے ہیں ایک مبینہ تو پندہ خداتھوڑی بہت مشقت اٹھالوجیے مولانا فرماتے ہیں۔
خواب را بگذار امشب اے پسر ہن کی شے درکوئے بے خوابال گذر
(ایک رات خواب کواے پررٹزک کردے اور کی اللہ کے عاش کے پاس ایک رات
گزارد سے پھرد کھان بے خوابول کی کئی میں کیالطف ہے جورشک ہفت اقلیم ہے)
گزارد سے پھرد کھان بے خوابول کی کئی میں کیالطف ہے جورشک ہفت اقلیم ہے)
گیارہ مارہ تو سب پچھ کام سے ایک مہینہ خدا کے کام میں رہ نو گے تو کوئیا ایسا ہوا جرج بوجائے گا۔ پھروہ بھی اس طرح کہ ای میں صحت کی رعایت رکھی گئی ہے۔ غرض یہ مہینہ تو خاص
ہوجائے گا۔ پھروہ بھی اس طرح کہ ای میں صحت کی رعایت رکھی گئی ہے۔ غرض یہ مہینہ تو خاص

ہوجائے عہاوت کے لئے۔اورا خیردرجہ یہ کہ اگر عہادت نہ ہوسکے تو گنا ہوں کو تو جھوڑوا تنا تو کرو۔ یہ مقصود تھا میراجس کو میں بیان کر چکا۔ اور مضامین بھی ذہن میں جیں مگروفت بہت ہو چکا ہے اگر موقع ہوا تو میں یا اورا حباب ان شاء اللہ تعالی رمضان المبارک کے جمعوں میں عرض کرتے رہیں گے۔

اب دعا کیجئے کہ حق تعالی ہم کوہمت اور تو نیق دیں اعمال صالحہ کی اور تا پہند بیدہ اعمال اور مشکرات سے بیخے کہ دن آنے سے اور مشکرات سے بیخے کی۔اور ایک بات اور عرض کرنے سے رہ گئی کہ رمضان کے دن آنے سے پہلے آپس میں بل جل لو۔اور دلوں سے رنجشوں کو دور کرلو کیونکہ معاصی سے روزہ کا اثر اور نورجا تا تو نہیں رہتا مگر بہت مضمحل ہوجا تا ہے۔

(اب ' دعا سيجيئ ' ہے يہاں تک كي تقرير ہاتھ اٹھائے ہوئے فرماتے رہے)

عالبًا بعد ختم دعا يا دوران دعائى من فرما ياكه جونكداس بيان من اتوار رمضان كاذكر باس كة اس كانام "رمضان في رمضان" مناسب معلوم بوتا برمضان بنع برميض كى جس كمعنى بين جيك دمك كذا في القاموس في محمد الله الذي بنعمته تتم الصلحت.

الحمد رئد ثم الحمد رئد! كه به بركت دعا تو جهات حضرت اقدس اس وعظ كی تلبیض ۲۵ شعبان المعظم المسوار و يوم شنبه بوقت چاشت شروع جوکرآج پندره دن كی مدت میں اارمضان المبارك المسوار و يوم يكشينه عين اذان ظهرك وقت حق تعالى نے اس ناكاره كے ہاتھوں بورى كرادى حق تعالى اس كومقبول اور تافع عطا فرمائيں ۔ اورصاحب وعظ كومدت مديد تك اى طرح فيض محترر كين آهيں آهيں ، كرمة سيد المرسلين صلى الله عليه واله واصحاب واز واجها جمعين ۔

احكام العشرالاخيره

ماه رمضان کے عشره اخیره کے متعلق بیدوعظ ۲۱ رمضان ۱۳۲۹ ہے بروز جمعہ جامع مسجد تھاند بھون میں نماز جمعہ سے نماز عصر تک بیٹھ کرفر مایا حاضرین کی تعدادہ • انتھی۔ مولوی سعیدا حمرصاحب نے قلمبند فرمایا۔

خطبه ما ثوره

يست برالله الرمين الرَجيم

اَلْحَمْدُ لِلّهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنَهُ وَنَسْتَغُفِرُهُ وَنُوْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُودُ بِاللّهِ مِنْ شُرُورِ اَنْفُسِنا وَمَنْ سَيّنَاتِ اَعْمَالِنَا مَن يُهُدِهِ اللّهُ فَلاَ مُضِلَّ لَهُ وَمَن يُصلِلُهُ فَلاَهَادِى لَهُ وَنَشَهَدُ اَنْ لِآلِلَهُ إِلّا اللّهُ وَحَدَهُ مُضِلًّ لَهُ وَمَن يُصلِلُهُ فَلاَهَادِى لَهُ وَنَشَهَدُ اَنْ لِآلِلَهُ إِلّا اللّهُ وَحَدَهُ لَا شَيْكُ لَهُ وَمَن يُصلِلُهُ وَلَاهَادِى لَهُ وَنَشَهَدُ اَنْ لِآلِلهُ إِلّا اللّهُ وَحَدَهُ لَا شَيْكُ لَهُ وَمَن يُصلِلُهُ وَمَولَنَا مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ صَلّى اللّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَى الله وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ اللّهِ الْمُعَلِّمُ اللّهِ اللّهِ عَلَيْهِ وَعَلَى اللهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ اللّهُ الْمُعَلِيلُهُ فَاعُودُ لَا اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ الرّحِيْمِ.

شهر رمضان اللى انزل فيه القران هدى للناس وبينات من الهدى والفرقان. (التقره:١٨٥)

ترجمہ: ماہ رمضان ہے جس میں قرآن مجید بھیجا گیاہے جس کا (ایک) وصف ریہ ہے کہ لوگوں کے لئے (ڈریعہ) ہدایت ہے اور (دوسرا وصف) واضح الدانا لہ ہے مجملہ ان کتب کے جو (ذریعہ) ہدایت بھی ہیں اور حق وبال میں فیصلہ کرنیوالی (بھی) ہیں

فضيلت ماه رمضان

بیایک آیت کانگزا ہے اس آیت میں ضدائے تعالی نے رمضان کی ایک فضیلت کا بیان فر مایا ہے۔ گزشتہ جمعہ میں رمضان کے ضرور کی آ داب وحقوق کا بیان ہو چکا ہے۔ آج رمضان کے ایک فاص ہز ویعنی عشرہ اخیرہ کے متعمق بیان کرنامقصود ہے۔ اس آیت سے بظ ہرعشرہ اخیر کے مضمون کوکوئی تعلق نہیں معلوم ہوجائے گا۔ کوکوئی تعلق نہیں معلوم ہوجائے گا۔ کوکوئی تعلق نہیں معلوم ہوجائے گا۔ فدا تعالی نے اس آیت میں رمضان کی جوفضیلت بیان کی ہے اس قضیلت میں فور کرنے سے معلوم ہوجائے گا کہ وہ فضیلت میں معلوم ہوجائے گا کہ وہ فضیلت کے جدرجہ اولی واتم ثابت ہے۔

فرماتے ہیں کہ ماہ رمضان ایسام بینہ ہم نے قرآن نازل کیا ایسا اور ایسا ہے۔
سواس آیت ہے اس قدر معلوم ہوا کے قرآن کا نزول ماہ رمضان ہیں ہوالیکن طاہر ہے کہ رمضان
شمیں دن کے زمانہ کا نام ہے اور اس آیت ہے یہ پہنیں چانا کہ اس طویل زمانہ کے کس جزویم
نزول ہوا ہے لیکن اگر ہم اس کے ساتھ دوسری آیت کو بھی ملالیس تو دونوں کے مجموعہ تعیمین وقت
بھی ہم کو معلوم ہوجا کیگی ۔ سودوسری آیت ہی فرماتے ہیں: انا انزلنه فی لیلة المقدر ۔ (ب
شک قرآن کو ہم نے شب قدر میں اتا راہے) پس ان دونوں آیتوں کے دیکھنے سے یہ بات معلوم
ہوئی کے قرآن مجید کے نزول ماہ رمضان کی شب قدر میں ہوا۔

رہا بیشبہ کیمکن ہے شب قدر رمضان میں نہ ہوتو اس صورت میں دوسری آیت کاضم مقیدنہ ہوگا۔ سواس کا جواب بیہ ہے کہ اول تو شب قدر کا رمضان میں ہونا حدیث میں موجود ہے۔ اس سے قطع نظرا کرہم ذرافہم سے کام لیس توان دونوں آجوں سے ہی معلوم ہوجائے گا کہ شب قدر رمضان میں ہی ہے۔

نزول قرآن كريم

اس کے کہ کام مجید کا نزول دوطرح ہوا ہے۔ ایک نزول تدریجی جو کہ ۲۳ برس میں حسب ضرورت تازل ہوتارہا۔ اورجس کا جُوت علاوہ کتب سیر کے خود کلام مجید ہے ہوتا ہے۔ لو لا الزل علیہ القوان جملة واحدہ کذلک نشبت به فوادک ورتلنه تو تبلا۔ یہ آیت مشرکین نصاری کے اس اعتراض پرنازل ہوئی متی کہ اگر محصلی اللہ علیہ وسلم نی جی توان کوکوئی کتاب پوری کی ساری کے اس اعتراض پرنازل ہوئی متی کہ اگر محصلی اللہ علیہ وسلم نی جی توان کوکوئی کتاب پوری کی پوری دفعۃ آسان سے کول نہیں دی گئی۔ جس طرح موئی علیماالسلام کودی گئی محمدا تعالی ان کی پوری دفعۃ آسان سے کول نہیں دی گئی۔ جس طرح موئی علیماالسلام کودی گئی محمدا تعالی ان کفار کے اعتراض کا جواب ارشاد فرماتے ہیں۔ کہ سحد لک لنشبت به فوادک جس کا ظلامہ سے کہ ہم نے کلام مجید کو بندرت کی کوئرے کر کے اس لئے نازل کیا ہے کہ اس تدریج کے در بیدے آپ کے داس توجائے۔

واتعی غور کیا جائے تو معلوم ہوگا کہ جس قدر تشہیت فواداور صبط وقہم بتدریج نازل کرنے میں ہوسکتا ہے نزول وقعی میں نہیں ہوسکتا۔ دفعہ نازل کرنے میں احکام جز بیّات کا مجھناا مت کے لئے اس کے دشوار ہوگا کہ جب دفعہ نازل کیا جائے گا تو یقیناً اس کے احکام امور کلیے ہوں سے اوران پر جز نیات کومنطبق کرنا پڑے گا۔ سوجب تک کہ نبی زندہ ہیں اس وقت تک سوال کرنے سے پر جز نیات کومنطبق کرنا پڑے گا۔ سوجب تک کہ نبی زندہ ہیں اس وقت تک سوال کرنے سے

بآسانی تعلیم ہوجا ٹیگی لیکن نبی کی وفات کے بعد چونکہ ان کامنطبق کرنامحض امت کے اجتہاد پررہ جائے گا۔اس لئے بہت کی غلطیوں کا ہوناممکن ہے جبیبا کہ نصاری اور یہود سے ہو کیس۔

اس تفوت کی ایس مثال ہے کہ ایک مریض کی طبیب کے پاس آئے اورا پئی حالت بیان کر کے جیمے سے بہے کہ جس آپ کے پاس تو رو نہیں سکتا ۔ نہ جیس وقا فو قا آکر آپ کوا پئی حالت کی اطلاع کر سکتا ہوں۔ آپ میری حالت کے مناسب کی لئے جھے لکھ و یہے ۔ جوں جوں میری حالت متغیر ہوتی جائے اور مرض میں کی یا بیٹی ہو جی اس کے مناسب شخوں کو بدل کر استعمال حالت متغیر ہوتی جائے اور مرض میں کی یا بیٹی ہو جی اس کے مناسب شخوں کو بدل کر استعمال کرتا جاؤں ۔ لیس اس صورت میں آگر چہ طبیب کتنا ہی ما ہر ہو۔ اور کتنے ہی خوروخوش سے شخوں کی تبحو یہ نے بیز کر لے لیکن اس مریض کی حالت اس مریض کے برابر بہتر نہیں ہو بحق جو کہ دوزانہ طبیب کے بہو یہ اس آتا ہے ، اپنی حالت بیان کرتا ہے بچھلائے و مکا تا ہے اور دوزانہ اس میں تغیر وتبدل کی بیٹی کرالے جاتا ہے۔ اس لئے کہ اگر چہ پہلی صورت میں تمام تغیرات کے لئے طبیب نے نسخہ جات کہ دیے لیکن تغیرات کی تعین اوران کا قہم میکن میں میں کی رائے پر دیا جو کہ دائے العلیل ہونے کی وجہ سے نا قابل اعتبار ہے ۔ کیونکہ عین ممکن ہے کہ ذیادتی صفراکی ہواور وہ سودا کا بیجان سمجھ جائے در چستی سنجا لئے کی ہواور وہ مرض کی کی جھ جائے۔

اس سے واضح ہوگیا ہوگا کہ جس قدرعام اورتام فائدہ جزئی حالت کے دیکھنے اور حسب ضرورت تغیر تبدل کرنے ہیں ہے۔ امور کلیہ سمجھاد سے ہیں اس قدر فائدہ جبیں۔ اس میں بہت ی شاطیاں ممکن ہیں۔ بس خدا کا ہم پر برافضل ہے کہ اس نے کلام مجید جزئے جزئے نازل فرما یا کہ علاء امت فلطیاں ممکن ہیں۔ بس خدا کا ہم پر برافضل ہے کہ اس نے کلام مجید جزئے جزئے نازل فرما یا کہ علاء امت نے اس کوا چھی طرح سمجھ ۔ اس کے اسباب نزول پر پوری نظر کی اور اس کوا ہے ذہن میں لے لیا۔ سما ایق کہ کشب کا نزول

یہاں بط ہرووشہات ہوتے ہیں۔اول یہ دجب تدریجی نزول میں اس قدر فاکدہ اور فعی نزول میں اس قدر فاکدہ اور فعی نزول میں اس قدر نقصان کا اختمال ہے تو خدائے قرآن سے پہلی کتب کودفعۂ کیول نازل فر مایا۔ جس سے بظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ یا تو بید صفحت اور فرق غلط ہے یا امم سابقہ کے مصالح کی رعایت نہیں کی گئی۔

اس کا جواب توبہ ہے کہ شرائع سابقہ چونکہ چندروز ہمیں اوراس زمانہ کے اکثر ایام میں ان کے نبی بیان کے خاص اصحاب ان میں موجودر ہتے تھے جن سے تمام جزئیات عل ہوجاتی تھیں۔ اس کے کتب سابقہ کا دفعہ ٹازل ہون ان لوگوں کے لئے مصر نبیس ہوا۔

ووسراشہ بیہ کہ ہاوجود قرآن کے تدریجاً نازل ہونے کے قبم قرآن میں غلطیاں اب بھی ہوتی جیں۔ چنانچے اختلاف جمتدین سے صاف معلوم ہوتا ہے۔

اس کا جواب میہ ہے کہ اس اختلاف اور خطا میں اور امم سابقہ کے اختلاف اور خلطیوں میں بڑا فرق ہے۔ ان سے زیاد و اور مصر غلطیاں ہوئی تھیں اور اس امت سے ایسی غلطیاں نہیں ہوئی تھیں اور اس امت سے ایسی غلطیاں نہیں ہوئیں۔ وجہ میہ کہ اسباب نزول نصوص کی تغییر ہے جس کو تعیین مراد میں خاص دخل ہے اور خلا ہر ہے کہ تعیین مراد کی صورت میں خظیم ہوگی۔ کے تعیین مراد کی صورت میں عظیم ہوگی۔

سے شبہ نہ کیا جائے کہ بلاتھیں غراد ان لوگوں پراحکام کیے متوجہ ہوئے۔ بات میہ ہو کا عترات انبیا ولیسیم السلام کے بیان سے تعیین ہوجاتی تھیں۔ سواول توانہوں نے اس کی حفاظت منبیل کی ۔ دوسرے میہ کہ بیان بھی مواقع سوال ہی میں ہوتا ہے اورسوال کا ہرجگہ اذین تھا۔ گرقلت توجہ سے ان لوگول کواس کی نوبت بھی کم آئی اوراس امت میں جوتھیین مراد کے بعداختلاف پیش توجہ سے ان لوگول کواس کی نوبت بھی کم آئی اوراس امت میں جوتھیین مراد کے بعداختلاف پیش آیا۔ اس میں حکمت تھی توسیع مسالک کی۔ پس وورحمت ہوا۔ پس دونوں میں فرق ظاہر ہوگیا۔ ساک جملہ معترضہ تھی توسیع مسالک کی۔ پس وورحمت ہوا۔ یہ دونوں میں فرق ظاہر ہوگیا۔ ساک جملہ معترضہ تھی توسیع مسالک کی۔ پس وورحمت ہوا۔ یہ دونوں میں فرق خاہر ہوگیا۔ ساک جملہ معترضہ تھی توسیع مسالک کی دونوں میں دونوں میں فرق خاہر ہوگیا۔

یا ایک جملہ معتر ضدتھا۔ مقصوریہ ہے کہ کلام اللہ کا نزول دوطرح کا ہے۔ ایک نزول تو بیہ ہے جس کا تدریجی کہتے ہیں۔ اور ظاہر ہے کہ اس آیت مشہو رمضان الذی میں یہ نزول مراد نہیں ہوں۔ ہوسکتا کیونکہ وہ صرف رمضان یالیانہ القدر میں نہیں ہوا۔ بلکہ ۲۳ برس میں ہوا۔

عالم غيب كي وسعت

اوردوسراوہ فزول ہے جوکہ دفعہ ہوا اوراس تیت ہیں بھی مراو ہے اور یہ نزول اس عالم دنیا ہیں نہیں ہوا جس ہیں کہ فزول مقر بھی ہوا ہے۔ بلکہ یہ فزول عالم غیب ہیں ہوا ہے لینی لوح محفوظ سے آسان و نیا پراورید دونوں اس عالم کے ہز ہیں۔ اور اس کے ڈی اجزاء ہونے کو بعید نہ مجھاجائے اس میں اس قدر وسعت ہے کہ بیعالم دنیا اس سے وہ نسبت رکھتا ہے جوسوئی پرلگا ہوا ایک قطرہ سمندر سے رکھتا ہے۔ لینی بیعالم دنیا اس کے سامنے شل ایک قطرہ سے اور وہ اس کے اعتبار سے مثل سمندر کے ہے۔ ایک بیعنی بیعالم دنیا اس کے سامنے شل ایک قطرہ ہی وہ کی سامندر کے ہے۔ االی کشف نے لکھا ہے کہ دونوں عالموں میں وہی نسبت ہے جو کہ رحم ما در اور عالم و نیا میں ہوتا ہے اور اس سے اس قد رما نوس ہوتا ہے اور اس سے اس قد رما نوس ہوتا ہے اور اس سے اس قد رما نوس ہوتا ہے اور اس سے اس قد رما نوس ہوتا ہے اور اس سے اس قد رما نوس ہوتا ہے اور اس سے اس کی رائے ہے کہ عالم دنیا ہیں لایا جائے تو وہ کبھی گوارا نہ کرے اور مجی سے اگر شاید وہاں سے اس کی رائے ہے کر عالم دنیا ہیں لایا جائے تو وہ کبھی گوارا نہ کرے اور مجی

ج نے ۔ یکن اگراس کو کسی طرح و باب ہے کا لیاج نے جیسا کہ اس طرح الا یاجاتا ہے اور عالم دنیا میں وہ یہاں کی روثق ، چہل پہل یہاں کی آبادی اور معمورہ و نیا کو دیکھے تو عالم رحم اس کو بالکل نیج اور عدم معلوم جونے نے فیے اس عالم میں محبوں اور اسر جیں ۔ جنہوں نے آتکھ مدم معلوم جونے کے وقت ہے آتکھ بند کرنے تک اس کے سوااور کسی عالم کو ویکھائی نہیں جب ان کو اس عالم کا میں جیوڑ و ہے اور دوسرے عالم میں چلنے کے لئے کہاجاتا ہے تو وہ خت پریشان ہوتے ہیں ان کو اس عالم کی جدائی کو گوار آئیس کرتے ۔ بال وہ لوگ جن کو خدا کو ارضطرب ہوتا ہے اور وہ کسی طرب آس عالم کی جدائی کو گوار آئیس کرتے ۔ بال وہ لوگ جن کو خدا تھالی نے بنا یا ذو قاطم میں کا فید ویا ہے اور وہ اس عالم کی جدائی کو گوار آئیس کرتے ۔ بال وہ لوگ جن کو خدا تھالی نے بین تو ان کو اس کی جدائی کا نہ قتل ہوتا ہے نہ وہ اس کے بھوائے کی نے بیلے لوگ وں کے مقابلہ میں پوگ ذیادہ مقبول اور صاحب کمال ہیں۔ اس لیکن یہ نہ ہوتا ہے کہ پہلے لوگوں کے مقابلہ میں پوگ ذیادہ مقبول اور صاحب کمال ہیں۔ اس لیکن یہ نہ ہوتا ہے کہ پہلے لوگوں کے مقابلہ میں پوگ ذیادہ میں ویکھی جیل کی وجہ سے سواشتیات کی وجہ سے تو اس کے کرنا در اس کا مش ق ہونا کیا کہ کی بات ہے خوشم نا بھی کو جوختی بھی ویکھی اس کی سرکا تمنی ہوگا۔ کرنا در اس کا مش ق ہونا کیا کہ کی بات ہے خوشم نا بھی کو جوختی بھی ویکھی گائی کی سرکا تمنی ہوگا۔ کرنا در اس کا مش ق ہونا کیا کہ ل کی بات ہے خوشم نا بھی کو جوختی بھی ویکھی گائی کی سرکا تمنی ہوگا۔ کرنا در اس کا مش ق ہونا کیا کہ ل کی بات ہے خوشم نا بھی کو جوختی بھی ویکھی گائی کی سرکا تمنی ہوگا۔ کرنا در اس کا مش ق ہونا کیا کہ ل کی بات ہے خوشم نا بھی کو جوختی بھی ویکھی گائی کی سرکا تمنی ہوگا۔ کرنا در اس کا مش ق ہونا کیا کہ ل کی بات ہے خوشم نا بھی کو جوختی بھی ویکھی کا اس کی سرکا تمنی ہوگا۔ کرش فی فیکھی گائی کی سرکا تمنی ہوگا۔ کرش فی اور ہر کرگی

فرمای کدان کے ایم ن نہ لانے کی کیا وجہ ہوتی جب کہ ہر وقت کلام واحکام سے مشرف ہوتے میں۔ صحابہ ؓ نے کہا کہ پھرا نبیا علیہم السلام کا۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر ، یا بھلا وہ کیوں ایمان نہ لاتے۔ ہروفت توان پروحی نازل ہوتی ہے صحابہؓ نے کہا کہ پھر ہمارا۔

آ پ صلی القدعلیہ وسلم نے فر مایا کہتم کیوں ایمان نہ لاتے۔ ہروقت مجھے و کیھتے ہو۔ مجھ ے سنتے ہوآ خرصحابہ نے عرض کیا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم پھرکون لوگ ہیں؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا وہ لوگ جومیرے بعد آئیں گے جنہوں نے نہ جھے کودیکھا ہوگا نہ نز ول قر آن کی کیفیت ریکھی ہوگی محض چند لکھے ہوئے کا غذ د کچے کرایمان لائیں گے۔ان کا ایمان زیادہ عجیب ہے۔ مقصوداس سے بیخا ہر کرتا ہے کہ مکا شفہ کی نسبت عدم مکا شفہ کی حالت زیادہ افضل اور اسلم ب لیکن اس سے بینہ بھتا جا ہے کہ مطلقاً غیر مکاشفین مکاشفین سے افضل ہیں۔ اگر اہل کشف میں اور فضائل بھی ہوں جیسے انبیا علیم السلام تو وہ افضل ہوں کے اور اعجب ہونا دوسری بات ہے۔ خلاصہ میہ ہے کہ جن لوگوں کوء کم غیب منکشف نہیں ہوا وہ لوگ اس و نیا کو چھوڑتے وقت تھبراتے اورمضطرب ہوتے ہیں۔ جالینوں کے متعلق مشہور ہے کہ جب مرنے لگا تو ریتمنا کرتا تھا کہ میری قبر میں ایک سوراخ رہے کہ و نیا کی ہوا آتی رہے لیکن غیر حکا شفین اگراہل ایمان کامل ہیں تو گوان کوطبعاً اس عالم کوچھوڑ ٹا گرال گز رےاوروہ موت ہے گھبرا ئیں جبیبا کہ حضرے عائشہ ْ فرماتی میں کلنا یکوہ المعوت کرمرنے کے بعد جب اس عالم کی سیرکریں کے اوراس کودیکھیں کے اوراس کی وسعت آنکھوں کے سامنے ہوگی تو ان کی و بی حالت ہوگی جو کہ رحم ما در ے نگل کر اور عالم دنیا و کمچے کر بیچے کی حالت ہوتی ہے کہ وہ اس کو بھول جا تا ہے اور عالم دیما کے سامنے اپنے اس پہلے عالم کو بیج بلکہ لاشے حض سجھنے لگتا ہے حکیم سنائی اس کی نسبت فرماتے ہیں ۔ آ انہاست درولایت جاں 🌣 کارفرمائے آساں جہاں ورره روح پست وبال بست 🏠 کوه بائے بلندو صحرا بست (روح کے ملک میں بہت ہے آ سان میں جواس دنیا کے آ سانوں کو چلانے والے میں روح کے رائے میں گڑھے بھی ہیں اور شیلے بھی اور بہت ہے او نیچے بہ ز اور جنگلات ہیں) لبلة القدر

غرض! وہ عالم جب ذی اجزاء ہے اور بید فعی نزول اس عالم کے ایک جزے و مرے جزمیں ہوا

ہاورای کی نسبت کام مجید میں ایک جگہ شہر دمصان الذی انول فیہ القوان (رمضان الهارک وہ ہے جس میں قرآن تھیم نازل کیا گیا) فرور اور دوسری جگہ انا انولیہ فی لیلة القلو (ب شک ہم نے اس کوشب قدر میں اتاراہے) فروایا اور مراودونوں مقام میں تزون فق ہے جیسا او پر معلوم ہوا۔

تو تا بت ہوا کہ لیے القدر درمضان میں ہے کیونکہ اگرلیلۃ القدر غیر رمضان میں ہوتو کلام مجید

کی آ بیوں میں تعارض لازم آئے گا کہ ایک آ بت سے وفقی نزول رمضان میں اورایک جگہہ
غیر دمضان میں ثابت ہوگا جو کہ محال ہے اور صدیثوں ہے بھی شب قدر کا عشرہ اخیرہ نیں ہوتا
معلوم ہوتا ہے لی جب شب قدر میں نزول ہواتو عشرہ اخیرہ میں نزول ثابت ہوگیا۔ اور یہی
معاسبت ہے۔ اس آ بت کوعشرہ اخیرہ کے ساتھ اور دمضان کی فضیلت کے ساتھ عشرہ اخیرہ کی
مناسبت ہے۔ اس آ بت کوعشرہ اخیرہ کے ساتھ اور دمضان کی فضیلت کے ساتھ عشرہ اخیرہ کی
مناسبت ہے۔ اس آ بت کوعشرہ اخیرہ کے ساتھ اور دمضان کی فضیلت کے ساتھ عشرہ اخیرہ کی
مناسبت ہے۔ اس آ بت کوعشرہ اخیرہ کے ساتھ اور دمضان کی فضیلت کے ساتھ عشرہ اخیرہ کی
مناسبت ہے۔ اس آ بت کوعشرہ اخیرہ کے ساتھ اور دمضان کی فضیلت کے ساتھ عشرہ ان کا نزول ہوگا وہ زمانہ بھی
کیونکہ قرآن میں اس اس کے خط کی زیادت ہوگا اور اس فضیلت کی قدرکوئی عشاق کے دل سے بوجھے کہ جس زمانہ میں ان کو مجبوب کے خط کی زیادت ہوتی ہو وہ زمانہ ان کے نزو کیکس قدر معزز ومشرف ہوتا
میں ان کو مجبوب کے خط کی زیادت ہوتی ہو وہ زمانہ ان کے نزو کیکس قدر معزز ومشرف ہوتا
مجبوب حقیق کا کلام مازل ہو۔ کیول مبارک اور مشرف نہ ہوگا۔ مظر وف کے ظرف سے ظرف
محبوب حقیق کا کلام مازل ہو۔ کیول مبارک اور مشرف نہ ہوگا۔ مظر وف کے ظرف سے ظرف

گفت معشوقے بعاشق کائے نتا ہے۔ گفت آل شہرے کہ دروے دہرست

پس کدای شہراز انہا خوشترست ہے۔ گفت آل شہرے کہ دروے دہبرست

(ایک معثول نے اپنے عشق ہے کہ تو نے اپ سفر میں بہت ہے شہرا کھے توان میں ہے کون

ماشہر بہتر ہے۔ عاشق نے جواب دیا کہ وہی شہرسب ہے بہتر ہے جس میں معشوق موجود ہے)

ویکھوا گرکسی عشق کو کئو کی کے اندروصال صبیب ہوتو وہ اس کئویں کوچن سے بھی نہ سمجھے گا

اس کے دل میں اس کئویں کی عظمت ایک بچھوں سے بھرے چمن سے بھی زیاوہ ہوگی اورا گرخور

کیا جائے تو معلوم ہوگا کہ جس زمانہ کو بھی شرف ہے اکثر وہ کسی مظروف بی کی شرف کی وجہ سے ہے۔

جمعہ کی قصیلت

میں وجہ ہے کہ جمعہ کاون اورایام سے افضل ہے کیوں کہ اس ون میں ایک ایسامظر وف

موجود ہے جوکہ دوسرے ایام بین نہیں اکثر لوگ جمعہ کی نضیات پراعتراض کیا کرتے ہیں اور کہا کرتے ہیں کہ کیا ہو جمعرات کو وہ فضیات کیوں حاصل نہیں جو جمعہ کو حاصل ہے۔ وہی الکنداس بیں ہیں وہی الگفتشاس بیل ہیں ہیں۔ وہی ایک دن جمعرات میں ہو وہی ایک ون جمعہ بیں ہے۔ حالا نکہ بیاعتراض بالکل ہی لغو ہے کیونکہ اشتراک فی الس حات اور تشابہ فی الظاہرے بید لازم نہیں آتا کہ جوایک کی حالت ہووہی دوسرے کی بھی ہو ۔ کیا اگر کی شخص کی بہن اور بیوی بالکل ہی خال ہوائی وہر ہی کی ہو کیا ان بیں طال وحرام کے فرق ہونے کو خال ہوائی دونوں برابر براؤ کر بیا اور کیا اس شخص کے دل میں کو خال فی عقل کہا جائے گا اور کیا شخص دونوں سے برابر برتا دکر بیا اور کیا اس شخص کے دل میں دونوں کی مجبت ایک تم ہو جو ایک کے ساتھ ہے وہ بہن کے یا مال کے ساتھ میں ہو جائیگا۔ بی ضرور ہے کہ مجبت مال اور بہن ہے ہوگی لیکن کید دونوں می مجبت الگ الگ ہوگا عفر ور ہوگا۔ بہن اور مال بھی مجبوب ہیں اور بیوی بھی مجبوب ہیں دونوں کی مجبت الگ الگ ہوگا عشر ور ہوگا ۔ بہن اور مال بھی مجبوب ہیں اور بیوی بھی مجبوب ہیں ہوئی کیا رکنواب میں اپنی خواہش کرتا ہو۔ بلک طبغا اس شم کے خیالات سے اس قدر نفرت ہوئی ہے کہا گرخواب میں اپنی خواہش کرتا ہو۔ بلک طبغا اس خواب کی بری نہیں۔ مال کے ساتھ صحبت کرتے دیکھ لیتا ہے تو بیدار ہو کرب حد پریشان ہوتا ہے اور اپنے کولعنت مال کے ساتھ صحبت کرتے دیکھ لیتا ہے تو بیدار ہو کر بے حد پریشان ہوتا ہے اور اپنے کولعنت مال کے ساتھ صحبت کرتے دیکھ لیتا ہے تو بیدار ہو کر بے حد پریشان ہوتا ہے اور اپنے کولعنت خواہش کرتا ہو۔ بلک طبخ اس خواب کی بری نہیں۔

تعیریہ ہے کہ ایسا مخص متواضع اور منکسر المزائی ہوگا کیونکہ خواب میں معانی اپنے من سب صورتیں اختیار کرتے اور اس میں ممثل ہوتے ہیں اس تم کے خواب میں ماں ہے مرادز مین ہوتی ہے باغتیار اپنی صفت خاکساری اور صحبت سے مراد تلیس ۔ پس بیاش رہ ہوتا ہے کہ اس شخص کوصفت خاکساری ہوگا۔ ایک ہزرگ ہے کس نے بہی خواب بیان کیا انہوں نے بہی تعبیر دے۔

ای وجہ سے صدیث میں وار وہوتا ہے لاتحدث الالمیا او حبیبا یعنی جائل آومی ہے اپنا خواب بیان ندگرو یا بلکہ سی عقل مندیا ووست سے بیان کرو کیونکہ عقل مندتم کوواقعی تعبیر بہورکر بنا دے گا۔ اور تمہارا دوست اگرند بھی جائ ہوگا تو خاموش ہور ہے گا گر برو نہ بنلائے گا۔ بخل ف اجنبی بے وقو ف یاوش کروہ خدا جائے کیا بنلادے۔

_ل لم أجد الحديث في "موصوعة أطراف الحديث السوى الشريف"

مول نافضل الرحمن صدحب نے ایک باربیمقولهٔ عل فره ما۔

تا آنکه ما درخوب جفت ندشوو هه و بر دارخو دراند کشد عارف ندشود

(جب تک إلى مال عين في مدمواور جيمونا بهائي بيدانه مواس وقت تك عارف بيس موتا)

حسن بے سیکن اگر کوئی ایساخواب دیکھتا ہے تو بہت پر بیٹان اور تنگدل ہوتا ہے اور بیداری میں آو کیا ہو جھتا۔ اس سے معلوم ہوا کہ ہ س کے ساتھ جومحبت ہے وہ دوسری نوع کی ہے اور بیوی کے ساتھ

جومحبت ہو و دوسری سم کی ہے دونوں محبیل کیسال نہیں۔ اور یہیں سے بدیات بھی معلوم ہوگی کہ

ا حادیث محبت بیل جو بظ ہرا خترا ف معلوم ہوتا ہے کدایک سے حضرت عا نشر کا سب سے زیادہ

محبوب ہوتا معلوم ہوتا ہے۔ دوسری سے حصرت ابو بکرنکا۔ تنیسری سے حضرت فاطمہ کا واقع میں

ان میں نعارض اورا ختلہ ف کچھ نہیں۔ سب حدیثیں مختلف درجات محبت کے اعتبار سے سیح میں

كيونكرجس حديث عصرت عائشة كازياده محبوب بونامعلوم بوتاب اس كامطلب بيب ك

ازواج مطہرات میں وہ سب سے زیادہ محبوب میں اور جس حدیث سے حضرت ابو بمرصد ان

کازیادہ محبوب ہونا معلوم ہوتا ہے اس کا مطلب یہ ہے کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے اسی ب

واحباب میں سب سے زیادہ محبوب تھے۔

ہے۔اوراگروہ لغل بندہ کا ہے تواس میں بھی یہی حالت ہے کیونکہ نغل عبدیا عبادت ہے یامعصیت ہوگا۔ای ہے اور ہرا کیک میں نافع وانفع وضارم ضرموجود ہیں۔ پس جس طرح کا فعل جس زیانہ میں ہوگا۔ای طرح کی صفت زیانہ کے لئے ٹابت ہوگی۔اگر کسی نافع عبادت کا صدور ہوا تو زیانہ میں اس قتم کی برکت حاصل ہوگی۔ برکت آئے اور کسی انفع عبادت کا صدور ہوا تو زیانہ میں اس قتم کی برکت حاصل ہوگی۔

علیٰ بذااگر کسی خفیف گناہ کا صدور ہوا تو زمانہ صدوراس کے لئے برازمانہ ہے اورا گر کسی بڑی معصیت کا صدورہوا تو زمانہ صدور اس کے لئے بہت برازمانہ ہے خلاصہ یہ ہے کہ آثار کا تفاوت اول اعمال کے لئے ٹابت ہوتا ہے اس کے بعداوراس کے داسطے سے زمانہ کے لئے لئے۔
کا تفاوت اول اعمال کے لئے ٹابت ہوتا ہے اس کے بعداوراس کے داسطے سے زمانہ کے لئے ۔
پس چونکہ رمضان میں قرآن کا نزول ہوا اور وہ مشرف و معظم ہے ۔ اس کے شرف کی وجہ سے زمانہ بنی مضان بھی ضرور مشرف ہوگا۔

تلاوت كى اہميت

صاحبوا کیا مجازی محبوب کی گفتگو اور خط ملنے کا وفت تو بیارا اور عزیز ہواور محبوب حقیق کے کلام نازل ہونے کا وفت مشرف وممثاز نہ ہوقطع نظراس کے کہ خدا کا کلام ہے اوراس کو انتساب ایک زات عظیم کے ساتھ ہے۔

سیبھی ویکھوکہ اس آفاب کے نور نے تمہارے قلوب کوکیاروشی بخشی ہے اورتم کوکس ضغطہ کی صلت سے نکالا ہے تمہارے استبارے کیا نافع ہوا ہے ورندا گراس کلام الہی کوصرف حق تق لی سے ای تعلق نہ ہوتا تو تم اس سے کیے مستفید ہوتے غور کرواگر آفاب و نیا چند روز تمہاری آنکھوں سے اوجھل ہوجائے اورتم اس زیانہ جس بیار بھی ہو۔ یا مشلا ایک ماہ تک دگا تا روز تمہاری آئی ہو۔ یا مشلا ایک ماہ تک دگا تا ر

آخریداس قدر پریشانی کیوں ہے کھن اس وجہ سے کہ خدانے تم کوایک نورویا تھا جو برائے چندے تم سے الیا گیا ہے۔ اور پھر خدا کا فضل و کھھو کہ نور بھی کس چیز ہے دیا جو کہ تم سے لاکھوں کود ور مگراس کی شعاعیں جیں کہ تم کومنور کررہی جیں اور تم طرح طرح کے فائد نے اس سے حاصل کرد ہے ہو۔ اورا گر شعاعیں نہ ہوتی تو گونور آفاب کے ساتھ بھر بھی تعلق ہوتا۔ مگر چونکہ تم تک نہ پہنچتا۔ اس لئے تم اس کے فیض سے محروم رہتے۔ اس طرخ کلام القد صفت قدیم ہے کہ وہ مثل آفاب کے ہواراس کے لئے بھی شعاعیں جی جو تم پر فائض ہور ہی ہیں جن کو کلام القد صفت قدیم ہے کہ وہ مثل آفاب

ص حبوا اگر آتی ہے ہوتا اور یہ شعامیں نہ ہوتیں تو ہم اسکے فیض ہے کس طرح فیض یاب ہوتے ہے گئی بڑا کا م نفسی سینے کا ام لفظی کی شعامیں نہ ہوتیں تواس صفت کی فیضان سے کس طرح فیض حاصل کرتے اور چونکہ کا ام امتد کو ضدا تعالیٰ کے ساتھ یہ خاص تعلق ہے ہے ہی وجہ ہے کہ خدا تعالیٰ کلام مجید کی تلاوت ہے بہت خوش ہوتے ہیں ۔خواہ مجھ کر پڑھا جائے یا ہے سمجھے فیدا تعالیٰ کلام مجید کی تلاوت ہے بہت خوش ہوتے ہیں ۔خواہ مجھ کر وتواس ورجہ پڑھا جائے برطلاف دوسر ہے اعمال اسانیہ شل وعا وذکر کے کہ اگر ان کو بے سمجھے کر وتواس ورجہ معتد ہے وہ بہت محمل معتد ہے وہ بہت کھ کر وتواس ورجہ معتبل معتد ہے وہ بہت کی مقبول ہے۔

حال وقال كافرق

یہ بات عقل اور ماہ ت کے موافق بھی ہے۔ ویکھو قاعد و ہے کہ اگر مصنف کسی کوابنی کوئی اس برا ھے ویکھے تو اگر ہصنف کسی کوابنی کوئی اس برا ھے ویکھے تو اگر جدائ کو یہ معلوم ہوجائے کہ بیٹن کسی ہے جمجھے پڑھ رہا ہے لیکن محض اس وجہ سے کہ اس نے ہما رہے کا مربود کی اور اس کی قدر کی مصنف کو پڑھنے والے سے ضرور محبت ہوجائے گی اور دل میں اس کی قدر ہوگی۔

معزت مرشد نا جا جی امدادالقد صاحب فرماتے تھے کہ میں ایک بارد بلی بازار میں جا تا تھا۔ ایک اون پر ایک مجمع دیکھا کہ اس کے درمیان میں ایک مخص رسالہ در دنامہ غمنا ک نہایت شوق سے پڑھ ر ہاتھا۔ کوئی عاشق مزاج معلوم ہوتا تھ۔ حضرت صاحب بھی اس مجمع میں کھڑے سے اور خوش ہے۔
خوش ہور ہے تھے کہ میرا کلام پڑھ رہا ہے اس شخص کو گوخبر نہتی گرمصنف پاس تھے اور خوش تھے۔
اس طرح آیک بار پانی پت تشریف لے جاتے تھے۔ راہ میں ایک شخص کود یکھا کہ وہ میہ
رسالہ پڑھتا جاتا تھا۔ اور بیر رسالہ وروتا مہ غمناک اگر چہ شاعری کے اعتبار سے اعلیٰ پایہ کارسالہ
منیس ہے لیکن چونکہ دروول سے نکلا ہے اس لئے نہا بہت اثر رکھتا ہے واقعی از ول خیز و برول ریز و۔
عالب کے زمانہ کا واقعہ مشہور ہے کہ آشفتہ کے اس شعریں۔

حال آشفتہ چہ دانی بے خبر ہیں درخیال زلف عبر بوئے تو (بخبر مخص آشفتہ کے حال کو کیا جان سکتا ہے وہ تو عبر جبسی خوشبووالی زلف کے خیال میں مست ہے) آشفتہ کے استاد نے جب ساصلاح دی۔

حال آشفتہ پریشان ترشدہ ہے درخیال زلف عمبر بوئے تو (تیری عزرجیسی خوشبو والی زلف کے خیال میں پریشان شخص کی حالت اور بہت زیادہ پریشان ہوگئ ہے)

عالب کودونوں شعر پہنچ تو سن کر کہنے لگا کہ استاد صاحب قال ہے اور شاگر د صاحب حال ہے۔ واقعی جب ول ہے کوئی کلام نکاتا ہے اور دل میں در دہوتا ہے تو پھس بھسا کلام بھی وہ مزاد ہے جا تا ہے کہ ہزار چست بندشیں وہ مزانہیں دیتیں۔ مولا ناروم اپنے اس شعر میں اس درو دل اور استغراق کو ظاہر فرما کر قافیہ وغیرہ پراعتراض کر نیوالوں سے عذر فرمارہے ہیں۔

دل اور استغراق کو ظاہر فرما کر قافیہ وغیرہ پراعتراض کر نیوالوں سے عذر فرمارہے ہیں۔

تاف از بیشم منا ہوں میں میں میں میں میں میں میں ایک دومہ من لیش جن و مدارموں

قافیہ اندیشم ودل دار من اللہ کویدم مندیش جز دیدار من اللہ اللہ علیہ مندیش جز دیدار من اللہ اللہ علیہ مندیش جز دیدار من اللہ علیہ مندیش جز دیدار کے میرے دیدار کے کسی اور چیز کی طرف خیال مت کر)

جس کا حاصل بیہ ہے کہ اگر مجھ ہے کسی مقام پرشاعرانہ فروگذاشت ہوگئی تو وہ قابل گرفت نہیں ہے کیونکہ شاعرانہ نکات پرنظرر کھنا توجہ الی الشعر پرموتو ف ہے اور یہاں ویداریارے اتن فرصت کہاں کہ ان نضول دھندوں میں وقت ضائع کریں۔

نسبت انعكاس

صاحبو! اس تقرير بين غور كرو م تؤمعوم بوج ئ كاكه بهار ي نبي كريم عليد الصلوة

والتسليم كومك شاعرى نه دينے كى ايك يې وجه تقى - بھلاغيرت خداوندى كيول كر چائز ركھتے كه ان كامحبوب ومحبّ اس كى طرف سے التفات ہٹا كر دوسرى چيز پرملفت ہو۔

یک بھید ہے کہ اکثر محققین صوفیانے مریدوں پر متعارف توجہ دینے کے طریق کو بالکل ترک فرمادیا۔ وجہ یہی ہے کہ اس طریق توجہ میں مریدوں کے اندرکسی کیفیت کے القاء کے لئے اس قدر استغراق کرنا شرط تقرف ہے کہ بجز اس مقیدالقاء کے کسی طرف التفات نہ ہواور تمام ترخیالات سے بالکل خالی ہوجاتی ہے۔ سواس سے بالکل خالی ہوجاتی ہے۔ سواس قدر توجہ مستغرق خاص القد تعالی کاحق ہے۔ ان کوغیرت آتی ہے اور ان پر سخت گراں گزرتا ہے کہ یہ شخص خدا ہے بالکل غائب ہوجائے۔

فرمایا کهایک ضرر شیخ کوتوجه متعارف میں بیرہوتا ہے کہا پنے تصرفات دیکھ کر چندروز میں عجب پیدا ہوجا تاہے۔

د دسرا بیضرر ہوتا ہے کہ اس متعارف طریق توجہ سے شہرت ہوجاتی ہے۔اور جس شہرت کے اسہاب مقدورالترک ہوں وہ اکثر مصر ہوتی ہے۔

تيسرا پيضرر ہوتا ہے كہ شيخ اگر ضعيف القوى ہوتو بيار پڑ جا تا ہے۔

فيض رساني كي صورتين

ہاں دوصور تیں فیض رسانی کی اور ہیں۔ایک توان کےا فتتیار ہے بھی خارج ہےوہ بیکہان کی ذات بابر کات کے فیوش بر کات ہے کہ ان کواس طرف النفات بھی نہیں عالم مستفیض ہوتا ہے جس طرح بارش کداس کے برہنے پر قابل حصدز مین میں قوت نمو پیدا ہو ہی جاتی ہے خواہ بارش حاہے یانہ جا ہے۔ یا آفماب کہ اس کے طلوع کے وقت جو چیز اس کے مقابل ہوگی ضرور منور ہوگی د دسری اختیاری ہے جیسے مریدین کے لئے دعا کرناان کی حال کی تکرانی کرنا شفقت ہے تھیجت کرنا اس کوبھی توجہ بالمعنی اللغوی کہا جاتا ہے تکراصطلاحی توجہ بمعنی تصرف نہیں۔ سواس کا سیجھ مضا کفتہیں بلکہمسنون ہے کیونکہ طریق توجہ کے ترک کاسبب محض پیتھا کہاں ہیں ذات باری تعالیٰ سے نیست ہے اور چونکہ اس دوسرے طریق میں ترک التقات الی التذہبیں۔ بلکہ زیادت التفات الى الله ہاس لئے بدیذ موم نہیں بلکہ مطلوب ہے اور گواس وفت توجدالی الخلق بھی ہوتی ہے گروہ توجہ صارف عن التوجہ الی الخلق نہیں ہے۔ بلکہ دعا کی تو حقیقت ہی توجہ الی الخالق ہے گوشفع سہی اور بینفع بھی خاص مرضی حق ہے اور تگرانی ونصیحت وتعنم وغیرہ میں بھی اعتدال توجہ الی الخلق غیر مانع عن الحق ہے اور وہ بھی یا ذن الخالق ہے تو ہےا نہر کی اُنخلق دغیب عن الحق نہیں ہے۔ حاصل بیہ کے کوجہ کی دشمیں ہیں ایک وہ کہ جس میں غدانتی کی سے غیبت ہے دوسرے وہ کہ اس میں احداث التفات الی المخلق ہو۔ مہل قتم کملا کے ہاں متر دک ہے دوسری قتم مطلوب وحمود ہے۔البتہ بہافتم کی توجہ ہے اگرا پے تصرف اور بزرگی کا اظہار مقصود نہ ہو بلکہ محض افا د ہفلق مقصود جو تو و و جائز ضرور ہے۔ گو کملاء نے اس کوایک باریک وجہ سے چھوڑ دیا۔ اوراگراس سے اپنے تصرف کااظہار یازیادت جاہ مقصود ہوتؤ ندموم ہے ۔ پس اس کاوبی مرتبہ ہے جوغلام پہبوان اوررنجیت سنگھ کی کشتی کا ۔جس درجہ میں میدشتی محمود و ندموم ہے بالکل اس وجہ میں میدتوجہ بھی ہے۔ خلاصه بيهموا كه نؤجه مروح في نفسه كو ئي مطلوب ومحبوب چيزنېيس ہے کيکن اگراس کی غايت محمود ہوتواس میں بالعرض مطلوبیتہ کی شان پیدا ہوجاتی ہے۔جس طرح ورزش! کہ اگراس ہے غرض تحفن اظہار توت وصولت ہے تو لغو ہے اورا گراعا نت مخلوق اس کی غرض ہے تو محمود ہے بس بیاتوجہ ا یک مرتبہ میں توطاعت ہے لیکن اس ہے زیادہ درجہ میں وہ تنجہ ہے جوکہ انبیاء اپنے اصحاب اورامت پر فرماتے تھے۔ یہی انبیاء کا طریق توجہ ہے جس کا کاملین نے اختیار کیا ہے کہ اس میں وہ خطر ونہیں ہے جو کہ مروج طریق میں ہے اور وہ توجہ ہے ختق کی طرف جو کہ ہو لک کے لئے نہایت مصر ہے جتی کہ ابتداء میں مطلق افاوہ کے ارادہ سے بھی توجہ کر نامصر ہواہے۔

منصب بدايت

ایک برزگ کی دکایت مشہور ہے کہ اپنے ایک مرید کو درت تک ذکر وشغل بتلاتے رہے اور سیس تغیر وتبدل بھی کرتے رہے لیکن مرید کو بچھ نفع نہ ہوا۔ آفر درت کے بعداس سے بہ لوچھا کرتم یہ ذکر وشغل کس نبیت ہے کرتے ہواس نے کہا کہ حضرت بہی نبیت ہے اگر کسی ق بل ہوجاؤں کا تو دوسروں کو نفع بہنچاؤں گا۔ شخ نے کہا تو بہ کرو بیشرک ہے کہا بھی سے بڑے بنے کا خیال ہے اور خلق مقصور بالنظر ہے جب اس نے اس خیال سے تو بہ کی فورا فی کدہ محسوس ہوا۔ کو یا افادہ کی غرض اور خلق مقصور بالنظر ہے جب اس نے اس خیال سے تو بہ کی فورا فی کدہ محسوس ہوا۔ کو یا افادہ کی غرض سے بھی جوکہ بظا ہر محمود ہے خلق کی طرف توجہ کرنا ابتدا اسلوک میں مضر ہوتا ہے۔

اس دکایت سے اس بات کا بھی پہتہ چلنا ہے کہ شیخ کامل بھی مایوس نہیں ہوتا نہ مرید کو ہوں کرتا ہے۔ جبیہا پیشے کہ سے تک تغیر اور تبدل کرتے رہے اور نفع نہ ہونے سے جواب نہیں ویا۔ بلکہ اس کا وہ شی میں رہے تن کہ مرض اور اس کا علاج نکال ہی لیا۔ وہ طبیب حاذق کی طرح سمی نہ کسی نئی اور بیز بن میں برابر لگاہی رہتا ہے برخلاف خلا ہری اور ناقص پیروں کے وہ ایسے موقع پر گھبرا جاتے ہیں اور دوسر کے بھی مایوں کردیتے ہیں ای پر حافظ شیر از کی رحمہ القد فر ماتے ہیں۔ بندہ پیر خرا باتم کہ لطف شیخ وزامہ گاہ ہست وگاہ فیست بندہ پیر خرا باتم کہ لطفش وائم ست ہیں زائد لطف شیخ وزامہ گاہ ہست وگاہ فیست ہیں میکدہ کے مالک کا غلام ہوں کہ اسکی ہمیشہ مبریانی رہتی ہے جبکہ ناقص شیخ اور پا بندی شریعت زامہ فتنہ کی مہریانی بھی بھی رہتی ہے جبکہ ناقص شیخ اور پا بندی شریعت زامہ فتنہ کی مہریانی بھی بھی رہتی ہے جبکہ ناقص شیخ اور پا بندی

مصرع یانی میں شیخ ہے مرادشیخ ناقص ہے بکلہ اگر کشف ہے بھی کسی کی شقاوت طاہر ہوجائے تب بھی مایوس نہیں ہوتے بلکہ دعا تبدل بالسعادت کی کرتے ہو۔ البت اگر کسی نبی کووجی ہے کسی کا فتم علی الکفر معلوم ہوجائے تواس وقت مایوس ہوناوہ خدا ہی کے حکم ہے ہے۔

سے من اس مکایت سے میر بات بھی طاہر ہوگئی کہ ہر مخص منصب ہدایت کی لیانت نہیں رکھتا۔ بہت سے نام کے ایسے ہادی ہیں کہ جن کی غرض ہدایت سے محص طلب جاہ ہے اس لئے حدیث میں ارش دے۔ لایقص الاامیر او مامور او مختال اُ۔

لمستاحمد ۲۹٬۲۲۳ ۲٬۲۲۳ ۲٬۲۲۳ مشكوة المصابيح ۲۳۱٬۲۳۰ كوالعمال ۲۹۰ ۵۰ ا

لیعنی وعظ کہنے کی ہمت وہی کریگا کہ یا تو خود امیر المومنین ہے یا امیر المومنین کی طرف ہے مامور ہے یا منگبرا درنٹس پر در ہے۔

اس کئے کہ جب ہدایت عامد کا کام امیر المومنین کی ذید داری میں ہے تو اس کووہ خود کریگا یا خود نہ کریگا تو کسی کواس خدمت پر مامور کریگا۔ پس جو خص نہ ہے نہ وہ ہے اور پھر بھی ایسا کرتا ہے تو معدم ہوا کہ آپ بھی خواہ مخواہ اپنے کو یا نچوں سواروں میں گنتے ہیں۔

کیکن اس سے بیشید نہ کیا جائے کہ جب بغیرامیر یا مامور ہوئے وعظ کہنا مخال ہونے کی علامت ہونے کی علامت ہونے کی علامت ہوتے آج کل کے تمام وعاظ میں ہے توایک شخص بھی امیر یا مامور نہیں تو یہ کیا یہ سب سب تیسری شق میں داخل ہیں۔

کہنے کی جرائت کر بیٹھتے ہیں۔
سہار نپور میں ایک جابل و یہاتی نے آکر وعظ کہا۔ اندازیہ کہآ پ نے بل ازنماز پوچھا کہ
یہاں آواج (وعظ) تو نہیں ہوتی۔ معلوم ہوا کہ نہیں۔ پس نماز کے بعد پکار مارا کہ ساہبو!
صاحبو!) آواج ہوگی۔ سنتی پڑھ کر وعظ کہنے بیٹھے۔ اعوذ بسم انڈ غلط سلط پڑھ کر لیسین کی تلاوت شروع کی۔ آیتی الٹی سیدھی پڑھ کر ترجمہ شروع کیا۔ خوبصورت ہوا ہے جمر! اے جمر! اے جمر!

بدوں اہل دیں اور اہل عقل کے انتخاب کے جولوگ اس کام کوکرر ہے ہیں اور اہل نہیں ہیں تو وہ

وعظ کے رنگ میں گمراہی پھیلا رہے ہیں۔ضروری مسائل تک سےان کو دا قفیت نہیں ہوتی اور وعظ

ا گر تھے کو پیدا نہ کرتا نہ زمین پیدا کرتا نہ آسان نہ عرش نہ کری وغیرہ وغیرہ ۔ پھر فر ماتے ہیں بھائیوا تھکے ماندہ ہیں۔ اس واسطے آ دھی آ وائی اب ہوئی آ دھی پھر ہوگ ۔ کوئی نا بینا ذی عم اس مجلس میں موجود تھے انہوں نے واعظ صا دب کواپنے پاس بلاکر بٹھلہ یا اور بوچھا کہ آ پ کی تسیل کہاں تک ہے؟ فرماتے ہیں کہ جاری تھیل (بخصیل) ہے باپڑ۔ بس ایسے واعظ رہ گئے ہیں۔

الکین اگر غور کیا جائے تو معلوم ہوگا کہ یہ لوگ گولغو ہیں اور اپنی اور ، وسروں کہ تضیقی اوقات کرتے ہیں گر چر بھی ان بیچاروں ہے اس قدر نقصان نہیں ہوتا اور آئی گر ای نہیں پھیلتی جتنی وو لوگ کھیلاتے ہیں کہ آب وتاب کی تقریریں مشق کیے ہوئے ہیں۔ بڑے بڑے افاظ یاد ہیں۔ صوفیاء کی اصطلاحات از بر ہیں۔ حافظ کا دیوان پیش نظر ہے۔ زبان ہے کہ آب روال کی طرح بہتی چلی جاتی ہے کی اصدا کے سامت کے اکثر افراد تیا ہوئی ہیں کو ان سے امت کے اکثر افراد تیا ہوئے ہیں جاتی ہیں کہ ان سے امت کے اکثر افراد تیا ہوئے اور ہور ہے ہیں کہی نے خوب کہا ہے۔

حرف ورویشاں بدز درم دووں ﴿ تابہ پیش جاہلاں خواند فسول (درویشوں کی ہاتیں چوروں اور کمینٹولیوں کے سامنے الیمی ہیں جیسے جاہلوں کے سامنے عملیات کا پڑھنا)

ابليت ارشاد

یمی لوگ ہیں جن کو حدیث میں اومخال کے لفظ سے یا دفر مایا گیا ہے۔ غرض اس حدیث سے یہ بات صاف معلوم ہوگئ کہ وعظ طاعت ہے ۔ کیکن اگراس میں نیت خراب ہوتو وہی گناہ ہوجا تا ہے صوفیاء نے اس راز کو سمجھ کرابتداء سلوک میں وعظ گوئی سے بانکل منع فر میا ہے کہ قبل اصلاح نفس اس میں اغراض فاسدہ غالب ہوتے ہیں۔ پس معلوم ہوا کہ ہم خفس الجیت ارشاد کی منبیں رکھتا۔ سوشنخ ہوتا ہم خفس کا کا مزیس ہے۔

یں رسات وی برہ ہر ما یہ اس میں اور آئی ہے جواو پر کی حکایت میں نہ کور ہوئی کہ س دقیق مرض

کومرید کے سجھ لیا جس کی نبیت ذکر وشغل ہے بڑا بنتا اور خلق مطمح انظر بنانا تھا۔ پس اس طرح توجہ
اگر چہ طاعت ہوئیکن وہ کاملین کے لئے طاعت نہیں۔ کیونکہ اس میں گانوق کی طرف کا ل توجہ
لازمی اور ان کے حق میں غیرائند کی طرف التفات کرنا شخت گناہ ہے ۔

لازمی اور ان کے حق میں غیرائند کی طرف التفات کرنا شخت گناہ ہے ۔

بہر چہ از دوست وامائی چہ کفرال حرف چہ ایمال

مبہر چدازیاردورافتی چہزشت آں نقش و چہزیبا (جب بچھ کو دوست سے دورر ہنا ہے تو پھر کفروایمان برابر ہے جب یار سے دور پڑا پھر چاہے اچھا نقشہ ہویا برا)

تصورشخ

خلاصہ یہ کفش توجہ اگر چہذیبا ہولیکن جب کہ اس نے خدا سے ہٹادیا تو یقیناً زشت ہے۔
ای طرح تصور فیخ کا شغل بھی محققین نے اکثر وں کو ہتلانا بالکل ترک کردیا ہے۔ سبب میں ہے کہ
تصور شیخ میں مرید کی پوری توجہ فیخ کی طرف ہوتی ہے۔ ذات باری کی طرف باسکل التفات نہیں
ہوتا اور یہ غیبت کا ملین کے بال جرم ہے خوب کہا ہے

کیک چٹم زدن غافل از اں شاہ نباشی ہے۔ شاید کہ نگا ہے کند وآگا، نباشی (اس بوشاہ سے ایک پیک جھیکئے کے برابر بھی غافل شدر ہنا چاہیے ایسا نہ ہو کہ وہ متوجہ ہو اور تھے خبر شہو)

ممکن ہو کہ جب وقت میخف پیر کے تصور میں مصروف ہے وہی وقت ادھر کی طرف کی توجہ کے ناقع ہونے کا ہو۔اس کے جرم ہونے کو کہا گیا ہے _۔

مرآل کوغافل ازخل کیے زیال ست جڑ درآل دم کافراست امانہاں ست (جوتھوڑی دیرے لئے کافرہا کرچہ ظاہر نہیں ہے)

(جوتھوڑی دیرے لئے بی حق تعالی سے فال ہاتی دیرے لئے کافرہا کرچہ ظاہر نہیں ہے کفر سے مرادفقہی کفر نہیں اصطلاحی کفرہا ای لئے اس سے کاملین کی طبیعت اچھتی ہے اوران کو خت وحشت ہوتی ہے ۔ اس کی بالکل ایسی مثال ہے جیسے اوجھڑی کہ اس کو حلال تو ضرور کہیں گے اگر غلاظت سے صاف ہولیکن ایک لطیف المزاج ہوگی ہے پوچھو کہ اس کے خیال سے بھی وحشت ہوتی ہے۔

اورصاحبو! اصل توبیہ ہے کہ جب ایک دل میں دوخیال نہیں آسکتے۔ ایک نیام میں دوخیال نہیں آسکتے۔ ایک نیام میں دونگوق دونگوارین نہیں روسکتیں پھر کیوں کر کہا جائے کہ جوتوجہ کہاں میں خدات کی خیال ضعیف اورمخلوق کا خیال غالب ہو۔ پھراس کوقصدا پیدا کیا جائے ، وومطلوب ہوگی۔

حضرت ابراہیم ادھم کا واقعہ مشہور ہے کہ جب بیٹے ہے جوشنے محمود کے نام سے مشہور ہیں ملے اور مسرت کا جوش عالب ہوا تو ندا آئی کہ حب حق ہوول میں یا حب پسر ہے جمع ان دونوں کوتو ہر کز نہ کر آخروہ مجاب بھی مرتفع ہو کیا اوران کا انقال ہو گیا۔

لیکن اس سے یہ نہ جھٹا جا ہے کہ بیٹے سے بالکل ہی محبت نہ کرے جس قدراس کاحق شرکی ہے وہ جب حق پر بنالب نہ ہوئیں سنت ہے۔ اس شیخ سے بھی ایس محبت نہ ہوئی جا ہیے جو کہ خدا کو بالکل بھلا دے جبیبا کہ آجکل جائل فرقوں میں متعارف ہے۔ اس طرح بیوی بچوں سے وہ محبت نہ ہوکہ خدا تعالیٰ کی طرف اتج جدارے۔

لاتله كم امو الكم و لا او لا دكم عن ذكر الله (تم كوتم بارے مال اور اولا واللہ كى ياوے عاقل تـكرتے يا كميں)

الطاف خداوندی کے قربان جائے بیتھم نہیں فرمایا کہ اولادے بالکل محبت نہ کرو کیونکہ جانے ہیں کہ جبت اولاد ملح ہے۔ انتثال ہونہ سکے گااس کئے بول فرماتے ہیں کہ اس قدران کے دریے نہ ہوکہ خدا کو بھول ہی جاؤ۔

مکن ہے کہ کی ہے۔ بیدا ہوتواس قدر ذموم تفہری اور جوغرض توجہ کی ہے وہ ضروری۔ ہی اگر توجہ ترک کریں توامر فدموم کا اختیار لازم آتا ہے اور توجہ اختیار کریں توامر فدموم کا اختیار لازم آتا ہے سواس کا جواب ہے ہے کہ توجہ ہے جوغرض ہے اس کا حصول توجہ ہی جی مخصر نہیں ۔ کیونکہ اگر اس کا حصول اس جی مخصر ہوتا تو انہیا علیم السل م اسی طریق کو اختیار فرماتے۔ جب انہوں نے ایس مہیں کیا تو معلوم ہوا کہ اسی طریق جس اس کا انحصار نہیں ہے بلکہ دوسرا طریق بھی موجود ہے بعنی تعلیم وارشاد شفقت ووعا اور بیطریق ایسا ہے کہ جس میں نہ کوئی خطرہ ہے نہ کوئی اندیشہ بات کہیں کہیں جایزی جورسالہ در دنا مدخمن کی نوعیت شعریہ کے سلسد میں بڑھ گئی۔

ثواب قرأت قرآن

میں یہ کہ رہا تھا کہ اگر مصنف کے سامنے اس کے کلام کو بے سمجھے بھی کوئی شخص محبت اور وق وشوق ہے پڑھے تواس کواچھا معلوم ہوتا تھ۔ چنا نچے حضرت حاجی امداد الندص حب نوراللہ مرقد و نے اس شخص کورسالہ درونامہ غمن ک پڑھتے ساتو آپ بہت خوش ہوئے ای طرح کلام ضداوندی کو جب ہم پڑھیں گے تو خدا تعلی سند کے کیونکہ خدا ہے تو کوئی چیز غائب ہی نہیں۔ مداوندی کو جب ہم پڑھیں گے تو خدا تعلی سند کے کیونکہ خدا ہے تو کوئی چیز غائب ہی نہیں۔ مایکون من نجوی ثلاثة الا ہو رابعہم ولا حمسة الا ہو ساد سہم

(کوئی سرگوشی تین آ دمیوں کی ایسی نبیس ہوتی جس میں چوتھا وہ (لینی املہ) نہ ہواور نہ یا نچ کی (سرگوشی) ہوتی ہے جس میں چھٹادہ نہ ہو)

اور ماتكون في شان وما تتلوامنه من قرآن ولا تعملون من عمل الا كنا عليكم شهودا اذ تفيضون فيه ا ورما يعزب عن ربك من مثقال ذرة في الارض ولافي السماء الخ

(اور آپ سلی انشدعلیہ وسلم خواہ کسی حال بیس ہوں اور منجملہ ان احوال کے آپ کہیں سے قر آن پڑھتے ہوں اور ای طرح اور (لوگ بھی جتنے ہوں) تم جو کام کرتے ہوہم کوسب خبررہتی ہے جب تم اس کام کوکرنا شروع کرتے ہواور آپ کے دب کے ملم سے کوئی چیز ذرہ برابر بھی غائب نہیں نہ ذبین میں اور نہ آسان میں)

کہ خدا ہے کوئی چیز بھی آسان اور زمین کی اوجھل نہیں ہوسکتی ۔ تو خدا تعالی ضرورخوش ہوں سے اورمتوجہ ہوں گے۔حدیث میں ہے کہ خدا تعالی کسی طاعت پر اتنامتوجہ بیں ہوتے جتنا قرات قرآن یر متوجہ ہوتے ہیں۔ شاید کسی کو بیشبہ پیدا ہو کہ اس وقت سب لوگ بجھ کر ہی پڑھتے تھے اس لیے اس وتت کی حالت پر بدارشاد ہواہے اس سے بیس معلوم ہوتا کہ اگر بے سمجھے پڑھے تب بھی توجہ ہوگی۔ سواس کاجواب میہ ہے کہ قرآن شریف صرف عرب ہی کے لئے نہیں نازل کیا گیا۔اورساری دنیا کی زبان عربی ہی نہیں اور حدیث بشارت میں عرب کی خصیص نہیں فرما کی گئے۔اس کے علاوہ حدیث میں موجود ہے کہ ایک مرتبہ سمات آٹھ آ دمی تلاوت قر آن شریف کررے تھے۔ان میں پچھے عربی تضاور کچھ مجمی تنے۔جن ہے اچھی طرح پڑھتے بھی نہ بنمآتھا۔اس وقت حضور صلی اللہ علیہ وسلم تشریف لائے اورس کرارشا دفر مایا کہ اقرؤا فکل حسن۔معلوم ہوا کہ پجھ لوگ بورے طور بر قا در نہ تھے۔ پس جب حضور نے سب کوحسن فر ما یا تو معلوم ہوا کےحسن ہونے کے لئے بالکل عرب کے موافق ہوجا نا ضرور نہیں بلکہ کھی کوتا ہی بھی رہے جب بھی فضیلت حاصل ہے اور لفظی اور معنوی کوتا ہی میں کوئی معتدبہ تفاوت نہیں۔ بیاتو حدیث تھی اور کیجئے کشف ہے بھی اس کی تا سَدِ ہوتی ہے۔ چنانچہ احمد بن طنبل کی حکایت پہلے مذکور ہوئی کہ انہوں نے حق تعالیٰ کوخواب میں ویکھا اور عرض کیا کہ سب ہے زیادہ کون کی طاعت ہے آپ خوش ہوتے ہیں۔ وہاں ہے ارشاد ہوا کہ قرآن پڑھنے ہے۔

امام احد نے پوچھا کہ بجھ کر پڑھنے سے یابلا سمجھ بھی ارش دہوا نفھم او بغیر فھم۔ پس معلوم ہوا کہ قر آن شریف خواہ کسی طرح پڑھا جائے۔ وہ ضرور مفید ہے خواہ بجھ کر ہو یابلا سمجھ ہواور اس کے پڑھنے سے خداہ ہم سے ضرور خوش ہو تنے بعنی ہم کوثواب وانعام واکرام ہوگا۔ کیونکہ خداک خوش کے یہ عن نہیں جو ہماری تنہاری خوش کے معنی ہیں کہ ایک بات بی کے موافق ہوئی طبیعت باغ باغ ہوگی۔ ہس کی حقیقت انفعال ہے۔خداوند جل وعلا طبیعت اور انفعال سے بالکل پاک ہاں ہوتا۔ یہ سری حقیقت انفعال ہے۔ خداوند جل وعلا طبیعت اور انفعال سے بالکل پاک ہے اس پرصفات کا اطلاق غایات کے اعتبار سے نہیں ہوتا۔

بہر حال قرآن کی خلاوت میں آپ نے سنا کہ کیا اجرعظیم ہے۔افسوں ہے کہ اس اجرعظیم کوچھوڑ کر بہواو ہوں کے بندوں نے کلام القد کوجو کہ رضائے خداوندی کاؤر لیعہ تھا۔ دنیا طبلی کاؤر لیعہ بنالیا ہے کہ روبیلیکراورمقرر کرتے قرآن سناتے ہیں۔ بیسر تے دین فروشی ہے۔

اجرت تعليم

لیکن تعلیم قرآن کواس پر قیاس نہ کیا جائے کیونکہ تعلیم قرآن پر شخواہ لیٹا جائز ہے۔اوراس جواز کے حنفیہ کے ہاں ووطر ایل ہیں۔ایک توبیہ کہ امام شافعیؓ نے جائز کہا ہے۔اور حنفیہ نے بوجہ ضرورت کے اس پرفتوی دیا ہے۔لیکن بیطر ایق بالکل کمزور ہے۔ہم کو کمیا ضرورت ہے کہ ابو حنفیہ کی تقلید کا التزام کر کے بلاوجہ امام شافعیؓ کے غرجب برعمل کریں۔

ووسراطر این بیہ کے دیوں کہا جائے کہ خود حنفیہ کا قاعدہ ہے کہ محبوس کا نفقہ من لہ الجلس پر ہوتا ہے۔ پس جب بیخص خدمت دین میں محبوس ہے اس کا نفقہ تمام اہل اسلام پرواجب ہے۔ اس طرح جو محفص کسی قتم کی خدمت دیدیہ میں مشغول ہوسب کا بھی تھم ہے بعض مسلمانوں کا دے دینا بطور فرض گفایہ کے سبکوسبکدوش کردے گا۔

ر ہا یہ شبہ کدا گریہ بحثیت نفقہ کے دیا جاتا ہے تو شخوا ہیں کیوں مقرر کی جاتی ہیں۔ کیونکہ نفقہ بھڈر کفایت ہوتا ہے۔

اس کا جواب یہ ہے کہ ٹی نفسہ تو بھی تھم ہے گر اس میں ہمیشہ جھٹڑ ہے پیدا ہوا کرتے میں۔ عالی کہتا ہے کہ اب کے مہینہ میں میرے پچاس روپے خرج ہوئے۔ووسرے کہتے کہ میں بی ہوئے۔ جب روزانہ جھٹڑ ہے رہا کرتے تو سلسلہ تعلیم چند روز میں ورہم برہم ہوجا تا۔ اس عارض کے لئے انتظاماً تعیین کی بھی اجازت ہوگی۔جیسا کہ آب کے طاہر رہنے کے لئے اصل میں کثیر ہونا شرط ہے۔لیکن ظم عوام کے لئے اس کی دہ دردہ کے ساتھ تقلید کردی گئی۔ بیتقریر بالکل اصول حنفیہ کے موافق ہے۔

البتہ یہ تقریر ہرمعلم کے لئے نہ چل سکے گی۔ بلکہ وہاں بی چلے گی جوا پنے کوخادم دین مجھ کرکام کررہے ہیں۔ اس کا معیاریہ ہے کہ اگر موجودہ تنخواہ میں کا م چل رہا بواور دفعۃ ترتی کی خبرآئے اور بجز ترقی کے اور کوئی مصلحت تعلق سمایق کے قطع کرنے کی نہو۔ پس اگر وہ فحق تعلق ترک کرکے چلا جائے تب آو سجھ تا چاہیے کہ تب آو سجھ تا چاہیے کہ مقصود ہے اور اگر ترک تعلق نہ کرے تو سجھ تا چاہیے کہ مقصود اصلی خلق التہ کودین فع چہنچانا ہے۔ معاوضہ اصلی فدکور پر لیتنا ہے ایک کے لئے جزا جس نہ ہوگا اور ایک کے لئے جزا جس سے جما جائے گا۔ غرض اجرت تعلیم اس عدم جواز میں واخل نہیں۔

اجرت امامت

البنة تراوح من قرآن سنانے كاجومروج قاعدہ اكثر مقام پر ہے وہ اس ميں ضرور داخل ہوگا۔ حافظ رحمہ اللّٰد تعالىٰ عليہ لے خوب فرمايا ہے۔

دام تزور کمن چول دگرال قرآن را

اورای طرح مردول پرقرآن پڑھ کردام لینے کا حال ہے کہ قرآن قروثی ہے اوران کا قیاس تعلیم پراسلے نہیں ہوسکا کہ تعلیم شعائر میں ہے ہاس خدمت کیلیے محبوں ہوتا موجب بڑاء ہے اورازوت کا کاختم اورایصال قواب بیشعائر ہے نہیں اگر چہ طاعت ہے۔ البتہ خودتر اوت کیا ہجگا نہ نماز کی باجماعت بیشعائر ہے ہاں کے لئے اگر مفت کا امام نہ طے تو اجرت تھ ہرانا درست ہے۔ اس تمام تقریر ہے قرآن شریف کا مشرف و معظم ہونا خابت ہوگیا۔ پس جب ایک معظم چیز رمضان میں نازل ہوگی تو رمضان شریف کیوں معظم و شرف نہوگا۔ قرآن کی تعریف میں ایک بزرگ فرماتے ہیں میں نازل ہوگی تو رمضان شریف کیوں معظم و شرف نہوگا۔ قرآن کی تعریف میں ایک بزرگ فرماتے ہیں میں اور معنی میٹ در معنی در معنی در معنے در معنی در معنی در معنے در معنی در معنے در معنی در معنے در معنے در کر بات کے بچھنے والے تو سمجھتا بھی ہے کہ قرآن کیا چیز ہے انسانوں کے پاس انسانوں کے پاس

د پدارخداوندی

رونمااس واسطے کہ خدائے تعالی کورنیا میں بلاواسط تو دیکے نہیں سکتے ۔ پس کلام اللہ کو پڑھنا

کو یا دیدارخداوندی ہے محقوظ ہوتا ہے۔

اس موقع پرایک حکایت یادآئی۔اس سےاس کی پوری حقیقت طاہر ہوگی ایک مرتبداریان کے بادشاہ کے خیال میں اتفاقاً ایک مصرع یادآ ممیل

ورابلق کے کم دیدہ موجود (دُرِابلق کسی نے بہت بی کم دیکھا ہوگا)

مصرع کہ کر بڑی خوشی ہوئی۔ لیکن دوسرامصرع تیارنہ کرسکے۔ شعراہ کوجمع کیا اور مصرع کانے کی فرمائش کی۔ کسی ہے مصرع نہ لگ سکا کیونکہ ایک مہمل مضمون ہے آخرسب کوزنداں کی دھم وی سان لوگوں نے پریشان ہو کر ہندوستان میں عالمگیر کے پاس خطاکھا کہ تمہمارے یہاں بڑے بڑے شعراء کووہ مصرع دیا گیا۔ بڑے بڑے شاعر ہیں کسی ہے مصرع کہا کر ہماری جان بچاؤ۔ چنا نچے شعراء کووہ مصرع دیا گیا۔ لیکن مضمون ایسا ہے تکا تھا کہ کسی کی بچھ بھی ہی ہیں نہ آ یا۔ شدہ شدہ زیب النساء متخلص بیخی کو بھی اس کی خبر بینی اس نے بھی غور کیا لیکن مصرع نہ لگ سکا۔

ا تق قا ایک روز مند پریشی آنکھوں میں سرمہ ڈال رہی تھی۔ آئینہ سامنے تھا کہ سرمہ کی تیزی

ا تق قا ایک روز مند پریشی آنکھوں میں سرمہ ڈال رہی تھی۔ آئینہ سامنے تھا کہ سرمہ کی تیزی

گراشک بتان شر مہ آلود (گرمعشو ت نے جب سرمہ ڈال رکھا ہوتو سرمہ طا ہوا آنہوں)

چنا نچے عالم گیر کوخبر ہوئی اور شعر پورا کر کے ایران بھیجا گیا۔ جب بادشاہ نے مصرع سناس کے

اورتمام شعراء کے دل میں اس شاعر کی بردی قدر ہوئی اور شاہ ایران نے عالمگیر کوکھا کہ اس شاعر

کوہمارے پاس بھیج دو۔ عالمگیر کوجب اس پیغام کی خبر پیٹی تو بہت ذبی تی ہوا کہ اگر شاعر کو ظاہر کرتا ہوں

تب بھی مشکل ہے اورانکار کرتا ہوں تو بھی مشکل ہے آخراس نے زیب النساء ہے کہا کہ تمہاری شاعری

کا یہتے ہوا۔ ذیب النساء نے کہا گئم اس کے جواب میں میری طرف سے یہ کھودو کہ

ورخن نخفی منم چوں ہوئے گل در برگ گل ہم اس میری طرف سے یہ کھودو کہ

ورخن نخفی منم چوں ہوئے گل در برگ گل ہم اس ہرکہ و یہ ن میل دار در ترخن بیند مرا

(میں اپنے کلام میں اس طرح نخفی اور پوشیدہ ہوں جس طرح بھول کی خوشبو بھول کے

پہتے شر چھی ہوتی ہوتی ہے جوخف تھی کو دکھی جا تا ہوہ و جھے میرے کلام ہی میں دکھی ہے)

(مین اپنے کلام میں اس طرح نخفی اور پوشیدہ ہوں جس طرح بھول کی خوشبو بھول کے

پہتے شر چھی ہوتی ہوتی ہو کے بیا ہے معلوم ہوا کہ متورات سے ہیں اس طرح ہمارا مطلوب حقیقی

چنانچہ یہ کھی کر بھیج و یہ گیا ہے معلوم ہوا کہ متورات سے ہیں اس طرح ہمارا مطلوب حقیقی

جن کے ویدار کے ہم متمیٰ ہیں ۔ بوجہ اس کے کہ ہم اس کے ویدار کی تاب ٹیس لا سکتے اور ہم اس کو

جس قدرزیادہ پڑھتے جاؤای قدرزیادہ علوم منکشف ہوتے جائیں گے۔ چنانچہ حدیث یس ہے لاتقفیٰ عجائبہ اور پھرلطف ہیاکہ جاہلوں کو بھی لطف آتا ہے اور عالم کو بھی مزا آتا ہے ۔ صاحب ظاہر بھی جان کھوتا ہے اور صاحب باطن بھی قربان ہوتا ہے _

بہارعالم حسنش ول وجان تازہ میدارد ہی برنگ اصحاب صورت را بوار باب معنی را (اس کے حسن کے عالم کی بہاردل کو اور روح کو تازہ رکھتی ہے اسکی رنگت سے صورت کو پہند کرنے والے خوش ہوتے ہیں اور اس کی خوشبو سے معنی کو پہند کر نیوالے خوش ہوتے ہیں)

حظة للاوت قرآن

اک صدیت یش ہے لا یع حلق من کئر قالم دواقع یس مشاہرہ ہوتا ہے کہ کتا ہی سنو جی نہیں ہجرتا نیا مرہ آتا ہے۔ اگر کہا جائے کہ یہ سارالطف خوش آوازی کی وجہ ہے ہوتا ہوگا تو ہم کہیں گے کہ آخر وہ لطف اور وہ رپودگی جو تر آن پڑھنے ہوتی ہے شعر پڑھنے ہے کیوں نہیں ہوتی ۔ اس میں وہ مزا کیوں نہیں حاصل ہوتا۔ اوراگر کی کواس میں زیادہ مزا آتا ہوتو وہ ابھی تا ہل خطاب ہی نہیں۔ اس کوچا ہے کہ صحت اوراک وسلامت حال پیدا کرنے کی کوشش کرے پھر موازنہ کی نہیں۔ اس کوچا ہے کہ صحت اوراک وسلامت حال پیدا کرنے کی کوشش کرے پھر موازنہ کرے۔ ساحو! قر آن تو قر آن ہے۔ بھی اگر مکہ میں جاکر وہاں کی بجبیر نماز میں سنو جواکی جزو ہے آن کا تو معلوم ہو کہ کیا چیز ہے۔ بھی اگر مکہ میں جاکر وہاں کی بجبیر نماز میں سنو جواکی جزو وقت کی بجبیر کہ دل میں چھری نگلی چلی جاتی ہے لیکن اگر کی کومرہ نہ آئے وہ تا وہ ترک نہ کرے وہاں کی بجبیر کہ دل میں چھری نگلی جلی جاتی ہے لیکن اگر کی کومرہ نہ آئے وہ تاوہ ترک نہ جب ہم کومرہ جیسا بعض لوگ کہتے ہیں کہ صاحب ہم تو اس وقت قر آن شریف پڑھیں گے کہ جب ہم کومرہ جیسا بعض لوگ کہتے ہیں کہ صاحب ہم تو اس وقت قر آن شریف پڑھیں گے کہ جب ہم کومرہ تر ہے گئے گریہ خیال یالکل ہی لغو ہے۔

اس کی توالی مثال ہے کہ کی شخص سے کہاجائے کہ تم مقویات کھائی کرجلدی سے بالغ لے لم آجد الحدیث فی "موسوعة اطراف الحدیث البوی النویف" ہوجا وَ تا كرتم كون بوغ كے لطف حاصل ہوجا كيں اور وہ جواب بيں يوں كے كے صاحب بہلے من بلوغ كى لذت كو بين و كي لوں كيے كداس احتى كوكس بلوغ كى لذت كو بين و كي لوں كيے كداس احتى كوكس طرح وہ لذت و كھلا دى جائے اور سوااس كے اور كيا جواب اس كو ديا جائے گا كہ جب تم بالغ موجا و كي خودتم كومعلوم ہوں كے ۔ اس كے سواكوئى تدبيراس كے حصول كي نين ۔

ای طرح ان تابالغ پیروں کو یہ جواب دیا جاتا ہے کہ اس لذت کے حاصل کرنے کی کوئی تہ بیراس کے سوانبیں کہ ہمت کر کے پڑھنے لگو۔ چندروز میں جب تمہارا قلب عالم طفلی ہے نکل کر سن بلوغ میں پنچ گا خود بخو داس کو بیلذت حاصل ہوگی البتہ بیضرور ہے کہ بیضاض بلوغ اس وقت حاصل ہوگا کہ تلاوت ودیگر اعمال میں ہوائے نفسانی کا والی نہ ہو بلکہ مطلقا اس ہوائے نفسانی کا اتباع جھوڑ دواورا طاعت خداور سول میں ہموج و کے کہ طریقت کا بلوغ یہی ہے ۔

خاتی اطفالند جز مست خدا کہ نیست بالغ جزر ہیدہ از ہوا (سوائے اس شخص کے جوتو م کی محبت میں مست ہے ساری مخلوق نابالغ ہے سوائے اس شخص کے جس نے خواہشات نفسانی کو چھوڑ دیا ہے کوئی بھی نابالغ کہلانے کا مستحق نہیں ہے)

تزغيب ذكراللد

بعینہ ببی فلطی اہل سلوک کو ہوتی ہے کہ وہ ابتداء میں میہ چاہجے ہیں کہ ہم کوذکر میں لذت آنے لگے اور جب لذت حاصل نہیں ہوتی تو پر بیٹان ہوتے ہیں اور بعض اوقات ذکر کوچھوڑ ویتے ہیں۔ حالا نکہ ریخت ضطی ہے کیونکہ ذکر میں لذت آنے کا اس کے سواا ورکوئی طریقہ نہیں کہ ذکر کی زیادہ نہوتی تاریخ کا اس کے سواا ورکوئی طریقہ نہیں کہ ذکر کی زیادہ ہوگا قلب زیادہ منقاد ہوگا۔ ووسرے خیالات کمزور پڑیں گے۔ ذکر میں خود بخو دلذت حاصل ہوگا۔

اس کی مثال یوں سیجھئے کہ فن شاعری میں جوملکہ پیدا ہوجاتا ہے کہ ایک شعر سن لیا اور طبیعت تلملا گئی۔ ایک عمرہ بات کان میں پڑی کہ چبرہ کھل گیا۔ آخر سے بات کب پیدا ہو تھ ہے اور کیونکر پیدا ہوتی ہے۔ فل ہر ہے کہ ایک مدت کے بعدا در کئر ت مشق سے ہوتی ہے اور ابتداء سے ہرگز سے حالت نہیں ہوتی۔ بلکہ اول اول تو محض مشقت ہوتی ہے۔

و کیھئے بچیکو کمتب میں بٹھلاتے ہیں۔ سبتل فاری کا پڑھاتے ہیں مارتے ہیں پکڑ بلاتے ہیں۔ اس طرح جب سلسلہ جاری رکھاجا تا ہے اس کوزبان وانی پخن فہمی کاالیا سلیقہ پیدا ہوجا تا ہے کہ کلام لطف من کرکیرا کچھ مخطوظ ہوتا ہے۔ پس کیا کی شخص نے محض اس وجہ سے کہ ہم کوی لب اور مومن کا ساوجد کیوں نہیں پیدا ہوتا۔ شاعری کی مشق چھوڑ دی ہے یا کسی شاگر دیے اپنے استاد سے یہ فرمائش کی ہے کہ جس اس وقت شاعری کروں گا کہ جب آپ کی طرح جھے شعر جس اطف آنے گئے گا۔ صاحبو! کیا قر آن شریف کی خلاوت آئی بھی ضروری اور مرغوب نہیں جستی فاری اور شاعری کی تحصیل۔ صاحبو! کیا قر آن شریف کی خلاوت آئی بھی ضروری اور مرغوب نہیں جستی فاری اور شاعری کی تحصیل۔ صاحبو! جس طرح اس مثال میں ظاہری کی فیات جس ایک وقت وہ تھا کہ نہ تھیں اور اب ایک وقت وہ تھا کہ نہ تھیں اور اب ایک وقت وہ ہے کہ گئی وجہ الکمال ہیں ای طرح باطنی کیفیات بھی گواس وقت حاصل نہیں لیکن اگر کے مام کیے جاد کے تو ایک وہ وقت بھی ضرور آئے گا کہ سب حاصل ہوج کیں گی ارشاد ہوتا ہے۔ کام کیے جاد کے تو ایک وہ وقت بھی ضرور آئے گا کہ سب حاصل ہوج کیں گی ارشاد ہوتا ہے۔ کام کیے جاد کے تو ایک وہ وقت بھی ضرور آئے گا کہ سب حاصل ہوج کیں گی ارشاد ہوتا ہے۔ کام کی جاد کے تو ایک وہ من قبل فیمن اللہ علیکھے۔

اندرین راہ می تراش وی خراش ہیں تادے آخردے فارغ مباش تادم آخر دے فارغ مباش تادم آخر دے انوصاحب سربود تادم آخر دم تخراش (محنت ومشقت) ہے فارغ مت رہ تاکہ تیرا آخری سانس آخردم تک تراش وخراش (محنت ومشقت) ہے فارغ مت رہ تاکہ تیرا آخری سانس آخرونت تک شایداللہ کی مہر یائی ہے کارآ مدموجائے)

ال من كم كمواتع يرحفرت حاجى الدادالله صاحب نورالله مرقدة بير برها كرتے ہے ...
یا بم اورایانه یا بم جنتوئ می كنم به الله حاصل آیدیانه آید آرزوئ می كنم به ایم اسكول اس كی جنتو كرتار بول گا حاصل بویانه بواس كی تمنا كرتا ربول گا حاصل بویانه بواس كی تمنا كرتا ربول گا)

جو پچھ بھی ہوتم کام کئے جاؤ۔ تمہارا کا محض طلب ہے کیونکہ تمہارے اختیار میں وہی ہے۔ ثمرہ کا ملنا ندملنا بیان کا کام ہے تم اس کے درپے نہوں

فراق ووصل چہ ہاشد رضائے دوست طلب ﷺ کہ حیف باشد از وغیر اوتمنائے (جدائی اور ملاقات کی پرواہ نہ کر معثوق کی خوشنو دی ڈھونڈھ کے اس سے سوائے دوسری چیز طلب کرنا قابل افسوس ہے۔)

ایک دوسرے بزرگ اس سے بڑھ کرفر ماتے ہیں _

ارید وصالہ ومرید حجری جنہ فاترک ماارید لما مرید (شمراس کا وصال چاہتا ہوں اور وہ میری جدائی چاہتا ہے کس میں اس کے ارادہ کوائے

ارا وه برقر بان كرتا مول اور چموژ تا مول)

اورصاحبو! اگریدند کہاجائے تو کیا خدا ہے بدلہ لیما ہے اگروہ ہمارا کا منہیں کرتے تو ہم اس
کا کام کیوں کریں ۔ غور کریں اگرایک مردار بازاری عورت ہے تعبق ہوجاتا ہے تو قلب
پرکیا کیا صدے گزرتے ہیں۔ کس کس اندازے وہ امتحان اور آز مائش کرتی ہے۔ کتناموقع ہموقع
ستاتی ہے کین آئش محبت مشتعل ہی ہوتی چلی جاتی ہے۔ بنہیں ہوتا کہ اس کے امتحانات یا غمز دون
سے گھبرا کراس کو چھوڑ ویں۔ تو کیا ذات باری جل مجدہ کی محبت اور عظمت مسلمان کے دل میں اتنی
مجی نہ ہوجتنی ایک بازاری عورت کی حیف ہے ہم پراور ہمارے اس اسلام پر۔
عشق مولے کہ کم از لیلے بود ہی میں اور ہمارے گشتن بہراواولے بود

عشق مولے کہ کم از لیلے بود ہل کوئے کشتن بہراواولے بود (کیامولی کاعاشق لیل ہے بھی کم درجہ میں ہوسکتا ہے گلی کو چوں میں اس کے لئے گشت کرنا تواور بھی زیادہ بہتریات ہے)

ایک عارف کا واقعہ لکھا ہے کہ ان کوایک روزیہ آواز آئی کہ کتنی بی عبادت کرو پھو قبول نہیں۔
اس آواز کوان کے ایک مرید نے بھی سنا۔ دوسرادن ہوا تو وہ ہزرگ پھر عبادت کے لئے اٹھے پھروبی آواز آئی۔ جب کئی مرتبہ ایسا ہوا تو مرید نے کہا کہ آپ بھی عجیب آدمی ہیں ادھرکوئی پوچھتا بھی نہیں اور آپ ہیں کہ خواہ مخواہ مخواہ کو اس حالے ہیں جب قبول ہی نہیں تو محنت سے کیا فائدہ۔ان ہررگ نے جواب ہیں فرمایا۔

توانی ازاں ول پر داختن ہے کہ دانی کہ ہے اوتواں ساختن (کہ بھائی چیوڑ تو دول کیکن یہ تو بتلا دو کہ چیوڑ کر کس کے دریہ جاپڑوں) کہ بھائی چیوڑ تو دول کیکن یہ تو بتلا دو کہ چیوڑ کر کس در پر جاپڑوں۔اس جواب پر رحمت باری کو جوش ہوا اور آواز آئی گئہ ہے

قبول است گرچہ ہنرئیست ہی کہ جزمانیا ہے وگر میست (اگرچہ تہماری عبادت کی جیس کی خیر ہمارے سواکوئی دوسری پناہ گاہ نیس تو منگ کی نہیں لیکن خیر ہمارے سواکوئی دوسری پناہ گاہ نیس تو متماری ہے دات قبول کرلی گئیں)
تہماری ہے بے ڈھنگے بن کی عبادات قبول کرلی گئیں)
کے اگر چرتمہاری عبادت تو کسی ڈھنگ کی نہیں لیکن خیر! جب ہمارے سواتمہارے کوئی نہیں ہے تو تم کوئی ہم ہی لے لیس کے صاحبو! طالبین کی بیرحالت ہونی چاہیے کہ ب

طلب گار باید صبورہ حمول جی کہ نشنیدہ ام کیمیا گرمسلول (کسی چیز کے طلب کرنے والے کو صبر اور برداشت کرنا جاہے میں نے کسی کیمیا گرکو مایوس اور آبدیدہ ہوتے نیس دیکھا)

طلب البي كي ترغيب

افسوس ہے کہ طلب خداطلب کیمیا کے بھی برابر نہ ہو کہ اس میں توانسان سالہا سال میں افسان سالہا سال میں افسان سالہا سال مناع غارت کردہ ہے جین وآ رام کوخیر باد کہددے اور طلب خدا میں پہلے بھی نہ ہو سکے۔طالب کی توبی حالت ہوتی ہے کہ ۔

بر اعداز برائے ولے بارہا ہے خورند از برائے گلے خارہا

(اینے دل کو بار باراس کے راستہ پر چلا پھول حاصل کرنے کے لئے تو بہت سے کا نوں کی تکلیف برواشت کرنا پڑتی ہے) اوراس کی بیرحالت ہوتی ہے کہ ۔

خوشاوقت شورید گان شمش بی اگر رایش بیندو گرمزهمش میور گراوقت شورید گان شمش بامیدش اندرگدانی صبور در کشد در این بیند دم در کشد در در کشد در این بیند دم در کشد (اس کے فم میں جتال رہنے والوں کے لئے بہت ہی خوش نصیبی ہے چاہے کوئی زخم کی یا در خم کا مرہم طے اس کے فقیر بادشاہی ہے نفرت کرتے ہیں اس کی مہریانی کی امید شی گرائی ہی برمبر کرتے ہیں۔ اللہ تعالی کے مشاق عشق کے فم کی شراب چنے رہتے ہیں اگر کسی متم کی فی بھی و کھتے ہیں تو خاموش رہتے ہیں اگر کسی متم کی فی بھی و کھتے ہیں تو خاموش رہتے ہیں اگر کسی متم کی فی بھی و کھتے ہیں تو خاموش رہتے ہیں)

اور جو خصص صرف مرہم کا طالب ہو وہ طالب تہیں ہے۔ وہ بیچارے تو بجائے حصول کے امید پر ہی نظرالگائے جیٹھے جیں۔جیسا کہ او پر کے شعر جیں ہے ۔ بامیدش اندرگدائی صبور (اس کی امید پر گدائی پر بھی صبر کرنے والے جیں)

ایک طالب کا قول ہے ۔

اگرچه دورافقادم باین امیدخورسندم نیک که شایددست کن باردگرجانان کن گیرد (اگرچه شی دور پژا بوا بول گراس امید برخوش بول که شاید میرامعشوق مجردوسری بار میرا با تھ بکڑلے) طالب وہی ہے کہ اگر ہزار اس کو کہا جائے تو دوزخی ہے تو مایوس نہ ہواور دس ہزار مرتبہ کہا جائے کہ تو جنتی ہے تو کا بل اورست نہ ہے اس کے طلب کی بیرحالت رہے ۔ اے برادر! بے نہایت در گی است ہٹ ہر کہ بروے می ری بروے مایست (اے بھائی اس کے در باری کوئی انتہانہیں کے کسی جگہ بننج کر کوئی ہے کہددے کہ میں منزل پر پہنچ چکا ہوں ،اگر تو کسی منزل پر پہنچ جاتا ہے تو اس کے اوپر دوسری منزل ہے) ا یک مخص کی نسبت لکھا ہے کہ اس کوروزانہ ہیآ واز آتی کہ تو کا فرجوکر مرے گا جب ایک مدت تک بدآ واز آئی توشیخ ہے ذکر کیا۔ انہوں نے فر مایا کہ میاں میدوشنام محبت ہے۔ مایوس نہ موجانا محیوبوں کی عادت ہے کہ محب کو چھیٹرا کرتے ہیں۔خوب کہا ہے ۔ بدم تفتى وخورسندم عفاك التد كو كفتى الله جواب تلخ مى زيبدلب لعل شكر خارا

(تونے مجھے پُر اکہااور میں خوش ہوں اللہ جھے کومعاف کرے تونے تھیک کہاہے، میٹھے میٹھے مرخ ہونٹول ہے کڑا جواب بھی احیمامعلوم ہوتاہے)

اور بیا یک قتم کاامتحان ہے لیکن بیرماری باتیں اس وقت بر داشت ہوتی ہیں کہ دل میں خدا کی محبت بوری بوری ہو۔ پس اس کی کوشش کرواور اس طریق کے دوامر ہیں۔ ذکر کی کثر ت اورابل الله کی صحبت ، ان کے یاس آنا جانا۔اس سے تدریجاً ماسوائے اللہ سب تمہارے ول سے نكلنے شروع ہوجا تمیں سے اور بیرحالت ہوگی۔

عشق آل شعله است كه چول برفروخت 🌣 🦙 جرچه جز معثوق باشد جمله سوخت (عشق آ گ كالياشعله ب كه جب ده بحرك المتا بي معثوق كي سوائ جو يجه بوتا بسب كوجلاديتاب) اوري

تع لادر آل غیری براند 🌣 درگر آخر که بعدلاچه ماند ماندالدامتد باتی جملہ رفت الله مرحبااے عشق مرکت سوزرفت (لفظ لا كي تكوار سے اللہ كے سوا ہر معبود كود وركر د سے چرد كيجاب كيا ياتى رہ كيا۔ مرف الا الله باتى ره كياباتى سب كچه چلاكيا -مبارك بوا عشق كرتو دوسرول كى شركت كوجلانے والا اور دوركرنے والا ب

ترتبيب سلوك

اس تقریر ہے تر تیب سلوک کی بیگل کہ اول کس صاحب محبت کو ڈھونڈ کراس کے باس جایز و

اوراس کی حسب ہدایت کام میں لگ جاؤ۔ ثمرات کے طالب نہ ہوخو دبخو دہوں تو خدا کا فضل سمجھو۔ طاعت میں لذے نہ ہوتو اس کوچھوڑ ومت۔ کثرت ہے ذکر کرو۔

اس میں قرآن بھی واض ہے۔ اگر پڑھتے ہوئے طبیعت اکتانے لگے، توای کی کثرت کرو۔ اگر الفاظ بھی سیح نہ بول تو اسلام المحرک المرافظ اللہ بھی سیح نہ بول تو اسلام اللہ بھی تو اسلام اللہ بھی تو اسلام اللہ بھی تو اسلام اللہ بھی ہوگا ہے۔ اللہ بھی ہوگا جوالفاظ درست کر سکتے ہیں اور پھر نہیں کرتے۔ ورنہ زیادہ تروک ہوگا اور کھی بھال ، اور چھان بین ولوں کی ہوگا۔ اگر موٹی زبان کا آدمی ٹالط پڑھتا ہے کین ول سے پڑھتا ہے تر وحدا کے نزد میک بین اللہ ہو۔

ال موقع پر بھے ایک شخص کی حکایت یا دآئی۔ ایک شخص بھے سے تعلق رکھتا تھا بھے سے کہنے لگا

کہ بٹس کسی فقیر سے طالب ہوجاؤں۔ بٹس اس پر ناراض ہوا اور سمجھا دیا چندروز کے بعد پھرآیا
تو بٹس اس سے مزاحاً کہنے لگا کہ کیوں کسی فقیر کے طالب بھی ہوئے؟ تو وہ نہایت خلوص اور سادگی
سے جواب دیتا ہے کہ بس اب تو تیرای پلہ پکڑلیا ہے۔ اس کا یہ ' تیرا'' کہنا ہزاروں حضوراور جناب
سے ٹریادہ لڈت بخش تھا کیونکہ دل سے تھا۔

اس موقع پر بطور جملہ معترضہ کے ایک اور بات بھی کہدونی ضروری ہے کہ جس طرح نرمی علاج ہے گرمی بھی اس سے بڑھ کرعلاج ہے اور پہی وجہ ہے بعضے بزرگ درشت مزاج مشہور ہوجاتے ہیں تو خوب سجھ لو کہ وہ درشت مزاج نہیں۔ بات بیہ کے جعض اوقات اگرایک بات کونری سے سجھایا جائے تو دل پر اس کا آنا اثر نہیں ہوتا اور نہ وہ اتنی مدت تک یا در بتی ہے جتنا کہ بدشتی سجھایا جائے تو دل پر اس کا آنا اثر نہیں ہوتا اور نہ وہ اتنی مدت تک یا در بتی ہے جتنا کہ بدر شتی سمجھانے ہے کہ تو دل پر اس کا اتنا اثر نہیں ہوتا اور نہ وہ اتنی مدت تک یا در بتی ہوتا کہ بدر شتی سمجھانے ہے کا اور آئر بڑا کہ اس کا بیر تذبذ بدب بدر تھی سے کہ اس کی اور سے نہیں ہوتی ہے۔ چانے جان کہ وجہ یہ ہوتی ہوتا ہے اس کی وجہ یہ ہوتی ہے کہ اس سے ڈیا دہ پر قدرت نہیں ہوتی ہ

چنانچ حضرت موی علیه السلام کے زمانہ میں رائی کا تصدمشہور ہے کہ زمین پر بیٹھا ہوا محبت کے جوش میں خدائے تعالی کوخطاب کر کے بیکلمات کہدر ہاتھا ہے

تو کجائی تاشوم من چاکرت جلا چارفت دوزم کنم شاند سرت (نو کبال ہے کہ بی تیری خدمت کروں تیرے پہلے ہوئے کپڑے کی دوں اور تیرے سرکے بالوں کوئنگمی کرووں)

وامثال ذالک! اتفاقاً! حضرت موی علیدالسلام اس طرف سے گزرے۔ بیکلمات من کرفر مایا کد میال کس کو کہدر ہے ہیں؟ اس نے کہا کہ خدا سے۔حضرت موی نے ڈانٹا اور ڈانٹ کر چیے گئے۔ راگی نے جو بیسٹا تو مارے خوف کے قرامی اور سخت پر بیٹان ہوا۔ اس وفت حضرت موی علیدالسلام پروی آئی کداے موی ! تم نے ہمارے بندے کوہم سے جدا کردیا۔ اس حکا بت کومولا ناروم فرماتے ہیں۔

زین نمط بیبودہ می گفت آل شبال بی گفت موی باکست اے فلال گفت موی باکست اے فلال گفت ہوئی ہات کے خیرہ سرشدے بی خودسلمان ناشدہ کافرشدے گفت موئی ہائے خیرہ سرشدے بی خودسلمان ناشدہ کافرشدے گفت موئی دہائم دوختی بی وزیشیائی توجائم سوختی وی آلمہ سوئے موی ازخدا بی بندہ ماراچا کردی جدا توبرائے وصل کردن آلمی بندہ ماراچا کردی جدا توبرائے وصل کردن آلمی بندہ بردہ چردابا فغول با تیں کردہاتھا۔ حضرت موئی علیہ السلام نے پوچھااے شخص توبر با ہوں جس کے برائے فصل کردن آلمی مختص توبہ باتیں کس سے کہدرہا ہے جوائے نے کہا کہ بیس اس ذات پاک سے بات کررہا ہوں جس نے کہا کہ بیس اس ذات پاک سے بات کررہا ہوں جس نے کہا کہ بیس اس ذات پاک سے بات حضرت موئی علیہ السلام نے فرمایا ہے اور بیز بین وآسان اس کے بیدا کے ہوئے ہیں۔ حضرت موئی علیہ السلام نے فرمایا ہے افسوس توبر با دہوگیا تو خودسلمان نہیں رہا بلکہ کافر جوگیا۔ چروا ہے نے کہا کہ السلام تو نے میرا مزدی دیا ادر شرمندگ سے تو جوگیا۔ چروا ہے نے کہا کہ السلام پروٹی نازل بوگی کہ تو نے ہمارے بندے کوئی مے جدا کیوں کردیا تو جھے ملاقات کرنے کو آتا ہے یا میرے بندوں کو جھے صورا کرنے کے لئے آتا ہے)

حضرت موی نے جوبہ سنا تو گھرا گئے اورجلد ہی آ کرچرواہے سے معافی جابی یہاں چرواہے کے معافی جابی یہاں چرواہے کی عبال چرواہے کا است تھی۔موی نے جب معافی جابی تواس نے بیجواب ویا کداےموی ایس تازیاندلگاہے کہ بیں بری دور پہنچ گیا۔۔۔

آ فرین بردست و بر باز و ئے تو (تیرے ہاتھوں اور بزوؤں کوشا ہاش ہے) اس جملہ حکایت ہے معلوم ہوگیا ہوگا کہ اگر زبان پر بیجہ کم بھی اور کم عقلی کے گستا خاندالفاظ بھی ہوں لیکن دل محبت سے معمور ہو توالفاظ پرنظر نہیں ہوتی۔ لیکن بیضروری ہے کہ ان فروگز اشتوں کی معافی انہی لوگوں کیلئے ہے کہ جن کو تھیج پر قدرت نہیں ہے ورندا کر قدرت کے باوجودا بیا کرے تو ضرور گنم گار ہوگا۔

تفريط متعلمين

افسوں ہے کہ اس وقت اس امرکی طرف سے ایس ہے تو جبی ہے کہ لوگ اس کو بالکل ضروری نہیں سیجھتے۔ اکثر لوگ پوری درسیات ختم کر جاتے ہیں لیکن ان کوقر آن پڑھنے کا سلیقہ نہیں ہوتا۔ سیجھتے ہیں کہ صرف کی کتابوں میں صفات حروف وقارج پڑھ لئے ہیں اس سے زیادہ اور کیا جا ہے حالا نکہ ریافیالی غلط ہے۔ قرآن کا پڑھنااس وقت تک نہیں آتا جب تک کہ خاص کسی سے اس کونہ سیکھا جائے۔ نری درسیات سے کھونیس ہوتا۔

بعض لوگ کہتے ہیں کہ جب ہم نے مشن نہیں کی تو ہم کو خلط پڑھنا جا کر ہونا چا ہے اور ہم کو معذور ہونا چا ہے کہا کہ حال کہ معذور ہونا چا ہے کہا کہ حال کی سیارہ پڑھتے والے طالب علم سے کہا کہ حال کی بی کو بلالا۔ وہ حافظ جی کو بلالایا۔ میں نے کہا کہ یہ کیا جمافت ہے؟ کہاں حافظ جی کو بلالایا۔ میں نے کہا کہ یہ کیا جمافت ہے؟ کہاں حافظ جی کو بلالایا۔ میں آتو کہتا ہے جی میں نے مخارج کی مشن نہیں کی ۔ تو کیا یہ عذر قبول ہوسکتا ہے؟ تو جیسا یہ مخص اس غلطی ہے تی سکتا ہے اس طرح جب مشن ممکن ہے تو ایسے عذر قبول ہوسکتا ہے؟ تو جیسا یہ مخص اس غلطی ہے تی سکتا ہے اس طرح جب مشن ممکن ہے تو ایسے اغلاط سے ان کو بچنا ممکن ہے۔

صاحبوا بیسب بہانے ہیں۔ بات اصلی وہی ہے کہ ضدا کی محبت اوراس کا خوف دل ہے جاتار ہا ہے۔اگرآئ بیاشتہار دے دیا جائے کہ جو خص مخارج حروف سیجے کرکے سنادے اس کوفی حرف پانچے رو پے لیس کے تو آج ہی شہر کے شہر قر اُت شروع کر دیں اور پچھ نہ پچھ سیجے کرکے انعام لینے کھڑے ہوجا کمین کیکن افسون ہے کہ خدا کی رضا کیسے امتک نہیں پیدا ہوتی۔ بیتو تفریط تھی سیعلمین کی۔ معلمہ۔

افراطمعلمين

اب افراط سنئے ۔ بعض معلمین و مصلحین کا کہ جن سے بالکل نہ ہوسکے وہ ان کو بھی مجبور کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ جدول اس کے قرآن پڑھنا ہی ہے قائدہ ہے۔ حسیا مشہور ہے کہ ایک پیر جی صاحب نے ایک ویہاتی سے بوچھا کہ روز و کی نہیت بھی یاد

ہے۔ اس کو چونکہ فیص عبادت یا دہیں تھی اس لئے اس نے پھی پیس بتلائی۔ پیر بی صاحب نے فرمایا کہ بے نیت روز و نیس برتا۔ و کھر وز ہی نیت یوں کیا کر بصوم غلہ نویت اس ہے چارے نے کا ہے کو بھی اس قتم کے الفی فاسٹے سے فوراً تو یا دشہ کرسکا نتیجہ یہ ہوا کہ دوسرے دن روز ہ نہ رکھا۔
ان بی بزرگ نے ہو چھا تو یہ کہ بی نیت روز ہ نہیں ہوتا اور نیت یاد نہیں ہوتی۔ غرض جولوگ صحح پر ھے بیں وہ تو صحح پر دھیں۔ اور جولوگ اس پر قادر نہیں ان کو جس طرح وہ پڑھ سکیں جا کزہے۔

برج ھے بی وہ تو صحح پر دھیں۔ اور جولوگ اس پر قادر نہیں ان کو جس طرح وہ پڑھ سکیں جا کزہے۔

برد ھے بی وہ تو صحح پر دھیں۔ اور جولوگ اس پر قادر نہیں ان کو جس طرح وہ پڑھا تھی نہیں اس لئے ہم نہیں پڑھتے سوایے لوگوں کو یا در کھن چ ہے تے تھیں صورت اس کو نہیں کہتے کہ خوب را گئی سے گا کر پڑھا جا کے محسین صورت کے معنی جیسا بزرگوں سے منقول ہے یہ جیں کہ سننے والے کو اس کی آ وازس کر سے معلوم ہو کہ اس کے دل پر کس یا عظمت جستی کا رعب چھایا ہوا ہے۔

فضيلت عشرها خيره

بات بہت دور جاہر ہی۔ اصل مقصود بیتھا کہ جب قرآن ایبامشرف و معظم ہے توجس ماہ بیساس کا بیزول دفعی ہوا ہو ہو ہمی معظم ہوگا بالخصوص وہ عشرہ خاص ماہ رمضان کا کہ جس بیس شب قدر ہے کیونکہ رمضان کو جب قرآن شریف کی وجہ سے شرف حاصل ہوا ، تو رمضان کا وہ حصہ خاص جس بین نزول ہوا ہو دوسرے حصوں کی نبعت خاص کرضر وراشرف ہوگا۔ اس لئے کہ دوسرے حصوں جس بین نزول ہوا ہو دوسرے حصوں کی نبعت خاص کرضر وراشرف ہوگا۔ اس لئے کہ دوسر قدر مصوں جس بین نزول شب قدر میں ہوا ہے اور شب قدر مصوں جس بین کہ حدیثوں سے با بت ہے عشرہ اخیرہ بیل جب نزول شب قدر میں ہوا ہے اور شب قدر مصور مضان سے مضر ورافضل ہوا۔ ایک فضیت تو عشرہ اخیرہ بیل ہوتی ہوتی ہوئی۔

ووسری فضیلت اس کی اس ہے ہے کہ اس شب قدر ہے جس کی فضیلت کیلئے خدائے تعالی ارشاد فرہ تے ہیں۔ و ما ادراک مالیلة القدر لیلة القدر خیر من الف شہر۔ (آپ سلی التدعیہ وسلم او کچے معلوم ہے کہ شب قدر کیسی چیز ہے شب قدر ہزار مہینے ہے بہتر ہے) کیونکہ حدیثوں ہے معلوم ہوتا ہے کہ شب قدر عشرہ اخیرہ کی طاق راتوں میں ہے لیمن ہوتا ہے کہ شب قدر عشرہ اخیرہ کی طاق راتوں میں ہے لیمن سے اس کے اس سے اس کے ملائے ہے۔ دونوں کے ملائے ہے یہ معلوم ہوتا ہے کہ یا تو ایک حدیث دوسری کی تغییر ہے اور یا اکثر تو طاق راتوں میں ہوتی ہے یہ دیس کیس کھی ہوجاتی ہے۔ نیز بعض لوگوں کو جفت راتوں کی ہونا کمشوف ہوا لیکن بھی جفت راتوں میں ہونا کہ موجاتی ہے۔ نیز بعض لوگوں کو جفت راتوں کو بھی ہونا کمشوف ہوا

ہے۔ تو تو ی اور تندرست لوگوں کوتو بیر مناسب ہے کہ وہ اس عشرہ کی ہررات میں اور را توں سے زیادہ عبادت کریں اور صفا کے لئے بیر مناسب ہے کہ وہ کم از کم طاق را توں میں ضرور جاگ لیں۔ طاق را توں میں سے اس وقت ایک رات تو گزرگنی اب صرف چار باقی رہ گئی ہیں۔ اس میں کوشش کر کے پچھاتی طرور جاگ لیا جائے۔

صاحبوا بیالی برکت اور خیرکی چیز ہے کہ اس سے محروم ہوجاتا گویا تمام خیر سے محروم ہوجاتا ہے۔ چنا نچہ حدیث میں ہے۔ من حوم لبلة القدر فقد حوم النحیر کلف (جو محض لبلة القدر (میں عبادت کرنے ہے) محروم رہاوہ خیر ہے بانکل محروم رہا) لیکن اس میں بعض لوگ بیسے محصل القدر (میں عبادت کرنے ہے) محروم رہاوہ خیر ہے بانکل محروم رہا) لیکن اس میں بعض لوگ بیسے موت یہ ایس کہ اگر جاگا جائے تو تمام شب جاگا جائے اورا گرتمام شب نہ جاگا جائے تو تمام شب جاگا جائے اورا گرتمام شب نہ جاگا جائے تو پچھ فائدہ نہ ہوگا۔ بید خیال بانکل لغو ہے۔ اگرا کھر حصہ شب میں بھی جاگ لے تب بھی لیا القدر کی فضیلت ماصل ہوجاتی ہے۔ اور میں کہتا ہوں کہ اگر ساری رات بھی جاگ لیاج ئے تو کیا مشکل ہے۔

صاحبوا رمضان شریف سال بحرکے بعد آتے ہیں۔ آپ کو معلوم ہوگا کہ بچھلے سال دمضان میں بہت سے لوگ ایسے بتھے کہ وہ اس وقت و نیا ہی نہیں رہے۔ ہم کو کیا خبر ہے کہ آئندہ رمضان تک کس کس کی باری ہے۔ اس لئے اگر الی بروی نعمت حاصل کرنے کیلئے کوئی ایک دورات جاگ ہی لیا تو کیا وقت کی بات ہے۔ لیکن خبر ااگر تمام رات کی ہمت نہ ہوتو اکثر حصہ کو تو چھوڑ تا ہی نہ چاہیے اور بہتر بیہ کہ بیا کم حصدہ خبر شب کا تجویز کیا جائے۔ کیونکہ اول تو اس وقت تک معدہ چاہیے اور بہتر بیہ کہ بیا کم حصدہ خس سے اور بہتر بیہ کہ بیا کم حصدہ کی لگتا ہے۔ دوسرے حدیث ہیں آیا ہے کہ خدائے تعالی اخیر شب کھائے سے پرنیس ہوتا۔ دعا ہی جی لگتا ہے۔ دوسرے حدیث ہیں آیا ہے کہ خدائے تعالی اخیر شب شی روز اندائے بندول کے حال پر رحمت خاص متوجہ فریاتے ہیں اس کے علاوہ اخیر شب شی دوز اندائے بندول کے حال پر رحمت خاص متوجہ فریاتے ہیں اس کے علاوہ اخیر شب شی و لیے بھی سکون ہوتا ہے اور اس میں ہرشب شریک ہے۔

کسی نے خوب کہا ہے من لم یعوف قدر لیلة لم یعوف لیلة القدر۔اوراس قول کی وہ وجہ ہے کہ لیلة القدر انہیں راتوں میں سے کی رات میں ہوگی تو جو مخص راتوں کی قدر کرے گا وہ لیلة القدر بھی پائے گا۔ جو بے قدری کر کے خواب غفلت میں گزراے گا وہ جب عادت لیلة القدر سے محموم رہے گا کیونکہ جب سال مجر تک برابر شب بیداری کرے گا تولیلة القدر میں عبادت صفر ور بوجائے گی۔ کہا نہی راتوں میں ایک رات وہ بھی ہے۔

____ لم أجد الحديث في "موسوعة أطراف الحديث البوى الشريف"

بوستاں میں دکا بت ہے کہ کسی شنرادہ کا ایک لعل شب کے وقت کسی آجگہ کر گیا تھا۔اس نے علم دیا کہ اس مقام کی تمام کنگر میاں اٹھا کر جمع کریں۔اس کا سبب پوچھا تو کہا کہ اگر کنگر یاں چھا نٹ کر جمع کی جا تیں تو ممکن تھا کہ لوان میں نہ آتا اور جب ساری کنگر یاں اٹھا کی گئی ہیں تو لعل صرور آسمیا ہے کہ نے اس جملہ کا ترجمہ خوب کیا ہے۔

اے خواجہ چہ پری از شب قدر نشانی ایک ہر شب شب قدر است اگر قدر بدانی (اے میاں آو شب قدر کی نشانی کوکیا پوچھتا ہے ہردات قدر کے قائل ہے اگر تو اسکی قدر کرے)

شب قدر کی فضیلت

لیکن خیرا سے باہمت تواس دفت تک کہاں ہیں کہ دہ اس گوہر ہے بہا کی تلاش میں سال بھر شب بیداری کریں گررمضان کے عشرہ اخیرہ میں تو ضرور ہی بیدارر ہنا اور عبادت کرنا چاہیے کیونکہ ان را توں میں شب قدر کا ہونا اغلب ہے اورا گر کوئی مخص نہایت ہی کمز وراور کم ہمت ہوتو خیروہ سنا کیسویں رات کوتو ضروری ہی بیدار رہے۔ کہ وہ شب اکثر شب قدر ہوتی ہے۔

یں کہتا ہوں کہ اگرا تھ تی ہے وہ رات شب قدر نہ بھی ہوئی۔ اور تم نے بگران شب قدر اس میں عباوت کی توان شاء اللہ تم کوشب قدر بی کا تواب عطا ہوگا۔ اور بیکوئی گھڑی ہوئی بات نہیں ہے۔ حدیث میں اس کی اصل ہے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم ارشاد فرماتے ہیں۔ انما المائل البالیا البیات پیرم کمن ہے کہ اس کا ہے کسی کی تشفی نہ ہوتو ووسری حدیث موجود ہے۔ حضور ارش دفرہ نے ہیں۔ الصوم یوم تصومون و الفطر یوم تفطرون و الاضحی یوم تضحون

الصوم ہوم مصورہ وی و مصورہ ہوم صحوروں رہ سے بی ہوم سے رمضان کے چا ندگ تحقیق کی اور جس کے معنی یہ ہیں کے اگرایک شخص نے نہایت کوشش ہے رمضان کے چا ندگ ای طرح چھان اس تحقیق کی بناء پر روز ہے رکھنے شروع کر دیئے پھر ختم رمضان پر عید کے چا ندگ ای طرح چھان ہیں کی اور اس کی بناء پر عید کر لی ای طرح عید اراضی ہیں بھی کیا اور چند دنوں کے بعد معموم ہوا کہ تینوں شخصی قو اس صورت ہیں دل شکت ند ہونا چ ہیں ۔ بلکہ جس دن روز ہ رکھا وہ ی تینوں شخصی قو اس صورت ہیں دل شکت ند ہونا چ ہیں ۔ بلکہ جس دن روز ہ اور عید دونوں دن عند اللہ باعتبار مقبول روز ہ کا تھا۔ اور جس دن عید کی وہ بی دن عید کا تھا بعنی روز ہ اور عید دونوں مقبول ہیں ۔ پس اس طرح میں کہتا ہوں کہ اگر شب قدر کی نیت سے عباوت ہوئی ہے اور ا تفاق سے وہ شب قدر نہ ہوئی تو ثو اب شب قدر کا طی جائے گا۔

لے سس الترمذي ٢٩٤٠ كر العمال ٢٣٤٦٠

ما حبو! اس تقریر کے بعد تو بہت ہی آسان معالمہ ہو گیا۔ اب بھی اگر ہمت نہ کی جائے تو غضب ہے۔ میددوسری نعنیات تھی عشر واخیر وکی۔

فضيلت اعتكاف

تیسری نفسیلت اس عشرہ بھی ہیہ کہ اس بیں اعتکاف مشروع ہاور ممکن ہے کہ ہیں بی فضیلت کا تمہ ہوجیہا کہ بعض نے کہا کہ اعتکاف کودوسری حکبتوں ہے بھی مشروع کہا جائے۔
خیر جو پچھ بھی ہوہم کو اس سے کیاغرض ہم کو کام کرناچاہیے۔ احکام کے حکم اور مصالح کی تلاش اور کا وق ہمارا کام نہیں۔ کیونکہ بیعلوم فکر بینہیں ہیں کہ سوچنے اور غور کرنے ہے بچھ بیں آجا کمی اور کا وق ہمارا کام نہیں۔ کیونکہ بیعلوم فکر بینہیں ہیں کہ سوچنے اور غور کرنے ہے بچھ بیں آجا کمی ایک کو بیان اس وقت تک کمی ایک کو بیان نہ کرنی چاہیے دونوں احتال ہیں۔ اس اعتکاف میں دودر ہے ہیں۔ ایک درجہ کمال کا ہے وہ تو بیہ کہ جیس تاریخ کو قبل از مفرب اعتکاف میں بیٹھے اور عید کا چا ندد کی کر باہر فکلے سویہ تو اب مکن نہیں ہے کہ خیس تاریخ کو قبل از مفرب اعتکاف میں بیٹھے اور عید کا جاور وہ یہ کہ دس دن کر درگیا۔ اور دوسر ادرجہ اس سے کم ہے اور وہ یہ کہ دس دن کر درگیا۔ اور دوسر ادرجہ اس سے کم ہے اور وہ یہ کہ دس دن کر درگیا۔ اور دوسر ادرجہ اس سے کم ہے اور وہ یہ کہ دس دن کر درگیا۔ اور دوسر ادرجہ اس سے کم ہے اور وہ یہ کہ دس دن کر درگیا۔ اور دوسر ادرجہ اس سے کم ہے اور وہ یہ کہ دس دن ہوگی تو ہوگی تو ضرور ہو جائے گی۔

صاحبوا اگردس دن ممکن نه ہوسکے نو دن سبی۔اس قدر بھی نه ہوسکے سات دن سبی ۔غرض جس قدر بھی ہوسکے اور جتنے دن بھی ہو سکے چھوڑ نا نہ جا ہیے۔

ایک بہت بڑی فضیلت اعتکاف کی ہے کہ محکف کوایام اعتکاف میں ہرونت وہی تواب مانا ہے جو کہ نمازی کونمازی مانا ہے ولیل اس کی بیرصدیث ہے۔ لایز ال احد کیم فی الصلونة ماانتظر الصلونة۔ جس کا احصل ہے ہے کہ اگر محدیث بیٹے کر تماز کا انتظار کیا جائے تو وقت انتظار ش بھی وہی تو اب مانا ہے جو کہ وقت اوالصلوق میں ہوتا ہے۔ اور ظاہر ہے کہ محکف جب ہروقت مسجد میں رہے گا تو اس کوصلوق کا انتظار ضرور رہے گا۔ اگر بیرسودے گا بھی تو اس نیت سے کہ اٹھ کرفلاں تماز پڑھنی ہے۔ کوئی کام بھی کرے گا تو اس نیت کے ساتھ کہ فلاں نماز تک ہے کام ہے۔ غرض اس کا سوتا جا گنا والحمنا بیٹھنا ہر ہر حرکت صلوق کے تھی میں گھی جائے گی۔

اس تقریر کے بعد خیال ش آتا ہے کہ حدیث ش جوآیا ہے المعتکف بعتکف الصحیح للبخاری ۱۹۰۱۱۲۱۱ کر العمال ۱۹۰۸۲۰

الذنوب كلها ويجوى له الحسنات كلهار معتلف تمام كنابول ــــركار بتاب اورتمام نيكيوں كاس كوثواب ماتا ہے) الحسنات ميں الف لام عبد كانہيں جيسااب تك مجما جاتا ہے۔ جس كى بنائنی کہ اعتلاف میں خاص حسنات کا صدور ہوتا ہے کل حسنات کا صدور خلاف مشاہرہ ہے۔ بلکہ استغراق كابوسك يهمطلب بيب كمعتكف البيا ايام اعتكاف من كويا برنيكي كررواب اس كوسب نيكيون كالواب ملتا إ وجداسكى يدب كه جب انظار الصلوة كتم مين إورمعتكف منتظر صلوة ب تو وہ مصلی کے تھم میں ہوا درصلو ق ام العیادت ہے تو اس کا اداکر نے والا کو یا تمام عیاد تیس کررہا ہے کہیں معتكف بحالت اعتكاف سب عبارتنس اداكرر مائ مساحبواس سازياده اوركيا فضيلت موكى -بة تقر ريتواس رمني تقى كه عشره اخيره من ايك نضيلت اعتكاف ہے ہوئى اور يہ بھى كہا جاسكتا ہے کہ اعتکاف میں جونعنیات آئی ہے وہ عشرہ اخیرہ کی وجہ سے کہ زمانہ افضل میں عبادت کی زیادہ فضیلت ہوتی ہے لیکن یہ ہم کو چھ معزنبیں کیونکہ معی زمانہ میں بالذات بی فضیلت ہوتی ہے جبیا کبھی بالغیر بوجہاس کے مظروف کے ہوتی ہے۔جبیہا مشروع میں بیان ہوابعد حکایت گفت معثوقے بعاش ۔ الخ کے۔ پس غرض خواہ اعتکاف میں عشرہ کی وجہ سے فضیلت ہو پاعشرہ میں اعتکاف کی وجہ ہے ، دونوں صورتوں میں اعتکاف کی فضیلت ثابت ہے ہم کو اس کا عامل كرنا ضرورى باس كريدى ضرورت نبيس كسى في خوب كهاب _ ردر ہے، اس ربیر اس مرورت میں اس سوب بہائے ۔ بخت اگر مدد کندوامنش آورم بکف ایک گربکشد ذہے طرب وربکشم ذہے شرف (نعیبہا گرد دکرے تو میں اس کے دامن کوائے ہاتھ سے پکڑلوں اگروہ اپنی طرف تھنچ لے تو برسی خوشی کا مقام ہے اور اگر میں اے اپنی طرف مینج لوں تو یہ بھی میرے لئے

الرات كى بات ب

صاحبو! چاردواؤں کا مرکب آپ کے مرض کومفید ہے آپ کواسے استعال کرنا جاہے۔اس تغتیش کی ضرورت نبیس کہ اس ووا ہے اس میں قوت برحمی بااس ووا ہے۔ اس میں سینیش دوسرے کا کام ہے جواس فن کومن حیث الفن عاصل کرے مریض کا کام صرف استعال ہے۔ کارکن کاریگذراز گفتار ک کاعدی راه کار بایدکار قدم باید اندرطریقت نه دم 🌣 که اصلے عماردوم بے قدم (كام كروبا تمل كرنے كا كام جيوڙ دوكداس راسته شي صرف كام بي كام جا ہيے،اس راسته شي كام

ليلم أجد الحديث في "موسوعة أطراف الحديث "

کے لئے قدم جاہے با تیں بنانے کی ضرورت نبیں کہ بغیر مل با تھی بنائے کا کوئی فا کھونیں ہے) یہ فضیلت تواس عشرہ کے ساتھ خاص تھی اب ایک اور مضمون عام جواس عشرہ اخیرہ کے ساتھ بھی جسیاں ہے بیان کیا جاتا ہے۔

فضيلت خدمت والدين

وہ بیہ کے محدیث میں آیا ہے کہ حضور ٹی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک مرتبہ صحابہ کے مجمع مِن فرما ياد غم انفه رغم انفه رغم انفه معابة بيالفاظان كرهمرا كي اورعرض كيا يارسول الله! کون مخص؟ آپ ملی الله علیه وسلم نے فر مایا کہ ایک تو وہ مخص کدا پی زندگی میں بوڑھے ماں باپ کو یائے اوران کی خدمت کر کے جنت حاصل شکرے۔

حضور سلی الله علیہ وسلم نے بوڑ ھے کی قیداس لئے بڑھادی کہ اگر ماں باب خود جوان ہیں تو اول تووہ اس کے تاج نہیں ہوں کے جیسے اس کے ہیر ہاتھ چلتے ہیں۔ان کے ہاتھ پیر بھی چلتے ہیں۔

دوسرے ان کی خدمت ہے ول مجمی نہیں تھبرا تا۔ اس لئے اگران کی پچے خدمت بھی کردی تو کچھ بڑی بات نہیں بخلاف بوڑھے ماں باپ کے کہ وہ اسکے متاج ہوتے ہیں اور چونکہ اکثر تو می بالكل كمزور بوجاتے ہيں خود كچے بھی نہيں كر کتے اورا كثر كام مرضى كے موافق نہيں ہوتے تو تنگ مزاج بہت ہوجاتے ہیں۔اس لئے ایسے مال پاپ کی خدمت کرنا بیجہان کی معذوری کےضروری اوران کے تنگ مزاجی سے تنگ ہو جانااور تا فرمانی کرنا گناہ کبیر ہے۔ مگرا کثر آ دمی تنگ ہونے لگتا ہے جس کی بوی وجہ میں ہوتی ہے کہ وہ اینے زمانہ طفولیت وعالم احتیاج کو بعول جاتا ہے کہ اس وقت والدین نے کیے کیے تازا ٹھائے ہیں اگروہ یا در ہیں تو بڑا نفع ہو۔

ایک بنتے کی حکایت مشہور ہاس نے اپنے بڑھا ہے جس ایک مرتبدا ہے ایک اڑ کے سے ور یافت کیا کہ بھائی ہے د بوار پر کیا چیز بیٹھی ہے۔ معاجز ادہ اول تو اس سوال پر دل میں بہت خفا ہوئے کہاں لغوسوال کی آپ کوضرورت بی کیاتھی۔ محر خیر تبذیب سے کام لے کر بتلادیا کہ ایا جان كوا ب_ بنے نے بھر يو جيما كه بھائى! بيد بواركيا چيز ب؟ صاحبزاد و نے كہا كه ابھى تو بتلا ديا تھا كەكوا ہے۔ تيسرى باراس نے پھر يوچھا كەتۇ صاجبزادہ نے مجر كرجواب ديا كەتىبارا تو د ماغ چل سی ہے چیکے پڑے رہو۔اس پر بنتے نے اپنا بھی کھا تامنگوا یا در کھول کر دکھلا یا کہ صاحبز اوہ دیکھو! تم نے ایک سوبار مجھ سے اپنے بھین میں بہی سوال کیا تھا۔ اور میں نے ہر مرتبہ محبت سے جواب

ل الصحيح لمسلم كتاب البرو الصلة: • ١ ، مشكوة المصابيح ١٤٢١، الدر المثور للسيوطي ١٤٢:٣

دیا تھا۔تم دوہی باریں گھبرا گئے ۔لیکن شاید کوئی شخص یہ کیے کہ صاحب بوڑھوں کی تنگ مزاج سے نا گواری توامر طبعی ہے اگراس پر بھی باز پرس ہے تو سخت مشکل کی بات ہوگی۔

تواس کا جواب بیے کہ امور طبعیہ پرخدائے تعالی نے کہیں باز پرس نیس قرمائی۔ باز پرس امورا فقیار بیش بیاز پرس امورا فقیار بیش ہے۔ کلام مجیداس شبہ کا خودازالد فرمار ہا ہے۔ پارہ سجان الذی میں حقوق والدین کوذکر فرماتے ہوئے ارشاد ہوتا ہے ربکم اعلم بمافی نفو مسکم ان تکونوا اصلحین فانه گان للا و ابین غفوراً.

جس کا خلاصہ بیہ ہے کہ دالدین کی ہرونت کی تنگ مزاجیوں سے جو گھبرا ہٹ تہارے دلول بیں پیدا ہوگئی ہے بیاتوا مرطبعی ہے اگر کو کی خشک کلمہ منہ سے نکل جائے اس بیس معذور ہولیکن خدائے تعالیٰ دل کی نبیت کو جانتا ہے اگر دل میں ان کی اطاعت ہے اور غالب تم میں صلاحیت ہے توالی بے اعتمالی سے معذرت کرنے کو بخش دیتا ہے۔

صاحبو! طا ہرنظر میں اس جگہ پر بیآ ہت بالکل بے جوڑمعلوم ہوتی ہے کیکن تقریر بالا ہے سمجھ

میں آئی ہوگا کہ مضمون بالا ہے کس قدر چسیاں ہے۔

اگرغور کیا جائے تو معلوم ہوگا کہ قرآن کے کلام امتد ہونے کی ریجی ایک بہت بڑی دلیل ہے کہاں اللہ ہونے کی ریجی ایک بہت بڑی دلیل ہے کہاں اللہ ہونے کے جی کہ دوسرے سے مربوط جیں گرافسوس ہے کہاں بنی جربر بات کے وہ وہ وہ نئی پہلو لئے گئے جی کہ دوسرے سے مربوط جیں گرافسوس ہے لوگ کلام اللہ کورمی طور پر پڑھتے جیں اور دیکھتے جیں اس کے جھنے کی کوشش نہیں کرتے۔ایک فخص تو غم اتفہ کامل میہ ہوا۔ دوسراوہ جس کے سامنے میرانام آئے اور وہ درود نہ پڑھے۔

ماه رمضان کی فضیلت

تیسرے وہ خفس کہ رمضان آئے بھی اورگز ربھی گئے اوراس نے اپنی مغفرت نہ کرائی لیعنی ایسے عمل اور توبہ نہ کرلی جس سے گناہ معاف ہوجائے۔ ایک دوسری حدیث میں بھی مغفرت سے رمضان کے تعلق کی نسبت ارشاد ہوتا ہے۔

هوشهر اوله رحمة واوسطه مغفرة واخره عنق من النيران . (به وه مهينه ب (جس كا پهلاوهاكه) رحمت دومرا (دهاكه) مغفرت اور آخرى (دهاكه) دوزخ سے آزادى ب

اس سے بیہ معلوم ہوا کہ رمضان کامہینہ سرایا رحمت ومغفرت ہے۔ پس اس میں انسان اپنی مغفرت ہے۔ پس اس میں انسان اپنی مغفرت کا طریقہ یہی ہے کہ نیک عمل کرے اور اس سے بیٹھی معلوم ہوا کہ مغفرت کی تخصیل امرا نہ اور کے جنانچہ ضدا تعالیٰ خودار شاوفر ماتے ہیں:

اللہ النو غیب والنو هیب لد معندوی: ۲۵:۲

وسارعوا الى مغفرة من ربكم وجنة عرضها السموات والارض اعدت للمتقين ، الذين ينفقون

جس کا خلاصہ بیے کہ خدا کی مغفرت اوراس کی جنت کی طرف دوڑ وجس کو تقی لوگوں کے واسطے تیار کیا گیا ہے۔ تو جو تفس اس راستے پر چلے اور مقرر شدہ قانون پڑمل کرے گا وہ مغفرت کو حاصل کو ماصل کریگا۔ جو تفس ایسانہ کرے گا محروم رہیگا۔ پس معلوم ہوا کہ مغفرت کا حاصل کرنا خود ہمارے اختیار میں ہے اورا گرہم جا ہیں اس کو حاصل کرنا خود ہمارے اختیار میں ہے اورا گرہم جا ہیں اس کو حاصل کر سکتے ہیں کہ تقی بن جا کیں۔

يعلم واعظول كي غلطي

اس موقع پر بے علم واعظوں کی غلطی کا بیان کرنا بہت ضروری ہے کہ وعظوں میں کہا کرتے ہیں کہ خدا تعالیٰ کی ذات بالکل بے پرواہ ذات ہے۔ وہ چاہے توایک نکتہ ہیں بخش دے اور چاہے توایک نکتہ ہیں بخش دے اور چاہے توایک نکتہ ہیں جہنم بھیج وے اور بیہ بات ایسے طور سے کہتے ہیں جس سے لوگ یوں بچھتے ہیں کہ تعوذ باللہ خدا تعالیٰ کے ہاں کوئی مقررشدہ قانون نہیں۔ بلکہ یوں ہی اناپ شناپ بے کے طور پر جو چاہتے ہیں کردیتے ہیں۔ اس تم کے مضامین سننے سے اکثر لوگ بالکل مایوں ہوجاتے ہیں اور جو چاہتے ہیں کہ خدا جائے کس نکتہ پر ایس اور کے مقامین سننے کے اکثر لوگ بالکل مایوں ہوجاتے ہیں اور جاری کے کہ وہ ڈرتے ہیں کہ خدا جائے کس نکتہ پر اور کی جائے۔

ای طرح اکثر لوگ خوب می جرکر معاصی کاارتکاب کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ جب خدا تعالیٰ کے ہاں کوئی مغررشدہ قانون ہی نہیں ایک تکتہ پر عذاب تواب کا مدار ہے توا پی خواہشات کو کیوں ترک کریں اورخواہ مخواہ کی مصیبت کیوں اختیار کریں ممکن ہے اس میں سے کوئی تکتہ پہند آجائے کہ اس پرنوازش ہوجائے کو یا کارخانہ خداوندی ایٹاوگر کی سلطنت ہے کہ جہال سارے کام بے ڈھنگے ہی ہوتے ہیں۔

مشہورہے کہ چیلہ گروسفر کرتے ہوئے ایک شہر پہنچے نام پو چھاتوا بنادگر معلوم ہوا۔ جس کے معنی ہیں ہے انفاقی کاشہر، اشیاء کانرخ دریافت کیا تو معلوم ہوا کہ اناخ سے لے کر تھی دودھ تک ہر ہر چیز مولہ سیررو یہ یہ کی ملتی ہے۔

ر بین کر چیلہ تو بہت خوش ہوا کہ خوب تھی دودھ کھا کر فربہ ہوں گے مگر کرونے کہا کہ بھائی اس جگہ قیام مناسب نہیں۔ بیشہر تو بہت ہی ہے تکامعلوم ہوتا ہے کہ چھوٹے بڑے میں پچھا تمیاز ہی نہیں گر چیلہ نے اصرار کیا۔ آخر دو پڑے۔

چندروز میں سیر کرتے کرتے عدالت کی طرف ہنچ دیکھا کدایک مقدمہ راجہ صاحب کے

اجلاک جمن ورچیش ہے اورلوگوں کا بجوم ہے پوچینے ہے معلوم ہوا کہ کوئی چور مدگی ہے مہاجن معاعلیہ ہے۔ دعویٰ یہ ہے کہ ہم دونوں چوری کرنے اس کے گھر گئے۔ نقب لگایا۔ میرارفیق اندرجانے لگا تو دیواراو پر ہے آپڑی مرگیا تصاص جاہتا ہوں۔ معاعلیہ ہے یاز پرس ہوئی کہ وہ دیوارالی کیوں بنائی گئی۔ اس نے کہا معمار ہے پوچیئے بنانے والا وہ ہے۔ وہ بلایا گیااس نے کہا گارہ دینے والے ہے پوچھا جائے۔ اس کو بلایاس نے کہا کہ ہے نے پائی ڈیارہ ویاجس ہے گارہ پیٹا ہوگیا۔ اس کو بلایاس نے کہا کہ ہے نے پائی زیادہ نکل پڑا۔ فیلیان پٹلا ہوگیا۔ اس کو بلایاس نے کہا سرکاری ہائتی جمپٹا ہوا آتا تھا۔ خوف ہے پائی زیادہ نکل پڑا۔ فیلیان کو بلایا۔ اس نے کہا ایک عورت آتی تھی پازیب ہے پہنے اس کی جھنکار ہے ہاتھی دوڑ پڑا۔ عورت کو بلایا۔ اس نے کہا ایک عورت آتی تھی پازیب ہے پہنے اس کی جھنکار ہے ہاتھی دوڑ پڑا۔ عورت کو بلایا۔ اس نے کہا شار نے ایسانی باجا ڈال دیا۔ اس کو بلایا وہ پکھ جواب ندوے سکا۔ تھم ہوا کہ کو بلایا۔ اس نے کہا شار نے ایسانی کا حلقہ اس کے گئے ہے بڑا نکا اوگوں نے آئی کا حلقہ اس کے گئے ہے بڑا نکا اوگوں نے آئی کی حلق سے جو بی جو اس کو بلایا۔ اس نے برائے کی حلائی موٹے آدی کو پھائی دید ویا۔ دیا تھی نہ کہتا تھی شروع ہوئی۔ انقاق ہے جمع بحریس اس چیلے ہے ذیادہ موٹا کوئی نہ لکلا آخرای کو تجو برائی اس نہ کہتا تھی تھر بیاں سے بیا ہوا کہ دیا گئی نہ نکلا آخرای کو تجو برائی ایس نہ کہتا تھی تھی جواب دیا جس نہ کہتا تھی نہ کہتا تھی اس دب بہت گھرائے اور گرو ہے کہا کہ خدا کے لئے بچاؤ۔ اس نے جواب دیا جس نہ کہتا تھی بھی اس دب بہت گھرائے اور گرو ہے کہا کہ خدا کے لئے بچاؤ۔ اس نے جواب دیا جس نہ کہتا تھی بھی اس دب بہت گھرائے اور گرو ہے کہا کہ خدا کے لئے بچاؤ۔ اس نے جواب دیا جس نہ کہتا تھی بھی اس دب بہت گھرائے اور گرو ہے کہا کہ خدا کے لئے بچاؤ۔ اس نے جواب دیا جس نہ کہتا تھی اس دب بہت گھرائے اور گرو ہے کہا کہ خدا کے لئے بچاؤ۔ اس نے جواب دیا جس نہ کہتا تھی اس دب بہت گھرائے دیکھا۔

آ فرگرونے بیتہ بیرنکالی کہ بھائی کے دفت خود بڑھ کرکہا کہ صاحبو!اس کو بھائی شدوہ جھے
کودیدہ لوگوں نے دجہ پوچی تواس نے کہا کہ اس وقت میں نے جوتش میں جود یکھا تو معلوم ہوا
کہ اس وفت جوفض بھائی دیا جائے کا وہ سیدھا بیکٹھ میں جائے گا۔ راجہ صاحب نے جو بیسنا تو بڑھ
کر فرما یا کہ اچھا جب الی بات ہے تو ہم کو بھائی دیدوتا کہ جنت ہمیں حاصل کرلیں۔ چٹانچہ راجہ
صاحب کو بھائی دیدی گئی۔ خس کم جہاں یا کے صادق ہوا۔

توان ٹیم واعظول کےالیے بہانوں ہے یوں سمجھا جاتا ہے کہ کو یانعوذ باللہ کار خانہ خداوندی بھی دوسراا بیتاد گرہے۔

صاحبوا یا در کھوکہ خدات کی ہے بہاں ہرکام کا ایک قانون مقرر ہے۔ تواب کا مجمی ایک قانون ہے۔ مذاب کا مجمی ایک قانون ہے۔ مذاب کا مجمی ایک قانون مقرر ہے تواب کا کام تو بہی ہے جواس آیت میں ارشاد ہوتا ہے وسار عوا الآیة لیسی نقو کی حاصل کرواور مغفرت و جنت لے لو تو معلوم ہوا کہ مغفرت ورحمت کالیما بالکل ہمارے اختیار میں ہے اور ندا گراس کواختیار میں ندمانا جائے تو سار عوا کے کوئی معنی نہیں ہوں گے کیونکہ تکلیف مالا بطاق محال ہے اور خلاف نص ہے اور یہاں امر ہوا مسارعت بی

المغفر ت کا توضرور وہ تحت الاختیار ہے۔ پس جب رمضان کی رحمت اورمغفرت کا عاصل کرنا ہمار ےاختیار میں ہے تو اس کی تخصیل کی کوشش کرواوراس وعیدرغم انف کے مصداق نہ بنو۔

توبه كى ترغيب

اگریزوف ہوکہ تو با گئی اور گناہوں سے بازندرہ عیس کے تو ہمت نہ ہارو۔ کونکہ پھر تو بہ کرلینا۔ دیکھو! اگرایک کپڑا پھٹ جاتا ہے تو اس کو بالکل پھٹا ہوائیس چوڑتے کہ سینے کے بعد پھر پھٹ جائیگا بلکہ ک کر پھڑا ہے۔ بلکہ اس جی حالت تو بہ ک ہے کہ مش اس کے بعد پھر پھٹ جائیگا بلکہ ک کر پھڑا میں لاتے ہیں۔ بلکہ اس وقت پھر تو بہ کر لینا جا ہے باب تو بہ بند نہیں ہوا۔ بلکہ اگردن ہیں مودفعہ بھی تو بٹوٹ جائے تو پھر تو بہ کرلو۔ ما ہوں نہ ہوج و تو تو بہ کہا ہے۔ بلکہ اس وقت پھر تو بہ کر لور ما ہوں نہ ہو جو تو تو بہ کہا ہے۔ باز آباز آبر آئی ہے ہتی باز آباز آبر آئی ہو ہتی باز آباز آبر آباز آبر کہ ما در کہ لومیدی نیست ہیں صدبار اگر تو بہ تکستی باز آباز آبر کہر آ دیگر آ دیم میں صالت میں ہو چلے آ داگر چرکا فر ہو یا آتش پرست ہو یا ہو کہا ہو کہا و باکہ ایک ترک کا در بارٹیس ہے (اگر مومر جبر تو بتو ٹر تھے ہو جب بھی چلے آ دیماراید دربار ناامیدی کا دربارٹیس ہے (اگر مومر جبر تو بتو ٹر تھے ہو جب بھی چلے آ دیماراید دربار ناامیدی کا دربارٹیس ہے (اگر مومر جبر تو بتو ٹر تھے ہو جب بھی چلے آ دیماراید دربار ناامیدی کا دربارٹیس ہے (اگر مومر جبر تو بتو ٹر تھی ہو جب بھی چلے آ دیماراید دربار ناامیدی کا دربارٹیس ہے کہا کہا دربات کی درجہ ہی ضرور باتی رہے گی ہو کہا تو بینے کی میں موبر بین ہو ہو ایک رہوں جائے کا برخلاف اس محف کے جو بھی تو بد نہر کے گا۔ وہ خدا کو باکل بھول جائے معاصی ہے درک جائے کا برخلاف اس محف کے جو بھی تو بدنہ کرے گا۔ وہ خدا کو باکل بھول جائے جو بھی تو برنہ بھی گی تو بدیر نہیں۔

ختم قرآن پرشیرینی

سیطنمون اس عشروا نجرہ کے متعلق تھا اورا یک بات اس کے متعلق یاد آئی۔ چونکہ بعض لوگوں
کواس کی ضرورت ہوگی اس لئے اس کا بیان کرویٹا بھی اس مقام پرمناسب ہے۔ بات اگر چہ
بہت پرانی ہے اور بہت وفعہ لوگوں کے ساسنے تقریراً وتح براً بیش ہوچکی ہے گر چونکہ اکثر لوگوں نے
اس کودل سے بھلا دیا ہوگا۔ اس وقت بھراعا دہ کیا جاتا ہے وہ یہ کہ اس عشرہ بین اکثر مساجہ
میں قرآن شریف ختم ہوگا۔ اس میں اکثر لوگ پڑھنے والوں کو کچھ دیا کرتے ہیں۔ سویہ لیٹا
چیوڑ دو۔ دوسرے اکثر مساجد میں ختم کے دن شیر پٹی تقسیم ہوتی ہے اس میں جوگڑ ہو ہوتی ہے بھی
جانے ہیں اوران گڑ ہووں کی وجہ سے جوشر کی قباحتیں اس میں بیدا ہوجاتی ہیں ان کو بھی متعدد مرجبہ
جان کردیا گیا ہے۔ اس وقت ان کے دہرائے کا وقت ہے نہ چنداں ضرورت معلوم ہوتی ہے۔

صرف اتنا کہاجا تا ہے کہاس کے مفاسد پر نظر کر کے اس کوجھی جیموڑ دو۔

ویکھو!اس کی بدولت بیچار ہے بعض غرباء پر بخت بار ہوج تا ہے۔اس انظام کے متعلق بعض غریب جلا ہوں نے کہ مصیبت سے غریب جلا ہوں نے شکر یہ میں ہے کہا کہ ہم بہت ممنون ہیں۔ کیونکہ ہم کو چندہ دینے کی مصیبت سے بیچالیا۔معلوم ہوا کہ لوگوں پر چندہ لینے سے بار ہوتا ہے بتلا ہے یہ کیونکر جائز ہوگا۔بعض رئیسوں نے بچھ سے کہا کہ آپ غریبوں کومنع سیجے لیکن امیروں کومنع کرنے کی ضرورت نہیں۔ حالانکہ میہ خیال بالکل لغوے اس لئے کہ اگرامیروں نے چھوڑ دیا تو غریبوں کوچھوڑ تا ہے کہ مشکل نہیں۔

بعض مساجدا کی بھی ہیں کہ ان ہیں چندہ سے شیر ٹی تقسیم نہیں ہوتی لیکن وہاں دوسری خرابیاں ہوتی ہیں مثلاً ریاء ونمود کے لئے تقسیم کرنا۔ عوام الناس اور بچوں کے ہجوم سے مسجد کی بے حرمتی ہونا۔ لڑکوں کا حصہ ما تنکنے میں بلا وجہ پٹنا۔ غرض اس تنم کی بہت می خرابیاں ہیں کہ زیرک آ دمی ان کوخود سجے سکتا ہے۔

ایک مرتبہ بریلی میں قرآن سانے کا اتفاق ہوا۔ ختم کے روز میرے بھائی نے تقسیم شیرینی کے لئے کہا۔ میں نے منع کیا لیکن انہوں نے کہا کیا مضا گفتہ ہان کا اصرار دیکھ کرمیں نے سوچا کہ بہتر ہے کہان کو خودان خرابیوں کا مشاہدہ ہوجائے۔ چنانچہ میں خاموش ہور ہا شب کوشیری گفتیم کی گئی۔ اورانہوں نے اپنا اہتمام سے خود تقسیم کی گئی۔ اورانہوں نے اپنا اہتمام سے خود تقسیم کی ۔ لوگوں کے بے ڈھنچے پن کود کی کروہ اس قدر پریشان ہوئے کہ بعد تقسیم خود کہا کہ آپ کی رائے بہت صائب تھی۔ واقعی بے خرافات بھی نہ کرنے چاہئیں اوراس کا احساس ان کی وائش مندی کی دلیل ہے لیکن افسوس ہے کہ بعض لوگ باوجود خرابیاں بچھ جائے کے بعد اپنے خیال سے بازنہیں آتے اوراس کو بین افسوس ہے کہ بعض لوگ باوجود خرابیاں بچھ جائے کے بعد اپنے خیال سے بازنہیں آتے اوراس کو بین چوڑ تے۔

میرنہیں جی ان کر نیورے طور پڑھل ہوجائے اور جولوگ جمع میں کرنا چاہیے کہ ان پر نورے طور پڑھل ہوجائے اور جولوگ جمع میں حائز بین جائے کہ ان پر نورے طور پڑھل ہوجائے اور جولوگ جمع میں حائز بین جائے کہ ان پر نورے طور پڑھل ہوجائے اور جولوگ جمع میں حائز بین جائے کہ ان پر نورے طور پڑھل ہوجائے اور جولوگ جمع میں حائز بین جائے کہ ان کر جوائی جائے کہ وہائے۔

اللهم تقبل مناامين بحرمة جاه سيدالمرسلين.

تطهير رمضان

اصلاح منكرات رمضان كے متعلق بيه وعظ ٢١ شعبان ١٩٣١ه ه كومخله هيمه و ميں بينه كرفر مايا جوم محنشه ميں ختم ہوا حاضرى تخيبنا ٥٠٠ كى تقى يحيم محرمصطفیٰ بجنوری صاحب نے قامبند كيا۔

خطبة ما ثوره

المتسط بمالله الرحن الزجيم

ٱلْحَمَدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنَهُ وَنَسْتَغُفِرُهُ وَنُوْمِنُ مِهِ وَنَتَوَكُّلُ عَلَيْهِ وَنَعُودُ فَإِللّٰهِ مِنْ شُرُورٍ ٱنْفُسِنَا وَمَنْ سَيِّنَاتِ آعْمَالِنَا مَنْ يَّهُدِهِ اللّٰهُ فَلاَ مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُقْدِهِ اللّٰهُ فَلاَ مَنَ يُعْدِلُهُ وَحَدَةً مُضِلًّ لَهُ وَمَنْ يُقْدِلُهُ وَلَا اللّٰهُ وَحُدَةً لَا شَيْدَنَا وَمَوْلَنَا مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ صَلَّى لَا شَيْدُنَا وَمَوْلَنَا مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَى اللهِ وَاصْحَابِهِ وَهَارِكُ وَسَلِّمُ أَمَّابَعَدُ فَاعُودُ لِللّٰهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّحِيْمِ. وَسَلَّم اللهِ وَاصْحَابِهِ وَهَارِكُ وَسَلِّمُ أَمَّابَعَدُ فَاعُودُ لَا اللّٰهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّحِيْمِ. وَسَلَّمُ الرَّحِيْمِ.

يايها الذين امنوا كتب عليكم الصيام الخ

حسثات وسيئات

ابد قرب در مضان شریف مناسب ہے کہ کھا دکام اس کے بیان کردیئے جا کیں۔ بیتو معلوم ہے کہ دوزہ فرض ہے۔ اس کے قبیان کی ضرورت نہیں اورا سے ہی تر اوری سنت مؤکدہ ہونے کی وجہ سے ضروری ہے۔ اس کے بیان کرنے کی بھی ضرورت نہیں۔ البت ضروری مغمون بیہ ہے کہ بعض لوگوں نے اس مہینہ میں کچھ مشکرات بڑھادیئے ہیں۔ اوروجاس کی یا تو عدم علم ہے یا تصور علم یاجائے ہیں گرا حتیا طابی کرتے۔ برخ سنکرات بڑھا دیئے ہیں۔ اوروجاس کی یا تو عدم علم ہے یا تصور علم یاجائے ہیں گرا حتیا طابی کرتے۔ برخ سے تو ب کی بات ہے کہ القد میاں نے اس مہینہ میں ان چیز وں کو بھی حزام کر دیا جو پہلے حلال تھیں کیا بیاس بات پر وال نہیں کہ جو چیز ہمیشہ سے حرام ہے اس میں شدت زیادہ ہوجا کیگی۔ حق سبحان تحق ن ، روزہ اس واسطے ہے کہ تم متنی کی جائے۔ اب مرضی غور کرے کہ قبل رمضیان میں اور رمضیان میں پکھ فرق اس کی حالت میں ما امر ہوا۔ اس نے نظر بدکو یا غیبت کوچھوڑ دیا یا نہیں۔ سو پکھ نہیں دونوں حالتیں کی س ہیں۔ کی خوشی میں ہوئی۔ اب رہا کھا تا سواس کے بھی دفت بدل دیے مقدار میں پکھ تو خیر نیس

کیا۔ غرض بید کہ شارع علیہ السلام کا تو مقصود بیرتھا کہ مخرات میں کی ہو۔ مگر لوگوں نے پیجے بھی نہ کیا ۔ اہل شخیق تو کھانے تک میں بھی کی کر دیتے ہیں۔ اس مہینہ میں بہنست شعبان کے۔ مگر اس کی مقدار پیچے معین نہیں ہوسکتی ہے۔ بھنا شعبان میں کھاتے تھے اس سے کم کر دیا۔ بعض نے صرف بقدر لا یموت کھا کر روز ورکھا۔ جب بی تو پیچھ اثر پایا۔ ہمیشہ اچھی طرح کھایا ایک مہینہ عبادت بی کے واسطے بی ۔ حاصل ہی کہ ان لوگوں نے اکل میں بھی کی کر دی مگر میہ بات مندوب (مستحب) خواص کیا جب بیرشوں سے نہیں ہو سکتا ہے مگر معاصی تو چھوڑ و۔ خبر کھانے کے لئے جواز کا مرتبہ خواص کیا جب معاصی کے واسطے تو جواز بھی نہیں۔ ہم برخلاف اس کے دن بھر معاصی ہیں مشغول رہے تو ہیں۔ بلکہ بعض تو عصیان میں اور زیادہ ہوجاتے ہیں۔

ای کود کھے لیجئے کہ میں کی نمازاس مہینہ ہیں اپ وقت پر ہوتی ہے یا نہیں۔اس نمازی تو وقت پر ہوتی ہے۔اور تضابھی ہوتو اس قدرتا خیر تو ہوتی ہے۔ اور تضابھی ہوتو اس قدرتا خیر تو ہوتی ہے جس ہے جماعت فوت ہوجائے نوش ہیں۔ کہ ہم نے روز ہ رکھ لیا۔ برا تعجب ہے کہ نماز کو چھوڑ دیا روزہ کیا کفایت کرسکتا ہے اللہ تعالیٰ نے مغفرت کواس قدر برو ھادیا کہ دس ضعف تو اب کا وعدہ فرما دیا اور ہم اس قدر گناہ کرتے ہیں کہ حسنات باوجو دائے برد ھائے جانے کے بولی ہوتی رہتی ہوتی رہتی ۔اس کو بھی جو اب کے جانے کے بولی ہوتی رہتی ۔اس کو بھی جو اب کے خالب ہوجا تیں اور جب باوجو داضعافا مضاعفہ ہوئے رحمتی علی غضبی (میری جائے وجب مسفت رحمتی علی غضبی (میری جائے وجب مبات میں اور جب باوجو داضعافا مضاعفہ ہوئے رحمتی میں کے غالب ہوجا تیں اور جب باوجو داضعافا مضاعفہ ہوئے رحمتی علی خضبی (میری کے بھی نیکیاں گناہوں کے برابر نیس ہوئیں بلکہ گناہ برد ھار بتا ہے تو پھر کیا حشر ہوتا ہے۔

 وہ معصیت کرائے گا۔ تمر ہاں کم اثر ہوگا کیونکہ ایک ہی محرک رہ گیا۔ اس میں ایک مہینہ کی مشقت گوارہ کرلی جائے تو کوئی بات نہیں ۔ غرض! اس میں ہرعضوکو گناہ سے بچایا جائے۔ زبان کے گناہ

ایک زبان ہی کے بیس گناہ بیں جیسا کہ امام غزائی نے لکھا ہے کہ ایک ان میں ہے کذب ہے جس کولوگوں نے شیر مادر سمجھ رکھا ہے اور کذب وہ شے ہے کہ کسی کے زو یک بھی جائز نہیں اور پھراس کو مسلمان کیرا خوشگوار سمجھتے جی ڈراسا بھی لگاؤ کذب کا ہوجائے بس معصیت ہوگئی۔ یہاں تک کہ ایک محابیر ضی اللہ عنہا نے ایک بچہ ہے مبلا نے کے طور پریوں کہا کہ یہاں آؤ پہاں تک کہ ایک محابیر ضی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اگر وہ آجائے تو کیا چیز دو گے۔ انہوں نے چیز دیں گئو جنا ہے میں اللہ علیہ اللہ کہ ایک میاں گئے دو گے۔ انہوں نے وکھایا کہ یہ کور ہے میرے ہاتھ میں فرمایا کہ اگر تمہاری نیت میں کھی نہوتا تو یہ معصیت لکھی جاتی ہو ۔ خیر بی تو بڑے اور کی با تیں جیں۔ اگر اس سے احتر از نہ محضرت! کذب میہ چیز ہے۔ خیر بی تو بڑے اوگوں کی با تیں جیں۔ اگر اس سے احتر از نہ موسے تو کذب میہ جیز ہے۔ خیر بی تو بڑے اوگوں کی با تیں جیں۔ اگر اس سے احتر از نہ موسے تو کہ تو کئی جی مصرت! کذب میہ چیز ہے۔ خیر بی تو بڑے اوگوں کی با تیں جیں۔ اگر اس سے احتر از نہ موسے تو کھوں ہے تو کھوں کی باتیں جیں۔ اگر اس سے احتر از نہ موسے تو کہ تو کی باتیں جین ہے۔ خیر بی تو بڑے اوگوں کی باتیں جیں۔ اگر اس سے احتر از نہ موسے تو کھوں کے تو کھوں کی باتیں جی بی اس کے احتر ان نہ موسے تو کو کھوں کی باتیں جین ہے۔ اس کو کھوں کی باتیں جی بی تو کھوں کی باتیں جی بی تو بی اس کا موسلے تو کھوں کی باتیں جی بی تو کہ ایک کو بی تو کھوں کی باتیں جی بی بی بیال ہے اور کھوں کی باتیں جی بیال ہے کہ کو بی تو کھوں کی بیال ہے کہ کو بیال ہوں کھوں کی باتیں جی بیال ہوں کیا جی بی بی بیال ہوں کے کو بی بی بی بیال ہوں کے کہ کو بیال ہوں کی بیال ہوں کے کہ کو بیال ہوں کھوں کی بیال ہوں کے کہ کو بیال ہوں کے کہ کو بیال ہوں کی بیتیں ہوں کے کہ کو بیال ہوں کی بیال ہوں کی بیال ہوں کے کہ کو بیال ہوں کی بیال ہوں کی بیال ہوں کے کہ کو بیال ہوں کی بیال ہوں کی بیال ہوں کو بیال ہوں کی بیال ہوں کی

دوسرا گناہ زبان کا غیبت ہے لوگ ہوں کہا کرتے ہیں کہ میاں ہم تواس کے مند پر کہدویں۔
مند پرعیب جوئی کرو گے تو بہت اچھا کروگے اور پیچھے تو ظاہر ہے جیسااچھا ہے بلکہ اگر مند
پر پراکہو گے تو بدلا بھی تو پاؤ گے وہ مخص تہمیں برا کہد نے گا یا اپنے او پر ہے اس الزام کو وفع کر ہے
گا۔ پیچھے برائی کرنا تو دھو کے ہے مارتا ہے یا در کھوا جیسا کہ دوسرے کا مال محرّم ہے ایسی ہی بلکہ
اس سے زیادہ آبرو ہے چٹانچہ جب آبرو پر آبنی ہو تو مال دولت کیا چیز ہے جان تک کی پرواہ نہیں
رہتی۔ پھر آبروریز ی کر نیوالا کیسے تق العبد ہے بری ہوسکتا ہے گر فیبت ایسی رائی ہوئی ہے کہ
باتوں میں احساس بھی نہیں ہوتا کہ فیبت ہوئی ایسیس اس سے بیختے کی ترکیب تو بس مہی ہے کہ
برائی تک پہنچا دیتا ہے اور کہنے والا مجھتا ہے کہ میں ایک ذکر محمود کر رہا ہوں اوراس طرح ایک فیر
اورا یک شرم جانے ہے وہ فیر بھی کا لعدم ہوئی۔ اور حضرت اپنے ہی کام بہتیرے ہیں پہلے ان
کو لورا کیجے دوسروں کی کیا پڑی۔ علاوہ پر ہی فیبت تو گناہ ہے لذت بھی ہے اور دنیا میں بھی معز
طرح زبان کے بہت گناہ ہیں سب سے پھاضروری ہے۔ ای

افطارعلى الحرام

ان کے علاوہ ایک گناہ جو خاص روزہ کے متعلق ہے افطار علی الحرام ہے۔ بورے تعجب کی بات ہے کہ اس مہینہ میں حلال کا کھا تا بھی ایک وقت میں حرام ہوگیا اور پھر دن بحر تواہے لوگ چھوڑے دہیں اور شام کوحرام سے افطار کریں۔ اور دراصل بعض لوگوں نے خیط میں ڈال دیا ہے۔ یول کہتے ہیں کہ رزق حلال تو پایانہیں جاتا سوائے اس کے کہ دریا میں ہے چھلی شکار کر کے کھائی جاتا سوائے یا مبزی کھا کریا تھاس چرکر پہیٹ بحرالیا جائے اور پچھے تھے اس کے متعلق مشہور کئے ہیں۔ جائے یا مبزی کھا کریا تھا ہوں کے جیں۔

وہ ایک بزرگ کا قصہ بیان کیا کرتے ہیں کہ ان کا بیل اڑتے اڑتے ووسرے کے کھیت میں چلا گیا توانہوں نے اس کھیت کا غلہ کھانا چھوڑ ویا کہ ندمعلوم ووسرے کے کھیت کی مٹی جومیرے بیل کے کھریش لگ کر بلاا جازت چلی آئی کون سے دانہ میں شامل ہوگئی ہو۔

اگریہ قصہ ہوا ہے تو وہ صاحب حال ہے دوسروں کے لئے ان کانعل جمت نہیں ہوسکتا۔ تصدآ اتنا مبالغہ کرتا تفویٰ کا ہمینہ اس کو کہتے ہیں جب استے شبہ کو بھی حرام ہیں داخل سمجھا جائے گا اوراس سے بچنا ظاہر ہے کہ مشکل ہے تو گمان یہ ہوگا کہ حرام سے بچنا مشکل ہے ہیں سب حراموں ہیں جنال ہو گئے اور حلال کو بالکل چھوڑ ہی دیا۔

میں کہتا ہوں کیا کنز و ہدایہ بالکل لغویق ہیں۔ جب یہی بات تفہری کہ حلال کا وجودی نہیں۔ تو ناحق اتنابط کیا۔صرف اتنا کا ٹی تھا کہ الحلال لا بوجد ہر گزنہیں جس پر کنز وہدایہ نتوی دے دیں۔ ووحلال ہے میں کہتا ہوں کیا سب علی وجرام خور ہیں۔

ایک برزگ بیجے مولانا مظفر حسین صاحب ان کی بیرحالت تھی کراگرکوئی ان کو مال حرام دھو کے سے بھی کھلا دیتا تھ توقے ہوجایا کرتی تھی۔اور پھر بھی وہ دونوں وقت کھانا کھاتے تھے۔اس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ حلال کا وجود دنیا ہیں ضرور ہے ور ندوہ کیا کھاتے تھے۔اگرفرض کیجئے کہ مال حرام ہی کھاتے تھے تو طبیعت کو ینفرت نہیں ہوگئی یا ہے کہ ہمیش تے ہی کیا کرتے ہوں گےتو کھانا فضول ہے۔

غرض! دنیا میں طلال بھی ہے جرام بھی ہے جومسائل دریافت کرنے سے معلوم ہوسکتا ہے گرلوگ پوچھتے ہی نہیں اور بیفساد پیدا کا ہے ہے ہوا کہ لوگوں نے پوچھتا چھوڑ دیا۔ جو جی ہیں آیا کرتے رہے جی کہ اس کے عادی ہوگئے ۔اب جو کس نے منع کیا تو اس کا چھوڑ ٹا نہایت دشوار معلوم ہوا۔ بس کہ دیا کہ میاں یہ لوگ تو خواہ مخواہ بھی حلال کو بھی حرام ہی کہا کرتے ہیں۔ان کی تو غرض یہی ہے کہ مال نہ بردھے اور مسلمانوں کوترتی نہ ہو۔ بس ہوتے ہوتے ہوئی ہیں جم کیا کہ ان کے یہاں تو سب چیز حرام ہی ہے کہاں تو سب چیز حرام ہی ہے کہ مال نہ برو سے اور مسلمانوں کوترتی نہ ہو۔ بس ہوتے ہوئے بیزئین بیس جم کیا کہ ان کے یہاں تو سب چیز حرام ہی ہے جھنے گئے اوراس خوف سے مفتی سب چیز حرام ہی ہے جھنے گئے اوراس خوف سے مفتی کے پاس جانا چھوڑ دیا کہ ویکھنا جا ہے کہ ہمارے کس معاملہ کو حرام بتا دیں یہ طلال بتا دیں تو ہماری خاطر سے بی شاید کہدویں اور فی نفسہ حرام ہی ہوگا کیونکہ طلال کا تو وجود بی نہیں۔

سوبی خیال بالکل غلط ہے بلکہ جس کو مفتی مباح کیے وہ عنداللہ مباح ہے اس میں پچھ حرج نہیں۔

شیطان کے جال

شیطان کے بہت سے جال ہیں۔ ان ہیں سے ایک مید ہو ہور ڈالتا ہے کہ بیسب حرام ہے۔ پھر بعض لوگ حرام وطال ہیں خواہ تو اہ شہر کے حلال کو بھی چھوڈ دیتے ہیں کہ جب اس ہیں وہ ہور ہی تھوڈ ہی دو۔ چاہے مفتی کتابی کے کہ یہ طال ہے گروہ اس کے چھوڈ نے ہی کواولی سے بیجھتے ہیں۔ نہیں! اس فعل ہیں پہر حرج نہیں جو مباح ہے۔ اہل علم ہے بیو چھ لو کہ کوئی وجد اس ہیں! اس فعل ہیں پہر حرج نہیں جو مباح ہے۔ اہل علم ہے بیو چھ لو کہ کوئی وجد اس ہیں! اس فعل ہیں پہر حرج نہیں جو مباح ہیں۔ اس پر عمل کرنے کے لئے ہمت با نمو میں! اور اگر فنس کم ہمتی ہی کرنے و اس سے بول کہو کہ میہ جو حکام وقت کے احکام ہیں ان کو کس طرح مانتا اور اگر فنس کم ہمتی ہی کرنے و اس سے بول کہو کہ میہ وقت کے احکام ہیں ان کو کس طرح مانتا ہو اس کو بھی حالم نہیں کا متاب انداز ہم ہمیں ہی تھی کا عظم بھی کر بور بنوا تا تو چونکہ چا ندی کے واسطے رو بید دینے سے دیوالازم میر ابی خود قصد ہے کہ بھی زیور بنوا نے کا اتفاق ہوتا۔ ہیں چا ندی دوسری جگد سے خرید کرا سے کہ دیا تا تا ہے۔ اس لئے جب بھی زیور بنوا نے کا اتفاق ہوتا۔ ہیں چا ندی دوسری جگد سے خرید کرا سے کہ دیا تا ہیں۔ اس کے جب بھی زیور بنوا نے کا اتفاق ہوتا۔ ہیں چا ندی دوسری جگد سے خرید کرا سے کہ دیا تا ہوں کہ دیا ہیں نے اس سے کہ دیا ہیں نے اس سے کہ دیا

تولوگ سب مان جاتے ہیں۔ آوٹی پکاچاہی اوراللہ میاں کی طرف سے اسباب ویسے ہی پیدا ہوجاتے ہیں۔ خیال کر لیجئے کہ حاکم جب کسی امر شاق کا تھم ویتا ہے تواس پر مامور کی اعانت بھی کیا کرتا ہے۔ حاصل میہ کہ دل کومضبوط کر واوراس پرعزم کرلوکہ ہم کوئی کام بلا پوچھے نہ کریں گے۔

رزق میں برکت کے معنی

ہاں اس پوچھنے سے بعض صور تیس عدم جواز کی بھی تکلیں گی۔اوراس میں آمدنی مجمی کم ہوجائے

گی۔ تو خوب بجھ لواور تجربہ کرلوکداس کم بی میں برکت ہوجا نیگی اوراس کے بیم مین بیں کہ کم چیز مقدار میں بڑھ جاتی ہے۔
میں بڑھ جاتی ہے کہ بازار سے توایک من گیہوں لائے اور گھر برآ کردومن اترے ممکن تواہیا بھی ہے۔
ایک صاحب خیر نے جھ سے بیان کیا کہ وہ معجد بنوار ہے جیں اورا یک تھیلی میں روپ رکھے تھے اور کا م شروع کیا۔ جب ضرورت ہوتی اس جس بی سے ہاتھ ڈال کر نکال لاتے ۔ یہاں تک کے سے اور کا م بن گیا۔ حساب جولگا یا تو جتنا روپ تھا اس سے کم نہیں ہوا تو بھی ایرا بھی ہوتا ہے گھر بھیشہ مضرورتہیں۔ بلکہ اس کے معنی اور میں اور وہی اکثر واقع ہیں۔

وہ یہ کہ یہ مقد ارتبیل تمہارے ہی صرف بیں آئے بیاری بی خرج نہ ہواورا یہے ہی فضول خرجیوں بیں مقد مات بیں لا طائل (بیکار) تکلفات بیں ضائع نہ جائے جو کچھ آئے تمہاری ہی ذات برصرف ہو۔ چاہے تھوڑا ہواس ہے بہتر ہے کہ زیادہ آئے اور تم پرخرج نہ ہو۔ اور آخر بیں شاکبتا ہول کہ نہ ہو پر کمت گرخوداللہ میال کی رضا ہی دنیا و مانیہا ہے بہتر ہے اللہ میاں ملیس فیم کہتا ہوں کہ نہ ہو پر کمت گرخوداللہ میال کی رضا ہی دنیا و مانیہا ہے بہتر ہے اللہ میاں ملیس فیم کیا اللہ میاں کی پچھ وقعت نہیں بچھتے ہو۔ معزمت اللہ میال کی رضاوہ چیز ہے کہ جس کی نسبت ایک برزرگ کہتے ہیں ۔ معزمت اللہ میال کی رضاوہ چیز ہے کہ جس کی نسبت ایک برزرگ کہتے ہیں ۔

بمال اعآ تكدجز توباك نيست

ونیا کے حکام کی صرف خوشنو دی کے واسطے کننے کتنے سفر اور کیا کیا کچھ خرج کرنا پڑتا ہے اور پھران کی خوشنو و کی دہریا نہیں۔ ذرا ک بات پر بگڑ گئے اورانڈ میاں قرماتے ہیں کہ ہم شکور ہیں خیال سیجئے اس لفظ کو!

ایک بادشاہ کے سامنے کوئی چیز لے جائے اوروہ اس کی نسبت منظور وعدم منظوری پچھ ظاہر نہ کرے گراس میں کوئی عیب نہ نکالے اور خازن کو تھم دیدے کہ رکھ لو ۔ تو لے جانے والے کے دماغ آسان پر پہنچ جائیں گے اور ستاتا کھرے گا کہ بادشاہ نے ہمارا بدیدر کھ لیا اورا مقد میاں کے دماغ آسان پر پہنچ جائیں گے اور ستاتا کھرے گا کہ بادشاہ نے ہمارا بدیدر کھ لیا اورا مقد میاں کے یہاں ہم لوگ اپنچ کہ دہ کس قابل ہیں۔ یہاں ہم اور دما رکی نماز ہیں

ایک نماز ہی کو لے لیجئے۔اس دفت نظیر کے داسطے کھڑے ہوتے ہیں اللہ میاں ہے باتیں کرنے کوادر کرتے ہیں کس سے گاؤ خر ہے۔ یا یوں مثال دیجئے کہ ایک بادشاہ نے محض اپنی عنایت ہے اپنے غلام کودر باریس حاضری کی اجازت دی۔ بلکہ یوں کہئے کہ زبردی طلب کیا۔ (ہم لوگ ایسے بھلے مانس تو کا ہے کو ہیں کہ حاضری کی اجازت ہے ہی دربار میں و بنجے کو نیمت سمجھیں) زبردتی بلائے ہوئے بلکہ پابرز نجیر ہوکر دربار میں پہنچے اور کام ہم سے کیا ہے کہ بادشاہ کوان پرتم آیا ہے اور چاہتا ہے کہ ان سے دربار میں کچھ گفتگو کرے کہ دربار بوں اور تمام رعایا میں ان کی عزت ہوجائے اپنا کچھ نفع مقصور نہیں۔

من نه كردم خلق تاسود ي كنم بنك بنك تربربندگان جو و ي كنم (ميس نے مخلوق كواس لئے پيدائبيس كيا كدان فقع حاصل كروں بلكداس لئے پيداكيا كدأن يرجودو يخاوت كروں) بائے _

من نہ کردم خلق تاسود ہے کئم ہے بلکہ تابر بندگان جودے کئم (میں نے مخلوق کواس لئے پیدائبیں کیا کہان سے نفع حاصل کروں بلکہ اس لئے پیدا کیا کہان برجودو سخاوت کروں)

الله میاں کا کیا تفع ہے جارے پیدا کرنے یا عزت دینے ہے۔ خیر! ان حضرت نے کیا مکافات کی اس بلانے کی کہ چینچہ ہی منہ پھیر کر کھڑے ہو گئے اور کا ٹوں میں انگلیاں دے لیں یکر بادشاہ تو کم ظرف نہیں ہے۔ اس گتاخی پرنظیر نہیں کرتا اور تھم دیتا ہے اپنے خادموں کو کہ اس بے وقوف کی انگلیاں کا ٹوں میں نہ دے اس بے وقوف کی انگلیاں کا ٹوں میں نہ دے سے اور مزاس کا ہماری طرف کر دواور جلدی ہے کھ شفقت آمیز کلمات زبان سے فرمانے لگا کہ ایک دف د تواس کے کان میں پڑجا تھیں۔

ریجیں تو معلوم کیے نہیں ہوتا۔ گریدتم کھا کر چلے ہیں کہ الٹائی کریں گے دیف ہے کھرانگلیاں کانوں کی طرف بڑھا کی گرہاتھ بندھے ہوئے تنے جلدی سے اس خوف سے کہ کہیں محبوب کا کلام کان میں پڑجائے اس جگہ ہے بھاگ اصطبل میں گھوڑے کے پاس جاجھے۔ وہاں آدمی پکڑنے کے بہنچا گدھے کے پاس جاچھے۔ غرض ایک گھنٹہ بحریبی کیفیت رہی کہ سے ہما گا کئے اور بادشاہ کے نوکر بلکہ خود بادشاہ ۔ اللہ اکبر!ان کے بیجھے پھراکیا۔ گرانہوں نے وہی کیا۔ جوشامت اعمال سے ہونا تھا۔

اب فرمائے کہ میخفس کس سزا کا مستحق ہے۔ یا باوشاہ کواس پررمم آتا جا ہے بیرتواس قابل ہے کہ اگرایک دفعہ بھی بیر کت اس نے کی ہے تو تو جین بادشاہ کے جرم جس اس کو لے نیا جائے اورورباری حاضری کی بھی اجازت نہ ہو۔اب آپ اپ معامد کواند میاں کے ساتھ دیکے لیجئے کہ ادھرے تو حاضری کی اجازت ہروقت لیجئی نظل نماز کے لئے اجازت ہے جب چاہو پڑھو (باستناء تھوڑے ہے وقت کی کہ اس اجازت کو نیمت سمجھیں یہاں تک کہ پکڑ میں تو نین نہیں ہوئی کہ اس اجازت کو نیمت سمجھیں یہاں تک کہ پکڑ کہ بلانے کی نوبت پہنی لینی فرض نماز کا وقت آیا۔ نہایت کا بل کے ساتھ گرتے پڑتے پہنچ میں ایمالاو خوکیا اور بدا کراہ نیت نماز کی لیمن سامنے با تیس کرنے کو کھڑے کئے ۔ کھڑے ہوتے ہی مندایسا پھیرا کہ پکھ خبر نہیں صرف الفاظ زبان پر جاری ہیں دھوکا وینے کے واسطے آواب شاہی مندایسا پھیرا کہ پکھ خبر نہیں صرف الفاظ زبان پر جاری ہیں دھوکا وینے کے واسطے آواب شاہی بجالارے ہیں لیمن سبحانک الملھم (اے انڈ تو ہرعیب سے پاک ہے) پڑھا۔ انڈ میاں نے بحالات ہیں اور کلام شروع کیا۔ چنا نچہ المحمد لله د ب العالمین (سب تعریفیں اس منہ پھیرنے پر نظر نہ کی اور کلام شروع کیا۔ چنا نچہ المحمد لله د ب العالمین (سب تعریفیں الشدے لئے ہیں جو سارے جہانوں کے پروردگار ہیں) پر جواب مانا حدیثوں میں آیا ہے۔ ذرای الشدے لئے ہیں جو سارے جہانوں کے پروردگار ہیں) پر جواب مانا حدیثوں میں آیا ہے۔ ذرای الشدے لئے ہیں جو سارے بھی بیوی کے پاس بھی بچوں کے باس بھی بچوں کے باس بھی بچوں کے باس بھی بچوں کے باس بھی بھوں کے باس بھی بچوں کے باس بھی بچوں کے باس بھی بھول ہے۔

غرض یمی مخراین کیا کئے یہاں تک کہ بمشکل تمام در بار کی حاضری ختم تک پینی لیعی سلام پھیرا۔ بڑی خیر ہوئی۔ بادشاہ کی ہم کلامی ہے نج گئے۔ جانے وہ کاٹ کھا تایا کیا کرتا تھا (بینجرنبیں کہ کیا کرتااور کیا ہوتااور بیرکیا یا ہے)

۔ 'بو! اب ان گتاخوں کی سزاوبی ہونی چاہیے تھی یائیس جومثال میں میں نے عرض کی کدا گرائید دفعہ بھی ہے اور فورا دربار کدا گرائید دفعہ بھی ہم الی نماز پڑھتے تو بھی القدمیاں کے بیباں ہم کو گھنے نہ دیاجا تا اور فورا دربار سے نکلتے ہی گرفتاری اورجس دوام کاروبکار جاری ہوجا تا گرسنے ! کہ اللہ میاں سے کیاروبکار جاری ہوا تا گرسنے ! کہ اللہ میاں سے کیاروبکار جاری ہوا تا گرسنے ! کہ اللہ میاں سے کیاروبکار جاری ہوا و کان سعیکم مشکور ا (اور تمہاری کوشش (جو دنیا میں کرتے ہے) مقبول ہوئی)۔اس نے درباریس آکراتی ویرکی مصاحب کو بہت اچھی طرح انجام دیا۔

مرجائے کی بات ہے ایکی طرح تو جیے انجام دی وہ ہم بھی خوب جائے ہیں اور جو وہاں صاضر نے انہوں نے ہیں خوب و یکھا بلکہ حاضرین کے سامنے شرم رکھنے کے واسطے فرماتے ہیں فاولنک یبدل الله سیناتھم حسنات (پس ایسے لوگوں کے اللہ تفالی گناہوں کو نیکیوں سے بدل دیے ہیں) گویا ہے وقوف ہے کتنی ہی گتا خیاں کیس گرہم اس آنے کو حاضری ہی ہیں لکھے لیتے ہیں اوراس کی وہی عزت کی جائے جو با قاعدہ آنے والے کی کی جاتی ہے۔ اب

فرائے! کہ اگرایک مرتبہ ایسا معاملہ بادشاہ کس کے ساتھ کرے تو کیا دوبارہ اس شخص کی ہمت پڑھئی ہے کہ پھراک طرح وحثیا نہ طریق سے در بار بیس جائے ہرگزنہیں۔ بلکہ سرے ہیرتک خجالت کے پیدنہ میں غرق ہوجائے گا۔ گرہم ایسے احسان فراموش ہیں کہ ایک دود فعہ کیا معنی سینکڑوں بار بلکہ ہرروز پانچ بار مجی جفا کاری کرتے ہیں۔ گرادھرے مطلق خیال نہیں کیا جاتا۔ اس پرطرہ یہ ہے کہ ان ننگڑے لولے اندال (بلکہ اندال کیے کہا جاسکتا ہے بدا تمالیوں) میں بھی کی اور کوتا ہی ہے۔ بلکہ خدا تعالیوں) میں بھی کی اور کوتا ہی ہے۔ بلکہ خدا تعالی کے خرات کی طرف میلان ہے۔

صاحبو! ذرا شر ماؤ اورعمل کرواورحرام ہے بچو۔خاص کر رمضان کے مہینہ ہیں بیہ عکرات توروز ہ کے ہوئے۔

تراويح كيمنكرات

اب ایک مل اور بے فاص رمضان کا۔ جیسے دن کا عمل روز ہے ایسے رات کا عمل قیام ہے۔
اس میں یوں خطر کردیا کہ تراوت کی بیس رکعت گنتی میں تو پوری کرلیں۔ عمریہ پہنیس چاتا کہ ان میر میں توریت پڑھی جاتی ہے یا تو شروع کا حرف بجھی میں آتا ہے یارکوع کی تجمیر۔
ایک حافظ کا قصہ ہے کہ قرآن شریف پڑھتے پڑھتے جہاں بھولے وہاں پکھا ٹی تصنیف سے پڑھ دیا بڑی تعریف ہوتی رہی مرتوں کہ ان کو کہیں منشابہ بھی نہیں لگتا لاحول و لا قوق الا باللہ!
میا حیو! اللہ میاں کو دھوکا مت دولیس رکھیں گنا کر ڈراڈ ھنگ سے بھی تو کرو۔
میا حیو! اللہ میاں کو دھوکا مت دولیس رکھیں گنا کر ڈراڈ ھنگ سے بھی تو کرو۔
ایک میظم ہوتا ہے کہ حافظ مقتد یوں کو بہکا تا ہے اس طرح سے کہ قراۃ کو اتنا طول و بتا ہے کہ کوئی تھر بھی نہ میتا ہے کہ حافظ مقتد یوں کو بہکا تا ہے اس طرح سے کہ قراۃ کو اتنا طول و بتا ہے کہ کوئی تھر بری نہ سکتے پانچ پانچ سیپارہ ایک ایک رکھت میں ۔ رسول اند صلی اند علیہ وکلم تو فر ماتے گئیں بیشو او لا تنفو او بسو او لا تعسو آ

شبينه كى بدعات ومنكرات

اور تنگی میں مت ڈالو۔

ہاں ایسا ہی شوق ہے تو تہجد میں پڑھو جتنا جا ہواور اس میں اور جس کا جی جا ہے شریک ہوجائے ۔گراس میں بھی اوم کے علاوہ تمین سے زیادہ جماعت میں نہوں۔ کہ فقہاءنے مکروہ کہا ہے کیونکہ پھرنفل میں فرض کا سااہتمام ہوجائے گا۔

ل ۱ الصحيح للحاري ۵ ۲۰۳۲ ۸٬۲۰۵٬۲۰۳ ۱۸/ الصحيح لمسلم كتاب الحهاد. ٤٠ كتاب الأشربة. ١ ك

لیضاؤگ ایک ہی شب میں فتم کرتے ہیں جے شبینہ کہتے ہیں اس میں تو کئی ہوئیں ہیں۔
غور کرے دیکھ لیجئے کداس میں فیت صرف نمود کی ہوتی ہے کیاا ہام اور کیا مہتم اور کیا سامعین۔ امام تو واد طنے کے امیدوار دہتے ہیں کہ جہال سلام پھیراا ور لوگوں نے منہ پر تحریف کر دی تو خوش ہو گئے ور نہ پڑھا بھی فہیں جاتا۔ حدیث شریف میں منہ پر تعریف کرنے والے کے لئے تھم ہے کہ اس کے منہ بیل خاک جموعک دو۔ اور امام صاحب کے قلب پر بھی اثر ہوتا ہی ہے اور ای تعریف کرانے کو بیضے امام تو لقمہ بھی نہیں اور ہہتم کرانے کو بیضے امام تو لقمہ بھی نہیں لیتے۔ اس وجہ سے کہ لوگ کہیں گئے کہ اچھایا ذہیں اور ہہتم کرانے کو بیضے امام تو لقمہ بھی نہیں ہوتے۔ جائے یائی سے ہی فرصت ہی نہیں ہوتی۔

میں پوچھتا ہوں کہ شبینہ سے چائے پانی مقصود ہے یا قرات وساعت قرآن ایک شے میں البتہ چائے سے مدول جاتی ہوجائے البتہ چائے سے مردل جاتی ہے ساعت اور قرات میں۔ گرجب ذریعہ مقصود میں گال ہوجائے تو ذریعہ کہاں رہا۔ اوریہ بھی جانے و پیجے مہتم ما حب کوتویہ ٹابت کرنامنظور ہے کہ ہمارے بہاں فانی مسجد سے اہتمام اچھار ہا۔ بس جائے یانی اجھار ہا گراصل شی تو اچھی نہیں رہی۔

رہے سامعین توانساف ہے کہد و بیٹے کہ وہ قرآن شریف سنے کے لئے آتے یا نماز کے ساتھ دل گی کرنے کو ۔ پھی کھڑے بین کہ جو بیٹے ہیں ، پھی کھڑے ہو جاتے ہیں کہی بیٹے جاتے ہیں۔ کہی کھڑے ہو جاتے ہیں ۔ کہی کھڑے ہیں ۔ بیارے ہیں ۔ کہی کھڑے ہیں اور کریں بھی کیا ۔ بیارے گفنوں تک کیے کھڑے ہیں اور لینے جواپنے اوپر جرکرکے کھڑے بھی جی توانام کی زلتوں کو چھوڑتے جاتے ہیں ۔ وہ خواہ کیسی بی تعطی کرتا چلا جائے بتلائیس سے کیونکہ حربت ہوگا اور قرآن شریف ختم ہو ۔ وہ خواہ کیسی بی تعطی کرتا چلا جائے بتلائیس سے کیونکہ حربت ہوگا اور قرآن شریف ختم ہو ۔ وہ خواہ کیسی بی تعطی کرتا چلا جائے بتل کہ خارج صلوق سے لئے جواتے ہیں اس محدوث ہیں اگر امام نے لیا تو نماز سب کی فاسد ہوئی اور نہ لیا تو وہ غلطی اگر مغیر معنی ہیں تو یوں نماز فاسد ہوئی اور نہ لیا تو وہ غلطی اگر مغیر معنی ہیں تو یوں نماز فاسد ہوئی ۔ اور بیبرابر ہوا۔ اور تکلیف مفت میں ہوئی ۔ غرض لقمہ لینے کی صورت میں بھی محصیت ابطال عمل کی اور نہ لینے ہی صورت میں بھی محصیت ابطال عمل کی لازم آئی ۔ اور نہ لینے ہے بھی تو نماز فی سد ہوئی ۔ خرض لقمہ لینے کی صورت میں بھی محصیت ابطال عمل کی لازم آئی ۔ اور نہ لینے ہے بھی تو نماز فی سد ہوئی ۔ اب سب صورتوں کو طاکر آپ بی کہد و بیٹے کہ نماز فی سد ہوئی ۔ اب سب صورتوں کو طاکر آپ بی کہد و بیٹے کہ نماز میں گیا۔ یا کھیل ۔ احکام نظا ہری کے لیا ظ ہے بھی تو نماز سیج کے نہ ہوئی خشوع وخضوع کا تو ذکر ہی کیا۔

ایک خرابی شبینہ کی ہے تھی ہے کہ اکثر نفل کی جماعت لازم آتی ہے کیونکہ بعض ہی لوگ ایسے ہوتے ہیں کہاس کوتر اور کے کی جماعت ہیں کرتے ہیں کیونکہ سب مقتد یوں سے نہیں ہوسکتا کہ اول ے آخرتک شریک رہیں اورای کوتر اور کے رکھیں اس لئے تر اور کے علیحدہ پڑھ لیتے ہیں پھرنفلوں میں اس کو پڑھتے ہیں اورنفلوں میں نماز کروہ ہے۔

غرض! بہت سے منکرات اس شبینہ میں لازم آتے ہیں تجملہ ان کے ایک بیکھی ہے کہ بعض حفاظ اپنا پڑھنے کے بعد مغالط دینے آتے ہیں۔ یہاں آپ کہد سکتے ہیں کہ یہ سفنے کوآئے ہیں اور یہ بے اولیٰ ہیں ہے اورا لیے ہی بہت سے بدعات ہیں۔

ہاں اگرشبینہ میں ختم ہی مدنظر ہے (مگرا خلاص کوغور کر لیجئے گا) توامرحسن ہے۔ اس میں اعلان کی ضرورت نہیں تا کہ ریاوت سے خالی رہے۔ جنتنی ہمت ہوقر آن شریف پڑھو۔ امام کوگڑ بڑمیں نہ ڈالو۔اورسب منکرات نہ کورہے بچو۔

ایک بدعت رمضان بی ہے کہ نامحرم حفاظ گھر وں بیں جا کر عورتوں کومراب سناتے ہیں۔ اس بیں چند قباحتیں ہیں۔ ایک سے کہ اجنبی مرد کی آ واز جب وہ خوش آ واز کی کا تصد کرے عورت کے لئے ایس چند قباحی ہے کہ خوش آ واز مرد کے لئے۔ اوررواج بی ہے کہ خوش آ واز مرد تالاش کئے جاتے ہیں اور حافظ صاحب بھی مردوں کی جماعت میں تو شاید ساوہ ساوہ سی پڑھے ہیں یہاں خوب بنابنا کر اواکرتے ہیں۔ سوٹورتوں کے لئے جماعت کی ضرورت ہی کیا ہے اپنی اپنی اور پھھ ضرورت محراب سننے کی نہیں ہے۔ اگر حافظ ہیں تو فراد کی فراد کی اپنی تروی کے لئے جماعت کی میں اور پھھ ضرورت محراب سننے کی نہیں ہے۔ اگر حافظ ہیں تو فراد کی فراد کی اپنی تراوی کے میں اور پھھ ضرورت محراب سننے کی نہیں ہے۔ اگر حافظ ہیں تو فراد کی فراد کی اپنی تراوی کی میں اور پھھ نے کر کے گناہ مول لیا جائے۔

اجرتأ قرآن خواني

دوسری بدعت اس میں استیجار علی العبادۃ ہے لیعنی حافظ صاحب ہے اجرت و میر قرآن شریف پڑھوا یا جاتا ہے اور استیجار علی العبادۃ حرام ہے۔ یہاں سے بیمی معلوم ہو کیا کہ قبر پرحافظ کومقر رکر نا جائز نہیں کیونکہ اس میں بھی استیجار علی العبادۃ ہے۔

اس پربعض لوگ کہدویا کرتے ہیں کیا ہوگیا ہے علماء کومیت کا ٹواب ہی بند کردیا۔ ہم کہتے ہیں اس کا ٹواب ہی نہیں پہنچتا پھر بند کیا کردیا۔ کیونکہ ٹواب سینچنے کی صورت یہ ہوتی ہے کہاول عمل خیر کرنے والے کو ٹواب ملتاہے پھراس کوافتیا رہے جسے جاہے بخش دے۔ جیسے اپنامال جسے جاہے دیدے اور یہاں خود کوئی ٹواب نہیں ملاتو پخشاہی کیا۔ اگرکوئی کے کہ قرآن شریف کا پڑھنا تواب کی بات ہے اور اجرت لینا گناہ۔ توایک معصیت اور ایک تواب ہوگیا تو تواب بڑنے جائے گا اور گناہ جارے ذمہرہ جائے گا۔ پھر ہم توبہ کرلیں کے توبیل سے توبیل سے توبیل کا دارو مدار کرلیں کے توبیل سے توبیل کا دارو مدار نیون پر ہے) قاری کی نیت و کیے لیجئے کہ استحصال مال ہے نہ تواب۔ پھر تواب کہاں جب ای کو تواب نہ ملاتو دوسرے کو کیا بخشے گا۔

لوگ يهاں كہتے ہيں كہ يہ استجار على العبادة نہيں كيونكہ ہم كوئى مقدار مقرر نہيں كرتے جو ہات مشہور ہوتى ہاں جو ہارے مقدر ميں ہے وہ پہنچا ہے ہجان اللہ المعروف كالمشروط ۔ جو بات مشہور ہوتى ہاں ہے منظم ہوجائے كہ يهاں ہے ہے نہ طے گا وسطر مضان ميں شہرانے كى كيا ضرورت ہے ۔ اگر كى طرح معلوم ہوجائے كہ يهاں ہے ہے نہ ہے گا وسطر مضان بى ميں حافظ صاحب چور كر جيھر ہيں ۔ ٹابت يہ ہوا كہ مقصود حافظ كواجرت ہى ہے فتم سے بحث نہيں ۔ اگركوئی شخص خالى اللہ بن ہوا وراس جگہرواج بھى دينے كانہ ہوتو جو ہے ہے ہدية بول كيا جائے اس ميں ۔ اگركوئی شخص خالى اللہ بن ہوا وراس جگہرواج بھى دينے كانہ ہوتو جو ہے ہم ہدية بول كيا جائے اس ميں ہوا كے تاب ہوتے ہوئے اگر جاسوال وحيلہ ان كى غيوں ميں فساد پيرا ہوگئے اگر جاسوال وحيلہ ان كودے دیا جایا كرے تو بيو بہت كا ہے كوآئے ۔۔

ایک طالب علم کا قصد ہے کہ وہ ایک جگہ بڑھنے گئے کھا نامقرر ند ہوا۔ اتفاق ہے ایک موت ہوگئی۔ اوروں کے لئے تو عمی محراس بیچارے کے لئے عید کا دن آگیا۔ ان کا کھا نا چالیس دن کے لئے مقرر ہو گیا غذیمت سمجھا۔ جب چلے قریب ختم پہنچا تو فکر ہوئی کہ پھروہی فاقد آتا ہے۔ اتفاق سے چلہ ختم بھی نہ ہوا تھا۔ کہ ایک اور موت ہوگئی۔ ان کے ایک چلہ کا سامان اور ہوگیا۔

غرض! ای طرح کی موٹے موٹے کے بعد دیگر نے شکے۔ ان طالب علم کوچاٹ لگ گئ اور ہر دفت انتظار میں رہنے گئے کہ سی طرح کوئی مرے۔ ایک روز ایک شخص نے کہا بیط الب علم سارے محلّہ کواسی طرح کھا جائے گاور نہاں کا کھانا مقرر کردو۔ کہیں اس طرح بھی اللّہ میاں پہنچا دیتے آیں۔

غرض! بدنوبت بدنیتی کی کا ہے ہے پنجی ۔ صرف مستحقین کی خبر نہ لینے ہے۔ یوں تو بھی سالن بھی ڈھنگ ہے اور جوکوئی جعرات کی سالن بھی ڈھنگ ہے اور جوکوئی جعرات کی صحفیم ہے منع کرے تو برامعلوم ہوگا۔

___الصحیح للبخاری ۲۹۰۱ ۱۵۵ ۱۹۹۰ منن آبی داؤد: ۲۲۰۱ ، منن الترمذی ۱۹۳۷، منن النسائی کتاب الطهارة ب: ۵۹

صاحبوا کیا آثھ دن کا کھ ٹا ایک دن کھا گئے ہو۔ طالب علم غریب نے کی تعمور کیا ہے کہ ہفتہ جر تک تو فاقد کراؤ اور ایک دن ا تنالا کر رکھ دو کہ کھانہ سکے۔ چاہیئے کہ ان کی خدمت کردی جایا کر سے تاکہ ان کی نبیت نہ بگڑے۔ لوگوں نے اس کوتو بالکل چھوڑ ہی دیا۔ اور سبب اس کا بیہ ہم کہ خاد مان دین کولوگ حقیر بجھتے ہیں اس لئے نہ ان کی بجھ وقعت ہے نہ خدمت ۔ اور اس وجہ سے یہ بھی رواج ہوگیا کہ موذن وہی ہوتا ہے جو کس کا م کانہ ہو۔ لولے انگر ہے، ایا جج کس کا م کے نہ رہی وہ موذن بن جاتے ہیں بھر کوئی خرنہیں لیتا۔ اس وجہ سے نیتیں بھر گئیں۔

ایک میت کا چا دراکس نے ایک نقیر کودیدیا تھا۔ موذن کو جو خبر گلی تو فوراً پنچے کہ واہ صاحب میراحق اس کودیدیا۔ خدا خدا خدا کر کے توبیدن آتا ہے اس میں بھی ہما راحق اوروں کودیدیتے ہو۔

بے شک میں بات ہے بہت انظار کے بعد بدون تھیب ہوتا ہے گراس بیل اس کا قصور نہیں ہے۔ بلکہ ایک ہوتا ہے گراس بیل اس کا قصور نہیں ہے۔ بلکہ ایک پورے محلّہ کا قصور ہے کیوں یہ تو بت پہنچائی اگر ہم لوگ مقرر کرلیں کہ عمیارہ مہینوں بیل ایپ کپڑوں کے ساتھ ایک کپڑواان کو بھی بتا دیں اور جہاں آپ کھاتے ہیں کبھی بھی ان کی بھی دو یوں کے ساتھ ایک کپڑوں کے ساتھ ان کے لئے بھی بچھرو بیدنکال دیا کریں۔

غرض! غیررمضان میں ان کی برابرخبر گیری کرتے رہا کریں۔ پھررمضان شریف ہیں ان سے سوال کیا جائے کہ قر آن شریف سناد بیجئے تو کیانہیں سنادیں کے ضرور اور بخوشی منظور کرلیس کے۔اس میں استیجار علی العیادة وغیر وکی کوئی قباحت لازم ندآ ہے گی۔

غرض! اجرت برح فظ سے قرآن شریف پڑھوانا جائز نہیں اورا یہے ہی عورتوں کو گھروں میں سنانا مناسب نہیں۔ میں کہتا ہوں جب عورتوں کو سجد میں آئے سے روکا گیا ہے تو عقلمند سجو سکتا ہے کہ مقصود رسول الله صلی الله علیہ وسلم کا صرف مباعدت ہے مردوں اور عورتوں میں اور یہاں اختلاط لازم آتا ہے۔ کیا حاجت ہے عورتوں کوقر آن ختم سننے کی۔ جب شارع علیہ السلام ہی کی طرف سے لازم آتا ہے۔ کیا حاجت ہے عورتوں کوقر آن ختم سننے کی۔ جب شارع علیہ السلام ہی کی طرف سے لازم آبیں کیا گیا تو ایک سے پڑھ لیا کریں۔

ایک خرابی اور ہوتی ہے کہ جیب ایک جگہ حافظ محور تول کے سنانے کے لئے مقرر کیا جاتا ہے توسارے محلّہ سے مور تیں آ کر جمع ہوتی ہیں اور اس میں خروج بلاضرورت ہے اور فر مایا رسول الله ملی الله علیہ وکل علیہ وکل منایہ وکل منایہ وکل منایہ وکل منایہ وکلم نے المعراۃ عورۃ عورت چمپانے کی چیز ہے۔

_لهاسان الترمذي ١١٤٠٠ اء كبر العمال ١٩٢٥،١٥٤ والمتور للميوطي ١٩٢٥

چراغاں کی بدعت

ایک بدعت رمضان شریف میں جراغوں کی کثرت ہے ختم کے روز لوگ یوں کہتے ہیں کہاس میں شوکت اسلام ہے۔ ہم کہتے ہیں رمضان میں ہی اظہار شوکت اسلام کی ضرورت ہے یا باتی تمام مہینوں میں بھی ۔ تو ہمیشہ چراغ بہت ہے جلایا سیجئے۔ یا یوں کہتے کداور دنوں میں اسلام کے چھیانے کا حکم ہے۔ خوب جان کیجئے کہ شوکت انگال صالحہ ہی میں ہے۔آپ نے حضرت عمر رضی اللہ عنہ کا قصہ سناہوگا کہ جس وقت شام کو گئے ہیں اور نصاریٰ کے شہر کے پاس پہنچے تو کپڑوں میں پوند لگے ہوئے تھے اور سواری میں اونٹ تھا۔اس پر بھی خود سوار نہیں تھے۔غلام سوار تھا۔لوگوں نے عرض کیا کہ بہاں اظہار شوکت کا موقع ہے کم ہے کم کھوڑے برسوار ہوجائے آپ نے بہت اصرارے منظور کرلیا جب سوار ہوئے تو مکھوڑے نے کو دناء احجملنا شروع کیا۔ آپ نورا اتر پڑے کہ اس سے نفس میں عجب پیدا ہوتا ہے (اللہ اکبر! کیا یا کیز ونفس حضرات تھے اپنے قلب کا خیال ہروقت ربتاتها) اوراظبار شوكت كرجواب من فرمايا لنحن قوم اعزنا الله بالاسلام بهم ووقوم میں کہ اسلام سے بی ہاری عزت ہے۔

چراغوں ہے کہیں شوکت ہوسکتی ہے ۔شوکت اسلام تواسلام ہی ہے ہے۔اسلام کو کامل کرو۔ میں کہتا ہوں شول کر دیکھ لو دلوں کو کہ اگر کوئی اور مخص تمہارے سوامسا جد کی زینت کردے تو تمہیں و لی خوشی ہوگی ۔ جیسی کہ اس بات ہے ہوتی کہ ہم نے اپنے خرج یا اہتمام ہے زینت کی ے فور کر تیجے کہ نہ ہوگی۔

بس معلوم ہوا کہ صرف اپنانام جمّانے کیلئے ہے۔ ورندا ظہار شوکت تو دونوں حالت میں برابرتھا۔ پھرایک صورت میں فرحت کم کیوں ہوئی اوراس ہے تو میدر و پید باؤن ما لک اگرموؤن کودے دیاجا تا تواولی تھا۔ گراس کو کیوں دیتے نام کیے ہوتا کیا یہ سراف نہیں ہے؟

میں کہتا ہوں اسراف کے معنی ہیں صرف المال بلاغرض محمود ۔اورغرض کی طرح کی ہوتی ہے اول غرض رفع ضرورت ہے۔ لینی ہر چیز کواس مقدار برا ختیار کرنا کہاس ہے کم میں نہ ہو سکے۔

لباس كي اغراض

مثلًا رہاس کہ درجہ اول اس کی غرض کا رفع ضرورت ہے ۔ لیعنی ستر اور مہغرض ٹا ٹ ہے بھی

حاصل ہوسکتی ہے دومری غرض آسائش ہے۔ یہ لباس میں ناف سے حاصل نہیں ہوسکتی۔ بلکہ مردی کے موسم میں تھوڑی روئی نے ہوشر بعت میں حاصل نہیں ہوتی جب تک کافی روئی نہ ہوشر بعت میں اس کی بھی اجازت دی گئی ہے۔ تیسری غرض آرائش ہا دریہ بھی شریعت میں جائز ہے ان المله جمیل و یحب المجمال نہیں آرائش مباح ہے اور اس میں طبائع مختف ہو تی ہیں۔

بعضوں کوغرض تو آرائش سے تحدیث بالنعمت لیعنی خدات کی گفت کا ظہار ہوا کرتی ہے۔
اور بیٹھود ہے اور بعضوں کی غرض آسائش ہے بیہ ہوتی ہے کرفخاج لوگ اس کی وسعت کود یکھیں
اورا پنی حاجت کا سوال کریں (جیسا کہ حضرت حاجی صاحب رحمتہ اللہ عنیہ فرما یا کرتے ہے) وہ یہ
کہ اللہ میاں کواچھامعلوم ہواوراس سے اچھی کوئی غرض نہیں ہو سکتی۔ دکھا یا بھی جائے تو اللہ میاں کو۔
ایک غرض مباح ہے آرائش سے ۔وہ یہ کہ ایٹ کی فنس کولذت وفرحت ہو۔ اس بیس بھی
کوئی کچھ حرج نہیں۔ بیغرض صرف مال کی توجمود ہیں۔ اوراغراض میں سے ایک غرض فرموم بھی
ہے اوروہ ریا ونمائش ہے۔ تو جان او کہ اول تو نفس ریا بی جائز نہیں۔ بھراس کثرت چراغ کے
متعلق ایک دومرامقد مہاور قابل نظر ہے۔

وہ یہ کہ معصیت کومعصیت مجھ کر کرنا اسہل ہے اس سے کہ معصیت کودین مجھ کر کیا جائے تو چراغ ریا ء کے لئے جلائے جاتے ہیں اور ریا معصیت ہے پھریہ لوگ اس کودین اور ثواب مجھتے ہیں تو کتنی سخت بات ہوئی بیرقاحتیں ہیں روشنی ہیں۔

علاوہ بریں اہتمام کرنے والے توردشی ہی جی مشغول رہتے ہیں۔ نماز میں ان کا دل نہیں ہوتا۔ بلکہ بعض اوقات جسمی شرکت بھی نہیں ہوتی۔ اس روز کی تر اوش ان کومعاف ہوجاتی ہے کہیں صفوں کے بیچ میں پھرتے ہیں۔ کہیں ایک صف سے دوسری صف میں جاتے ہیں۔ حالا تکہ رسول انڈ صلی امتد علیہ وسلم نے ارشادفر مایا ہے کہ جوکوئی گردنوں کو پچلائے گا اس کو پل کی طرح ڈال و یا جائے گا اس کو پل کی طرح ڈال و یا جائے گا اس کو پل کی طرح ڈال

ائے احکام کی مخالفت لازم آتی ہے روشی میں میں کہنا ہوں قر آن شریف اوراحادیث کے احکام کی مخالفت لازم آتی ہے روشی میں میں کہنا ہوں قر آن شریف اوراحادیث کے احکام کیااس لئے کہ بت پرست اس پڑل کریں یانصاری عمل کریں اورمسلمان اسپنے ہاتھوں میں لیے کریس فخر ہی کرلیا کریں ۔ پچھ بعید نہیں کہ رسول القد صلی اللہ علیہ وسلم قیامت میں شکایت

ل الصحيح لمسلم كتاب الإيمان. ١٣٤ : مسد أحمد ٣ ٢٣٠ : ١٥١ : ١٣١ ، مشكوة ١٠٥ م

فرمادیں۔ بارب ان قومی اتنحذوا هذا القرآن مهجورًا۔ قرآن کوصاف اپنے گھروں میں رکھنا اور زبان سے پڑھنا کا فی نہیں بلکہ جو پھھاس کے اندرہے اس کو بھی و کیھواورول پراٹر ڈالو۔ ختم کی مٹھائی کے منکرات

ایک منکر فتم کے دن شیر پنی کا تقتیم کرتا ہے اوراس کا منکر ہونا خلاف ظاہر ہے گریس کے مجھائے دیتا ہوں۔ یہ مضائی اگرایک شخص کی رقم ہے آتی ہے تواس کا مقصود ریاء واشتہار وافتخار ہوتا ہے۔ اوراگر چندہ ہے ہوتی ہے تواس کی تخصیل میں جبر ہے کام لیاجا تا ہے اور جبر جیسا ایلام بدل ہے ہوتا ہے۔ ایسانی ایلام قلب ہے بھی۔ جب دوسر ہے کود بایا شرمایا تو جر میں کیا شہر ہا۔ امام غزائی رحمۃ الشعلیہ نے اس کی تقریح کی ہے کہ اس کا تھم ای فصب کا سہ جو المحی کے زورہ ہو۔ اللہ میاں! اس تھوڑے بی میں برکت دیتے ہیں جو رضا وخوشی کے ساتھ دیا جائے۔ اسکا خیال بہت ہی کم لوگ کرتے ہیں۔ اکثر مجدوں کے لئے بھی لوگوں مے مصل کی وجاہت کے ذریعہ ہوں اوروں کرتے ہیں۔ اکثر مجدوں کے لئے بھی لوگوں مے مصل کی وجاہت کے ذریعہ ہوں کرتے ہیں۔ پھر اس میں بھی بعضے مضول زینت کے لئے جس وجاہت آرائش بالطبع کی قدر بوتو مضا نقہ نہیں۔ اور اس کی تو کسی درجہ میں ضرورے بی نئین کہ لوگوں سے فصب کرکر کے آرائش میں خرج کی مجد سے بھی کہ نیس ادام وزی کی ادائے نماز کے لئے کائی ہے بلکہ جو مقصود ہے بینی خشوع وہ چھیر میں اداراس کی تو کسی درجہ میں ادائے نماز کے لئے کائی ہے بلکہ جو مقصود ہے بینی خشوع وہ و چھیر میں کیا جائے۔ محبد چھیر کی بھی ادائے نماز کے لئے کائی ہے بلکہ جو مقصود ہے بینی خشوع وہ و چھیر میں کیا جائے۔ محبد چھیر کی بھی ادائے نماز کے لئے کائی ہے بلکہ جو مقصود ہے بینی خشوع وہ و چھیر میں کیا جائے۔ محبد چھیر کی جدے بھی منہ ادائے نماز کے لئے کائی ہے بلکہ جو مقصود ہے بینی خشوع وہ و چھیر میں مخفوظ ہے۔ تو جب اصل مقصود بی حاصل نے مصل نہ ہوا تو بیزد کھیں کیا کہ گھی۔

ایسای حال ہے مشائی میں کہاس میں بھی کہیں جبر کہیں تفاخر ہوتا ہے اوراس کا امتحان یوں ہوسکتا ہے کہ اگر وسط صلوٰ ق میں آ دمی زیادہ جمع ہوجا کیں تو مشائی کی فکر پڑجاتی ہے تمازیوں کو بھی اور جمعین کو تو اپنی آبرو کی پڑجائے اور تمازیوں کو بید خیال ہوتا ہے کہ اب ایک ایک اور جمعین کو تو کوسوں دور گیا مشائی کیا آئی کہ استے گناہ جے کا اپنی ۔

علاوہ بریں اکثر عام بے نمازلوگ آتے ہیں اور تبجب نہیں کے بعضے جب بھی ہوں۔ پھرلوگ ہاتیں۔
کرتے اور مغالطے دیے ہیں اور لغویات بکتے ہیں غیبتیں کرتے ہیں اورا یک دوسر کاظلم میٹتے ہیں۔
یہی حال ہے مولو دشریف کی مشمائی کا بعضے لوگ اس میں عرب کے لفال سے جحت پیرے تہیں۔
ہیں حال ہے مولو دشریف کی مشمائی کا بعضے لوگ اس میں عرب کے لفال سے جحت پیرے تہیں۔
ہیں میں کہتا ہوں کہ اول تو کسی کافعل جحت نہیں۔ پھرتم ایسے فعل کو ان کے فعل پر قیاس بھی نہیں

کر سکتے۔ان کی توالی بے تکلف عادت ہے کہ جب پچھا ومی رہ جا کیں اور مٹھائی فتم ہوجائے

کہد دیتے ہیں خلاص بینی ہو پچی جس کی ان کو یہاں کی طرح ہے آبر ووغیرہ کی فکر نیس ہوتی جس

کو پہنچ گئی نہ پہنچ تو پچھ خیال نہیں۔ پس کہاں تہما رافعل اور کہاں ان کافعل ۔

کار پاکاں راقیاس ازخود مگیر ہی گرچہ ماند درنوشتن شیروشیر

(نیک لوگوں کے کاموں کو اپنی طرح گمان نہ کرواگر چے شیر اور شیر (دودھ) ایک طرح

لکھے جاتے ہیں)

میں کہتا ہوں شیر بنی کی ایجاد کی وجہاصل میں اظہار سرت ہے ' شکر القد کلی حصول العمۃ ' کیکن مباح میں ایک منکر منفع ہوجائے بلکہ ستحب میں بھی تو اس کا ترک ضروری ہے اوراس سے تو بہتر میہ ہے کوتیا جوں کو دیدیا جائے ۔ جورو پید مٹھائی میں صرف ہوتا ہے تھائ کی خبر گیری بالا تفاق امرحسن ہے۔ تمام زمانہ میں کوئی بھی اس کا مخالف نہ ہوگا اور نہ منکرات لازم آئیں گے جونماز میں مخل ہے۔

شیرینی میں فی نفسہ کے حرج نہیں۔ بلکہ حرج اس بیئت میں ہے۔ بلکہ اس بیئت کے ساتھ بھی فسادات دور ہوجا کیں۔ فسادلازم بھی فساد متعدی بھی اوراس کے لئے بچاس ہرس ہے کم میں کافی نہیں بھت اجت کے اصلاح کا سلسلہ برابر جاری رہ اوراصلاح میں اس وقت بیکا فی نہیں کہ خاص لوگ منکرات سے نیج جا کیں۔ کیونکہ عوام اپ فعل کے لئے ای کوسندگردا نیس کے اورعوام سے جلدی از الد منکرات کی تو قع نہیں بس اس وقت اصلاح یہ ہے کہ یمل بالکل ہی ترک کردیا جائے اور پھراصلاح عقیدہ کا سلسلہ جاری رہے۔ جب عام طور سے عقیدے درست ہوجا کیں تب میں بھی اجازت و یدوں گا لیکن اب تو بس ترک ہی کرایا جائے گا ۔غور کر لیجئے اور لا العسلوق کا قصدنہ سے بچے۔ جہال شیر نئی کا جواز ہے وہاں ان منکرات کی حرمت بھی ہے اور جب تک دولوں جمع ہیں حرمت بھی ہے اور جب تک دولوں جمع ہیں حرمت بھی ہے اور جب تک دولوں جمع ہیں حرمت بھی ہے اور جب تک دولوں جمع ہیں حرمت ہی کوئر جمع ہوگی۔

بوم عيد كى بدعت

منجملہ اور رسوم کے ہمارے قصبات میں ایک بید سم ہے کے عید کے دن سحری کے وقت اذان فی خرکا انتظار کرتے ہیں اوراذان کے وقت کہتے ہیں کہ روز و کھول لو۔ پھر پچھے کھاتے ہیں توان کے فزو کیا انتظار کرتے ہیں اوراذان کے وقت کہتے ہیں کہ روز و کھول لو۔ پھر پچھے کھاتے ہیں توان کے فزو کی اب تک رمضان ہی ہاتی تھا۔ شوال کی پہلی رات بھی گزری اوران کے یہاں ابھی روز و ہی ہے۔ حدیث شریف میں توافظ را لرؤیة ہے اوران کے یہاں ایک شب اور کزرنا جا ہے۔

کوئی میہ نہ کے کہ ''افطرالرؤیۃ'' پرتوعمل ہوگیا۔ چاند دیکے کرافطار کرلیا تھا۔ اب رات میں کھانا نہ کھانا اوراؤان کے وقت کھانا اپنافعل ہے۔ میں کہتا ہوں کہ انکاراکل یاعدم اکل پرنہیں۔ بلکہ یہاں عقیدہ میں فساد ہے۔ چنانچاس کوروزہ کھولنے سے تعبیراس کی دلیل ہے۔ اورزیادت فی اللہ یہ نہیں تو کیا ہے۔ اورزیادت فی اللہ بین نہیں تو کیا ہے؟ ایسے موقع پرتو بالفضدر سم تو ڈٹے کے لئے فجر سے پہلے بی کھانا چاہیے۔ اللہ بین نہیں تو کیا ہے۔ کہ عقیدہ بدل دو اور درست کردولیکن انکال کے بدلنے میں عام بعض کا خیال یوں ہے کہ عقیدہ بدل دو اور درست کردولیکن انکال کے بدلنے میں عام

مخالفت ہوتی ہے۔ اگر عمل باتی رہے جو کہ مباح ہے اور عقیدہ درست ہوجائے تو کیا حرج ہے۔ کیکن بیدخیال غلط ہے۔اس کئے کہ ثابت ہوتا ہے تجربہ سے کہ جبیبا کہ عقیدہ کواثر ہے مل میں ایسا بى اس كائنس بھى ہے۔ايك مدت تك بين اس خيال ميں رہا كه علماء كيوں بيچھے رائے ہيں تكاح ٹانی کے۔جائز ہی توہے کیا کیانہ کیا نہ کیا۔ پھر سمجھ میں آیا کہ حرج صدرے نہیں لکا گرعمل کوایک مدت تک بدل دینے ہے۔اس لئے رسوم میں عمل کی تبدیلی بھی ضروری ہے۔میرایہ مطلب نہیں كه عيد كى شب ميں كھانا فرض ہے بلكہ اخراج حرج كے لئے ايساكرنے سے ضرور ماجور ہوگا۔اس کی نظیریں حدیث شریف میں موجود ہیں۔ رسول الند صلی الله علیہ وسلم نے ایک مرجد منع فرمادیا بعضے روغی برتوں میں نبیز بنانے ہے پھرفر ماتے ہیں۔کنت نہیتکم عن الدباء والحنتم فانبذوافيها فان الظرف لايحل شيئا والايحرام. ليني بِهلِم مِن يُمْع كردياتها ـ اباس میں نبیذ بنایا کرو۔اورعلت ارشاد بیان فرمائے ہیں کہ برتن نہ کی چیز کوحرام کرتا ہےاور نہ حلال کرتا ہے۔ پھر باوجوداس کے بھی منع فر مادیا تھا۔صرف وجہ پتھی کہلوگ شراب کے عادی ہیں۔تھوڑے ہے نشہ کومسوں نہ کر عمیں سے۔اوران برتنوں میں پہلے شراب بنائی جاتی تھی۔اس لئے خمرے پورا ا جنناب نہ کر تکیں گے اور گنہگار ہوں گے۔ پس پورے اجتناب کا طریقہ یمی ہے کہ ان برتنوں میں نبیذ بنانے سے مطلقاً روک و یا جائے۔ جب طبیعتیں خمرے بالکل نفور ہوجا ئیں اور ذیرا ہے نشہ کو پیجائے لیس تو پھرا جازت دے دی جائے۔

ای طرح ان رسموں کی حالت ہے کہ ظاہری اباحت و کیے کرلوگ ان کوا ختیار کرتے ہیں اوران مسکرات کو پہچانے نہیں جوان کے شمن میں ہیں تواس کے لئے اصلاح کا کوئی طریقہ نہیں ہوسکا۔ سوائے اس کے کہ چندروز اصل عمل ہی کوڑک کردیں۔ اور یہ بات کہ اصل عمل باتی رہے اور مسکرات

ل المصنف لابن ابي شيبة ٢٣٣:٣

عام طور سے دور ہو جا کمیں سو ہمارے امکان ہے تو باہر ہے۔ جب رسول الله صلی الله علیہ وسلم ہی نے سے طریقہ اختیار فرہ یا تھا تو ہم کیا ہیں۔ اس کے سوااور تدبیر یں اختیار کرتے پھریں ۔ اور جب ایک تدبیر عقل بھی مفید معلوم ہوتی ہے اور نقل ٹابت ہو چکی تو ضرورت ہی کیا ہے کہ اس سے عدول کیا جائے۔ سو بول کی شخصیص

ایک رسم عید کے دن ایک کھائے گئیسین کی ہے کہ ویکال ہی پکائی جاتی ہیں۔اس میں ایک مصلحت ہے جس کی وجہ ہے اس کو اختیار کیا گیا ہے۔ وہ یہ کہ اس کی تیاری میں زیادہ بھیٹرے کی ضرورت نہیں اور دن کوعید کا کام کاج ہوتا ہے اور مستحب ہے کہ پچھ کھا کرعید گاہ کو جاتا۔ اس لئے سہل الحصول چیز کو اختیار کر لیا۔ بعد از ان دوست احباب کے یہاں بھینے کا روائح ہوگیا۔ اس کی نظیر میں تہا دی الی العروس کو چیش کیا جاتا ہے۔ بی حاب کر ام رضی اللہ تعالی عنہم سے ثابت ہوا ہے۔ بی نظیر میں تہا دی الی العروس کو چیش کیا جاتا ہے۔ بی حاب کر ام رضی اللہ تعالی عنہم سے ثابت ہوا ہے۔ بی کہتے ہیں کہ جیسے دولہا کے پاس خوشی کا دن ویکھ کر مدید بھیجنا مستحسن ہے اس طرح عید کا دن بھی خوشی کا ہے احباب کے پاس کیوں نہ تھے جو اکمیں۔

میرے ایک دوست کا تصہ ہے کہ ایک مدت تک انہوں نے حضرت حاتی صاحبؓ کے یاس خطنہیں بھیجا۔ میں نے ان سے وجہ پوچھی تو کہا میں اس عرصہ میں خالی ہاتھ تھا۔ فکر میں ہوں کچے روپیے کہیں سے ل جائے تو عریضہ تکھوں۔ میں نے کہااس خیال میں مت پڑو۔اب تو ضرور بلا جدید خط بھیجو۔اب دیکھ لیجئے کہا یک عرصہ تک اس خیال نے ان کواستفادہ سے روک دیا۔ نی نفسہ حسن ہو گر قیدر سم سے نتح آممیا۔

ایے بی عید کے دن کے ہدایہ ہیں۔ اور اگر غور کیجئے گا توان ہدایہ کوقرض پاہنے گا کیونکہ دیتے وقت بیضر در نیت ہوتی ہے کہ اس کے پہال سے بھی آئے گا اور اگرا یک مرتبہ ندآئے توادھر سے بھی بند ہوجا تا ہے اور ہدیہ کی تعریف میں بلا عوض کی شرط ماخوذ ہے پس یہ ہدیہ بھی ندر ہا۔ پھر ضعدار ہونے ہے یا قرضد ارکرنے سے کیافا کدہ۔

وعظاكا خلاصه

حاصل ہے کہ جن اعمال میں فساد ہے ان اعمال سے ہی اجتناب چاہیئے۔ ذرای خوبی کود کھے
کر بڑے بڑے منکرات میں پڑجا ناعقل سے بعید ہے۔ اب بیان ختم کرتا ہوں اوراصل مقصوو
کا خلاصہ پھر مختصراً اعادہ کرتا ہوں کہ روزہ رکھا گر پیٹ حرام سے بھرااور دن کو بھی غیبت وغیرہ میں
جنال سے تو بیروزہ کس شار میں ہے۔

حاصل بیر کہ دوزہ کے آواب سیکھواور توں کو بھی سکھلاؤ۔ فریا یارسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے کم من صائم (الحدیث) یعنی بہت ہے روزہ رکھنے والے اور قیام اللیل کرنے والے وہ بیں کہ ان کی مجمول اور بیاس کی طرف اللہ میاں کو بچھ حاجت نہیں۔ اور آواب کے موافق اگرختم کرلیا تواس کے تق میں فریاتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم تشفعان یعنی روزہ ونمی زوونوں شفاعت کریں گے۔ پس اس محفق کے ساتھ دومحافظ ہوں گے عذاب ہے بچانے کے لئے۔ پھر آپ کہ سکتے کہ جس کے دومحافظ موں کھا تا ہوں گا جات نہ ہوگ۔ صلے مارکاری موجود ہوں کیا اس کی نجات نہ ہوگ۔ خدات اللہ میں۔ والسلام خداتھ الی می تو نتی عطافر ہا کمیں۔ والسلام

عصم الصنوف

سہولت صوم کے متعلق میہ وعظ اخیر جمعہ ۲۷ رمضان السبارک ۱۳۳۵ احد کوسجد خانقاہ تھانہ بھون میں کری پر بیٹھ کرساڑ ھے تین سطخے میں بیان فرمایا ۔ حاضری تقریباً ایک ہزار کی تھی۔مولانا ظفراحمد صدب نے قاممبند کیا۔

خطبة ما ثوره

المست الله الرقان الرَّجيم

اَلْحَمَّةُ لِلَّهِ تَحْمَلُهُ وَنَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغُفِرُهُ وَنُوْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكُّلُ عَلَيْهِ وَنَعُودُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ اَنْفُسِنَا وَمَنْ سَيِّنَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يُهْدِهِ اللَّهُ فَلاَ مُضِلُّ لَهُ وَمَنْ يُقْدِهِ اللَّهُ فَلاَ مَن يُقْدِهِ اللَّهُ وَحُدَهُ مُضِلُّ لَهُ وَمَنْ يُقْدِهِ اللَّهُ وَحُدَهُ مُضِلُّ لَهُ وَمَن يُقْلِلُهُ فَلاَ عَلَيْهِ وَمَوْلِنَا مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ صَلَّى لَا شَعْدُنَا وَمَوْلِنَا مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَى اللهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ امَّابَعُدُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى اللهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ اللَّهِ الرَّحِمْ الرَّحِيْمِ. اللَّهُ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ. اللهِ فَاصَدْ الرَّحِيْمِ. اللهِ اللهِ وَاصْحَابِهِ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ اللهِ الرَّحْمُنِ الرَّحِيْمِ. فَا اللهِ الرَّحْمُنِ الرَّحِيْمِ. وَمَا اللهِ الرَّحْمُنِ الرَّحِيْمِ. وَمَا اللهِ الرَّحِيْمِ. وَمَا اللهِ الرَّحْمُنِ الرَّحِيْمِ.

کلو اواشر ہوا ہنینا ہما اسلفتم فی الایام الخالیة ترجمہ: اور علم ہوگا کھا دُاور پومزے کے ساتھ ان اندال کے صلہ میں جوتم نے ایام گزشتہ بعنی تیام زبانہ ونیامیں کئے ہیں۔

تامهاعمال

ساکی آیت ہے سورہ حاقہ کی۔جس کے حمل مفسرین کے کلام میں مختلف ہیں۔ میں نے میں ایک جمل کو اختیار کرلیا ہے جواس وقت کے اوراس حالت موجودہ کے مناسب ہے۔اس لئے میں ایک ہی خاب کو بیان کروں گا اور چونکہ مقصود دوسرے دلائل ہے بھی خابت ہے اس لئے دوسرے محمل کا اختال جو کہ طالب عمانہ احتال ہے۔معزمیں۔ یہ دفع وظل مقدر ہے۔اب میں آیت کی تغییرائ جمل کے موافق بیان کرتا ہوں۔جو میں نے اختیار کیا ہے اوراس سے اس کا مناسب مقام ہو جائے گا۔اس آیت ہے او پرو کر ہے نامہ اعمال کا کہ قیامت کے دن کی کے دائیں ہوتا بھی معلوم ہو جائے گا۔اس آیت ہے او پرو کر ہے نامہ اعمال کا کہ قیامت کے دن کی کے دائیں ہاتھ میں نامہ اعمال دیا جائے گا اور کس کے بائیں ہاتھ میں اور ساتھ ساتھ ہم خص کا حال بھی ڈکور ہے تا مہا کہ کی حال ہوگا اور جس کے بائیں ہاتھ میں نامہ اعمال دیا جائے گا اور کس کے بائیں ہاتھ میں نامہ اعمال دیا جائے گا اور کس کے بائیں ہاتھ میں نامہ اعمال دیا جائے گا اس کا کیا حال ہوگا اور جس کے بائیں ہاتھ

ين ديا جائيگااس كاكيا حال ہوگا۔

یہ آیت جویں نے تلاوت کی ہان دونوں کے درمیان پی ہادراس کے اور اس شخص کا حال ہے۔ جس کے دائیں ہاتھ پی نامدا کال دیاجائے گا چنا نچارشاد ہے: فاما من او تی کتابہ بیمینه فیقول ہاؤ م اقراو کتابیه انی ظننت انی ملق حسابیه. یعنی دونامدا کمال دائیں ہاتھ پی دیئے جانے کے بعدلوگوں کو بلائے گا کہ آؤمیرا نامدا کمال پر صور جھے تو یقیین تھا کہ ایک دن حساب بھی ہوئے والا ہاس تول کے بیان کرنے کے بعدی تولیاں کی جزابیان فرماتے ہیں:
مار بھی فی عیشة راضیه فی جنة عالیة قطوفها دانیه، کلوا واشر ہوا ہندہ بی قالمی المخالیه،

''کہ وہ مخص نہایت جین میں ہوگا۔ بلند جنت میں ہوگا۔ جس کے میوے نز دیک ہیں ''کہ وہ مخص نہایت جین میں ہوگا۔ بلند جنت میں ہوگا۔ جس کے میوے نز دیک ہیں (لیعنی جھکے ہوئے ہیں جن کے تو ژینے میں کوئی دشواری نہیں پھرارشاد ہے کلواوا شریواالخ کہان

ے کہا جائے گا کھاؤ پوبعوض اس کے کہتم نے ایام خالیہ میں کیا ہے۔

چونکہ ایام خالیہ کی تغییر مختلف ہے اس لئے میں ابھی اس کا ترجمہ نہیں کرتا۔ بلکہ تحقیق بیان کرنے کے بعد ترجمہ کروں گا۔

کھانے پینے کی رعایت

پہلے میں یہ بتلا ناچ ہتا ہوں کہت تعالی نے اکل وشرب (کھانے پینے) کاؤکر مستقل طور پر
کیوں کیا۔ حالانکہ فہو فی عیشہ واضیہ (وہ تخص نہ بت چین میں ہوگا) میں یہ بھی واخل ہو چکا تھا
تواس افراد بالذکر کی وجہ یہ معلوم ہوتی ہے کہ انسان کھانے پینے کاسب سے زیادہ عاشق ہا وراس کے
سواجتنی مستیاں ہیں وہ سب ای کے تابع ہیں مثلاً اگر کمی شخص کو جو کسی عورت یا امر د پر عاشق ہوچار پانچ
ون کھانے پینے کوند دیا ج نے پھراس سے پوچھا جائے کہ بتلاؤرو ٹی اور پائی لائیں یا عورت اورام و
کو بلائیس ۔ تو وہ اس وقت روٹی اور پائی ہی کی ورخواست کریگا۔ اور عورت اورام و کے عشق کو بھول
جائےگا۔ ای طرح اور سارے مطلوبات کود کھی لیے جاتو سب کا مدارا کی بر ہے چنا نچہ ای کیسے نوکری
اور ملازمت کی جاتی ہا اورای کے لئے تیری میری غلامی کی جاتی ہے بعض وفعد آ دی اس سے گھرا کر
یوں بھی کہنے لگتا ہے کہ یہ دونر نے کہاں کا لگ گیا۔ مگر پھر بھی اس دوز نے کے بحر نے سے چارہ ہیں۔ ایک
وقت بھرنے کے بعد پھر دوس ہے دفت کے لئے فکر ہے کہ شام کواے کس چیز سے بھرا جائے گا۔

اور یہاں ہے معلوم ہوتا ہے کرت تعالی نے ہورے جذبات کی س قدررعایت فرمائی ہے۔ حق تعالی کی توجیہ

واقعی اپنے ساتھ حق تعالیٰ کے برتاؤ کود کھے کرجرت ہوتی ہے کہ وہ کس کرم کے ساتھ تربیت فرماتے ہیں جارے اور مربی ہیں اول تو ان ہیں زیادہ تروہ ہیں جواپی اغراض کوصاحب حاجت کی اغراض پر مقدم رکھتے ہیں۔ البتہ والدین اس سے کس قدر متنیٰ ہیں کہ وہ اولا د کے جذبات کی بے غرضانہ رعایت کرتے ہیں۔ گوبعض دفعہ وہ بھی اپنے جذبات سے مغلوب ہوجاتے ہیں۔ گرفت تعالیٰ چونکہ کسی چیز سے مغلوب نہیں ہیں وہ تو بندہ کے ساتھ بالکل ای کے جذبات کی دعایت سے معاملہ فرماتے ہیں۔

بھلاغورتو سیجے کیا حق تعالیٰ کبابندہ۔ان کی عظمت کا مقتضا تو ہے کہ دہ بندہ کے ساتھ داشتہ داشتہ معاملہ کرتے ۔گرخیس وہ تہایت درجہ توجہ فرمائے ہیں حالا نکہ عقل تواس کو بھی تبحویز خبیس کر سکتی کہ حق تعالیٰ بندہ کے اوپر بندہ کوحق تعالیٰ کو نکہ توجہ ہوتی ہے مناسب سے۔اور بندہ کوحق تعالیٰ کا علم بھی کی ذات وصفات سے کیا نسبت ؟ بچھ بھی نہیں۔اس کوتو اتن بھی نسبت نہیں کہ حق تعالیٰ کا علم بھی اس کو ہو سکے۔ حالا نکہ علم ومعرفت تعنق کا اونی درجہ ہے گرہم ہیں یہ بھی مفقو د ہے۔انسان کو ذات وصفات الہ کے کہ تو کیا معلوم ہوتی ان کا پورا انکہ شاف بالوجہ بھی نہیں ہوتا۔ جب بندہ کوحق تعالیٰ وصفات الہ کے کہ تو کیا معلوم ہوتی ان کا پورا انکہ شاف بالوجہ بھی نہیں ہوتا۔ جب بندہ کوحق تعالیٰ کو بدول کی دائی اور سبب بی کے ہمارے حال برتوجہ ہے۔

من نہ کروم خلق تاسودے کئم ﴿ بلک تابر بندگاں جودے کئم (میں نے مخلوق کواس لئے پیدانہیں کیا کہان سے نفع حاصل کروں بلکہاس لئے پیدا کیا کہان پر جود وکرم کرون)

پھر توجہ بھی معمولی نہیں بلکہ اس ورجہ کی توجہ کہ کسی کو بھی اتن توجہ بیں اور جس کی نظیر نہیں واسکتی ۔ حتی کہ مال باپ با تکلیہ سنتغنی نہیں۔ ان کو بھی اولاو کی ۔ حتی کہ مال باپ با تکلیہ سنتغنی نہیں۔ ان کو بھی اولاو کی کسی قدراحتیاج ہے اور وہ اولاد کی پرورش میں اپنے بہت سے منافع مد نظر رکھتے ہیں اور حق تعالی بالکل مستغنی ہیں۔ ان کو کسی کی فررہ برابر بھی احتیاج نہیں۔

اب بتلائے اگر حق تعالی اپنی شان استغنا کے موافق ہم سے معامد فر ماتے تو کیا کوئی اس

کائل کرسکتا تھ ہر گرنبیں۔ ہکہ وہ تو ایسا مع مدفر ماتے ہیں کہ جس بیں باکل بندہ ہی کے جذبات کی رعایت ہوتی ہے۔ تو یہ س قدر رحمت وکرم ہے کہ جن تعالیٰ ہمارے ساتھ اپی شان استغناء کے مناسب معاملہ نہیں فرماتے ہیں۔ مگر مناسب معاملہ نہیں فرماتے ہیں۔ مگر مناسب معاملہ نہیں فرماتے ہیں۔ مگر ہماری فرمات کے جائری فرمات ہیں ہی بھلا ہماری برحالت کی دعایت ہے کہ اگر کوئی اوٹی حاکم ہماری فرماتی خرمیں اس کی مدت اور ہم کو اپنے پاس ہی بھلا وے تو اس کا بار بارشکر بیاوا کیا جاتا ہے اور و نیا بھر میں اس کی مدت اور اس پرفخر کرتے بھرتے ہیں۔ مگر حق تعالیٰ کی توجہ اور عن بیات کے ساتھ کھی تحدر کا معاملہ نہیں کیا جاتا۔ بمکہ ایسا معاملہ کیا جاتا ہے کو یاحق تعالیٰ کی توجہ اور عن بیات کے ساتھ کھی تحدر کا معاملہ ترضد ارکا بھی شکر بیاوا کا کہ ایسا معاملہ ہے کہ اس نے ہمارا قرضد و بایا نہیں جلدی اواکر دیا۔ یہاں اتنا بھی نہیں۔

صاحبوا بيات بهت افسوساك باس كاعلاج كرنا جا بيا

جنت کا کام

حق تعالی نے کلوا واشو ہوا (کھاؤاور پو) فرما کر ہمارے جذبات کی رعایت فرمائی ہواورغایت ورجہ کی رعایت فرمائی ہو دندان کی شان کا مقتضا پیتھا کہ اکل وشرب کا بالکل ذکر نہ فرماتے کیونکہ حق تعدالی خوداس ہے منزہ ہیں اور ہمارے افعال ہیں بھی پیغل ادون ہے۔ اس لئے سب کے سامنے اس کے ارتکاب سے شرم آتی ہے۔ چنانچہ وکھے لیجئے کہ سب کے سامنے کپڑا پہننے سے شرم نہیں آتی ۔ والئے سے شرم نہیں آتی ۔ عطاوا خذ سے شرم نہیں آتی ۔ عطاوا خذ سے شرم نہیں آتی ۔ عماف معلوم ہوتا ہے کہ یہ برئے نقص کا کام ہے۔

ای گئے حق تھا کی نے حضرت عیسیٰ و مریم علیماالسلام کی شبت کانا یا کلان المطعام (وہ ووٹوں کھا نا کھائے ہیں) نہیں فرمایا ووٹوں کھا نا کھائے ہیں) نہیں فرمایا کیونک اکل وشرب ان کا جدامجد ہے جو بول و براز کرے گا وہ پہلے کھائے ہے گا بھی ضرور ۔ تواکل وشرب ہی سبب ہو بول و براز کا ۔ اس لئے حق تعالیٰ نے سبب کو بیان فرمادیا کہ اس ہے مسبب برخوود الت ہوجائے گی ۔ صریح ندفر ماناس وجہ ہے کہ قرآن ہیں تہذیب کی بہت رمایت کی گئی ہے اس لئے بول و براز کا ذکر نہیں کیا گیا۔ بلکہ سبب کے ذکر ہے اس پردلالت کردی گئی۔ ہے اس لئے بول و براز کا ذکر نہیں کیا گیا۔ بلکہ سبب کے ذکر ہے اس پردلالت کردی گئی۔ اگر کوئی یہ ہے کہ جنت میں تواکل کو بول و براز سے مفارقت ہوگی ۔ اس کا جواب ہے کہ دہارا و کوئی یہ بیس کہ کہ جنت میں تواکل کو بول و براز سے مفارقت ہوگی۔ اس کا جواب ہے کہ دہارا و کوئی یہ بیس کہ اول و براز سے مفارق نہیں۔ بلکہ وعوی ہے ہے کہ بول و براز اکل سے مفارق نہیں۔

دوسرے یہاں گفتگواکل وشرب فی الدنیا ہیں ہے اور دنیا ہیں طرفین سے تل زم ہے اور یہاں عیسی وسرے یہاں گفتگواکل وشرب فی الدنیا ہیں ہے اور دنیا ہیں اس سے بول و براز پر کنا میسجے ہے۔
علاوہ ازیں یہ کہ اگر اس طعام کے بعد بول و براز دنیا ہیں بھی نہ ہوتا جب بھی اکل وشرب صفات نقص ہے ایک آواس لئے ہے کہ۔

ابروبادومہ وخورشید وفلک درکارند اللہ تاتوتونائے بکف آری و ہففلت نہ خوری (ابروہوا' چاند دسورج سب کام میں مصروف ہیں تا کہ تو ایک روٹی بھی ہفیلی پر رکھ کر غفلت سے نہ کھائے)

لینی اس میں احتیاج سب سے زیادہ ہے سارے عالم کو چکر لگانے کے بعد انسان کی غذا حاصل ہوتی ہے۔ دوسر سے جیسا او پر ندکور ہوا۔ خودشہادت حالیہ اس کے ادون ہونے پردال ہے کہ انسان اس کوخود حقیر مجھتا ہے اور دوسروں کے سامنے کھانے پینے سے ایسا شرما تا ہے کو یا کوئی عیب کا کام کررہا ہے۔

ہرعیب کے سلطان بہ پہندہ ہنرست (جس عیب کو بادشاہ بھی پہندکرے وہ عیب ہے)
توالی ادنی چیز کا ہماری خاطرے ذکر فرمانا نہایت ہی شفقت کی دلیل ہے اب اس کا
ذکر فرمانے کے بعدان کے ذکر فرمانے سے اس کے ونا ت بھی مبدل بہ شرف ہوئے یعنی جب سرکار
نے اس کو پہند فرمالیا اور کیلو او ادشو بو ا (کھا وَ اور پو) فرمادیا تواب بیعیب شرف کوئیج گیا۔

جہارے ایک دوست مولوی احد علی صاحب مرحوم جب کھانا کھانے جیٹے تورفقاء سے کہا کرتے ہے کہ کہ آؤ جنت کا کام کرلویعنی کھانا کھالو۔لوگ پوچھتے کہ حضرت! یہ جنت کا کام ہے یاد نیا کا تو کہتے ہیں کہ میاں دنیا کا کام تو نماز پڑھنا اورروز ہ رکھنا ہے اور کھانا چینا تو جنت ہی کا کام ہے کہ وہاں سوائے اس کے اور کھی کام نہ ہوگا۔ نہ نماز ہوگی نہ روز ہ نہ جج ندز کو ق۔

تواب میر عیب ایسا مقبول ہوا کہ جنت کا کام ہوگیا۔ گر میسب ای عنایت کا نتیجہ ہے جو حق تعالیٰ کو بندوں کے حال پر ہے کہ وہ ہمارے جذبات کی رعایت فرماتے ہیں اس لئے اکل وشرب کو باوجو داس کے کہ ہمارے نز ویک بھی عیب کا کام ہے گر چونکہ ہم اس کے عاشق ہیں اور اس کے بدوں ہم کوچارہ نہیں حق تعالیٰ نے جنت میں بھی رکھا اور قرآن میں بھی اس کا ذکر مستقلاً فرمایا۔ ورنہ اگروہ اپنی شان کے موافق ہم ہے معاملہ فرمائے تو اکل وشرب کا ذکر قرآن میں ندہوتا۔

ايام خاليه

پس ارشاد فرماتے ہیں کہ قیامت ہیں اسی ب الیمین ہے کہا جائے گا کلو او اشو ہو اھنینا بما اسلفتہ فی الا یام النحالیہ ، (جوتم نے ایام ماضیہ ہیں کئے تھے) کہ کھا دُہوان اعمال کے وض میں جوتم نے ایام خالیہ ہیں ایام خالیہ کی ایک تفییر ابن عدی وہیں نے دہ فقل کی ہے جو پہلے میں جوتم نے ایام خالیہ ہیں ہے جو پہلے سے میرے دل میں تھی اورای کی بنا پر میں نے اس آیت کو بیان کے لئے اختیار کیا تھا۔ مگر مجھے تھا ش محتی کہ اس کی تاریخ میں قرآن کے ایک لفظ کے میں قرآن کے ایک لفظ کی تنہیں کہ تا تنہ سلف کے میں قرآن کے ایک لفظ کی تفییر بھی کو ارانہیں کرتا۔ تفییر بالرائے سے دُرلگتا ہے۔ بال نکات ولطا نف بیان کرنے کا مضا نفہ بیں ۔ کو نکہ وہ تفییر میں واقل نہیں۔ بلک امرزا کد کی قبیل سے ہیں۔

بہر حال بھے تلاش تھی کہ ایام خالیہ ہے ہیں نے جو سمجھا ہے اس کی تائید منقول سے ال جائے۔ اول اور تفاسیر دیکھیں جلالین وغیرہ گرکسی ہیں اس کی موافقت نہلی۔ پھرا خیر ہیں ورمنثور ہیں تلاش کیا تو اس ہیں این منذروا بن عدی اور بہتی کی تخریج سے نقل کیا ہے کہ عبداللہ بن رفیع نے بمااسلفتم فی الایام المخالیہ (جوتم نے ایام ماشیہ ہیں کئے تھے) کی تفییر ہیں فر مایا ہے: هو المصوم (وہ روزہ ہے) (قلت و عزاہ المقمی فی تفسیر الی مجاهد و الکلبی قالا هی ایام المصیام قال القمی فیکون الاکل و المسرب فی

الجنة بدل الامساك عنهما في الدنيا اله (كمانا پينا جنت ش ونيا ش كمائے يئے سے ركنے كابدل بوجائے كا) (ص٣٣ج٢٥)

اگر میتا ئید شد ملتی تو بزی فکر ہوتی اور مجھے کوئی دوسری آیت تلاش کرنا پڑتی۔ مگر دل اس کے بیان کو جا ہتا تھا کیونکداول ذہن میں یہی آئی تھی اوراس کے متعلق ہی ایک ف ص مضمون ذہن میں بھی آئی تھی اوراس کے متعلق ہی ایک ف ص مضمون ذہن میں بھی آئی تھی آگئی اور مجھے دوسری آیت تلاش کرنا نہ پڑی۔

آسان عبادت

میرامقصوداس وقت بیریان کرتا ہے کہ روز وائی حقیقت کے اعتبارے نہا ہے کہ اوراس
آیت میں افظ خالیاس پردلالت کررہا ہے کیونکہ ابھی معلوم ہوا کہ اس کی تغییر خلوعن الطبعام ہے اور ظاہر
ہے کہ خلوصف عدمیہ ہے جس سے اس پردل لت ہورای ہے کہ صوم عبادت عدمیہ ہے نہ کہ وجود ہے۔
دوسری عبادات صلوٰ و وجی وزکوٰ و وذکر وغیر و وجودی اور تعلی ہیں۔ان میں کچھکام کرنا پڑتا ہے۔ تج میں
تو بہت ہی بڑا کام کرنا پڑتا ہے کہ وور دراز کا سفر ہوتا ہے اور نماز میں ارکان کثیر و اداکر نے پڑتے ہیں
اور مردول کونو مسجد میں بھی جانا پڑتا ہے ورند نماز ناقص ہوگی کیونکہ ترک جماعت پروعید آئی ہے۔

اس پرایک لطیفہ یادآ یا۔ ایک غیر مقلد کی عادت تھی کہ وہ گھرے اپنے کھیت پر جوذ رادورتھا جاتا تو وہاں پہنچ کر تمازیس قصر کرتا اور گھر پر آکر پوری ٹماز پڑھتا۔ کسی نے کہا بندہ خدا تمہارا کھیت تو گھر سے زدیک ہے مسافت سفر تو نہیں ہے جوتم وہاں قصر کرتے ہو۔ تو اس نے جواب ویا کہ مسافت سفر کی کیا ضرورت ہے ۔ قرآن میں تو افا ضوبت ملی الارض (جب تم زمین پر سفر کرو) آیا ہے جس کے معنی سیر فی الارض ہیں اور یہ مغہوم کھیت میں جائے پر بھی صادق ہے ۔ ایک تنی عالم نے اس کا خوب جواب دیا۔ کہا پھر تو تم کو ہمیش قصر بی کرتا جا ہے کیونکہ گھرے سمجد تک آئے پر بھی "ضوب کا خوب جواب دیا۔ کہا پھر تو تم کو ہمیش قصر بی کرتا جا ہے کیونکہ گھرے سمجد تک آئے پر بھی "ضوب فی الاد ض " (زمین پر چانا) صادق ہے اس کا غیر مقلد کے پاس کوئی جواب نہ تھا۔

غرض! اورعبادات ہیں تو پھونہ پھے کہ اپڑتا ہے کیونکدان کی حقیقت وجودی ہے اورروزہ میں پھونیس کرنا پڑتا کیونکداس کی حقیقت عدمی ہے کہ اس ہیں صرف بعض اشیاء کور ک کرنا ہے۔
مگر یہاں یہ بات سیھنے کی ہے کہ مطلق ترک کوعبادت نہ مجھا جائے اور نہ میرا یہ مقصود ہے بلکہ جس ترک کے ساتھ قصد مطلق ہوجس کوفقہ ء کف سے تعبیر کرتے ہیں وہی عبادت ہے اور ترک اصلی جوعدمی حفل ہے وہ نہ ہرساعت ہیں جھنص ہے انتہا حسنات کا فاعل ہوگا۔
یونکہ جرآن و جرساعت میں انسان عمل توایک ہی کرسکتا ہے اور اس کے سواتمام افعال کا تارک کی ہوتا ہے تو پھر چاہے وزن اعمال کی ضرورت ہی شدرہے کیونکہ ہر حال میں موس کے لئے تو غلبہ مسلمانوں کے حیات عالب ہو تکے ۔ اور بعض کے سیمتات اور بعض کے حسنات و سیمتات مساوی مسلمانوں کے حسنات و سیمتات مساوی

ہی صورت کا تحقق ہوگا کہ سب کے حسنات ہی غالب ہوں۔ سلب قدرت گناہ

د دسرے بیرکنصوص ہے ہرمکل کےشرعاً معتبر ہونے میں ارادہ ونبیت کا شرط ہونامعلوم ہور ہا ہے صدیث میں ہے الاعمال بالنیات (تمام اعمال کا دارومدار نیوں یرے)۔اس کا مقتضا بھی یمی ہے کہ ترک اصلی عبادت شہو کیونکہ اس میں نیت وارادہ نہیں ہے کیکن اس کا پیمطلب نہیں کہ ترک اصلی تعمت بھی نہیں وہ انعام حق ضرور ہے۔اس وقت حق تعالیٰ نے ہم کو ہزاروں گناہوں ہے بچارکھا ہے گوہم نے بیخے کاارادہ نہیں کیا تمریب ارادہ کے بھی گناہوں سے محفوظ رہااس کے نعمت ہونے میں شک نہیں اور اس تعت کا ہم کوشکر بیا واکرنا جاہے بید میں نے اس لئے کہدویا تا کہ اس تعمت کی بے قدری ندکی جائے۔ ہی خوب مجھلو کہ تعت ہونا اور چیز ہے طاعت ہونا اور بات ہے۔ میں ترک اصلی سے طاعات دعبادت ہونے کی نفی کرر ہاہوں بعمت ہونے کی نفی تبیں کررہا۔ اورترک اصلی تو نعمت کیوں نہ ہوتا جس میں گنا ہوں کی طرف التفات ہی نہیں نہ فعلاً نہ تر کا _ میں توترتی کر کے بیکہتا ہوں کہ یہ بھی بڑی تعت ہے کہ ارادہ معصیت کے بعد گناہ کی قدرت سلب کر لی جائے کہ بندہ گناہ کاارادہ کرتا ہے محر کرنہیں سکتا۔ کو مجھے اس مسئلہ کی تحقیق نہیں کہ ارادہ کے بعد اگر گناہ پر قدرت اور قدرت کے بعد میں اس کاارتکاب بھی ہوجائے تواس کے گناہ میں اورارادہ میں جاز مہمردہ عن الفعل کے گناہ میں فرق ہے یا مسادات ہے۔ ظاہراً تو بیم غیروم ہوتا ہے کہ دونوں میں فرق ہے مساوات نہیں ہے لیکن اگر مساوات بھی ہو جب بھی سلب قدرت فعل تعت ہے کیونکہ ارادہ جازمہ کے بعد ناکا می ہونے ہے انسان کوندامت سخت ہوتی ہے کہ میں نے خواہ مخواہ ہی گناہ کا قصد کیا۔اس حالت میں وہ جلدی ہی اینے ارادہ سے توبر کرلیتا ہے بخلاف اس مخص کے جس کوارا دہ کے بعد کامیا بی ہوجائے کہ وہ اراوے پر ٹادم نہیں ہوتا۔ بلکہ اول اول تو اس کوخوشی ہوتی ہے كهيس اين اراده بين كامياب هو كيا- پيمر كي عرصه تك لذت كناه كي مستى بين منهمك ربتا ہے۔ اس کوتو بہ کی تو فیق بہت دیر میں ہوتی ہے۔اور بعض کوعمر بھر بھی نہیں ہوتی ۔اس لئے میرایہ دعویٰ مسجع ہے کہ سلب قدرت کناہ بھی نعمت ہے چرعدم الثقات کیوں نانعمت ہوگا۔

المحيح للبحاري ۲۹ ۱٬۵۵ ۹٬۱۲۹ ۱٬۰۵۰ استن أبي داؤد ۲۹٬۱۱ ستن الترمذي: ۱ ۲۳۵ مستن السيالي كتاب الطهارة ب: ۵۹

پس ترک اصلی میں جوہم ہزاروں کن ہول سے بچے ہوئے ہیں۔ نعمت تو ضرور ہے مگر قواعد سے میعلوم ہوتا ہے کہ یہ عبادت نہیں اور یہ گفتگو بھی قانون کی شخفیق ہے باتی بیتن تعالی کا فضل وانعام ہے کہ وہ کسی کوترک اصلی پر بھی نواب دیدیں کیونکہ فضل وانعام کسی قانون کا پا بند نہیں۔

جیسا کہ حدیث میں آیا ہے کہ حشر میں ایک شخص کوسینات کے وض میں گن کن کر حسنات دی جا کیں گی۔ تو یہ اور بات ہے گریہ قانون تو بانون قاعدہ وہ ی ہے کہ معصیت پر عذاب ہو۔ اور ترک اصلی پر تو اب نہ ہو۔ گر قانون تو جہارے واسطے ہے تق تعالیٰ تو قانون کے پابند نیس ہیں۔ وہ بطور نفش کے جوج ہیں کریں مگر میضر ور ہے کہ خلاف قانون کے عمل کم ہوگا زیادہ عملدرآ مدقانون ہی کے موافق ہوگا لہٰذا یہ بات عقل کے فلاف ہے کہ فلاف کے جروسہ پر عمدا قانون کی خلاف ورزی کی جائے۔ بال اگر کسی سے قانون کی خلاف ورزی ہوچکی ہوتو وہ محض قانون پر نظر کر کے مایوں بھی نہ ہو۔ بلکہ فضل پر نظر کر کے خلال کی ذات سے امیدر کھے کہ ان شاء احتد سب گناہ معاف ہوجا کیں گئے۔ اور گزشتہ سے تو بو واستعنفار کرنے کی ہمت کرے اور آئندہ کے یابندی قانون کا پوراا ہتمام کرے۔

بہرحال قانون میہ ہے کہ جس ترک میں ارادہ کا پچھ دخل نہ ہووہ اطاعت نہیں۔ بلکہ طاعت وہی ترک ہے جس میں ارادہ کا بھی پچھ دخل ہو۔

نيتصوم

چنانچہ روزہ کی حقیقت جوزک ہے وہ بھی ترک محفن نہیں بلکہ ترک بالارادہ ہے چنانچہ اگر کوئی روزہ کی نبیت نہ کرے تو دن بھر فاقہ کرنے اور بیاسا مرنے سے وہ صائم نہ ہوگا۔ای لئے صحت صوم کے لئے نبیت شرط ہے۔

اس پرشایدکی کویہ شبہ ہوکہ جب روزہ میں نیت بھی ضروری ہے اور بدول نیت کے روزہ نیس ہوتا تو پھر صوم عدی نہ ہوا۔ بلکہ ویکر عبادات کی طرح وہ بھی وجودی ہوگیا۔ کیونکہ نیت امر وجودی ہے۔

اس کا جواب بیہ ہے کہ تم ذرا معقولیوں سے تو دریا فت کروکہ و مرکب من الوجودی والعدمی کی نبیت کیا کہتے ہیں۔ وہ بہی کہتے ہیں کہ عدمی اور وجودی سے مرکب عدمی ہوگا کیونکہ مجموعہ احسن کے تابع ہوتا ہے۔

اگرتم بیکبوکہ ہم تو خود عاقل ہیں گومعقولی ہیں ہیں اس ۔ لیئہ ہم معقولیوں کی بات نہیں سنا جا ہے جہ جب تک ہماری عقل ہیں نہ آئے تو دوسرا جواب بیرے کہ نبیت روز ہ کی حقیقت میں داخل نہیں۔ بلک وہ

اس کی شرط اوراس ہے مقدم ہے۔ چنانچہ جن ائمہ کے نز دیک طبوع فجر کے بعد نبیت جائز نہیں ۔ اوررات ہی کوئیت کرٹا لازم ہے ان کے نزد یک تو ظاہر ہے کہ نبیت جزوصوم نبیس ورنہ تقدم لازم نہ ہوتا۔ باتی جن کے فزویک مطلقا رات سے نیت کر ناشر طنبیس ان کے فزو یک بھی نیت صوم سے مقدم بی ہے گران حضرات نے اکثر اجزائے صوم پر مقدم ہوئے کودلیل ہے بمنز لہ تقدم علی الکل کے قرار دیا ے۔ چنانچہ نصف النہار کے وقت یاس کے بعد نیت کرناان کے نز دیک بھی لغود غیر معتر ہے۔

اگر کسی کویہ شبہ ہو کہ دن مجرروز ہ کی نبیت کار ہنا تو ضروری ہے اور بقاء نبیت بحکم نبیت ہے تو نبیت صوبم ے مقدم نہ ہوئی۔ بلکہ مقتر ن ہوئی۔ ۔ تو میں کہتا ہوں کہ اس کا فیصد مس کل شرعیہ خود کررہے ہیں کہ بقاء نیت واقتر ان ارادہ صوم کے لئے شرط بلکہ محص تقدم نیت شرط ہے تھیتا یا حکما۔ پھرروزہ شروع ہوجائے کے بعدا گریدوں فطرحی ہے پختہ قصد بھی کرنے کہ میں روز وہیں رکھتا تب بھی روز وہاقی رہتا ہے۔

اس سے صاف ثابت ہوا کہ اقتران نیت شرطنہیں صرف تقدم کافی ہے البتہ اگر روزہ شروع ہونے سے میلے شیت تو ڑچکا ہوتواس کا بیاثر ہوگا کہ روزہ شروع نہ ہوگا۔ اور پیچکم اس بات کی دلیل ہے کے نبیت شطرصوم نہیں بلک محص شرط ہے ہیں یہی کہنا غلط ہے کہ صوم عدمی اور وجودی سے مرکب ہے۔ بلکہ تستح بیہ کہاں کی حقیقت تو عدی ہالبتہ اس حقیقت عدمیہ کا اعتبارا یک وجودی شرط پر موقوف ہے۔

اعمال وجودييه

جب بیمعلوم ہوگیا کہروز ہ عدمی ہے اور اس کی حقیقت ترک ہے تو اب دیکھنا جا ہے کہ اعمال وجود بیشاق ہوتے ہیں یاعدسیہاں میں عقل ہے فتویٰ تو معلوم ہوگا کہا عمال وجود بیہی شاق ہیں۔ ا تلمال عدمیہ بین کیا دشواری ہے۔اس لئے عقدا ء کا اس پراتفاق ہے کہ فعل ہے ترک اہون ہے۔ اس مرشاید کوئی به شبه کرے که به تومشامدہ کے خلاف ہے۔ روزہ میں تو لوگ رودیتے ہیں اور بردی مصیبت معلوم ہوتی ہے اور نماز میں کیا دشواری ہے خاص کر ہماری ولایتی نماز میں جس کی مثال مولا نامحمہ یعقوب صاحب رحمته اللہ علیہ گھڑی ہے دیا کرتے تھے کہ ہماری نماز ایسی ہے جیسے گھڑی اور تکبیر تحریمہ ایس ہے جیسے گھڑی میں کوک (جانی) بھرنا تو جیسے وہ کوک بھرنے کے بعد خود بخو د چکتی رہتی ہے اور کوک ختم ہو جانے پر بند ہو جاتی ہے۔ اس طرح تکبیرتم بھے بعد قراًت ورکوع و جود ہم ہے خود بخو د صادر ہوتے رہتے ہیں کیونکہ مشق ہوچکی ہے اور سلام کے اویرنمازخود بخودتم ہوجاتی ہے۔ ال مشق پرایک حکایت یادآئی که ایک اگریز حاکم کی چشی میں دوسر رشته دار ہے۔ جن جی ایک نمازی تھا۔ ایک خان کی تھا تی گھنٹہ کی چھٹی دیا کرتا تھا۔ نمازی تو نماز پوری کرکے آتا در بے نمازی ادھرادھ نہل کرحقہ پان کھا کر آج تا۔ اس حالت جس ظاہر ہے کہ بے نمازی جلدی دالیس ہوگا تو ایک دن حاکم نے اس ہے کہا کہ تم بہت جلدی واپس آجاتے ہوا در دوسرا دیر جس آتا ہے۔ معلوم ہوتا ہے کہ تم نماز نہیں پڑھتے تو اس نے کہا نہیں حضور نماز تو جس ہوا در دوسرا دیر جس آتا ہوں۔ ور در جس رکونکہ میرے آباؤا جداد تو کئی صدیوں ہے نمازی ہیں۔ تو جھے نمازی خوب مشق ہے۔ اور یہ دوسرا سردشتہ دار نیا نمازی ہیں۔ تو جھے نمازی خوب مشق ہے۔ اور یہ دوسرا سردشتہ دار نیا نمازی ہے اس کونماز انہیں طرح یا ذبیس ۔ سوج سوج کر پڑھتا ہے اس داسطے دیر لگا تا ہے۔

خیر! اس نے تو یہ جواب فورا گھڑا تھا گر ہماری حالت بی ہے کہ ہم کو تمازی مشق ہوگئی ہے۔ اس لئے سوچنے کی بھی ضرورت نہیں ہوتی۔ بس اللہ اکبر کہا۔ اور سارے ارکان خود بخو ادا ہونے گئے۔ تو ایس تماز میں کیا مشقت ہے۔ اور روزہ میں تو ایس مشقت ہے کہ آج کل تو بعجہ رمضان کے سردی میں آنے کے زیادہ تعب محسوس نہیں ہوتا۔ گر چند روز پہیے جب گری میں رمضان آتا تھا تو یہ حالت تھی کہ میں نے خود جنگل میں ایک شخص کو میچ کی نماز کے بعد طلوع مش میں رمضان آتا تھا تو یہ حالت تھی کہ میں نے خود جنگل میں ایک شخص کو میچ کی نماز کے بعد طلوع مش میں روزہ تو روزہ تو

چٹانچدایک شخص سفر کوچلا۔ چیتے ہوئے اپنی ماں سے بوچھنے لگا کہ اماں پہنے منگانا ہے ہیں سفر میں جارہا ہوں۔ اس نے کہا کہ وہاں سے ایک ہنڈیا مٹی کی لینے آتا شاید جھنی نہ جاتا ہوگا کیوں کہ وہاں کی ہنڈیا سال کی فرمائش کو یا در کھا اور ایک ہنڈیا خریدی اور گھر کوچلا۔ وہاں کی ہنڈیا کو ایک ہنڈیا کو چلا۔ جب گاؤں قریب رہ گیا سوچا کہ ماں اس ہنڈیا کو لیکر کیا کر گیا۔ ظاہر ہے کہ اس میں وال وغیرہ پکائے گا۔ کہ کہ دول کے بعد بیکا لی ہوجائے گی چر بچوٹ جائے گی توجوکام آتی مدت میں ہوگا میں اس کو ایکی نہ کردوں۔ بیسوج کر ڈھیلوں کو چواہما بنایا۔ ہنڈیا میں پانی بحرکر چو ہے پر رکھا۔ ہے جمع

کر کے اس کے یتی جلائے۔ جب وہ کالی ہوگئ کسی پھر پردے ماری اور پھوڑ دی۔
جب کھر پہنچے ماں نے ہنڈیا مائٹی تو کہا جی ہاں بیس ہنڈیا لایا ہوں۔ گریہ تو ہتلا و کہ تم اے
کیا کر تیں۔ کہا بیس اس میں وال سالن پکاتی۔ کہا پھر کیا ہوتا۔ کہا پھر وہ چند روز کے بعد خراب
ہوجاتی۔ کہا پھر کیا ہوتا۔ کہا پھر پھوٹ جاتی۔ صاحب زادہ ہو لے بس بس جو کام تم اے عرصہ
میں کر تیں۔ میں نے ایک ہی دن میں کر دیا۔ اور سارا قصہ قل کر دیا۔ تو وہ صح صح تر بوز کھانے والا
میں کر تیں۔ میں نے ایک ہی دن میں کر دیا۔ اور سارا قصہ قل کر دیا۔ تو وہ صح صح تر بوز کھانے والا
میں ایسائی انتظم تھا کہ دو پہر کے بعد جو کام کرتا پڑے گاس کو سے ہی کیوں شامر دیا جائے۔
میں ایسائی انتظام تھا کہ دو پہر کے بعد جو کام کرتا پڑے گاس کو سے ہی کیوں شامر دیا جائے۔
میں ایسائی انتظام تھا کہ دو پہر کے بعد جو کام کرتا پڑے گاس کو سے ہی کیوں شامر دیا جائے۔
میں ایسائی انتظام تھا کہ دو پہر کے بعد جو کام کرتا پڑے گاس کو سے ہی کیوں شامر دیا جائے۔

غرض ان واقعات ہے معلوم ہوتا ہے کہ روز ہ آسان نہیں بلکہ دشوار ہے اورتم اس کوآسان کہدرہے ہوتو جواب ہیہ کہ درشواری بوجا یک عارض لینی امتداد کے ہے کہ گرمیوں کا دن بہت برخ اہوتا ہے۔ جس کی وجہ سے روز ہ میں امتداد ہوجاتا ہے اگر کہیں نماز اتنی ممتد ہوجائے جس کوآپ آسان کہتے ہیں تو پھر تانی یا د آجائے۔ چودہ گھنٹے تک تو کوئی کیا نماز پڑھے گا۔ اگر کہیں تر اورج میں ایک تھنشہ سے زیادہ دیر ہوجاتی ہے۔ تو لوگ تھبرا جاتے ہیں کا نبور میں ایک مسجد سے نکلتے ہوئے بعض لوگ کہدرہے نظمتے ہوئے بعض لوگ کہدرہے نظم کہ تر اورج کیا ہے تر نظمت ہے۔ یہ تو تر اورج کا حال ہے۔

شبینہ میں تو پچھ ہو جھے ہی تہیں کیا حال ہوتا ہے۔ حالانکہ وہ بھی روزہ کے برابر ممتد نہیں ہوتا۔ پانچ چھ گھنے میں شبینہ پڑھے والے قرآن ختم کر لیتے ہیں۔ گروہ پانچ چھ گھنے مقتہ یوں کو پانچ مہینے کے برابر ہوجاتے ہیں۔ پہلے یہاں بھی شبینہ کا رواح تھا۔ بڑی گر بڑہوتی تھی۔اب تو رواح نہیں رہا۔ کیونکہ جہنے ہی ہے لوگوں کو فرصت نہیں۔ شبینہ کون سے اس گر بڑکوہ کھ کر میں نے رواح نہیں رہا۔ کیونکہ جہنے ہی ہے لوگوں کو یہان شوق تو تھا نہیں گھن نام ونمود مقاکہ ہم نے ایک رات ہیں قرآن سنا۔ حالت بیتی کہ مقتدی پڑے ہوئے ہیں اورا مام کھڑا ہوا پڑھ رہا ہے۔ پھروہ بھی ایس تھا۔ اور سمجھانے کی اس کو ضرورت ہی کیا تھی بھی ایس تھا۔ اور سمجھانے کی اس کو ضرورت ہی کیا تھی جب سنے اور سمجھانے کی اس کو ضرورت ہی کیا تھی جب سنے اور سمجھے ہی والے نہ ہوں۔ کیونکہ مقتدی تواکش سمجھ ہیں آتا تھا۔اور سمجھانے کی اس کو ضرورت ہی کیا تھی جب سنے اور سمجھے ہی والے نہ ہوں۔ کیونکہ مقتدی تواکش سمجھ ہیں آتا تھا۔ اور سمجھانے کی اس کو شرورت ہی کیا تھی جب سنے اور سمجھے ہیں اور ای کے اور کی بیت کی سمجھ ہیں آتا تھا۔ اور سمجھے ہیں اور کی میں ہو۔ میں اس کا اب تک روائ ہے۔ وہاں کے لوگوں کو میں منع نہیں کرتا کیونکہ ان کوشوق ہے بشرطیکے تراوش میں ہو۔

یبان توبی حالت تھی کہ ایک حافظ صاحب شبینہ میں پانگ پر لیٹے ہوئے امام کو تھہ وے رہے تھے۔ جس سے ساری رات کی محنت ہی ضائع گئی۔ کیونکہ یہ لقمہ مشل لقمہ طعہ م کے مفسد صلوق ہے۔ اورا کیک شبینہ میں قرآن تم ہوئے سے پہلے جب ہوگئی اور شبح صادق کے بعد کاذبین نے شبینہ پورا کیا۔ تو معلوم ہوا کہ نماز میں ہولت آئی وقت تک ہے جب تک امتذا دنہ ہواورا متداد کے ساتھ تو وہ روزہ سے بھی اشد ہے کیونکہ روزہ میں وہ پابندیاں نہیں جو نماز میں ہیں۔ روزہ اپنی ذات میں ساتھ میں ہونے میں اشد ہے کیونکہ روزہ میں وہ بابندیاں نہیں جو نماز میں جس سے بال زیادت امتداد سے دشوار ہوجاتا ہے۔

روح صوم

رہا ہیں کہ جب روزہ میں مشقت نہیں تو گھراس میں اوّاب بی کیا ہوگا اس کا جواب ہے کہ ہے

کیا ضرور ہے کہ اوّاب مشقت ہی ہے ہوا کرے اور بدوں اس کے وّاب نہ ہو۔ دوہر ہے تجربہ ہیں ہے تو ہیں گوجاز دوں بی کاروزہ ہوا ور گودن بھی چھوٹا ہو گھر بھی کے فتہ کچر مشقت ضرور ہوتی ہے۔ گوہم سر کہ تنابی پیٹ بھرلیں۔ اور بیٹس اسلے کہتا ہوں کہ جھے ان لوگوں کوجواب و بینا مقصود ہے جنہوں نے حری میں پیٹ بھر کے گھانے ہے منع کیا ہے۔ اور بیکہا ہے کہ اس سے روح صوم باطل ہوجاتی ہے۔

نے حری میں پیٹ بھر کے گھانے ہے منع کیا ہے۔ اور بیکہا ہے کہ اس سے روح صوم باطل ہوجاتی ہے۔

فر ماتے جیسا کہ آپ سلی اندعایہ و سلی مزول و روع ملی ایڈ علیہ وسلی مفرور اس سے منع فر مایا ہے کہ وہ بھی معلل موجاتی ہوتا ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلی مقد ات کو بیان نہیں فر مایا جس سے صورت صوم باطل ہوتی تھی بلکہ ان امور ہے بھی معلوم ہوتا ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلی مفدات کو بیان نہیں فر مایا جس سے صورت صوم باطل ہوتی تھی بلکہ ان امور ہے بھی معلوم نہوتا ہے کہ حضور صلی اللہ حضور تعرض فر مایا ہے جن سے روح باطل ہوتی تھی تو اگر شیع سے حقیقت صوم باطل ہوتی تھی جماو صلی اللہ حضور تعرض فر مایا ہے جن سے روح عار دو بی ہے کہ مطلع فر مادیا ہے اور تیم کھا کر فر مایا ہے کہ کوئی چیز مصرف تھی جس سے میں نے تم کو طلع نہ کہیں اس سے ممانعت نہیں ہے۔ حالا تکر حضور علی ان موجو ہی ان می عنہ کہیں اسے منافعت نہیں ہے۔ حالا تکر حضور علی ان عرفی نہیں۔ جس سے میں نے تم کو طلع نہ کیا ہواور کوئی چیز مصرف تھی ۔ جس سے میں نے تم کو طلع نہ کیا ہواور کوئی چیز مصرف تھی جس میں نے تم کو طلع نہ کیا ہواور کوئی چیز مصرف تھی جس سے میں نے تم کو طلع نہ کیا ہواور کوئی چیز مصرف تھی جس سے میں نے تم کو طلع نہ کیا ہواور کوئی چیز مصرف تھی جس سے میں نے تم کو طلع نہ کیا ہواور کوئی چیز مصرف تھی جس سے میں نے تم کو طلع نہ کیا ہواور کوئی چیز مصرف تھی جس سے میں نے تم کو طلع نہ کیا ہواور کوئی چیز مصرف تھی جس سے میں نے تم کو صلع نہ کیا ہو ہے۔

دومراجواب سے کہ ہم کو بھی مسلم نہیں کہ سحری میں پیٹ بھرکے کھانے سے روزہ میں مشقت نہیں ہوتی۔ بلکہ ضرور ہوتی ہے۔خواہ سحری میں کتنا ہی کھالے میں مشقت نہیں ہوتی۔ بلکہ ضرور ہوتی ہے۔خواہ سحری میں کتنا ہی کھالے کی طلب ضرور ہوتی ہے اوراس وقت کھانا نہ ملنے ہے کسی قدر کلفت ہوتی ہے اگر کسی کو اس

کا حب س نہوتو وہ بیار ہے اپنا علاج کرے گرمی کے روز ہیں تو کھانے سے زیادہ پانی کی طلب ہوتی ہے۔ بیاس بھڑکتی ہے اور اس کا مقتضا بیضر ورتھا کہ ہردی ہے۔ بیاس بھڑکتی ہے اور اس کا مقتضا بیضر ورتھا کہ مردی کے روز ہیں بھوک زیادہ بوگر دن جھوٹا ہونے کی وجہ سے ضعف زیادہ بھس ہوتا۔ روڑ ہوارا ورمشغولیت

بہرحال روزہ میں مشقت بھی ہے گروہ امتداد عارض یا مخالفت عادت کی وجہ ہے ۔ فی نفسہ اس کی حقیقت میں کوئی الی بات داخل نہیں جوموجب مشقت ہو۔ کیونکہ روزہ میں کوئی عمل تلاوت قرآن یا ذکروغیرہ ضروری نہیں اگر کوئی دن بھرسوتا رہے روزہ ہوجائے گا۔ ہان اس طرح سوٹا حرام ہے جس سے نماز فوت ہوا ور نماز کے وقت بیدار ہونے کی امید نہ ہوا وراگراہیا کی نے کیا بھی جب بھی نماز فوت کرنے کا تو گناہ ہوگا گرروزہ پھر بھی تیجے ہے یا کوئی شطر نج کھیل ارہے جب بھی روزہ فاسد نہ ہوگا گوشطر نج کا گناہ ہوگا۔ تو فی نفسہ روزہ فود آسان بی ہوا۔ جس کا رازیہ ہے کہ اس میں کوئی عمل نہیں کرتا ہوتا۔

امتداد وغیرہ کی وجہ ہے جوبعضوں کوروزہ لگتا ہے تواس کے بارے میں بھی تجربہ ہے کہ تذکرہ کرنے ہے روزہ زیادہ لگتا ہے کہ آج تو بہت گری ہے۔ آج بیاس زیادہ ہے آج کاروزہ بہت خت ہے۔ اوراگراس بات کو ذہمن ہے بھلاد یا جائے کہ آج ہماراروزہ ہے اوراس کا تذکرہ بھی نہ کیا جائے اور کسی ایسے کام میں لگ جائے جس میں مشغولی زیادہ ہوتو کھر باوجودامتداد کے بھی نہ کیا جائے اور کسی ایسے کام میں لگ جائے جس میں مشغولی زیادہ ہوتو کھر باوجودامتداد کے بھی روزہ زیادہ نہیں لگتا تجربہ کر کے دیکے لیا جائے بہی حالت بڑتم افزاء واقعہ میں ہے کہ اس کے تذکرہ ہے تم ضعیف ہوجاتا ہے۔

اس تقریر سے ایک برااشکال حل ہوگیا۔ وہ یہ کرتی تعالی شان نے حضرت موی علیہ السلام کی والدہ کے قصہ میں فرمایا ہے۔ فاذا خفت علیه فالقیه فی الیم و الا تعخافی و الا تعزنی انار ادوہ الیک و جاعلوہ من الموسلین. "کہ جبتم کوموی علیہ السلام پرکوئی اندیشہ ہوتو ان کودریا میں ڈال و یٹا اور سیجھ خوف فی نہرنا ہم ان کوتمہارے یاس واپس کرویں گے وران کورسول بٹا کمیں گئے۔

یہاں سوال بیہوتا ہے کہ خوف وحزن تو امر غیرا ختیاری ہے اورا مور غیرا ختیار بیہ کے ساتھ الله متعلق نہیں ہوتی ہے کہ خوف وحزن تو امر غیرا ختیاری ہے اورا مور غیرا ختیار بیہ کے ساتھ الله متعلق نہیں ہوتی ہے کہ کیف شہیں ہے الایک کف الله نفساً الاو سعها (اللہ تعالی کسی شخص کو اسکی وسعت سے زیادہ تکلیف شہیں دیتے) تو پھر یہاں لاتحافی و لاتحزنی (نہ ورتا

اور نداندیشه کرتا) بصیغه نبی کیول فرمایا گیا جس میں خوف وحزان ہے ممانعت ہے حالا نکه امرونہی امورا ختیار بیہے متعلق ہوتی ہے نہ کہ غیرا ختیار بیہے۔

اس کا جواب وہ ہے جومیری تقریرے ابھی معلوم ہوا۔ حاصل اس کا بیہ کے دخوف وجن ن عادیًا تو غیرا فقیاری ہے گریقاء افقیاری ہے کہ تذکرہ وقذ کرے بڑھتا اور عدم تذکر ہے گفتا ہے۔
پس یہاں الا تعخافی و لا تعجز نبی کا مطلب بیہ ہے کہ خوف وجن ن کو لے کرنہ بیٹھتا۔ اوراس کا بار
بار تذکرہ اور خیال نہ کرنا کہ اس سے غم بڑھے گا۔ عور تیں اس بات کوخوب جائتی ہیں کیونکہ ان
میں تذکرہ بہت ہوتا ہے اس لئے ان کاغم برسول ہوتا ہے اور مردوں میں تذکرہ کم ہوتا ہے ان کاغم

والدين كي محبت

اس کے بعض عورتیں مردوں کوسنگدل مجھتی ہیں گریہ بالکل غیط ہے مردسنگدل نہیں بلکہ قوی دل ہے۔سنگ دل ہونا اور ہے اور تو ی دل ہونا اور ہے۔سنگ دل کہتے ہیں بےرتم ظالم کواور تو می ول کہتے ہیں بہادر کو۔اور تجربہ ہے کہ شجاع ہمیشہ رحمہ ل ہوتا ہے سنگ ولی اکثر بزولوں میں ہوتی ہے۔ چنانچیز کے شجاع ہیں مگرنہا بہت رحم دل ہیں جن کی رحم دلی مشہور ہے۔اور ہندوستان کی بعض قوی*ل نہ*ا یت بز دل ہیں۔ مگراس کے ساتھ سنگ دل کنفک بھی ہیں ۔ لیعنی خودغرض! پس عور تیں مردوں سے زیادہ رحمد لنہیں ہیں بلکہ ضعیف القلب ہیں اور مردستگد لنہیں بلکہ قوی القلب ہیں۔ اس طرح میہ بات بھی سیحے نہیں جومشہور ہے کہ اولا د سے ماں کومحبت زیادہ ہوتی ہے باپ کو تم ۔ چنانچہ مال کی ممتامشہور ہے اور تقریباً مرد بھی سب اس کوتسلیم کئے ہوئے ہیں۔ اور ایک مجمع نسوال میں تواس پراتفاق ہو کیا تھا۔اور قریب تھا کہ بیسئدا جمائی ہوجائے مگر ایک سات آٹھ سال کی لڑکی نے جس کے متعلق وہم بھی نہ تھا کہ یہ بھی اس کمیٹی کی ممبر بننے کے لائق ہے ہو لی کہ بیہ دعوی غبط ہے کہ اولا دے محبت ماں کوزیا دہ ہوتی ہے اور باپ کو کم ۔ میں اس کوشلیم نہیں کرتی ۔ بلکہ میرے نزدیک اولا د کی محبت تو دونوں کو برابر ہوتی ہے گرچونکہ اولا دیاں کے پاس زیادہ رہتی ہے توزیادہ رہنے کے حصد کی محبت مال میں بڑھ جاتی ہے۔ اگر کوئی بچہ مال کے باس زیادہ ندرہے باپ کے پاس زیادہ رہے تو اس کی محبت باپ کو مال سے زیادہ ہوگی۔ چونکہ اس نوعمراز کی نے بات پنہ کی کہی اور دلیل کے ساتھ کمی اسلئے کوئی اس کور دنہ کرسکا۔اور و ہ ا تفاق باطل ہو کیا۔ پس نئورتیں محبت میں مردوں سے زیادہ ہیں ندرتم دلی میں (اور صدیث میں جوالند تی لی کو ال سے زیادہ رحیم فر مایا ہے اس کا صدق رہمت للعوارض سے بھی ہوسکتا ہے ہے۔ امنہ) اوران کوجوزیادہ مدت تک غم رہتا ہے اس کا رازیہ ہے کہ بینڈ کرہ واقعہ کا عرصہ تک رکھتی ہیں اس سے حق تعالیٰ نے ام موی علیہ السل م کوئے فر مایہ ہے۔ آگا یک شغل ہتلاد یا کہ بجائے واقعہ کم کویاد کرنے کے تم وہ مری بات کا تصور کرتی رہناوہ کیا انا دا دوہ المیک و جاعلوہ من المعو سلین کے خداتعالی نے وعدہ فر مایا ہے کہ اس کو والیس جیجیں گے اوران کورسول بنا کمیں گے۔ تواس امر کا تصور کرتی رہوکہ دیکھے حق تعالیٰ کس طریق سے اور کس طرز سے ان کو والیس کرتے ہیں اوراس خیال میں رہنا کہ بس اب آئے اورا تی خیال میں رہنا کہ بس اب آئے اورا تی جیال کورفع نم میں پڑاونل ہے۔ شاعر کہتا ہے ۔ اس خیال کورفع نم میں پڑاونل ہے۔ شاعر کہتا ہے ۔ اس خیال کورفع نم میں پڑاونل ہے۔ شاعد دست من یار دگر جانان من گیرو اگر چہ میں مجبوب سے دور پڑا ہوں اس امید میں خوش ہوں کہ شاید میرا محبوب میرا

بية ويجاره شيدى برخوش باورجس كو انا دادوه اليك كالصورتعليم كيا كيابوجس من ان ان المارة ويجاره شيدى برخوش بالاردوه اليك كالصورتعليم كيا كيابوجس من ان اور جمل اسميد المدينة الديم الرحوف وحرن المارة والمرحوف وحرن

دوباره ہاتھ پکڑنے)

<u>ل</u> البداية والنهاية: ٢٠٠١، صحيح أبوعوانة ٨٣ ١

پیدا کیا اور فلاں چیز کوکس نے بنایا یہاں تک کہ کم گاتمہارے رب کوکس نے پیدا کیا۔اس وقت اللہ تعالٰی ہے بناہ مانگنی جا ہے اور چاہئے کہ وہ اس وسوسہ سے دور ہوجائے)

یہاں ولینتہ صیغدا مرہے جس میں انتہا کا امرہے اگر اس سے مراد انتہ عن الوسوسہ ہے کہ اس وسوسہ سے رک جائے تو لازم آئے گا۔ کہ وسوسہ امرا ختیا ری ہو حالا نکہ وسوسہ امرغیر اختیاری ہے اورا گریہ مراد نبیں لؤ پھر کیا مرادہے۔

عارفین کہتے ہیں کہ ولیدہ سے مرادا نہائن الالفات ہے کہ اس کی طرف الفات نہ کرے اورالنفات امرغیرا فتیاری ہے اس سے معلوم ہوا کہ عدم النفات کو وفع وساوی ہیں خاص وخل ہے۔ یہ تو صدیث سے استدلال تھا۔ آگے تجربہ شاہر ہے کہ عدم النفات سے بڑھ کر اس کا کو کی علاج نہیں اور جتنی تد ابیر کی چتی ہیں سب سے وسوسہ کواضا فہ ہی ہوتا ہے کیونکہ ان تد ابیر ہیں اس طرف النفات ہوتا ہے کہ ہم وسوسہ کو وفع کرتا چا ہے ہیں اورا تناالنفات بھی خضب ہے۔ بس طرف النفات کے وقت بدھال ہوتا ہے کہ

ترابی کے جتناجل کے اندر ہے جال کھے گا کھال کے اندر ان جال کھے گا کھال کے اندر اسے ہتھ دگاؤ نہ ہٹانے کے واسطے ہتھ دگاؤ نہ ہٹان کو خطی مید واسطے ہتھ دگاؤ نہ ہٹان کو خطی مید واسطے ہتھ دگاؤ نہ ہگاراں ہے دور ہی رہو۔ جولوگ وسوسہ کی طرف النفات کرتے ہیں ان کو خطی اس بھٹی آتی ہے کہ وہ وہ وہ وہ کو مسرک کو اس میں مرک کے ان پڑم سوار ہوجا تا ہے اور وہ اس سے عدم النفات پر قادر نہیں رہے ۔ حال نکہ نص صرح کے ان پڑم سوار ہوجا تا ہے اور وہ اس سے عدم النفات پر قادر نہیں رہے ۔ حال نکہ نص صرح کے موجود ہے لایکلف الله نفسا الاو مسعها (کی فحض کو الند تعالیٰ اس کی وسعت سے زیادہ تکیف نہیں دیے) اور ظاہر ہے کہ وسوسہ کا نہ آتا قدرت سے فارج ہے۔

دوسری حدیث میں تقری کے کہ صحابہ نے حضور صلی القدعلیہ وسلم سے و ساوس کی شکایت کی تو آپ صلی القدعلیہ وسلم نے ارشاد قرمایا ذاک صوبح الایمان۔ (بیصری ایمان ہے) اس نے زیادہ اور کیا اطمینان جا ہے ہو۔

بعض لوگوں کوایک آیت سے دھوکا ہوا ہے۔ولقد خلقنا الانسان و معلم ماتو موس به نفسه و نحن اقرب اليه من حبل الوريد. (اور ہم نے انسان کو پيدا کيا اور ہم ان باتوں کو چائے ہیں جوانسان کے دل میں کھنگتی رہتی ہیں اور ہم اسکی رگ گردن سے زیادہ قریب ہیں) کے اس سے بظاہر وسوسہ پرمواخذہ ہونامفہوم ہوتا ہے کیونکہ حق تعالی فرماتے ہیں کہ ہمان باتوں کو جائے ہیں جوانسان کے ول جس کھنگتی رہتی ہیں اور کاورہ قرآنیہ میں بیالفظ تعلم مواخذہ اور وعید پر دلالت کرتا ہے۔ کثر ت سے ایک آیتیں وار دہیں اور عام محاورہ بھی اس کے موافق ہے جیسے کہا کرتے ہیں کہ جھے تمہاری حالت خوب معلوم ہے۔ یعنی تھہرے رہوتم کو جھولے گا۔

اس کا جواب بیہ کہ ذرااس آیت کے اوپر نظر کر واور سیاق وسیاق کو ملا کر دیکھوا وربی قاعدہ بمیشہ کے لئے بیا در کھو کہ کسی آیت کی تغییر محض اس آیت کے الفاظ کو دیکھ کرند کر و۔ بمکہ سیاق وسیاق کو ملا کر تغییر کیا کر وبغیراس کے تغییر معتبر نہیں۔ای سے بہت جگہ تعلی واقع ہوتی ہے۔

چنانچ بہت لوگوں کو آیت و لن یجعل الله للکفوین علی المؤمنین مبیلا۔ پرائ لئے یہ اشکال ہوا ہے کہ ہم تو مسلمانوں پر کفار کا غلبہ مشاہدہ ہے و کی رہے ہیں۔ اس کا بھی جواب یہ ہے کہ تم نے میاق کوئیس و یکی ۔ اس سے پہلے یہ ضمون ہے فالله یحکم بینکم یوم القیمة کراند تعالی قیامت کے ون تمہارے ورمیان فیصلہ کریں گے۔ اس کے بعدارشاو ہے ولن یجعل الله للکافرین الح مطلب یہ ہوا کہ فیصلہ آخرت میں کفار کومسلمانوں پرغیب نہ ہوگا۔ اس میں مطلق میں کی کہاں ہے جواشکال کیا جائے۔

ایسے ہی بیباں بھی سیاق وسہاق کودیکھونو معلوم ہوگا کداس مقام پرحق تعالی کامقصود معاو کوٹا ہت کرنا ہے جس کے لئے شرط ہے کمال قدرت اور کمال علم ۔

قربحق

تواو پر کمال قدرت کا ذکر تھا کہ ہم نے آسان کواس طرح پیدا کیا زمین کواس طرح بنایا اوراس میں ورخت ونیا تات پیدا کئے۔

اب کمال علم کوہ بت کرتے ہیں کہ ہم نے انسان کو پیدا کیا اور ہم کوان وساوس پر بھی اطلاع ہے جوقلب انسان پر گزرتے رہے ہیں اور ظاہر ہے کہ وس وس نہایت ففی چیز ہیں۔ جب ہم کوان کا بھی علم ہے تو ہماراعلم نہایت کائل ہے تو اس سے وعید ومواخذہ پردلالت کہاں ہوئی؟ بکہ محض کمال علم پردلائت ہوئی۔ اس لئے آ کے بھی سزا کاذکر نہیں۔ بلکہ قرب کاذکر ہے و ندون اقوب البه من حبل الو وید۔ کہ ہم انسان کے رگ کردن سے زیادہ اس کے قریب ہیں۔ بیدولیل ہے ماک کی ۔

حبل الو وید۔ کہ ہم انسان کے رگ کردن سے زیادہ اس کے قریب ہیں۔ بیدولیل ہے ماک کی ۔

ر ایدسوال کہ اقو ب عن حبل الو دید کیسے ہیں بیدا کی مستقل سوال ہے سواس کا حقیقی

جواب بیہ ہے کہ اس مسکدکوکوئی حل نہیں کرسکتا۔ چنا نچہ بعض نے تو یہ کہد دیا ہے کہ یہاں قرب علمی مراد ہے مگر من حبل المو دید (رگ کرون ہے) کالفظ بتلار ہا ہے کہ یہاں قرب علمی ہے ذیادہ کوئی دوسراقرب بتلانا مقصود ہے کیونکہ حبل المو دید ذی علم نہیں ہے۔ جس سے اقرب ہونا اقربیة فی انعظم پر دال ہے بلکہ یہاں قرب ذات پر دلالت مغبوم ہوتی ہے مگراس کی کیفیت کوہم بین افربیة فی انعظم پر دال ہے بلکہ یہاں قرب ذات پر دلالت مغبوم ہوتی ہے مرزہ ہے کہ تقریب نہم المرب کے کہ تاری کیفیت کوہم بین نہیں کر سکتے کیونکہ حق تعالی کیفیت سے مزہ بین ان کا قرب بھی کیفیت سے مزہ و ہوار کی فرع ہے۔ اگر و جود میں کر سکتے کیونکہ حق تعالی کے دیتا ہوں کہ ہم کو جوا پی ذات ہے قرب ہوتا اور ظاہر ہے کہ و جود میں حق تعالی واسطہ ہے۔ اگر و جود میں حق تعالی واسطہ ہے۔ اس تعرب کو جوا ہی جوا ہیں جوا ہی کی جوا ہی جوا ہی جوا ہی دو جود ہی دوخود ہیں جو تعمل کے ساتھ جوا ہی کا مشاہدہ کو بہت ہی جو جوا کے گا گر کیفیت اب بھی واضح نہ ہوگے۔ البتہ عقلاً یہ معدم ہوجا ہے گا گر کرتی تعالی کو جمار سے میں ذیادہ قرب وتعنق ہے اور بہی مقصود ہے۔ حوا ہی گا کرتی تعالی کو جمار سے میں ذیادہ قرب وتعنق ہے اور بہی مقصود ہے۔ ای الملد کی تعلیم

بہرحال وماوس سے بے التفاتی برتا تجربہ سے صوفیاء کی بھی تعیم ہے۔ اب ایک سوال اور پیدا ہوگا۔ وہ میہ کہ اگر کسی نے وساوس کو دفع کرنے کے لئے ان کی طرف التفات کیا اور اس التفاوت سے وساوس کوتر تی ہوگئ تو اس فخص پر مواخذ وعائد ہوگایا نہیں؟

اس کے متعلق عقل کا فتو کی توبیہ ہے کہ اس پرمواخذہ ہونا چاہیے۔ کیونکہ اس کے اختیار سے وسوسہ بردھا ہے اور خیر خواہ موگا کہ عقل آپ کی خیر خواہ نہیں بلکہ بدخواہ ہے اور خیر خواہ شریعت ہی ہے جس کوآپ دشوار سجھتے ہیں۔ مولا ناای کوفر ہاتے ہیں ہے

آزمودم عقل دوراندیش را ہیں بعدازیں دیوانہ سازم خویش را بی بعدازیں دیوانہ سازم خویش را بھی عقل دوراندیش کو آزباجوں بعد میں اپنے آپ کودیوانہ یعنی احکام شریعت کا تبعی بنالی)

(دیوائی سے مرادات با حکام شرع بدول تغییش علل ہے) چنانچہ شریعت کا فتوی اس موقع میں ہے کہاں شخص سے مواخذہ نہ ہوگا۔ کیونکہ اس کی نیت بری نہ تھی گواس نے النفات قصدا کیا اور النفات سے وسوسہ بردہ نہ جائے گوطر این دفع میں اس نے نعطی کی گرنیت دفع بی کی تھی رضا پالوسوسہ کے ساتھواس نے النفات نیس کیا۔

پی معدوم ہوا کہ زاہرتو بعض وفد قصد اجذب نم کرتا ہے اور عارف قصد اجس نم نہیں کرتا۔ ہاں بما قصد کے اگر فم پہنچ جائے تو وہ اس کولڈ اکڈ ہے ہر ہو کر قبول کرتا ہے گرقصد اطالب فم اور جالب فم نہیں ہوتا۔ کیونکہ عارفین اصوص واش رات نصوص ہے یہ سمجھ ہیں کہ فم کو ہر دھانا یا طلب کرتا شرعا مطلوب مہیں۔ چن نجے حق تعالی فر اتے ہیں یو بلد الله بکم الیسر و الایو بلد بکم العسر ۔ (اللہ تعالی تمہارے لئے آسانی کا ارادہ کرتے ہیں اور تمہارے سرتھ دشواری کا ارادہ نیس کرت ہیں اور حدیث میں ہے من شاق شاق شاق الله علیه فر جو تو موارکر لیتا ہے انتدانی ای پردشوار بنادیے ہیں)

معلوم ہوا کہ ان کو یہ مطلوب ہیں گئم کو ہڑھایا جائے بلکہ اس کا کم کرنا مطلوب ہے۔ چنانچاول تو اناللہ کی تعلیم ہے کہ یوں مجھو کہ تم خدا کے ہواور تمہاری ہر چیز خدا کی ہے۔ پھرا گرالقہ تعالیٰ تمہاری ذات میں یا متعلقین ومتعلقات میں پھے تصرف کریں تو تم کونا گواری کا کیا تی ہے۔ اور جن عارفین نے وحد قالو جو دکو ظاہر کیا ہے جن میں اول شیخ ابن عربی ہیں وہ تو یوں کہتے ہیں کہ ہماراہ جو دہی کوئی چیز ہیں یہاں تک کہ ہم کی شے کے ستحق ہوں ۔ عارفین کی تو ای سے لی ہوگئی اور انہوں نے بچھ لیا کہ ہماراکوئی استحقاق نہیں بلکہ اصل مالک اور اصل موجود جن تعالیٰ ہیں۔ وہیا وا خرت وونوں انہیں کے ہیں۔ ان کو اختیار ہے کہ جب جا ہیں کی وہ نیا ہیں رکھیں۔ اور جب جا ہیں آخرت کی طرف برالیس۔

اس کی مٹال ایس ہے جیسے کس شخص کے پاس ایک الماری ہوجس کے اندر متعدو تیختے گئے ہوں۔ اوراس نے ایک فاص ترتیب سے برتنوں کوان میں لگار کھا ہو۔ اب اگر کسی وقت و واس ترتیب کو بدل و ہے اور نیچے کے برتن او پر اوراو پر کے نیچے رکھ و نے کسی کواعتر اض یانا گوار کی کا کیا حق ہے؟

اس طرح حق تعالی کے بہاں عالم کے دو تیختے ہیں۔ ایک و نیا ایک آخرت اگر وہ کسی وقت ان موجودات کی ترتیب کو بلٹ ویں کہ او پر کی ارواح کو نیچے بھیجے ویں اور نیچے کی ارواح کو ایپ کی ارواح کو ایپے بھیج ویں اور نیچے کی ارواح کو اور پر بدلیس تو کسی کواعتر اض کا کیا حق ہے۔ وہ الماری کے بھی اور اس کے برتنوں کے بھی ما مک

العسى أبي داؤد كناب الأقصية ب ٢٠٠١ سس الترمدي ١٩٣٠ مسن ابن ماجة ٢٣٣٢

یں ہم کر بڑ کرنے والے کون ہو؟

عارفین کوتواس سے پوری آسلی ہوگئ۔ گراال طاہر کوصرف عقلی آسی ہوگی اور طبعی نم مفارقت کا باتی رہا تو اس کے لئے آ سے تعلیم فرمات ہیں کرتم یوں سمجھوانا للہ و اناالیہ داخون رہم اللہ ہی کے لئے ہیں اور اللہ کی طرف لوٹے والے ہیں) کہا کی دن ہم بھی وہیں جانے والے ہیں۔ جہال ہماراعزیز گیا۔ اس تصور سے مفارقت کاغم بھی بلکا ہوجائے گا۔

اس کی ایک مثال ہے جسے نظام حیدرآباد نے ایک بھائی کودکن براکروزیر کردیا۔ دومرابھائی مفارفت کے مم میں رونے لگا۔ نظام نے اس کولکھ بھیجا کے ارب تو کیوں روہا ہے تھے بھی عقریب بہیں مفارفت کے مم میں رونے لگا۔ نظام نے اس کولکھ بھیجا کے ارب تو کیوں روہا ہے گا۔ اس مضمون سے دوسرے بھائی کی یقینا تسلی ہوجائے گی۔ تو یہاں اناللہ و اناالیہ داجون۔ کامطلب بہی ہے کتم مفارفت کاغم نے کرو۔ بہت جلدی تم بھی وجیں جاؤے کے جہاں تمہارا عزیز کیا ہے۔ ویس کو یہن کو یہن ہوتا۔ کیا ہے۔ ویس ہوتا۔

ہ مارے حاتی صاحب رحمتہ القد علیہ کی خدمت میں ایک بڈھارو تا ہوا آیا کہ حضرت میری بیوگ مرد ہی سات ہے ایک قیدی قید سے جھوٹ رہا ہے بیوگ مرد ہی ہے حضرت نے فرمایا کہ دیکھوکیسی عجیب بات ہے ایک قیدی قید سے جھوٹ رہا ہے اور دوسرار در ہا ہے کہ ہائے ریقید سے کیول نگل رہا ہے۔ پھر فرمایا تم بھی ایک دن ای طرح قید سے جھوٹ جوٹ جا دی ہے ۔ اس نے ول میں کہا کہ اور بیوی کوچھڑا نے آؤتم بھی منگوائے گئے۔

موت مثل شادی

واقعی عارفین و نیا کوقید خانہ بھے ہیں اوران کو یہاں سے نکلتے ہوئے وہی خوشی ہوتی ہے جوقیدی کوجیل خانہ سے نکلتے ہوئے ہوتی ہے، عارف کہتے ہیں _

خرم آں روز کزیں منزل ویراں بروم راحت جاں طلعم وزیے جاناں بروم (جس دن دنیا ہے کوچ کرول وہ دن بہت اچھا ہے راحت جاں طلب کروں اورمجبوب حقیقی کے پاس جاؤں)

اور بیزی شاعری نمیں ہے معیار ہے و کھی لواگر اس کل م سے دل پراثر ہوتا ہے تو بیسی کلام ہے ور نہ شاعری ہے۔اب اس کو ہر خص خو در کھی لے کہ اہل حقیقت کے کلام ہیں فرق ہے یا نہیں۔ یقیناً فرق ہے عارف کے کلام کا قلوب پر خاص اثر ہوتا ہے یہی اس کی علامت ہے کہ ان کے کلام میں شاعری نہیں۔ بلکہ بچا کلام ہے آ گے فر ماتے ہیں۔ نذر کردم کہ گرآید بسرای روزے ہے۔ تادر میکدہ شادال وغزل خوان بروم (میں نے نذر کی ہے کہ اگریدن نصیب ہوجائے توخوش وخرم اورغزلیں پڑھتا ہواجاؤں) آخریہ خوش کس چیز کی ہے۔ اس کی کہوہ و نیا ہے جانے کوجیل خانہ سے نکلنا سمجھتے ہیں ایک بزرگ نے مرض وفات میں ومیت کی تھی کہ ہمارے وصال کے بعد ہمارے جنازہ کے ساتھ ایک فخص بیشعر بڑھتا ہوا ہے۔

مفلیا نیم آمرہ درکوئے تو 🌣 خینا بند اجمال روئے تو وست کیشاجانب زنیل ، 🏠 آفریں بروست بربازو کے تو (آ کیے دربار میں مفلس ہو کرآئے ہیں اینے جمال کے صدقے میں کچھ عنایت سیجے.....اماری زنبیل کی طرف ہاتھ بڑھائے۔ آپ کے دست وباز و پر آ فرین ہے) ان کوکوئی تو خوشی تھی جومرتے ہوئے یہ بے فکری تھی۔اس واسطے اولیاء اللہ کے وصال وموت کوعرس کہاجا تاہے جس کے معنی شادی کے جیں کیونکہان کے لئے موت مثل شادی کے ہے۔اہل عرس کواس معنی کی خبر بھی نہیں وہ بدول سمجھے ہی عرس کرتے ہیں۔اس لیے حدود شرعیہ سے تجاوز کرتے ہیں جوخودان شادی والوں کی خوش کے بھی خلاف ہے۔ بہر حال موت کا دن خوشی کا ون ہے م کا دن نہیں۔ اولیا واللہ کے لئے تو خوشی کا ون ہے جی میں ترقی کرکے کہتا ہوں کہ بجرم مسلمان کے لئے بھی خوشی کادن ہے کیونکدونیا مصیبت کدہ ہے تو جو خص مرتا ہاس کی مصیبت کےدن کث رہے ہیں۔ اب آخرت میں جا کراس کوراحت کاملہ حاصل ہوگی۔اوراگر گنبگارمسلمان کو پچھےون جبنم میں رہنا پڑے تووہ بھی راحت ہے کیونکہ مسلمان کے لئے جہنم میں جانا تز کیہ ہے عذاب نہیں ہے۔جس کی ولیل میہ ے كري تعالى كفاركي بابت قرماتے ہيں ۔ان الذين يشترون بعهد الله وايما نهم ثمناً قليلاً اولتك لاخلاق لهم في الاخرة ولايكلمهم الله ولا ينظر اليهم يوم القيمة ولا يزكيهم ولهم عذاب اليم. (يقينا جولوك حقير مع وضد في ليت بين بمقا بلداس عبد يجوانبول في الله تع بی ہے کہا ہےاور مقابلہ اپنی قسموں کے ان لوگوں کو پچھآ خرت میں شدھے گا شامند تعالیٰ ان کی طرف دیکھیں سے قیامت کے دن اور شان کو یا ک کریں مجے اور ان کے لئے ور دناک عذاب ہوگا)

یہاں کفار کی نسبت و لایو کیھم (اور ندان کا تزکید س کے) قرمایا ہے اور وعید میں مفہوم مخالف باد تفاق معتبر ہے معلوم ہوا کہ مسعی نور کے لئے جہم کا دخول تزکید کے طور پر ہوگا۔ جیسے یہال جمام کا دخول تنظیف کے سئے ہوتا ہے۔ گواس میں پھی تکلیف بھی ہوتی ہے مگر پھر بھی خوشی زاکل نہیں ہوتی۔ دیکھیئے مسہل اور آپریش میں کیسی تکلیف ہوتی ہے بعض لوگ رونے تکتے ہیں مگر خوش بھی ہوتے ہیں کیونکہ وہ جانتے ہیں کہ اس آپریشن کا انجام صحت وراحت ہے۔

ای طرح گنبگار مسلمان کوبھی موت پرخوش ہوتا چاہیا اور یہ بچھ لے کداگر جہنم میں جانا بھی ہواتو تزکیداورا پریشن کے لئے جانا ہوگا جس کا انجام راحت وعافیت ہے۔ ہاں کا فرکے لئے کچھ خوشی نیس کیونکداس کے واسطے جہنم تزکینیس۔ بلک وائی قید خانہ ہے۔ جن تعالی فرماتے ہیں فاتقو الناد النبی و فودھا الناس و المحجاد ة اعدت للکفوین ۔ (پس بچوتم اس آگ سے جوکھار کے لئے تیار کی گئی ہے) اس میں بھی مسلمان کو بشارت ہے کہ جہنم تمہر راگھر نہیں ہے نہ تمہارے واسطے بنایا گیا۔ بلکہ وہ تو کا فروں کا گھر ہے انہی کے واسطے بنایا گیاہے ۔ گرعص قاملین من من من بیت ہقوم فہو مسلمین آمر الکاری جانمی کے واسطے بنایا گیاہے ۔ گرعص قاملین من من بیش بھوم فہو مسلمی بعض اعمال کفار جیسے کرتے تھے تو چندون ان کے گھر میں رہنا پرے گا۔ من بھن بھر کہ اور عارف

اب یہاں ایک سوال وارد ہوگا کہ جب موت فی نفہ خوشی کی چیز ہے کیونکہ جیل خاند ہے رہائی ہے۔ تو پھر چاہیے کہ اپنے کی عزیز کی موت پر ردیا بھی نہ جائے۔ بلکہ خوش ہوتا چاہیے اس کا جواب ہے کہ ہاں جن نوگوں نے صرف ای پہلوکود یکھاوہ تو ایسے موقع پر خوش ہی ہوئے ہیں ۔ چنا نچہ بعض اولیاء ہے منقول ہے کہ وہ اپنی اولا دے مرنے پر ہنتے ہتے اور ذرا بھی نہیں روئے مگر عارف اس کے ساتھ دوسرے پہلو پر بھی نظر کرتا ہے بعنی تن اولا دوحن افر باپر وہ اپنی اولا دی مرنے پر موت پر روئے افر باپر وہ اپنی اولا دی سے ساتھ دوسرے پہلو پر بھی نظر کرتا ہے بعنی تن اولا دوحن افر باپر وہ اپنی اولا دیا ہے کہ موت پر روئے بھی جی کیونکہ ان کے فرد میک اولا دکا یہ بھی ایک حق ہے کہ اس کے مرنے پر رویا جائے اوراس کے سرتے ہیں۔

نیز ایک اور بات بھی ہے وہ یہ کہ قاعدہ ہے کہ تمام جذیات کااورای طرح صفات حمیدہ کا بقاءان کے استعال ہے ہوتا ہے اور صفات حمیدہ میں ہے ایک صفت رحم بھی ہے۔ اگرااس کا استعال ہوتار ہاتویہ باتی رہے گی ورند فناء ہوجائے گی اور استعال کی صورت یہ ہے کہ کسی اپنے

_______ ابى داؤد ۳۰۳۱، مسند احمد۲ ۱٬۹۳۵۰ لمصنف لاس ابى شيبة ۳۱۳۵۵ کنز العمال:۱۳۲۰، مشكواة المصابيح: ۳۲۳۷٪

متعبق پرکلفت وار وہو۔ اور بیہ بات اپنے افتیارے خارج ہے بلکہ قصداً کلفت وارد کرتا جائز بھی نہیں تو حق تعالیٰ بھی بھی عارف کے کسی عزیز کومصیبت یا موت و سے ہیں جس سے دل پر چوٹ لگتی ہے تا کہ صغت رحم منتعمل ہوتی رہے۔ اس وقت عارف کوظا ہر میں روتا ہے اور اس کے دل پر بھی اڑ ہوتا ہے گرعقلا راضی اور خوش ہوتا ہے کیونکہ اس واقعہ کی حمیت اے منکشف ہو جگی ہے کہ اس سے میری تربیت منظور ہے کہ صفت رحم فنانہ ہو بلکہ باتی رہے۔

اس کے کہا گیا ہے کہ عارف جامع اضداد ہوتا ہے۔ وہ خوشی اور ثم دونوں کوجمع کردیتا ہے۔ اور ناواقف توالیے موقع میں پریشان ہوکر یہ کہ ڈالٹا ہے

درمیان تعروریا تختہ بندم کردؤ ہے بازمیگوئی کددامن ترکمن ہشیار باش (گہرےدریا بیں تختہ ہے جکڑ ڈالا ہے پھر کہتے ہوکہ ہوشیاررہ کددامن تر ندہونے پائے) اوریہ شعر ترجمہ ہے ایک عربی شعر کا

القاہ فی الیم مکتوفاوقال لہ ایک ایک ایک ان تبتل بالماء (اس کو گہرے دریا میں جکڑ کرڈال دیااوراس ہے کہاد کھے یانی میں نہ بھیگ)

علامة شعرانی نے لکھا ہے کہ اس شعر کا پڑھنا حرام ہے کیونکہ اس میں اعتراض ہے تق تعلی پرکہ وہ تکلیف الایطاق ویتے ہیں حالا تکہ نفسا الاوسعها (اللہ تعالی کسی محض کواس کی وسعت سے زیادہ تکلیف نہیں ویتے) اور جن دو چیزوں کے جمع کو یہال مجمعتا ہے اور ہریشان ہو کر ۔

درمیان قعردریا تختہ بندم کردہ (گہرے دریا جس تختہ ہے جکڑ ڈالاہے)

ہزتا ہے بیاس کی کوتاہ نظری ہے۔ اگر ذرا آئیسیں کھول کر دیکھیا تو معلوم ہوا جاتا کہ
شفا خانہ کا ایک معمولی دئیا دارم لیش بھی ان دونوں کوجع کردیتا ہے ادراس معترض کے قول کوغلط
کررہا ہے کیونکہ وہ اپریشن کے وفت چیختا چلاتا بھی ہے ادرنشتر سے کا نیتا بھی ہے گراس کے ساتھ
ہی خوش بھی ہے کہ بعد میں ڈاکٹر کوفیس اورانعام بھی دیتا ہے۔

اب ہتلاؤ اگریہ آپریشن سے خوش ندتھا تو ڈاکٹر کوانعام کس چیز کا دیتا ہے اورا گر نکلیف نہ تھی توروتا چلاتا کیوں تھا۔ بس معلوم ہوا کہ وہ عقلاً خوش تھا اور طبعاً ممکنین تھا۔ تو خوشی اور تم دونوں جمع ہوگئے۔ ریضمون اس پر چلاتھا کہ روز ہ میں گرائی تذکرہ واستحضار سے بڑھ جاتی ہے پھراس پرموی عدیہ السلام کی والدہ کا قصدور میان کیا گیا تھ کے ان کوئل تھ لی نے لا تدخانی و لا تدخونی (نے خوف کرنا اور خمکین ہونا) میں تذکرہ واستحضار حزن ہی ہے منع فرمایا ہے۔ اس کے بعد میں نے بید مسئلہ متفرع کیا تھا کہ عارفین نے وساوس کے علاج میں بھی اس قاعدہ سے کام لیا ہے کہ ان کی طرف النفات نہ کیا جائے۔ پھر بید مسئلہ بیان کیا تھا کہ عارف قصد اُجلب فم نہیں کرتا۔ اس پر گفتگو طویل ہوگئی۔ مند کر ہ کا امر

اب میں پھرمقصود کی طرف عود کرتا ہوں کہ روز ہ فی نفسہ بھی اورا متداد ہے بھی گراں نہیں ہے۔ بلکہ عارضی تذکرہ ہے اس میں گرانی پیدا ہوجاتی ہے۔ پس تم روزہ میں شدت کا تذکرہ نہ کیا کرو۔اورکسی ایسے کام میں لگ جایا کروجس میں زیادہ مشغولی ہو کہ روز ہ کی طرف دھیان ہی نہ جائے۔اوراس متم کی باتیں نہ کروکہ آج گرمی بہت ہے۔ پیاس زیادہ ہے کیونکہ تذکرہ مصیبت ے مصیبت بڑھ جاتی ہے۔ تذکرہ وہ چیز ہے کہ بعض لوگوں نے ہمارے وطن ہی ہیں تذکرہ ہی ے ایک ثقه شخص کو جوکہ بزرگوں ہے گونا گول تعلقات رکھتے تھے ایک مردار پرعاشق کرد یا تھا کیونکہ محبت جیسے دیدار سے ہوتی ہے تذکرہ ہے بھی ہوجاتی ہے۔مولانا جامی فرماتے ہیں۔ نه تنها عشق ازديدار خيزد الله بساكيس دولت ازگفتار خيزو (عشق دیدارے نہیں پیدا ہوتا بسااوقات رپمجت تذکرہ ہے بھی پیدا ہوجاتی ہے) مچرا سفخص نے حضرت مولانا کنگوی اور حضرت مولانا محمد قاسم صاحب رحمة الله علیما ہے مشورہ کیا کہ میں اس عورت سے نکاح کرلول مانہیں؟ حضرت مولانا گفتگونیؓ نے فرمایا کہ ہرگز نکاح نہ کروہم شريف خانداني مواوروه بإزاري عورت ب-اس ينسل يربرااثريز عادرمولا نامحرقاهم صاحب ي میمشوره دیا کدنکاح کرلومولانا اس مخف کی حالت سے متاثر ہو گئے۔ اور بیسمجھے کہ اس کی بیائے ارک جب ہی زائل ہوگی جب کہاس ہے نکاح کر لے گا۔اس واسطےمولا نانے نسل کی خرابی پرنظر نہ کی۔ فضائل وموييه

کامل الاخلاق دونوں تھے اور دونوں اس کی حالت سے متاثر ہوئے۔ مگر ایک غالب علی الاخلاق تھے۔ ایک مغلوب عن الاخلاق تھے اور یہ امر غیراختیاری ہے اور گوکمال ہیہ ہے کہ سمالک غالب علی الاخلاق ہو گھر یہ کمال غیراختیاری ہے اس لئے اس میں ایک کودوسرے ہر رشک نہ

ئر، چ ہے۔اورنہ بیتمن کرنا ج ہے کہ کاش میں بھی فلاں کی طرت مالب الاخلاق ہوتا۔بعض بعض سامنین تربیت السامک میں دومروں کے احوال دیکھ کررشک کیا کرتے ہیں کہ کاش ہم کوبھی ایسے احوال پیش آئیں جیسے ان کو پیش آئے ہیں۔ تمریفنص ہے عارف کورشک نہ کرنا جا ہے کیونکہ احوال غيرا ختياري بين ادرامورغيراختياريه كافيصله خوانص بين مذكور بحق تعالى فرمات جي ولا تتمنواها فضل الله به بعضكم على بعض كرتم اليكسى امرى تمنامت كروجس مي التُدتعالي في يعض كربعض بر (بلا خل ان كے كسي عمل كے عفر وہم أ) فوتيت بخش ہے آ كاس كى علت بيان قرماتے ميں ك قضائل وبيه غيرافتياريكي تمناممنوع كيول بــ للرجال نصيب مما اكتسبوا وللنساء عصیب مماا كتسبن ال لئے كدمردول كے واسطے ان كا المال كاحصد (آخرت بس) ثابت ہے اور عورتوں کے لئے ان کے اعمال کا حصہ ثابت ہے۔ (لیعنی مدار نجات قانو نامیمی اعمال ہیں) جن میں کسب واختیار کودخل ہے۔ امور غیر اختیار بیکواس میں دخل نہیں۔ اس کے مماا کنسبوا (ان اع ل ہے جو کئے ہیں) فرمایاممافضلو ابد (ای ہے جس سے دونو تیت دیئے گئے) نہیں فرمایا۔ اورا عمال اختیار بید میں کسی کی کوئی شخصیص نہیں تواگر دوسروں ہے فوقیت حاصل کرنے کا شوق ہے تو فضائل کسیبیہ میں کوشش کر کے دوسروں سے زیادہ تواب حاصل کرلو۔ باوجوداس پر قادر ہونے كے فضائل خاصد وہيد كى تمنامحض ہوں اور فضول ہے ۔ پھر فضائل وہديد كى ووسميں ہيں۔ ايك وہ جس میں عادۃ ابقد میں تغیر نہیں ہوتا جیسے مرد ہونا، شریف ہونا یہ نبی ہوتا۔ ان کے لئے تو دعانجی جائز نہیں کہ كونى عورت مرد مونى كى ياجلا باسيد مونى كى يامتى بنى مونى كرف الكايى دعائمى ناجائز ے۔ادرایک قتم وہ ہے جس میں عادۃ القدمیں تغیر ہوتا ہے۔ تمر بعداستفامت علی الشرع کے تواہیے اموروبید کی تمنائے محض تو محض ہوں ہے۔ ہاں!اس طرح دعا کرنا جا تزہے۔ کہ ووان اعمال کوا ختیار کرے جن پرحصول وہب کا ترتب عادۃ ہوتا ہے پھران امور وہیہ کیلئے دعا کرے۔ای کا ذکر ہے واستلوا الله من فضله (القدتعالي سےاس كے فقل كى ورخواست كرو) يس كرامتدتعالي سے وعاكريا ا سے کہ لات کے لئے جا تزہے جن میں فی الجملہ بطریق مذکور عمل کووخل ہے۔

آ گے اور ارشاد ہے ان الله کان بکل شیءِ علیما۔ کہ اللہ تعالیٰ بلاشہ ہر چیز کوخوب جانے ہیں۔ اس میں جواب ہے ان لوگوں کو جو کہا کرتے ہیں کہ ہم نے تو بہت دعا کی محرقبول نہیں ہوئی جواب کا حاصل ہے ہے کہ حق تعالی ہر چیز کوخوب جانے ہیں۔ ممکن ہے کہ تمہارے لئے ان

ا حوال و کمالات و پهیه کاحصول مصلحت ند به یا دیر میں حاصل بونامصلحت بور احوال و کیفیات

دوسری بات سالکین کواور بھی یا در کھناچاہیے وہ یہ کہ جن پراحوال و کیفیات کا ورووزیا دہ ہوتا ہے۔ ان کوخطرات بھی زیادہ چیش آتے ہیں۔ پس آپ نے ان کی ایک چیز کی تمنا تو کر لی دوسری کی بھی تو تمنا کر د اور خطرات کی تمنا نہ تم کر سکتے ہو اور نہ کرناچاہیے کیونکہ جن پر بلا درخواست کی تمنا نہ تم کر سکتے ہو اور نہ کرناچاہیے کیونکہ جن پر بلا درخواست کر کے درخواست کر ایداد بھی بہت کی جاتی ہے اور تم درخواست کر کے خطرات وار د ہوتے ہیں ان کی ایداد بھی بہت کی جاتی ہے اور تم درخواست کر کے خطرہ ما تھو گئے گئے نہ معلوم تمہارا کیاائے ام ہو۔

لوگ سیجے ہیں کہ بیا مارفین بڑے مزے ہیں ہیں۔ ہاں ہاں! بے شک ان کو مزہ بھی ایسا ماصل ہے جوکسی کونصیب نہیں اوراس وقت وہ جوش ہیں آکر بوں بھی کہتے ہیں ہے گدائے میکدہ ام لیک وقت مستی ہیں ہیں ہی کہ ناز برفعک وشکم برستارہ کئم کدائے میکدہ ہوں لیکن مستی کی حالت ہیں دیکھو کہ آسان پر نازاورست رے پر حکم کرتا ہوں) گرووسرے وقت وہ صاحب الم بھی ایسے ہیں کہ کوئی الم ان کے الم کے برابر نہیں۔ وابقہ! بعض اوقات ان پر ایسی حالت گر دوتس وہ صاحب الم بھی ایسے ہیں کہ کوئی الم ان کے الم کے برابر نہیں۔ وابقہ! بعض اوقات ان پر ایسی حالت گر درتی ہے جس کوکوئی بیان نہیں کر سکتا۔ اس وقت وہ ان لوگوں کو جو آئیس مزے ہیں بچھتے ہیں اوران کے احوال و کمالات کی تمنا کیا کرتے ہیں یوں خطاب کرتے ہیں ہی اے ترا خارے بیانشک ہے کہ دائی کہ چیست سے ہی اس مال شیرانے کہ شمشیر بلا ہر سر خور بھا اے ترا خارے بیانشک ہے کہ دائی کہ چیست سے ہی حال شیرانے کہ شمشیر بلا ہر سر خور بھا رائی کے اس کی کیا خبر جن کے سروں پر اداور مصیب کی گوار چل رہی کی دائی لوگوں کی حالت کی کیا خبر جن کے سروں پر بلا اور مصیب کی گوار چل رہی کی تو اور کی کھیں ہیں۔

کہ میاں تم کوتو ابھی تک کا ٹنا بھی نہیں لگا اس لئے ہمارے احوال کی تمنا کرتے ہو۔ تم کو ہماری حالت کی کیا خبر ہے کہ کیسی تکواریں ہمارے سر پرچل رہی ہیں۔ گریہ الم قبر کا الم نہیں بلکہ محبت کا الم ہے جولذیذ ہے کیونکہ ان کوئین حالت الم میں محبوب کی توجہ عن بت کا بھی انکشاف ہوتا ہے جس پرنظر کرکے ہو ایوں کہتے ہیں ۔

بجم عشق تو ام می کشند غوغائیست نه کلا نو نیز برسر بام آعجب تماشا نیست (تیرے عشق کے جرم میں آل کرتے ہیں اورغوغائی ہیں تو بھی برسر بام آعجب تماشائی ہے) اس الم کی ایسی مثال ہے جیسے کسی کو پھڑا ہوا محبوب مدت کے بعد آجائے اور بے خبری میں

یہ ہے آکر دفعۃ عاش کود بانے لگے اور ایساز ورسے دبائے کہ پہلیاں ٹوٹے نگیں۔اول اول تو عاشق کو تکلیف۔اول اول تو عاشق کو تکلیف ہوگا کہ میکون قاتل آئی۔گر جب معلوم ہوگا کہ میوب دبار ہاہے تو وہ اس وقت خوش ہوگر کے گا۔

درداز یارست ودرمال نیزجم ﴿ ول فدائے اوشد وجال نیزجم (دردمجوب کی طرف سے ہاورعلاج بھی اس پردل فداہادرجان بھی) اور کیجوب کی طرف سے ہاورعلاج بھی اس پردل فداہادرجان بھی) اور کیج گا

ناخوش توخوش بود برجان من جهر دل فدائے باردل رنجان من المحجوب کی جانب سے جوامر پیش آئے گووہ اپنی طبیعت کے خلاف اور ناخوش ہی کیوں نہ ہو مگر وہ میری جانب پرخوش اور پہندیدہ ہے میں اپنے دوست پر جومیری جان پر رنج دینے والا ہے اپنے دل کو قربان کرتا ہوں)

اس دفت اگرمجوب یہ کیے کہم کو تکلیف ہوتی ہوتو لاؤ تمہیں چھوڑ کررقیب کو دبالوں تو وہ کیے گئے۔ نہ شود نصیب دشمن کہ شود ہلاک تیفت ہیں سر دوستاں سلامت کہ تو خنجر آز ہائی (دشمن کا ایسا نصیب نہ ہو جو تیری تکوارے ہلاک ہو، دوستوں کا سرسلامت رہے کہ آپ ان برخنجر آز مائی کریں)

توعارفین کوالم بھی سب سے زیادہ ہے گران کولئی الم میں بھی لذت آتی ہے اوراس کی زندہ انظیرد الی کا حکم ہے جس کی مرچوں کی تیزی سے تکلیف ہوتی ہے آتھوں اور تاک منہ ہے پانی بھی بہت ہے اوری سی بھی کرتے جاتے ہیں گرلذت بھی الیس ہے کہ چھوڑتے نہیں۔

ای طرح تمبا کو کھانے والے یوں جا ہتے ہیں کہ خوب تیز اور کر واہو۔ محرباو جو وتلخی کے ان کے نزدیک بھرلذیذہ ہے۔ حتیٰ کہ ایک وکا ندار نے تو غضب کیا کہ اس سے ایک خریدار نے تمبا کو مانگا۔ اس نے دکھایا خریدار نے کہا کہ بیتو کر وانہیں اس سے بھی کر واد کھلا۔ اس نے دوسرا دکھلایا۔ خریدار نے اس سے بھی کر واد کھلا۔ اس نے دوسرا دکھلایا۔ خریدار نے اس سے بھی کر والا تدکانام (توبیتوب)۔

تواس کے نزدیک کروا ہونا ایسامحبوب تھا کہ تعوذ بابقد خدا کے نام کواس سے زیادہ کروا کہتے نگاوہ د کا نداراس بات سے کا فرنہیں ہوا۔ کیونکہ اس کے نز دیک کروا ہونا صفت کمال تھی۔مطلب بیتھا کہ اس سے کمال تر اللہ کا نام ہے۔ گرالفاظ بہت واہیات ہیں۔ میں یہ کہدر ہاتھ کہ تذکرہ سے مصیبت بڑھ جاتی ہے۔ پھراس پر ایک قصہ یاد آگیا تھا کہ
ایک صالح شخص کو محض تذکرہ سے لوگوں نے ایک مردار کاعاشق بنادیا۔ پھرمولانا گنگوہی رحمتہ اللہ علیہ اور مولانا محمد قاسم صاحب رحمتہ اللہ علیہ کے مشورہ کا ذکر آگیا تھا کہ ایک بزرگ نے تو نکاح کامشورہ دیا ایک نے منع کیا۔ اس پر میں نے کہا تھا کہ ایک غالب علی الاخلاق تھے۔ ایک مغوب علی الاخلاق تھے۔ اور بیامر غیرا ختیاری ہے۔ اس پر امور دہیہ کے احکام کی تفصیل چل بڑی تھی۔ مروزہ واور گرافی

اب میں پھراصل مضمون کی طرف عود کرتا ہوں کدروزہ میں فی نفسہ کرانی نہیں ہے۔ عوارض سے
اس میں گرانی آج تی ہے درشا گردشواری ہے تواکل میں ہے۔ ترک اکل میں کیادشواری ہے وہ تو عدی
ہے اس عدمیت کی طرف کونص میں اشارہ فرہ یا ہے۔ کلوا وانسو ہوا ھنیٹا ہمااسلفتم فی الایام
المخالیہ کہ قیامت میں روزہ واروں کو کہا ج نے گا کہ کھاؤ پوا سے اعمال کے عوض میں جوتم نے اسے ایام
میں کئے تھے۔ جن میں تم کو پچھ کام کرنا نہیں پڑا۔ بلکہ یوں ہی خالی بعض اشیاء کے تارک رجے تھے جس
سے معلوم ہوا کہ ترک اکل میں پچھ کام نہیں کرنا پڑتا۔ بلکہ کھانے میں کام کرنا پڑتا ہے۔

مگرایک ہیر جی جو بہت کھاتے تھے ان کے نزویک البتہ کھا ٹا آنٹا آسان تھا کہ وہ کہتے تھے کہ کھا نا کیا مشکل ہے ہیں کہ کھا نا کیامشکل ہے ہیں مندمیں رکھا۔اورنگل لیا، رکھا اورنگل لیا۔لیکن بیلوگ تو قشکمی کا شتکار ہیں یا تشکمی زمیندار۔ان ہے اس قوت میں بحث نہیں۔ یہاں حقیقت میں کلام ہور ہاہے۔اورحقیقت میں نزک اکل دشوار ہیں۔ بلکہ اکل دشوار ہے۔بعض دفعہ کھانے ہے موت آسمی ہے۔

خود ہمارے قصبہ بھی ایک قصہ ہوگیا کہ ایک فخص نے خواب بیں ویکھا کہ میرے گھر بیں باہرے اندرایک جنازہ آرہا ہے وہ ہڑا پر بیٹان ہوا کہ اس کا کیا مطلب ہے اگرکوئی گھر میں مرنے والا ہے تو جنازہ آرہا ہے وہ ہڑا پر بیٹان ہوا کہ اس کا کیا مطلب ہے اگرکوئی گھر میں مرنے والا ہے تو جنازہ گھر سے باہر جانا چاہیے۔ بیالنامعا ملہ کیسا کہ باہر ہے گھر میں جنازہ آیا۔
پھرا گلے بی دن بیرقصہ ہوا کہ ان کے بھائی ایک ولیمہ کی دعوت میں گئے اور وہاں کھانا کھاتے ہوئے ان کے کے میں لقمہا نکا جس سے سانس بند ہوگیا اور آئکھیں باہر نکل آئیں۔ لوگ پائی ہوئے ان کے کو دوڑے۔ پائی کے آتے آتے ان کا کام تمام ہوگیا۔ پھروہاں سے جنازہ گھر میں لایا گیا۔
تاکشل دکفن کیا جائے اس وفت بیمعلوم ہوا کہ باہر سے جنازہ آنے کا بیمطلب تھا۔
تاکشل دکفن کیا جائے اس وفت بیمعلوم ہوا کہ باہر سے جنازہ آنے کا بیمطلب تھا۔
توکھانے میں تواب تھے بہت ہوئے ہیں کہ کھاناموت کا سب ہوگیا اور نہ کھاناموت کا سب

بہت م ہوتا ہے۔ ہاں اُ مرعدم اکل ممتد ہوجائے تو عارض امتدا دکی وجہ سے موت کاوا قع ہوجا ناممکن ت۔ فی نفسہ عدم اکل سبب موت نہیں بخلاف اکل کے کہ وہ بعض وفعہ خود سبب موت ہوجا تا ہے خواہ بهندا لگ جائے یابر بضی ہوجائے۔ پھرسب باتوں سے قطع نظر کر کے عقل کا فیصلہ دیکھا جائے توعقل يبى فيصد كرتى ب كفعل سے ترك فعل ابون ب_اس لئے اكل وشوار بے اورترك اكل مبل بـ عقل کے اس فیصلہ بیں شریعت نے بھی موافقت کی ہے کہ ایک مہل ممل کوعب دت مشروعہ ئر دیا۔ تکراس کے بعد بھیل افطار وتا خیر محور کے بارے میں شریعت نے عقل کے فتوی ہے موافقت نہیں کی۔ کیونکہاں میں عقل ہے فتو ی لیاجا تا تو اس کا فتو کی تو ہیہ وتا کہ فطرمیں تا خیرا ور بحور میں تبخیل انضل ہے تا کہ ترک اکل کا زمانہ زیادہ ہوجس ہے مجاہدہ کا تحقق کامل ہوگا۔اور عقل تعجیل فطرو تا خیر سحور کو بے صبری اور حرص پرمحمول کرتی کہ جب دن بھر روزہ ہے رہے توالی بھی کیا بے صبری ہے کہ غروب شمس کے ساتھ بی کھانے پر پڑ گئے۔ ذرا وقار وسکون سے اطمینان کے ساتھ افطار کرنا جا ہے تکرشر لیعت خود ہی بدوں کس کے بوجھے فتوئی دیتی ہے کہ بھیل فطروتا خیر سحور میں اُٹواب زیادہ ہے۔ ہائے اس برکوئی وجد نیں کرتا کہ اللہ تعالی نے ہمارے جذبات کی کس قدررعایت قرمائی ہے۔ کیا پی فدا کے ذمہ ہے کہ وہ آپ کے جذبات کی رعایت کریں آخر خدا کے ذمہ یہ بات کیول ے؟ آپ نے کیا کمال کیا ہے جس کی وجہ ہے آپ پر بیعن یات کی جا کیں۔ اگرتم اینے کمالات بیان بھی کرو گے تو وہ سب ہے سب خدا ہی کے عطا کر دہ لکلیں ہے۔ کہیں تو ہارو کے کیونکہ سلسلہ غیر متنا بی محال ہے۔ پس ثابت ہوا کہ حق تعالی کوخود ہی آ یہ سے محبت ہے آ یہ کا کوئی کمال اس کو مقتضی نہیں ای کومولا یا فرماتے ہیں _

ما تبودیم و تقاضا مانه بود این لطف تونا گفته مای شنود (ندیم شخضه در انقاضای شاه و کرم ادارے بے کیے ہوئے کو شتاتھا) ما در مضال اور زیاد فی رزق

صاحبو! اگر کوئی ماقل فلسفی روزہ کومشروع کرتا تو یقیناً وہ بہی تھم کرتا کہ جس حکمت کے لئے روزہ مشروع ہورہا ہے۔ اس کا مقتضا بہی ہے کہ افطار میں تا خیرا ورسحر میں تجیل کی جائے تا کہ مجابدہ کامل ہو۔ مگر شریعت اس کومنظور نہیں کرتی۔ وہ تجیل افطار وتا خیر سحور ہی کو کمال صوم بتلاتی ہے۔ نیز فلسفی یہ بھی کہتا کہ سحری میں کم کھانا جا ہے ورندمی ہدہ ناقص ہوگا۔ وہ روزہ ہی کیا ہوا جس کے لئے

رات کوخوب پیٹ مجرلیا گیا۔ گرشر ایعت کہتی ہے کہ کم کھانا انصل نہیں ہے اور جن صوفیا نے کم کھانا انصل نہیں ہوا کرتی ۔ اور میں بتال کہتا ہوں کہان کوافضل کہا ہے بیان کی رائے ہے۔ اور ہررائے قبول نہیں ہوا کرتی ۔ اور میں بتال کہتا ہوں کہان حصرات کی اس رائے کا منت محض انتیاع عقل ہے انتیاع نقل نہیں۔ ورٹ کوئی حدیث دکھلائی جائے جس میں حضورصلی اللہ علیہ وکم نے پیٹ بجر کے کھائے کو معزصوم بتلایا ہو۔ بلکہ میں کہتہ ہوں کہ حدیث کے اشارہ نے تو یہ علوم ہوتا ہے کہ درمضان میں مومن کوڑیا دہ کھانا جا ہے۔ اور میں اشارہ کا لفظ بھی احتیاطاً کہ در ماہوں ورٹ حدیث تو تریب بصراحت ہے حضورصلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

شھوریز ادفیہ دزق الموق من۔ کداس مہینہ میں موشن کارزق بر صادیا جا تا ہے اب ہتلاؤ یہ زیادت کھائے کے واسطے ہے یا دھرنے کے واسطے ہے۔ جب حق تعالی اس مہینہ میں رزق بر صابتے ہیں تو جا ہے کداس مہینہ میں اور مہینوں سے زیادہ کھایا جائے اور فرمائے ہیں:

هوشهرا لمواساة كدييهبية الدريكاب

مشاہرہ ہے کہ رمضان میں خود بخو دول تقاضا کرتاہے کہ احباب اوردوستوں کو بھی کچھ بھیجا جائے جس کے گھر میں کوئی نئی چیز بگتی ہے وہ افطار کے وفت اپنے دوستوں کو بھی کھلانا چاہتاہے کس کے ہاں سے بھلکیاں آتی ہیں۔کوئی جلیبی بھیجتا ہے کوئی کہا ب بھیجتا ہے کوئی کہا اور میوہ جات بھیجتا ہے۔

اب بتلاؤ کیاان نعمتوں کو نہ کھا کیں ؟ جب خداتعالی نے یہ چیزیں کھائے کے واسطے بھیجی چیں ہم کی سے مانگئے نہیں گئے تھے۔ تو یہ صاف اس کی علامت ہے کہ خداتع لی نے ہی ہمارے واسطے من حیث الا یعنسب بھیجی ہیں توان کو نہ کھا کیں اورا ٹھا کر دھر ویں۔ حضرت اگر کوئی بادشاہ آپ کوامرود و یہ اورآپ یہ کہیں کہ جس تو زام ہوں میوے نہیں کھایا کرتا تو گردن نے گی۔ ایسے ہی بہاں زمد بھارٹا ورحق تعالی کی بھیجی ہوئی نعمتوں کو نہ کھا تا خلاف ادب ہوگا۔

ای سے حضور سلی اللہ علیہ وسلم کے اس فعل کی حقیقت واضح ہوگئ جوحدیث میں ہے۔ کان
یاکل اکلادریغا۔ کہ آپ جدی جلدی کھایا کرتے ہتے۔ اس کوبعض بدتہذیب لوگول نے
طلاف تہذیب کہا ہے۔ میں کہتا ہوں کہ اس بد ذات نے توصرف اس فعل ہی کودیکھ ہے یعن
جلدی کھانے کو۔ اور اس ذات مقدس صلی اللہ علیہ وسلم کی نظر کھانا دینے والے پر بہنجی ہوئی تھی۔
اگر یہ خص اس ذات مقدس کے مشاہدہ کے لاکھویں حصد کے برابر بھی معظم ذات کود کھے لیتا تو یہ

_ل الترغيب والترهيب للمنذري: ٩٣:٢

حضور ملی الله علیه وسلم سے بھی تیز کھا تا۔

بتلاؤاگرایک بادشاہ کم کوامرودو ہے تو کیااس کووقاراور متانت سے اس طرح کھاؤ کے جس سے استغناء ظاہر ہو یا فورا ہی شوق ورغبت ظاہر کر کے جلدی جلدی کھاؤ کے ای کی طرف حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اشارہ فرمایا ہے اس جملہ میں کہ احل سحما یا سکل العبد. یعنی میں تو اس طرح کھا تا ہوں جس طرح غلام کھایا کرتا ہے

صاحبو! جولوگ وقارومتانت وتکبرے کھانا کھاتے ہیں ان کی آٹکھیں اندھی ہیں ان پر کھانے کے دفت ذات حق کی جیل ان پر کھانے کے دفت ذات حق کی جیل نہیں ہوتی۔اس لئے وہ استغناء کے ساتھ کھاتے ہیں اور جس پر ذات حق کی جی ہوگی وہ یقینا سرایا احتیاج اور سرایا غلام بن کر کھانا کھائے گا۔اس کے ہاتھ سے اگر لقہ کریڑے گاؤور آصاف کر کے کھالے گا اور ہرگز اس کو پڑا ہوانہیں چھوڑے گا۔

و یکھو!اگر ہادشاہ نے تم کوایک پھل دیا ہواورتم اس کے سامنے قاشیں کرکے کھارہے ہواور ایک قاش زمین پرگرجائے تو کیاتم اس کوزمین پر بی چھوڑ دو سے ؟ ہرگز نہیں۔ بلکہ عطیہ شاہی کی عظمت کر کے قوراز مین ہے اٹھا کر کھالو سے ۔ یہی طریقہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم اور صحابہ کا تھا۔

حضرت حذیفہ رمنی اللہ عند ایک مرتبہ کھانا کھار ہے تھے اس وقت ایک بجمی رئیس بھی آپ

کے پاس بیٹھا تھا۔ آپ کے ہاتھ ہے ایک لقمہ گر گیا تو آپ نے اس کوصاف کر کے کھالیا۔ خادم
نے کہا کہ یہ مجمی لوگ اس فعل کو معیوب سمجھتے ہیں ان کے سامنے بیفعل مناسب تہیں معلوم ہوتا۔
تو حضرت حذیفہ نے جواب دیا اتو ک مسنة حبیبی فہو لاء المحمقاء کہ کیاان بو وقو فول
کی دجہ سے ہیں اپنے حبیب صلی اللہ علیہ وسلم کا طریقہ چھوڑ دول۔ یہیں ہوسکیا۔

ایک دفیہ خود مجھے پر قصہ پیش آیا کہ رہل میں ایک مسلمان رئیس میرے ساتھ کھانا کھارہ سے انتخان کے ہاتھ سے ایک بوٹ سے نیج کے تختہ پر گر پڑی نوان حضرت نے اس کو بوٹ سے نیج کو دیا۔ یہ دولیا۔ اور میں نے خواجہ صاحب سے کہا کہ ذراای بوٹی کو اٹھا کر پانی سے دھو لیجئے اور دھو کر مجھے دیجئے میں اس کو کھاؤں گا۔ خواجہ صاحب نے اس کو دھویا اور دھو کر کہنے اور دھو کر مجھے دیجئے میں اس کو کھاؤں گا۔ خواجہ صاحب نے اس کو دھویا اور دھو کر کہنے نے کہا ہاں اجازت ہے۔ یس نے کہا ہاں اجازت ہے۔ تو خواجہ صاحب نے کہا ہاں اجازت ہے۔ تو خواجہ صاحب نے خود کھائی۔ وہ رئیس بعد میں کتے تھے کہ اس مملی سمیہ کامیرے اوپر سے دیرے اوپر

ل كنز العمال: ٤٠٤-٩٥:٢٠٤ ١٥٤٠ تفسير البغوى ١٥:٥

ا بیاا تر ہوا کہ بیں کٹ کٹ کی اور اس دن ہے بیں نے بھی گرے ہوئے لقمہ کوز بین پرنہیں چھوڑا ہلکہ صاف کرکے کھالیتا ہوں۔

تو حضرت بیز ہدآ پکوبی مبارک ہوکہ جن تعالیٰ تورمضان میں تشم تشم کی تعتیں بھیجیں اور طرح طرح کے کھانے بھیجا اور آپ کہیں میں تو زاہد ہوں۔ میں تو زیادہ تبین کھا سکتا۔ ہمارا قداتی تو بیہ ہے واسلا میں اور آپ کہیں میں تو زاہد ہموں۔ میں تو زیادہ تو ایک مفراق متنا عت بعدازیں جب خاک برفرق تناعت بعدازیں جب حتی تعالیٰ رمضان میں رزق بردھاتے ہیں اور نئے بنے کھانے بھیواتے ہیں تو ہم کو بھی این

خوراک بردها ناچا ہے اور میں انشراح کیسا تھ کہتا ہوں کہ پیٹ مجرکر کھا نامحری میں ہرگر معنرصوم نہیں اور جن دوراک بردها ناچا ہے اور میں انشراح کیسا تھ کہتا ہوں کہ پیٹ مجرکر کھا نامحری میں ہرگر معنرصوم نہیں اور جن

صوفیائے اس کومطل روح صوم کیا ہوہ اس قول میں فلسفیت کے دیگ ہے مغلوب ہو گئے ہیں۔

بہر حال بید دوسری آسانی ہے روزہ میں کہ شریعت نے دن جر کھاتا ہیںا بند کر کے بینیں جا ہا کہ ترک اکل ممتد ہو۔ بلکہ تجیل افطار کو مستخب کہا کہ غروب ہوئے ہی افطار کر دو۔ اب دمین دگاؤ کا دیر ترک اکل ممتد ہو۔ بلکہ تجیل افطار کو مستخب کہا کہ جاتنا وقت کھانے کا دیا گیا ہے اس کو پوری طرح وصول کر واور سحری ورک کے کھاؤ تا کہ ترک اکل ممتد نہ ہو پھراس کی بھی اجازت دی ہے کہ سحری میں خوب کھاؤ کم کھانے کی ضرورت نہیں اور کمال ہیہ ہے کہ روزہ اس پر بھی مجاہدہ ہے کہ چو تقصود مجاہدہ سے وہ اب کھانے کی ضرورت نہیں اور کمال ہیہ ہے کہ روزہ اس پر بھی مجاہدہ ہے کہ چو تقصود مجاہدہ دوار۔

اب ان احکام کود کیے کرمعلوم ہوتا ہے کہ حق تعالیٰ ہم کوراحت ہی دیتا چاہتے ہیں دشواری میں ڈالنائیں چاہتے۔ جب وہ روز ہیں اتن آ سانیاں کررہے ہیں جس سے مقصود ہی مجاہدہ ہے تو اوراحکام میں تو جن میں شان مجاہدہ بھی غالب نہیں ہے کس قدرآ سانیاں ہوں گی۔

آخر بین تعالی کی محبت نبیں تو اور کیا ہے اور اس سے بیلازم نبیں آتا کہ چرتو اور عباوات روز وسے آسان ہوگئیں۔اصل بیہ کے حیثیات آسانی کی مختلف بیں اور میر امقصوواس تقریر سے صرف اس وسوسہ کا دفع کرنا ہے کہ ان کوسب سے مشکل سمجھتے ہیں اور یہی وسوسہ دفع صوم ہوج تا ہے اور عبادات کامن کل الوجو وسہل نابت کرنا مقصود نبیں۔

مصائب كى حكمتيں

اس پرشایدتم به کهوکدا حکام تشریعیه میں تو بے شک الی بی آ سانیاں ہیں جن ہے معلوم ہوتا ہے کہ تن تعالی کو ہم ہے بہت محبت ہے گر تکو بینیات میں تو بیادت ہے کہ بھی بیاری ہے بھی پھوڑا بھنٹی نگل رہا ہے بھی طاعون ہے بھی ہیفہ ہے بھی اولاد کا صدمہ دیتے ہیں بھی بیوی اور مال بہن کے مرنے کا کسی کے بدن میں کیڑے پڑھتے ہیں کسی کو دمہ ماسل اور دق کی تکلیف دی جارہی ہے۔ محبت تو جب ہوتی کہ تکالیف تکوید پھی نہ آیا کرتیں۔

اس کا جواب ہیہ کہ یہ بھی محبت ہی ہے گراس میں ماں کی محبت کا رنگ نہیں ہے۔ بلکہ
یاپ کی محبت کا رنگ ہے باپ کی محبت یہی ہے کہ جب لڑکا شرارت کرے تو چارادھر نگائے اور چار
ادھر۔ حضرات ان مصائب ہے جن تعالی ہم کومہذب بنا نا چاہج ہیں۔ تا کہ گنا ہوں کا کفارہ
ہوجائے۔ ہم لوگ اپ اگال بدے اپ آپ کو تباہ کرنے میں کر نہیں کرتے ہی تعالی ان
مزاؤں ہے ہم کوراستہ پرلگا دیتے ہیں اور دہ غ درست کردیتے ہیں۔

پھر صدیث میں آتا ہے کہ دنیا کے مصائب سے بہت سے گنا ہوں کا کفارہ ہوجاتا ہے۔ نیز ایک روایت میں ہے کہ بعض دفعہ تن تن می اپنے بندہ کوکوئی خاص درجہ اور مرتبہ عطافر ماتا جا ہتے ہیں جس کو وہ اپنے ممل سے حاصل نہیں کرسکتا۔ تو اللہ تعالی اس کوکسی مصیبت یا مرض میں جتلا کر ویتے ہیں جس کو وہ اپنے ممل سے حاصل نہیں کرسکتا۔ تو اللہ تعالی اس کوکسی مصیبت یا مرض میں جتلا کر ویتے ہیں جس سے وہ اس درجہ عالیہ کو یا لیتا ہے۔

اب بتلایئے بیر مصائب و متاعب تکویذیہ مجت تن سے ناشی ہیں یانہیں۔ حدیث ہیں آتا ہے کہ قیامت میں اہل مصائب کو ثواب کثیر ملتا ہواد کھے کر اہل تعم کہیں گے۔ یالیت جلود ناقرضت بالقدریف فنعطی مثل مااوتوا (او کما قال)۔ کہا ہے کاش! ہماری کھالیں دنیامیں تینچیوں سے کانی کئی ہوتیں تا کہ آج ہم کو بھی ہے درجات ملتے تو۔

صاحبوا القدتعالی تو آپ کوسلطنت اور بادشاہت ویتا چاہتے ہیں اور آپ روتے ہیں کہ ہائے مارد یا ہائے فرخ کرویا۔ آپ کی وی مثل ہے جیسے ایک پتمار کالڑکا بگولے میں لیٹ کراڈ گیا۔ اورایک راجہ کے لی جیست برج براتھ۔ لوگوں کوجرت ہوئی کہ بیآ دمی آسان سے کیونکر آگرا۔ راجہ نے بنڈ تول کو بلایا۔ انہوں نے آکر کہدویا کہ بیٹی انسان ہے۔ خداتعالی نے اس کو بھیجا ہے اس کی تعظیم کرنا چاہیے۔ بین کر راجہ نے کہا کہ پھر میری لڑکی جوان ہوگئی ہے اوراس کے لئے بہت جگہ سے پیغ م آرہے ہیں۔ میری رائے کی جیست جگہ کوشاور نہیں کیا۔ میری رائے یہ ہے کہ اس آ ان لڑکے کوشائی جمام میں لے جاکرا چھی طرح عسل ویا جو ان اور نہایت بیتی لباس بیبنا کر لایا جائے۔ اس کو جو جمام میں لے جاکرا چھی طرح عسل ویا جو نے اور نہایت بیتی لباس بیبنا کر لایا جائے۔ اس کو جو جمام میں لے جائرا چھی طرح عسل ویا جو نے اور نہایت بیتی لباس بیبنا کر لایا جائے۔ اس

جمام میں اس پرکرم گرم پانی ڈالا کیا تو اور زیادہ چلا یا پھرلیاس قیمتی لایا گیا تو بہت ہی چیخا اور کسی طرح خاموش نہ ہوا۔اطہاء کی رائے ہوئی کہ شنرادی کواس کے سامنے لایا جائے شاید اس کود کھے کر مانوس ہوشنرادی سامنے آئی تواس نے ڈرکر آنکھیں بند کر لیس اور پہلے سے زیادہ چلانے لگا۔

پھروزراء کی رائے یہ ہوئی کہ بیآ سمان ہے ابھی تازہ آیا ہے۔ زبین کے آدمیوں ہے اس کو وحشت ہے۔ بہتر میہ کہ اس کو آزاد چھوڑ دیا جائے۔ پچھوڑ دیا گیا تو وہ سیدھا اپنے وطن بیس ہوجائے گا۔ آخر کارائے چھوڑ دیا گیا تو وہ سیدھا اپنے وطن بیس اپنی مال کے پاس پہنچا اور دوروکر سماراقصہ بیان کرنا شروع کیا کہ میں اس طرح از گیا۔ پھر مجھے بہت ہے آدی پکڑ کرلے گئے اور سب نے مجھے طرح طرح ہے مارنا چاہا میرے اوپر تا تا لیعنی بہت ہے آدی پکڑ کرلے گئے اور سب نے مجھے طرح طرح سامنے دیکھے و کہتے انگارے لائے (یہ جمھے (کرم کرم) پانی ڈالا میں جب بھی نہ مرامیا۔ پھر میرے سامنے دیکھے و کہتے انگارے لائے (یہ جوابرات کی گئے بنائی ۔ میں جب بھی نہ مرامیا۔ پھر میرے سامنے ایک ڈائن کولائے تا کہ مجھے کھالے۔ (پیشتراوی کی گئے بنائی)۔ میں جب بھی نہ مرامیا۔

توجیے اس احتی نے ساری قدر دمنزلت ادر عروج دراحت کومصیبت ادر سامان موت سمجھا۔ ایسا ہی ہم لوگ حق تعالیٰ کے امتحانات وابتلاءات کومصیبت سمجھتے ہیں۔ حالا نکہ وہ حقیقت ہیں غایت عروج وراحت کا سبب ہیں۔اور پیسکمتیں تو آخرت ہیں جا کرمنکشف ہوں گی۔

حضرات! دنیا پی مجی عارفین کوان مصائب کی حکمتیں بکٹرت منکشف ہوتی ہیں۔ جن سے وہ مصائب بی نہیں رہے۔ بلکہ ہم ہوج نے ہیں۔ چنانچہ ایک سحائی کا پاؤں کی صدمہ سے ٹوٹ کی اتفا۔ ان کواس کا پچھٹم تھا پچھوڑوں کے بعد حضرت معاویہ اور حضرت علی کے درمیان لڑائی چھٹری اور دونوں طرف کے لوگوں نے ان صحائی کواپنا شریک کرنا چاہا تو انہوں نے دونوں سے عذر کردیا کہ میں تو چلئے پھر نے سے بھی معذور ہمول اس وقت وہ اپنی اس بیاری پرخوش ہوتے تھے اور کہتے تھے الحصلہ لله اللہ علی طہر بدی من ھذہ الدماء ہاذھاب رجلی۔

"کالندکاشکرے کیاں نے پیر لے کرمیرے ہاتھاں محترم خون سے پاک رکھے۔"
اور میں سے کہتا ہوں کہ اگرانسان مصائب وبلیات کی حکمتیں سوچا کرے تواس کوا کشر
مصائب کی حکمتیں ونیا ہی میں منکشف ہوجا کیں گے۔ مجروہ مصائب ہی ندر ہیں گے بلکہ تعتیں
بن جا کیں گی۔

سبل احكام

بہر حال تکویٰ صعوبتوں کی حکمتیں تو نظری بھی ہیں۔ گرتشریعی سہولتوں کی حکمتیں تواس قدر بدیجی بلکہ حسی ہیں کہان میں بجز محبت حق کے دوسرا خیال ہی نہیں کیا۔ بدوں محبت کے احکام بھی سہل ہوسکتے ہیں۔ ہرگرنہیں!

پھرافسوس ہے کہ ایک طبیب پراغنا دکر کے تو آپ کو مسبل اور آپریش بھی گوارا ہے اور خدا پر اعتا دکر کے یہ سہل سہل احکام بجالا نا بھی گوارانہیں۔ بلکہ ان بیں سوال کیا جاتا ہے کہ اس تھم میں کیا مصلحت ہے اور فلال تھم کی کیا تھمت ہے اور روزہ کی کیا فلاسٹی ہے نہ معلوم یہ فلاسٹی کو ن سالغت ہے۔ اگرتم کو اعتا دنہیں نہ ہوجی تعالیٰ کو تو تم ہے محبت ہے اس لئے وہ تنہاری اصلاح و تحکیل کے واسطے برابرا حکام بیان فرماتے رہیں گے اور بہت ہے احکام کی تحکمت بھی نہیں بتلا تیں سے کو کہ شفق باپ این فرماتے رہیں بتلایا کرتا۔ بلکہ جس کام میں اس کی مصلحت دیکھتا ہے اس کا امرکیا کرتا ہے چا ہے بیٹا تھکست سمجھے اور اگر وہ سعد دت مند ہے اور باپ کے احکام کی تحکمت کی اس کی مصلحت دیکھتا ہے اس کا امرکیا کرتا ہے جاتا ہی کہ حکمت سمجھے اور اگر وہ سعد دت مند ہے اور باپ کے احکام کی تحکمت کی تعداس کو خود دی ان احکام کے مصالے و تھم معلوم ہو جا کمیں گے۔ کی تحکمت کی تھیل کرنے لگانو عمل کے بعداس کو خود دی ان احکام کے مصالے و تھم معلوم ہو جا کمیں گے۔

ای طرح احکام شرعیہ کی مصالح وتھم دریافت کرنے کا بیطریقہ بیس کہ پہلے تکمتیں معلوم کرو پھرممل کرو۔ بلکے تم عمل شروع کردو عمل ہی ہے تم کو تھمتوں کا علم بھی ہوجائے گا۔

پس حق تعانی کی ایک تو ہوئی عنایت یہ ہے کہ ہم رے واسطے مبل احکام تجویز کئے ہیں۔
پھرعن بت پرعنایت یہ ہے کہ ان مبل احکام ہیں بھی اگرہم پر پچھ گرانی تھی تو اس گرانی کے بھی رفع
کرنے کا اہتمام فرمادیا ہے اور تسہیل در تسہیل کردی ہے چنانچہ نماز کے متعلق ارشاد ہے وانھا
لکجبر ق کہ یے شک نمازگرال ہے اس میں محتل بندوں کے جذبات کی رعایت ہے کہ جس
آس ان بات کووہ گراں بچھتے تھے تی تعانی نے بھی ان کی رعایت سے اس کوگرال تسلیم کرلیا ہے۔
ورندان کو یہ بھی حق تھا کہ ہمارے جذبات کی رعایت نہ فرماتے۔ بلکہ حقیقت کوواضح کرکے
مدرے اس خیال کی غنطی ظاہر کردیتے کہ جونماز کوگراں کہتے ہوغلط ہے۔

سرقر بان جائے ان کی رحمت کے کہ انہوں نے ایبانہیں کیا۔ بلکہ یوں فرمایا کہ بھائی ہم بھی تشکیم کرتے ہیں کہ نماز گراں ہے۔ گرسب کوگراں نہیں ۔ بلکہ بعض لوگوں پرآسان بھی ہے تے ان لوگوں کی صفات مذکور ہیں جن میں ہم کوتعلیم دی گئی ہے کہ اگرتم بھی ان صفات کو حاصل کراو کے تو تم پر بھی نمازگراں ندر ہے گی ۔ چنانچہ قرماتے ہیں الا علی الخاشعین الذین یطنوں انھم ملقوا ربھم وانھم الیہ داجعون ۔ اس میں اس گرانی کی تسہیل ہے جس کا حاصل ہے خشوع حاصل ہوجائے کے بعد نمازگراں ندر ہے گی ۔ اور تخصیل خشوع کا طریقہ یہ بتایا کہ تم لقاءر ب کا استحضار رکھواور موت کا وھیان رکھواس ہے خشوع حاصل ہوجائے گا۔

ای طرح روز ہ کے متعلق میں عرض کر چکا ہوں کہ وہ فی نفسہل ہے۔ مگرحق تعالیٰ پھر بھی عنوان تھم ہی میں اس کی تسہیل کا اہتمام فر ہ جے ہیں۔

كتب عليكم الصيام كماكتب على الذين من قبلكم.

" کتم پرروز وفرض کیا گیا ہے جیسا کتم ہے مہلے لوگوں پرفرض کیا گیا تھا۔"

اس عنوان بین سہیل صوم کا پوراا ہتمام ہے کہ روزہ کا تھم من کر یوں مرے جاتے ہو۔ یہ کوئی تمہارے ہی اسطے مشروع نہیں ہوا۔ بلکہ تم سے پہلوں پرفرض تھا۔ آگے انہیاء کی تسہیل ملاحظہ ہو کہ نمازیں اول اول بچاس فرض ہوئی تھیں۔ گریہ معلوم نہیں کہ بچاس وقت کی فرض ہوئی تھیں یا بچاس نمازیں اول اول بچاس فرض ہوئی تھیں۔ گریہ معلوم نہیں کہ بچاس وقت کی فرض ہوئی تھیں یا بچاس کوئیس ہے اس لئے سب احتمالات جاری بیس کہ بچاس ففعات تھے اس کی تفصیل روایات پین نہیں ہے اس لئے سب احتمالات جاری بیں کہ بچاس وقت کی نمازیں فرض ہوئی ہوں یا بچاس رکعات یا بچاس شفعات خیر اجر بچے بھی ہو حضور مسلی القد علیہ وقت کی نمازوں کا تھم لے کروایس ہوئے تو موسی علیہ الصلوق والسلام نے بوچھا کہتی صلی القد علیہ وقت کی نمازوں کا تھم لے کروایس ہوئے تو موسی علیہ الصلوق والسلام نے فرہا کیس۔ موسی علیہ السلام نے فرہا کیس۔ موسی علیہ السلام نے فرہا کہ کہا ہم اس کے بھی آسان احکام کوئہ نہا و سکے ۔ آپ بحق موالی سے بھی آسان احکام کوئہ نہا و سکے ۔ آپ بحق تعالیٰ سے تخفیف کی ورخواست سے بھی آسان احکام کوئہ نہا و سکے ۔ آپ بحق تعالیٰ سے تخفیف کی ورخواست سے بھی آسان احکام کوئہ نہا و سکے ۔ آپ بحق تعالیٰ سے تخفیف کی ورخواست سے بھی آسان احکام کوئہ نہا و سکے ۔ آپ بحق تعالیٰ سے تخفیف کی ورخواست سے بھی آسان احکام کوئہ نہا و سکے ۔ آپ بحق تعالیٰ سے تخفیف کی ورخواست سے بھی آسان احکام کوئہ نہا و سکے ۔ آپ بحق تعالیٰ سے تخفیف کی ورخواست سے بھی تاسان احکام کوئہ نہا و سکے ۔ آپ بحق

حضرت موسیٰ کےافسوس کی حقیقت

یبال سے ایک بات پرمتنبہ کرتا ہوں وہ یہ کہ تصدم عراج میں یہ بھی آیا ہے کہ جب حضور صلی استہ عدید وسلم حالت عروج میں موک علیه السلام پر گزرے اور سوام وغیرہ کر کے آئے برو ھے تو موی علیہ السلام رونے گئے کس نے بوجھا کہ آپ کیوں روتے ہیں تو فرمایا کہ بیں اسلئے رونا ہوں کہ جمہ صلی اللہ علیہ وسلم میرے بعد مبعوث ہوئے ہیں اور یہ میرے سامنے جوان لاکے ہیں گران کی امت جنت میں میری امت سے زیادہ واضل ہوگی۔

اس پیمش جباء کوشبہ واکہ موی علیہ السلام کو حضور صلی الته علیہ وسلم پر حسد ہوا ہے بالکل غلط الحاصة نے بیکہ موی علیہ السلام کوائی امت کی کوتا ہی پر حسرت وافسوں ہوا کہ انہوں نے میری و کی اطاعت نہ کی جیسی امت محمد یصلی الشعلیہ وسلم کی اطاعت کر کی (قلت او بعکی تحسوا علی مافات منه من رؤیته تعالیٰ مع تسنیه ایاها و تشوف بها محمد صلی الله علیه و صلم فی الاسواء والله تعالیٰ اعلم ۱۴) اوران جبلاء کے خیال کی تر ویرخودواتعہ معران میں موں علیہ الله علیہ کے انہوں نے حضور صلی الله علیہ و میں موی علیہ السلام کے اس دوسرے واقعہ ہے ہوتی ہے کہ انہوں نے حضور صلی الله علیہ و می میں مون علیہ الله علیہ و می کے درخواست کی کے تخفیف کی ورخواست کیجئے۔ اگر معاذ الله ابن کو حسد ہوا ہوتا تو وہ امت پر پچاس نمازیں فرض ہوں تا کہ وہ نباہ نہ تعلیں اور جنت میں زیادہ نہ پنجیں ۔ گرنہیں انہوں نے امت میر بیاس نمازیں فرض ہوں تا کہ وہ نباہ نہ تعلیں اور جنت میں زیادہ نہ تنجیں ۔ گرنہیں انہوں نمازین مون میں اللہ علیہ و کی مازیں رہ گئیں تو موئی علیہ السلام نے اس بار بارتخفیف کی ورخواست کی ایکن حضور صلی الله علیہ و کی کے درخواست کی درخواست کی ۔ لیکن حضور صلی الله علیہ و کی کاریں رہ گئیں تو موئی علیہ السلام نے اس بیں می تخفیف کی ورخواست کی ۔ لیکن حضور صلی الله علیہ و کی کے درخواست کی درخواست کی ۔ لیکن حضور صلی الله علیہ و کی کاریں درخواست کی درخواست کی ۔ لیکن حضور صلی الله علیہ و کاری کہ بی بی تو خواست کی درخواست کی ۔ لیکن حضور صلی الله علیہ و کی کی درخواست کی درخواست کی ۔ لیکن حضور صلی الله علیہ و کی کی درخواست کی درخواست کی ۔ لیکن حضور صلی الله علیہ و کی کی درخواست کی درخواست

امضيت فريضتي و خففت عن عبادي هن خمس وهي خمسون

کہ میں نے ابنافر بیفہ بھی پورا کر دیا اور بندول سے تخفیف بھی کر دی ہے پانچے نمازیں ہیں اور حقیقت میں یہ بچاس ہی ہیں۔ کیونکہ ایک بمنز لہ دس نماز دن کے ہے۔

ای وقت ہے یہ قاعد و مقرر ہوا ہے کہ ایک حسد (اس میں تنبیقی ایک عالم کی غلطی پرجنہوں نے ای باب میں اپنے وعظ میں کہا تھا کہ رمضان میں ایک فرض شریف ستر فرضوں کے برابر معرائ میں برابر ہے اور ایک نیکی دس تی ہوتی ہے اور پانچ اوقات کی نماز پچاس نماز وں کے برابر معرائ میں ہوچی ہوچی ہے تو پچاس میں پھرستر میں ضرب دیا تو ایک لاکھ پچاس ہزار حاصل ہوئے پھراس کو جماعت کے ثواب میں ضرب کیا تھا اور کی لاکھ تک پہنچایا) پردس کا ثواب ملے گا پہلے بید قاعدہ نہ تھا جس نہ جس نے المعرائ سے بیا تھا دہ نہ جس کی جس کے بیا تھا در کی لاکھ تک پہنچایا) پردس کا ثواب ملے گا پہلے بید قاعدہ نہ تھا جس نے المعرائ سے بیا تھا دور کی المحرائ سے بیا تھا دور کی ہے تھا کی تضعیف لیلہ المعرائ سے بیا تھ دو بہت ہے لیک نے تو بیا ہے کہ نماز وال پر پچاس کا وعدہ ہوا ہے ۔ ایک تضعیف تو بیا ہے ایک نضعیف تو بیا ہے۔ ایک تضعیف تو بیا ہے ایک نا نہ المداری سے سے المداری سے

کہ پھران پچاس میں عشرامثال کی تفعیف الگ ہوگی۔انہوں نے سیجے نہیں سمجھا۔ تو دیکھیۓا نبیاء پہیم السلام کی بھی تسہیل وتخفیف کا کتنا اہتمام ہاوریہ بھی حق تعدانی ہی کی محبت کا اثر ہے کیونکہ انبیاء پہیم السلام میں جوشفقت درحمت ہو وحق تعالیٰ ہی کی شفقت درحمت کا ظل ہے۔ روڑول میں شخفیف

اب یہاں ہے ایک بات اور بیجے وہ رہ کہ رسول امتد صلی امتد علیہ وسلم نے موکی علیہ السلام کے کہنے سے نماز وں بیل تو شخفیف کی درخواست کی اوراس وفت آپ کومعلوم ہو گیا کہ میری امت کی بہلے لوگوں سے کمزور ہے اس لئے آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے بیجیاس سے شخفیف کی درخواست کر کے بالی کیکن روز و کا عدد تمیں سے تین نہیں کرایا۔

اس سے صف میرے دعوے کی تا ئید ہوتی ہے لیمی اس سے بھی معلوم ہوگیا کہ دوزہ سال ہوگیا کہ دوزہ سال بھی جر بیں ایک مہینہ کا پیکھ دشوار نہیں ور نہ ایک تجربہ ہوجائے کے بعد حضور صلی اللہ علیہ وسلم یہاں بھی شخفیف کی ضرور درخواست کرتے اور تمیں ون کے بین کرالیتے اورا گرعد دبھی کم نہ کراتے تو کم از کم کیفیت ہی جن خفیف کرالیتے۔ اس طرح سے کہ دمضان کے دوزہ کومشکل کشاعلی کے دوزہ جیسا بعض جہلا رکھتے ہیں جو بھی جو دو پہر کو ہوتا ہے۔ فیر خیمت ہے کہ ان جا بلول نے حضرت علی گاروزہ دوزہ کو خدا کے دوزہ و کہ مرابز نہیں کیا اس کے علاوہ ایک فرق اور بھی ہے وہ یہ کہ حضرت علی گاروزہ کی بندہ ہی کے کہتے سے کھاتا ہے خود نہیں کھول سکتے چنا نچہ دو پہر کوایسے روزہ دار تیری میری خوشامہ کیا کرتے ہیں کہ انقد کے واسطے تم ذبان سے کہددو کہ دوزہ کول دے اور فداتی لوگ کچھ خوشامہ کیا کرتے ہیں کہ انقد کے واسطے تم ذبان سے کہددو کہ دوزہ کھول دے اور فداتی لوگ پچھ دریکی ان کو تک کیا کرتے ہیں کہ جم تو نہیں کہتے۔

وانعی ان بدعات کا بدعت وجہل ہوتا خودان کی حالت سے ظاہر ہے بھلا ہے بھی کوئی بات ہے کہ دوسرے کے کہنے سے روز ہ کھولا جائے اور کہنا اس طرح کا جس میں خوشا مدیں کی جا کیں اور زبردئتی دوسرے سے کہلوایا جائے۔

غرض! روزہ کے کم منفعل بیتی عدد میں یااس کی کم متصل بیتی مقدار میں حضور صلی امتد علیہ وسلم کا تخفیف نہ کراتا ہا وجود بکہ نماز میں آپ نے بہت تخفیف کرائی ہے اس بات کی مستقل دلیل ہے کہ حجے سے شام تک روزہ رکھنا اور سال مجر میں ایک مہینہ کے روزے رکھنا کچھ بھی دشوار نہیں۔ بلکہ آسان ہے کہ اس میں اس میں کی تخفیف توروزہ میں نہیں ہوئی۔ البتہ اور تغیرات اور تبدیلیاں ہوئی

ہیں۔ مثلاً ابتدائے اسلام میں سوجانے کے بعد سحری کھا ناحرام تھا۔ جا ہے کوئی عشاء کے بعد متصلاً ہی سوجائے بعد میں اس کومنسوخ کیر گیااور شبح صادق تک کھانے پینے کی اجازت وی گئی۔

ایک سہولت روزہ میں بیدر کھی گئی کہ نمی زمیں تو جمع صوری سنر کی حالت میں جا تز ہے اور سال میں ایک دن جمع حقیق بھی جا تز ہے عرف ت ومز دلفہ میں مگرروزہ کے اندر جمع نہیں لیعنی دوروزوں کے درمیان افطار بھی نہ ہو۔ بیوصال کہلاتا ہے سو بیامت پر حرام ہے۔

توبیآ سانیاں ہیں روزہ میں۔اس کے بعد خور سیجے کہ عرف بد ہے اور آج کل عرفیات کو عقلیات کے برابر سمجھا جاتا ہے۔اس موقع پر ہم بھی بطور جہۃ الزامیہ کے اس قاعدہ کو بر تنے ہیں کہ اگر کو ئی محبوب باحا کم اپ محب اور محکوم کو کو ئی بہت ہی آسان کام بتلائے تو اس کی تنیل نہ کر ناسخت عمّا ہے کا سبب ہوتا ہے کیونکہ مشکل اور دشوار کام میں سستی ہونا تو ایک ورجہ میں عذر بھی ہے کیونکہ مستی کرنے کا کیا عذر ہے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی بدوعا

اس قاعده پرخورکر کے معلوم ہوتا ہے کہ رمضان کے روز ے شرکھنا بخت عمّا ہوجم کا سیب ہاک اس قاعدہ پرخورکر کے معلوم ہوتا ہے کہ رمضان خیر عندہ فلم یصل علی رغم انف رجل ذکرت عندہ فلم یصل علی رغم انف رجل ادر ک رمضان فلم یغفر له رغم انف رحل ادر ک واللہ اواحد هما الکبر عندہ فلم ید خل الجنہ (او کماقال) (ترجمہ و شریح آ کے خودو عنایش ہے)

اس میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے تین مخصوں پر بدوعا کی ہے کہ ان کی ہاگر رکڑ جائے سے ذکیل ہوجا کمیں اور ظاہر ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم ایسے ہی شخص پر بدوعا کر سکتے ہیں جس کا جرم بہت تعلین ہواوران تینول شخصوں کا جرم اسلے تعلین ہے کہ انہوں نے نہا یت ہل اور آسان کا م میں کوتا ہی گی ہے۔ اس پرشا ید کوئی کے کہ حضور صلی اینہ علیہ وسلم کی بدوعا سے تو جم کو بے فکری ہے کہ وضور سلی اینہ علیہ وسلم نے جن تھی میری بدوعا اللہ علیہ وسلم نے جن تھی میری بدوعا وں اس کے جن میں میری بدوعا کو قر بت وصلو ہوز کو ہ ورحمت بنادیا جائے تو آپ کی بدوعا ہی دعا ہو کر گئی ہے۔

اس کا جواب ہے ہے کہ گوآ پ کی بدوعاوی ہوکر گئے گراس سے بے فکری نہایت بھدا پن ہے کیونکہ یقنیٹا بدوعا غصہ میں ہواکرتی ہے تو جس کوآ پ صلی القدعلیہ وسلم نے بدوعاوی ہے وہ حضور صلی لے سن التومذی ۲۵۳۵، مسد احمد ۲۳۵۳، مشکو ہ المصابیح ۹۲۵۵ الندعيبية وسلم كے غضب وغصه كامحل ضرور بن تو كيا آپ كوية كوارا ب كه حضورصلي ابتد عليه وسلم آپ ہے نارانس ہوں۔ یقیناً کوئی عاش اپنے محبوب کی ناراضی اور غصہ کانخل نبیس کرسکتا گواس کا انجام سزا بھی نہ ہو۔ ہلکے عشق کا مقتضی تو میہ ہے کہ سزا کوارا ہوتی ہے گرمجبوب کا غصہ اور نا راض ہونا کوارانہیں ہوتا۔

دوسرے آپ کویہ بھی معلوم ہے کہ جس حدیث میں آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے حق تعالیٰ سے بیہ د ما کی ہے کہ میری بددعا کو دعابنا دیا جائے وہ کون سی بدوعا کے متعلق ہے وہ خاص ہے۔اس بدد عا کے ساتھ جوبطور بشریت کے آپ صلی امتدعدیہ وسلم کی زبان سے نکل جائے ہر بدد عا کے لئے ىيەدرخواست عام نېيىل اورا**س كاقرين** خوداس حديث كے الفاظ بيس موجود ہے۔ چنانچه آپ صلى الله عليه والم فرمائے بين:اللهم انما انابشر اغضب كمايغضون فايما عبدا ذيتة اوشتمته اولعنة فاجعلها له زكوة ورحمة وقربة تقربه بهااليك. (اكاشش يشر ہی ہوں غصہ ہوتا ہوں جیسے بندہ غصہ کرتے ہیں گہی جس بندہ کو میں تکلیف پہنچاؤں یا اُس کو برا کہوں یااس پرلعنت کروں تو اسکوز کو ۃ اور رحمت اور قربت اس کیلئے کردیجئے تا کہاسکے ذریعہ ہے دوآب كا قرب حاصل كرے)

اس میں اول بی لفظ انماا نا بشر موجود ہے جواس کا قرینہ ہے کہ اس کے بعد جومضمون ہے وہ سمکی ایسے امر کے متعلق ہے جس کا منشا بشریت ہے ورنہ پیر لفظ نضول ہوگا۔ پس جو بدوعا تشریع ے ناشی ہواس کے لئے میے مم بیس ہے کہ وہ بھی زکوۃ ورجمت وقربت ہواور حدیث رغم انف رجل النع میں جو بدعاہے وہ بشریت کی وجہ سے نبیں۔ بکہ بطور تشریع سے ہے کیونکہ بشریت کے طور پر جو بدد عا ہوتی ہے وہ کسی معین شخص یا معین جماعت پر ہوا کرتی ہے جب کہاس کی طرف سے کوئی امرنا گوارظا ہر ہوا ہو۔ اور اس حدیث میں عام الفاظ کے ساتھ بدوعا ہے۔

بنیزاس کا سبب ورود ہے بھی معلوم ہوتا ہے کہ جس وفت آپ صلی القدعلیہ وسلم نے میہ بددعا کی ہےاس وفت کسی کی طرف ہے کوئی امر نا گوار چیش نیآ یا تھا۔ بلکہ قصہ اس کا بیہ ہے کہ ایک وقعہ حضورا کرم صلی الندعلیہ وسلم خطبہ پڑھنے کے لئے منبر پر جارہے نتھے۔ جب آ پ صلی الندعلیہ وسلم نے ایک درجہ پرقدم رکھا فر مایا آمین۔ پھر دوسرے درجہ پر پیرر کھ کر فر مایا آمین۔ پھرتیسرے درجہ پرتشریف فر ما ہوکر فر مایا آمین ۔ صحابہ کوجیرت ہوئی کہآپ صلی انتدعلیہ وسلم بیآ مین آمین تین مرجبہ

له المغى عن حمل الأسفار للعراقي ١٤٤٠٣ ، إتحاف السادة المنقين ٨ ١٤

کس بات پرفرمارے بیں حضورصلی القد علیہ وسلم نے فرہ یا کہ اس وقت جرسک علیہ السلام تشریف اللہ علیہ السلام تشریف دجل اللہ عند فلم یصل نے منبر کے ایک درجہ پر پیررکھا توانہوں نے کہا: رغم انف دجل ذکر ت عندہ فلم یصل علیک یعنی اس شخص کی تاک رگڑ جائے اوروہ ذکیل وخوارہ وجائے جس کے سامنے آپ سلی القد علیہ وسم کا ذکر آئے اوروہ آپ سلی القد علیہ وسم کا ذکر آئے اوروہ آپ سلی القد علیہ وسلم پر دروون نہ بیج ۔

میں نے کہا آمین ۔ دوسر ۔ درجہ پر میں نے پیررکھا تو جر بیل علیہ السلام نے کہا درک و مصان و لم یعفوله (سن النومذی: ۳۵۳۵)

دغم انف رجل ادرک و مصان و لم یعفوله (سن النومذی: ۳۵۳۵)

اسٹے این معقرت نہ کرائی ۔

اسٹے این معقرت نہ کرائی ۔

میں نے کہا آمین تیسر بورجہ پر میں پہنچاتو جر نیل علیدالسلام نے کہا: رغم انف رجل ادر ک و اللہ او احد هماالکبر عندهٔ فلم یدخل المجنة . (مسند احمد ۳۳۲) ادر ک و الله او احد هماالکبر عندهٔ فلم یدخل المجنة . (مسند احمد ۳۳۲) و شخص بھی ڈیل ہوجائے جس کے والدین یاان میں سے ایک بوڑ ھا ہوگیا ہو۔اوروہ اس کی خدمت کر کے جنت میں داخل نہ ہوا۔ میں نے کہا آمین ۔

توبیہ بددعا تو وہ ہے جو حصرت جرئیل علیہ السلام کے کرآئے تھے اور حضور سلی اللہ علیہ وسلم نے اس پرآ مین فرمائی۔اس میں بیا حمال بالکل نہیں ہوسکنا کہ بشریت کے طور پرآپ سلی اللہ علیہ وسلم نے بددعا کی ہوگی۔ پس معمولی بدد عانہیں۔اس سے بہت ڈرنا جا ہے۔

اب بہاں ایک سوال بیدا ہوتا ہے وہ سے کہ بشریت کے طور پرغصہ بیں جوآپ سلی القدعلیہ وسلم کے منہ سے بددعا فیلے گی وہ تو بدوں قصد وارادہ کے صاور ہوگی اورائی بددعا وبددعا تو خودہی قبول نہیں ہوتی ہوتی ہوتی اس قدرا ہتمام کی قبول نہیں ہوتی ہوتی کے ساتھ قصد وارادہ متعلق نہ ہوتے چراس کے متعلق اس قدرا ہتمام کی کے اس کی خصور صلی القد علیہ وسلم نے خاص طور پراس کے لئے میدرخواست کی کے اس کوز کو 5 ورجمت قربت بناویا جائے۔

ابل الله کے کلمات

اس کا جواب بیہ ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی تو بڑی شان ہے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے بعض اونی غلام ایسے ہوئے میں کہ ان کی زبان سے جونکل کیا وہی ہو گیا خواہ ارادہ سے نکلا ہویا ہے ۔

اللہ سنن النومادی: ۳۵۴۵ ، مسند أحمد ۲۵۳: ۲۵۳ ، مشکورة المعاہم ع

ارادہ کے۔ میرے ایک دوست کتے تھے کہ بہاڑ میں میں نے ایک جسم دیکھ کہ اس کا بعض حصہ پھر ہے اور بعض لکڑی ہے اور بعض کی اور ہے اور مشہور یہ ہے کہ ایک بزرگ بہاڑ میں چلے جارہے ہے اور بعض لکڑی ہے ؟ تواس کا پچھ حصہ فورا لکڑی شھے۔ کسی چیز کی ان کو ٹھوکر گئی۔ آپ نے فرمایا کہ کیا یہ لکڑی ہے؟ تواس کا پچھ حصہ فورا لکڑی ہوگیا۔ پھر فرمایا یا پھر فرمایا یا پھر ہے ؟ تو پچھ حصہ فورا لکڑی ہوگیا۔ پھر فرمایا یا ہو گیا۔ پھر فرمایا یا پھر ہوگیا۔ پھر فرمایا یا ہوگیا۔ بدوعا فرض اجوان کی زبان سے ہوتا گیا وہی ہوتا گیا۔ حال تکدان کا مقصود محض استف ارتھا۔ بدوعا

غرض! جوان کی زبان سے ہوتا گیا وہی ہوتا گیا۔ حالا تکدان کامقصود تحض استفسار تھا۔ بدوعا یا دعامقصود نہ تھی۔ اولیاء اللہ کے عجیب عجیب حالات میں اور ہرا یک کارنگ الگ ہے۔ بلکہ خود ایک شخص ہی کے حالات مختلف ہوتے میں بھی کچھ ہے بھی کچھ ہمولا نافر ماتے ہیں۔

بیت ن ن سے مالان اوست جہا ورکیل آئیم مازاندان اوست کربخوں کے بیال اوست کربخوں کے بیال اوست کربخواب آئیم ماالوان اوست جہا ورکیل آئیم مازاندان اوست کربخواب آئیم مستان وئیم ہی وربہ بیداری برستان وئیم (اگرعلم تک ہماری رسائی ہوجائے تو یہ بھی ان ہی کا ایوان ہے کہ درجہ مم ان ہی کے تصرف سے عطا ہوا ہے اورا گرجہل میں جہتا رہیں تو یہ ان ہی کا زندان ہے لیجی جی تو یہ بی اورا گرجہال میں جہتا رہیں تو یہ ان ہی کا زندان ہے لیجی جی تو یہ بیں اورا گرجہال میں کے بیادی کے ہوئے ہیں اورا گرجہال میں دورا گرجہال میں کے بیادی کے بیادی کے ہوئے ہیں اورا گرجہال میں دورا گرجہال میں دورا گردہوں ہیں تو این جی کے بیادی کرندان سے نہیں فیلے کے اورا گرجہال میں کے بیادی کرندان سے نہیں فیلے کے اورا گرجہال میں دورا گرجہال کے زندان سے نہیں فیلے کے اورا گرجہال میں دورا گرجہال کے ذیور ہیں فیلی کی دورا گرجہال کے ذیور کی دورا گرجہال کے ذیور کی کردور ہیں تو اس میں کردور ہیں تو اس میں کردور ہیں تو اس میان کردور ہیں تو اس میں کردور ہیں تو کردور

ا میں تو بھی ان ہی کی گفتگو میں ہیں یعنی بی تو ب بیانیان ہی کے جاہوں سے ہوئے ہیں اور اسر اشھیں تو بھی ان ہی کی گفتگو میں ہیں یعنی بی تو ب بیانیان ہی کی عطا کی ہوئی ہے) اور

ر ہا یہ کہ فضیلت کلید سے حاصل ہے تو یہ نصوص ہے معلوم کرو۔اور مرزامظہر جان جاناں کوحضور

المالل المتناهية ٢٥٣:١

سلی القد ملیہ وسلم ہے بھرا کیا نبعت ہو سکتی ہے؟ کچھ بھی نبیں۔ گران میں مجبوبیت کی بیش ن تھی کہ جس ہے آپ کوایڈ ایک نیچ نے اگر اس پر پچھ نہ پچھ ضرور دبال آتا۔ اس لئے آخر میں آپ نے لوگوں سے مانابالکل ترک کر دیا تھا بعض خدام نے عرض کیا کہ حضرت لوگ بہت شوق سے زیارت کو آتے ہیں اور محروم ہو کر رنجیدہ واپس جاتے ہیں تو فر مایا ہیں کیا کروں لوگ برتمیزی بہت کرتے ہیں۔ مرز امظہر جا نبیال رحمہ اللہ کی لطیف المن ایمی کے المن الحمی اللہ کی الطیف المن الحمی المن الحمی المن الحمی المن الحمی المن اللہ کی الطیف المن الحمی اللہ کی الطیف المن الحمی المن الحمی المن الحمی النہ کی الطیف المن الحمی الحمی الحمی اللہ کی الطیف المن الحمی الحمی

حضرت کے نز دیک تو تقریباً سارے ہی ہے تمیز تھے کیونکہ آپ نہایت لطیف المز اج تھے جیسا کہ آپ نہایت لطیف المز اج تھے جیسا کہ آپ کے واقعات سے طاہر ہوتا ہے۔

ایک مرتبہ شاہ دہلی آپ کی زیارت کو حاضر ہوئے اتفاق ہے بادشاہ کو بیاس گئی۔اس وقت
کوئی خادم موجود نہ تھا۔ بادشاہ نے خوداٹھ کرصراحی ہے پانی پیااور پانی پی کر حضرت سے عرض کیا
کہ اگر اجازت ہوتو کوئی خدمت گارجناب کیلئے بھیج دوں ۔مرزاصاحبؓ نے فرمایا کہ بس معاف
سیجنے وہ خدمتگار بھی آپ بی جیسا ہوگا۔ آپ کوخودتو تمیز ہے بی نہیں۔ پانی پی کر کٹورا ٹیڑ ھارکھ
ویا جس سے میرے سرجس دروہ وگیا۔

اور سنینے !ایک و فعد آپ من کو جو مجلس میں جیٹھے تو آ تکھیں مرخ تھیں خدام نے وجہ یو جھی۔ فرہا یا کہ مردی کی وجہ سے دات نیز نہیں آئی۔ مجلس میں ایک بڑھیا بھی موجود تھی اس نے پکار کر کہا کہ بھا تیو! حضرت کے لئے دولائی کا انتظام میں کروں گی۔ اورلوگ فکر نہ کریں۔ چنا نچیاس نے اس روز دولائی تیار کی اورعشاء کے بعد تیار کر کے لائی۔ مرزاصا حب نے فرمایا کہ میرے اوپرڈال دو۔ وہ ڈال کرچلی تیار کی اورعشاء کے بعد تیار کر کے لائی۔ مرزاصا حب نے فرمایا کہ میرے اوپرڈال دو۔ وہ ڈال کرچلی گئی۔ من کو جواشھے تو آ تکھیں پھر سرخ تھیں۔ خدام نے پوچھا کہ آج بھی سردی گئی فرمایا کہ بیس سردی تو نہیں گئی۔ من کو جواشھے تو آ تکھیں پھر سرخ تھیں۔ خدام نے پوچھا کہ آج بھی سردی گئی فرمایا کہ بیس سردی تو نہیں گئی مرلیا نے بھی تارہ دیارہ نے تھی میں دی اور فیندند آئی۔

بھلارات کواند عیرے میں نگندوں کے ٹیڑھے ہونے کا احساس یہ بجز مرزا صاحب جیسے لطیف المز ان کے کسی کو ہوسکتا ہے نیز ایک دفعہ اور آپ کورات بھر نیندند آئی۔ خدام نے وجہ پوچھی تو فرمایا کہ جار پائی میں کان تھی (یعنی نقص مثلاً ٹیڑھا بن ، او پچ نیج) ۔ مگر مرزاصاحب کووواتی معلوم ہوئی کہ رات بھر نیندنہ آئی۔

مقام مرزامظهر جان جاناں

تو ظاہر ہے کہ ایسے لطیف المر اج کے نزدیک دنیا بیس تمیز دار کتنے آدمی ہوں مے یقیناً بہت کم ۔ تو آپ نے فرہایا کہ لوگ بے تمیزی بہت کرتے ہیں جس سے جھے تکلیف ہو آپ اور میری تکلیف کی وجہ سے اس شخص کو کچھ تکلیف پنجی ہو تکلیف کی جس کی بہتیزی سے جھے تکلیف پنجی ہو اور اس بارے میں میری دعا بھی قبول نہیں ہوتی ۔ تو اب میں نے تخلوق کی مصلحت اس میں دیکھی کہ اور اس بارے میں میری دعا بھی قبول نہیں ہوتی ۔ تو اب میں نے تخلوق کی مصلحت اس میں دیکھی کہ ان سے ملنا چھوڑ دوں ۔ تو میں تو ابنی کی خیرخوا ہی کی خیرخوا ہی کی خیرخوا ہی کرتا ہوں ۔ مگر لوگوں کو اس خیرخوا ہی کی خیرنہیں ۔ ان سے ملنا چھوڑ دوں ۔ تو میں تو انہی کی خیرخوا ہی کرتا ہوں ۔ مگر لوگوں کو اس خیرخوا ہی کی خیرنہیں ۔ انشدا کبر ایکی ان ان میں کھی کے بدو عانہ کرتے انہیں کے انداز کرتے انہیں کو جو بیت تھی کہ حالا نکہ مرز اصاحب زبان سے پچھ کی کیلئے بدو عانہ کرتے

الندا ہر! کیا تنان حبوبیت می کہ حالانکہ مرزاصا حب زبان سے پھے؟ تصصرف قلب کو تکلیف ہوتی تھی۔اس پر بھی ایک گونہ گردنت ہوتی تھی۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی غایرت رحمت

اب حضور ملی القد علیه و ملم کی شان تو خود بی سمجولو که آپ ملی الله علیه و سلم کورنج و بین والے کا کیا انجام موقا۔ حدیث میں حضرت عائشہ کا قول موجود ہے اتی اری ربک بیارع فی حواک کہ میں دیکھتی ہوں کہ حق تعالیٰ آپ کی خواجش پورا کرنے میں بہت جلدی فرماتے ہیں۔ آپ ملی القد علیه و سلم کی توبیشان تھی۔ تعالیٰ آپ کی خواجی خدا خواجہ چنیں جی و بد یز داں مراد متقیں

(توجو چاہتا ہے اللہ تعالی وی کرتے ہیں جن تعالی متقیوں کی مراد پوری کرتے ہیں)
جب متقین کی بیشان ہے تو رئیس التقین صلی اللہ علیہ وسلم کی کیاشان ہوگی خود ہی سمجھ لو۔

تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی زبان ہے کسی کے جق میں بدد عاکا نگلنام عمولی بات نہ تھی آ ہے صلی اللہ علیہ وسلم کو بخت اند بیشہ تھا کہ ایسانہ ہوجو میری زبان سے لکھے وہ بی نہ ہوجائے اس لئے آ ہے صلی اللہ علیہ وسلم نے الی بدد عا دُل کے متعلق جواز راہ بشریت غصہ میں ہے ادادہ نگل جا ئیں جن تعالیٰ علیہ وسلم نے الی بدد عا دُل کے متعلق جواز راہ بشریت غصہ میں ہے ادادہ نگل جا ئیں جن تعالیٰ علیہ وسلم نے الی بدد عا دُل کے متعلق جواز راہ بشریت غصہ میں ہے ادادہ نگل جا ئیں جن تعالیٰ مقرب ہوجائے۔

قر ماتے ہیں کہ اس کو مدعو علیہ کے لئے زکو ق بناد ہے تی کہ وہ پہلے ہے زیادہ آ ہے کا مقرب ہوجائے۔

لیکن جو بدد عا آ ہے صلی اللہ علیہ دسلم نے تشریعی طور پر قصد آ کی ہواس کا بی تھم نہیں۔ چنا نچہ اس حدیث میں جو بدد عا ہے وہ تشریعی ہے جیسا کہ او پر گزر چکا۔

ذلت اورعذاب جهنم

حضور صلی القد علیہ وسلم فرماتے ہیں دغم انف و جل النے یعیٰ ذکیل ہوجائے وہ فض اس میں نہایت خت بدوعائے کیونکہ ذلت وہ چیز ہے جوعذاب جہنم ہے بھی اشدے ۔ چہنا نچہ صدیث میں آتا ہے کے مشر میں جب بخلوق کھڑی کھڑی پریشان ہوجائے گی تو مومن اور کا فرسب لل کرا نمیاء علیہم السلام کے پاس جا کمیں گے۔ کہ حق تعالیٰ ہے شفاعت کر دو کہ ہمارا حساب و کتاب ہو کرجلد فیصلہ ہوجائے ۔ حالا نکہ کفار کو اپنامعذب ہوتا اور خالد فی النار اس وقت منکشف ہوجائے گا۔ چہانچ حق تعالیٰ فرماتے ہیں :اسمع بھم وابصر یوم یاتوننا لکن الظالمون الیوم فی چہانچ حق تعالیٰ فرماتے ہیں :اسمع بھم وابصر یوم یاتوننا لکن الظالمون الیوم فی حضل مبین . (کیے کہم شنوا اور بینا ہوجائیں گریکن آئی بیالم و نیا ہی کرکھار فیصلہ کے متنی کیوں ہوں کے ان کے لئے تو بظاہر میدان حشر تی نئیمت تھا۔ گر پھر بھی میں رہنا ان کوجہنم ہیں رہنے ہو ہی زیاوہ شاق ہوگا جس کی وجہ یہ ہو گیا ہی صدر ان کے لئے تو بظاہر میدان حشر تی نئیمت تھا۔ میں رسوائی بہت خت ہوگی ۔ تو کفار اس وقت عذاب نار کو عار پرتر جج دیں گے جب فابت ہوگیا ہی رہنا ہو ایک بہت خت چیز ہو معلوم ہوا کہ حضور صلی الشد علیہ وسلم کا دغم انف فرمانا بڑی سخت میں ہو ایک مقتضا ہیں ہو کہ جس میں ہو ایک جو مجھی نہا ہو ہی ہوں ہوں کے بہت ہوگیا ہو کہ حسور سلی الشد علیہ و مجمی نہا ہو تھی نہا ہو کہ جس میں ہو ایک مقتضا ہیں ہے کہ جس مگل پر یہ بدوعا کی گئی ہے وہ بھی نہا ہو تھیں ہیں ہو تھیں ہے۔ میں سنگ مین گیا ہو

م محرظا ہر میں ترک صلوۃ علی الرسول وترک رعایت رمضان وترک خدمت والدین ۔ زیاا ورسرقہ اورسود کی طرح تو تنظین گناہ ہیں معلوم ہوتے۔ گران پرایسی بدد عا وار دہیں ۔ غور کرنے سے وجہ صرف بھی سمجھ میں آتی ہے کہ میداموراس کئے تنظین ہیں کہ ان میں نہا بہت مہل وآسان اخکام کا ترک ہے تو جو خصراً تا ہے۔ کو جو خصراً تا ہے۔ کو جو خصراً تا ہے۔

کیونکہ بیں کہہ چکا ہوں کہ عرف بھی ہے کہ مہل وآ سان کام کے ترک پر غصہ زیادہ آیا کرتا ہے۔روزہ کی مہولت تو او پر ندکور ہو چکی اور درود کی مہولت بھی واضح ہے کیونکہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا نام من کرصلی اللہ علیہ وسلم کہدلینا کیا مشکل ہے۔

پھرفتہاء نے اس میں اتنی سہولت اور کر دی کہ ایک مجلس میں ایک ہی بار درود پڑھنا فرض ہے۔اس کے بعد پچاس دفعہ بھی اگر آپ کا نام مبارک زبان پر آئے یا کان میں پڑے تو بار بار دروٰد فرض نہیں۔ ہاں محبت کا مقتضایہ ہے کہ ہر بارصلی اللہ علیہ وسلم کہو۔

والدین کی خدمت اسلنے آسان ہے کہ ان کی خدمت کرنے میں احتیاط سے زیادہ تو کوئی
کام بی جیس نہ تمام مال مانگا جاتا ہے۔ بلکہ تھم یہ ہے ابداً بنفسک کہ اول اپنے اوپر مال کوخرج
کردو۔ ابدا کین تعول۔ پھر جن کا نفقہ تمہارے ذمہ واجب ہے ان پرخرج کر ویسی بیوی بچوں پر۔
پھروالدین ودیگر محارم کا نفقہ ہے کہ اپنے اہل وعیال سے جوفاضل ہواس کو والدین وغیر تھم پرخرچ
کرو۔ پھر پوڑھوں کی فرمائش بی کیا ہوتی ہے۔ ایک غریب دم ہے۔ تھوڑی ہی امداد میں ان کا بی خوش ہوجاتا ہے۔ بوڑھا آدی نہ پچھے ذیادہ کھا تا ہے نہ پیتا ہے۔ ایک دورو ٹی میں اس کا پیٹ بخرجا تا ہے۔ تواس کی خدمت کے بھی مشکل نہیں۔ کھانے بینے کا زمانہ تو جوائی میں ہے۔ بوڑھا نے بھی مشکل نہیں۔ کھانے بینے کا زمانہ تو جوائی میں ہے۔ بوڑھا ہے۔ تواس کی خدمت کے بھی مشکل نہیں۔ کھانے بینے کا زمانہ تو جوائی میں ہے۔ بوڑھا ہے کہ لوٹھا نے کو۔

معرت مولانا گنگوئ فرماتے ہے کہ حضرت حاجی صاحب کا بیمصرع کہ 'جوائی گئی زندگائی ۔ گئی ندگائی ۔ گئی ندگائی ۔ گئی ' سن کر جوائی ہیں ہم کو خیال ہوتا تھا کہ جوائی کے جانے سے زندگی کیونکر جاتی رہے گی۔ آخر برد صابے میں بھی تو زندگی رہتی ہی ہے۔ گر برد صابا آنے کے بعد مشاہدہ ہوگیا کہ حاجی صاحب نے بچے فرمایا تھے۔ واقعی ' جوائی گئی زندگائی گئی''

اب كى كام كو جى نبيس چاہتا۔ بس يول جى چاہتا ہے كہ ہر دفت بلنگ پر ليٹے رہو۔ تو بنلا يے ايسے خفس كى خدمت كياد شوار ہے جس كا دل و نيا ہے مرد ہو چكا ہے۔ ية وان احكام كى وجہ سبولت الگ الگ تحى۔

سهولت اورطبيعت

اب ایک وجسمولت الی بتلاتا مول جوان تینول میل مشترک ہے۔ بلک تمام احکام شرعیہ میں

مشترک ہے وہ یہ کہ ان احکام ٹلٹہ کی بلکہ تمام احکام شرعیہ کی حالت میہ کہ وہ تق ضائے طبیعت کے موافق ہیں۔ صرف صدود میں طبیعت منازعت کرتی ہے۔ گریہ منازعت بھی ہے جاہے۔ کیونکہ ہرکام کیلئے حدود کا ہوتا ضروری ہے بدوں حد کے کوئی شے ستحسن نہیں خصوصاً جب کہ یہ دیکھا جائے کہ حدود تشرعیہ ہے آگے ہلاکت ہے۔ پھر توان حدود میں من زعت کرنا بھی بہت ہی ہے جاہے۔

یہرمال اگر طبیعت کچھ منازعت کرتی ہے تو حدود میں کرتی ہے۔ ورشاحکام شرعیہ فی نفسہا محل منازعت نبیں ہیں۔ بلکہ ووتو عین تقاضائے طبعی کے موافق ہیں اورا گرکہیں طبیعت کے کسی تکم منازعت نبیہ ہوتا ہے بلکہ ووقو عین تقاضائے طبعی کے موافقت کا سبب حقیقت کا معلوم نہ ہوتا ہے بعد علم حقیقت کے ضرور طبیعت کواس تکم کا خود تقاضا ہوگا۔

یہاں سے معلوم ہوگا کہ احکام شرعیہ کی مخالفت سے دنیا کی بھی بے حلاوتی ہے کیونکہ میہ خالفت کے کیونکہ میہ مخالفت کے دان کے خلاف کام کررہا ہے اوراس سے بڑھ کر کیا بے حلاوتی ہوگی کے خلاف کام کررہا ہے اوراس سے بڑھ کر کیا ہے حلاوتی ہوگی کے کہ کہ مطبعی تقاضا کومردہ کیا جائے۔ اور یہ بھی معلوم ہوگیا ہوگا کہ مطبعین کی زندگی شاہانہ زندگی ہے کہ ان کا ہرگام طبیعت کے موافق ہے۔

اب سنیئے کے حضور صلی اللہ علیہ وہلم کا نام س کر درود پڑھنا تقاضائے طبیعت کے بالکل موافق ہے۔ اگر کسی کو حضور کا تحت کے بالکل موافق ہے۔ اگر کسی کو حضور کا تحت کے موافق نہ سمجھے تو نہ سمجھے ۔ درود مشر لیف کی اہمیت

گرائی علم کے بعد کے حضور سلی القد علیہ و سلم محن ہیں اور سب ہے ہوئے محن ہیں خو و بخو و سے
تقاضا ہوگا کہ حضور کے احسان کا بدلہ کریں۔ جس کا اقل ورجہ بیہ ہے کہ کم از کم آپ کو دعا ہی ویں
گرخو ووعا کیسے ویں۔ ہم کو آپ کے ورجہ کا کم حقہ علم ہی نہیں۔ اس حالت میں خو دتھنیف کر کے
دعا کرنے میں خت بے دالی کا اندیشہ تھا کیونکہ اس وقت ہی رہی وعا وشاالی ہوگی کہ ۔

دعا کرنے میں خت ہو دالی کا اندیشہ تھا کیونکہ اس وقت ہی رہی وعا وشاالی ہوگی کہ ۔

شاہ راگوید کے جولا ہہ نیست ہے ایس ندید تے است او گرآگاہ کا ہیست
(بادشاہ کوکوئی شخص کے کہ وہ جولا ہا نہیں بیاسکی تعریف نہیں ہے بلکہ وہ بادشاہ کے مرجبہ سے واقف نہیں ہے)

اوراس لئے اپنی رائے سے تفاضل جائز نہیں جس میں درجہ تفاضل خود تھنیف کرے ہاں جوفضا کل منصوص ہے ان سے تفاضل جائز ہے کیونکہ وہ تمہاری طرف منسوب نہ ہوگا جکہ شارع کی طرف منسوب ہوگا۔ اس میں بے اونی کا اندیشہ نیس اور محققین نے تو تفاضل میں اولیاء ہے بھی ممانعت کی ہے کیونکہ تفاضل کے لئے ضرورت اس کی ہے کہ بید فیصلہ کرائے والا دونوں کے مقامات سے واقف ہوا ورا یک ولی کا پورا حال دوسرے ولی کو بھی معلوم نہیں ہوسکتا۔ چہ جائیکہ ہم جیسوں کو۔ اس حافظ ہوا درا یک ولی معلوم نہیں ہوسکتا۔ چہ جائیکہ ہم جیسوں کو۔ اس کے ہمارے ماموں صاحب فرمایا کرتے تھے کہ بیہ جومشل مشہور ہے ''ولی را ولی می شناسد'' سے خیم نہیں۔ بلکہ تیج جیسے کہ''ولی را نی می شناسد'' سے خیم نہیں۔ بلکہ تیج جیسے کہ''ولی را نی می شناسد نبی را خدا می شناسد'' سے خیم نیس۔ بلکہ تیج جیسے کہ''ولی را نبی می شناسد نبی را خدا می شناسد''

اب بتلائے کہ اندر سے تو ول تقاضا کر رہا ہے کہ حضور صلی القد علیہ وسلم کے احسان کا بدلہ کریں اور آپ صلی القد علیہ وسلم کو دعا ویں مگر اندیشہ ہے اولی کی وجہ سے دعا بھی جہیں دے سکتے۔
ایسے وفت میں جو آیت صلوا علیہ و مسلموا تسلیمانازل ہوئی ہوگی ۔ تو مشآ قین کا دل کیسا شمنڈ ا ہوگا کہ الحمد منذ ہم کوا ہے جسن کے احسان کا بدلہ اوا کرنے کا طریقہ معلوم ہوگیا تو یہ حکم کس قدر مہل ہے کہ بالکل جذبات طبیعت کے موافق ہے۔

پھڑعقل کا مخفنا تو بہتھا کہ درود پڑھنے پر تو اب نہ ملتا کیونکہ اس کوتو خودتمہاری طبیعت ہی چاہ رہی تھی تو درود پڑھ کرتم نے اپنے دل کوشندا کیا۔ اپنی طبیعت کا تقاضا پورا کیا۔ پھر تو اب کس چیز کا مانتے ہو۔ گریہ شریعت کی رحمت در رحمت ہے کہ باوجود میکہ اس کے سب احکام تقاضائے طبیعت کو پورا کرنے والے ہیں۔ گران پر تو اب کا بھی وعدہ ہے تا کہ تو اب کوئن کر اور زیاد و سہولت ہوجائے۔ چٹا نچہ دروو پر تو اب بھی ملتا ہے۔

صدیث میں ہے کہ جو تحق ایک بار حضور صلی اللہ علیہ وسلم پر درود بھیج حق تعالیٰ اس پردس بار صلوٰ قاوسلام بھیجتے ہیں (بعنی رحمت خاص فرماتے ہیں) اور دس نیکیاں اس کوملتی ہیں اورایک حدیث میں ہے کہ دس گناہ معاف ہوتے ہیں۔

بیصلہ وانت کھائی ہے انسان اللہ میاں ہے وانت کھائی بھی وصول کرتا ہے ورنہ واقع میں درود میں اس کو واب کا کیا حق تھا۔ پچے حضور صلی اللہ علیہ وسلم پراحسان تعور ابی کیا ہے جو تو اب کا استحقاق ہو۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو ہمارے درود کی کیا احتیاج ہے جب کہ اللہ تو ملائکہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم پر درود جیجتے ہیں۔ چنانچہ خود نص میں ارشاد ہے۔ ان اللہ و ملائکته مصلی اللہ علیہ وسلم پر درود جیجتے ہیں۔ چنانچہ خود نص میں ارشاد ہے۔ ان اللہ و ملائکته مصلون علی النہ علیہ وسلم کو تو تمہارے درود کی ضرورت ہے جیس سے مقدی جماعت ملائکہ کی ضرورت ہے جیس ۔ آپ کو اللہ تعالی ہی کا درود کا فی ہے اور مخلوق میں سے مقدی جماعت ملائکہ

کادرودکافی ہے۔ باتی تم کو جوصلو ہ وسلام کا امرکی گیا ہے اس میں تہمارے لئے بہی بات کافی تھی کہتم کواس کام میں شریک کرلیا گیا جو خدات کی اور ملائکہ کرتے ہیں اور ثواب مزید برآ ں۔ مرزامظہر جان جاں دحمۃ اللہ علیہ نے ای مضمون کفایت صلو ہوتی کوایک قطعہ میں خوب فلا برفر مایا ہے۔ خدا در انتظار حمد مانیست ہی محمد چیشم برراہ شانیست محمد عالمہ حمد خدا بس ہی خدامد ح آفرین مصطفیٰ بس لیعنی نہ جن تعالیٰ کو ہماری حمد کی ضرورت ہے ندرسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو ہماری شاکا انتظار ہے۔ مضور کو خدا تعالیٰ کی مرح کافی ہے اور اللہ تعالیٰ کو گھاوت میں سے حضور کی حمد کافی ہے۔ بسید میں اب ہم جوجی تعالیٰ کی شایا حضور کی نعت کرتے ہیں۔ اس سے مقصود اپنا ہی فائدہ ہے اس کو آ گے فرماتے ہیں کہ جیسا اپنافا کدہ مد نظر ہے تو بس منا جاتے ہیں کہ جیسا اپنافا کدہ مد نظر ہے تو بس منا جاتے اگر خوا ہی بیاں کرد ہیں ہے۔ بسیتے اکتفا خوا ہی تواں کرد رائے کیا تھی منا جات بیان کرنا جا ہے ہوتو ان دو جیتوں پراکتفا کرو)

آ گے کیا تھی منا جات ہے ۔

محراز تومی خواجم خدارا جلا اللی ازتوحب مصطفل را کراے محراز تو می خواجم خدارا جلا اللی ازتوحب مصطفل را کراے محراصلی اللہ علیہ وسلم آپ ہے جم خدا کی محبت ما تکتے ہیں اور اے اللہ! آپ ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی محبت ما تکتے ہیں۔ بس خدانے و یارسول اور رسول نے دیا خدا ایعنی خدا کا پہند دیا۔ تو خدا ہے رسول کی محبت ما تکواور رسول اللہ سے اللہ تعالی کی معرفت ما تکو سیمنا جات کا فی ہے۔ وا شت تکھ ساکی

میں یہ کہ دہاتھا کہ حضور ملی اللہ علیہ وہ مردوجینے میں ہم حضور ملی اللہ علیہ وسلم پرکوئی احسان نہیں مرتے۔ بلکائے جذبہ شکر کو پورا کرتے ہیں۔ اب اس پرتواب ملنائے میں دانت گھسائی ہیں تواور کیا ہے؟

اس دانت گھسائی پر جھے ایک قصہ یا دآیا۔ ذھا کہ میں ایک پیرز اوہ مساحب اپنے باپ کے مریدوں میں گئے۔ ایک رئیس نے ان کی دعوت کی اور دعوت کے بعد بچاس روپ نڈ رائہ میں مریدوں میں گئے۔ ایک رئیس نے ان کی دعوت کی اور دعوت کے بعد بچاس روپ نڈ رائہ میں دیئے۔ پیرز اوہ نے روپ بھینک ویے کہ کیا ہم اس لائق ہیں ہمارا نڈ رائہ دوسور و پیا ہے کم نہیں ہونا چاہے۔ میں نے دکا بیت من کر کہا کہ دعوت کے بعد نڈ رائہ پراتنا تحرار کیسا؟ ایک ظریف نے ہونا چاہے۔ میں نے دکا بیت من کر کہا کہ دعوت کے بعد نڈ رائہ پراتنا تحرار کیسا؟ ایک ظریف نے کہا کہ یہ دائت گھستا ہی ہے۔ بنگالہ میں جو عالم

یا درویش کسی کی دعوت قبول کر لیتا ہے کھانے کے بعد دانت کھسائی کا نذرانہ بھی ضرور لیتا ہے۔ اس کئے اس بر تکرار بھی ہوتا ہے۔

خیر بیرتوان پیرول کاظلم ہے گرحق تعالیٰ ہے توانسان دانت گھسائی ہمیشہ لیرتا ہے اور چونکہ وہ بڑے کریم بیں اوران کے خزانہ میں کی نہیں اور وہ خوش ہو کر دیتے ہیں اس لئے القد میاں سے دانت گھسائی لینے کا مضا کقہ نہیں ۔ گراس کوا پناحق نہ مجھومض ان کافضل وکرم مجھو۔ رعا بیت جاڑیات

مجھے دعامت جذبات پر کہاشدتعالی نے احکام میں ہمارے جذبات کی کیسی رعابت فرمائی ہے۔ ایک بات اور بادآئی جو مجھ سے لڑکیوں نے ترجمہ قرآن کے درس میں پوچھی تھی۔ میں ان کوسورہ برات کا ترجمہ پڑھار ہاتھا جب بیآیت آئی۔

یضاهؤن قول الذین محفروا من قبل قاتلهم الله انی یؤفکون.
"فداان مدعیان فرزند شی و عزیر کوتباه کرے بیکهاں النے جارہے ہیں۔"
توایک کڑی نے سوال کیا کہ بیاتو کوسنا ہے القد میاں جب مب کچھ کر سکتے ہیں پھروہ کیوں
کوستے ہیں؟ بیسوال اس سے پہلے کی نے جھ سے نہ کیا تھا۔ نہ کی کتاب میں اس کا جواب
و یکھا تھا۔ گرالحمد نقد کے سوال کے ساتھ ہی معامیر ہے دل پر جواب القاموگی۔

 رے بت ایک ہے جیسے بچد کے ساتھ اباجان بھی پانی کوم اور رونی کوروتی کہنے لگتے ہیں۔

اس سے زیادہ بجیب ایک دوسراتصہ ہوہ یہ کہ بس نے ایک سماۃ (یہ حضرت مولانا کی المیہ کبری ہیں۔ زاداللہ فی در جا تھاور فع فی المجنة منزلتھا ورزقھا فی الدنیا عیشہ طینہ بقیۃ سویۃ آمین ۱۲. ظ) سے آیت والارض جمیعاً قبضته یوم المقیامة والمسموت مطویت بیمینه، کا ترجمہ پڑھاتے ہوئے سوال کیا کرتی تعالی نے جو یہاں قرمایا ہے کہ ذمینیں سب المتد تعالی کی شمی بیل ہوں گاور آبان دائے ہاتھ بس لیٹے ہوئے ہوں گے۔ کا اس کی حقیقت تو مراد نہیں ہے کونکہ حق تعالی مفتی سے اوراعشاء سے پاک بیل مقصود صرف بیہ کہ بیسب چیزیں خدا تعالی کی قدرت کے تحت میں ہوگی۔ گرقیضہ کی تعبیر میں جوافقان ہے کہ بیسب چیزیں خدا تعالی کی قدرت کے تحت میں ہوگی۔ گرقیضہ کی تعبیر میں جوافقان کی کیا وہ ہے کہ بیسب چیزیں خدا تعالی کی قدرت کے تحت میں ہوگی۔ گرقیضہ کی تعبیر میں جوافقان نے کہ جب زمین کے ساتھ قبضہ اور سموات کے ساتھ یمینہ کاعنوان اختیار کیا گیا اس کی کیا وجہ ہے ایک بی عنوان کا ٹی تھا۔

یہ سوال بہت و تین تھا۔ گراس کا جواب اس مستورہ نے جیب حیرت انگیز و یا کہا کہ یہاں حق تعالٰی نے ہماری عاوت کے موافق کلام فرہ یا ہے اورعادت بہی ہے کہ ہم چھوٹی چیز کوشی میں لیتے ہیں اور بردی کو ہاتھ ہیں بدول مشی بند کئے لے لیتے ہیں۔ پس چونکہ زہین آسان سے چھوٹی ہے اس لئے وہاں قبضہ فرمایا ہے اور آسان برا ہے اس کے لئے جمینہ فرمایا۔ جھے یہ جواب بہت پہند آیا۔ چن نچے میں نے اپنی تغییر ہیں بھی اس کو مکھ دیا ہے تو یہ بھی وہی بات ہے کہ جن تعالٰی میت پہند آیا۔ چن نچے میں اس کو مکھ دیا ہے تو یہ بھی وہی بات ہے کہ جن تعالٰی ہے۔ نے قرآن ہیں ہمارے جڈیات کی رعایت فرمائی ہے۔

مفسرین نے بھی افراد ارض اور جمع سموت میں یہی تکتہ بیان کیا ہے کہ اس میں ہمارے جذبات کی رعابیت ہے کہ آئی میں جانہ ہیں جہانے جذبات کی رعابیت ہے کہ تعدد ارض لوگوں کے ذہبن میں نہا ہے تھا تعدد ارض لوگوں کے ذہبن میں نہتے تو حق تعالی نے بھی ان کے ذہبن کو ما نوس کرنے کے لئے سررے قرآن میں ارض کو بصیغہ مفرد اور سموات کو جمع استعمال کیا ہے۔ البتہ تعدد ارض کی حقیقت واضح کرنے کے لئے ایک متمام براس طرح مقصوداً فی ہر فرمادیا۔ الله اللذی خلق مسبع سموات و من الارض مشلهن سیاتو درود کے متعلق کلام تھا کہ و طبعی تھا ضا کے موافق ہے۔

روز و میں رعایت جذبات طبیعہ اس طرح ہے کہ جیسے کھانے کا ہم کوتقاضا ہوتا ہے ایسے ہی بعض و فعہ نہ کھانے کا بھی تقاضہ ہوتا ہے۔انسان ساں بھر کھاتے کھاتے تھک جاتا ہے تو طبیعت خورت ضائرتی ہے کہ کچھ دنوں کے لئے کھانا جھوڑ ویا جائے۔

خدمت والدین بین رعیت جذبات اس طرح ہے کہ جس تخفی کو ماں باپ کا مال باپ اوران کی تعلوم ہوگا۔ اس کا دل خود تقاضا کرے گا کہ ان کی خدمت کرے۔ ان کے احسان کا بدلہ کرے۔ اوران کی تکلیف ہے اس کا دل خود ہی کڑھے گا اورا ندر سے طبیعت میں تقاضا پیدا ہوگا کہ ان کو آ رام و با یک تکلیف ہے اس کا دل خود ہی کڑھے گا اورا ندر سے طبیعت میں تقاضا پیدا ہوگا کہ ان کو آ رام و با یک تخفی و ما ندگی پرزیادہ ترس آ کے گا۔ اس وقت گوجت و لیک ندر ہے جیسے جو انی کے عالم میں تھی کیونکہ جو انی میں والدین کے کما مات سامنے تھے ان کی گفتگو عا قلانہ تھی وہ او لاد پرخرج بھی کرتے تھے ان کے نفع و نقصان کا لحاظ کرتے تھے اوران باتوں سے اولا د کے دل میں ان کی محبت برحتی تھی۔ برحا ہے میں بعض و فعہ والدین کے ہوئی و والدین کے مواس ورست نہیں رہے ۔ اٹی بلی با تیں کرنے لگتے ہیں اور کما تا یا اولا د پردو پیدلگا تا بھی ختم ہوجا تا ہے۔ اس وقت بعض لڑکوں کو والدین ہے محبت نہیں رہتی مگران کے حال پر رحم اور ترس کو خواس ورست نہیں رہتی مگران کے حال پر رحم اور ترس

محبت اوررحمت كانباه

یباں ہے معلوم ہوا کر محبت کا نباہ دوا ما نہیں ہوتا ہاں رحمت کا نباہ دوا ما ہوسکتا ہے۔ اس لئے حق تعالیٰ نے زوجین کے متعلق فرمایا ہے و جعل بینکم مودہ ور حمد مودہ سے دحمت کواس لئے بودھایا کرزوجین میں محبت کا نباہ دائی نہیں ہے جکداس کی تویہ است ہے کس اگر ماندھے ماندھے ویکرنے ، ند (اگررہ توایک رات رہ دوسری رات ندرہ) اور کسی کو بہت ہی محبت رہے گی تو جوانی تک رہے گی۔ بردھا پے میں محبت وعشق باتی شدر ہے گا۔ ہاں شفقت ورحمت باتی رہے گی ۔ اس لئے شاہ فضل الرحمن صاحب نے ایک ذاکری اس شکایت پر کداب ذکر میں پہلے جیس مزہ نہیں آتا فرمایا تھا کہ تم کو خبر نہیں پرانی جورواماں ہوج تی ہے شکایت پر کداب ذکر میں پہلے جیس مزہ نہیں آتا فرمایا تھا کہ تم کو خبر نہیں پرانی جورواماں ہوج تی ہے گئے دی اب اس کے ساتھ و ایس محبت ہوج تی ہے جیسی ماں سے ہوا کرتی ہے بوجہ خدمت و غیرہ کے جس کا حاصل ویں رحمت ہے۔

اس تقریر سے ٹابت ہو گیا کہ یہ تین امور جن کااس حدیث میں ذکر ہے نہایت سہل ہیں اور طبعی امور ہیں اوران میں کوتا ہی کرنے پر عن ب بھی اس لئے زیادہ ہے کہ ان میں پچھازیادہ کام نہیں کرتا پڑتا۔ بلکہ وہی کام کرنا ہوتا ہے جس کو طبیعت خود جیا ہتی ہے پھر بھی سستی کی جاتی ہے۔ ان اعمال کے متصق ایک عجیب مکت ہے کہ ان متیوں میں ایک تو حق العبد خالص ہے بینی خدمت والدین ۔ اورایک حق القد خالص ہے بینی صوم رمضان اورایک حق العبد وحق الله ہے مرکب ہے بینی حضورصلی القد علیہ وسلم پر درود بھیجنا درود کا حق العبد ہونا فقہاء نے سمجھا ہے اوراس پر دومسئلے متفرع کے بیں۔ ایک یہ کہ وہ فر ماتے ہیں کہ اس میں کوتا ہی کرنے کا گناہ صرف تو بہ سے معاف نہ ہوگا کیونکہ بیدی العبد بھی ہے۔ بلکہ اس کی حال فی تو بہ کے ساتھ حضورصلی اللہ علیہ وسلم کوخوش کرنے سے ہوگا کیونکہ بیدی العبد بھی ہو ہے کہ کوتا ہی ہوجائے کے بعد المتد تعالی سے تو بھی کرے اور آئندہ درود کی خوب کیڑ سے کو بھی کرے اور آئندہ درود کی خوب کیڑ سے کہ کوتا ہی ہوجائے کے بعد المتد تعالی سے تو بھی کرے اور آئندہ درود کی خوب کیڑ سے کہ کوتا ہی دے کہ حضورصلی اللہ علیہ وسلم خوش ہو گئے ہوں گے۔ ورود کی فضیلت

دوسری تفریع بدی ہے کہ وہ فرماتے ہیں کہ درودالی طاعت ہے جو بھی رونیں ہوتی کیونکہ بیر حضور صلی القد علیہ وسلم کیلئے درخواست ہے اور حضور صلی القد علیہ وسلم حق تعالی کے محبوب ہیں اور محبوب کے لئے جو درخواست کی جاتی ہے وہ رونہیں ہوتی۔

اس کی مثال الیں ہے جیسے ہم باوشاہ ہے شہرادہ کے متعلق ایس بات کی سفارش کریں جو بادشاہ اس کے لئے خود ہی کرنے والا ہے تو ظاہر ہے کہ الیں سفارش کیوں رد ہونے گئی۔

درود میں بھی حق تعالیٰ سے ایسی ہی سفارش کرتے ہو کیونکہ درود کا حاصل بہی تو ہے کہ
یاالتہ! حضور صلی التہ علیہ وسہم پرصلوٰ ق وسلام نازل فر ماہیے اور بیکام تو حق تعالیٰ بدوں ہمارے کے
خود بی کررہے ہیں۔ چنا نچینص میں ہے ان الله و ملنکته یصلون علی النبی (بشک ابتہ
تعالیٰ اورائے فر شے نبی پردرود بھیجے ہیں) بھر ہمارے کہنے کووہ کیونکرردکریں گے۔اس لئے درود
کا قبول ہونا بھنی ہے وہ ردنہیں ہوتا۔اور بیربت بڑی فضیلت ہودرودکی۔

غرض اس حدیث میں حضور صلی الله علیہ وسلم نے حقوق کی جمد اقسام میں ہے ایک ایک فرو بیان فریادیا ہے کہ ایک نوع میں فعال انہل ہے اور دوسری تیسری نوع میں فلاں فلاں عمل اسبل ہے اس لئے ان میں کوتا ہی کرٹا سخت جرم ہے۔

مغفرت كاسامان

میں روزہ ہی کے بیان پر کلام کوختم کرتا ہوں کہ روز ہنہا یت آسان ہے اوراب تو بہت ہی آسان ہے کیونکہ صرف تین دن باقی رو گئے ہیں۔اگریہ بیان شروع رمضان میں ہوتا تو اس وقت تمیں دوزے باتی ہوتے اب تو تین ہی باتی ہیں اور بعض جگہ کے انتہارے تو اس ہے بھی آم ہیں۔

کیونکہ بعض مقامات پر شغبہ کی پہلی ہوئی ہے۔ اس حساب ہے آئ ۲۸ تاریخ ہے ان کے حساب
پر تو پیر کوعید ضرور ہونا چاہیے۔ گر ہمارے بہاں ثبوت کافی سے بیڈ بر نہیں پینچی اس لئے اس کا انتہار
نہیں کیا جاسکتا۔ ہمارے بیہاں پیر کوعید کا ہونا ضروری نہیں صرف محمل (پھر بیباں بھی عید پیر
کو ہوئی ۔ ۱۲۔ ظ) ہے۔ ہبر حال ہمارے حساب میں غایت سے غایت تین دن رمضان کے باتی
ہیں۔ ان تین دنوں میں جو پچھ کرنا ہو کر لو اور اپنی مغفرت کر الو۔ جس کا طریقہ بیہ کہ گن ہوں
سے تو ہر کر لو چاہے عید کے بعد ہی ٹوٹ جائے گر خدا کے لئے اس دفت تو عمر بھر کے لئے تو ہر کر لینا
سانہ ہو کہ تو ہہ شی صدلگا دو کہ دمضان تک کیلئے تو ہر کرتے جیں کہ اس سے تو ہر باطل ہو جائے گی۔
ایسانہ ہو کہ تو ہہ باطل ہو جائے گر خدا ہے گئیں ہاں بیضرور ہے کہ تو ہہ کے وقت عمر بھر
تو ہہ کی صحت کے لئے میتو ضرور نہیں کہ وہ عمر بھر ٹوٹے ہی نہیں ہاں بیضرور ہے کہ تو ہہ کے وقت عر بھر

اس سے یہ جھی معلوم ہوا کہ اس حدیث کی وعید سے بیخے کا طریقہ صرف ہیں کہ دمضان میں گناہوں سے پختہ تو بہ کرنی جائے اور توبہ کھی مشکل نہیں بہت آسان ہے ہیں نے اس لئے کہ دویا کہ شاید کوئی حدیث کے ترجمہ سے یہ بھھا ہو کہ دمضان میں مغفرت حاصل کرنے کا طریقہ یہ کہ دویا کہ شاید کوئی حدیث کے ترجمہ سے یہ بھھا ہو کہ دمضان میں مغفرت حاصل کرنے کا طریقہ یہ لازم یہ کہ دوات بھر جا گنا پڑے گا۔ یا تین دن میں قرآن ختم کرنا پڑے گا۔ سوخوب بجھ لوکہ یہ لازم تبیس یہ تو مستحب ہیں۔ لازم صرف یہ ہے کہ گزشتہ گنا ہوں سے تو بہ کرلواور دمضان بحرمعاص سے تربیس یہ تو مستحب ہیں۔ لازم صرف یہ ہے کہ گزشتہ گنا ہوں سے تو بہ کرلواور دمضان بحرمعاص سے دکھیں اس حدیث کی وعید سے بی وائے۔

ہاں نصائل عاصل کرنا چا ہوتواس کے لئے شب بیداری کی بھی ضرورت ہے لیاۃ القدر کا ایک کل باقی ہے لیاۃ القدر کا ایک کی بھی ضرورت ہے لیاۃ القدر کے متعلق حدیث میں ہاتی ہے بعن حو مہا فقد حوم المنحیو کلہ۔ ''جوشب قدرے محروم دہاوہ بڑی خیرے محروم رہا'' مگریہ عصیان نہیں صرف حرم ن ہے۔ اس لئے اس حدیث ہے میرے پہنے کلام پر نقص وارو نہیں ہوتا۔ جہاں میں نے کہا تھا۔ کرخم انف رجل اسلخ رمضان ولم یغفر لدی وعیدے نکتے کے لئے شب بیداری کی ضرورت نہیں بلکہ حدیث من حرمها فقد حرم الخیر کلہ سے صرف اتنا معلوم ہوا کہ جرمان بلکہ سے نہیں بلکہ حدیث من حرمها فقد حرم الخیر کلہ سے صرف اتنا معلوم ہوا کہ جرمان اللہ سے نہیں کہا تھا۔ کرفم ورت ہے اوروہ بھی تمام رات کے جاگئے پرموتوف نہیں بلکہ اکثر لیس کی بیداری سے بھی حرمان رفع ہوج تا ہے۔ بلکہ بعض احدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ عشاء اکثر لیس کی بیداری سے بھی حرمان رفع ہوج تا ہے۔ بلکہ بعض احدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ عشاء

اور صبح کی نماز جماعت سے پڑھ بینا بھی شب بیداری کے برابر ہے تو اس سے بھی حرمان رفع ہوج ئے گا۔ لیجئے اب تو دونو ل حدیثول کی وعید سے بچنا آسان ہو گیا۔ بس اب میں ختم کرتا ہول۔

خلاصه بيان

خلاصہ پھر عرض کرتا ہوں کہ رمضان کا جتنا حصہ باقی ہے اس کو نمنیمت سمجھنا چاہیے اوراس میں اپنی مغفرت کا سمامان کر لینا چاہیے۔ دعا سیجئے کہ اللہ تعالیٰ ہم کوئو فیق عمل عطافر ما کیں۔ آمین۔

وصلى الله على سيدنا ومولانا محمد وعلى اله واصحابه اجمعين واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.

ضميمه

بعد میں نماز کے وجودی اور شاق ہونے اور دوزہ کے عدمی اور سہل ہونے
کی ایک تا سیفر وع فقیہ ہے جمی وہن میں آئی۔ وہ یہ کہ اگر نماز میں کوئی
فعل مفد صلوۃ نسیان سے صاور ہوجائے تو نماز فاسد ہوجاتی ہے اور اگر
روزہ میں کوئی فعل نسیا فاہوجائے تو روزہ فاسد نہیں ہوتا۔ اور اس کی وجہ بہی
لکھی ہے کہ نماز کی ہیئت فہ کر ہے اس لئے نسیان عذر نہیں اور دوزہ کی
ایک فہ کر نہیں اسلئے نسیان عذر ہے۔ اور ظاہر ہے کہ فہ کر ہوتا ہیئت نماز کا
بیجہ اس کے وجودی ہونے کے ہاور فہ کرنہ ہوتا صوم کا بوجہ اس کے عدمی
ہونے کے ہاور وجودیت کے لئے شاق ہوتا اور عدمی کے لئے سہل
ہونا لوازم طبیعہ سے ہے۔ نیز اگر صوم اپنی حقیقت میں شاق ہوتا تو اس
کاشاق ہوتا ہی فہ کر ہونے کیلئے کافی تھا اور لازم منتمی ہے۔ پس ملز وم یعنی
مشقت ماغتار رافق تھ بھی منتمی ہے۔

التهذيب

مجاہدہ قیام رمضان کے متعلق یہ وعظ ۲۹ شعبان ۱۳۳۳ه ها بروز جمعہ جامع مسجد تھانہ بھون میں بیٹے کرساڑ سے تین گھنٹہ میں بیان فرمایا۔ حاضری قریباً ۲۰۰متمی۔ محمد عبداللہ گنگوہی صاحب نے قاممبند فرمایا۔

خطبه ما ثوره

المست بحرالله الرحمن الرَحيم

اَلْحَمُدُ لِلَّهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغُفِرُهُ وَنُوْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُودُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورٍ اَنْفُسِنَا وَمَنْ سَيِّنَاتِ اَعُمَالِنَا مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلاَ مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُصْلِلُهُ فَلاَهَادِى لَهُ وَنَشْهَدُ اَنَ لَاإِلَهُ إِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لَا شَيْطُ لَهُ وَمَنْ يُصُلِلُهُ فَلاَهَادِى لَهُ وَنَشْهَدُ اَنْ اللَّهُ اللللّهُ اللَّهُ الللللّهُ اللللْمُ الللللّهُ اللللللّهُ الللللّهُ الللللّهُ اللللللللّهُ الللللّ

تزكيه كے معنی

میددوآ یتیں ہیں سورہ وافقس کی۔ان آیوں میں جناب باری تعالی نے فضیلت بیان فرمائی ہے تزکید فضیلت بیان فرمائی ہے تزکید فضر کی اور فرمت فرمائی ہے اس کے اہمال کی اور تزکید نہ کرنے کی ۔ تزکید چونکہ لفظ مشہور ہے اس لئے میں نے بھی لفظ تزکید ہی استعال کی ۔ تزکید فخت میں کہتے ہیں میل کچیل ہے کسی شے کوصاف کر لینے کو اور مید فاہر ہے کہ جیسی شے ہوگ اس طرح کاس کا تزکیہ ہوگا۔ مثل کپڑا یا برتن بالمان اگر آلودہ نجاست ومیل کچیل ہے تواس کا تزکیہ بہی ہے کہ پانی سے اس کی تظہیر و تنظیف کرلی جائے اور مکان میں اگر کوڑا کرکٹ جمع ہے تواس کا تزکیہ میہ ہے کہ اس میں جماز ووی جائے ۔ غرض اجس شم کی شے ہے وید ہی اس کا تزکیہ ہوگا اور فلا ہری گندگی سے پاک کرنا تزکیہ فا ہری ہوگا۔

تزكيه باطني

باطنی تجاست سے صفائی کرنا تزکیہ باطنی ہوگا۔ ہر چند کہ آیت میں معنی عام بھی لے سکتے ہیں کی نے سکتے میں کی کے سکتے میں کی کی نے کہ تزکیہ خواہ اس کو میں کو کہ تزکیہ خواہ اس کو میں کے کہ جن و مدلول ہے۔ سمجھا جائے کہ جزومدلول ہے۔

وجاس میری تخصیص کی ہے ہے کہ تزکیہ ظاہری کی طرف سے اس قدر بے التفاتی نہیں ہے جس قدر کہ لوگوں کو تزکیہ باطنی ہے ہے۔ اس لئے کہ جن چیز وں سے تزکیہ ظاہری کا تعلق ہے ان میں سے بعض سے بچنا طبعی امر ہے اور بعض سے شرقی مثلاً قارورات سے اپنے بدن یا کپڑے کی جس کے اس کے کہ ان چیز وں سے بچواور بعض نجاست وہ جیں کہ ان کو بچانا امرطبعی ہے۔ یہاں طبع کا اقتضا ہے کہ ان چیز وں سے بچواور بعض نجاست وہ جیں کہ ان کوشر بعت نے نجاست قرار دیا ہے۔ جیسے منی نگلنے سے تمام بدن کا تزکیہ کرایا ہے اور چیض ونفاس کوشر بعت نے نجاست قرار دیا ہے۔ جیسے منی نگلنے سے تمام بدن کا تزکیہ کرایا ہے اور چیض ونفاس سے بھی تمام بدن دھلوایا ہے۔ بہر حال تزکیہ ظاہری خواہ طبیعت کی وجہ سے یا شریعت کے ابتاع سے بواس کا اہتمام اور اس کی ضرورت کوسب مسلم ان تسلیم کرتے ہیں اور جائے جیں اور ان سے بحق کا اہتمام اور اس کی ضرورت کوسب مسلم ان تسلیم کرتے ہیں اور جائے جیں اور ان سے میکے کا اہتمام بھی کرتے ہیں۔

بخل ف تزكیه باطنی کے کیعض تواس کی ضرورت ہی کوشلیم نہیں کرتے اور جو کرتے ہیں وواس کی طرف سے بالثقاتی کرتے ہیں۔ ایسے افراد تو بہت پائے جائیں گے جوشراب ہے بچیں گے بیٹاب سے محتر زہوں گے۔ اگر کہیں چھینٹ لکنے کا احمال بھی ہوگا تو تمام کپڑا ہی دھوڈ الیس کے لیکن ایسے بہت کم ہیں کدان کا تقوی اکل وشرب میں بھی پایا جا تا ہو۔ چنا نچر شوت کا مال کھا جا کیں گے۔ مودکی بچھے برواہ بیں کریں گے۔ قرض لے کرنہ دینے کوریاست کا جزو جھیں گے۔

ہاں ظاہری وضع درست کرلیں گے۔ واڑھی لمبی ہے پا جامہ پخنوں ہوتی اور جن امور ہیں اتھیاء ہیں شار ہوکر اعتبار بردھ جائے۔ اور نیز اس ہیں نفس کو بھی کلفت نہیں ہوتی اور جن امور ہیں نفس کو مشقت ہوتی ہوتی ہے ہوتی دہا تا یا نفس کو مشقت ہوتی ہے بھیے کسی کی زمین والی ہوئی ہے اس کو چھوڑ ویتا۔ رہن کی آمدنی شد کھا تا یا جن امور ہیں جا وکی کو ستایا تفا۔ اس سے خطا معاف کراتا ایسے جن امور کا بچر بھی اہتمام نہیں۔ تزکید کی میشم ایقاع میں بہت کیل ہے بہت کم افراد کو اس کا اجتمام ہے اور ان میں ہے جن کا معصیت ہوتا۔ بہت مشہور اور طاہر ہے جن کا معصیت ہوتا۔ بہت مشہور اور طاہر سے بھی بچر متعلق ہے۔ باتی جو تزکید غیر مشہور اور محض متعلق باطن کے ہاس کا کسی ورجہ اور طاہر سے بھی بچر متعلق ہوت کے ہاس کا کسی ورجہ

من بھی اہتمام ہیں ہے الاماش ء اللہ!

حاصل بیہ کے نجاسات باطند سے بچنا بیز کید باطنی ہے اورای کوآیت کا مدلول قرار دیتا ہوں۔ مزد کیدنشس

چنانچ جناب باری عزاسمہ ارشاد قرماتے ہیں قدافلح من ذکھا ، پینی بے شک کامیاب ہوا وہ شخص جس نے نفس کو پاک کرلیا اور نامراد ہوا وہ جس نے اس کو ٹی میں ملادیا۔ اول بیان کیا گیا تھا کہ جس شم کی شے ہوگی ای طرح کا اس کا تزکیہ ہوگا۔ پس نفس کا پاک کرنا پانی ہے نہ ہوگا اور نیز ظاہری نجاست سے بچنا بھی مراد نہیں اس لئے کہ خمیر نفس کی طرف راجع ہے اور نفس پائی ہے پاک نہیں ہوتا۔ ہاں اس معنی کو یائی موثر ہوسکتا ہے کہ تطہیر ظاہری لیعنی بدن دھونے کا اثر نفس پر ہوتا ہے۔

چنانچہ اہام غزائی نے اس کی تصریح کی ہے اور گودلیل اس پر قائم نہیں کی گروہ اس کا مشاہدہ کراتے ہیں کہ دیکھو جب آ دمی شمل کرتا ہے یا وضو کرتا ہے۔ تو باطن میں ایک ایسانشراح اور شکفتگی یا تا ہے جو پہلے نہیں تھی۔ ایک ون ایسا لو کہ یا نچوں نمازیں اس میں وضو کر کے پڑھی ہوں اور دوسرادن ایسالو کہ ایک وضو سے سب نمازیں پڑھی ہوں۔ پہلے دن میں زیادہ نور اور انشراح اور شکفتگی یا نیگا اور دوسرے میں ایک شم کی پڑھر دگی اور نور کی کی دیکھے گا۔

اور لیجے !استنجا کرنے کے بعداور وضو سے پہلے باطن میں ایک خاص حالت ہوتی ہے کہ وہ نہ نور ہوگا استنجا کرنے کہ ایک نور ہوگا نہ نور ہوگا نہ نور ہوگا اور وضو کے بعد غور سیجے کہ ایک نور ہوگا اور طبعیت تازہ ہوگی اور کسل اور کدورت بالکل دور ہوجاتی ہے۔

ایک اور بات ای وقت مجھ میں آئی۔ وہ یہ ب کہ حضور صلی القد عدیہ وسلم نے جوفر مایا ہے کہ
وضو سے گناہ دھلتے ہیں تو عجب نہیں ہے کہ بدانشراح اور نور جووضو کے بعد ہرموس کو محسوس ہوتا ہے
یہ کا اثر ہے۔ اس لئے کہ گناہ سے ظلمت، کدورت اور نیا بی کا قلب پر ہوجا نا تو حدیث سے
معسوم ہوتا بی ہے چنانچ حضور صلی القد علیہ وسلم نے فرہ یہ ہے کہ جب آ وی گناہ کرتا ہے تو اس کے
قلب پرایک و صبہ سیاہ لگ جاتا ہے حتی کہ گناہ کرتے کرتے سیابی قلب کو محیط ہوجاتی ہے۔ پس
جب کہ گناہ سے ظلمت ہوتی ہے تو وضو سے گناہ معاف ہو کراس ظلمت میں کی ہوتی ہے اس لئے
اس کا حساس ہوتا ہے اور اس کی خبر دی گئی ہے کہ وضو سے گناہ دھلتے ہیں۔

اعمال شرعيه كي خاصيت

اس مقام پر تنبید کیلئے ایک بات ضروری یادآئی ہے۔ وہ مید کہ بعض مرتبہ آ دمی تواضع میں آ کر کہتا ہے کہ جماری کیا نماز ، کیاروز واورا پنے ان اعمال کو حقیر سمجھتا ہے۔ کہتا تو ہے میدتواضع کے لئے۔ لیکن بعض اوقات میہ بات ججو دنعت کی طرف مفعنی ہوجاتی ہے۔

یادر کھوجس قدرتم ہیر تے ہوئی گفت ہے۔ اس پرشکر کرنا چاہیے اور آگے وہمت کرنا چاہیے۔
ہم تواس کے بھی ستحق نہ تھے۔ اللہ تعالی ایسے ہی وضوا درایس ہی نماز کی تو فیق دے۔ یہ بھی ان کا فضل ہے ان شاء اللہ حق تدی ہے اللہ تعالی کے بہاں اعمال قدر کے ساتھ دیکھے جا کیں گے اور مرا تب عمیانہ ہمی عذاب جہنم سے توان شاء اللہ امید ہے کہ تجات ہوجائے گی۔ مرا تب علیا تو بڑے لوگوں کومبارک ہوں۔ ہم تو بخداس پرداضی ہیں کہ ہم کومزا سے خلاصی ہوجائے۔ یس ان اعمال کو تقیر نہ بھی اچاہیے۔
گو بخدااس پرداضی ہیں کہ ہم کومزا سے خلاصی ہوجائے۔ یس ان اعمال کو تقیر نہ بھی اچاہیے۔

بہت ہے لوگ ہی انتظار میں ہیں کہ تماز جب پڑھیں گے جب کے حضور قلب ہوگا۔ ہم

کیانم زیزهیں۔دل تو ہمارے دنیا کے بھیڑے بھررہے ہیں۔ جب قلب پاک وصاف ہوگا اس وقت نماز پڑھیں گے۔

توفيق نعمت

تو کیسی مصیبت تھی۔ بہرحال بینماز روز ہ بھی حق تعالیٰ کی بڑی نعمت ہے اگر تھوڑا سر بھی ضوص ہوگا تو نجات کے لئے کافی ہے جیسے نفقات کے مثل میں اللّٰہ تعالیٰ نے بیان فر ما یا کہ شہنم ہی کافی ہے۔

اب یہال پر بیشبہ وگا کہ جب اپنی نماز کوکائی اور بہل سمجھا تو بیتو کبرہے بات بیب کرا یک مسورت سے کبرنہ وگا۔ دہ بید کرانے کوقت ہے کو ایک مسورت سے کبرنہ وگا۔ دہ بید کرانے کوقت ہے کو ایک کوقت کے میں اس فعمت کے قابل زقیہ اور نماز کو بے قدر نہ جانے گئیں بیسمجھے کہ میں ایک نماز کے بھی قابل نہ تھا۔ اس کی تو فیق موجانا یہ بھی میر کی مقدار ہے کہیں ذیادہ ہے اس طور ہے شکر اور تو اضع دونوں جمع بوجا کمیں گے۔

اس کی الیی مثال ہے جیسے کی کونہایت بھوک لگ رہی ہواور کہیں ہے کچھ نہ ماتا ہواورا تفاق ہے کے نہ ماتا ہواورا تفاق سے کی نے روکھی روٹی ویڈی ویڈو دواس کا بہت ممنون ہوگا۔اس کی قدر کریگالیکن اس کو دومروں کی منعقوں پلاؤ زردے ہے کم بھی بہتے گا اور ساتھ ہی ہی سمجھے گا کہ میرے لئے تو یہی پلااؤ وقورمہ ہے اگر ریکھی شہوتی تو ہلاک ہی ہوجا تا۔

غرض حضور صلی انتدعلیہ وسلم کے اس ارشاد ہے کہ وضو سے گناہ و <u>صلتے ہیں</u>۔ بیہ معلوم ہوا کہ طاعات کے درمیان بیرخاصہ ہے کہ اس ہے تزکیہ نفس ہوتا ہے۔

دعویٰ کی ممانعت

تو اس اعتبار سے طہارت ظاہرہ ہے بھی نفس کا تزکیہ ہوتا ہے کیونکہ اولاً جسم کا تزکیہ ہو اور بواسط اس کے نفس کا اور ای طرح دیگر اعمال ہے بھی تزکیہ نفس کا ہوتا ہے کو بواسط سمی۔ اور تزکیہ بلاواسط مرادلیا جائے تو آیت میں صرف تزکیہ باطنی مراد ہوگا۔

سیر حال آیت کا مدلول عام لیاجائے یا خاص گرمیر امقصود یہاں پر وہ انک ل ہیں جن ہے تزکید بلا واسطہ ہوتا ہے۔

تی شرائی شبہ کوبھی وقع کر تامنا سب معلوم ہوتا ہے اگر چیشہ عامیانہ ہے لیکن آج کل مصیبت یہ ہے کہ ہر خص مجہد ہے اگر تر جمہ اردوقر آن وحدیث کے دیکھنے کا شوق ہے یہ شوق تو برانہیں لیکن ہرکام کی تد ہیر ہوتی ہے اور قاعدہ دنیا میں یہ ہے کہ ہرکام کا ایک استاد ہوتا ہے۔ بہتر یہ ہے کہ کس استاد ہے یہ ترجمہ پڑھیں اپنی رائے کودخل شددیں۔ شبہ یہ ہے کہ حق تعالی نے بہتر یہ کہ کس استاد سے یہ ترجمہ پڑھیں اپنی رائے کودخل شددیں۔ شبہ یہ ہے کہ حق تعالی نے بہال تو تزکید کی فضیلت بیان فر مائی ہے اورایک مقدم برارشاد ہے فلا تو کو الف کم (اپنے نفول کو پاک مت مجمو) تو بظاہر یہاں ترکیہ سے تی ہے تو اس سے اردو ترجمہ دیکھنے والے نفول کو پاک مت مجمو) تو بظاہر یہاں ترکیہ سے تی ہے تو اس سے اردو ترجمہ دیکھنے والے

کو جب کہ اس کو علم نہ ہو تحت حیرانی ہوتی ہے کہ میرکیا بات ہے۔

بات سے کے تزکیہ کے دومعنی آئے ہیں۔ پاک کردن و پاک گفتن جہاں فضیلت بیان فرمائی ہے وہاں تومعنی اول مراد ہیں اور جہ ں نہی ہے وہاں معنی ٹانی۔ اس لئے کہ باب تفعیل کا خاصہ یہ بھی ہے کہ ما خذکوا بی طرف منسوب کرنا۔ پس جہاں نہی ہے وہاں یہی من مراو ہے حاصل یہ ہے کشس کو پاک تو کر ولیکن اس کرنے کے بعداس کو پاک مت کہواور نا پاک مجھو۔

خلاصه بيب كدكروارى تاكيد باور گفتار تحذير ب

کار کن کار بگذر از گفتار ہے کا ندریں راہ کارباید کار (کام کروکام صرف باتیں کرنا چھوڑ دو،اس راستہ میں کام کرنا ہی منزل پر پہنچا تا ہے)

حضرت شیخ شیرازی فرماتے ہیں۔

قدم باید اندرطریقت نه دم این که اصلے ندارد دی بے قدم (طریقت میں قدم رکھنا مفید ہے صرف باتیں کرنا کارآ مربیں ہے)

نرے دعوے سے چھی ہیں ہوتا۔ کام کرنا جاہیے۔ ایک بزرگ وحدۃ الوجود کے بارہ

میں قرماتے ہیں _

مفرور تخن مشو کہ توحید خدائی ہے واحد ویدن بودنہ واحد گفتن (لفظوں میں اندگی وحدانیت کا ظہار کر کے مغرور نہ ہوجا واس لئے کہ ہر چیز ہیں اندگی وحدانیت کا ظہار کر کے مغرور نہ ہوجا واس لئے کہ ہر چیز ہیں اندگی وحدانیت کا مشاہدہ کرنا ہی حقیقت وحدانیت بند کہ صرف زبان سے واحد کہنا)

یعنی وحدۃ الوجود واحد دیدن ہے واحد گفتن نہیں ہے بیمی توحید ہمعنی وحدۃ الوجود وہ ایک حالت ہے وہ کوئی مضمون علمی نہیں ہے جس پر وہ حالت گزرتی ہے وہ اس کا مشاہدہ کرتا ہے پس عرض فلا تزکو الفسکم (اپنے نفول کو پاک مت سمجھو) میں دعوی کرنے کی ممانعت کی گئی عرض فلا تزکو الفسکم (اپنے نفول کو پاک مت سمجھو) میں دعوی کرنے کی ممانعت کی گئی ہے چنانچ قریداس کا یہ ہے کہ اس کے بعد فریاتے ہیں ہو اعلم بمن اتقی (وہ نوب جانا ہے کہ وات تو اعلم نفرہ تے پس وعوی کی ممانعت ہے۔ کہون تم ہوتے تو اعلم نفرہ تے پس وعوی کی ممانعت ہے۔ واتی اگر معلوم ہوگا کہ جس ورجہ کی بھی پاکی حاصل کر ہے تی تعالی کی درگاہ واتی آئی کسی طرح نہیں ہوگتے۔ یہاں تک کہ جو طاعات زبان سے اوا ہوتے ہیں اور ظاہر ہے کہ ربان ایسی چیز ہے کہ اس ہے ہم جو چا ہیں اور جس قدر چا ہیں عمل ہوسکتا ہے لیکن حق تعالی کے وہ

حقوق بھی ادائبیں ہوتے اور جوری تو کیا ہستی ہے سیدالحامدین خودارش دفر ، تے ہیں۔ لاحصی ثناء عليك انت كمااثنيت على نفسك (بس آپ كى تعريف كا اعاطنيس كرسك يس آپ کی وہی تعریف ہے جوآب نے خود کی ہے)

اے برتر از خیال وقیاس و کمان و دہم 🖈 زہر چہ گفتہ اندوشنیدیم وخواندہ ایم وفتر تمام كشت وبيايال رسيد عمر المنهجال وراول وصف تومانده ايم (اےالقدآ پ خیال وقیاس و گمان اور وہم ہے برتر ہیں اور جو پچھ لوگوں نے بیان کیا اور جو کچھ ہم نے سنااور پڑھا ہےاں ہے آپ برتر ہیں دفتر تمام ہو گیااور عمرانتہا کو پہنچ گئی ہم اليے يہلے بى وصف رہے ہيں۔)

اورایک بزرگ کہتے ہیں۔

نه گردوقطع ہرگز جادہ عشق از دوید نہا 🚓 کہی بالد بہخودایں راہ چوں تاک از بریدنہا (تیز دوڑنے سے عشق کامیدان ختم نہیں ہو کیااس لئے تواس کو جتناقطع کرے گا۔ بیا تنابڑھے گا)

مسافت معرفت

میں نے اس مقام میں کلام کواس سے طول زیادہ دیا ہے کہ آجکل نوگ کچھ ذکر وشغل کر ہے اپنے كوعارف ادرشاغل سبحصته بين حالانكه بيراه بوراتجهي بهمي قطع نهيس هوتا بيرختنا زياده قطع كروا تناعي زياده بزهتا ہاور بظاہر بیخلاف عقل معلوم ہوتا ہے۔اس لئے کہ کی داہ کو جتناقطع کرتے ہیں وہ تو گھٹا کرتا ہے بات بدہے کہ جس قدر معرفت بڑھتی ہے نظر سیح ہوتی جاتی ہاور تن تعدلی کے حقوق اور عظمت كامشامده زياده موتا ہے اوراس كے لئے . زم ہے كما پنا عجز اوركوتا بى بھى ساتھ ساتھ بردھے ـ پس سالک کی جس قدر معرفت بڑھے گی اس کو یہ معلوم ہوگا کہ بیں بیچ در بیچ ہوں۔اور میں نے راستہ کا ایک قدم بھی طے بیس کیاا درخدا تعالی کا ایک حق بھی ادانہیں کیا۔اگرخدا تع کی اینے حقوق کا مطالبہ کرنے لگیس تو کہیں ٹھکا نہیں ۔اس سے کہ حقوق تو ہم ادا کر بی نہیں سکتے اس واسطے اس کا مواخذ ہینہ ہوگا کہ ہمارے حقوق بورے كيون نبيس ادا كئے بلكديكم جائے گا كدادائے حقوق بيس كيون نبيس كئے۔

مدادنجات

ا یک بات جمله معتر ضد کے طور براور دیکھو کہ اس مقام برعقل تو ادائے تام حقوق کا فتو کی دیق ل مسند أحمد ٢: ٥٨، إتحاف السادة المتقبن للربيدي ٢: ١٥ ہاور حقوق کا ادائے تام ممکن نہیں تو یہ آپ کی عقل جس پر آپ کونا زہے آپ کو مجرم بنا نا جا ہتی ہے اگر شریعت نہ ہوتی جو کہ ادائے حقوق میں لگ جانے پر کفایت کرتی ہے اور عقل ہی پر مدار ہوتا توسب ہلاک ہوجائے کیکن حق تعالی نے رحمت فر مائی اور مدار کا رعقل پڑئیں رکھا۔

چنانچ فرماتے ہیں جناب رسول الله علیہ وسلم کہ سی مخص کواسی کے عمل سے نہات نہ ہوگ ۔ بلکہ رحمت سے ہوگ ۔ حضرت عائشہ رضی القد عنہا نے عرض کیا کہ یار سول الله اولا الله ایس یعنی یارسول الله ایس کہ ہوگ ۔ قال ولا انا الا ان یتغملہ فی الله ہو حصله "فرمایا جھ کو بھی نجات نہ ہوگ ۔ مگر یہ کہ اللہ ہو حصله "فرمایا جھ کو بھی نجات نہ ہوگ ۔ مگر یہ کہ اللہ تعالیٰ جھ کواپئی رحمت سے ڈھانپ للله ہو حصله "فرمایا جھ کو بھی نجات نہ ہوگ ۔ مگر یہ کہ اللہ تعالیٰ جھ کواپئی رحمت سے مل نہیں ہوسکا۔ لے۔ "اور وجہ اس کی یہ ہے کہ تن تعالیٰ کی شان کے موافق ممکن الوجود خص سے عمل نہیں ہوسکا۔ خواہ نبی ہویا ولی اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم بھی انسان ہیں الہیں ہیں۔ ہاں انسان کامل بلکہ اکمل الکا ملین ہیں ۔ اس انسان کامل بلکہ اکمل الکا ملین ہیں ۔ اس انسان کامل بلکہ اکمل الکا ملین ہیں ۔ اس انسان کامل کا بجات دینے والانہیں (اور بعض آیات سے جومعلوم ہوتا ہے کہ جنت اعمال کا بدلہ ہے تو اس کو بدلہ اور جز اینانا میں رحمت ہے۔ سا جامع)۔

تو و کیموا ہم نے عقل کو وکیل بنایا تھا۔ گر حاکم حقیق نے اس کی وکا لت کوہیں قبول کیا اور اس ہیرسڑ کی بکواس کور دکر دیا اور بی فرمایا کہ اگر ہم تمہارے ہیرسٹر کی تقریر پر فیصلہ کریں گے تو تم سب مقدمہ میں ناکا میاب ہو کر جیل خانہ میں رہو کے لہٰذا ہم اس کی تقریر نہیں سنتے اور اپنے مراہم خسر وانہ ہے تم کو خلاصہ بخشتے ہیں یعنی ہم اس کوئیں دیکھتے کہ تم نے ہمارے حقوق اوا بھی کئے۔ خسر وانہ ہے تم کو خلاصہ بخشتے ہیں یعنی ہم اس کوئیں دیکھتے کہ تم نے ہمارے حقوق اوا بھی کئے۔ ہاں ہم اس کا ضرور انتظار کریں کے کہ حقوق کے اندر مشغول بھی ہے یا نہیں ۔ اس لئے ارشاو ہے موا علم بیمن اتقی یعنی یہاں تم اپ کو پاک نہ کہو۔ پاک اور متی کا عم تو اند تعالی کو ہے کہ کون ہے ۔ واللہ تم واللہ ایک اگر انسان کو اپنی قدر اور حیثیت کا انداز واور سی علم ہوجائے تو یہ کہتے ہوئے ہی شرم آئے کہ انا موجود چہ جائیکہ یہ کہے انا گذا و انا گذا حق تعالی کی قدرت اور عظمت چونکہ پیش نظر نہیں ہے اس لئے یہ سب کے سب دعوے ہیں۔

تحقيقات جديده اورطاعون

تحقیقات جدیدہ سے نابت ہوا ہے کہ ایک قطرہ پانی میں خورد بین کے ذریعے سے معلوم ہوا ہے کہ اس قدر کیڑے ہیں جس قدر کہ تمام دنیا کے آ دمی ۔ اور چلتے ہیں ، پھرتے ہیں کھاتے ہیں ۔ اور چلتے ہیں ، پھرتے ہیں کھاتے ہیں ۔ اور جلتے ہیں ، پھرتے ہیں کھاتے ہیں ۔ اور جلتے ہیں ، پھرتے ہیں کھاتے ہیں ۔ اور جلتے ہیں ، پھرتے ہیں کھاتے ہیں ۔

اوران میں آئی، ناک ،مند، پیراد ماغ_سب کھے ہے اللہ اکبر!

اس مضمون کا تمتہ ہو کہ اس کے ایز او سے مقصود ہے آگے آگے گا۔ گر در میان میں ایک مقید مضمون اس کے متعنق یاد آسیا۔ اس کو پہلے عرض کئے و بتا ہوں کہ در یجھوا یک قطرہ میں استے کیڑے ہیں اور پھروہ قطرے آپ ہے جی جی ضدا تعالیٰ ہی می فظت کرتے ہیں۔ خبر بھی نہیں کہ ہم کیا گھاتے ہیں کیا ہی جی فظت کرتے ہیں۔ خبر بھی نہیں کہ ہم کیا گھاتے ہیں کیا ہی جی جی سے جی مواجس کا نتیجہ سے ہوا کہ واکٹر وں نے بید ہو کک ویا کہ بیطا عون ان کیڑوں کی وجہ سے جہ بپ پی فراب ہو تا ہے تو ان کیڑوں کی وجہ سے ہے جب پی فی خراب ہو تا ہے تو ان میں ہمی ہمی کا بھی آ میں اور چونکہ خدا تعالیٰ کے ساتھ جسیا گمان میں ہمی ہمی ہوا تا ہے۔ ممکن ہے کہ جب ان کیڑوں میں طاعون کا خیال بندھا تو انشد تعیل کی خیال بندھا تو انشد تعیل نے بھی طاعون اس جی پیدا کردیا۔ ورشدان تحقیقات سے پہلے ندھا عون تھا نہ کھو تھا۔

مجھ کواس پرایک حدیث یادآئی۔ جڑب رسول امتد علیدوسلم ایک بیاری عیادت کیلئے تشریف لے گئے۔ ویکھا کراس کو بخار ہے فرمایا لاباس طہو د الشا الله تعالی یعنی پھے حرج نہیں۔ یہ بخارتم ہارے حق میں مطہرے۔

ابقدا کبراعیاوت کاحق بھی حضور صلی ابقد علیہ وسلم سے زیادہ اداکر نے والاکون ہوگا۔ عید دت کی غرض اصلی تسلیہ ہاور تسلی اس سے بڑھ کر کیا ہوگا۔ کہ جس شے کودہ ضربہ بھتا ہوائ کوحضور سلی الله علیہ وسم نفع کے افراد میں داخل کر دیں۔ یہ توا سے تسلی ہے کہ طبیعت میں اس قدر تسلی اس سے ہوئی علیہ وسم نفع کے افراد میں داخل کر دیں۔ یہ توا سے تسلی ہے کہ طبیعت میں اس قدر تسلی اس سے ہوئی چاہیے کہ مرض بھی ندر ہے لیکن اس تسلیہ کی اس بچہ رئے قدر ندکی وہ ایک ضعیف الایمان بڑھا تھ کہتا ہوئے ہوئے کہ مرض بھی ندر ہے لیکن اس تسلیہ کی اس بچہ رئے قدر ندکی وہ ایک ضعیف الایمان بڑھا تھ کہتا ہوئے ہوئے کہ کہتا ہوئے ہوئے ہوئے ہوئے ہوئے ہوئے ہوئے کہتا ہوئے ہیں ہی ہے کہ کا فرمایا اچھا یوں بی سمی ۔ چنا نیے وہ بڑھا تھی میں ختم ہوگیا۔

غرض! تم کواگر طاعون پہند ہے تو طاعون بھی موجود ہے اوراگر شفا چ ہے ہوتو شفا بھی موجود ہے۔ صاحبوا حق تعالی ہے مال موجود ہے۔ صاحبوا حق تعالی ہے ما فیت اورامن مانگنا جا ہے اور یہی گمان بھی رکھنا جا ہے ہال اگراس کے بعد بھی کھمت البید ابتلا ہوج کے تو صبر کرنا جا ہے بعض لوگ بہت بے صبر ہوتے میں اور مصیبت میں ایسے کلمات بول اشھتے ہیں کدا کیان تک نوبت پہنچ جاتی ہے۔ ہاں جوائقہ والے ہیں وہ ایسے مواقع میں بھی مستقل رہے ہیں۔

ل الصحيح ليخاري ٩،١٥٢:٢،٢٣٦.٣ • ١٤ مشكوة المصابيح ١٥٢٩٠

چن نچدایک بزرگ نے دیکھا ہے کہ لوگ بی گے جارہے ہیں کی سے پوچھا کہ کہاں جارہے ہیں کی سے پوچھا کہ کہاں جارہے ہیں کہا کہ طاعون سے بھاگ رہے ہیں ۔ تو آپ فر ماتے ہیں یاطاعون خدنی الیک لینی اے طاعون تو بھے کو اس کے بول کہتے ہیں ۔ لینی اے طاعون تو بھے کو اس کے بیل کے لینی اے طاعون تو بھے کو کہا کہ تیفت میں کہ تو دستوں سلامت کہ تو دخجر آز مائی دخمن کا این کھی نصیب شہوکہ میری تھوا رہے ہلاک ہوجائے دوستوں کا سرمیری خجرآز مائی کیلئے سلامت ہے۔ وہتم کا ایش

الحاصل طاعون کا سب مور کیڑے وغیرہ پہنیں۔ یہ ض وہم ہے اگرایا ہوتا تو جولوگ طاعو نیوں سے سے سے سے بطر ہے ہیں ان کوطاعون ضرور ہوتا چاہیے تھا۔ حالانکہ بہتوں کو باوجودان کی تمنا کے بھی نہیں ہوتا۔

کا نیور میں میر ہے بعض دوستوں نے طاعون کے ایام میں التزام کرلیا تھا کہ ہم جتلا یان طاعون کی خدمت کریں گے۔ چنا نچانہوں نے اول سے آخر تک تجہیر وتکفین وقد فین سب پھھ کی خدمت کریں گے۔ چنا نچانہوں نے اول سے آخر تک تجہیر وتکفین وقد فین سب پھھ کی ندموئے۔ اجھے خاصے اب بھی موجود ہیں بیزاوہم ہے۔ وہم سوار ہوجا تا کیا لیکن وہ بیارتک بھی شہوئے۔ اس کا غلبہ ہوتا ہے تو واقعی اثر بھی ہوجا تا ہے۔

جمارے است دمولا نافر ماتے ہے کہ دبلی بیں ایک ڈوم تھا۔ رمضان المبارک کے دنوں بیں مسجد میں قرآن سا کرتا تھا۔ مومن خال شاعر ہے اس نے کہا کہ خال صاحب جب قرآن میں وہ سورۃ آئے جومردوں پر پڑھی جاتی ہے۔ مجھ کوایک روز پہلے اطلاع کرو بچئے گا۔ بیس اس روز نہ آئا ور کر دول تا ہوگئاں ہے کہا کہ بڑے میال دہ سورۃ تو آپکی فورااس کو بخار چڑھ آیا اور کر دول کی طرح گھر جا کر لیٹ رہا ورالیا وہ مسوار ہوا کہ تبیسرے دن مرکبا۔

قاری عبدالتدصاحب کی نقل فر ، تے تھے کہ یہاں ایک سال عالبا جاورہ کے رئیس جج کرنے کیا تھے۔

کیلئے آئے تھے۔ اتف ق ہے ان کی بی بی کو ہیفند پڑا۔ نئی نئی شادی کی تھی بی بی کوچ بہتے تھے۔

نواب صاحب کو بے انتہا گھبرا ہے ہوئی حتی کہ ای خم میں ان کی روح تحمیل ہوگئی۔ اور بیوی صاحب اچھی خاصی ہوگئیں۔ ظہر کے وقت تواب صاحب کا جن زہ حرم میں آیا۔ ہم کوافسوس ہوا کہ مریضہ مرکئیں۔ نواب صاحب کو کیسارنج ہوگا تحقیق کی تو معلوم ہوا کہ نواب صاحب کا جن زہ ہے۔

اسی واسطے شریعت نے بیاری کے تکنے میں بہت اچھا فیصلہ کیا ہے کہ جب خدا تھا تی جے تیں اسی واسطے شریعت نے بیاری کے تکنے میں بہت اچھا فیصلہ کیا ہے کہ جب خدا تھا تی جے تیں

ای واسطے شریعت نے بہاری کے تکنے میں بہت اچھافیصلہ کیا ہے کہ جب خداتع الی ج ہے ہیں نه رک کئی ہے جب نہیں جاہتے نہیں لگتی اور اس طرح تمام اسباب کے متعلق شریعت کا یہی فیصلہ ہے کہ

پانی غرق نہیں کرسکتا۔ ہوااڑا نہیں علی ۔ طاعون کچھنبیں کرسکتا جب تک کہان کا حکم نہ ہو۔ وحد **ۃ الوج**و د

الحاصل! من سيان کرر ہاتھا کہ سیخیق ہوا ہے کہ ایک قطرہ پائی میں کروڑوں جراثیم ہیں۔
اب آپ و کھے ہیں کہ اس ایک قطرہ پائی کو انسان سے کیا نسبت ہے۔ پھراس ایک قطرہ پائی میں جوجراثیم ہیں ان میں سے ایک کیڑے کو کھے کہ کیا نسبت ہے وہ کیڑ ااگر یوں کہے کہ میں انسان کی خدمت کروں گا تو خدمت کرنا تو علیحہ ہے ہاس کا بیہ مقولہ من کرہی ہے انتہا ہنی آئیگی اور پالفرض! اگروہ پچھ خدمت کرے مثلاً پاؤں ویائے تو پچھ بھی خبر نہ ہوگی۔ بس وہ کیڑا محال ہے کہ انسان کا کوئی حق اوراگراس پروہ انسان کے مقابلہ انسان کا کوئی حق اوا کر سکے۔ یا کی درجہ میں اس کونع پہنچا سکے اوراگراس پروہ انسان کے مقابلہ میں کوئی رائے لگائے یا تحقیقات اور علوم وصالح کا بھی دعوی کرے تو وہ گو کرد سینے کے قابل ہے۔ میں جونبیت ہم کواس کیڑے ہے والقد العظیم ہم کو بلکہ تمام کوحق تعالیٰ جل جلالا ہے ہوں اس قدر بھی نبیس نبیس ہیں آپ کا یہ دعویٰ کرنا کہ بھی بڑاصاف ہوں پاک ہوں۔ ایسا ہی ہو اورایہ بلکہ اس سے یڑھرکر ہے جیسے وہ کیڑا انسان کے مقابلہ میں یوں کیے کہ بیس ایسا پٹیکدار بھوں اورایہ خوب صورت ہوں۔ اگروہ انسان کود کھے لے تو وابقہ! اس سے بھی شرائے کہ یوں کہے کہ میں ایسا پٹیکدار بھوں اورایہ خوب صورت ہوں۔ اگروہ انسان کود کھے لے تو وابقہ! سے میں شرائے کہ یوں کیے کہ میں ایسا پٹیکدار بھوں اورایہ خوب صورت ہوں۔ اگروہ انسان کود کھے لے تو وابقہ! اس سے بھی شرائے کہ یوں کہے کہ میں اورایہ خوب صورت ہوں۔ اگروہ انسان کی یہی کیفیت ہوئی۔

ایک بزرگ بیٹھے تھے۔ان کوایک شخص پنگھا تھل رہاتھا۔اوروہ نع کرتے تھے اور کہتے تھے کہ میرے ساتھ کیوں شنح کرتے ہو۔تھوڑی دہر کے بعداج زت دیدی لوگوں نے بوجھا کہ حضرت یہ کیا ہات تھی ۔فر مایا کہ اس وقت مجھ پر اضمحد ل وجودی انکشاف ہوا۔ مجھ کونہایت شرم

معلوم ہوئی اور میں اپنی نظر میں لائے عض ہو گیا۔

بعض بزرگ جواپی خدمت ہے تع کرتے ہیں تم تو یہ بھتے ہوکہ یہ تنگ مزاج ہیں تم کوکیا خبر ہے۔ان برکیا گزرتی ہے ۔

اے تراخارے بہاشکسۃ کے دانی کہ چیست جی حال شیرانے کہ شمشیر بلا ہر مر خورند (اے دہ شخص کہ جس کا ایک کا نئے ہے پاؤں تک زخی نہیں ہوا تو اس شخص کے حال کو کی سے کھاتے ہیں) سمجھ سکتا ہے کہ جو ہد وُں کی تکواریں اپنے سروں پر کھاتے ہیں)

تم توان کواپنے اوپر قیاس کرتے ہوجالانکہ ان کی دوسری حالت ہے _

در نی بدحال پخته بیج خام ایم اسلام کا بیر سخن کوتاه بایدو السلام (خام پخته کے حال کوئیں سمجھ سکتا، بات مختصر چاہیے طویل کلام ہے کیا فی کدہ والسلام)

پس کاملین کو ہرگز اپنے او پر قیاس نہ کرنا چاہی۔ چن نچہ جن بزرگوں پر اضمحلال وجود اور فنا کی حاست ہوتی ہے۔ ان کی سے کیفیت ہوتی ہے کہ وہ اپنے کو کا فرتک سے بدتر بجھتے ہیں۔ دعا کرتے ہوئے اور نمرز پڑھتے ہوئے ان کوشرم آتی ہے گرتھم سے کرتے ہیں۔ای حالت کی نبعت شیخ شیرازی فرماتے ہیں۔

ہمد ہر چہ ہستند ازاں کمتر اند ﷺ کہ بارستیش نام ہستی برند (ان کا جو پکھ وجود نظر آتا ہے وہ اس سے حقیر تر میں کہ القد تعالی کی ہستی کے ساتھ اپنے وجود کا نام لئے پھرتے ہیں)

یک حاست ہے جس کا نام وحدۃ الوجود ہے۔ حق تعالیٰ کی ہستی الیمان کو پیش نظر ہوتی ہے کر اپنی ہستی کو مناہوا پائے جی ۔ اوراس طرح مث جاتے ہیں جیسے آفتاب کے سامنے چراغ کہ اس کو باعتبار ذات کے ہست کہ سکتے ہیں اور آفتاب کے نور کے سامنے اس کو نیست بھی کہا جاسک ہے۔ حضرت عارف شیرازی بہت واضح مثال میں اس کو بیان فرماتے ہیں۔

گردیدہ بائی کہ درباغ وراغ ﷺ بنابہ بشب کرکے چوں چراغ کے گفتش اے کرک شب فروز ﷺ چہ بودت کہ بیروں نیائی بروز بیٹ گائشیں کرک شب فاک زاد ﷺ جواب ازمر روشنائی چہ داد کہ من روزوشب بڑ بصحرا نیم ﷺ وے بیش خورشید پیدانیم

(بغ میں پھرتے ہوئے دیکھ کہ جَنواۃ وال میں سامنے کیوں نہیں آتا۔ و کھواس منی میں دہنے اس استے کیوں نہیں آتا۔ و کھواس منی میں دہنے والے جگنواۃ وال میں سامنے کیوں نہیں آتا۔ و کھواس منی میں دہنے والے جگنو نے اپنی چک دمک کے بارے میں کیا جواب دیا کہ میں تو شب وروز صحرای میں رہتا ہول کیکن سورج کے سامنے میری روشنی نظر بی نہیں آتی)
شخ اکبرای مقام کی تبعت قرماتے ہیں۔

والله ماشمت الكائنات رائحة الوجود

' ویعنی خدا کی شم ہے کہ کا کتا ت کا لم نے وجود کی ہوتک نہیں سوتھی ہے'۔ پس جب کہ ہماری ہستی ایک ہے بود ہے توعقلی طور سے سمجھ میں آ سمیا کہ ہم کو یا کیزگی کا وعوی کرنا کہاں تک زیب ویتا ہے۔ بس اس تقریر پر لا تنز کو الفسسکم اور قدافلع من زکھا۔ میں کوئی تعارض ندر ہااور شہد دفع ہوگیا۔

امالمعاصي

میں یہ بیان کررہاتھا کہ جھے کو مقصود بالبیان تقس کا تزکیہ ہے معاصی ہے۔خواہ وہ معاصی فاہری ہوں یاباطنی ۔ اور ہر چند کہ معاصی بہت ہے ہیں سیکن منشان سب کا صرف دو چیزیں جیں۔ اول شہوت یالذت ۔ دوسرے کبریا فضب۔ یہ دومادہ خبیشہ ہیں کہ جن ہے تمام معاصی بیدا ہوتے ہیں۔ بہن تفس کوا سباب شہوت و کبرے بچانا حاصل تزکیہ کا ہے۔شریعت نے ان بی دومادول کا طرح طرح ہے معالجہ کیا ہے معالجہ کی دو تصبیل ہیں۔ معالجہ تصلی اور معالجہ اجمالی لیکن معالجہ معالم کر تا ہے۔ جسے طبیب نے چندا جزاء ہے ایک نے لکھ کرویا۔ معالجہ تعدد ہیں کیکن حاصل ان کا مثلاً صفراکا قمع کرنا ایک ہے۔

شریعت نے دونوں سم کے معالیے سے جیں۔ دیکھو بی اسرائیل کو حب مال اور حب جاہ حق کے اتباع سے سدراہ ہوئی۔ حق تعالی نے دونوں کا معالجہ تفصیلی فرہ یہ ہے۔ چنا نچہ ارش د ہے۔ واقیمو الصلواۃ۔ یہ تو حب جاہ کا معالجہ ہے۔ واتو الزکوۃ۔ یہ حب ال کا علاج ہے۔ وار کعوا مع الراکعین۔ جو ترب ہے اقیموا الصلوۃ کا۔ یہ کبر کے زائل ہونے کی تذہیر ہے۔ حق تعالیٰ نے جابج جو مجاہدات بیان فرمائے ہیں سب کا صل ان ہی دوخصلتوں سے تزکیہ ہے۔ میں ای کی شرح کرنا جا ہت ہوں اورای سے اعمال رمضان کی صکمتیں اور روح معموم ہوج کیں

گے۔اور بیمعنوم ہوگا کہ جہارار مضان در حقیقت بری طرح سے گزرتا ہے۔ کلا فی تفق کی

بہت توانقد کے بندے ایسے ہیں کہ ان کے گھر رمضان آتا ہی نہیں نہ دن کو نہ رات کو یعنی نہ مناز پڑھتے ہیں اور نہ روز ہ رکھتے ہیں اور بعض کے یہاں دن کوتو آتا ہے لیکن رات کونہیں آتا یعنی ماز ور حاتے ہیں اور دن کوبھی جو آتا ہے تو بعض کے آثار کے اعتبار ہے آتا ہے یعنی کھانا مہنا تو جھوڑ دیتے ہیں لیکن جس شے کا چھوڑ نا ہر اصر وری تھا لیعنی معاصی ان کونہیں چھوڑ تے۔

صاحبوا غضب کی بات ہے کہ جوشے پینی کھاٹا چینا کہ فی نفسہ مہاج ہے دن کوبھی اور رات کو بھی اور رات کو بھی اور رات کو بھی اور رمغہ ور کے لئے دن کوبھی جائز ہے جب کہ شارع نے اس کو ما و مہارک میں چھڑا دیا تو معاصی جو کہ کسی وقت اور کسی حالت میں کسی عذر سے جائز ہی نہیں وہ کیسے مرکب کے قابل شہوں گے اور ان کے ترک کا اہتمام کیوں نہ ذیا وہ کیا جائے گا۔ افسوی تو ہے کہ کھاٹا چینا تو چھوڑ دیا لیکن گناہ نہ چھوڑ ہے۔

ہ رے اس تقویٰ کی ایسی مثال ہے جیسے کسی مختص نے بدکاری کی اور ممل رو گیا۔ کسی نے کہا کہ کم بخت تو نے عزل نہ کرلیا۔ کہنے لگا کہ میں نے عماء سناتھ کہ مکروہ ہے۔ تو زناجو کہ حرام قطعی ہے اس کے ارتکاب میں تو باک نہیں کی اور عزل میں آپ کوتقوی پڑمل ہوا۔

ایسا ہی ہماراتقوئی ہے ایسے تقوئی کوتقوئی کلائی کہتے ہیں اور وجہ تسمیہ بیہ ہے کہ کہا جب پہیٹا ب کرتا ہے تو ٹا نگ اٹھ کر کسی دیوار پر کرویتا ہے کہ ایسانہ ہو جھے کو چھینٹ لگ جائے لیکن اگر کہیں بلیدی پا تا ہے اور مندکوئیس بچاتا۔

ایک گوار خورت کی حکایت مشہور ہے کہ اس سے کسی نے پوچھا کہ تیرامیاں کہاں گی تو شرم کی وجہ سے مندسے تو بولی نہیں لبنگا اٹھ کراور پیشا ب کر کاس کو بھا ندگئی مطلب بیتھا کہ دریا پار گیا ہے۔
وجہ سے مندسے تو بولی نہیں لبنگا اٹھ کراور پیشا ب کر کاس کو بھا ندگئی مطلب بیتھا کہ دریا پار گیا ہے۔
ہم اس خورت کی جمافت پر جنتے ہیں کہ اچھی شرم آئی۔ بولنے کی تو شرم کی اور خنگے ہوتے ہوئے شرم ندآئی ۔ لیکن ہم سب اس بلا ہیں بتا، ہیں۔ گوروز وہیں معمولی کھا نا کھایا بیا نہیں لیکن مردہ مسلمان کا گوشت کھایا تھی خوب اس بلا ہیں فتا اور تاش اور تبخیا اور جھوئی دست، پر دستہ خوب جلایا۔ زبان کو تھوں سے نہیں جلایا لیکن مسممانوں کو ہرا کہنے اور سب اور سب اور سب کھی جلایا لیکن مسممانوں کو ہرا کہنے اور سب

وشتم اور جھوٹی کواہی ویے سے اس کونیس روکا۔

اے صاحبوا یہ کیسا تقوی ہے یہ کیساروز ہے یہ کسی و بنداری ہے اگر یہی دین وایمان ہے تو بتسما یامر کم به ایمانکم ان گنتم مؤمنین.

تفريق وتنفير

در حقیقت ہم نے روز ہ کے معنی اور غرض ہی نہیں تیجی ۔ روز ہی اصلی غرض تھی کسر توت بہیمیہ کے واسطے سے معاصی سے ہم عین روز ہ کی حالت میں بھی نہ بچے واسطے سے معاصی سے ہم عین روز ہ کی حالت میں بھی نہ بچے تو بعد میں وہ غرض اور غایت اس پر کہیے مرتب ہو سکتی ہے۔

حضور صلی امتدعلیہ وسلم فرماتے ہیں کہ جس شخص کو اس کا روزہ جھوٹ ہولئے سے ندرو کے امتد تعالیٰ کوکوئی حاجت نہیں کہ وہ اپنا کھا تا پوئی جھوڑ ہے۔ یہ مطلب نہیں کہ جوجھوٹ سے بچتا ہے اس کے کہ ان کی شمان تو ان الملہ لغنی عن المعلمین۔ بلکہ مقصود تا راضی اور تا خوشی طام کر کرتا ہے ہیں جن کے میہاں رمضان المبارک دن کو اس شمان سے آتا مہم سے معلود تا راضی اور تا خوشی طام کر کرتا ہے ہیں جن کے میہاں رمضان المبارک دن کو اس شمان سے آتا ہے۔ سویہ کیا آتا ہے۔ ہاں رو بیدیش سے آنہ ہے اور رات کو تو بعجوبی مت رات کو تو شاذ و تا ور میں کی کے میہاں آتے ہیں اس لئے کہ جوعبادت رمضان المبارک کی را توں میں مقرر کی گئی ہے اس کے حقوق آدا کرنے والے بہت کم لوگ ہیں۔ عموم آبو جو سا ٹالے ہیں۔

چنانچر راوی کی دہ گئے ہی ہے کہ النی تو بد سب سے اول یہ کوشش ہوتی ہے کہ اذان سب سے عشاء کہی جائے۔ چنانچ بعض مساجد میں تو عشاء کی اذان رمضان میں مغرب کے وقت ہوتی ہے عشاء کا وقت آتا بھی نہیں۔ اگر مہی بات ہے تو مغرب ہی کے وقت فارغ ہولی کریں۔ کہیں تو پہتم ہے کہ اذان ہی ہوتت آتا بھی نہیں۔ اگر مہی بات ہے تو مغرب ہی کے وقت فارغ ہولی کریں۔ کہیں تو پہتم ہے کہ اذان ہی ہوتا ہے ہوتی ہوتی ہے اور کہیں اس سے برو ہو کر رہ ہے کہ فرض بھی عشاء سے پہنے ہی ہوجاتے ہیں۔ اور کہیں صرف اذان ہوتا ہوتی ہوتی ہے اور جفس ان کے مقابل بیزیادتی کرتے ہیں کہ وہ تا خیر کے دلدادہ ہیں۔ موف اور مقالہ کی رہ کے اور مقالہ کی رہ کا رہے موجود ہیں۔ تا ہی رہ زیادہ تر رہ کہا کہ مسجد وال میں موف اور مقالہ کی رہ کے اور مقالہ کی رہ کے اور مقالہ کی رہ کے اور مقالہ کی رہ کیا ہے موجود ہیں۔

روز ہ افطار کیا اور سور ہے اور مقتری بچارے سو کھ رہے ہیں بیزیادہ تر رؤسا کی مسجدوں میں ہوتا ہے کہ وہ رئیس ہیں ان کے ڈریے کوئی بولٹانبیس جب تشریف لاتے ہیں اس وقت نمی زبوتی ہے۔ یا در کھواس ہے تفریق و تعفیر ہوتی ہے۔

امام كافرض

صدیث شریف میں قصدآیا ہے کہ حضرت معاذبن جبل رضی متدعندایک مسجد میں ۱، م ستھے

اہ ال حضور صلی القد عدید وسلم کے یہ ان غل کی نیت سے شریک ہوتے پھروہاں جا کرنی از پڑھایا کرتے ہے ایک مرتبہ عشاء کی نماز پڑھائے کے لئے گئے تو سورہ بقرہ شروع کردی۔ ایک محد دار غریب دن بھر کی محنت مشقت سے تعظیم ہوئے شعے وہ جماعت سے عبحدہ ہوگرا پی نماز پڑھ کر چید گئے۔ اس وقت بیس جماعت کے ساتھ شریک نہ ہون نفال کی ملامت تمجھاجا تا تھا۔

حضرت معاذبین جبل رضی القدعنہ نے ان کو برا بھوا کہا۔ شن کو مید مقد مدآ پ صلی القدعنہ وسلم کے حضور میں پیش ہوا۔ ان اعن بی نے حضرت معاذکی شکایت کی کہ یار سول القد صلی القد عنہ وسلم مزدوری پیشر لوگ جیں دن بھر تو مزدوری محنت کرتے ہیں اور رات کو یہ سورہ بقرہ شروع کرد ہے جیں حضور صلی القد عدید وسلم نے حضرت معاذر میں القد عنہ پر عماب فرہ بایا اور فرہایا۔ افتان الت بیل حضور صلی القد عدید وسلم نے حضرت معاذر میں القد عنہ پر عماب فرہ بایا اور فرہایا۔ افتان الت بیامعانہ کیسی المعانہ کے ایکن ارب معاذ! کی تعظرت معاذرات کو اسے ہو۔

بلکہ فقہاء نے تو یہاں تک مکھا ہے کہ اگر کسی جگہ دمض ن بیس نمی زی ایک قرآن ہی سننے سے

اکٹ سے ہوں تو وہاں تر اور کی الم مو کیف سے پڑھ لیس بعض حفاظ ایساستم ڈھائے ہیں کہ

یا نج پارے پڑھ جاتے ہیں۔ان حفاظ کوس کل جانے کی شخت ضرورت ہے بعض حافظ بہت

جائل ہوتے ہیں بجب نہیں بکہ غالب ہے کہ بجدہ مہو کے مسائل کی بھی ان کو خبر نہ ہو۔

یعضے تا بالغوں کو تر اور کے ہیں امام بن دیتے ہیں۔ نا بالغ کے بیجھے تر اور کے پڑے ہیں اختلاف

ہے۔ متار اور مفتی ہے کہ تا جائز ہے اور ہیں تو یہ کہتا ہوں کہ جو بالغ تمیز دار نہ ہواور مسائل

را و مسند أحمد ۲۹۹۰ و کر العمال: ۲۲۹۲۵ و المصنف لاین آبی شیبة : ۱ : ۳۵۹

ے واقفیت نہ رکھتا ہواک کوبھی اوم بن نامناسب نہیں۔ اوام یا توعالم ہو یا موہ کا صحبت یافتہ ہونا جا ہے۔ ادرا کر بیدونوں امر نہ ہوں تو وہ ضرور نماز کوخراب کریگا۔

جھے نوداییا موقع چین آیا ہے گرمیوں کے رمضان تھے۔ جس اورایک میراسا مع تھا۔ ہم وونوں ایک مجد جس آ دھا پارہ گھسیٹا۔ دونوں ایک مجد جس قر آن سننے کیلئے گئے۔ ان حافظ صاحب نے ایک رکعت جس آ دھا پارہ گھسیٹا۔ ان کویا و تور ہائیں کہ ایک رکعت ہوئی یادو وہ ایک ہی رکعت پر بیٹھ گئے۔ مقندی بچارے تھک ہوئے جا نہوں نے نئیست مجھا یا یو دندر ہا ہو۔ کس نے نہ ہلایا۔ جس نے اپنے سامع ہے کہ کہ مشریک ہوکر ہما دولیکن انہوں نے جلدی سے سلام پھیردیا۔ جس نے پکارکر کہا کہ حضرت ایک مرکعت ہوئی ہے اعادہ کرواور یہ قر آن جوتم نے پڑھا ہے اس کا بھی امادہ کرلو۔ اس وقت امام اور مقتد ہوئی ہے اعادہ کرواور یہ قرآن جوتم نے پڑھا ہے اس کا بھی امادہ کرلو۔ اس وقت امام اور مقتد ہوئی ہی ناور کی بھیردیا۔

ان حفی ظ کی ایک بیجی عادت ہے کہ اول کی رکعتوں میں بہت کھیٹیتے ہیں اور آخر کی رکعتوں میں دودو تین تین آبیت کھیٹیتے ہیں۔ یا در کھو کہ سب رکعتیں اور سجدہ اور رکوع متناسب ہونے جا ہمیں۔

صدیث شریف میں حضور صلی انتدعلیہ وسلم کی نماز کے بارہ میں آیا ہے کان رسول الله صلی الله علیه وسلم قریباً من السوآء یعنی حضور صلی انتدعیہ وسلم کی نماز معتدل ہوتی تھی اگر قیام طویل ہوتا تھا۔

اب لوگ اس کے برعکس کرتے ہیں کہ قیام طویل کرتے ہیں اور سجدہ ورکوع قعدہ نہایت ہی مختصر۔ اس زونہ میں تو بس تمام نم زمختصر پڑھنا چاہیے۔ اس واسطے میں شبینہ کوہمی پہند نہیں کرتا۔ پہلے لوگ قوی ہوتے تھے اور نیز ان کوشوق بہت تھا۔

اب توبیرحالت ہے کہ ایک جگہ شبینہ ہور ہاتھ۔ ایک حافظ چار بائی پر لیٹے ہوئے ہتلارہے تھے۔ سب کی نمی زیناہ ہور ہی تھی ۔ س کی ہمت ہوخود پڑھو۔ یو گوں کو کیوں وق کرتے ہو۔ آج کل لوگ اس کا بالکل خیال نہیں کرتے۔

کانپور میں ایک بزرگ تشریف لئے۔ کہنے گلے کہ تماز جمعہ کی ہم پڑھا تیں گے۔اوروہ خطبہ پڑھیں کے جوحضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اول قد دم مدینہ میں پڑھا تھا چنا نچے انہوں نے ایک بزالمہا خطبہ پڑھا۔ خطبہ کے بعد تمازشروع ہوئی توانہوں نے سورہ کہف شروع کی۔ گرمیوں

ن لم أحد الحديث في "موسوعة أطراف الحديث السوى الشريف"

کا موسم اور پھرمبحدا یک کہاس میں ہوا کا گزرنہیں۔ایک شخص کوتوقے ہوگئی۔اورایک شخص نیت تو ژکر بھاگ گئے اور کہا کہای واسطےتو ہم مبحد میں نماز پڑھنے نہیں آتے۔

ہمارے تھانہ بھون میں ایک شخص تھے وہ نمازنہ پڑھا کرتے تھے ایک مرتبہ میرے ساتھ ان کوسٹر کا اتفاق ہوا۔ راستہ میں عصر کی نماز کا وقت آیا۔ میں نے ان کوتو کچھ کہانہیں۔ میں لوٹا لے کوفٹو کرنے کیلئے گیا۔ ویکھ انہوں کروضو کرنے کیلئے گیا۔ ویکھ انہوں کہ میرے ساتھ انہوں نے تماز پڑھی چھڑکی روز میرے ساتھ رہے اور برابر نماز پڑھتے رہے کہنے لگے مجھے اگر ایسا ہام سطے تو میں نمازنہ چھوڑ وں میری نمازوں کی ترک کا بوجھ توان اماموں کی گرون پرہے جو لمبی رکھتیں بڑھ کرگرانی پیدا کروہے ہیں۔

حفاظ اورائمه كافرض

اے حفاظ اور اے امامو! اپنے مقتد ہوں کود کیے لوکہ کیے ہیں۔ اگر واقعی ان کوقر آن سنے کا شوق ہوتو سیحان اللہ! قرآن زیادہ پڑھو۔ قرآن توجس قدر بھی زیادہ ہو باعث تورانیت ہے اور اگر دیکھوکہ شوق نہیں ہے جیسا آجکل ہے تو بس سوا پارہ اچھی مقدار ہے اور بہتر یہ ہے کہ پندرہ پارہ تک تو سوا سواپڑھو اور پھرا کی ایک بارہ کردو۔ کا کوشم ہوجائے گا اور سب رکعتیں برابر برابر پڑھو۔ دیکھوتم کو ہر شے کے اندر تناسب اور حسن اچھا معلوم ہوتا ہے نماز تو احت ہے ساتھ کہ اس کو حسین کرو۔ فاؤد علیہ السلام لوہ کی ذر ہیں بناتے شے ان کوحق تعالی نے تھم فر مایان اعمل اسابغات و قد دفی المسود۔ یعنی اے داؤد! پوری پوری زر ہیں بناؤاور اس کے بناتے ہیں انداز رکھویعنی کریاں بڑی چھوٹی نہ ہوں۔ جب کہ لوہ کی زر ہول کے اندر تناسب کا تھم ہے تو اے صاحبو! گار تو بہت بڑی شے ہاس میں تناسب کیول نہ مامور ہوگا۔ اگرتم میں بیر عایت تناسب طبعی نہ ہوتو ذکر اللہ کی کشرت کیا کرو۔ اس سے طبیعت میں نفاست اور اعتدال پہندی پیدا ہو جائے گ

حفرت مرزامظہرجان جاناں اگر کوئی بدنما مکان ویکھتے ہتے تو سرمیں درو ہو جاتا تھا۔ مرزاصا حب کی لطافت مزاج کی بہت حکایتیں ہیں ایک حکایت مجھ کواس وقت یادآئی۔ایک شخص مرزاصا حب کے یہاں آیا کرتے تھے وہ کھانا بہت کھاتے تھے۔ایک بارانہوں نے خودعرض کیا کہ مجھے کو دکی تھکم دیجئے۔ بہت اصرار کے بغدم زیسا حب نے ان کوفر مایا کر آپ ایک سال میں صرف ایک مرتبہ آیا کریں اس لئے کہ جب آپ کھاتے ہیں جھے کوتمہارے زیدہ کھانے کا تصور ہوکر تفلّ ہوجا تا ہے۔ تو جھے کومسبل لینے کی ضرورت ہوجاتی ہے تو سال میں ایک مسبل کا تخل ہوسکتا ہے دو سے تکلیف ہوتی ہے۔

ای طرح ہم نے اپ حضرات کودیکھ ہے کہ نہایت نفاست اور تناسب ہر شے کے اتدرید در کرتے ہیں اور رازاس میں یہ ہے کہ صدیث شریف میں آیا ہے ان الله جمیل ویحب الجمال (ب شک اللہ تعالی جمیل ہیں جمال کو پہند کرتے ہیں) اور یہ حضرات موصوف ہوتے ہیں صفات حق سے سال کے ان کو بھی جمال کو پہند کرتے ہیں) اور یہ حضرات موصوف ہوتے ہیں صفات حق سے سال کے ان کو بھی جمال لیعنی تناسب (نہ کہ صورت پرتی) ہرشے میں پہندیدہ ہوتا ہے۔ صدیث شریف میں ہے نظفوا افسین کم والا تشبہوا بالیہ ود اللہ اللہ ود اللہ کا ایک کھروں

کے حن کوصاف رکھا کرواور میود کے مشابہ مت بنو۔'

یہوداکٹر میے کیلے رہا کرتے تھے۔حضور سلی اللہ علیہ وسلم نے ایک مرتبہ ایک شخص کودیکھا کہ پریشان بال اور میلا کچیلا ہے۔ آپ سلی ابتد عبیہ وسلم نے اس حالت پرا نکار فر ماکر کنگھی اور تیل سے بالوں کے درست کرنے کا تھم فر مایا۔ کوئی تواضع نہیں ہے کہ آدی میلا کچیلا رہا کرے اور نہ ایک زینت پہندیدہ ہے کہ ہروفت نواب اور نیگم بنار ہے۔

ایک شخص کوہم نے دیکھا ہے کہ بہت ہی ہے شخص رہتے تھے اگروہ گھر میں ہوتے تھے اور کوئی ان کو بلاتا تھا تو اول آئینہ کتکھا منگاتے تھے۔ بالوں میں کنگھا کرتے تھے کی کئی مرتبہ آئینہ دیکھتے تھے۔غرض کم از کم ۱۵منٹ میں وہ دولت خانہ ہے برآ مرہوتے تھے۔

بعض أو جوانوں کو پی نے ویکھا ہوں کے گرمیوں میں بھی جرابیں پہنتے ہیں۔ یاال یورپ کی تقلید بست بہتر سیجھتے کے دولوگ سرد ملکوں کے رہنے والے ہیں اس لئے اس کے مناسب ان کی وضع ہے۔ تم بھی اول اپنے گھروں میں سردی پیدا کرواس کو تشمیر بناؤ اس کے بعد جرابیں پہنوتو مضا کہ نہیں ۔ گرمیوں میں جرابیں پہنوتو مضا کہ نہیں۔ گرمیوں میں جرابیں پہننے سے تو معلوم ہوتا ہے کہ ان نوگوں کے دماغوں میں خلل ضرور آگیا ہے ۔غرض زروایس فرین کی ضرورت ہے اور نداس قدر میلے کہلے بنوتو سط اور تناسب ہرشے میں بہتر ہے۔

خرابیوں کی جڑ

ليج جماعت كاندر تناسب كالحكم ب كرصف سيدهى بورورميان ميل جكدن جهور ورمين توبيد المن الترمادي: ١٠١

کہت ہوں کے شریعت کا کوئی تھم ایس نہیں کہ جس میں تناسب محوظ نہ ہو۔ جب تناسب ہرامر میں ، مور بہ ہے تو نماز کے اندر کیوں نہ ہوگا۔ بس تر اور کے اور غیر تر اور کے ہرنماز میں تناسب کی رعایت رکھو۔
عرض رات کورمض ن اکثر ول کے بیبال نہیں ، تا اور اس تمام خرابی کا منش رمضان کے اسرار اور اس کی روح کا نہ جاننا ہے اس لئے ضرور کی ہوا کہ تر کید کے متعلق مضمون بیان کیا جائے کہ اس کے ضرور کی معلوم ہوں گی ۔ پس جاننا جا ہے کہ منشا تمام تر معاصی اور خرابیوں کا دو چر میں ہیں۔

اور خرابیوں کا دو چر میں ہیں۔

اول بذت بس کوشہوت بھی کہہ سکتے ہیں دوسر ہے کہر جس کوئٹیمت سے بھی تعییر کر سکتے ہیں۔

ید دونوں جز ہیں تمام مفاسد کی ۔ پس ان دونوں سے تزکیفس کا بینی ان کی تعدیل ضرور ک ہے شریعت نے ان ہی دومرضوں سے تزکیہ کیا ہے ۔ اور تمام احکام ان ہی کے متعلق ہیں اور سبحال ابقدا یک خوبی سے معالجہ فرمایا ہے کہ کوئی تھم ان احکام میں ایسانہیں ہے کہ ہمارے طبعی خدات اور فطری جذبات سے بعید ہو۔ تمام احکام ایسے ہیں کہ ہماری طبیعت انکوتیول کرتی ہے۔

مجابده اورموا دخبيثه

حکماء اشراقیین نے بھی اظافی رؤید ہے تزکیہ کیا ہے لیکن انہوں نے اس کے لئے ایسے سخت مجاہد ہے کئے جیں کہ مرز مانہ میں انسان ان کا متحمل نہیں ہوسکتا۔ ترک لذات کے خاص خاص طریقے مقرر کئے اوران کی عاوت ڈالی اورنفس کومہذب بنایا۔ اور یہ س تک اس میں کمال پیدا کیا کہ آدی کی تصویرہ کیے کر بتلادیا کرتے تھے کہ اس کے اطوار واخلاقی کیا ہو سکتے ہیں۔ چنا نچے کسی اشراقی کے سما منے کسی تھیم کی تصویر چیش کی گئی اس نے ویکھ اور کہا کہ بیٹے تھی زائی ہے ہوگئی اس نے ویکھ اور کہا کہ بیٹے تھی زائی ہے ہوگئی ہو نے بہدویا ویکھ بال کے بیٹے میں بالی سے کہا کہ اب تو جس نے کہدویا ہے خواہ اس کی تصویر ہوگئی ہو جنا نچواہ اس کی تصویر ہوئی کہ ہو جنا نچواہ اس کی تصویر ہوگئی ہو ہے بیٹواہ اس کی تصویر ہو گئی ہو جنا نچواہ اس کے پاس گئے اور اس سے کہا کہ تمہاری نسبت ایس کہ گیا ہے۔ اس نے کہا کہ وقعی اس کا تقاف تو میرے قلب جیس بہت ہے لیکن جس نے مجابدہ ریاضت سے خس کو قابوجیس کرایا ہے صدور بھی نہیں ہوا۔ اس تھ ضابی کا اس کواور اک جوا۔ اس لئے کہ قیا فدے موادی کا اور اک بوسکتا ہے۔ افعال کا اور اک نہیں ہوسکتا۔

یہاں سے میکھی معلوم ہوا کہ مجاہدہ سے مواد خبیثہ بالکلیہ زائل نہیں ہو سکتے۔ بمکہ مغلوب

ہوج تے ہیں۔ سالک کواس میں بڑا دھوکا ہوتا ہے جب اول ذکر کرتا ہے تو غدبہ ذکر ہے مواد مصلحل
ہوجاتے ہیں تو شخص مجھتا ہے کہ میر نے قس میں سے دہ مواد جاتے رہے حافا نکہ وہ موجود ہیں
لیکن چونکہ غدید دوسری شے کا ہے اس سے وہ مدرک نہیں ہوتے اور جب وہ حالت غلبہ کی زائل
ہوجاتی ہے اور پھر ان مواد کا ادراک ہوتا ہے تو اپنی حالت پر بہت افسوس کرتا ہے اور سجھتا ہے کہ
میں مردود ہوگیا ہوں ۔ حالانکہ بیاس کی غنطی تھی وہ کیفیت جوز ائل ہوگئی ہے اس کی مثال تو میج
میں مردود ہوگیا ہوں ۔ حالانکہ بیاس کی غنطی تھی وہ کیفیت جوز ائل ہوگئی ہے اس کی مثال تو میج
کا ذب کی جے اور جو کیفیت اب پیدا ہوئی ہے وہ میج صادق کے مثل ہے ۔ پس جو خص میج
کا ذب کوروشن سمجھے گا وہ میج معادق کی طرف ملتفت ہونے سے پہلے ضرور متاسف ہوگا کہ ہائے!

اے شدہ توضیح کا ذہ رار بین ہے۔ صبح صادق راز کا ذہ بم بہ بیں

آپ نے ویکھا ہوگا کہ درختوں پراول جموٹا پھول آتا ہے پھر بچا پھول آتا ہے وہ مثمر ہوتا

ہے۔ ای طرح ان کیفیات و حالات کا قصہ ہے کہ اول اول غلبہ ہوتا ہے تو سجھتا ہے کہ میرے اندر

سے امراض جاتے رہے۔ اس کے بعد خدبہ جاتا رہتا ہے اور ایک بلکی گر پائیدار کیفیت پیدا ہوتی ہے

حس کی اس کو وقعت نہیں ہوتی اور وہ امراض جن کو بیز اکل سمجھتا ہے مدرک ہوتے ہیں کہ شہوت بھی

ہے۔ خضب بھی ہے، بخل بھی ہے ، حرص بھی ہے لیکن پہلے میں اور اس وقت میں فرق اس قدر ہوتا

ہے کہ بہلے وان کے مقتضا پڑکل کرنے سے بچی نہ سکتا تھا اور اب بعد مجاہدہ کے سہولت نے سکتا ہے۔

ہم کہ بہلے وان کے مقتضا پڑکل کرنے سے بچی نہ سکتا تھا اور اب بعد مجاہدہ کے سہولت نے سکتا ہے۔

ہم کہ بہلے یہ بینے قوان کے مقتضا پڑکل کرنے سے بچی نہ سکتا تھا اور اب بعد مجاہدہ کے سہولت نے سکتا ہے۔

پہلے نفس کوروکتا تھا اور نہ رکتا تھا۔ اور اب رک جاتا ہے بعینہ اس کی مثال شریر گھوڑ ہے گئی ہے کہ سدھانے سے پہلے تو وہ قابو سے باہر ہوجاتا تھا۔ اور سوار کو پٹک (پٹنخ) دیتا تھا اور بعد شائستہ ہوئیکے گوگا ہے شوخی کرتا ہم قد بو سے باہر نہیں ہوتا۔ سوار اس کوجد هر جا بہتا ہے موڑ دیتا ہے چون و چرانہیں کرتا۔ یکی کیفیت نفس کی ہے۔

دوسری شے جس کے تزکیہ کی ضرورت ہے کیرتھی۔ اس کے لئے وہ حکم ، اسبب تذلل کو اختیار کیا کرتے تھے اور اس میں کو اختیار کیا کرتے تھے اور اس کی اعانت کے واسطے خلوت اور ترک اختلاط کرتے تھے اور اس میں بہت مبالغہ کرتے تھے اور اصل مقصود ان کا صرف یہی تہذیب نفس تھا۔ بھی بہت مبالغہ کرتے تھے اور اصل مقصود ان کا صرف یہی تہذیب نفس تھا۔ بشریعت نے بھی ان ہی وو خصدتوں کی تعدیل کی ہے اور اس کے لئے طرق ان حکما ، کے

ترک ہے اسہل اور نفع میں اکمل تجویز کئے ہیں۔ چنانچیترک مذات کیلئے توروز ہمقرر فرمایا جس کی حقیقت ترک اکل وشرب و جماع ہے۔اس لئے کہ امہات لذات یہی تین چیزیں ہیں۔جنتمی لذات ہیں سب کا عاصل بہی ہے ان کوروک ویا گیا۔ اور سجان اللہ! کمیار حمت ہے کہ روز ہ کوعبادت بنادیا۔اوراس پرانعام بھی تجویز فرمایامسہل ہم کوہمارے امراض کے ازالہ کے لئے و یا جائے اوراس پرانعام بھی تجویز فر ، یا۔ پس جب اسباب لذات کومیں دن انسان چھوڑ لگا تونفس کی سرکشی ضرور کم ہوگی۔اور ما وہ عصبیاں کامفعوب ہوجائے گا۔

اوركي رحمت ہے كەمجابدە كے لئے ہمارى عمر كاصرف بار ہواں حصەمقرر فرمايا اور حكماء برسول ترک لذات ہے مجاہدہ کرتے تھے جس کا اثر یہ ہوتا تھا کہ ضعیف الجسم ہوجاتے تھے اورسل ان کی منقطع ہوجاتی تھی اور پھراس میں خو بی بیرکھی کہوہ ایک ماہ بھی ایک ہی موسم میں متعین نہیں رکھا بھی جاڑوں اور بھی گرمیوں میں آتا ہے تا کہ زی اور گرمی ہے سب طرح کے مصالح مرعی ہوں۔ غرض! ایباسهل اورلطیف مجامده اورنفع میں ان کے مجامدات سے کہیں زیادہ کہ سب کام کرتے رہواورمجاہدہ بھی ہوتارہے بجز صاحب وتی کے ادر کسی کی عقل یہاں تک نہیں پہنچ سکتی۔

شرلعت كالمقصود

ا یک اور رعایت عجیب وغریب بیر رکھی ہے کہ روز ہ دن کومقررفر مایا۔ تا کہ مجاہرہ کا فائمدہ حاصل ہو۔اس لئے کہمجام و ما م ترک عادت ہے اور کھانے پینے کی عادت اکثروں کو ہے۔ اگریه می بدو رات کو ہوتا تو خبر بھی نہ ہوتی نہ پچھنس پرشاق ہوتا اورا گرحکماء جوگید کی طرح شب وروز کاروز ہ ہوتا تو ضعیف ہوکر بالکل بیار ہوجاتے اورتو می بیکار ہوجاتے اورشریعت کامقصود قوی شہویے کا زالہ ہیں بلکہ ان کی تعدیل ہے۔

نیز رات کو کھانے پینے کی اجازت دینے میں ایک اور وقتی رہایت ہے وہ بیہ کہال صورت میں مجاہرہ اور مشقت بھی زیادہ ہے کیونکہ بعض لذات کے ایک دم سے چھوڑ دینے میں نفس اس کا خوس ہوجاتا ہے۔ بخلاف حامت موجودہ صوم کے کہاس میں شب کومتلذ ذہونے سے اس کولذت یا در ہتی ہے اور پھرترک کرائی جاتی ہے۔نفس پر بیزیادہ بھاری ہے۔ بیدوہ مجاہدہ ہے کہ جو حکم ء کے باپ کو بھی نہیں سوجھا۔ حکماء نے جو پچھ تجویز کیا تھاوہ بالکل ناتمام تھا شریعت نے اس کی تحیل فرمائی ہے۔ جھے کو کچھ ضرورت اس امر کی نہتی کہ حکماء کی مجاہدات اور تزکیہ کومیں ڈکرکر تا۔ اس لئے کہ شریعت کے مقابلہ میں ان کے خیامات کا تذکرہ ایہا ہی ہے ۔ جیے آفتاب کے سامنے چراغ

کا بلکہ اس سے بھی بدر جہا کم ۔ لیکن وجہان کے مذکرہ کی سے ہوئی کہ آجکل عقس پرست مختوق بہت پیدا ہوئی ہے۔ اس لئے میں دکھلہ تا ہوں کہ روزہ وہ شے ہے کہ جس کی ضرورت کواہم ملیہ نے بھی لتنگیم کیا ہے اور جس شخف نے اس کے راز کو بچھ لیا ہووہ اس سے دوسری جگہ بھی کام لے گا۔ پس جب کہ آپ حضرات نے روزہ کے حکم ومصالح سمجھ لیے تو اب اس کا بہت اہمیں م کرنا چاہیے۔ جوروزہ نہیں رکھتے ان کو جوروزہ نہیں رکھتے ان کو حقوق کی رعایت نہیں رکھتے ان کو حقوق کی رعایت نہیں رکھتے ان کو حقوق کی طرق ہوئے ہے۔ ایک ماہ کے بی اس حقوق کی طرق ہوئے ہوئے ہوئے ہی اور اس کے حال پرنہ چھوڑ تا چاہیے۔ ایک ماہ کے لئے بی اس سے اس کے طرح کام لو کے تو ان شاء اللہ کام کرنے کی عادت ہوجا گئی۔ طرح کام لو کے تو ان شاء اللہ کام کرنے کی عادت ہوجا گئی۔

نفس کی مثال بچہ کی ہے جس طرف اس کولگاؤ لگ جا تاہے _

والفس كالعقل ان تهمله سب على حب الرضاع وان تعظمه ينفظم

(نفس کی مثال بچہ کی ہے۔ اگر دورہ جھوڑاؤئیں چھوڑ ہے گا گرچھڑاؤ کے چھوڑ دے گا)

اس سے کام لے کردیکھو تم ویکھتے ہو کہ استے دنوں سے تم نماز روزہ کرتے ہولین اثر بچھ نہیں۔ آخراس کی وجہ کیا ہے۔ وجہ بی ہے کہ لا پروائی سے کام کرتے ہو۔ بینیت نہیں ہے کہ نفس کو ہم عبدت کاخوگر بناویں۔ اب ایک ماہ بی اس نیت سے کرلو۔ دیکھوٹو کیا اثر ہوتا ہے۔ حق تعالی نے نفقات کے بارہ جس بھی مضمون ارشاد فرمایا ہے ارشاد ہے۔ و مثل المذین یسفقون امو المهم المنت المند و تشبیتا من انفسہ مالمنے (اوران لوگوں کی مثال جوابے مالوں کو خرج ابت فاراس غرض سے کہ اپنے نفوں کو (اس عمل ش ق کا کرنے ہیں اللہ تو تشبیتا من انفسہ مالمنے (اوران لوگوں کی مثال جوابے مالوں کو خرج کرینا ئمیں) مال کے خرج کرینا تمیں کی دووجو ہا۔ ارشاد فرما کھی۔

اول توابتدتونی کی رضامندی کوطلب کرنا۔ دوسر سے اپنے نفس کوئیک کام برجمانا۔
پس اگر جم اپنے ہرکام جس ان دونوں با تول کی شیت رکھیں توان شاءابقد بم کو بیہ کہنے کا موقع شہوگا
کہ جم استے دنوں سے نماز روزہ کرتے جی ،دل پراٹرنہیں ہوتا۔ اوراس کا نفع کودنیا جس بھی ہوگا
اورا خرت کیلئے تو بیا کال صالح پراستفامت حاصل ہوجائے گی۔نفس کے اندر رسوخ پیدا ہوجائیگا۔
جس کی نبست کہا گیا ہے۔ الاستفامت صد فوق الکو احد استفاحة اور ثبات بڑی شے ہے۔
جس کی نبست کہا گیا ہے۔ الاستفامت صد فوق الکو احد استفاحة ادر ثبات بڑی شے جے۔
حضرت عائشہ رضی ابتد عنہا اس کی نبست فر ، تی جیں گان خلقہ القور ان یعنی حضور صلی ابتد

مدييه وسلم كاخلق قرآن تھا بعنی قرآن برغمس كرنا آپ كا فطری امرتھا۔

اس کے بعد بھنا چاہیے کیعف بزرگوں نے لکھ دیا ہے کہ نفع روزہ کااس وقت ہے کہ اورایام

ے کم کھائے ورندروزہ کا کوئی نفع نہیں ۔ حالانکہ کتاب وسنت میں بیضمون کہیں نہیں ماتا۔ اگرروزہ
کا نفع اسی پرموقو نے ہوتا، تو حضور صلی اللہ مدید سلم ضرور کہیں نہیں فرماتے یا قرآن میں کوئی آیت! س
کے متعلق ہوتی۔ بلکہ فرمایہ تو یہ فرمایا۔ کلوا واشو ہوا حتی یتبین لکم المنحیط الابیض من
المخیط الاسود. (اور کھنا واور پواس وقت تکتم کوسفیہ خط (نور) صبح صادق کامتمیز ہوجائے۔)

اس لئے کہ کم کھانا کوئی مجاہدہ نہیں بلکہ روزہ سے جو مجاہدہ ہوتا ہے وہ ترک عاوت کی وجہ سے
اس لئے کہ کم کھانا کوئی مجاہدہ نہیں بلکہ روزہ سے جو مجاہدہ ہوتا ہے وہ ترک عاوت کی وجہ سے
ال یہ ضرور ہے کہ پیٹ سے ذیا وہ نہ کھائے۔

ہے۔ ہاں بیمرورہے کہ پیٹ سے زیادہ ندھا۔ مذل للخالق مذل للخالق

بالخصوص ہمارے زمانہ میں تو کم کھانا مفید کیامضرہ۔ اس لئے کہ تو می ہیں کمز وراور نیز تعلق حبی بھی جن تعالی کے ساتھ مخلوق کواس طرح کانہیں رہا جیسا پہلے تھا۔ اس لئے زیادہ مجاہدہ کرنے میں کئی تشم کی خرابیوں کا ندیشہ ہے اول تو عجب پیدا ہوگا۔ دوسرے میخص اپنے کو ستحق سمجھے گا کہ میں انتا مجاہدہ کرتا ہوں جمھ کو ضرور کچھ مانا جا ہیے۔

تیسر ہے ضعف اس قدر ہوجائے گا کہ فرائض میں ضل آنے کا احتمال ہے کم کھانے اور کم پینے کے اندر قرب منحصر نہیں نفس کو تنگ نہ کر د۔ اس سے کام لو۔ اور بعض بزرگوں نے جوننس کو کا فرکہا ہے۔ سوید کا فرکفر سے نہیں کفران ہے ہے۔ خوب کھا وُ پیواور کا م بھی کر و۔

ووسرار فیلہ تھا کہراس سے جومف سد پیدا ہوتے ہیں۔ اس کا اثر دوسروں تک پہنچہ ہے۔ اس
کا حکماء نے بیعلاج کیا ہے کہ اسب بہ تدلل کوا ختیار کرتے تھے ایسے ایسے طریقے ایج و کئے کہ جس
سے لوگ ان کوچھوڑ ویں ، ذکیل سمجھیں جو گیوں اور بعض صوفی ء اہل اسلام نے بھی اس طریقہ سے
اس مرض کا علاج کی ہے لیکن شریعت نے ہم کواس کے خارف بی تعلیم فرمایا ہے ۔ الا یسبغی
للمو من ان یذل نفسہ یعنی مومن کومن سب نہیں ہے کہ اپنے لفس کو ذکیل کرے یعنی تذلل
للمو من ان یذل نفسہ یعنی مومن کومن سب نہیں ہے کہ اپنے لفس کو ذکیل کرے یعنی تذلل
للمول من ای یا ہے اور تذلل للمخالق کی تعلیم فرمائی ہے ہے ان انتدا کیا اعتدال ہے!

لیکن اس میں ایک بات شبر کی ہے وہ یہ ہے کہ بڑے کے سامنے تو ہر مخص تذلل اختیار کر لیتا ہے کمال اور تواضع تو یہ ہے کہ اپنے کو جھوٹوں ہے بھی ڈیپل اور چپج سمجھے۔ جواب اس کامیہ ہے کہ جب خالق کے سامنے اپنا بیج ہونا چیش نظر ہوگا تواس کولازم ہے کہ حق تعالی کی عظمت اس کے قلب میں آئے گی اور جب معرفت وعظمت حق تعالی کی اس کوہو گی تو چونکہ اپے نفس کوحاجب اور مانع جانے گاس لئے سب سے زیادہ آنچ در پیج اپنے ہی کوجانے گا اور ہرایک کواپنے سے بہتریفین کرنگاتو بیقصود بدوں اس کے کہ مخلوق کے سامنے ذلت اختیار کرے حاصل ہوجائیگا۔

يس ثابت مواكراس مقصود كے لئے صرف تذلل للخالق كافى ہے۔ اس تذلل للخالق كے واسطے ہم کوٹر بعت نے نماز تعلیم فر مائی ہے کہ اس کا خاصا ہے کہ انسان کوا پنا بجز پیش نظر ہو جا تا ہے اس کے کہاں میں تھم ہے کہاشرف الاعضا کو ار ذل الاشیاء کے ساتھ ملاحق کرو۔اور بیقاعدہ ہے کہ ظاہر کا اثر باطن پر پڑتا ہے۔ جب میٹنص اپنے سرکو جو کہ اشرف الاعضاء ہے زمین پررکھے گا تو منروراس کے اندر سے کبر کم ہوگا۔اور تواضع اور مسکنت پیدا ہوگی نماز کے اندر عجیب خاصیت ہے اور اس کو بڑا وخل ہے حق تعالی کی معرفت اور قرب کے حاصل ہونے میں۔ اور جب حق تعالی ک عظمت پیش نظر ہوگی تواپنا ہی ہوتا پیش نظر ہوجائے گااور دوسرے کی طرف النفات بھی نہ ہوگا۔ الی مثال ہے جیسے ہاتھی کے سامنے مثلاً دو چیو نثیاں ہوں تو اس کے سامنے ہوتے ہوئے ا یک جیونی دوسری کونظر بھی نہ آئے گی۔ یا مثلاً وائسرائے کسی جگہ آجائے تو تحصیلدار بیجارہ دکھائی بھی نہ دےگا۔اور نہ وہ تحصیلدار کسی دوسرے تحصیلدار کو حقیریاعظیم سمجھےگا۔

اور پھر جیئت مذلل ہی براکت تہیں کیا گیا۔ بلکداس کے اندرایے ساتھ جمکلا می کی بھی ا جازت دی ہے ور ندا کر بیٹکم ہوتا کہ سمر جھاکا کریس کھڑے رہوتو نرامجاہدہ بی ہوتا اب مج ہدہ بھی ہےاورلذت بھی اور پھراول ہے آخر تک ایک ہیئت نہیں بنائی بلکہ اس کومختف افعال ہے مرکب بنایا ہے۔ قیام ، رکوع ، بجدہ ، قومہ، جلسہ، قعدہ تا کہ نشاط رہے۔اکثر مشلا بجدہ بی ہوتا یا رکوع بی ہوتا تونفس اکتاج تا۔ سبحان امتد! ہمارے مُداق کی کیار عابیت فر مائی ہے بخلہ ف حکما ء کے مجاہدوں کے کہ وہ ایسے بخت بخت مجاہدے کرتے تھے کہ ہرشخص ہے وہ نبوٹیس سکتے یہ

تزك لذات كاطزيقه

اب ایک شبد با۔ وہ بیہ بے کہ جب تر اوت کے مجاہدہ ہے تو جیسے رمضان میں مشر دع فر ہ یا اور دنو ل میں بھی مقرر فرمادیتے۔ جواب بیے ہے کہ اگراور دنوں میں نماز نہ ہوتی تو بے شک اس کی شان اس کو مقتضی تھی کے فرض ہوتی۔ چنانچہ صدیث میں آیا بھی ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے کئی روز رمضان میں تیا میل فرمایا۔ اور تبسرے روزیا چوشے روز آپ تشریف ندلائے اور بیفرمایا کہ جھے خوف ہوا کہیں یے فرض نہ ہوجائے اس لئے میں نہیں آیالیکن اور دنوں میں بھی فرض نمازی مقرر ہیں جو مجاہدہ کے لئے کافی ہیں۔ اس لئے رمضان ہی میں اس کور کھا گیا اور سنت موکدہ بنادیا گیا۔ الحاصل ترک لذات کے لئے روز واور علاج کبر کے لئے نماز شریعت نے مجاہدہ مقرر فرمائی۔

اب تیسری شے تھے ظوت جوان کی معین ہے تھا اور تعدان تو برسوں بلکہ عمر ہمرکی ظوت تھی۔ طاہر ہے کہ اس جس شخت ترج ہے اور تعلقات اور تعدان کی نتخ کئی ہے۔ شریعت نے سجان النداس جس بجیب رعایت رکھی ہے صرف دی ون کی ضوت مقرر فر مائی اور اس کا ٹام اعتکاف رکھا۔ اور اس جس بھی یہ بیس کیا کہ بالکل کسی ہے نہ بولو نہ ہو۔ بلکہ اس کا ایسا اچھا طریقہ بتلا دیا کہ اس جس خلوت کا جونقع ہے وہ بھی باقی رہے۔ اور جولوگ وہاں آئیں ان سے ملنے جس پھھ ترج بھی نہ ہو۔ وہ بیس کا جونقع ہے وہ بھی باقی رہے۔ اور جولوگ وہاں آئیں ان سے ملنے جس پھھ ترج بھی نہ ہو۔ وہ بیس کے متعد کے سوا اور کہیں جا تر نہیں۔ اب فلا ہر ہے کہ سجد جل این ہم جنس بی آئیں گے اور بچنا غیارے مطلوب ہے۔

ہارے حضرت جاجی صاحب قرمایا کرتے تھے خلوت ازا غیار ندازیار پس خلوت ان لوگوں سے ہے جور ہزن ہیں دین کے۔ باقی جودین میں معین ہیں ان کے پاس ہیشٹا تو ضوت سے بہتر

ہے الی جلوت کو خلوت پر ترجیج ہے۔

مول نائے بجیب لطیفہ لکھا ہے وہ قرماتے ہیں کہا ہے خزیز اتو جوظوت کومطنقا جلوت برتر جیج ویتا ہے اوراس کے فضائل بیان کرتا ہے ہیمی تو تجھ کوجلوت کی ہی بدولت علم ہوا ہے بھر وہ جلوت پرمطلقاً کیسے رائج ہو گئی ہے۔ پھر وہ وی دن کا اعتکاف ایسے دنول میں رکھ ہے کہ اس عشرہ میں ایک رات ہزار مہینوں ہے بہتر ہے بینی ہزار مہینے اگر ریاضت مجاہدہ کرے تو وہ بات نصیب مہیں ہوتی جواس ایک رات میں ہوجاتی ہے۔

تودیکھے! خلوت کے ایام کو کم تھے گراس کا تدارک اس طرح کردیا گیا۔ یہ کفس تا نیر غیبی ہے اور نور دی ہے، ی اس کا ادراک ہوسکتا ہے حکما ، کو یہاں تک کہاں رسائی ہوسکتی ہے۔ یہ ضور سلی الندعلیہ وسلم کی برکت ہے کہ ہم کوایی راستہ ہمایا کہ جو بہت آسان اور نفع میں سب را ہوں ہے بڑھ کر ہے۔ کہ ہم اس کی قد رنہ کریں اور اس منتفع نہ ہوں ہی طریقہ کیجرصا حیو! فضب ہے کہ ہم اس کی قد رنہ کریں اور اس منتفع نہ ہوں ہی طریقہ ہے۔ ہم اس کی قد رنہ کریں اور اس منتفع نہ ہوں ہی طریقہ ہے۔ ہم اس کی قد رنہ کریں اور اس منتفع نہ ہوں ہی طریقہ ہے۔ ہم اس کی قد رنہ کریں اور جس پر فلاح کا وعدہ ہے۔ ہم اس کی تعرف ہوتی ہے اور جس پر فلاح کا وعدہ ہے۔ اب انڈر تعالیٰ ہے دعا ہے تھے کہ ہم کو تو شق عطافر ما کھیں ۔ آھین

التهذيب

مجاہدات شرعیہ کے متعلق بدوعظ ۲۸ رمضان ۱۳۳۲ هے کوج مع مسجد تھانہ بھون میں بیٹھ کرفر مایا جوسا ڈھے تین گھنٹہ میں ختم ہوا۔ محد عبداللہ گنگوہی صاحب نے قلمبند قرمایا۔

خطبه مأ ثوره

بِسَبْ إِللَّهُ الرَّحْينَ الرَّحِيمَ

ٱلْحَمَدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنَهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَنُوْمِنَ بِهِ وَنَتَوَكُلُ عَلَيْهِ وَنَعُودُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُورٍ أَنْفُسِنَا وَمَنْ سَيّنَاتِ أَعْمَالِنَا مَنْ يُهْدِهِ اللّٰهُ فَلاَ مُنْ يُعْدِهُ اللّٰهُ فَلاَ وَمَنْ سَيّنَاتِ أَعْمَالِنَا مَنْ يُهْدِهِ اللّٰهُ وَحَدَهُ مُضِلً لَهُ وَمَنْ يُصُلِلُهُ فَلاَهَادِى لَهُ وَنَشْهَدُ أَنْ لَالِلهُ إِلَّا اللّٰهُ وَحَدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَنَشُهَدُ أَنْ سَيْدَا وَمَوْلَنَا مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ صَلّى اللّهُ تَعَالَى عَلَيْه وَعَلَى الله وَأَصْحَابِه وَبَارِكُ وَسَلِّمُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُودُ لَكُ لِللّهِ مِنَ النَّهُ مِنَ النَّهُ مُنَا الرَّحِيْمِ. وَمَا لِللهُ الرُّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ.

يريد الله بكم اليسر ولايريد بكم العسر ولتكملوا العدة ولتكبروا الله على ماهدكم ولعلكم تشكرون. (الترد١٨٥)

ترجمہ: القد تعالیٰ کوتمہارے ساتھ (احکام میں) آسانی کرنامنظورہ اور تمہارے ساتھ (احکام قوانین مقرر ہیں) دشواری منظور نہیں تا کہتم لوگ ایام قضاء کی شار کی سنگھ راحکام تو اند تعالیٰ کی بزرگی (وثناء) سنگیل کرلیا کرو (کہ تواب میں کی ندر ہے) اور تا کہتم القد تعالیٰ کی بزرگی (وثناء) بیان کرواس پر کہتم کو (ایک ایسا) طریقہ ہتا ویا جس سے تم برکات صیام رمضان سے تحروم ندر ہو گے اور تا کہتم لوگ (ای اسان محت کا) شکر بیادا کیا کرو۔

مجامده كي ابميت

یہ ایک آیت ہے جومتعنق ہے صیام کے۔ اس کے قبل چند جمعوں میں روزہ ، تراوی ، اعتکاف اوران کے اسرار واحکام وحقوق وآ داب وخواص مع ان کے شعب ومتعنقات کے ذکر کئے گئے ہیں جن کا حاصل تھا مجاہدہ کہ حق جل وعلاشانہ نے نفس کے قوی منکسر کرنے کے لئے چند مجاہدات کی تعلیم کی ہے اور وہ مجاہدات تمام قو مول کے مجاہدات سے ممتاز ہیں اور یہ مجاہدات ہمارے بی نفع اور مصالح کیلئے ہیں کوئی بید ہم جھے کہ ہم پر بڑا بارڈ ال گیا ہے۔ مجابدہ تو وہ شے ہے کہ ہم سلیم المرز اج اس کی طرف راغب ہے بلکہ جو مجابدہ نہیں کرتے ہیں وہ بھی اس کو پسند کرتے ہیں۔ چنا نچے آپ و کیستے ہیں کہ تمام فساق و فجار مجابدہ سے خود تو محتر زہیں مگر اس کے ساتھ ہی اہل مجابدہ کو محبوب رکھتے ہیں۔ جس شخص کو وہ و کیستے ہیں کہ زاہد ہے ، تارک ہے بالطبع اس کی طرف ان کو بھی میلان ہوتا ہے۔ و نیا دار کیسا ہی و نیا دار ہوجب وہ لڑے گا طالب و نیا سے لڑے گا۔ تارک و نیا سے سرف بیہ وہ ہے کہ اس کو میہ خیال ہے کہ بیشن مون کے دنیا کے کہ بیشن میں کا تارک ہے اس کو میہ خیال ہے کہ بیشن کہ ونیا کا تارک ہے اس خیال نے اس کے سب خیالات کو بست کردیا ہے۔

وجداس کی بیہ ہے کہ دنیا سے خدا کو بغض ہے اس کا اثر ایساعام ہے کہ جبین دنیا کے قلوب میں بھی اس کا اثر ہے۔اگر دنیا کی محبت اچھی شے ہوتی تو ایک محبّ دوسر ہے محبّ ہے ضرور محبت کرتا۔ لیکن یہ بات نہیں۔ بلکہ آپس میں لڑتے ہیں گئتے ہیں مرتے ہیں۔

بہر حال زہد فی امد نیا بالطبع مرغوب ہے اور تارک تعنقات ہے اول تو محبت ہی ہوتی ہے اور اگر محبت نہ بھی ہوتو بغض تو ہرگز نہیں ہوتا۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ طلب د نیا ایسی شے ہے کہ اس کے ہرے ہونے پر سب کا آف تی ہے اور ترک د نیا ایسی محبوب شے ہے کہ اس کی محبوبیت پر سب کا آفاق ہے۔ اس کا تھوڑ ابہت رواح ہر قوم میں ہے۔ عیسائی ، ہندوجو کہ منظر مین اسلام ہیں وہ بھی اس کو ضروری جانے ہیں۔ چنا نچے تہذیب اخل ق میں ان کی کتا ہیں موجود ہیں اور ظاہر ہے کہ تہذیب اخل ق میں ان کی کتا ہیں موجود ہیں اور ظاہر ہے کہ تہذیب اخلاق بدول نفس شی کے ہونیس سکتی۔ کیونکہ نفس کے موافق کرنے ہے بھی تو بہت سی ہداخلاقیاں صاور ہوتی ہیں۔

مثلاً ایک شخص ہے اس کا جی چاہا کہ فلاں عورت کے پاس جائے توائروہ نفس کو ہیں روکے گاور خلاف نفس کے نیکر بیاتو بعل اس سے در موجائیگا جو کرتمام ملل میں فدموم مجنوض و تھی عنہ ہے۔

کا اور خلاف نفس کے نیکر بیاتو بعل اس سے در موجائیگا جو کرتمام ملل میں فدموم مجنوض و تھی عنہ ہے۔

حکماء میں مجاہدہ ہونے کی ایک حکایت یاد آئی ایک شخص حکیم نے دوسرے یونائی حکیم کی تصویر دکھی کر ریک ہو تھا کہ تیا فدکی روسے ہے بات معلوم ہوتی ہے کہ شخص زائی ہو گوں نے کہا کہ ریدتو فلاں حکیم کی توضر وراس شخص کے کہ ریدتو فلاں حکیم کی تصویر ہے۔ اس کو ندامت ہوئی طراس نے کہا کہ کس کی ہوضر وراس شخص کے اندر ہوجی ہے لوگ اندر ہوجہ اس کو ندام و اس فعل خبیث کا ہے لیکن میں مجاہدہ کرتا ہوں سے اندر ہوجہ اس نے کہا کہ و نے کہا کہ و کہ تا ہوں

اورنفس کومغنوب کرتا ہول۔اس لئے عمر بھر میں صدور اس فعل کا بھی نبیس ہوا۔ تو باوجودا بمان نہ لانے کےان لوگوں نے نفس کی اتنی بڑی مخالفت کی کہ عمر بھرصدوراس کا نہ ہونے دیا۔

غرض! مجاہدہ وہ شے ہے کہ اس کی پہند بدگی تمام اہل نداہب کے اندرمسم ہے بلکہ دہری بھی کے درخابدہ ضرور کرے گا۔ بغیر اس کے اس کو بھی چ رہ نہیں ہے اگر چہ مقصوداس کا دنیا ہو۔ مثلاً اس کو کسی پرغصہ آیا اور جانتا ہے کہ اگر میں اپنے غصہ جاری کروں گا تو خود جھے کو شخص ضرر پہنچا ہے گا تو ایسے موقع پروہ صبط ہے کام لے گا۔ اورنفس کور د کے گا۔ غرض مجاہدہ کی ہر قوم اور ہرا ال ند ہب بلکہ ہرخض کو ضرورت ہے۔ اس کے شرورت ہے۔ اس کے شرورت ہے۔ اس کی خرص محام میں مقرورت ہے۔

ماه رمضان اورامام شاري

باتی شریعت مقدسہ نے جومجاہدات ہم کوتعلیم کئے ہیں ان کے جواشیازات ہیں اور جوان کے خواص وہ ٹار ہیں وہ کسی قوم اور کسی حکیم وفلٹ کے مجاہدہ میں نہیں ہیں۔ اہل مجاہدہ کی نظر جہاں تک نہ پہنچتی تھی وہاں تک کی شریعت مقدسہ نے رعایت کی ہے ان خواص و تھم اسرار کو بہت مختصر طور سے گزشتہ عموں میں بیان کیا گیا ہے۔ اب موقع اسکا ہے کہ ان مجاہدات کے خاتمہ کا بیان کر دیا جائے کہ یہ بھی قابل اہتمام ہے اور آئ رمضان المبارک کا جمعہ اخبرہ بھی ہے اس لئے ان بیالوں کا خاتمہ بھی اس جعد کو ہوتو بہتر ہے۔

یاتی درمیان پیس به بیان کردینا بھی ضروری ہے گومیر ہے موضوع کے خلاف ہے کہ اس جعد کے لیے بیصفت تو سیح اور دافعی ہے کہ بیہ جعدا خیرہ ہے۔ باتی جو خصوصیات زا کدہ لوگوں نے اپنی طرف ہے اس میں بڑھائی ہیں ان کا کہیں ہت ونشان تک نہیں ہے۔ افسوں کی بات ہے کہ جو بات قابل اعتماء واہتمام کے ہاس کی طرف تو النف من تک نہیں اور زا کدہ تصنیف کر لیے۔ جو بات قابل اعتماء واہتمام کے ہاس کی طرف تو النف من تک نہیں اور زا کدہ تصنیف کر لیے۔ مخبلہ ان کے ایک بیر خاصہ شہور ہے کہ آخری جمعہ کو جس قدر نئے کیڑے پہن لواس کا کوئی حساب و کہ ب نہ ہوگا جواب بیرے ھاتو ا بو ھانگھ ان گئتم صدقین.

ایک خاصہ بیہ بیجھتے ہیں کہ اس دن جوخطبہ پڑھاجائے اس میں دداع کامضمون اوراس متم کامضمون جس سے اظہار تاسف وحزن ہوہو تا جا ہیں۔ جناب! دل ہی جا تا ہوگا کہ کیسا کچھافسوں ہے۔ ۔ ابھی دل میں امنگیں اور شوق لگ رہا ہے کہ جلدی سے رمضان ختم ہوتو سویاں اور چھوہارے کھا تیں اور دل میں کہتے ہوں کے کہ خدا کاشکر ہے کہ بیہ بوجھ اترا۔ دل ہیں تو خوشی پھرمنہ بسور نا تکانے ہی ہے اورامتی ن اس کابیہ ہے کہ اگرتم کوئم ہی ہے اورائند تق کی فر رابعہ سے بیٹھم بھیج ویں کہ میرے بندول کورمضان کے جانے سے بہت ثم ہے اچھا ایک ماہ کے روزے اور ہم فرض کرتے ہیں تو جناب ابھی مب کے مز ختک ہوجا کیں۔ بیسب کہنے کی ہاتیں ہیں۔ رمضان بھرتو ایام شاری رہتی ہے کہ آج استے موزے دیے میں۔ اور بیتو عابدوں اور زاہدوں کی کیفیت ہے۔

یا در کھو! جو ہات ول میں ہوای کو ظاہر کرنا جا ہے۔ ورندہم بے جارے تو کس قطار میں ہیں محابہ رضی اللہ عنہم سے اس پر ہاڑیں ہوگئ ہے۔

صحابہ رضی اللہ عنہم ،غزو و بدر کے بعد تمنا کیا کرتے تھے کہ کاش کوئی دن مثل بدر کے ہواس بیس ہم دشمن سے مقابلہ کریں جب غزوہ اصد ہوا تو اس بیس ہزیمت ہوئی اور بعض صحابہ سے پچھلطی اجتہادی بھی ہوئی جس کا بڑا قصہ ہے تو اس پرحق تعالی ان کومتند فرماتے ہیں۔

ولقد کنتم تمنون الموت من قبل ان تلقوه فقد رایتموه و انتم تنظرون.

دویین تم لوگ موت کی لقاء سے پہلے اس کی تمن کیا کرتے ہے اب تو تم نے اس کود کھے لیا۔
اور تم اس کود کھے رہے ہو'۔ جب محابر ضی اللہ عنہ کم کواس پر عبیہ ہوگی تو ہما راکیا منہ ہے۔

آزرو میخواہ لیک اندازہ خواہ ہے ہے ہیں اللہ عماس کا تنا بھوہ را لیک برگ کا ہ

(آرز واتی چاہئے جتنا کی شرورت ہے جس طرح کے ایک گھاس کا تنا بھی پہاڑ کی چوٹی کیلئے کائی ہوتا ہے)

روز ہ وارکی خوشیا ل

جو معت ہے اس رنج کی لیعنی رمضان المبارک کارخصت ہوتا اس کا پکھ حصہ افطار کے وقت بھی ہونا جا ہے۔اس لئے کدایک دن اور کم ہو گیا۔لیکن پنہیں فرمایا گیا۔ بلکہ خوشی کی خبر دی گئی۔

راز اس میں یہ ہے کہ روز ہ فرض ہے اور تر اوت کا اور تبجد جوشب کی عبادات ہیں وہ سنت ہیں۔ اور یہ سنم ہے کہ جس قدر قرب اوائے فرض ہے ہوتا ہے اس قدراوائے سنت ونوافل ہے جیس ہوتا۔ تو اس کا مقتضا یہ تھا کہ جب روز ہ تمام ہوتو ہم کورن جوتا جا ہے تھا کہ انسوس ایک رات تک ہم روز ہ کے برکات ہے محروم رہیں گے کیونکہ رات کوروز ہ بیس ہوتا۔ بس اس خیال کے رفع کرنے ہم کوتا ہم کوتا ہے ہم کوتا ہم کوتا ہم کوتا ہے ہی فرحت کی۔

بہرحال خواہ کسی منٹم کی خوشی ہوسب محمود ومطلوب ہے۔ باتی رنج کے مطلوب ہونے کی تو کوئی دلیل نہیں ہے۔ بہرحال رنج نہ دواقع ہے اور نہاس کی کوئی اصل ہے پس تا سف اور رنج کرتا اور خطبہ میں الوداع الوداع یا تھر رمضان پڑھٹا بالکل ہے اصل ہے۔

ہاں رمضان المبارک کے آنے سے پہلے کا توایک خطبہ خاصہ منقول ہے چنانچہ صدیث میں آیا ہے کہ شعبان کے جمعہ اخیرہ میں حضور صلی القد علیہ وسلم نے خطبہ بردھاجس میں فرمایا یابھا الناس قدا ظلکم شہر عظیم المرتبت مہین سائی ہونے والا ہے) ہیں رمضان کے آئے گی خوشی تو فلا ہر فرمائی ہے گرجائے کاغم ظاہر کرنا اور خطبہ ودداعی پڑھن تہیں منقول نہیں۔

سے سب تقریر جملہ معترضہ کے طور پر آخری جمعہ کے متعنق تھی۔ مقصود تو میرایہ کہ دیآ خری جمعہ ہوا اور آخری جمعہ کو بیان جو آخری جمعہ کے اور آخری جمعہ کو بیان ہوتی ہے کہ رمضان ایک ہفتہ سے کم رہ جاتا ہے چنا نچر آج کا تاریخ ہے۔ شروع اور ہاں باقتضاء وقت ہیں بتاوینا ضرور ہے کہ ۲۸ تاریخ کو سورج گر بہن تخیینا بائی بیج سے شروع ہوجائے گا۔ حدیثوں میں ایسے وقت نی زآئی ہے جس کا قب صلوق اللہ قب ہنا ہرسول التصلی اللہ علیہ وسلم نے خود بھی پڑھی ہے جس میں قراء قا بحدہ ، رکوع طویل تھا۔ محروقت بہت کم اور نازک ہے اور نیز احتمال ہے کہ عمر کا بعد ہوجائے اسلے نوافل اس وقت مکروہ ہیں۔ اس لئے بجائے نوافل سے در کرمی مشخول ہونا جا ہے ۔ لوگوں نے جس طرح جمعہ خیرہ رمضان کے بچھ خواص تراشے ہیں۔ سے در کرمی مشخول ہونا جا ہے ۔ لوگوں نے جس طرح جمعہ خیرہ رمضان کے بچھ خواص تراشے ہیں۔

بمار بےتو بھات

ایسے بی سورج گرہن کے بھی اپی طرف سے پچھا دکام مقرر کتے ہیں۔ چنا نچے مشہور ہے کہ سورج گرہن کے وقت کھانا نہ کھاؤ۔ اصل تواس کی بیتھی کہ وہ وقت جب مشغولی مع اللہ اکبر اورڈ کرکا ہے تو طاہر ہے کہ کھانا خود بی اس وقت ترک ہوجائے گالیکن ڈکرامتداورٹوافل کوتو لوگوں نے اڑا دیا۔ اب بجائے اس کے برکار بیٹھے رہیں گے۔ شطرنج اور گنجفہ کھیلیں گے گراتنی تو فیق نہ ہوگی کہ انڈ کی یادکریں۔ ای طرح جب کوئی محلہ میں مرجاتا ہے تو مشہور ہے کہ کھانا کھانا ہوا رئیبیں۔ عیبتیں کریں گے ، وغابازی کی گفتگو جا رئیبیں۔ ونیا بھر کے سب کام جائز گرکھانا نا جائز نہیں۔ عیبتیں کریں گے ، وغابازی کی گفتگو

اس کی اصل میتھی کہ ایسے وقت جب کہ اپنے پاس والوں کوغم ہوا ورخو داپنے کوبھی ہوتا ہے تو کھانا کھانا طبعًا مکروہ ہے شرعاً مکروہ نہیں ۔ لیکن جب دنیا مجر کے قصے اور گناہ تک تو کریں تو کھانا جو کہ فی نفسہ مباح ہے اس ہے کیوں احتر از کیا جائے۔

ایے بی یہ بھی مشہور ہے کہ عمراور مغرب کے درمیان کھانا نہ کھاؤ۔ اصل آواس کی بیٹی کہ وہ وقت فضیلت کا ہے اورا کٹر بزرگول کی عادت رہی ہے کہ عمر کے بعد سے مغرب تک ذکراللہ میں مشغول رہے ہیں۔ جب ان کو عام لوگول نے مشغول دیکھا تواس سے بیہ بھا کہ اس وقت کھانا کھانا کھانا کھانا منوع ہے اورجہ اس کی بیتر اثنی ہے کہ مرتے وقت عمر کا وقت نظر آتا ہے اورشیطان مرنے کے وقت عمر کا وقت نظر آتا ہے اور شیطان مرنے کے وقت عمر کا وقت اور گراس وقت محمد کی عادت ہوگی ۔ تواگر اس وقت کھانے ہے کہ عادت ہوگی ۔ تو اگر اس وقت کھانے ہے کہ عادت ہوگی ۔ تو ہو میش کی جائے گا۔

نعوذ بابقد! بالکل غلط اور جھوٹ بات ہے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ہم کو بہت چھوٹی چھوٹی اللہ علیہ جن ہے اور ٹی سے صرر دینی بلکہ اکثر و نیوی کا اختال بھی ہوا ہے وہ بتل تی ہیں۔ چہوٹی انتاب ذا نفصہ ان عظیم جس شے سے لازم آتا ہواور آپ صلی انقد علیہ وسلم ہم کوئع نہ کریں۔ حضور صلی انقد علیہ وسلم نفصہ ان تک ہم کوئع نہ کریں۔ حضور صلی انقد علیہ وسلم نفسے یہ اس کے کہ اس طرح چلنے نے یہاں تک ہم کوئع فر مایا ہے کہ ایک پاؤل میں جو تی پہن کرمت چلو۔ اس لئے کہ اس طرح چلنے سے اختال کر جائے کہ اس طرح چلنے کے اختیال کر جائے کا حیال کریا ہو۔ بالکل علط ہے ہاں اتنا آیا ہے کہ قبر کے اختیال ہو۔ بالکل غلط ہے ہاں اتنا آیا ہے کہ قبر میں جب سوال ہوتا ہے قومٹ ناس کونظر آتی ہے اور وہ کہتا ہے کہ قبر میں جب سوال ہوتا ہے قومٹ ناس کونظر آتی ہے اور وہ کہتا ہے کہ شی جب سوال ہوتا ہے قومٹ ناس کونظر آتی ہے اور وہ کہتا ہے کہ شی جب سوال ہوتا ہے تو مشلت کہ المشموس لیعنی وطوپ نگلی ہوئی اس وکھائی وینا نہیں آیا ہے۔ اور اگر

بالفرض اليابو بھی تو وجداس کی بيہو علق ہے کہ چونکداس کی عمر کا خاتمہ ہوگيا ہے اس لئے اگراس کودن بھی ختم ہوتا ہوانظر آتا ہو پہتے جہیں۔ ليكن بيہ پيٹاب پينے کا مضمون قابل اغتبار نہيں ہے۔
اگر کہا جائے کہ ہم نے خوب و يکھا ہے کہ مرتے وقت لوگوں نے اس واقعہ کو بيان كيا ہے تو جناب خدا خير كر ہے ہم نے ايے مردے بھی و يکھے ہيں کہ جنہوں نے بيان كيا كہ ہم مرگئے تھے اور جب ہم رک جان کے الیے مردے بھی و يکھے ہيں کہ جنہوں نے بيان كيا كہ ہم مرگئے تھے اور جب ہم رک جان ہواں فرشتے لے گئے تو ہم نے و يکھا كہ ايك بد ھاسا آدى جي الله اواس كے مائے ايك رجم کا ہوار کھا ہوا ہے اس نے اس ميں و كھے جمال كركہا كہ اس كو ہم نے ذبيل بلايا وہ وومر الحق ہے۔ اس لئے واپس كروئے ہے اس نے اس ميں و كھے جمال كركہا كہ اس كو ہم نے نہيں بلايا وہ وومر الحق ہے۔ اس لئے واپس كروئے كے چنا نے وہ وزندہ ہوگئے۔

اس حکایت سے لازم آتا ہے کہ عزرائیل علیہ السلام علی کرتے ہیں اورا گرعزرائیل علیہ السلام علی کرتے ہیں اورا گرعزرائیل علیہ السلام میں کچھ فرق نہیں وہ بھی ضرور غلطی کرتے ہوں السلام علی کرتے ہیں بھی غلطی کا اختیال ہے اوروی کے اور جب کس کے مارنے میں غلطی کی تو کسی شے کے پہنچانے میں بھی غلطی کا اختیال ہے اور وی مجمی ایک شے ہے۔ اس کے پہنچانے میں جبرائیل علیہ السلام نے ضرورا خمال ہے کہ شاید غلطی کی ہو۔ جناب ایسے اختمالات سے تو قرآن سے بھی نعوذ ہو للہ ایمان اٹھا جاتا ہے ۔ اور غالی شیعوں کا فرہب حق معلوم ہوتا ہے کہ 'جرئیل غلط کروہ ومقصود علی ہود' (حضرت جبرائیل علیہ السلام نے غلطی کی ورنہ مقصود حضرت علی رضی اللہ عنہ تے نعوذ باللہ)

توبر روایے قصول سے بیسب دہاغ کا تقرف ہے۔ دہاغ میں جیسے خیالات گھو متے ہیں ای تشم کے نظروں کے سامنے مثمل ہوجاتے ہیں۔ باتی فرشتوں سے تنظی اور خطا کا احتمال نہیں ہے جس کی موت آتی ہے اور جس کی نسبت تھم ہوتا ہے اس کی جات ہیں۔ بیاحمال نہیں کے دوسرے کی جات ہیں کے اور جس کی نسبت تھم ہوتا ہے اس کی جات ہیں۔ بیاحمال نہیں کے دوسرے کی جات ہیں کرلیں چنا نجے صاف ارشاد ہے:

حتى اذا جاء احدكم الموت توفته رسلنا وهم لايفرطون

"الينى يهال تك كه جبتم بيل كى كوموت آتى ب تو بهار فرشة اس كى جان لية بيل اوروه اس بيل تقفير بيل كرية "دوسر عمقام برار شادب جس يعمو، معلوم بوتا ب كه وه بيل اوروه اس بيل تقفير بيل كرية "دوسر عمقام برار شادب جس يعملون غضب كريم كي حكم كے خلاف نبيل كرتے والا بيل القول و هم باموه يعملون غضب كا بات ب كرقر آن كا انكار عقل كے خلاف اليد امور كا اعتقاد كر ليتے بيل بيل اگرية تقديم بھى بول تو يہ تو

شيطان اورمومن

اگرفرض کرلیا جائے کہ شیطان اس وقت پیشاب کا پیالہ لئے ہوئے نظر بھی آتا ہوت بھی اس وقت کھانے پینے کی عادت سے بیلازم نہیں آتا کہ وہ اس پیشاب کو پی لے۔ اس لئے کہ مرنے کے وقت مردہ کوعالم آخرت کا انکشاف ہوجاتا ہے اور بیقصدا گرہو بھی تواس عالم کا نہ ہوگا۔ بلکہ ایک برزخی واقعہ ہوگا اوراس عالم کے خواص وعادات اس عالم بیس مورز نہیں ہیں۔ ہاں عہد ایک برزخی واقعہ ہوگا اوراس عالم کے خواص وعادات اس عالم بیس مورز نہیں ہیں۔ ہاں عہدات نہا ہے موات ہیں اصلی (جھے چھوڑ ویس نماز پڑھ کہا دات نصا ہے موقع نظر کی جائے ہیں جیسا صدیت بیس ہے دعو نی اصلی (جھے چھوڑ ویس نماز پڑھ لوں) اورا گراس ہے بھی قطع نظر کی جائے تب بھی شیطان پیشا بنہیں پاسکتا۔ اس لئے۔ ویس نمان پر نہیں چانی ارشاوٹر ما تا ہے۔ حق تعالی ارشاوٹر ما تا ہے۔

اور نیز وہ وقت چونکدائ فض پر بہت بخت ہوتا ہاں لئے اس وقت ضرور رحمت حق متوجہ ہوتی ہے اس لئے اس وقت ضرور رحمت حق متوجہ ہوتی ہے چنا نچار شاد ہے اناعند المنگسرة قلوبهم (من الله عند اول كساتھ موتا ہوں) اور مولانا فرماتے ہيں۔

 ہر کجا رہے شفا آنجارود ہی ہر کجا دروے دواآنجارود (جہاں کہیں پستی ہوتی ہے دہیں پانی جاتا ہے جہاں مشکل ہوتی ہے دہیں اس کا طل ہوتا ہے۔جہال رنج ہوتا ہے دہیں شفاہوتی ہے ،جہال در دہوتا ہے دہیں اس کی دواہوتی ہے) پس اور فریائے ہیں _

فہم و خاطر تیز کردن نیست راہ ﴿ جُرْشکتہ مَّی تَکیر دُفْعُل شاہ (اپنے دل اور فہم کو گستاخ کر لیما ہی راستہ نہیں بلکہ شکستہ ہو جانا ہی بادشاہ کے مہر یا نیوں کے حاصل کرنے کی دلیل ہے)

ایک قصد منقول ہے ایک ہی علیہ السلام کا چند قبور پر گز رہوا۔ دیکھا کہ مردے قبور میں معذب ہیں جہال تشریف لے جارہے تنے جب وہاں سے واپس ہوئ تو دیکھارہمت ہورہی ہے جن تعالیٰ سے عرض کیا کہ الساد! اس وقت تو میں نے ان کوجتلا وعذاب دیکھ تھا۔ اور می طاہر ہے کہ مرنے کے بعد ان سے کوئی عمل صادر نہیں ہوا۔ پھر کیا وجہ رحمت کی ہوئی ؟ ارشاد ہوا کہ ان کے کفن گل گئے ان کی بڈیال ریزہ ریزہ ہوگئیں اس لئے ہم کور م آیا کہ ان پر کیا عذاب کیا جائے جب کہ ان پر دھیت ہوئی تو تھوب شکت پر تو ضرور ہی رحمت ہوتی ہے۔

غرض وہ وہ تت رحمت کا ہے۔ شیطان کا داؤ وہاں نہیں چاتا۔ پھر یہ اگراس وقت حواس ہاتی ہیں تو جان ہو جھ کر پیشاب کیوں ہوے گا۔ اور حواس جاتے رہے اور اس حالت ہیں شیطان کا پیشاب بھی ٹی لیا تو حرج کیا ہوا۔ اس سے ایمان ہیں پچھے خلل نہیں۔ شیطان کے اندر جز و تاری زیاوہ ہے اس کا پیشاب آدمی کے پیشاب سے تو بہر حال نجاست میں کم ہوگا۔ اس وقت تو اگر آدی کا پیشاب بھی ٹی لیا تو ایمان میں خلل نہیں آتا بلکہ ایک حدیث سے تو یہ معلوم ہوتا ہے کہ شیطان کا پیشاب کوئی وی جرم نجس بھی نہیں۔

چنانچہ صدیث میں آیا ہے کہ جو تخص صبح تک سوتار ہے تو شیطان اس کے کان میں پیشاب کردیتا ہے اور بیار شاد نہیں فرمایا کہ کان کو پاک کیا کرو۔معلوم ہوتا ہے کہ وہ کوئی ذی جرم نجس چیز نہیں ہے۔غرض بیہ ہالکل ہے جوڑ اور ہے اصل بات ہے۔

سلبايمان

اگر کوئی شخص ہے کے دمرنے کے دنت اگر رحمت ہوتی ہے تو اس کا کیا مطلب جو بکمٹر ت سنا

ہے کہ م تے وقت بعضوں کا ایمان مسلوب ہوجاتا ہے۔ یا در کھو! پریش نی اور بدحوای کی حالت میں کسی کا ایمان سلب نہیں ہوتا۔ ایمان مثل ایک قلعہ مضبوط کے ہے وہ ایسے سیلا بول سے شکت نہیں ہوتا ہے ہرگز نہیں کہ مرنے کے وقت بلا افقیار ایمان سلب ہوجائے ہال پہلے ہے جوبوگ مسلوب الا یمان ہیں زندگی میں اور دنیا کے کا مول میں ان کوا پی بے حس ہے اپنا مسلوب الا یمان ہوتا ہے اس کواس ہونا منکشف نہیں ہوتا۔ اور مرنے کے وقت چونکہ ظہور حقائق کا وقت ہوتا ہے اس لئے اس کواس کا علم ہوتا ہے ای لئے عار اس کواس کا علم ہوتا ہے ای لئے عار اُ کہ دویا جا تا ہے کہ قلال مسلوب الا یمان ہوکر دونیا ہے گیا ہے۔

سیجومشہورہ کے مردہ کے پاس صرف الاالله پڑھنا چاہیے لااله اس کے ساتھ نہ طاوے اس کئے کہ اگر لاالله پردم نکل گیا تو ہے ایمان مریکا کیونکہ اس کے معنی توبہ ہیں کہ کوئی معبود نہیں ہے تواس سے حق تعالیٰ کی معبودیت کی نمی بھی ہوگئی اور یہ کفر ہے۔

یہ بھی بالکل بے معلی اور خلاف عقل ہے اس لئے کہ اگر لااللہ پر خاتمہ ہوگیا اور دل میں اس کے تھا کہ الااللہ بھی کہوں گاتو کفر کہاں لازم آیا۔ اللہ تھی کہوں گاتو کفر کہاں لازم آیا۔ اللہ تھی کہوں گاتو کھر کہاں لازم آیا۔ اللہ علی نے قام رہے کہ تو حیداس کے جمن میں پہلے سے تھی وہ لااللہ کہنے نہ پایا۔ اسکواس قدروفت بی نہ ملا۔ باقی بیر ظاہر کی وقال را جہ ماوروں را بنگریم وحال را بایروں را بنگریم وحال را جہ ماوروں را بنگریم وحال را جہ کی ایم کی خاتم کو کہنیں دیکھتے بلکہ ہم اس کی اندرونی ایم کی شخص کی ظاہر کی حالت اور اس کی گفتگو کو نہیں دیکھتے بلکہ ہم اس کی اندرونی کیفیت اور حالت کود بھتے ہیں)

یہاں تو فقط ناتمام عبارت ہی تھی وہاں تو یہ حال ہے کہ اگر کو کی شخص مرتا سر غلط کہہ ؤالے اور دل میں نہ ہوتو کچھ حرج نہیں اوراس کے ایمان میں ؤر و ہرا بر فرق نہیں ہے۔

صدیت شریف میں وارد ہوا ہے کہ تن تعالیٰ کواپے بندے کو بیٹے کا ای پر ہو، اوروہ پریشان خوشی ہوتی ہے کہ اس کا اونٹ راہ میں گم ہوجائے اور تمام سامان کھائے پینے کا ای پر ہو، اوروہ پریشان ہوگراس کوڈھونڈ تا ہے اور جب ناامید ہوگیا توایک درخت کے بنچے تھک کراورا پی جان ہے مالیاں ہوکراس کوڈھونڈ تا ہے اور جب ناامید ہوگیا توایک درخت کے بنچے تھک کراورا پی جان ہے مالیاں ہوکر لیٹ رہااورائی حالت میں اس کوئیندی آئی جب آئی کھی تودیکھا اونٹ کھڑا ہے توجوش مسرت کے ہوکر لیٹ رہااورائی حالت میں اس کوئیندی آئی جب آئی کھی تودیکھا اونٹ کھڑا ہے توجوش مسرت کے ساتھ کہتا ہے اللہم انت عبدو اناریک اختصاء من شدہ الفوح لیحنی اے اللہ اتو میرابندہ ہے اور میں تیرارب ہوں۔ حضور صلی انڈ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہشدت خوشی کی وجہ سے بہک گیا۔

دیکھوااس نے کلم کہالیکن چونکہ نداس کے دل میں تھا اور ندزبان سے قصد کہنے کا رکھنا تھا۔ خدا تعالیٰ کی نعمت پرخوش کے جوش میں زبان بچل گئی۔اس لئے کچھ پچھ مواخذہ ہیں اور نداس کے ایمان میں پچھ فرق آیا۔ورنہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم اس کے قت انکار فرماتے۔

محبت اورادب

اور لیجے۔ موکی علیہ السلام کے زمانہ میں ایک بزرگ تھے برخ نام۔ موکی علیہ السلام کوتھم جوا
کہ بارش کے لئے ان سے وعا کراؤ۔ وہ بزرگ مقام ناز واحلال میں تھے۔ ان سے جب وعا
کیلئے کہا گیا تو انہوں نے جو کلمات کیے جیں اگر کوئی اور شخص کہدد ہے۔ تو سخت ہے او بی ہے۔

جنت میں بھی پعض لوگ ایسے کلمات کہیں گے کہ وہ بظاہر بے ادبی ہے کین چونک ول میں بے ادبی کا قصد نہیں اس لئے کی معزبیں۔ چنانچہ حدیث شریف میں آیا ہے کہ سب سے آخر جو شخص دوز خ
ادبی کا قصد نہیں اس لئے کی معزبیں۔ چنانچہ حدیث شریف میں آیا ہے کہ سب سے آخر جو شخص دوز خ
سے تکے گاہی ہے کہا جائے گا تھے کو دنیا اور دنیا ہے کی حصد زیادہ جنت میں جگہ دی گئی وہ عرض کرے گا۔

الستهزئ مني وانت رب العلمين.

لین کیا آپ مجھ سے شما کرتے ہیں حالانکہ آپ رب العالمین ہیں۔
حدیث شریف ہیں آیا ہے کہ جناب رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم کواس پراہتی آئی۔
اور لیجئے! افک کے قصہ میں جب حضرت عائشہ کی برات نازل ہوئی تو حضور سلی اللہ علیہ وسلم
نے فرمایا: ابشوی یا عائشہ! فقد ہو ایک اللہ بینی خوش ہوا ہے عائشہ! اللہ تعالی نے تم کو بری کردیا۔
اس پر حضرت صدیق اکبرضی اللہ تعالی عند نے فرمایا کہ اسے عائشہ کھڑی ہوکر حضور سلی
اللہ علیہ وسلم کا شکر یہ اوا کرو۔ حضرت عائشہ نے فرمایا کہ جس آپ سلی اللہ علیہ وسلم کا شکر ہیہ کیوں
کروں جس تواجے اللہ کی حمد بیان کرول گر

و کھے! بظاہر تو یکلہ باونی کا ہے لیکن حقیقت اور من اس کا حضور صلی القد علیہ وسلم کی محبت ہے۔
حضرت عائش کی قلب حضور صلی المقد علیہ ہم میں میں سے نبرین تھا اور جسے محبوب ناز کیا کرتا ہے بھی محب
مجھی کرتا ہے لیکن ہر خص کا حوصد نہیں ہے کہ السی بات کے یاجی میں لائے کہ سے
ناز راروئے بباید ہمچو ورا ہی چوں نداری گروبد خوئی مگر د
(ناز برداری کیلئے گلاب جسے چہرہ کی ضرورت ہے اگر تو الیا حسین نہیں ہے تو بری عادات جھوڑ دے)
الے الصحیح للبحاری ۱۳۱۲ الصحیح فیصلے الوجہ ۵۰، مسلم الوجہ ۵۰، مسلم حدد ۱۹۲۱، ۵۳، میں الد

ادر حدیث میں آیا ہے کہ حضور صعی اللہ علیہ وسلم قرماتے ہیں اے عائشہ بجھے معلوم ہوجا تا ہے جب تم مجھ سے ناراض ہوتی ہو اور جس وفت راضی ہوتی ہوتو اس طرح فتم کھاتی ہو الاور ب محمد ، (قشم ہے حضرت محمد سلی اللہ علیہ وسلم کے رب ک) اور جب ناراض ہوتی ہوتو کہتی ہو لاورب ابواهیم۔ (تتم ہے حضرت ابراہیم علیہ السلام کے رب کی) حضرت عائشہ نے فرمایا مارسول الله! الاهجو الااسمك يعنى مارسول الله! شن اس وقت صرف آپ كا تام عى جهور ويتى ہول مینی دل میں تو آپ ہی ہے ہوئے ہیں لیکن صرف نام مبارک زبان سے ترک کردی ہوں۔ نام پرایک دکایت یادآنی۔ ہمارے حضرت میاں ہی نورمحرصاحب رحمتہ اللہ علیہ کے ایک خلیفہ شیرخان نامی لوہاری کے رہنے والے تھے۔ جب ان کا انقال ہونے لگا توساکت لیٹے ہوئے تھے ۔ لوگ کلمہ کی تلقین کرتے تھے لیکن وہ بالکل خاموش تھے لوگوں کو بہت خیال ہوا کہ افسول ہے کہ خال صاحب ہمیشہ تو ذا کر شاغل رہے اور آخر میں یہ کیفیت ہے کہ کلمہ تک زبان ہے نہیں نکاتا اور حضرت میاں بی کو جا کرا طلاع کی۔حضرت تشریف لائے اور پوچھا کہ خان صاحب کس حال میں ہو۔فر مایا کہ حضرت لوگوں کوروک دیجئے ۔ مجھے پریشان نہ کریں۔ بیہ جھے کومسمیٰ ہے اسم كى طرف لاتے ہيں مشاہده ملى بين بون اور يہ جھ كواسم كى طرف كھينچتے ہيں۔حقيقت يہ ب ورنيا بدحال پخت على خام الله الله عن كوتاه بايد والسلام (کوئی کیابکا حال معنی اندرونی حقیقت معلوم نبیس کرسک بهتر ہے کہ بات مختصر کر کے اجازت لی جائے) لاورب ابراهیم م کهد کر حضرت عائش نے نام بھی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا چھوڑ دیا اورخفا بھی ہور بی ہیں مند میں ۔ توب بات کیا ہے؟ وہ میں ہے کہ دل تو محبت ہے پُر تھا اوراس ناراضی کا منشا بھی وہی محبت تھی۔ پس اگرول میں ایمان ہے اورزیان سے بدحواس میں کلمہ تفری بھی کہد دیا تب بھی وہ خص مومن ہے اس کے ایمان میں ذرہ برابر فرق نہیں آتا پیکلہ کفرایہ ہی ہے ۔ خون شهیدال رازآب اولی تراست 🏗 این خطا از مد مواب اولے تراست (شہیدوں کا خون آب حیات ہے افضل ہے اور میں مطلی سیننگڑ وں اچھائیوں ہے بہتر ہے) اوقات نزع کے کلمات

بح الرائق میں لکھا ہے کہ اگر مرتے وقت کسی مسلمان کے منہ سے کلمات کفر لکلیں تو وہ سب معاف جی مرز نے کا وقت ہے آموزی کی آ دمی کو تکلیف ہوتی ہے تو پریشان ہوجا تا معاف جی مرز نے کا وقت برنازل وقت ہے۔ تھوڑی کی آ دمی کو تکلیف ہوتی ہے تو پریشان ہوجا تا کہ مرد و ہے۔ اور وہ وقت تو جان نکلنے کا ہے۔ اس واسطے ایسے وقت میں سمجھ دار آ دمی پاس ہوتا جا ہے۔ تا کہ مرد و

کی حالت کو بھیں پعض حالتیں ایک پیش آئی جی کہ پاس والوں کو بالکل بچھ بھی نہیں آئیں۔ ایک بزرگ تھے جب ان کا انتقال ہونے لگا تو انہوں نے بید کہا لاالله الاالله موسی کلیم الله اور کہ کررحات فر ، کے لوگوں نے شور مجادیا کہ افسوس یہودی ہوکر مرے جی ۔

کے ان سے اجازت جا ہیں۔ یہاں ایک بات سمجھ لینے کی ہے وہ یہ ہے کہ تعلیم وتلقین کاتعلق توایک ہی ہے رکھے باقی

عقیدت ومحبت وزیارت سب بزرگوں ہے رکھے تو پچھ حرج نہیں اس کی مثال الی ہے جیسے طبیب ومریض کہ جب تک جم کرا یک کا علاج نہ کریگا تو مرض کا زوال نہ ہوگا اورا گر ہرا یک سے

ووا يو جھے تو شفا نہ ہوگی۔

خوض شیخ جم الدین سے اجازت کیران ہزرگ کی زیارت کے لئے گئے۔ چلتے وقت پیر
نے کہد دیا تھا کہ میری طرف ہے بھی حصرت کی خدمت میں سلام کہد دینا۔ جب وہاں پنچ
تو بیرکا سلام عرض کیا۔ان ہزرگ نے فر مایا کہتمہارا یہودی پیراچھا ہے۔ مریدصا حب دل ہی دل
میں بہت بگڑے کہ بیا جمھے ہزرگ ہیں میرے پیرکوانہوں نے یہودی کہد دیا لیکن چونکہ بیرےان
کے مناقب من چکے تھے اس لئے ہولے پچھنیں۔ جب واپس پیرکی خدمت میں آئے تو پیرنے
پوچھا ہمارا سلام بھی کہد دیا تھا لیکن وو تو ہوت بے ڈھب آ دمی ہیں انہوں نے آپ و یہودی کہا
فرمایا کہ الحمد میڈ! آ می معلوم ہوا کہ ہیں کس مقام پر ہوں اور بہت خوش ہوے ادر یہ فرمایا کہ بھائی
جھرکو فرشیں ہے کہ اس میہودی سے کیام اور سے۔

تو حقیقت اس کی ہے ہے کہ جناب رسول التصلی القدعلیہ وسلم کے اندرتمام انبیاء کی شاخیں جلوہ گر ہیں۔اسی مضمون کوکسی نے شعر میں ⁵¹ ناہے۔

حسن بوسف وم عیلی ید بیضاداری این آنچه خوبال جمه دار ند تو تنها داری (آپ صلی الله علیه و ملی علیه اسلام کاحسن حفرت عیلی علیه اسلام کاحسن حفرت عیلی علیه

السلام کی پھونک اور حضرت موک علیہ السلام کا ید بیضا ہے جو کمالات سب انبیاء اسلام کو دیئے گئے تنصوہ وہ تنہا آپ سلی القدعلیہ وسلم میں جمع میں)

ایرائیم اورموی اورمیی ای طرح تمام انبیا علیم السلام کی شان حضورصلی ابتدعدید و کم میں موجود ہے۔ حضورصلی ابتدعلیہ و کم ہوئے ہیں۔اب اولیائے امت میں سے ہرایک کی شان جدا ہے۔ کس کے اندرابراہیم علیہ السلام کی شان ہے کوئی موی کی شان پر ہے جو بزرگ جس نی کی شان لئے ہوئے ہوئے ہیں ان کوان کے قدم پر کہاجا تا ہے چنا نچ کہتے ہیں کہ فلال بزرگ قدم مول پر ہیں اورفلال ابراہیم پر ہیں یعنی شان موسوی اورابراہیم پر ہیں۔ کہ فلال بزرگ قدم مول پر ہیں اورفلال ابراہیم پر ہیں یعنی شان موسوی اورابراہیم پر ہیں۔ لکن لامن حیث اند شان ابراہیم و موسیٰ بل من حیث اند شان محمد صلی الله علیه و سلم جامع للشنون کلها۔ (شاس حیثیت ہے کہ یہ علیه و سلم جامع للشنون کلها۔ (شاس حیثیت ہے کہ یہ حضرت ابراہیم و حضرت مولی علیه السلام کی شان ہے بلکہ اس حیثیت ہے کئی کریم صلی ابتدعلیہ وسلم کی شان ہے اس لئے کے حضور علیہ السلام میں سب شائیں جمع ہیں)

پی جن بزرگ نے مرنے کے دفت لاالله الاالله موسی کلیم الله پڑھا۔انہوں نے ظاہر
کردیا کہ قدم موکی پر ہوں۔ یکی مطلب یہودی کہنے کا بھی ہے۔اب بیچارے وام اس بات کو کیا جا نیں۔
اس کئے مرنے کے دفت ایسے لوگ پاس ہونے جا بیس جن کودین کی سمجھ ہو۔ بہر حال اصلی مقصود مسمی
ہوتو کچھ مضما کھنہیں۔ایسے امریس جن اگراسم میں شعطی ہوتو کچھ مضما کھنہیں۔ایسے امور سے ایمان نہیں جاتا۔

ايمان كي رخصتي

یبال سے معلوم ہوا کہ یہ جوبعض عوام الناس کہ کرتے ہیں کہ فلاں نے پہار کا حقہ پی لیا اس لئے اس کا ایمان جاتار ہا ہہ بالکل غاط ہے۔ کیا جمار کے حقہ کی نکی ہیں ایم ن تھس گیا ہے۔ پہار کا حقہ تو در کنار اگر سور کا گوشت بھی کوئی مسلمان کھا لے تو ایمان نہیں جاتا ہاں سخت گناہ ہوگا۔ اور اگر بھول کر یا کسی نے بلااطلاع کھلا دیا تو سمناہ بھی نہیں۔ ہاں جن کر اگر کھا یا بتو گنہگار ہوگا۔ اور اگر بھول کر یا کسی جوالی باتوں سے جاتار ہے۔

ایک مرتبہ حضرت مولانا گنگونگ رام پورے آئے ہوئے اسلام گرنظہرے وہاں ایک خال صاحب پہنے ہے مہمان منتے۔ وہ حضرت کی خدمت میں آگر بیٹے۔اب خی صاحب کو پکھے خیال ہوا کہ حضرت سے پکھے باتیں کرنا چاہمیں اور باتیں بھی ایسی ہونی چاہمیں جوان کے نداق کے موافق ہول۔ تو آپ پوچھے ہیں کہ حضرت وہ کون کی چھوٹی جھوٹی باتیں ہیں جی سے ایمان جاتا

ہے حضرت نے بنس کرفر مایا کہ جیموٹی جیموٹی ہوتوں سے ہی را ایمان نہیں جاتا ہے وتو فوں کا جاتا ہے(چھوٹی ہاتوں ہےآ پ کی مراد کیا ہے) خاں صاحب شرمندہ ہوئے اور تاویل کی غرض ہے کہا که حضرت یمی کفروشرک کی با تیس ہوجاتی ہیں حضرت نے فر ، یا کہ خان صاحب کفروشرک جب تمبارے یہاں چھوٹی باتیں تو وہ بڑی باتیں کون تی ہوں گی خان صاحب من کر چپ ہوگئے۔ خلاصہ ہے کہ ایمان ایس شے ہیں ہے کہ شیطان کا پیٹاب کی کینے سے جاتارہے۔ بلکہ

اگر شیطان کوکوئی بھون کر کھا جائے جب بھی ایمان نہیں جاتا۔

كانپور ميں ايك واعظ آئے تھے انہوں تے من شر الوسو اس النحناس (وسوسد ڈالنے والے کی برائی ہے) کی تنسیر بیان فرمائی تھی کہ و سو اسے مرادتو شیطان ہے اور خناس سے شیطان کا بیٹا اور بیکہا کہ اس کا قصد میہ داتھا کہ جب آ دم علیہ السلام جنت سے باہر آ گئے تو وسواس حفرت حواعلیماالسلام کے پاس این بچے خناس کولایا اور کہا کہ بید کھلومیری امانت ہے۔حضرت حوا " نے رکھ لیا۔ آ دم جب آئے تو ہو جھا یہ کیا ہے۔حضرت حوا نے فر مایا کہ ایک غریب مسکین آیا تھا ا مانت رکھ کمیا ہے آ دم عبیہ السلام نے فر ما یا وہ شیطان تھا۔غرض اس کونکال دیا۔وہ دوسری بارشکل بدل کر مچرآیا مچراییا بی کردیا۔ کی بار کے بعد آوم علیہ السلام اس بچہ کا قیمہ بنا کر کھا گئے۔ شیطان مسمی وسواس جب آیا اورکہا کہ میرا بچہ لاؤ۔ آ دم علیہ السلام نے فر مایا کہ وہ تو ہم کھا گئے۔وسواس نے ایکارا بیٹا خناس! تو اس نے پیٹ کے اندر ہے جواب دیا کیوں ایا وسواس کیں میعنی ہیں من شر الوسواس النحناس (وسوسدڈ النے وائے کی برائی ہے) کے لینی وسواس تووہ ہے جو باہر ہے وسوسہ ڈالے اور خناس وہ جواندر جیٹھا وسوے ڈالٹا ہے۔

خیر یہ حکایت تزمہمل کپ ہے باقی اگر بالفرض کو کی شخص شیطان کو کھا جائے تب بھی اس كالممان تبيس جاتا-

نشان قدرت

سمناہ میں بھی اس!مرکااعتبار ہے : یکم اور شعوراور عقل اور بلوغ کے ساتھ ہو۔ای واسطے جے جو پچھ کریں ان ہے مواخذہ جیں بلوغ کے بعدوہ مکلف ہوتے ہیں۔اس کومن کراؤ کے تو بہت خوش ہوں کے کہ ہمارے ذ مدہ کھی ہیں۔ ہم تو خوب چھوٹے۔ بیتو سیح ہے کہ تمہارے ذمہ نہیں لیکن ہمارے ذمہ تو ہے کہتم ہے مارکر کام لیس تا کہ بلوغ کے بعدتم کونیک کام کی عادت ہو۔

حدیث شریف میں آیا ہے کہا ہے بچوں کو جب وہ سات سرل کے ہوں نی ز کا تھم کر داور جب دی سال کو پہنچیں تو مارو۔

غرض اس کی و کی اصل نہیں ہے کہ عصر و مغرب کے درمیان کو نا نہ کھا دُیا کہ سوف کے وقت کھانا نہ
کھا وُالدِی سوف کے وقت ستحقین کوخیرات دو۔ اب بجائے ستحقین کے بھٹلی مانگتے ہوئے مجرتے ہیں۔
خیر ہمارے اطراف میں مسلمانوں سے تونہیں مانگتے لیکن بعض جگہ مسلمان بھی ان
کو دید ہے ہیں اور بعض جگہ بیرسم ہے کہ صدقہ میں خاص چیزیں دیتے ہیں۔ ماش کی وال مہیں تیل میں اور بھٹلی بھی
تیل میں نے جوان میں وجہ مناسبت سوچی تو یہ بچھ میں آیا کہ بید تینوں چیزیں کالی ہیں اور بھٹلی بھی
اکٹر کا لے ہوتے ہیں اور بلاکی صورت بھی کالی ہی بچھتے ہیں۔ اس لئے یہ بچھتے ہیں کہ ان چیزوں

یادر کھو! خیرات اگر دو کسی اپنے بھائی غریب کو دواور پھر خیرات میں ایسی چیزوں کی تخصیص نہیں ہے۔ یہ شکون اور مشرکین کی رسم ہے۔ مسلمانوں کو جو تعلیم کی گئے ہے دہ یہ ہے کہ ایسے وقت صدقہ دیں اور جماعت کا اگر اہتمام ہو سکے تو صلوۃ الکسوف جماعت سے پڑھیں اور اپنے کمان ہوں ہے استغفار کریں۔ اس لیے کہ اس کی وجہ حدیث شریف میں بیآئی ہے کہ اللہ تعالی اپنے بندوں کو ڈراتے ہیں کہ ہم کو اتنی قدرت ہے کہ بڑے جسم منور کو بے نور کر دیا تو تم می کا وہ مت کروور نہ

تم بھی عذاب میں جتلا ہو گے۔مولا نافرماتے ہیں _

بازگتاخی کسوف آفاب (چاندگی گتاخی سورج گرمن کا سبب بنتی ہے) اور حدیث میں آیا ہے کہ جب تم اس قسم کی قدرت کی نشانیاں و یکھا کروتم فافنو عواالی ذکر الله لیعنی اللہ کے ذکر کی طرف البتی ہوج یا کرو۔ایسے ہی اگر آندھی آئے یا آگ لگ جائے تواس وقت بھی ذکر اللہ کیا کرو۔ ذکر اللہ کی وولت

سیحان الله کیا تعلیم ہے ہیں ہے دوفا کدے ہیں اول تو گناہ معاف ہوں گے۔ بیتو آخرت
کا تمرہ ہے اور دنیا میں بید کہ دل کواطمینان اور چین ہوگا۔ اس لئے کہ ارش دہے
الا بلد کر الله قطمنن القلوب '' یعنی خبر دار ہوا شدنگ کی یاد ہے قلوب مطمئن ہوتے ہیں''
بی ہے فدائے پاک کے نام میں اس قدر حلاوت اور چین ہے کہ کی میں نہیں۔ بلکہ چین
کا تحقق ہی بجز اللہ کے نام کے کی شے میں نہیں اس لیے کہ الاحرف حرف عبیہ ہے۔ اور ' بذکر اللہ''

کے تقدیم کے ساتھ جومفید حصر ہے فر ہ یا ہا اور اطمینان کے معنی عربی میں سکون کے ہیں۔ چن نی اس کا تجربہ کے جیب ذکر اللہ قلب میں رہ جا تا ہے تو اس کونہ کوئی گھرا ہے کی شے اور نہ کوئی قرحت کی چیز ہلا سکتی ہے چنا نچہ ارشاد ہے لا یعن نافع عالا سحبر لیعنی بردی گھرا ہے لیعنی قرحت کی چیز ہلا سکتی ہے چنا نچہ ارشاد ہے لا یعن نافع عالا سحبر لیعنی بردی گھرا ہے لیعنی قیامت ان کوئمگین نہ کرے گی ۔ ایک بردگ فرماتے ہیں ۔

عاشقال راباتی مت روزمحشر کارنیست ﴿ ﴿ عَشْقَال راجز تماشائے جمال یار نیست ﴿ عَاشْقُول کُوفِیا مت مِن اور کُولِی کام نبیس ہوگا سوائے جمال یار کے دیکھنے ہے)

چنانچ صدیث شریف یس آیا ہے کہ روز قیامت باوجوداس کے کہ بچاس بزار برس کا ون بوگا۔ کین مومن پرایدا گر رجائے گا کہ جیے فرض نماز کا وقت۔ ہی جب ایسی شدید گھرا بہت ہے بھی وہ نہ گھبرا کیں کے تو دنیا کے بولنا کہ واقعات تو اس کے سامنے پچھ بھی نہیں ان سے مومن کیوں از جارفتہ ہوئے لگا ہے حالا نکہ تیامت کی گھبرا بہت اور شدت ایسی بولنا کہ ہے کہ جس کی شیعت جن تعالی ارشاد فرماتے ہیں۔ یابھا الناس انقوا ربکم ان زلز لة الساعة شیء مطیم یوم ترونھا تذھل کل مرضعة عما ارضعت و تضع کل ذات حمل حملها وتری الناس سکاری و ماہم بسکاری و لکن عذاب الله شدید. توجواس سے وتری الناس سکاری و ماہم بسکاری و لکن عذاب الله شدید. توجواس سے

مامون ہے یہاں کے ابدوال سے کیا متاثر ہوگا۔ چنا نچہ شخ شیرازی اس کوفر ماتے ہیں ۔ موصد چہ بر پائے ریزی زرش اللہ چہ فولاد ہندی نہی برسرش امید و ہراسش نہ باشد زکس اللہ جمیں ست بنیاد توحید و بس

(مؤ حد کے پاؤل پر چاہے دنیا کی دولت ڈال دی جائے یا اس کے سر پر تلوار رکھ دی

جائے اس کوکسی ہے امید ہوتی ہے اور نہ خوف تو حید کی ایسی بنیاد ہے) غرضہ کہ میں میں میں میں میں انسان کر میں اس کا میں میں انسان کر میں اس کا میں میں کا میں انسان کا میں میں کا می

غرض کیسی ہی شدت اور پریشانی ہوذکر امتدالی دولت ہے کہ اس سے سب بھاگ جاتی ہے۔
افلاطون موی علیہ السلام سے ملا اور پو بچھا کہ اگر آسان کی کمان ہو اور حوادث تیر ہول
اور زمین نشانہ ہوتو آ دی کہاں جائے۔ موی نہیہ السلام نے فور آ جواب دیا کہ تیرا نداز کے پاس
جاکر کھڑا ہوج کے۔افلاطون بورا کہ یہ جواب بجز نبی کے کوئی تبیس دے سکتا۔

مراس کے باوجودا کٹر حکماء حضرات انبیاء علیہم السلام کی نسبت یہ کہتے ہے کہ یہ بی تو ہیں مگر ہمارے لئے نہیں صرف جہلا کے لئے ہیں۔ حالا نکداس پرسب کا اتفاق ہے کہ نبی جمعوث نہیں بول سکتا۔ اور مویٰ عدیہ السلام خود کہتے ہیں کہ میری نبوت خاص نہیں جہلاء کے ساتھ ۔ بس حکماء

کا مذرمبمل محض ہے۔

غرض! ذکراللہ وہ ہے ہے کہ حق تعالیٰ کا اس ہے قرب ہوتا ہے۔اور تمام مصائب کا علاج ہے جب جا ہے تجربہ کرلو کہ ایک ہی تشم کا حادثہ اگر دوشخصوں پر ٹازل ہو تو ان میں ہے جوتمازی وصاحب نسبت ہوگا اس پر وہ خفیف ہوگا اور غیر نمازی یاغیرصاحب نسبت بروہ بہت تفیل اور شعرید ہوگا۔اس کے کہ فرہایا کہ سوف کے دفت ابتد کی باد کی طرف متوجہ ہوجاؤ۔

خسوف اورنكاح

ا یک بات سیمشہور ہے کہ کسوف وخسوف کاوقت منحوس ہوتا ہے۔ایسے وقت نکاح یا کوئی شادی کی تقریب نہ کرنا چاہیے۔ میں نظام آباد علاقہ حیدرآباد میں اینے بھتیج کا نکاح کرنے گیاتھا جودن اورجو وفتت نکاح کے سلے قرار پایا تھااس وفت خسوف ماہ ہو گیا۔اب وہاں کے لوگوں میں کھلبلی پڑی کہ ایسے وقت میں کیا نکاح ہوگا۔اورا گرایسے وقت نکاح کیا تو تمام عمرنحوست کا اثر رہے گا۔ بہت سے جنٹلمین بھی ان مہملات میں جتلا تھے چنانچہ جمع ہوکرمیرے پاس آئے اور بیر کہا کہ عرض كرنا ہے ميں نے كہا كه فرما يے كہنے لكے كيا جا ندگر بن كے وفت بھى نكاح ہوگا۔ ميں نے كہا اس وفتت تو زکاح کرنا بہت ہی اولی وافضل ہے اور میرے پاس اس کی دلیل بھی موجود ہے۔ وہ بیہ ہے کہ آپ صاحبوں کومعلوم ہے کہ ہم ابوطنیفہ رحمۃ الله علیہ کے مقلد ہیں اور پیجی

معلوم ہے کہ خسوف کے وقت ذکراں تدونو افل میں مشغول ہونا جا ہے۔

اب بیجھے کہ امام صاحب فرماتے ہیں کہ نکاح میں مشغول ہونا نوافل میں مشغول ہونے ہے انضل ہے۔ پس ایسے وفت نکاح کا شغل اور بھی افضل واولی ہے ان سب نے اس کوشدیم کرلی۔ یں نے بیان تو کر دیالیکن میرے دل میں ان لوگوں کے خیال سے ایک انقباض رہا اور پیے وعا کی کہاے امتد! جلدی جاند صاف ہوجائے ۔ اگراس حالت میں نکاح ہوا اور بعد میں کوئی حادثہ تقدیرے چیش آیا توان لوگول کو کہنے کی تنجائش ہوگی کدایسے وفتت نکاح کیا تھا اس لئے ہیے بات چیش آئی۔اللہ کی قدرت تھوڑی دہریش جا ندصاف ہوگیا۔سب خوش ہو گئے اور نکاح ہو گیا۔ ببرحال ان اختر اعات اور خيالات كوچيوژ يا جا ہے۔

بيرسب مضمون ٢٨ تاريخ پريادة حميا تعا-ايك بات اورضروري يادآني وه بيه كرآج ٢٨ ب اوركل ۱۲۹ور پرسول كادن مشكوك ہے اگر ۲۹ كوچا ندنظر آسميا تو عيد ہوجائے گی۔ بياسلنے كہا كيا ك عوام الناس كاشايدشيدر ہے كہ جا ندوم شعبان كويماں تو تظرآ يائيس ۔اس لئے يمهال كے حساب ے آج ۲۸ تاریخ نہیں بلکہ ۲۷ ہے اس لئے اطلاع کی جاتی ہے کہ باہر سے خبریں معتبر آگئی ہے اس لئے ایک روز ہ ابھی رکھنا جاہے۔

بعض لوگوں کو بیشہ بھی ہوتا ہے کہ بمیشہ ہی نفیخا ہوتا ہے۔ اس سے تو بہتر یہ ہے کہ ۱۳ شعبان کو بمیشہ روز ورکھ لیا کریں۔ اگر خبریں آگئیں تو رمضان میں مجسوب ہوجائے گا۔ ور شکل ہوجائے گا تو یا درکھوکہ اس دن کے روز ورکھنے کو فقہا ، نے مکر دو نکھا ہے البتہ خواص کوجائز ککھا ہے اور وجہ فرق کی میہ کے اگر عوام کو بھی اجازت و یدی جائے تو تھوڑے دنوں میں ایسا ہوگا کہ اگر شعبان کی طرح رمضان مجمی تمیں دن کا ہوا اور روز و شروع کیا تھا۔ ۳۰ شعبان سے جس سے ۲۹ رمضان کو پورے ۳۰ دن بھی تمیں دن کا ہوا اور روز و شروع کیا تھا۔ ۳۰ شعبان سے جس سے ۲۹ رمضان کو پورے ۳۰ دن ہوجا کیں گئے تو عوام الناس رمضان کی ۲۹ تاریخ پوری کر کے ۱۳۰۰ تاریخ کو عید کر لیا کریں گے۔ اور سے مہیں گئے ہیم نے تمیں روز بے تو رکھ لیے ۔ اس لیے عوام کومنع کیا جا تا ہے اور خواص کواجازت ہے۔ بہرے لیکل ۲۹ تاریخ ہے۔ بیسب مضایین اخیر تاریخ کے اوپر یا دائے گئے ۔ اب جس اصلی مضمون بیان کرتا ہوں۔ جانا جا ہے کہ جسے اختیام موجود کے بیان مضامین بیان کے گئے تھے۔ بیان کرتا ہوں۔ جانا جا ہے کہ جسے اختیام موجود کے متاب کی مضامین بیان کے گئے تھے۔ بیان کرتا ہوں۔ جانا جا ہے کہ جسے اختیام موجود کی مصامین بیان کے گئے تھے۔

اختثام واكمال مجامده

اب ضروری معلوم ہوتا ہے کہ اختیام مجاہدہ کے متعلق مضمون بیان کیا جائے۔ اختیام کے مناسب بیا تیت ہے جو میں نے تلاوت کی ہے۔ میں پہلے سے بیان کر چکا ہوں کہ دوسرے لوگوں کے مجاہدوں میں چندگوتا ہیال تھیں۔

اول توان کواخت م ند تھا۔ دوسرے یہ کدان میں پسر یعنی سہولت نہیں تھی اور جس قدر بھی مجاہدات ایسے میں کدان میں وحی کی اعانت نہیں ہان میں تیسیر کی رعایت نہیں۔ مہت دشواری ہے اور بھی اس مجاہدہ کا خاتمہ نہیں ہے کو یا مجاہدہ ہی کواصل مقصود بیجھتے ہیں۔

تیسری کوتانی پیہے کہ اس قدر مجاہدہ جب کوئی کرتا ہے تواس کو عجب ہوجاتا ہے کہ بیس ہڑا کام کرتا ہوں اور پچھ حاصل نہ ہوا تواس مجاہدہ کو بیکا تبجھتا ہے چنا نچے اہل مجاہدہ کواس قسم کی آفتیں بیش آتی ہیں۔ اکثر ذاکر وشاغل شکایت کیا کرتے ہیں کہ ہم کوکوئی نفع نہیں ہوا۔ بید شکایت وہ کی شخص کریگا جواہبے کو ستحق سمجھےگا۔ بیشکایت ٹی الواقع وموی ہے اشتحقات کا۔ اور دلیل عجب کی ہے۔ چوتھی کوتا ہی مجاہدہ میں بیتھی کہ اگر مجاہدہ میں پچھٹمرات مرتب ہوں گے توان کوئی تعالیٰ کی تعمد سے محتر کے توان کوئی تعالیٰ کی تعمد سے محتر کے کہ اس کوئمرہ ایے عمل کا سمجھےگا۔

یا نچویں کوتا ہی ہے کہ چونکہ ان کے مجاہرہ کا اختیام نہیں ہے اس لئے ہمیشہ ہمیشہ کود نیا کی

لذات ہے محروم رہیگا۔ چنانچہ بہت مجاہدا ہے ہیں کہ گوشت ، تھی میوہ جات نہیں کھاتے اور جب پیعتیں ان کومیسر نہ ہوں گی۔ توشکر بھی حق تعالیٰ کا ان پر نہ ہوگا۔

الله تعالی ان سب کا جواب اور مجاہدات ارشاد شدہ کی شان اس آیت میں بیان قرماتے ہیں چنا نچے ارشاد ہے الله بکم الیسسوولا یوید بکم العسر یعنی الله تعالیٰ تمہارے ساتھ سبولت کا ارادہ فرماتے ہیں اور تم بریخی کا ارادہ نیس کرتے۔

بیابطال ہے اس کوتا ہی کا کران کے بجاہدات میں دشواری ہی دشواری ہے بیہال تو بدیات نہیں ہے۔ چنا نچہ جن مجاہدات کی تعلیم کی گئی ہے۔ وہ سب نہایت اطیف اور ہماری طبیعت اور قداق کے موافق اور نفع میں سب مجاہدوں سے بڑھ کر ہیں۔ (کما بینا بالادلة فی المواعظ السابقة) آگے ارشادے ولتک ملوالعدة. اور تاکیم شارکو پورا کرلو۔

اس کوتا ہی کا ابطال ہے کہ ان کے مجاہدہ کا کہیں خاتمہ ہی نہیں اور نہ اس میں اکمال ہے مہاں افتقام بھی ہے اور اکمال بھی۔ ایک کوتا ہی ریقی کہ مجاہدہ کر کے ناز ہوتا تھا۔ اور بیاس طریق میں خت مضر ہے اس کو وقع فر ماتے ہیں۔ ولت کبو واللہ علیٰ ماھد کھ ، لیمنی تا کہتم اللہ کی بڑائی بیان کرواس پر کہاس نے تم کوراہ بتائی لعلکم تشکو ون . تا کہتم شکر کرو۔

یران بیان روس پر دین سران کے مجاہدہ کے اختیار کرنے میں ہم اور لذات سے محروق تھی اور ندات سے محروق تھی کو نعمتوں کا شکر بھی ادانہ ہوتا تھا۔ اللہ تعلیٰ فی الی قربائی کہ خوب سب پچھ کھا و بیواور شکر کرو۔

بعض مفسرین نے 'التکبرو الله علیٰ ماہدا تھم '' ہے تکبیرات عیدین مراد کی ہیں یعنی روزوں کے شارکو پورا کرنے کے بعد اللہ اکبراللہ اکبر عید کی نمازش کہو۔ میں نے اس کوا ختیار نہیں کیا۔ اس لئے کہ میراؤ وق اس ہے آئی ہے اس لئے میں نے اپنی تفسیر میں بھی اس کوا ختیار نہیں کیا۔ اس لئے کہ میراؤ وق اس ہے آئی ہے اس لئے میں نے اپنی تفسیر میں بھی اس کوا ختیار نہیں کیا۔ اس لئے کہ میراؤ وق اس ہے آئی ہو اجمالاً اس آیت کا حاصل ہے۔

لیکن اس سے بھی میرے دول کی تا ئید ہوتی ہے بیتو اجمالاً اس آیت کا حاصل ہے۔

مجامده كيآسانيان

اب میں تفصیلا اس کی شرح کرتا ہوں قربتے ہیں کہ القد تعالیٰ تمب ری آسانی چاہتے ہیں۔
منجملہ آسانیوں کے آسانی توبیہ ہے کہ مجاہدہ کو ختم فرمادیا۔ اور خود عین مجاہدہ کے وقت بہت آسانیاں
میں۔ چنا نچے اعتکاف میں یہ سہولت فرمائی کہ مسجد میں اس کو مشروع فرمایا تا کہ خلوت وراجمن
کا مضمون ہوجائے۔ اعتکاف سے آدمی اس کا خوگر ہوج تا ہے سب سے الگ ایک کوشہ میں بھی
ہیٹھے ہیں اور سب کے ساتھ شریک بھی ہیں۔

از برول شوآشا واز درول بيگانه وش الله ايل چنيس زيباروش كمتر بود اندر جهال

(کسی کے فلا ہر ہے آ شار ہواوراس کے باطن کی کھود کر یدمت کرداور بیاتی مناسب روش ہے کہ دنیا میں تم یائی جاتی ہے)

لاخلاد لاملاء دل بیاد دست بکاراء کاف کی شان ہے۔ اگر بالکل تنبائی کا تھم ہوتا توفنس پر بہت گراں ہوتا۔ ای طرح رمضان کے روز ہ کود کیسے بظاہراس میں مشقت ہے لیکن واقعہ میں بہت آسان ہے چنا نچفل روز ہ کا اگر بھی اتفاق ہوجا تا ہے تواس میں بہت مشقت معلوم ہوتی ہے اور رمضان المبارک کی ایسی برکت ہے کہ اس میں پچھ بھی مشقت معلوم نیس ہوتی۔ رمضان کی برکت اس قدر صاف اور کھلی ہوئی ہے کہ اس میں پچھ بھی مشقت معلوم نیس ہوتی۔ رمضان کی برکت اس قدر صاف اور کھلی ہوئی ہوئی ہے کہ جس کو بچھ بھی احساس ہودہ ہے کا کھلے اس کا اور اک کرتا ہے۔

شب برات کے دن جن لوگوں نے روز ہ رکھا تھا وہ اس روز ہ کا اور رمضان المبارک کے روز ہ کا مقابلہ کرکے دیجھیں ۔ اس روز ہ جس بہت مشقت معلوم ہو کی تھی اور رمضان المبارک جس پچھی نہیں اہل مجاہرہ یہ بات کہاں ہے ان تمیں گے۔ ان برکات کاعلم بجز وحی کی تعلیم کے کسی ڈریجہ ہے معلوم ٹیمیں ہوسکتا ۔

گرمصور صورت آل دلستال خواہد کشید جہ لیک جبرانم کہ نازش راجیال خواہد کشید (اگرمصوراس مجبوب کی تصویر کھنچ گا)

(اگرمصوراس مجبوب کی تصویر کھنچ گا تو میں جبران ہوں کہ اسکے ناز واوا کی تصویر کیسے کھنچ گا)

تراوی کے اندر جوآ سانیاں جیں وہ بھی مختی نہیں جیں آ گے ارش و ہے۔ ولت کے ملو العدة (تاکہ کتی مکمل کرو)۔اس کی ترکیب میں مفسرین کے مختلف اقوال جیں بعض تو یہ کہتے ہیں کہ اس

ر ما ر ما من من مرور المرتب على سرين المعدة الما من المعدة الما من المعدة الله هذه الاحكام لارادة المتيسير ولا كمال العدة المخر (التدتبال في الما كام كور سافى اور كنتى لوراكرف كي لي المعدة الاحكام كلام مير المعدة الاحكام لتكملوا العدة المعدة المع

ہوئے)اور بدحذف وا دُکے بعد ہے اورا یک بزرگ کے کلام سے میری سمجھ میں ہے آتا ہے کہ میہ حذف وا دُکے قبل ہے اور لتک ملو ا (تا کہ گنتی پورا کر و) کامعطوف عدید مقدر ہے۔

اس میں ایک بجیب کت ہے وہ ہے کہ بیتو مسکد مشہور وسلم ہے کہ تخ افعال کے افعال معلل بالا نحراض نہیں ہیں نیکن ان بیل حکمتیں ضرور ہیں۔ اور کہیں کہیں جن تعالیٰ نے اپنے افعال کی حکمتیں بیان فرمائی ہیں۔ اس سے شہہ یہ ہوتا ہے کہ شاید یک حکمتیں مقصود بالذات ہوں۔ احکام فی نفسہا مقصود نہ ہول۔ اسلے ضرورت ہوئی کہ اس شبہ کو دفع کیا جائے۔ اس لئے بعض جگہ اس حکمت برحرف عطف کا مقتقا مفارکت سے متعاطفین کی اور معطوف علیہ کو حذف فرماد یا اور جو ککہ عطف کا مقتقا مفارکت ہے متعاطفین کی اور معطوف سے استہار حکمت ہوگا۔ عدم اعتبار حکمت۔ جس

8 " حسل میہ ہوگا کہ میا دکام اس لئے بھی وضع فرہ نے کہ حاصل اس حکمت کا یہاں میہ کہم شارکو کامل کراولیعن مجاہدہ کوختم کردواورختم بھی ایس کیا کہ اس تاریخ پراگر کوئی فتم نہ کرے تو مجرم ہوگا۔ اس کی اسک مثال ہے جیسے ماں بچہ کواصرار کرے کہ میہ شے کھالو۔ ای شفقت ہے۔ بلکہ اس سے بدر جہازیادہ سے حق تو گی اینے بندوں کو کھلاتے ہیں۔

اگرکوئی شبکرے کیاں سے تو یہ معلوم ہوتا ہے کہ عمید کے دن کھانا فرض ہے حالا نکہ کھانا فرض ہیں۔
جواب سیہ کھانا دوشم کا ہے ایک بالقوہ دوسرے بالفعل۔ بالفعل تو ظاہر ہے کہ تحقق کھانے کا ہوا در بالقوہ بیہ کہ کھانے کی قوت یعنی نیت روزہ کی ہواگر چہنہ کھائے۔ پس مجاہدہ ہر حال میں ختم ہوجائے گا۔ اس لئے کہ مشقت تو نفس کوائی وجہ سے کہ وہ بیہ ہوئے ہے کہ کھانے کے لئے رات ہی کو مطلح کا ورجب جو نتا ہے کہ جب چا ہوں کھاسکتا ہوں تو مجاہدہ ختم ہوگیا۔ مصلح سے الی م

ایک بات ضروری قابل اطلاع یاد آگئ ۔ وہ یہ ہے کہ عوام عید کی تیج کوئی کرتے ہیں کہ دوزہ و کھول لو۔ ہم بچپن ہیں بہت دنوں تک یہی بچھتے تھے کہ آئ بھی روزہ ہوتا ہے اور شب میں ہوتا ہے کو یا در کھول لو یہ معلوم ہوتی کو یا در کھول او یہ معلوم ہوتی ہے کہ آئے کھول آئے روزہ نہیں ہے کو یارمضان المبارک کے ہے کہ آیک ماہ تک جوروزہ رکھا ہے تو آئے یہ طام کر دو کہ روزہ نہیں ہے گو یارمضان المبارک کے ہون کی ماہ تک جوروزہ رکھا ہے تو آئے یہ طام کر دو کہ روزہ نہیں ہے گو یارمضان المبارک کے ہون کے گئے ہوتا ہے افسار ہے ہوتا کہ افسار ہے اور ان کے تمام مینے کے دنوں کا ایک افسار ہے کہ تی اور دنوں میں افسار اصغر تھا آئے افسار اکبر ہے آگر کوئی کیے کہ مجاہدہ تو ساری عمرضر دری ہے اس لینے کوئس ہے تو کسی دفت بھی امن نہیں ہے مولانا فرماتے ہیں ۔

نفس اڑ دہاست او کے مردہ است ہے ازغم بے آلتی افسردہ ست (نفس اڑ دھا ہے ہو ہوں است ہے التی افسردہ رہتا ہے) (نفس اڑ دھا ہے دہ می مرتا البتہ اپنی آگ کے سرد ہونے کی دجہ سے افسردہ رہتا ہے) اور فرماتے ہیں ۔

صد ہزارال دام ودانہ ست اے خدا ہے ہاچومر غال حریص ہے نوا ومبدم پابستہ دام نوائی ہے گرہمہ شہباز وسیمر نے شویم ومبدم پابستہ دام نوائی ہے گرہمہ شہباز وسیمر نے شویم (ونیا ہل سینکٹرول جال اور دانے بکھرے ہوئے ہیں اور ہماری مثال بھو کے لالچی پر مدول کی طرح ہے اگرہم شہباز اور سیمرغ ہی کیول نہ ہوجا کیں پھر بھی قدم قدم پراپنے جالول ہیں پھر بھی جاتے ہیں)

توجواب اس كايه ہے كەعلى الاطلاق مجامدہ كا اختيام نہيں ہوا كه اسكے بعد كسى تسم كا مجامدہ نہيں

ہوگا۔ بلکہ ایک خاص تسم کا مجامدہ ختم ہوگیا۔ اس لئے کہا گروہ متواتر علی امدوام رہتا تو نفس کواولا بے حد شاق ہوتا۔ اس لئے اس میں حق تعالی نے تعاقب رکھا ہے کہ چند روزہ مجامدہ کرواور چند رہ: آرام کرو۔ اور بعد بے حدمشقت کے پھراس مجامدہ کا اثر ضعیف ہوکر مجامدہ نہدوہ طبیعت بن جاتا۔ چنا نچے جولوگ کھا تا چینا حچھوڑ دیتے ہیں ان کی آئتیں اور معدہ خشک ہوجا تا ہے اوران کواضطراب اوراشتہا نہیں رہتی تو ان کے نہ کھانے میں کوئی کمال نہیں ہے۔ سوہان روح اور علاج نفس تو یہ ہے کہ بھی کھا کیں اور محدہ خشک میں اور محدہ خسا کے میں کوئی کمال نہیں ہے۔ سوہان روح اور علاج نفس تو یہ ہے کہ بھی کھا کیں اور بھی نہ کھا کیں۔

ای واسطے تحققین نے تقیمین مکہ کورائے دی ہے کہ بھی ان کو مکہ سے چلا جاتا جا ہے کہ نشاط ک تجدید ہوتی رہے کیونکہ دوام کے اندر شوق بھی بجھ جاتا ہے اور عادت کی ہوجاتی ہے۔ ای واسطے روز ہ نفل میں صوم اللہ فضل نہیں ہے بلکے افضل ہے کہ ایک دن روز ور کھے اورایک دن افظار کرے تاکہ نہ

بہت شاق ہونہ بالکل عادت ہوجائے اوراس میں حق تعالیٰ کی نعمتوں کی قدر بھی رہتی ہے۔

نیز ہم لوگ بہت ضعیف میں جوعبادت سہولت سے ہوتی رہے وہ تو ہم سے ہوتی رہتی ہے اوراس میں حق تعالیٰ کی محبت بھی باتی رہتی ہے اور زائد مشقت کے متحمل نہیں ہوتے اور نسس کوکلفت زائد ہونے سے محبت میں بھی کمی ہونے گئی ہے۔

وست را مد ہوئے سے جب میں میں موسف کا ہم اوگ عاشق احسانی ہیں ذات کے عاشق ای واسطے ہمار بے حضرت فر مایا کرتے تھے کہ ہم لوگ عاشق احسانی ہیں ذات کے عاشق نہیں ہیں۔خلاف طبع وثیر آنے سے القدمیاں ہے بھی ایک گونہ تکدر ہوجا تاہے۔

ایک صدیمت قدی میں آیا ہے جس کو قاضی ثناء اللہ نے تفسیر مظہری میں نقل کیا ہے کہ حق تعالی فرماتے ہیں کہ میں آیا ہے کہ حق تعالی فرماتے ہیں کہ میں اپنے بندوں کو خوب جانتا ہوں۔ ان میں بعض ایسے ہیں کہ اگر میں ان پر نقر مسلط کردوں تو وہ کا فر ہو جا کیں۔ اس لئے ان کو نقر سے بچاتا ہوں اور بعض ایسے ہیں کہ اگران کو غنی کردوں تو کفر کرنے گئیں۔ اس لئے ان کوئی اج رکھتا ہوں۔

وی دروں پر اس واسطے بعض ایسے ہیں کہ ہمیشہ بیارہی رہتے ہیں اور بعض تندرست رہتے ہیں جوحالت جس مخص کے لئے تجویز فر مادی ہے وہی اس کے لئے بہتر ہے اوراس میں مصلحت ہے۔ ریکھو! ماں اگر بچہ کومٹھائی نہ دے تو وہ اس کی مصلحت کوجائتی ہے ۔

آئکس کہ توائکرت نے گرداند ہے او مصلحت تو از تو بہتر داند (جوفض تجھے امیر نہیں مانتاوہ میری مصلحت تجھ سے بہتر جانتا ہے)

ر ہوں ہے، بیروں ہارہ بیراں اسے ایس اللہ ہے۔ اگر وائی مجاہدہ ہوتا تو بندے اکت جاتے۔
ای واسطے تن تعالی نے مجاہدہ میں تعدید کھر مجاہدہ مقرر فرمایا کیفس کونشاط رہے۔ اور نعمت کی قدر ہو۔
ایک زمانیا رام کامقرر فرمادیا۔ اس کے بعد پھر مجاہدہ مقرر فرمایا کیفس کونشاط رہے۔ اور نعمت کی قدر ہو۔
ایک واسطے ہمارے حضرت کے ایک مرتبہ فرمایا کہ میاں اشرف علی جنب بانی ہو شھنڈ ابیوتا کہ بال

TALK IN

بال عظريادا بو اوراكرم يانى بوك توزبان عنوالحمدللد كبوكردل عالحمدللد فكالم مشابده جمال حق

اس واسطے شکر کی نیت ہے اگر کوئی احجما کھانے کھائے اوراحچما کپڑا پہنے تواس کے لئے افضل ہے گونا واقف طعن کرین خسر وای مضمون کو کہتے ہیں۔

بات میگوید که خسروبت پرتی میکند میند آرے آرے میکنم باخلق وعالم کار نیست (ونیاکہتی ہے کہ خسروبت پرتی کرتاہے ہاں ہاں کرتا ہوں مجھے دنیا دخلوق سے کوئی کا م نیس ہے)

ردی بی ہے۔ سروی پی روہ ہے ہاں ہوں نے عرض کیا کہا ہے اللہ مجھے ساری عمر کارز ت ایک دم ایک بزرگ کی حکایت ہے کہ انہوں نے عرض کیا کہا ہے اللہ بخصے ساری عمر شیطان مجھے ہے وید ہیجئے تھم ہوا کہ ہمارے ومدہ پراطمینان نہیں؟ عرض کیا اطمینان تو ہے مگر شیطان مجھے بہکا تا ہے کہ تو کہاں سے کھائے گا تو میں کہدوں گا کہائی میں سے کھاؤں گا۔

پس باوجود محبوب ہونے کے بعض میں ایک تسم کا ضعف ہوتا ہے اور توت یقین میں ایسے لوگوں کے فرق نہیں ہوتا۔ یہ ضعف طبعی ہوتا ہے۔ ایسے لوگ اگرامچھا کھا نمیں احجھا پہنیں تو کہ محرج نہیں ہے۔ اسے لوگ اگرامچھا کھا نمیں احجھا پہنیں تو کہ محرج نہیں ہے۔ اس لئے کہ غرض ان کی میہ ہوتی ہے کہ جوذرہ اللہ تعالیٰ کی محبت کا قلب میں ہے وہ ضائع نہ ہوجائے ان کے لئے یہ تعتیں ذریعہ ہوجاتی ہیں مشاہرہ جمال حق کی اور جن کے لئے سبب غفلت کا ہوں ان کے لئے پر ہمیز لازم ہے۔

خلاصہ یہ ہے کہ ہر محفق کی طبیعت جدا ہے علاج جدا ہے۔سب کوایک لکڑی ہا نکنا یا ہرا یک کواینے اوپر قیاس نہ کرنا جا ہے۔ آ گے ارشاد ہے و فت کبروا الله علمیٰ ماہدا کم بیابطال ہے اس کی کا جواہل مجاہدہ کو کبھش اوقات مجاہدہ سے چیش آجاتی ہیں۔

تفصیل اس اجمال کی ہے کہ شدہ مجاہدہ سے بعض اہل مجاہدہ کوجب پیدا ہوجاتا ہے اور مجاہد ہے بحت ہے کہ شدہ مجاہد سے جمتا ہے کہ میں جو کچھ کرتا ہوں ہیں بڑی شے ہاور سے بہت بڑا مرض ہے اپنے کو میخص مستحق شمرات مجھتا ہے اور جب وہ شمرات نہیں حاصل ہوتے تو دل میں حق تعالیٰ کی شکایت پیدا ہوجاتی ہے اور جا نتا ہے کہ جو کچھ میر سے ذمہ ہے وہ میں ادا کرتا ہوں اور جو اللہ تعالیٰ کا ذمہ ہے وہ (نعوذ باللہ) ادائیوں فر ماتے حالا نکہ کا م مقصود ہے ۔ شمرات مقصود نہیں ہیں ۔ یہ کیا تھوڑ انفع ہے کہ میر کرتے کو گئل کرنے کی تو فیل عطافر مائی۔

بهار بياعال

ہارے مفرت ایسے موقع پر بیشعر پڑھا کرتے تھے۔ یابم اورایانیا بم جبتو ئے مکنم ﴿ حاصل آید یانہ آید آرزوئے مکنم (شرائ و لرا برائی با کرائی جہوکر تار ہتا ہوں مقصود حاصل ہویا نہ ہوا رز دکر تار ہتا ہوں)

مولا تا نے ایک حکایت لکھی ہے کہ ایک ذاکر ہتے ہمیشہ رات کواٹھ کر تماز پڑھتے ذکر کرتے ایک مدت کر رکنی۔ ایک مدت کر رکنی۔ ایک شیطان نے بہکایا۔ بی جس آیا کہ است دن ہوگئے امتدکا نام لیتے ہوئے نہ ادھرے سلام ہے نہ بیام ہے بیعضت ہماری اکارت بی گئی۔ بیسوج کر سور ہا۔خواب جس تھم ہول کفت آس امقد تو لبیک ماست کا دیں تیاز وسوز در دست پیک ماست کا است کا دیں تیاز وسوز در دست پیک ماست است کہا ہمارا امتد کہنا ہی اماری لیسک ہا ور بیما ہزئی اور سوز ودر دہمارے لئے مقاصد ہیں)

ہمارے حضرت نے اس کی شرح اس طرح فرمائی کہ دیکھو کہ اگر کوئی شخص تمہارے سامنے ہمارات میں کوروک دیتے ہوئیں جب تم نے حق تعالی کا نام لیا اور انہوں نے پھر تو گئی دی اور روکا نہیں تو اس سے معلوم ہوا کہ ہماراوہ نام لینا پہند یہ و اور مقبول ہے۔ بیمنی ہیں آل اللہ تو لبیک ماست اور یہ حسرت اور افسوس ہوا کہ ہماراوہ نام لینا پہند یہ و اور مقبول ہے۔ بیمنی ہیں آل اللہ تو لبیک ماست اور یہ حسرت اور افسوس ہوا کہ ہماراوہ نام لینا پہند یہ و اور مقبول ہے۔ بیمنی ہیں آل اللہ تو لبیک ماست اور یہ حسرت اور افسوس ہوا کہ ہماراوہ نام لینا پہند یہ و است اور یہ حسرت اور افسوس ہوا کہ ہماراوہ نام لینا پہند کے وزاری بھی دیل ہے۔ پس گویا یہ پیک حق ہے۔

حقیقت بیں انتدائلہ کر تا ہڑئی نعمت ہے اور ثمر ات کا انتظار کر تابید ل کا چورہے کہ اپٹے مل کواس نے قابل استحقاق اجر سمجھا۔ خدا کی تسم ہے ہمارے اعمال تو اس درجہ کے ہیں کہ اگران پرعماب ہی نہ موتو بسائنیمت ہے کس کے ثمرات اور کہاں کا اجر۔ اگراعمال کے بعد ثمرات ہوں تو وہ رحمت ہے باقی عمل کرنا تو بندہ کا کام ہی ہے خواہ قبول ہویا نہ ہو۔ اگر قبول ہوجا ئے تو عین رحمت ہے۔

ایک بزرگ کے منقول ہے کہ ہم جج کوجاتے تھے۔ راستہ میں ایک نوجوان کو دیکھ کہ نہایت آزادی ہے وران کو دیکھ کہ نہایت آزادی سے جرم اور بیاں بزرگ نے پوچھا کہ صاحب زادہ تمہارے پاس زادہ بیس ہے تم کو تکلیف ہوگی اس نے کہا

وفد علی الکریم بغیر زاد ہن من انحنات والقلب السیم فان الزاد التی کل شی ہے اذاکان الوفود علی الکریم فان الزاد التی کل شی ہے اذاکان الوفود علی الکریم (کریم کے دروازہ پر جماعت کو نیکی اور سلامت قبی کے ساتھ بغیر زادراہ کے جانا چاہیے اس لئے کسی کریم کے دروازے جماعتوں کا زادراہ لے کرجانا سب سے بری چیز ہے) جب سب لوگوں نے احرام بائدھا تو اس نے احرام بڑے سوچ سے بائدھا۔ اس سے بوچھا کہ میاں! تم احرام جلدی کیوں نہیں بائدھتے ۔ کہ کہ اس لئے نہیں بائدھتا کہ ایسا نہ ہوکہ بیلی کہوں لیک اورادھر سے آواز آئے لالبیک ولاسعد یک و حجک مردود علیک ۔ (نہ تیری حاضری منظور ہے نہ تیرے لئے نیک بختی ہے اور تیراجی تھے تی پرلوٹایا جاتا ہے) جب منی میں لوگ قربانی کرنے گے اس جوان نے آسان کی طرف سرا ٹھایا اور عرض کیا کہ میرے یاس قربانی لوگ قربانی کرنے گے۔ اس جوان نے آسان کی طرف سرا ٹھایا اور عرض کیا کہ میرے یاس قربانی

کاجانورتونیس تو صرف بیجان حاضر ہے اگر تبول ہو۔ بیکتے ہی گرااورجال بحی تسلیم ہوا۔
اس پرایک اور حکایت یادآگی۔ ایک صاحب حال نے کو گئے۔ جب بیت اللہ شریف ہینچ تو مطوف نے ان سے کہا کہ بیے بیت اللہ شریف! اس نے بیشعر پڑھا ۔

مطوف نے ان سے کہا کہ بیے بیت اللہ شریف! اس نے بیشعر پڑھا ۔

چوری بکوئے ولیم بیپارجان مضطر ہیں کہ مبادا باردیگر نری بدیں تمنا (اگر تیری پڑھ کو چہ جانال بی بوجانال میں ہوجائے تو اپنی بے قرارجان کو فار کر دینا کیونکہ ایا نہ ہو کہاس تمنا کہ ساتھ تو دوبارہ وہاں نہ بی ہے کہ اس تمنا کے ساتھ تو دوبارہ وہاں نہ بی ہے کہ کہار کرااورجان دیدی ۔

کہ ہمارے اعمال بچر بھی نہیں بھراستی تاق تمرات کیسا۔ بس خدمت کے جاؤ۔ اپنا کام بھی ہے کہ ہمارے انگار کی فرماتے ہیں ۔

کہ ہمارے اعمال بچر بھی نہیں ۔ اور کی شی طلب نہ ہوجا فظ شیرازی فرماتے ہیں ۔

کو بندگی چوگدایاں بشرط مزمل شی کے طلب نہ ہوجا فظ شیرازی فرماتے ہیں ۔

لا تو بندگی چوگدایاں بشرط مزمل کے ساتھ بندگی مت کر کیونکہ ما لک خود جانتا ہے دائی کہا ہے بندوں کی پرورش کیے ہوتی ہوتی ہوتی کہا کہا ہے بندوں کی پرورش کیے ہوتی ہے ۔

خااصہ بیہ ہی کہا ہے عمل پر نظر نہ ہوتا جا ہے ۔ ای خود بینی کو و لت کبرو الله (اور تا کہا لئدگی ۔

خااصہ بیہ ہے کہا ہے عمل پر نظر نہ ہوتا جا ہے ۔ ای خود بینی کو و لت کبرو الله (اور تا کہا لئدگی ۔

خااصہ بیہ ہے کہا ہے عمل پر نظر نہ ہوتا جا ہے ۔ ای خود بینی کو و لت کبرو و الله (اور تا کہا لئدگی ۔

· خلاصہ بیہ ہے کہا ہے مل پر تظرنہ ہوتا جا ہیں۔ای خود بینی کو و لمتنکبر و الله (اور تا کہاللہ کی بڑائی بیان کرو) النع سے ردفر ماتے ہیں۔اس لئے کہ جب حق تعالیٰ کی بڑائی پیش نظر ہوگی تواہبے اعمال اورخودا بی ڈات لاٹی نظر آئیگی اور بجائے عجب کے شکر کر رہا۔ ۔۔ ما

مذاق طبعی کی رعایت

چنانچا گارشاد ہے و نعلکم تشکوون (اوراُمید کم شکرگراربن جاؤگ) اورجیے ول ہے بڑائی کی تعلیم ہائی ارشاد ہے بھی سکھلائی گئے ہے کہ عید کے داستہ میں اللہ اکبراللہ اکبرزبان ہے بھی سکھلائی گئے ہے کہ عید کے داستہ میں اللہ اکبرزبان ہے کہیں اورائی کی سے کہتے جا میں اور نیز پانچوں وقت کی نماز میں بھی ای واسطے تھم قرمایا اللہ اکبرزبان ہے کہیں اورائی کی نظیر ہے نماز کی نیت کے اصل نیت تو دل ہے ہے لیکن زبان سے کہنا بھی فقہاء نے مشروع فرمایا کہ عید کے دن ضرور الحاصل ہے بڑی رحمت ہے کہ مجابدہ کو ختم فرمادیا اور وجو بی کا تھم فرمایا کہ عید کے بارے میں اور شاد فرمایا ہے جا جسے جعد کے بارے میں ارشاد فرمایا ہے فاذا قضیت الصلوة فائتشو وا فی الارض لیعنی جب بھی جعد کے بارے میں ارشاد فرمایا ہے فاذا قضیت الصلوة فائتشو وا فی الارض لیعنی جب بھی فرمادیا۔ ان میں مترق ہوجاؤ ہم لوگ خودا سے بھے کہ نماز کے بعد خودہی بھا گئے لیکن تکم بھی فرمادیا۔ اس میں بھی فدائ طبعی کی میں قدرد عایت ہیں۔ بھول امیر خسر ورجمت اللہ علیہ وجو بی نہیں اور نیز ایسے دلید ورجمت اللہ علیہ دلید و غریب ست گداافرادہ در کوئے شا ہے باشد کداز بہر غدا سوئے فریاں بنگری خدر و غریب ست گداافرادہ در کوئے شا ہے باشد کداز بہر غدا سوئے فریاں بنگری خدر و غریب ست گداافرادہ در کوئے شا ہے باشد کداز بہر غدا سوئے فریاں بنگری

(خسر وغریب ایبافقیرے جو تیری گلی میں پڑا ہوا ہے بس اب مجھے کو جا ہے کہ خدا کے واسطے غریبوں کی طرف نظر کرے)

ان کے لئے بھی انتشار فی الارض کوصلحت سمجھا اوراس میں بردی مصلحت ہے کہ انسانی طبیعت کا خاصہ ہے کہ انسانی طبیعت کا خاصہ ہے کہ ایک کام سے طبیعت اکتاجاتی ہے اور نیز طبائع اکثر ضعیف ہیں۔ جب زیادہ پابٹری ہوتی ہے اوراس سے حرج معابش ہوتا ہے اور حاجت ستاتی ہے توساری محبت رکھی رہ جاتی ہے اس لئے ارشا وفر مایا کہ فائنشروا فی الارض و ابتعوا من فضل الله دیعنی زین میں متقرق ہوجا و اوراللہ کافضل یعنی رزق طلب کرؤ ۔

علاوہ اس کے اس میں ایک تمرنی دسیائی صلحت بھی ہے جس کومیں نے ایک مرتبہ کراچی میں وعظ کے اندر بیان کیا تھا۔ اس طرح سے کہ تمدن کے مسائل جیسے قرآن مجید سے ثابت ہوتے ہیں ایسے دوسری جگہ ہے ہیں ہوتے ۔ چنانچے اس آیت سے بھی ایک مسئلہ مستنبط ہوا کہ بلاضرورت اجتماع نہ ہونا جا ہے۔ اگر بضر ورت ہوتو رفع ضرورت کے بعد فوراً مستشر ہوجانا جا ہے۔

میں وہ مضمون ہے جوتمام اہل سیاست مانے ہوئے ہیں کہ نا جائز مجمع کومنتشر کردیا جائے۔ قرآن مجید میں اس مجمع کے ناجائز بننے سے پہلے ہی محض اس احتمال پر کہ اب ان کوکوئی کام تور ہا مہیں۔ بینا جائز مجمع نہ بن جائے سب کومنتشر کردیا گیا۔اس وعظ میں ایک بڑا عالی رتبہ انگریز بھی تھا۔اس نے بعد وعظ کے صرت ظاہر کی۔

الحاصل مجاہدہ کوئم کر کے گھانے چنے اور عبدگاہ میں جائے اور خوشی منانے کی اجازت وک اور اس میں بھی بیٹیں کہ وکی لہود لعب ہوبلک اس دن میں ایک خاص عبادت مقروفر مائی اور اس کا طرز علیدہ ورکھا کہ شہرے باہر صحواء میں جا کیں اور اچھا چھے کپڑے پہنیں اور وہاں نماز پڑھیں کا طرز علیدہ ورکھا کہ شہرے باہر صحواء میں جا کیا نہ ورکھا کہ اور نماز ول سے اس میں چھے مرجبہ الله اکبر الله اکبر الله اکبر نیادہ کیا کہ جوش سرت میں موحد اور خدا پرست کی زبان سے الله اکبری نکا کرتا ہے۔

اور اس نماز کا طریقہ بھی جداگانہ رکھا کہ اور نماز ول سے اس میں چھے مرجبہ الله اکبری نکا کرتا ہے۔

عرض ہماری فرحت بھی الی ہے کہ اس میں بھی عبادت سے اور مشقت میں بھی راحت ہے بخلاف اور قوموں میں فتی و فجو رتک بخلاف اور قوموں کے کہ ان کے یہاں خوشی کے دن لہود لعب اور بعض قوموں میں فتی و فجو رتک ہے اور اس دن میں ایک طریق اوائے شکر اور اظہار خوشی کا یہ مقروفر مایا کہ اغذیاء پر صدقہ فطر مقرر فر مایا ہے کہ اس کے کہ تو تعالی نے جوئعت ہم پر فائز فر مائی کہ ہم سے روز سے اوام کو گائی کی ایداد کرے اور کم از کم کو وقت کی کھیل بھی ہے۔ اس کئے کہ میں کہ کہ ہے ہو کے ہوئے وار نے شاس کی خوش کی تحمیل بھی ہے۔ اس کئے کہ میں اگر ایک مختص بھی کہیدہ ہوتا ہے تو اس کا اثر سب پر ہوتا ہے تو اس کئے مقرر فر مادیا۔ تا کہ سب مسلمان بھائی آج سیر اور خوش نظر آئیں اور خوش کی تحمیل ہوجائے ور شمتر رفر مادیا۔ تا کہ سب مسلمان بھائی آج سیر اور خوش نظر آئیں اور خوش کی تحمیل ہوجائے ور شمتر رفر مادیا۔ تا کہ سب مسلمان بھائی آج سیر اور خوش نظر آئیں اور خوش کی تحمیل ہوجائے ور شمتر رفر مادیا۔ تا کہ سب مسلمان بھائی آج سیر اور خوش نظر آئیں اور خوش کی تحمیل ہوجائے ور شد

ا پنے بھائی کوا نسروہ و کھے کردل بھٹ جاتا ہے غرض اس میں ادائے شکر بھی ہے اور فرحت کی پنجیل بھی ہے اور اس کے ساتھ معنی صدقہ کے بھی ۔ اس کئے غیر صائمین اور صبیان کی طرف سے بھی ادا کیا جاتا ہے بہر حال رمضان کا تمام مہینہ تو مجاہدہ کا وقت ہے اور عیداس کا اختیام ہے۔

اختنآم رمضان

اس اختیام لیعنی عبید اور مقصود لیعنی مجاہدہ رمضان میں چند امور مشترک ہیں۔ وہ بیہ ہیں کہ رمضان المبارك ميل بعض عبادتيس فرض بين بعض نقل ميں مثلاً روزه ركھنافرض ہے اور تراوت واعتكاف مسنون بين يعيد كون مين بهي بعض عبادتين واجب بين بعض مستحب بين يعيدكي نماز واجب ہے ۔صدقہ فطرواجب ہے اور عسل کرنا ،عطراگانا اوراجھے کپڑے پہننامستحب ہے۔غرض دوسم کی عبادتیں رمضان شریف میں ہیں ضروری اور غیرضروری اور بھی دوہی سم کی عید کے دن میں ہیں۔ میں نے اپنے ایک وعظ میں ای رمضان کے مواعظ میں سے وعدہ کیا تھا کہ فرض اور نقل میں جواثر قرب کا اوراس قرب کے مراتب ہیں جوتفاوت ہے اس کابیان کروں گا۔ سوآج اس كاليفاءكرتا مون اوروه مضمون الجي طرف ع كوئى تكته نه موكا - بلكه حديث شريف بن كالمضمون موكا -بغورسنيئ كدفرائض كانبت حديث قدى من آيا ب كدميرابنده جس قدرفرض اداكرنے ے مقرب بنآ ہاس فدر کسی شے سے نہیں ہوتا۔ اس سے معلوم ہوا کہ فرض بہت بردی شے ہے اورنوافل كي تبت ارشاد ب : لايزال عبدى يتقرب الى بالنوا فل حتى احببته فاذا احببته كنت سمعه الذي يسمع به وبصره الذي يبصربه ويده التي يبطش بها "لیعنی میرابنده بمیشدنوافل ے قرب تلاش کرتار ہتا ہے حتی کہ میں اس کو جا ہے لگتا ہوں اور جب میں اس کو جا ہتا ہوں تو میں اس کا کان بن جا تا ہوں کہ وہ مجھے سے سنتا ہوں اور میں اس کی آ تھے بن جاتا ہوں کہ وہ جھے و کھتا ہے اور ش بی اس کا ہاتھ بن جاتا ہوں کہ وہ جھے پیڑتا ہے اس کا یہ مطلب نہیں الله میاں تو برتوباس کا کان آئکھ ہاتھ ہوجاتے ہیں۔مطلب سے کہ ان اعضاء ہے اس ہے کوئی کام حق تعالیٰ کے خلاف مرضی تہیں ہوتا۔اب غور پیجئے کے فرائف کی خاصیت یہ بیان فرمائی کہ جس قدر قرب ان سے ہوتا ہے اس قدر سی عبادت سے نہیں ہوتا۔ اورنوافل کے بارہ میں بدارشاوفر مایا دیما دیما حاصل ہوتار ہتا ہے جیسالا بنوال یعقوب اس پردال ہے تو حاصل اس کابہ ہے کہ زیادت قرب دوسم کی ہے ایک کیفیہ ادرایک کمیہ کا اوروہ دوتوں مطلوب ہیں تو فرائض ہے تو کیف کے کے اعتبارے قرب بڑھتا ہے اور نوافل سے کمید بڑھتا ے۔اس کی ایسی مثال ہے جیسے کوئی شخص سر کاری عہدہ دار ہے تو نفس قرب تو اس کوا پنامنعی کام

ل إتحاف سادة العنقين ١٩:٩ ٥٠ فتح الباري: ٣١٢:١٠

انجام دینے سے حاصل ہوگا۔اوراگریدکام نہ کرے تو قرب ہی نہ ہوگا تو یہ تھی کام بہت بڑی شی میں انجام دینے اس کوسرکاری آ دمی بنادیا ہے اب وہ چاہتا ہے کہ براقرب حاکم سے اور بھی زیادہ بڑھ جائے تو وہ حاکم کے نوش کرنے کے لئے ایسا کام اختیار کریگا کہ وہ کام اس کے ذمہ نہیں ہے مثلاً اس کے لئے اور تحاکف بھیج نتیجاس کا یہ ہوگا کہ حاکم کا بہت مقرب ہوجائے گا۔اللہ تعالی اس تثبیہ سے پاک ہیں لیکن گا۔ حق کہ حاکم کے پاس بیٹھنا بھی اس کو نصیب ہوجائے گا۔اللہ تعالی اس تثبیہ سے پاک ہیں لیکن بطور تمثیل کے جھنا جا ہے کہ عاشق کو نفس قرب کیفی سے لی نہیں ہو وہ اپنی استعداد کے اعتبار سے مطال قرب کی کا طالب ہوتا ہے مثلاً محبوب نے اپنے پاس خوش ہوکر بھلالیا تو وہ کھسکتا ہوا اور آگے لی کر بیٹھنا چاہتا ہے اس لئے حق تعالی نے دوعباد تیں مقرد فرمائی ہیں۔فرض اور نفل قرب کے ماتھ ہے ۔فرض کے بعد کوئی درجہ کیف کا باقی نہیں رہتا۔اور کمیہ کا تعلق نشیس رہتا۔اور کمیہ کا تعلق نے اور نہیں کے اور نہیں کا درجہ کیف کا باقی نہیں درجہ کے کہ دور ہوگی مراجب طے کریگا ختم نہ ہوں گے اور نہیں کی موار جو سے اور کیت قرب کے مراتب بے شار ہیں۔جس قدر بھی مراجب طے کریگا ختم نہ ہوں گے اور نہیں کی ہوگی۔ برابردل جا ہتار ہے گا کہ اور بڑھے اور ہوگے۔

فرائض اورقرب

خلاصہ بیہ کوفرض کے اداکرنے سے جوقرب حاصل ہوتا ہے عاشق کواس مقدار سے کی بیس ہوتی۔
الرنوافل نہ ہوتے تووہ بھیٹا تڑپ تڑپ کرمرجاتا اس لئے کہ دل کا نقاضا ہوتا کہ مراتب قرب کو طے کر سے
اور طریقہ کوئی تھانہیں۔ اس لئے شدت شوق میں اگرجان دید بتا تو تعجب نہ تھا اوراب نوافل حق تعالیٰ نے
مقروفر ماد نیے بیس کہ ان سے ورجات طے ہوتے ہیں۔ چٹانچہ اذکار اشغال اور روز سے ونماز نفل سب ای
داسطے ہیں کہ بھرہ قرب کے درجات طے کر ساس لئے فرائض محدود ہیں اور نوافل غیر محدود۔

قلاصہ بہ ہے کہ فرائض کے متعلق جو قرب ہے وہ ایک وم سے حاصل ہو جاتا ہے اوراس نوع میں کوئی درجہ باتی نہیں رہتا ۔ اور نوافل کے متعلق جو قرب ہے اس کی کوئی حد نہیں ۔ پیس اس حکمت کی وجہ سے بعض عیاد تیں فرض مقرر فرمائی ہیں ۔ فرض روزہ بھی ہے ۔ بعض نفل جن میں نفلی روز ہے بھی ہیں جو دوسرے ایام میں بھی مشروع ہوئے ۔ تاکہ کوئی نوع قرب کی فوت نہ ہو ۔ صوفیا کی اصطلاح میں جو دوسرے ایام میں بھی مشروع ہوئے ۔ تاکہ کوئی نوع قرب کی فوت نہ ہو ۔ صوفیا کی اصطلاح میں اول کو قرب اوافل کہتے ہیں اور چونکہ نوافل سے جو قرب میں اول کو قرب فرائض کہتے ہیں اور دوسری توع کو قرب نوافل کہتے ہیں اور چونکہ نوافل سے جو قرب ہوتا ہے وہ ختم نہیں ہوتا ۔ ای واسطے حدیث میں اس کو لا یوال عبدی المنے سے تعمیر فرمایا ہے ۔ بھراللہ میں نے بھر درسائی ذبین کے ان احکام کے اسرار و سکھیں بیان کی ہیں ۔ بھر اللہ میں نے بھر درسائی ذبین کے ان احکام کے اسرار و سکھیں بیان کی ہیں ۔ مقصود میرا اس ہے ہے کہ آپ صاحبوں کو ان عباد توں کو مع ان کے حقوق کے مقصود میرا اس ہے ۔ ہے کہ آپ صاحبوں کو ان عباد توں کو مع ان کے حقوق کے ادا کرنے کی رغبت ہو۔ اب اللہ تعالی سے دعا ہے کہ کوفت عطافر ما کیں ۔ آپ میں !

تمت بحرالله